AJAIBUL QUR-AAN MA-A GHARAIBUL QUR-AAN

तख़रीज शुदा

कुरआनी वाक़िआत व अ़जाइबात का बेहतरीन गुलदस्ता

अ़जाइबुल क़ुरआन
मअ़
ग़राइबुल क़ुरआन

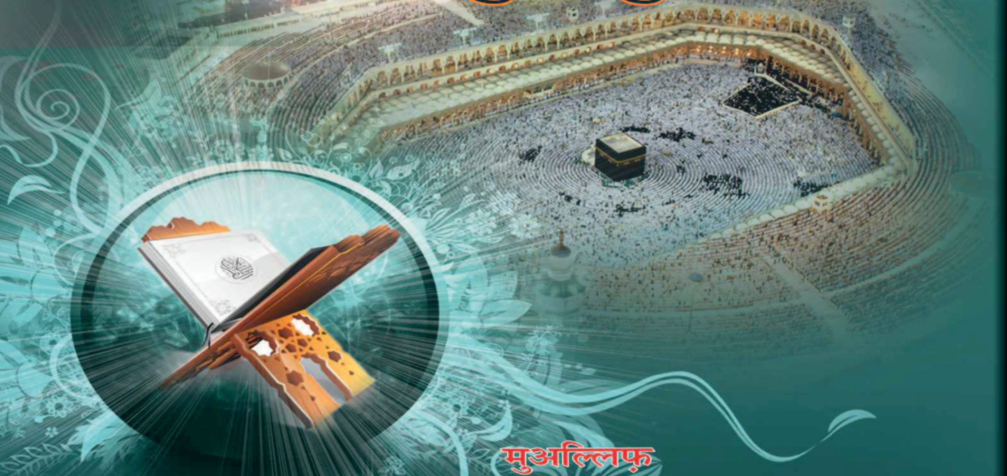

मुअल्लिफ़

शैख़ुल ह़दीष ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अ़ब्दुल मुस्तफ़ा आ'ज़मी

दुन्या की सब से क़ीमती गाए	सब से पहला क़ातिल व मक़्तूल	ह़ज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام और एक च्यूंटी	दौड़ने वाला पथ्थर
उलट पलट हो जाने वाला शहर	चार क़ाबिले इब्रत औ़रतें	ह़ज़रते ई़सा عَلَيْهِ السَّلَام के चार मो'जिज़ात	सामरी का बछड़ा

(दा'वते इस्लामी)
SC 1286

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَ السَّلَامُ عَلٰی سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ़

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा । दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तर्जमा : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले ।

(مستطرف ج ١ ص ٤٠ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक-एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये ।

तालिबे ग़मे मदीना
बक़ीअ़
व मग़फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : सब से ज़ियादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन उस ने न उठाया (या'नी उस इल्म पर अ़मल न किया) (تاریخ دمشق لابن عساکر ج ٥١ ص ١٣٨ دارالفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो मक्तबतुल मदीना से रुजूअ़ फ़रमाइये ।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَ السَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

मजलिसे तराजिम हिन्द (दा'वते इस्लामी)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ येह किताब मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी) ने उर्दू ज़बान में मुरत्तब की है। मजलिसे तराजिम (हिन्द) ने इस किताब को हिन्दी रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और मक्तबतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है।

इस किताब में अगर किसी जगह ग़लत़ी पाएं तो मजलिस को सफ़ह़ा और सत़र नम्बर के साथ Sms, E-mail, Whats App या Telegram के ज़रीए़ इत्तिलाअ़ दे कर सवाबे आख़िरत कमाइये।

मदनी इल्तिजा : इस्लामी बहनें डायरेक्ट राबित़ा न फ़रमाएं!!!

...राबित़ा :-

सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा, अह़मदाबाद-1, गुजरात (हिन्द) ☎ 9327776311

E-mail : tarajim.hind@dawateislami.net

उर्दू से हिन्दी रस्मुल ख़त़ (लीपियांतर) ख़ाका

थ = تھ	त = ت	फ = پھ	प = پ	भ = بھ	ब = ب	अ = ا
छ = چھ	च = چ	झ = جھ	ज = ج	स = ث	ठ = ٹھ	ट = ٹ
ज़ = ذ	ढ = ڈھ	ड = ڈ	ध = دھ	द = د	ख़ = خ	ह़ = ح
श = ش	स = س	ज़ = ژ	ज़ = ز	ढ़ = ڑھ	ड़ = ڑ	र = ر
फ़ = ف	ग़ = غ	अ़ = ع	ज़ = ظ	त़ = ط	ज़ = ض	स = ص
म = م	ल = ل	घ = گھ	ग = گ	ख = کھ	क = ک	क़ = ق
ा = ئ	ॖ = ؤ	आ = آ	य = ی	ह = ھ	व = و	न = ن

क़ुरआनी वाक़िआ़त व अ़जाइबात का बेहतरीन गुलदस्ता

अ़जाइबुल क़ुरआन
मअ़
ग़राइबुल क़ुरआन

-: मोअल्लिफ़ :-
शैख़ुल ह़दीष ह़ज़रते
अ़ल्लामा अ़ब्दुल मुस्त़फ़ा आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحمَةُاللهِ الْغَنِی

-: पेशकश :-
मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)
(शो'बए तख़रीज)

-: नाशिर :-
मक्तबतुल मदीना
421, उर्दू मार्केट, मटया मह़ल, जामेअ़ मस्जिद,
देहली-110006 फ़ोन : 011-23284560

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْکَ یَا رَسُوْلَ اللہ وَعَلٰی اٰلِکَ وَاَصْحٰبِکَ یَا حَبِیْبَ اللہ

नाम किताब : अजाइबुल कुरआन मअ गराइबुल कुरआन

मोअल्लिफ़ : शैखुल हदीष हज़रते अल्लामा अब्दुल मुस्तफ़ा आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِى

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (शो'बए तख़रीज)

तबाअते अव्वल : शा'बानुल मुअज़्ज़म, सि. 1435 हि.

तबाअते दुवुम : रबीउल आखिर, सि. 1438 हि.

नाशिर : मक्तबतुल मदीना, देहली – 6

–: मक्तबतुल मदीना (हिन्द) की मुख्तलिफ़ शाखें :–

- ❀..... **अजमेर** : **मक्तबतुल मदीना**, 19 / 216 फ़लाहे दारैन मस्जिद, नला बाज़ार, स्टेशन रोड, दरगाह अजमेर शरीफ़, राजस्थान, फ़ोन : 0145-2629385
- ❀..... **बरेली** : **मक्तबतुल मदीना**, दरगाह आ'ला हज़रत, महल्ला सौदागरान, रज़ा नगर, बरेली शरीफ़, यु.पी. फ़ोन : 09313895994
- ❀..... **गुलबर्गा** : **मक्तबतुल मदीना**, फ़ैज़ाने मदीना मस्जिद, तिम्मापुरी चौक, गुलबर्गा शरीफ़, कर्नाटक फ़ोन : 09241277503
- ❀..... **बनारस** : **मक्तबतुल मदीना**, अल्लू की मस्जिद के पास, अम्बाशाह की तकिया, मदनपुरा, बनारस, यु.पी. फ़ोन : 09369023101
- ❀..... **कानपुर** : **मक्तबतुल मदीना**, मस्जिद मख़्दूमे सिमनानी, नज़्द गुर्बत पार्क, डिप्टी पडाव चौराहा, कानपुर, यु.पी. फ़ोन : 09616214045
- ❀..... **कलकत्ता** : **मक्तबतुल मदीना**, 35A/H/2 मोमिन पुर रोड, दो तल्ला मस्जिद के पास, कलकत्ता, बंगाल, फ़ोन : 033-32615212
- ❀..... **नागपुर** : **मक्तबतुल मदीना**, ग़रीब नवाज़ मस्जिद के सामने, सैफ़ीनगर रोड, मोमिन पुरा, नागपुर (ताजपुर) महाराष्ट्र, फ़ोन : 09326310099
- ❀..... **अनंतनाग** : **मक्तबतुल मदीना**, मदनी तरबिय्यत गाह, टाउन होल के सामने, अनंतनाग, (इस्लामाबाद), कश्मीर, फ़ोन : 09797977438
- ❀..... **सुरत** : **मक्तबतुल मदीना**, वलिया भाई मस्जिद के सामने, ख़्वाजा दाना दरगाह के पास, सुरत, गुजरात, फ़ोन : 09601267861
- ❀..... **इन्दोर** : **मक्तबतुल मदीना**, शॉप नम्बर 13, बॉम्बे बाज़ार, उदा पुरा, इन्दोर, एम. पी. (मध्य प्रदेश) फ़ोन : 09303230692
- ❀..... **बेंग्लोर** : **मक्तबतुल मदीना**, शॉप नं. 13, जामिआ हज़रत बिलाल, 9th मेन पिल्लाना गार्डन, 3rd स्टेज, बेंग्लोर 45, कर्नाटक : 08088264783
- ❀..... **हुबली** : **मक्तबतुल मदीना**, ए. जे. मुढोल कोम्पलेक्स, ए. जे. मुढोल रोड, ओल्ड हुबली, कर्नाटक, फ़ोन : 08363244860

Web : www.dawateislami.net / E.mail : ilmiapak@dawateislami.net

मदनी इल्तिजा : किसी और को येह किताब (तख़रीज शुदा) छापने की इजाज़त नहीं है

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَلٰی اِحْسَانِہٖ وَ بِفَضْلِ رَسُوْلِہٖ صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **"दा'वते इस्लामी"** नेकी की दा'वत, इह़याए सुन्नत और इशाअ़ते इ़ल्मे शरीअ़त को दुन्या भर में आ़म करने का अ़ज़्मे मुसम्मम रखती है, इन तमाम उमूर को ब हुस्ने ख़ूबी सर अन्जाम देने के लिये मुतअ़द्दिद मजालिस का क़ियाम अ़मल में लाया गया है जिन में से एक मजलिस **"अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या"** भी है जो **दा'वते इस्लामी** के **उ़-लमा व मुफ़्तियाने किराम** کَثَّرَھُمُ اللّٰہ تَعَالٰی पर मुश्तमिल है, जिस ने ख़ालिस इ़ल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती काम का बीड़ा उठाया है। इस के मुन्दरिजए ज़ैल **छे शो'बे** हैं :

(1) शो'बए कुतुबे आ'ला ह़ज़रत
(2) शो'बए दर्सी कुतुब
(3) शो'बए इस्लाह़ी कुतुब
(4) शो'बए तराजिमे कुतुब
(5) शो'बए तफ़्तीशे कुतुब
(6) शो'बए तख़रीज

"**अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**" की अव्वलीन तरजीह़

सरकारे आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, अ़ज़ीमुल बरकत, अ़ज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्ए़ रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, ह़ामिये सुन्नत, माहि़ये बिदअ़त, आ़लिमे शरीअ़त, पीरे त़रीक़त, बाइ़षे ख़ैरो बरकत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अलह़ाज अल ह़ाफ़िज़ अल क़ारी अश्शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن की गिरां मायह तसानीफ़ को अ़सरे ह़ाज़िर के तक़ाज़ों के मुत़ाबिक़ ह़त्तल वुस्अ़ सह्ल उस्लूब में पेश करना है ।

तमाम इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें इस इ़ल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती **मदनी काम** में हर मुमकिन तआ़वुन फ़रमाएं और **मजलिस** की त़रफ़ से शाएअ़ होने वाली कुतुब का ख़ुद भी मुत़ालआ़ फ़रमाएं और दूसरों को भी इस की तरग़ीब दिलाएं ।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ "**दा'वते इस्लामी**" की तमाम मजालिस ब शुमूल "**अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**" को **दिन ग्यारहवीं** और **रात बारहवीं** तरक़्क़ी अ़त़ा फ़रमाए और हमारे हर अ़मले ख़ैर को ज़ेवरे इख़्लास से आरास्ता फ़रमा कर **दोनों जहां की भलाई** का सबब बनाए । हमें ज़ेरे गुम्बदे ख़ज़रा शहादत, जन्नतुल बक़ीअ़ में मदफ़न और **जन्नतुल फ़िरदौस** में **जगह** नसीब फ़रमाए ।

اٰمين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صلَّى الله تعالىٰ عليه واٰله وسلَّم

रमज़ानुल मुबारक, 1425

अ़जाइबुल क़ुरआन की फ़ेहरिस्त

नम्बर शुमार	अ़जाइबुल क़ुरआन की फ़ेहरिस्त	सफ़्हा नम्बर
1	पेशे लफ़्ज़	18
2	क्यूं लिखा ? और क्या लिखा ?	19
3	जन्नती लाठी	21
4	अ़सा अज़्दहा बन गया	23
5	अ़सा मारने से चश्मे जारी हो गए	24
6	अ़सा की मार से दरिया फट गया	26
7	दौड़ने वाला पथ्थर	27
8	पहला मो'जिज़ा	27
9	दूसरा मो'जिज़ा	29
10	एक शुबे का इज़ाला	30
11	मैदाने तीह	31
12	रोशन हाथ	32
13	मन्न व सलवा	33
14	बारह हज़ार यहूदी बन्दर हो गए	34
15	दुन्या की सब से क़ीमती गाए	37
16	सत्तर हज़ार मुर्दे ज़िन्दा हो गए	41
17	हज़रते हिज़्क़ील عَلَيْهِ السَّلَام कौन थे ?	41
18	मुर्दों के ज़िन्दा होने का वाक़िआ	42

19	लत़ीफ़ा	45
20	सो बरस तक मुर्दा रहे फिर ज़िन्दा हो गए	46
21	बुख़्ते नस्सर कौन था ?	47
22	ताबूते सकीना	52
23	ताबूते सकीना में क्या था ?	54
24	ज़ब्ह़ हो कर ज़िन्दा हो जाने वाले परन्दे	57
25	मुर्दों को पुकारना	58
26	तसव्वुफ़ का एक नुक्ता	59
27	त़ालूत की बादशाही	59
28	ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام किस त़रह़ बादशाह बने ?	62
29	ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام का ज़रीअ़ए मआ़श	63
30	मेह़राबे मरयम	65
31	ह़ज़रते मरयम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا बा करामत वलिय्या हैं	67
32	इबादत गाह मक़ामे मक़्बूलिय्यत है	67
33	क़ब्रों के पास दुआ़	67
34	मक़ामे इब्राहीम	68
35	ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام के चार मो'जिज़ात	70
36	मिट्टी के परन्द बना कर उड़ा देना	71
37	मादरज़ाद अन्धों को शिफ़ा देना	72

38	मुर्दों को ज़िन्दा करना	72
39	बुढ़िया का बेटा	72
40	आ़शिर की बेटी	72
41	ह़ज़रते साम बिन नूह़ عَلَيْهِ السَّلَام	72
42	जो खाया और छुपाया उस को बता देना	73
43	ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام आस्मान पर	74
44	ईसाइयों का मुबाहले से फ़िरार	76
45	ह़ज़रते ख़ुजन्दी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه और बिसात़ी शाइर	80
46	अबुल ह़सन हम्दानी की मुर्ग़ी	81
47	बल्ख़ का हर आदमी झूटा हो गया	81
48	पांच हज़ार फ़िरिश्ते मैदाने जंग में	82
49	सब से पहला क़ातिल व मक़्तूल	85
50	मुर्दा दफ़्न करना कव्वे ने सिखाया	90
51	आस्मानी दस्तर ख़्वान	91
52	ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام का ए'लाने तौह़ीद	94
53	फ़िरऔ़नियों पर लगातार पांच अ़ज़ाब	97
54	तूफ़ान	97
55	टिड्डियां	98
56	घुन	99

57	मेंडक	99
58	ख़ून	100
59	हज़रते सालेह عَلَيْهِ السَّلَام की ऊंटनी	103
60	क़िदार बिन सालिफ़	104
61	ज़लज़ले का अज़ाब	104
62	एक लाख चालीस हज़ार यज़ीदी मक़्तूल	106
63	अज़ाब की ज़मीन मन्हूस	106
64	क़ौमे आद की आंधी	107
65	उलट पलट हो जाने वाला शहर	110
66	शहरे सदूम	110
67	सामरी का बछड़ा	114
68	सामरी	114
69	सरों के ऊपर पहाड़	117
70	ज़बान लटक कर सीने पर आ गई	118
71	बल्अम बिन बाऊरा क्यूं ज़लील हुवा ?	121
72	हज़रते यूनुस عَلَيْهِ السَّلَام मछली के पेट में	123
73	नैनवा	123
74	अज़ाब टलने की दुआ	124
75	चार महीने के बच्चे की गवाही	127
76		

76	ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَیْہِ السَّلَام का कुर्ता	129
77	ह़िकायत	131
78	सूरए यूसुफ़ का ख़ुलासा	134
79	ह़ज़रते या'क़ूब عَلَیْہِ السَّلَام की वफ़ात	144
80	ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَیْہِ السَّلَام की क़ब्र	145
81	मक्कए मुकर्रमा क्यूं कर आबाद हुवा ?	145
82	दुआए इब्राहीमी का अषर	148
83	अबू लहब की बीवी को रसूलुल्लाह ﷺ नज़र न आए	150
84	अस्ह़ाबे कह्फ़ (ग़ार वाले)	151
85	अस्ह़ाबे कह्फ़ कौन थे ?	151
86	अस्ह़ाबे कह्फ़ की ता'दाद	154
87	अस्ह़ाबे कह्फ़ के नाम	156
88	अस्ह़ाबे कह्फ़ के नामों के ख़वास	156
89	अस्ह़ाबे कह्फ़ कितने दिनों तक सोते रहे	156
90	सफ़रे मजमउ़ल बह़रैन की झलकियां	157
91	ह़ज़रते ख़िज़्र عَلَیْہِ السَّلَام का तआ़रुफ़	162
92	ह़ज़रते ख़िज़्र عَلَیْہِ السَّلَام ज़िन्दा वली हैं	163
93	ज़ुल क़रनैन और याजूज व माजूज	163
94	ज़ुल क़रनैन क्यूं कहलाए ?	164

95	हज़रते ज़ुल क़रनैन के तीन सफ़र	164
96	पहला सफ़र	165
97	दूसरा सफ़र	165
98	तीसरा सफ़र	166
99	याजूज व माजूज	166
100	सद्दे सिकन्दरी	166
101	सद्दे सिकन्दरी कब टूटेगी ?	167
102	शजरे मरयम رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہَا और नहरे जिब्रील عَلَیْہِ السَّلَام	168
103	हज़रते ईसा عَلَیْہِ السَّلَام की पहली तक़रीर	170
104	हज़रते इदरीस عَلَیْہِ السَّلَام	171
105	दरिया की मौजों से मां की गोद में	174
106	हज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام की वालिदा का नाम	176
107	हज़रते इब्राहीम عَلَیْہِ السَّلَام की बुत शिकनी	176
108	हज़रते इब्राहीम عَلَیْہِ السَّلَام का तवक्कुल	179
109	कौन सी दुआ़ पढ़ कर आप आग में गए	180
110	आप कितनी देर तक आग में रहे	180
111	हज़रते अय्यूब عَلَیْہِ السَّلَام का इम्तिहान	181
112	हज़रते सुलैमान عَلَیْہِ السَّلَام और एक च्यूंटी	184
113	लत़ीफ़ा	186

114	हज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام का हुद हुद	187
115	तख़्ते बिल्क़ीस किस त़रह़ आया ?	189
116	हज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام की बे मिष्ल वफ़ात	192
117	क़ारून का अन्जाम	195
118	क़ारून का ख़ज़ाना	196
119	हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام की नसीह़त	197
120	क़ारून ज़मीन में धंस गया	197
121	रूमी मग़्लूब हो कर फिर ग़ालिब होंगे	199
122	ग़ज़्वए अह़ज़ाब की आंधी	200
123	क़ौमे सबा का सैलाब	204
124	सैलाब किस त़रह़ आया ?	205
125	हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام के तीन मुबल्लिग़ीन	206
126	फूला बाग़ मिनटों में ताराज	210
127	दरबारे दावूद عَلَيْهِ السَّلَام में एक अ़जीब मुक़द्दमा	211
128	اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ छोड़ने का नुक़्सान	213
129	अस्ह़ाबुल उख़्दूद के मज़ालिम	215
130	चार क़ाबिले इ़ब्रत औ़रतें	218
131	वाहिला	218
132	वाइ़ला	219

133	हज़रते आसिया رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھَا	219
134	हज़रते मरयम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھَا	220
135	हज़रते फ़ातिमा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھَا के तीन रोज़े	221
136	शद्दाद की जन्नत	222
137	अस्हाबे फ़ील व लश्करे अबाबील	224
138	फ़त्हे मक्का की पेश गोई	227
139	बैतुल्लाह में दाख़िला	229
140	शहनशाहे दो आलम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का दरबारे आम	230
141	फ़त्हे मक्का की तारीख़	231
142	जादू का इलाज	234
143	हज़रते ख़िज़्र عَلَیْہِ السَّلَام की बताई हुई दुआ	236
144	तिलावत की अहम्मिय्यत व आदाब	237
145	तिलावत के चन्द आदाब	238

नम्बर शुमार	ग़राइबुल क़ुरआन की फ़ेहरिस्त	सफ़हा नम्बर

1	अर्ज़े मुसन्निफ़	242
2	तख़्लीक़े आदम عَلَیْہِ السَّلَام	243
3	ख़िलाफ़ते आदम عَلَیْہِ السَّلَام	248
4	उलूमे आदम عَلَیْہِ السَّلَام की एक फ़ेहरिस्त	255

5	इब्लीस क्या था और क्या हो गया	256
6	बनी इस्राईल पर ताऊन का अज़ाब	260
7	सफ़ा व मरवा	262
8	सत्तर आदमी मर कर ज़िन्दा हो गए	265
9	एक तारीख़ी मुनाज़रा	267
10	नमरूद कौन था ?	267
11	इन्सानों में हमेशा दुश्मनी रहेगी	271
12	हज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام की तौबा कैसे क़बूल हुई ?	273
13	हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام के हवारी	276
14	मुर्तदीन से जिहाद करने वाले	281
15	ज़मानए रिसालत के तीन मुर्तदीन	281
16	ख़िलाफ़ते सिद्दीक़े अक्बर के सात मुर्तद क़बाइल	282
17	दौरे फ़ारूक़ी का मुर्तद क़बीला	283
18	काफ़िरों की मायूसी	284
19	इस्लाम और साधू की ज़िन्दगी	287
20	दो बड़े एक छोटा दुश्मन	290
21	अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के क़ातिल	291
22	हज़रते यहूया عَلَيْهِ السَّلَام की शहादत	292
23	हज़रते ज़करिय्या عَلَيْهِ السَّلَام का मक़्तल	292

24	मुनाफ़िक़ों की एक साज़िश	294
25	हज़रते इल्यास عَلَيْهِ السَّلَام	296
26	हज़रते इल्यास عَلَيْهِ السَّلَام और क़ुरआन	299
27	जंगे बद्र की बारिश	300
28	जंगे हुनैन	304
29	ग़ारे षौर	307
30	मस्जिदे ज़िरार जला दी गई	309
31	फ़िरऔन का ईमान मक़्बूल नहीं हुवा	313
32	नूह़ عَلَيْهِ السَّلَام की कश्ती	316
33	तूफ़ान बरपा करने वाला तन्नूर	319
34	जूदी पहाड़	320
35	नूह़ عَلَيْهِ السَّلَام का बेटा ग़र्क़ हो गया	321
36	तूफ़ान क्यूंकर ख़त्म हुवा	323
37	एक गुस्ताख़ पर बिजली गिर पड़ी	326
38	पांच दुश्मनाने रसूल	328
39	तमाम सुवारियों का ज़िक्र क़ुरआन में	330
40	ऊंट	331
41	घोड़ा	332
42	ख़च्चर	333

43	गधा	333
44	शहद की मख्खी	334
45	खूसट उ़म्र वाला	337
46	बे वुक़ूफ़ बुढ़िया	340
47	ह़सूर गाऊं की बरबादी	341
48	ह़ज़रते ज़ुल किफ़्ल عَلَیْہِ السَّلَام	342
49	नह्रें उठा ली जाएंगी	344
50	तख़्लीक़े इन्सानी के मराह़िल	345
51	मुबारक दरख़्त	347
52	अस्ह़ाबुर्रस कौन हैं ?	348
53	क़ौले अव्वल	349
54	क़ौले दुवुम	349
55	क़ौले सिवुम	349
56	क़ौले चहारुम	350
57	क़ौले पन्जुम	350
58	क़ौले शशुम	350
59	क़ौले हफ़्तुम	351
60	क़ौले हशतुम	351
61	अस्ह़ाबे ईका की हलाकत	351

62	एक ज़रूरी तौज़ीह़	353
63	ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام की हिजरत	354
64	मकड़ी का घर	356
65	मकड़ी	356
66	ह़ज़रते लुक़्मान ह़कीम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه	357
67	ह़िकमत क्या है ?	359
68	अमानत क्या है ?	361
69	जिन्न और जानवर फ़रमां बरदार	363
70	हवा पर ह़ुकूमत	366
71	तांबे के चश्मे	368
72	ह़ज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام के घोड़े	369
73	पहाड़ों और परन्दों की तस्बीह़	370
74	फ़िरिश्तों के बाल व पर	372
75	अबू जह्ल की गर्दन का तौक़	374
76	ह़ामिलाने अ़र्श की दुआ़	376
77	साह़िबे अवलाद और बांझ	378
78	फ़ासिक़ की ख़बर पर ए'तिमाद मत करो	381
79	मलाइका मेहमान बन कर आए	383
80	चांद दो टुकड़े हो गया	386

81	किसी क़ौम का मज़ाक़ न उड़ाओ	388
82	लोहा आस्मान से उतरा है	390
83	सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की सख़ावत	392
84	यहूदियों की जिलावत़नी	395
85	एक अ़जीब वज़ीफ़ा	398
86	ह़िकायते अ़जीबा	399
87	पांच मश्हूर और पुराने बुत	402
88	अबू जह्ल और ख़ुदा के सिपाही	405
89	शबे क़द्र	407
90	मोमिनों को मलाइका की सलामी	408
91	ज़मीन बात चीत करेगी	410
92	मुजाहिदीन के घोड़ों की अ़ज़मत	411
93	क़ुरैश के दो सफ़र	413
94	कुफ़्र व इस्लाम में मुफ़ाहमत ग़ैर मुमकिन	415
95	अल्लाह तआ़ला की चन्द सिफ़तें	416
96	उ़लूम व मआ़रिफ़ का न ख़त्म होने वाला ख़ज़ाना	417
97	मआख़िज़ो मराजेअ़	421
98	इ़ल्मिय्या कुतुब फ़ेहरिस्त	423
99	याद दाश्त सफ़्ह़ा	429

पेशे लफ़्ज़

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ हमारी येह कोशिश है कि अपने अकाबिरीन की कुतुब को अह़सन उस्लूब में पेश करें। इस सिलसिले में इमामे अहले सुन्नत मौलाना इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن के कई रसाइल (तख़रीज व तस्हील शुदा) त़ब्अ़ हो कर अ़वाम व ख़वास से ख़िराजे तह़सीन पा चुके हैं। जब कि "**बहारे शरीअ़त**" (तीन जिल्दों में मुकम्मल) भी शाएअ़ हो चुकी है। अब "**अ़जाइबुल कुरआन मअ़ ग़राइबुल कुरआन**" पेशे ख़िदमत है जो शैखुल ह़दीष ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुल मुस्त़फ़ा आ'ज़मी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की तालीफ़ है। इस में क़ुरआनी वाक़िआ़त को इन्तिहाई दिलचस्प अन्दाज़ में बयान किया गया है।

त़बाअ़ते जदीद के लिये इस किताब के मुसव्वदे की तत़बीक़ मुस्तनद नुस्ख़ा जात से की गई है। ह़वाला जात की तख़रीज कर दी गई है और आयात का तर्जमा इमामे अहले सुन्नत मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن के तर्जमए कुरआन "**कन्ज़ुल ईमान**" से दर्ज किया गया है।

अल्लाह तआ़ला से दुआ़ है कि हमें "**अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश**" करने के लिये मदनी इन्आ़मात पर अ़मल और मदनी क़ाफ़िलों का मुसाफ़िर बनते रहने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए और दा'वते इस्लामी की तमाम मजालिस ब शुमूल **मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या** को दिन ग्यारहवीं रात बारहवीं तरक़्क़ी अ़त़ा फ़रमाए।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

शो'बए तख़रीज

(मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

حَامِدًا وَّمُصَلِّيًا وَّمُسَلِّمًا

क्यूं लिखा ? और क्या लिखा ?

रबीउ़ल अव्वल सि. 1400 हि. में चन्द मुक़्तदिर उ़-लमाए अहले सुन्नत ने अपनी ख़्वाहिश ब सूरते फ़रमाइश ज़ाहिर फ़रमाई कि मैं क़ुरआने मजीद का एक तर्जमा सलीस और आ़म फ़ह्म ज़बान में लिख दूं, उस वक़्त पहली बार मुझ पर फ़ालिज का ह़म्ला हो चुका था। मैं ने जवाब में उन ह़ज़रात से अपनी ज़ईफ़ी और बीमारी का उ़ज़्र कर के इस काम से मुआ़फ़ी त़लब कर ली। और अ़र्ज़ कर दिया कि अगर चन्द साल क़ब्ल आप लोगों ने इस त़रफ़ तवज्जोह दिलाई होती तो मैं ज़रूर येह काम शुरूअ़ कर देता मगर अब जब कि ज़ईफ़ी के साथ मरज़े फ़ालिज ने मेरी तुवानाइयों को बिल्कुल मुज़्मह़िल कर दिया है, इतना बड़ा काम मेरे बस की बात नहीं। फिर बा'ज़ अ़ज़ीज़ों ने कहा कि अगर पूरे क़ुरआने मजीद का तर्जमा आप नहीं लिखते तो ''नवादिरुल ह़दीष'' की त़रह़ क़ुरआने मजीद की चन्द आयतों ही का तर्जमा और तफ़्सीर लिख कर आयतों की मुनासिब तशरीह़ कर देते तो बहुत अच्छा और बेह़द मुफ़ीद इ़ल्मी काम हो जाता।

येह काम मेरे नज़्दीक बहुत सह्ल था। चुनान्चे, मैं ने توكلاً على الله इस काम को शुरूअ़ कर दिया। मगर अभी तक़रीबन एक सो सफ़ह़ात का मुसव्वदा लिखने पाया था कि नागहां 13 दिसम्बर सि. 1981 ई, को रात में सोते हुवे फ़ालिज का दूसरी मरतबा ह़म्ला हुवा। और बायां हाथ और बायां पाउं इस त़रह़ मफ़्लूज हो गए कि इन में ह़िस्स व ह़रकत ही बाक़ी न रही। फ़ौरन ही ब ज़रीअ़ए जीप बराउन शरीफ़ से दो त़ालिबे इ़ल्मों की मदद से अपने मकान पर घोसी आ गया और दो माह पलंग पर पड़ा रहा। मगर اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ कि बहुत जल्द ख़ुदावन्दे करीम का फ़ज़्ले अ़ज़ीम हो गया कि हाथ पाउं में ह़िस्स व ह़रकत पैदा हो गई और तीन माह के बा'द मैं खड़ा होने लगा और रफ़्ता रफ़्ता بِحَمْدِاللّٰهِ تَعَالٰی इस क़ाबिल हो गया कि जुमुआ़ व जमाअ़त के लिये मस्जिद तक जाने लगा।

चुनान्चे, वोह मुसव्वदा जो ना तमाम रह गया था, अब ब ह़ालते मरज़ इस को मुकम्मल कर के "**अ़जाइबुल कुरआन**" के नाम से नाज़िरीन की ख़िदमत में पेश करता हूं।

इस मजमूए़ में कु़रआने मजीद की मुख़्तलिफ़ सूरतों से चुन कर पैंसठ उन अ़जीब अ़जीब चीज़ों और तअ़ज्जुब ख़ैज़ व ह़ैरत अंगेज़ वाक़िआ़त को जिन का कु़रआने मजीद में मुख़्तसर तज़्किरा है, नक़्ल कर के उन की मुनासिब तफ़्सील व तौज़ीह़ तह़रीर कर दी है और इन वाक़िआ़त के दामनों में जो इ़ब्रतें और नसीह़तें छुपी हुई हैं, उन को भी "दर्से हिदायत" के उ़न्वान से पेश कर दिया है।

दुआ़ है कि ख़ुदावन्दे करीम मेरी दूसरी तस्नीफ़ात की त़रह़ इस उन्नीसवीं किताब को भी मक़्बूलिय्यते दारैन की करामतों से सरफ़राज़ फ़रमा कर नाफ़ेउ़ल ख़लाइक़ बनाए और इस ख़िदमत को मेरे और मेरे वालिदैन नीज़ मेरे उस्ताज़ व तलामिज़ा व मुरीदीन व अह़बाब के लिये ज़ादे आख़िरत व ज़रीअ़ए मग़फ़िरत बनाए और मेरे नवासे मौलवी फ़ैज़ुल ह़क़ साहिब سلمہ المولیٰ تعالیٰ को आ़लिमे बा अ़मल बनाए। और उन को जज़ाए ख़ैर अ़त़ा फ़रमाए कि वोह इस किताब की तदवीन व तबयीज़ और त़बाअ़त वग़ैरा में मेरे दस्त व बाज़ू बने रहे।(आमीन)

येह किताब इस ह़ाल में तह़रीर कर रहा हूं कि कमज़ोरी व नक़ाहत से चलना फिरना दुश्वार हो रहा है। मगर اَلْحَمْدُ لِلّٰہ कि दाह्ना हाथ काम कर रहा है और दिलो दिमाग़ बिल्कुल दुरुस्त हैं। इ़लाज का सिलसिला जारी है।

क़ारिईन व नाज़िरीने किराम दुआ़ फ़रमाएं कि मौला तआ़ला मुझे जल्द शिफ़ायाब फ़रमाए ताकि मैं आख़िरे ह़यात तक दर्से ह़दीष व दीनी तसानीफ़ व मवाइ़ज़ का सिलसिला जारी रख सकूं।

وماذلک علی اللّٰہ بعزیز وھو حسبی ونعم الوکیل والحمدللّٰہ رب العلمین

وصلی اللّٰہ تعالیٰ علی خیر خلقہ محمد والہ وصحبہ اجمعین۔

अ़ब्दुल मुस्त़फ़ा आ'ज़मी عُفِیَ عَنْہُ

بسم الله الرحمن الرحيم

نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّی عَلٰی رَسُوْلِهِ الْكَرِيْم

﴿1﴾ जन्नती लाठी

येह ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام की वोह मुक़द्दस लाठी है जिस को "अ़साए मूसा" कहते हैं इस के ज़रीए़ आप के बहुत से उन मो'जिज़ात का ज़ुहूर हुवा जिन को कुरआने मजीद ने मुख़्तलिफ़ उ़न्वानों के साथ बार बार बयान फ़रमाया है।

इस मुक़द्दस लाठी की तारीख़ बहुत क़दीम है जो अपने दामन में सेंकड़ों उन तारीख़ी वाक़िआ़त को समेटे हुवे है जिन में इ़ब्रतों और नसीह़तों के हज़ारों निशानात सितारों की त़रह़ जगमगा रहे हैं जिन से अहले नज़र को बसीरत की रोशनी और हिदायत का नूर मिलता है।

येह लाठी ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के क़द बराबर दस हाथ लम्बी थी। और इस के सर पर दो शाख़ें थीं जो रात में मश्अ़ल की त़रह़ रोशन हो जाया करती थीं। येह जन्नत के दरख़्त पीलू की लकड़ी से बनाई गई थी और इस को ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام बिहिश्त से अपने साथ लाए थे। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिद अ़ली उजहोरी عَلَيْهِ الرَّحْمَة ने फ़रमाया कि

وَاٰدَمُ مَعَهٗ اُنْزِلَ الْعُوْدُ وَالْعَصَا   لِمُوْسٰى مِنَ الْاٰسِ النَّبَاتِ الْمُكَرَّمِ
وَ اَوْرَاقُ تِيْنٍ وَّالْيَمِيْنُ بِمَكَّةَ   وَ خَتْمُ سُلَيْمٰنَ النَّبِيِّ الْمُعَظَّمِ

तर्जमा : ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام के साथ ऊ़द (ख़ुश्बूदार लकड़ी), ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام का अ़सा (जो इ़ज़्ज़त वाली पीलू की लकड़ी का था), अन्जीर की पत्तियां, ह़जरे अस्वद जो मक्कए मुअ़ज़्ज़मा में है और नबिय्ये मुअ़ज़्ज़म ह़ज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام की अंगूठी येह **पांचों चीज़ें** जन्नत से उतारी गईं। (تفسير الصاوى، ج١، ص٦٩، البقرة:٦٠)

हज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام के बा'द येह मुक़द्दस अ़सा हज़राते अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को यके बा'द दीगरे बत़ौरे मीराष के मिलता रहा। यहां तक कि हज़रते शोऐब عَلَيْهِ السَّلَام को मिला जो "क़ौमे मदयन" के नबी थे जब हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام मिस्र से हिजरत फ़रमा कर मदयन तशरीफ़ ले गए और हज़रते शोऐब عَلَيْهِ السَّلَام ने अपनी साहिबज़ादी (हज़रते बीबी सफ़ूरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا) से आप का निकाह फ़रमा दिया। और आप दस बरस तक हज़रते शोऐब عَلَيْهِ السَّلَام की ख़िदमत में रह कर आप की बकरियां चराते रहे। उस वक़्त हज़रते शोऐब عَلَيْهِ السَّلَام ने हुक्मे ख़ुदावन्दी (عَزَّوَجَلَّ) के मुताबिक़ आप को येह मुक़द्दस अ़सा अ़ता फ़रमाया।

फिर जब आप अपनी ज़ौजए मोहतरमा को साथ ले कर मदयन से मिस्र अपने वत़न के लिये रवाना हुवे और वादिये मुक़द्दस मक़ामे "तुवा" में पहुंचे तो **अल्लाह** तआ़ला ने अपनी तजल्ली से आप को सरफ़राज़ फ़रमा कर मन्सबे रिसालत के शरफ़ से सरबुलन्द फ़रमाया। उस वक़्त हज़रते हक़ جل مجده ने आप से जिस त़रह कलाम फ़रमाया क़ुरआने मजीद ने उस को इस त़रह बयान फ़रमाया कि

وَمَا تِلْكَ بِيَمِيْنِكَ يٰمُوْسٰى ﴿۱۷﴾ قَالَ هِيَ عَصَايَ ۚ اَتَوَكَّؤُا عَلَيْهَا وَاَهُشُّ بِهَا عَلٰى غَنَمِيْ وَلِيَ فِيْهَا مَاٰرِبُ اُخْرٰى ﴿۱۸﴾ (پ ۱٦، طٰه: ۱۷، ۱۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :– और येह तेरे दाहिने हाथ में क्या है? ऐ मूसा! अ़र्ज़ की : येह मेरा अ़सा है, मैं इस पर तकया (टेक व सहारा) लगाता हूं और इस से अपनी बकरियों पर पत्ते झाड़ता हूं और मेरे इस में और काम हैं।

مَاٰرِبُ اُخْرٰى (दूसरे कामों) की तफ़्सीर में हज़रते अ़ल्लामा अबुल बरकात अ़ब्दुल्लाह बिन अह़मद नसफ़ी عَلَيْهِ الرَّحْمَة ने फ़रमाया कि मषलन : (1) उस को हाथ में ले कर उस के सहारे चलना (2) उस से बात चीत कर के दिल बहलाना (3) दिन में उस का दरख़्त बन कर आप पर साया करना (4) रात में उस की दोनों शाख़ों का रोशन हो कर आप

को रोशनी देना (5) उस से दुश्मनों, दरिन्दों और सांपों, बिच्छूओं को मारना (6) कूंएं से पानी भरने के वक़्त उस का रस्सी बन जाना और उस की दोनों शाख़ों का डोल बन जाना (7) ब वक़्ते ज़रूरत उस का दरख़्त बन कर ह़स्बे ख़्वाहिश फल देना (8) उस को ज़मीन में गाड़ देने से पानी निकल पड़ना वग़ैरा । (مدارک التنزیل،ج۳،ص ۲۵۱،پ۱۶،طہ:۱۸)

ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام इस मुक़द्दस लाठी से मज़्कूरा बाला काम निकालते रहे मगर जब आप फ़िरऔ़न के दरबार में हिदायत फ़रमाने की ग़रज़ से तशरीफ़ ले गए और उस ने आप को जादूगर कह कर झुटलाया तो आप के इस अ़सा के ज़रीए़ बड़े बड़े मो'जिज़ात का ज़ुहूर शुरूअ़ हो गया, जिन में से तीन मो'जिज़ात का तज़्किरा कुरआने मजीद ने बार बार फ़रमाया जो ह़स्बे ज़ैल हैं ।

अ़सा अज़्दहा बन गया :- इस का वाक़िआ़ येह है कि फ़िरऔ़न ने एक मेला लगवाया । और अपनी पूरी सल्त़नत के जादूगरों को जम्अ़ कर के ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام को शिकस्त देने के लिये मुक़ाबले पर लगा दिया । और उस मेले के इज़्दिह़ाम में जहां लाखों इन्सानों का मजमअ़ था, एक त़रफ़ जादूगरों का हुजूम अपनी जादूगरी का सामान ले कर जम्अ़ हो गया । और उन जादूगरों की फ़ौज के मुक़ाबले में ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام तन्हा डट गए । जादूगरों ने फ़िरऔ़न की इ़ज़्ज़त की क़सम खा कर अपने जादू की लाठियों और रस्सियों को फेंका तो एक दम वोह लाठियां और रस्सियां सांप बन कर पूरे मैदान में हर त़रफ़ फुंकारें मार कर दौड़ने लगीं और पूरा मजमअ़ ख़ौफ़ व हिरास में बद ह़वास हो कर इधर उधर भागने लगा और फ़िरऔ़न और उस के तमाम जादूगर इस करतब को दिखा कर अपनी फ़त्ह़ के घमन्ड और ग़ुरूर के नशे में बद मस्त हो गए और जोशे शादमानी से तालियां बजा बजा कर अपनी मसर्रत का इज़्हार करने लगे कि इतने में नागहां ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने ख़ुदा के हुक्म से अपनी मुक़द्दस लाठी को उन सांपों के हुजूम में डाल दिया तो येह लाठी एक

बहुत बड़ा और निहायत हैबत नाक अज़्दहा बन कर जादूगरों के तमाम सांपों को निगल गया। येह मो'जिज़ा देख कर तमाम जादूगर अपनी शिकस्त का ए'तिराफ़ करते हुवे सजदे में गिर पड़े और बा आवाज़े बुलन्द येह ए'लान करना शुरूअ़ कर दिया कि اٰمَنَّا بِرَبِّ هٰرُوْنَ وَ مُوْسٰى या'नी हम सब हज़रते हारून और हज़रते मूसा عليهما السلام के रब पर ईमान लाए।

चुनान्चे, क़ुरआने मजीद ने इस वाक़िए का ज़िक्र करते हुवे इरशाद फ़रमाया कि

قَالُوْا یٰمُوْسٰۤى اِمَّاۤ اَنْ تُلْقِیَ وَ اِمَّاۤ اَنْ نَّكُوْنَ اَوَّلَ مَنْ اَلْقٰى ﴿۶۵﴾ قَالَ بَلْ اَلْقُوْاۚ فَاِذَا حِبَالُهُمْ وَ عِصِیُّهُمْ یُخَیَّلُ اِلَیْهِ مِنْ سِحْرِهِمْ اَنَّهَا تَسْعٰى ﴿۶۶﴾ فَاَوْجَسَ فِیْ نَفْسِهٖ خِیْفَةً مُّوْسٰى ﴿۶۷﴾ قُلْنَا لَا تَخَفْ اِنَّكَ اَنْتَ الْاَعْلٰى ﴿۶۸﴾ وَ اَلْقِ مَا فِیْ یَمِیْنِكَ تَلْقَفْ مَا صَنَعُوْاؕ اِنَّمَا صَنَعُوْا كَیْدُ سٰحِرٍؕ وَ لَا یُفْلِحُ السّٰحِرُ حَیْثُ اَتٰى ﴿۶۹﴾ فَاُلْقِیَ السَّحَرَةُ سُجَّدًا قَالُوْۤا اٰمَنَّا بِرَبِّ هٰرُوْنَ وَ مُوْسٰى ﴿۷۰﴾ (پ۱۶، طٰه۶۵تا۷۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :– बोले ऐ मूसा या तो तुम डालो या हम पहले डालें, मूसा ने कहा बल्कि तुम्हीं डालो जभी उन की रस्सियां और लाठियां उन के जादू के ज़ोर से उन के ख़याल में दौड़ती मा'लूम हुईं तो अपने जी में मूसा ने ख़ौफ़ पाया, हम ने फ़रमाया डर नहीं बेशक तू ही ग़ालिब है और डाल तो दे जो तेरे दाहने हाथ में है वोह उन की बनावटों को निगल जाएगा वोह जो बना कर लाए हैं वोह तो जादूगर का फ़रैब है और जादूगर का भला नहीं होता कहीं आवे, तो सब जादूगर सजदे में गिरा लिये गए बोले हम उस पर ईमान लाए जो हारून और मूसा का रब है।

अ़सा मारने से चश्मे जारी हो गए :– बनी इस्राईल का अस्ल वत़न मुल्के शाम था लेकिन हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام के दौरे हुकूमत में येह लोग मिस्र में आ कर आबाद हो गए और मुल्के शाम पर क़ौमे अ़मालक़ा का तसल्लुत़ और क़ब्ज़ा हो गया। जो बदतरीन क़िस्म के कुफ़्फ़ार थे। जब फ़िरऔ़न दरियाए नील में ग़र्क़ हो गया और हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام को

फ़िरऔन के ख़तरात से इत्मीनान हो गया तो **अल्लाह** तआ़ला ने हुक्म दिया कि क़ौमे अ़मालक़ा से जिहाद कर के मुल्के शाम को उन के क़ब्ज़े व तसल्लुत़ से आज़ाद कराएं। चुनान्चे, आप छे लाख बनी इस्राईल की फ़ौज ले कर जिहाद के लिये रवाना हो गए मगर मुल्के शाम की हुदूद में पहुंच कर बनी इस्राईल पर क़ौमे अ़मालक़ा का ऐसा ख़ौफ़ सुवार हो गया कि बनी इस्राईल हिम्मत हार गए और जिहाद से मुंह फेर लिया। इस नाफ़रमानी पर **अल्लाह** तआ़ला ने बनी इस्राईल को येह सज़ा दी कि येह लोग चालीस बरस तक "मैदाने तीह" में भटकते और घूमते फिरे और इस मैदान से बाहर न निकल सके। ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام भी इन लोगों के साथ मैदाने तीह में तशरीफ़ फ़रमा थे। जब बनी इस्राईल इस बे आबो गियाह मैदान में भूक व प्यास की शिद्दत से बे क़रार हो गए तो **अल्लाह** तआ़ला ने ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام की दुआ़ से इन लोगों के खाने के लिये "मन्न व सलवा" आस्मान से उतारा। मन्न शहद की त़रह़ एक क़िस्म का ह़ल्वा था, और सलवा भुनी हुई बटेरें थीं। खाने के बा'द जब येह लोग प्यास से बेताब होने लगे और पानी मांगने लगे तो ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने पथ्थर पर अपना अ़सा मार दिया तो उस पथ्थर में बारह चश्मे फूट कर बहने लगे और बनी इस्राईल के बारह ख़ानदान अपने अपने एक चश्मे से पानी ले कर ख़ुद भी पीने लगे और अपने जानवरों को भी पिलाने लगे और पूरे चालीस बरस तक येह सिलसिला जारी रहा। येह ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام का मो'जिज़ा था जो अ़सा और पथ्थर के ज़रीए़ ज़ुहूर में आया। कुरआने मजीद ने इस वाक़िए़ और मो'जिज़े का बयान करते हुवे इरशाद फ़रमाया कि

وَ اِذِ اسْتَسْقٰى مُوْسٰى لِقَوْمِهٖ فَقُلْنَا اضْرِبْ بِّعَصَاكَ الْحَجَرَؕ فَانْفَجَرَتْ مِنْهُ اثْنَتَا عَشْرَةَ عَيْنًاؕ قَدْ عَلِمَ كُلُّ اُنَاسٍ مَّشْرَبَهُمْؕ (پ ۱، البقرۃ:۶۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :– और जब मूसा ने अपनी क़ौम के लिये पानी मांगा तो हम ने फ़रमाया उस पथ्थर पर अपना अ़सा मारो फ़ौरन उस में से बारह चश्मे बह निकले। हर गुरौह ने अपना घाट पहचान लिया।

अ़सा की मार से दरिया फट गया :– ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام एक मुद्दते दराज़ तक फ़िरऔ़न को हिदायत फ़रमाते रहे और आयात व मो'जिज़ात दिखाते रहे मगर उस ने ह़क़ को क़बूल नहीं किया बल्कि और ज़ियादा उस की शरारत व सरकशी बढ़ती रही। और बनी इस्राईल ने चूंकि उस की खुदाई को तस्लीम नहीं किया इस लिये उस ने इन मोअमिनीन को बहुत ज़ियादा ज़ुल्मो सितम का निशाना बनाया। इस दौरान में एक दम ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام पर वह़्य उतरी कि आप अपनी क़ौम बनी इस्राईल को अपने साथ ले कर रात में मिस्र से हिजरत कर जाएं। चुनान्चे, ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام बनी इस्राईल को हमराह ले कर रात में मिस्र से रवाना हो गए।

जब फ़िरऔ़न को पता चला तो वोह भी अपने लश्करों को साथ ले कर बनी इस्राईल की गिरिफ़्तारी के लिये चल पड़ा। जब दोनों लश्कर एक दूसरे के क़रीब हो गए तो बनी इस्राईल फ़िरऔ़न के ख़ौफ़ से चीख़ पड़े कि अब तो हम फ़िरऔ़न के हाथों गिरिफ़्तार हो जाएंगे और बनी इस्राईल की पोज़ीशन बहुत नाज़ुक हो गई क्यूंकि इन के पीछे फ़िरऔ़न का ख़ूंख़्वार लश्कर था और आगे मौजें मारता हुवा दरिया था। इस परेशानी के आ़लम में ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام मुत़मइन थे और बनी इस्राईल को तसल्ली दे रहे थे। जब दरिया के पास पहुंच गए तो **अल्लाह** तआ़ला ने ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام को हुक्म फ़रमाया कि तुम अपनी लाठी दरिया पर मार दो। चुनान्चे, जूंही आप ने दरया पर लाठी मारी तो फ़ौरन ही दरिया में बारह सड़कें बन गईं और बनी इस्राईल उन सड़कों पर चल कर सलामती के साथ दरिया से पार निकल गए। फ़िरऔ़न जब दरया के क़रीब पहुंचा और उस ने दरिया की सड़कों को देखा तो वोह भी अपने लश्करों के साथ उन सड़कों पर चल पड़ा। मगर जब फ़िरऔ़न और उस का लश्कर दरिया के बीच में पहुंचा तो अचानक दरिया मौजें मारने लगा और सब सड़कें ख़त्म हो गईं और फ़िरऔ़न अपने लश्करों समेत दरिया में ग़र्क़ हो गया। इस वाक़िए़ को क़ुरआने मजीद ने इस त़रह़ बयान फ़रमाया कि

فَلَمَّا تَرَآءَ الْجَمْعٰنِ قَالَ اَصْحٰبُ مُوْسٰۤى اِنَّا لَمُدْرَكُوْنَ ﴿۶۱﴾ قَالَ كَلَّا ۚ
اِنَّ مَعِیَ رَبِّیْ سَیَهْدِیْنِ ﴿۶۲﴾ فَاَوْحَیْنَاۤ اِلٰى مُوْسٰۤى اَنِ اضْرِبْ بِّعَصَاكَ
الْبَحْرَ ؕ فَانْفَلَقَ فَكَانَ كُلُّ فِرْقٍ كَالطَّوْدِ الْعَظِیْمِ ﴿۶۳﴾ وَ اَزْلَفْنَا ثَمَّ
الْاٰخَرِیْنَ ﴿۶۴﴾ وَ اَنْجَیْنَا مُوْسٰى وَ مَنْ مَّعَهٗۤ اَجْمَعِیْنَ ﴿۶۵﴾ ثُمَّ اَغْرَقْنَا
الْاٰخَرِیْنَ ﴿۶۶﴾ اِنَّ فِیْ ذٰلِكَ لَاٰیَةً ؕ وَ مَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِیْنَ ﴿۶۷﴾

(پ ۱۹، الشعراء: ۶۱ تا ۶۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- फिर जब आमना सामना हुवा दोनों गुरौहों का, मूसा वालों ने कहा हम को उन्हों ने आ लिया। मूसा ने फ़रमाया : यूं नहीं बेशक मेरा रब मेरे साथ है वोह मुझे अब राह देता है। तो हम ने मूसा को वह्य फ़रमाई कि दरया पर अपना अ़सा मार तो जभी दरिया फट गया तो हर हिस्सा हो गया जैसे बड़ा पहाड़। और वहां क़रीब लाए हम दूसरों को और हम ने बचा लिया मूसा और उस के सब साथ वालों को फिर दूसरों को डुबो दिया बेशक इस में ज़रूर निशानी है और उन में अकषर मुसलमान न थे।

येह हैं हज़रते मूसा عَلَیْهِ السَّلَام की मुक़द्दस लाठी के ज़रीए़ ज़ाहिर होने वाले वोह तीनों अ़ज़ीमुश्शान मो'जिज़ात जिन को कुरआने करीम ने मुख़्तलिफ़ अल्फ़ाज़ और मुतअ़द्दिद उ़न्वानों के साथ बार बार बयान फ़रमा कर लोगों के लिये इ़ब्रत और हिदायत का सामान बना दिया है। (وَاللّٰہ تَعَالٰی اَعلم)

﴾2﴿ दौड़ने वाला पथ्थर

येह एक हाथ लम्बा एक हाथ चौड़ा चोकूर पथ्थर था, जो हमेशा हज़रते मूसा عَلَیْهِ السَّلَام के झोले में रहता था। इस मुबारक पथ्थर के ज़रीए़ हज़रते मूसा عَلَیْهِ السَّلَام के दो मो'जिज़ात का ज़ुहूर हुवा। जिन का तज़्किरा कुरआने मजीद में भी हुवा है।

पहला मो'जिज़ा :- इस पथ्थर का पहला अ़जीब कारनामा जो दर ह़क़ीक़त हज़रते मूसा عَلَیْهِ السَّلَام का मो'जिज़ा था वोह इस पथ्थर की दानिशमन्दाना लम्बी दौड़ है और येही मो'जिज़ा इस पथ्थर के मिलने की तारीख़ है।

इस का मुफ़स्सल वाक़िआ़ येह है कि बनी इस्राईल का येह आ़म दस्तूर था कि वोह बिल्कुल नंगे बदन हो कर मजमए़ आ़म में ग़ुस्ल किया करते थे। मगर ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام गो कि इसी क़ौम के एक फ़र्द थे और इसी माह़ोल में पले बढ़े थे, लेकिन ख़ुदावन्दे क़ुद्दूस ने उन को नबुव्वत व रिसालत की अ़ज़्मतों से सरफ़राज़ फ़रमाया था। इस लिये आप की इ़समते नबुव्वत भला इस ह़या सोज़ बे ग़ैरती को कब गवारा कर सकती थी ? आप बनी इस्राईल की इस बेह़याई से सख़्त नालां और इन्तिहाई बेज़ार थे इस लिये आप हमेशा या तो तन्हाई में या तहबन्द पहन कर ग़ुस्ल फ़रमाया करते थे। बनी इस्राईल ने जब येह देखा कि आप कभी भी नंगे हो कर ग़ुस्ल नहीं फ़रमाते तो ज़ालिमों ने आप पर बोहतान लगा दिया कि आप के बदन के अन्दरूनी ह़िस्से में या तो बरस का सफ़ेद दाग़ या कोई ऐसा ऐ़ब ज़रूर है कि जिस को छुपाने के लिये येह कभी बरह्ना नहीं होते और ज़ालिमों ने इस तोहमत का इस क़दर ए'लान और चर्चा किया कि हर कूचे व बाज़ार में इस का प्रोपेगन्डा फैल गया। इस मकरूह तोहमत की शोरिश का ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के क़ल्बे नाज़ुक पर बड़ा सदमा व रंज गुज़रा और आप बड़ी कोफ़्त और अज़िय्यत में पड़ गए। तो ख़ुदावन्दे क़ुद्दूस अपने मुक़द्दस कलीम के रंजो ग़म को भला कब गवारा फ़रमाता। और अपने एक बरगुज़ीदा रसूल पर एक ऐ़ब की तोहमत भला ख़ालिक़े आ़लम को कब और क्यूंकर और किस त़रह़ पसन्द हो सकती थी। अरह़मर्राह़िमीन ने आप की बराअत और बे ऐ़बी ज़ाहिर कर देने का एक ऐसा ज़रीआ़ पैदा फ़रमा दिया कि दम ज़दन में बनी इस्राईल के प्रोपेगन्डों और उन के शुकूक व शुब्हात के बादल छट गए और आप की बराअत और बे ऐ़बी का सूरज आफ़्ताबे आ़लम ताब से ज़ियादा रोशन व आश्कार हो गया।

और वोह यूं हुवा कि एक दिन आप पहाड़ों के दामनों में छुपे हुवे एक चश्मे पर ग़ुस्ल के लिये तशरीफ़ ले गए और येह देख कर कि यहां दूर दूर तक किसी इन्सान का नामो निशान नहीं है, आप अपने तमाम कपड़ों को एक पथ्थर पर रख कर और बिल्कुल बरह्ना बदन हो कर ग़ुस्ल

फ़रमाने लगे, गुस्ल के बा'द जब आप लिबास पहनने के लिये पथ्थर के पास पहुंचे तो क्या देखा कि वोह पथ्थर आप के कपड़ों को लिये हुवे सरपट भागा चला जा रहा है। येह देख कर ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام भी उस पथ्थर के पीछे पीछे दौड़ने लगे कि ثوبی حجر، ثوبی حجر । या'नी ऐ पथ्थर ! मेरा कपड़ा। ऐ पथ्थर मेरा कपड़ा। मगर येह पथ्थर बराबर भागता रहा। यहां तक कि शहर की बड़ी बड़ी सड़कों से गुज़रता हुवा गली कूचों में पहुंच गया। और आप भी बरह्ना बदन होने की ह़ालत में बराबर पथ्थर को दौड़ाते चले गए। इस त़रह़ बनी इस्राईल के हर छोटे बड़े ने अपनी आंखों से देख लिया कि सर से पाउं तक आप के मुक़द्दस बदन में कहीं भी कोई ऐ़ब नहीं है बल्कि आप के जिस्मे अक़्दस का हर ह़िस्सा हुस्नो जमाल में इस क़दर नुक़्त़ए कमाल को पहुंचा हुवा है कि आ़म इन्सानों में इस की मिषाल तक़रीबन मुह़ाल है। चुनान्चे, बनी इस्राईल के हर हर फ़र्द की ज़बान पर येही जुम्ला था कि وَاللّٰهِ مَابِمُوْسٰى مِنْ بَاس या'नी ख़ुदा की क़सम मूसा बिल्कुल ही बे ऐ़ब हैं।

जब येह पथ्थर पूरी त़रह़ ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام की बराअत का ए'लान कर चुका तो ख़ुद ब ख़ुद ठहर गया। आप ने जल्दी से अपना लिबास पहन लिया और उस पथ्थर को उठा कर अपने झोले में रख लिया।

(بخاری شریف، کتاب الانبیاء، باب ۳۰، ج۲، ص ۴۴۲،رقم ۳۴۰۴،وتفسیر الصاوی،ج۵،ص ۱۶۵۹،پ۲۲،الاحزاب:۶۹)

अल्लाह तआ़ला ने इस वाक़िए़ का ज़िक्र क़ुरआने मजीद में इस त़रह़ बयान फ़रमाया कि

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ اٰذَوْا مُوْسٰى فَبَرَّاَهُ اللّٰهُ مِمَّا قَالُوْا ؕ وَ كَانَ عِنْدَ اللّٰهِ وَجِيْهًا ﴿۶۹﴾ (پ۲۲،الاحزاب:۶۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- ऐ ईमान वालो उन जैसे न होना जिन्हों ने मूसा को सताया तो **अल्लाह** ने उसे बरी फ़रमा दिया इस बात से जो उन्हों ने कही। और मूसा **अल्लाह** के यहां आबरू वाला है।

दूसरा मो'जिज़ा :- "मैदाने तीह" में इसी पथ्थर पर ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने अपना अ़सा मार दिया था तो इस में से बारह चश्मे जारी

हो गए थे जिस के पानी को चालीस बरस तक बनी इस्राईल मैदाने तीह में इस्ति'माल करते रहे। जिस का पूरा वाक़िआ पहले गुज़र चुका है। कुरआने मजीद की आयत

فَقُلْنَا اضْرِبْ بِّعَصَاكَ الْحَجَرَ ؕ (پ ا ، البقرۃ:۶۰)

में "पथ्थर" से येही पथ्थर मुराद है।

एक शुबे का इज़ाला :- मो'जिज़ात के मुन्किरीन जो हर चीज़ को अपनी नाक़िस अक़्ल की ऐनक ही से देखा करते हैं। इस पथ्थर से पानी के चश्मों का जारी होना मुहाल क़रार दे कर इस मो'जिज़े का इन्कार करते हैं और कहते हैं कि हमारी अक़्ल इस को क़बूल नहीं कर सकती कि इतने छोटे से पथ्थर से बारह चश्मे जारी हो गए। हालांकि येह मुन्किरीन अपनी आंखों से देख रहे हैं कि बा'ज़ पथ्थरों में ख़ुदावन्दे तआ़ला ने येह तासीर पैदा फ़रमा दी है कि वोह बाल मूंड देते हैं, बा'ज़ पथ्थरों का येह असर है कि वोह सिर्के को तेज़ और तुर्श बना देते हैं, बा'ज़ पथ्थरों की येह ख़ासिय्यत है कि वोह लोहे को दूर से खींच लेते हैं, बा'ज़ पथ्थरों से मूज़ी जानवर भाग जाते है, बा'ज़ पथ्थरों से जानवरों का ज़हर उतर जाता है, बा'ज़ पथ्थर दिल की धड़कन के लिये तिर्याक़ है, बा'ज़ पथ्थरों को न आग जला सकती है न गर्म कर सकती है, बा'ज़ पथ्थरों से आग निकल पड़ती है, बा'ज़ पथ्थरों से आतशे फ़शां फट पड़ता है तो जब ख़ुदावन्दे कुद्दूस ने पथ्थरों में क़िस्म क़िस्म के असरात पैदा फ़रमा दिये हैं तो फिर इस में कौन सी ख़िलाफ़े अक़्ल और मुहाल बात है कि हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के इस पथ्थर में अल्लाह तआ़ला ने येह असर बख़्श दिया और इस में येह ख़ासिय्यत अ़ता फ़रमा दी कि वोह ज़मीन के अन्दर से पानी जज़्ब कर के चश्मों की शक्ल में बाहर निकालता रहे या इस पथ्थर में येह तासीर हो कि जो हवा इस पथ्थर से टकराती हो वोह पानी बन कर मुसलसल बहती रहे येह ख़ुदावन्दे क़ादिर व क़दीर की क़ुदरत से हरगिज़ हरगिज़ न कोई बईद है न मुहाल न ख़िलाफ़े अक़्ल। लिहाज़ा इस मो'जिज़े पर ईमान लाना ज़रूरिय्याते दीन में से है और इस का इन्कार कुफ़्र है कुरआने मजीद में है :

وَ اِنَّ مِنَ الْحِجَارَةِ لَمَا یَتَفَجَّرُ مِنْهُ الْاَنْهٰرُؕ-وَ اِنَّ مِنْهَا لَمَا یَشَّقَّقُ
فَیَخْرُجُ مِنْهُ الْمَآءُؕ-وَ اِنَّ مِنْهَا لَمَا یَهْبِطُ مِنْ خَشْیَةِ اللّٰهِؕ (پ ۱، البقرة:۷۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- और पथ्थरों में तो कुछ वोह हैं जिन से नदियां बह निकलती हैं और कुछ वोह हैं जो फट जाते हैं तो उन से पानी निकलता है और कुछ वोह हैं कि **अल्लाह** के डर से गिर पड़ते हैं।

बहर हाल पथ्थरों से पानी निकलना येह रोज़ाना का चश्मदीद मुशाहदा है तो फिर भला ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के पथ्थर से पानी के चश्मों का जारी हो जाना क्यूंकर ख़िलाफ़े अ़क़्ल और मुह़ाल क़रार दिया जा सकता है।

﴾3﴿ मैदाने तीह

जब फ़िरऔ़न दरियाए नील में ग़र्क़ हो गया और तमाम बनी इस्राईल मुसलमान हो गए और जब ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام को इत़्मीनान नसीब हो गया तो **अल्लाह** तआ़ला का हुक्म हुवा कि आप बनी इस्राईल का लश्कर ले कर अर्ज़े मुक़द्दस (बैतुल मुक़द्दस) में दाख़िल हो जाएं। उस वक़्त बैतुल मुक़द्दस पर अ़मालक़ा की क़ौम का क़ब्ज़ा था जो बदतरीन कुफ़्फ़ार थे और बहुत त़ाक़तवर जंगजू और निहायत ही ज़ालिम लोग थे चुनान्चे,

ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام छे लाख बनी इस्राईल को हमराह ले कर क़ौमे अ़मालक़ा से जिहाद के लिये रवाना हुवे मगर जब बनी इस्राईल बैतुल मुक़द्दस के क़रीब पहुंचे तो एक दम बुज़दिल हो गए और कहने लगे कि इस शहर में "जब्बारीन" (अ़मालक़ा) हैं जो बहुत ही ज़ोर आवर और ज़बरदस्त हैं। लिहाज़ा जब तक येह लोग शहर में रहेंगे हम हरगिज़ हरगिज़ शहर में दाख़िल नहीं होंगे बल्कि बनी इस्राईल ने ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام से यहां तक कह दिया कि ऐ मूसा आप और आप का ख़ुदा जा कर इस ज़बरदस्त क़ौम से जंग करें। हम तो यहीं बैठे रहेंगे। बनी इस्राईल की ज़बान से येह सुन कर ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام को बड़ा रंज व सदमा हुवा और आप ने बारी तआ़ला के दरबार में येह अ़र्ज़ किया कि

رَبِّ اِنِّیْ لَاۤ اَمْلِكُ اِلَّا نَفْسِیْ وَ اَخِیْ فَافْرُقْ بَیْنَنَا وَ بَیْنَ الْقَوْمِ الْفٰسِقِیْنَ ﴿۲۵﴾ (پ ٦، المائدة:۲۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- ऐ रब मेरे मुझे इख़्तियार नहीं मगर अपना और अपने भाई का तो तू हम को इन बे हुक्मों से जुदा रख।

इस दुआ पर **अल्लाह** तआला ने अपने गज़ब व जलाल का इज़्हार करते हुवे फ़रमाया कि

فَاِنَّهَا مُحَرَّمَةٌ عَلَيْهِمْ اَرْبَعِيْنَ سَنَةً ۚ يَتِيْهُوْنَ فِي الْاَرْضِ ؕ فَلَا تَاْسَ عَلَى الْقَوْمِ الْفٰسِقِيْنَ ﴿۲۶﴾ (پ۶، المائدۃ:۲۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- तो वोह ज़मीन उन पर ह़राम है चालीस बरस तक भटकते फिरें ज़मीन में तो तुम उन बे हुक्मों का अफ़्सोस न खाओ।

इस का नतीजा येह हुवा कि येह छे लाख बनी इस्राईल एक मैदान में चालीस बरस तक भटकते रहे मगर इस मैदान से बाहर न निकल सके। इसी मैदान का नाम "मैदाने तीह" है। इस मैदान में बनी इस्राईल के खाने के लिये "मन्न व सलवा" नाज़िल हुवा। और पथ्थर पर ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने अपना अ़सा मार दिया तो पथ्थर में से बारह चश्मे जारी हो गए। इस वाक़िए को कुरआने मजीद ने बार बार मुख़्तलिफ़ उ़न्वानों के साथ बयान फ़रमाया है। जिस में से सूरए माइदह में येह वाक़िआ क़दरे तफ़्सील के साथ मज़्कूर हुवा है जो बिलाशुबा एक अ़ज़ीमुश्शान वाक़िआ है जो बनी इस्राईल की नाफ़रमानियों और शरारतों की तअ़ज्जुब खे़ज़ और हैरत अंगेज़ दास्तान है मगर इस के बा वुजूद भी ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام की मह़ब्बत व शफ़्क़त बनी इस्राईल पर हमेशा रही कि जब येह लोग मैदाने तीह में भूके प्यासे हुवे तो ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने दुआ़ मांग कर इन लोगों के खाने के लिये मन्न व सलवा नाज़िल कराया। और पथ्थर पर अ़सा मार कर बारह चश्मे जारी करा दिये इस से ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के सब्र और आप के ह़िल्म और तह़म्मुल का अन्दाज़ा किया जा सकता है।

﴿4﴾ रोशन हाथ

ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام को जब **अल्लाह** तआला ने फ़िरऔ़न की हिदायत के लिये उस के दरबार में भेजा तो दो मो'जिज़ात आप को अ़ता

फ़रमा कर भेजा। एक "अ़सा" दूसरा "यदे बैज़ा" (रोशन हाथ) ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام अपने गिरेबान में हाथ डाल कर बाहर निकालते थे तो एक दम आप का हाथ रोशन हो कर चमकने लगता था, फिर जब आप अपना हाथ गिरेबान में डाल देते तो वोह अपनी अस्ली ह़ालत पर हो जाया करता था। इस मो'जिज़े को क़ुरआने अ़ज़ीम ने मुख़्तलिफ़ सूरतों में बार बार ज़िक्र फ़रमाया है। चुनान्चे, सूरए त़ाहा में इरशाद फ़रमाया कि

وَاضْمُمْ يَدَكَ اِلٰى جَنَاحِكَ تَخْرُجْ بَيْضَآءَ مِنْ غَيْرِ سُوْٓءٍ اٰيَةً اُخْرٰى ﴿۲۲﴾ لِنُرِيَكَ مِنْ اٰيٰتِنَا الْكُبْرٰى ﴿۲۳﴾ (پ۱۶، طٰهٰ:۲۲،۲۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- और अपना हाथ अपने बाज़ू से मिला ख़ूब सपेद निकलेगा बे किसी मरज़ के एक और निशानी कि हम तुझे अपनी बड़ी बड़ी निशानियां दिखाएं।

इसी मो'जिज़े का नाम "यदे बैज़ा" है जो एक अ़जीब और अ़ज़ीम मो'जिज़ा है। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْھُمَا ने फ़रमाया कि ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के दस्ते मुबारक से रात और दिन में आफ़्ताब की त़रह़ नूर निकलता था। (تفسیر خزائن العرفان، ص۵۶۳، پ۱۶، طٰهٰ۲۲)

﴾5﴿ मन्न व सलवा

जब ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام छे लाख बनी इस्राईल के अफ़राद के साथ मैदाने तीह में मुक़ीम थे तो **अल्लाह** तआ़ला ने उन लोगों के खाने के लिये आस्मान से दो खाने उतारे। एक का नाम "मन्न" और दूसरे का नाम "सलवा" था। मन्न बिलकुल सफ़ेद शहद की त़रह़ एक ह़ल्वा था। या सफ़ेद रंग की शहद ही थी जो रोज़ाना आस्मान से बारिश की त़रह़ बरस्ती थी और सलवा पकी हुई बटेरें थीं जो दख्खनी हवा के साथ आस्मान से नाज़िल हुवा करती थीं। **अल्लाह** तआ़ला ने बनी इस्राईल पर अपनी ने'मतों का शुमार कराते हुवे क़ुरआने मजीद में इरशाद फ़रमाया कि

وَاَنْزَلْنَا عَلَيْكُمُ الْمَنَّ وَالسَّلْوٰى ؕ (پ۱، البقرۃ:۵۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- और तुम पर मन्न और सलवा उतारा।

इस मन्न व सलवा के बारे में ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام का येह हुक्म था कि रोज़ाना तुम लोग इस को खा लिया करो और कल के लिये हरगिज़ हरगिज़ इस का ज़ख़ीरा मत करना। मगर बा'ज़ ज़ईफ़ुल ए'तिक़ाद लोगों को येह डर लगने लगा कि अगर किसी दिन मन्न व सलवा न उतरा तो हम लोग इस बे आबो गियाह, चटयल मैदान में भूके मर जाएंगे। चुनान्चे, उन लोगों ने कुछ छुपा कर कल के लिये रख लिया तो नबी की नाफ़रमानी से ऐसी नुहूसत फैल गई कि जो कुछ लोगों ने कल के लिये जम्अ़ किया था वोह सब सड़ गया और आइन्दा के लिये इस का उतरना बन्द हो गया इसी लिये हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि बनी इस्राईल न होते तो न खाना कभी ख़राब होता और न गोश्त सड़ता, खाने का ख़राब होना और गोश्त का सड़ना उसी तारीख़ से शुरूअ़ हुवा। वरना इस से पहले न खाना बिगड़ता था न गोश्त सड़ता था। (تفسیر روح البیان،ج۱،پ۱، البقرۃ۵۷)

﴾6﴿ बारह हज़ार यहूदी बन्दर हो गए

रिवायत है कि ह़ज़रते दावूद عَلَیْہِ السَّلَام की क़ौम के सत्तर हज़ार आदमी "उ़क़्बा" के पास समुन्दर के किनारे "ईला" नामी गाऊं में रहते थे और येह लोग बड़ी फ़राख़ी और ख़ुशहाली की ज़िन्दगी बसर करते थे। **अल्लाह** तआ़ला ने उन लोगों का इस त़रह़ इम्तिह़ान लिया कि सनीचर के दिन मछली का शिकार उन लोगों पर ह़राम फ़रमा दिया और हफ़्ते के बाक़ी दिनों में शिकार ह़लाल फ़रमा दिया मगर इस त़रह़ उन लोगों को आज़माइश में मुब्तला फ़रमा दिया कि सनीचर के दिन बे शुमार मछलियां आती थीं और दूसरे दिनों में नहीं आती थीं तो शैत़ान ने उन लोगों को येह ह़ीला बता दिया कि समुन्दर से कुछ नालियां निकाल कर ख़ुश्की में चन्द हौज़ बना लो और जब सनीचर के दिन उन नालियों के ज़रीए़ मछलियां हौज़ में आ जाएं तो नालियों का मुंह बन्द कर दो। और उस दिन शिकार न करो बल्कि दूसरे दिन आसानी के साथ उन मछलियों को पकड़ लो। उन लोगों को येह शैत़ानी ह़ीला बाज़ी पसन्द आ गई और उन लोगों ने येह नहीं सोचा कि जब मछलियां नालियों और हौज़ों में मुक़य्यद हो गईं तो येही

उन का शिकार हो गया। तो सनीचर ही के दिन शिकार करना पाया गया जो उन के लिये ह़राम था। इस मौक़अ़ पर इन यहूदियों के तीन गुरौह हो गए।

﴾1﴿ कुछ लोग ऐसे थे जो शिकार के इस शैत़ानी ह़ीले से मन्अ़ करते रहे और नाराज़ व बेज़ार हो कर शिकार से बाज़ रहे।

﴾2﴿ और कुछ लोग इस काम को दिल से बुरा जान कर ख़ामोश रहे दूसरों को मन्अ़ न करते थे बल्कि मन्अ़ करने वालों से येह कहते थे कि तुम लोग ऐसी क़ौम को क्यूं नसीह़त करते हो जिन्हें **अल्लाह** तआ़ला हलाक करने वाला या सख़्त सज़ा देने वाला है।

﴾3﴿ और कुछ वोह सरकश व नाफ़रमान लोग थे जिन्हों ने हुक्मे ख़ुदावन्दी की ए'लानिय्या मुख़ालफ़त की और शैत़ान की ह़ीला बाज़ी को मान कर सनीचर के दिन शिकार कर लिया और उन मछलियों को खाया और बेचा भी।

जब नाफ़रमानों ने मन्अ़ करने के बा वुजूद शिकार कर लिया तो मन्अ़ करने वाली जमाअ़त ने कहा कि अब हम इन मा'सिय्यत कारों से कोई मेल मिलाप न रखेंगे चुनान्चे, उन लोगों ने गाऊं को तक़्सीम कर के दरमियान में एक दीवार बना ली और आमदो रफ़्त का एक अलग दरवाज़ा भी बना लिया। ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام ने ग़ज़ब नाक हो कर शिकार करने वालों पर ला'नत फ़रमा दी। इस का अषर येह हुवा कि एक दिन ख़त़ाकारों में से कोई बाहर नहीं निकला। तो उन्हें देखने के लिये कुछ लोग दीवार पर चढ़ गए तो क्या देखा कि वोह सब बन्दरों की सूरत में मस्ख़ हो गए हैं। अब लोग उन मुजरिमों का दरवाज़ा खोल कर अन्दर दाख़िल हुवे तो वोह बन्दर अपने रिश्तेदारों को पहचानते थे और उन के पास आ कर उन के कपड़ों को सूंघते थे और ज़ारो ज़ार रोते थे, मगर लोग उन बन्दर बन जाने वालों को नहीं पहचानते थे। उन बन्दर बन जाने वालों की ता'दाद बारह हज़ार थी। येह सब तीन दिन तक ज़िन्दा रहे और इस दरमियान में कुछ भी खा पी न सके बल्कि यूं ही भूके प्यासे सब के सब हलाक हो गए। शिकार से मन्अ़ करने वाला गुरौह हलाकत से सलामत रहा। और सह़ीह़

क़ौल येह है कि दिल से बुरा जान कर ख़ामोश रहने वालों को भी **अल्लाह** तआ़ला ने हलाकत से बचा लिया। (تفسیرالصاوی، ج ۱،ص ۷۲،پ ۱،البقرۃ:۶۵)

इस वाक़िए का इज्माली बयान तो सूरए बक़रह की इस आयत में है :

وَلَقَدۡ عَلِمۡتُمُ الَّذِیۡنَ اعۡتَدَوۡا مِنۡکُمۡ فِی السَّبۡتِ فَقُلۡنَا لَہُمۡ کُوۡنُوۡا قِرَدَۃً خٰسِئِیۡنَ ﴿۶۵﴾ (پ ۱،البقرۃ:۶۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :– और बेशक ज़रूर तुम्हें मा'लूम है तुम में के वोह जिन्हों ने हफ़्ते में सरकशी की तो हम ने उन से फ़रमाया कि हो जाओ बन्दर धुतकारे हुवे।

और मुफ़स्सल वाक़िआ़ सुरए आ'राफ़ में है जिस का **तर्जमा** येह है :

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :–और उन से ह़ाल पूछो उस बस्ती का कि दरिया कनारे थी। जब वोह हफ़्ते के बारे में ह़द से बढ़ते। जब हफ़्ते के दिन उन की मछलियां पानी पर तैरती उन के सामने आतीं और जो दिन हफ़्ते का न होता न आतीं इस त़रह़ हम उन्हें आज़माते थे उन की बे हुक्मी के सबब और जब उन में से एक गुरौह ने कहा क्यूं नसीह़त करते हो उन लोगों को जिन्हें **अल्लाह** हलाक करने वाला है या उन्हें सख़्त अ़ज़ाब देने वाला। बोले तुम्हारे रब के हुज़ूर मा'ज़िरत को और शायद उन्हें डर हो फिर जब वोह भुला बैठे जो नसीह़त उन्हें हुई थी हम ने बचा लिये वोह जो बुराई से मन्अ़ करते थे। और ज़ालिमों को बुरे अ़ज़ाब में पकड़ा बदला उन की नाफ़रमानी का। फिर जब उन्हों ने मुमानअ़त के हुक्म से सरकशी की हम ने उन से फ़रमाया हो जाओ बन्दर दुतकारे हुवे। (پ ۹،الاعراف:۱۶۳ تا ۱۶۶)

दर्से हिदायत :– मा'लूम हुवा कि शैत़ानी ह़ीला बाज़ियों में पड़ कर **अल्लाह** तआ़ला के अह़काम की नाफ़रमानियों का अन्जाम कितना बुरा और किस क़दर ख़त़रनाक होता है। और ख़ुदा के नबी जिन बद नसीबों पर ला'नत फ़रमा दें वोह कैसे हौलनाक अ़ज़ाबे इलाही में गिरिफ़्तार हो कर दुन्या से नैसतो नाबूद हो कर अ़ज़ाबे नार में गिरिफ़्तार हो जाते हैं और दोनों जहां में ज़लीलो ख़्वार हो जाते हैं। (نعوذ باللہ منہ)

अस्हाबे ईला के इस दिल हिला देने वाले वाक़िए में हर मुसलमान के लिये बहुत बड़ी इब्रतों और नसीहतों का सामान है। काश ! इस वाक़िए से मुसलमानों के क़ुलूब में ख़ौफ़े ख़ुदावन्दी की लहर पैदा हो जाए और वोह अल्लाह व रसूल (عَزَّوَجَلَّ وصَلَّی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلَّم) की नाफ़रमानियों की पगडन्डियों में भटकने से मुंह मोड़ कर सिराते मुस्तक़ीम की शाहराह पर चल पड़ें और दोनों जहानों की सर बुलन्दियों से सरफ़राज़ हो कर ए'ज़ाज़ व इकराम की सल्तनत के ताजदार बन जाएं।

﴾7﴿ दुन्या की सब से क़ीमती गाए

येह बहुत ही अहम और निहायत ही शानदार क़ुरआनी वाक़िआ है। और इसी वाक़िए की वजह से क़ुरआने मजीद की इस सूरह का नाम "सूरए बक़रह" (गाए वाली सूरह) रखा गया है।

इस का वाक़िआ येह है कि बनी इस्राईल में एक बहुत ही नेक और सालेह बुज़ुर्ग थे और उन का एक ही बच्चा था जो नाबालिग़ था। और उन के पास फ़क़त एक गाए की बछिया थी। उन बुज़ुर्ग ने अपनी वफ़ात के क़रीब उस बछिया को जंगल में ले जा कर एक झाड़ी के पास येह कह कर छोड़ दिया कि या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मैं इस बछिया को उस वक़्त तक तेरी अमानत में देता हूं कि मेरा बच्चा बालिग़ हो जाए। इस के बा'द उन बुज़ुर्ग की वफ़ात हो गई और बछिया चन्द दिनों में बड़ी हो कर दरमियानी उम्र की हो गई और बच्चा जवान हो कर अपनी मां का बहुत ही फ़रमां बरदार और इन्तिहाई नेकूकार हुवा। उस ने अपनी रात को तीन हिस्सों में तक़्सीम कर रखा था। एक हिस्से में सोता था, एक हिस्से में इबादत करता था, और एक हिस्से में अपनी मां की ख़िदमत करता था। और वोह रोज़ाना सुब्ह को जंगल से लकड़ियां काट कर लाता और उन को फ़रोख़्त कर के एक तिहाई रक़म सदक़ा कर देता और एक तिहाई अपनी ज़ात पर ख़र्च करता और एक तिहाई रक़म अपनी वालिदा को दे देता।

एक दिन लड़के की मां ने कहा कि मेरे प्यारे बेटे ! तुम्हारे बाप ने मीराष में एक बछिया छोड़ी थी जिस को उन्हों ने फ़ुलां झाड़ी के पास

जंगल में ख़ुदा (عَزَّوَجَلَّ) की अमानत में सोंप दिया था। अब तुम उस झाड़ी के पास जा कर यूं दुआ़ मांगो कि ऐ ह़ज़रते इब्राहीम व ह़ज़रते इस्माईल व ह़ज़रते इस्ह़ाक़ (عَلَیۡہِمُ السَّلَام) के ख़ुदा ! तू मेरे बाप की सोंपी हुई अमानत मुझे वापस दे दे और उस बछिया की निशानी येह है कि वोह पीले रंग की है। और उस की खाल इस त़रह़ चमक रही होगी कि गोया सूरज की किरनें उस में से निकल रही हैं। येह सुन कर लड़का जंगल में उस झाड़ी के पास गया और दुआ़ मांगी तो फ़ौरन ही वोह गाए दौड़ती हुई आ कर उस के पास खड़ी हो गई और येह उस को पकड़ कर घर लाया तो उस की मां ने कहा। बेटा तुम इस गाए को ले जा कर बाज़ार में तीन दीनार में फ़रोख़्त कर डालो। लेकिन किसी गाहक को बिग़ैर मेरे मश्वरे के मत देना। उन दिनों बाज़ार में गाए की क़ीमत तीन दीनार ही थी। बाज़ार में एक गाहक आया जो दर ह़क़ीक़त फ़िरिश्ता था। उस ने कहा कि मैं गाए की क़ीमत तीन दीनार से ज़ियादा दूंगा मगर तुम मां से मश्वरा किये बिग़ैर गाए मेरे हाथ फ़रोख़्त कर डालो। लड़के ने कहा कि तुम ख़्वाह कितनी भी ज़ियादा क़ीमत दो मगर मैं अपनी मां से मश्वरा किये बिग़ैर हरगिज़ हरगिज़ इस गाए को नहीं बेचूंगा। लड़के ने मां से सारा माजरा बयान किया तो मां ने कहा कि येह गाहक शायद कोई फ़िरिश्ता हो। तो ऐ बेटे ! तुम उस से मश्वरा करो कि हम इस गाए को अभी फ़रोख़्त करें या न करें। चुनान्चे, उस लड़के ने बाज़ार में जब उस गाहक से मश्वरा किया तो उस ने कहा कि अभी तुम इस गाए को फ़रोख़्त न करो। आइन्दा इस गाए को ह़ज़रते मूसा عَلَیۡہِ السَّلَام के लोग ख़रीदेंगे तो तुम इस गाए के चमड़े में सोना भर कर इस की क़ीमत त़लब करना तो वोह लोग इतनी ही क़ीमत दे कर ख़रीदेंगे।

चुनान्चे, चन्द ही दिनों के बा'द बनी इस्राईल के एक बहुत मालदार आदमी को जिस का नाम आ़मील था। उस के चचा के दोनों लड़कों ने उस को क़त्ल कर दिया। और उस की लाश को एक वीराने में डाल दिया। सुब्ह़ को क़ातिल की तलाश शुरूअ़ हुई मगर जब कोई सुराग़ न मिला तो कुछ लोग ह़ज़रते मूसा عَلَیۡہِ السَّلَام की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवे और क़ातिल का पता पूछा तो आप ने फ़रमाया कि तुम लोग एक गाए

ज़ब्ह़ करो और उस की ज़बान या दुम की हड्डी से लाश को मारो तो वोह ज़िन्दा हो कर खुद ही अपने क़ातिल का नाम बता देगा। येह सुन कर बनी इस्राईल ने गाए के रंग, उस की उ़म्र वग़ैरा के बारे में बह़्ष व कुरैद शुरूअ़ कर दी। और बिल आख़िर जब वोह अच्छी त़रह़ समझ गए कि फ़ुलां क़िस्म की गाए चाहिये तो ऐसी गाए की तलाश शुरूअ़ कर दी यहां तक कि जब येह लोग उस लड़के की गाए के पास पहुंचे तो हू बहू येह ऐसी ही गाए थी जिस की इन लोगों को ज़रूरत थी। चुनान्चे, इन लोगों ने गाए को उस के चमड़े में भर कर सोना उस की क़ीमत दे कर ख़रीदा और ज़ब्ह़ कर के उस की ज़बान या दुम की हड्डी से मक़्तूल की लाश को मारा तो वोह ज़िन्दा हो कर बोल उठा कि मेरे क़ातिल मेरे चचा के दोनों लड़के हैं जिन्हों ने मेरे माल के लालच में मुझ को क़त्ल कर दिया है येह बता कर फिर वोह मर गया। चुनान्चे, उन दोनों क़ातिलों को क़िसास में क़त्ल कर दिया गया और मर्दे सालेह़ का लड़का जो अपनी मां का फ़रमां बरदार था कषीर दौलत से माला माल हो गया। (تفسیر الصاوی،ج ۱،ص ۷۵،پ ۱،البقرۃ:۷۱)

इस पूरे मज़्मून को क़ुरआने मजीद की मुक़द्दस आयतों में इस त़रह़ बयान फ़रमाया गया है :

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- और जब मूसा ने अपनी क़ौम से फ़रमाया : ख़ुदा तुम्हें हुक्म देता है कि एक गाए ज़ब्ह़ करो, बोले कि आप हमें मस्ख़रा बनाते हैं। फ़रमाया : ख़ुदा की पनाह कि मैं जाहिलों से होऊं। बोले : अपने रब से दुआ़ कीजिये कि वोह हमें बता दे गाए कैसी। कहा : वोह फ़रमाता है कि वोह एक गाए है न बूढ़ी और न औसर बल्कि इन दोनों के बीच में, तो करो जिस का तुम्हें हुक्म होता है। बोले अपने रब से दुआ़ कीजिये हमें बता दे उस का रंग क्या है ? कहा : वोह फ़रमाता है, वोह एक पीली गाए है। जिस की रंगत डहडहाती देखने वालों को खुशी देती। बोले : अपने रब से दुआ़ कीजिये कि हमारे लिये साफ़ बयान करे वोह गाए कैसी है बेशक गाइयों में हम को शुबा पड़ गया और अल्लाह चाहे तो हम राह पा जाएंगे। कहा : वोह फ़रमाता है कि वोह एक गाए है जिस से ख़िदमत नहीं ली जाती कि ज़मीन जोते और न खेती को पानी दे,

बे ऐब है जिस में कोई दाग़ नहीं। बोले : अब आप ठीक बात लाए। तो उसे ज़ब्ह़ किया और ज़ब्ह़ करते मा'लूम न होते थे। और जब तुम ने एक ख़ून किया तो एक दूसरे पर इस की तोहमत डालने लगे। और अल्लाह को ज़ाहिर करना था जो तुम छुपाते थे। तो हम ने फ़रमाया उस मक़्तूल को इस गाए का एक टुकड़ा मारो। अल्लाह यूंही मुर्दे जिलाएगा और तुम्हें अपनी निशानियां दिखाता है कि कहीं तुम्हें अ़क़्ल हो। (پ ١، البقرة:٦٧تا٨٣)

दर्से हिदायत :– इस वाक़िए से बहुत सी इ़ब्रत अंगेज़ और नसीह़त ख़ैज़ बातें और अह़काम मा'लूम हुवे इन में से चन्द येह हैं जो याद रखने के क़ाबिल हैं :

﴾1﴿ खुदा के नेक बन्दों के छोड़े हुवे माल में बड़ी ख़ैरो बरकत होती है। देख लो कि उस मर्दे सालेह़ ने सिर्फ़ एक बछिया छोड़ कर वफ़ात पाई थी मगर अल्लाह तआ़ला ने इस में इतनी बरकत अ़त़ा फ़रमाई कि इन के वारिषों को इस एक बछिया के ज़रीए बेशुमार दौलत मिल गई।

﴾2﴿ उस मर्दे सालेह़ ने अवलाद पर शफ़्क़त करते हुवे बछिया को अल्लाह की अमानत में सोंपा था तो इस से मा'लूम हुवा कि अवलाद पर शफ़्क़त रखना और अवलाद के लिये कुछ माल छोड़ जाना येह अल्लाह वालों का त़रीक़ा है।

﴾3﴿ मां बाप की फ़रमां बरदारी और ख़िदमत गुज़ारी करने वालों को खुदावन्दे करीम ग़ैब से बे शुमार रिज़्क़ का सामान अ़त़ा फ़रमा देता है। देख लो कि उस यतीम लड़के को मां की ख़िदमत और फ़रमां बरदारी की बदौलत अल्लाह तआ़ला ने किस क़दर साहिबे माल और खुश ह़ाल बना दिया।

﴾4﴿ खुदावन्दे कुद्दूस के अह़काम में बह़ष और कुरैद करना मुसीबतों का सबब हुवा करता है। देख लो बनी इस्राईल को एक गाए ज़ब्ह़ करने का हुक्म हुवा था। वोह कोई सी भी एक गाए ज़ब्ह़ कर देते तो फ़र्ज़ अदा हो जाता मगर उन लोगों ने जब बह़ष और कुरैद शुरूअ़ कर दी कि कैसी गाए हो ? कैसा रंग हो ? कितनी उ़म्र हो ? तो मुसीबत में पड़ गए कि उन्हें एक ऐसी गाए ज़ब्ह़ करनी पड़ी जो बिल्कुल नायाब थी। इसी लिये उस

की क़ीमत इतनी ज़ियादा अदा करनी पड़ी कि दुन्या में किसी गाए की इतनी क़ीमत न हुई, न आइन्दा होने की उम्मीद है।

﴾5﴿ जो अपना माल **अल्लाह** तआ़ला की अमानत में सोंप दे **अल्लाह** तआ़ला उस की हि़फ़ाज़त फ़रमाता है और उस में बे हिसाब ख़ैरो बरकत अ़ता फ़रमा देता है।

﴾6﴿ जो अपने अहलो इ़याल को **अल्लाह** तआ़ला के सिपुर्द फ़रमा दे **अल्लाह** तआ़ला उस के अहलो इ़याल की ऐसी परवरिश फ़रमाता है कि जिस को कोई सोच भी नहीं सकता।

﴾7﴿ अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते अ़ली كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم ने फ़रमाया कि जो पीले रंग का जूता पहनेगा वोह हमेशा ख़ुश रहेगा। और उस को ग़म बहुत कम होगा। क्यूंकि **अल्लाह** तआ़ला ने पीली गाए के लिये येह फ़रमाया कि "تَسُرُّ النّٰظِرِیْنَ ﴿۶۹﴾" कि वोह देखने वालों को ख़ुश कर देती है।

(تفسیر روح البیان،ج۱،ص۱۶۰،پ۱،البقرۃ:۶۹)

﴾8﴿ इस से मा'लूम हुवा कि क़ुरबानी का जानवर जिस क़दर भी ज़ियादा बे ऐब और ख़ूब सूरत और क़ीमती हो उसी क़दर ज़ियादा बेहतर है। (وَاللّٰہُ تَعَالٰی اَعلم)

﴾8﴿ सत्तर हज़ार मुर्दे ज़िन्दा हो गए !

येह ह़ज़रते हिज़क़ील عَلَیْہِ السَّلَام की क़ौम का एक बड़ा ही इ़ब्रत ख़ैज़ और इन्तिहाई नसीह़त आमेज़ वाक़िआ़ है जिस को ख़ुदावन्दे क़ुद्दूस ने क़ुरआने मजीद की सूरए बक़रह में बयान फ़रमाया है।

ह़ज़रते हिज़क़ील عَلَیْہِ السَّلَام **कौन थे ?** :– येह ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام के तीसरे ख़लीफ़ा हैं जो मन्सबे नबुव्वत पर सरफ़राज़ किये गए। ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام की वफ़ाते अक़्दस के बा'द आप के ख़लीफ़ए अव्वल ह़ज़रते यूशअ़ बिन नून عَلَیْہِ السَّلَام हुवे जिन को **अल्लाह** तआ़ला ने नबुव्वत अ़ता फ़रमाई। इन के बा'द ह़ज़रते कालिब बिन यूह़ना عَلَیْہِ السَّلَام ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام की ख़िलाफ़त से सरफ़राज़ हो कर मर्तबए नबुव्वत पर फ़ाइज़ हुवे। फिर इन के बा'द ह़ज़रते हिज़क़ील عَلَیْہِ السَّلَام ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام के जानशीन और नबी हुवे।

हज़रते हिज़्क़ील عَلَيْهِ السَّلَام का लक़ब इब्नुल अ़जूज़ (बुढ़िया के बेटे) है। और आप ज़ुल किफ़्ल भी कहलाते हैं। "इब्नुल अ़जूज़" कहलाने की वजह येह है कि येह उस वक़्त पैदा हुवे थे जब कि इन की वालिदा माजिदा बहुत बूढ़ी हो चुकी थीं। और आप का लक़ब ज़ुल किफ़्ल इस लिये हुवा कि आप ने अपनी कफ़ालत में ले कर सत्तर अम्बियाए किराम को क़त्ल से बचा लिया था जिन के क़त्ल पर यहूदी क़ौम आमादा हो गई थी। फिर येह खुद भी खुदा के फ़ज़्लो करम से यहूदियों की तल्वार से बच गए और बरसों ज़िन्दा रह कर अपनी क़ौम को हिदायत फ़रमाते रहे। (تفسیر الصاوی،ج۱،ص۲۰۶،پ۲،البقرۃ۲۴۳)

मुर्दों के ज़िन्दा होने का वाक़िआ :- इस का वाक़िआ़ येह है कि बनी इस्राईल की एक जमाअ़त जो हज़रते हिज़्क़ील عَلَيْهِ السَّلَام के शहर में रहती थी, शहर में ताऊ़न की वबा फेल जाने से इन लोगों पर मौत का ख़ौफ़ सुवार हो गया। और येह लोग मौत के डर से सब के सब शहर छोड़ कर एक जंगल में भाग गए और वहीं रहने लगे तो अल्लाह तआ़ला को इन लोगों की येह ह़रकत बहुत ज़ियादा नापसन्द हुई। चुनान्चे, अल्लाह तआ़ला ने एक अ़ज़ाब के फ़िरिश्ते को उस जंगल में भेज दिया। जिस ने एक पहाड़ की आड़ में छुप कर और चीख़ मार कर बुलन्द आवाज़ से येह कह दिया कि "**موتوا**" या'नी तुम सब मर जाओ और इस महीब और भयानक चीख़ को सुन कर बिग़ैर किसी बीमारी के बिल्कुल अचानक येह सब के सब मर गए जिन की ता'दाद सत्तर हज़ार थी। इन मुर्दों की ता'दाद इस क़दर ज़ियादा थी कि लोग इन के कफ़न व दफ़्न का कोई इन्तिज़ाम नहीं कर सके और इन मुर्दों की लाशें खुले मैदान में बे गौरो कफ़न आठ दिन तक पड़ी पड़ी सड़ने लगीं और बे इन्तिहा ता'फ़्फ़ुन और बदबू से पूरे जंगल बल्कि इस के अत़राफ़ में बद बू पैदा हो गई। कुछ लोगों ने इन की लाशों पर रह़्म खा कर चारों त़रफ़ से दीवार उठा दी ताकि येह लाशें दरिन्दों से मह़फ़ूज़ रहें।

कुछ दिनों के बा'द ह़ज़रते ह़िज़्क़ील عَلَيْهِ السَّلَام का इस जंगल में उन लाशों के पास से गुज़र हुवा तो अपनी क़ौम के सत्तर हज़ार इन्सानों की इस मौते नागहानी और बे गौरो कफ़न लाशों की फ़िरावानी देख कर रंजो ग़म से इन का दिल भर गया। आब दीदा हो गए और बारी तआ़ला के दरबार में दुख भरे दिल से गिड़ गिड़ा कर दुआ़ मांगने लगे कि या **अल्लाह** येह मेरी क़ौम के अफ़राद थे जो अपनी नादानी से येह ग़लती़ कर बैठे कि मौत के डर से शहर छोड़ कर जंगल में आ गए। येह सब मेरे शहर के बाशिन्दे हैं इन लोगों से मुझे उन्स था और येह लोग मेरे दुख सुख के शरीक थे। अफ़्सोस कि मेरी क़ौम हलाक हो गई और मैं बिल्कुल अकेला रह गया। ऐ मेरे रब येह वोह क़ौम थी जो तेरी ह़म्द करती थी और तेरी तौह़ीद का ए'लान करती थी और तेरी किब्रियाई का ख़ुत़बा पढ़ती थी।

आप बड़े सोज़े दिल के साथ दुआ़ में मश्ग़ूल थे कि अचानक आप पर येह वह़्य उतर पड़ी कि ऐ ह़िज़्क़ील (عَلَيْهِ السَّلَام) आप इन की बिखरी हुई हड्डियों से फ़रमा दीजिये कि ऐ हड्डियो ! बेशक **अल्लाह** तआ़ला तुम को हुक्म फ़रमाता है कि तुम इकठ्ठा हो जाओ। येह सुन कर बिखरी हुई हड्डियों में ह़रकत पैदा हुई और हर आदमी की हड्डियां जम्अ़ हो कर हड्डियों के ढांचे बन गए। फिर येह वह़्य आई कि ऐ ह़िज़्क़ील (عَلَيْهِ السَّلَام) आप फ़रमा दीजिये के ऐ हड्डियो ! तुम को **अल्लाह** का येह हुक्म है कि तुम गोश्त पहन लो। येह कलाम सुनते ही फ़ौरन हड्डियों के ढांचों पर गोश्त पोस्त चढ़ गए। फिर तीसरी बार येह वह़्य नाज़िल हुई। ऐ ह़िज़्क़ील अब येह कह दो कि ऐ मुर्दो ! ख़ुदा के हुक्म से तुम सब उठ कर खड़े हो जाओ। चुनान्चे, आप ने येह फ़रमा दिया तो आप की ज़बान से येह जुम्ला निकलते ही सत्तर हज़ार लाशें दम ज़दन में नागहां येह पढ़ते हुवे खड़ी हो गईं कि سُبْحَانَكَ اللّٰهُمَّ وَبِحَمْدِكَ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ फिर येह सब लोग जंगल से रवाना हो कर अपने शहर में आ कर दोबारा आबाद हो गए। और अपनी उ़म्रों की मुद्दत भर ज़िन्दा रहे लेकिन इन लोगों पर इस मौत का इतना निशान बाक़ी रह गया कि इन की अवलाद के जिस्मों से सड़ी

हुई लाश की बद बू बराबर आती रही और येह लोग जो कपड़ा भी पहनते थे वोह कफ़न की सूरत में हो जाता था। और क़ब्र में जिस त़रह़ कफ़न मेला हो जाता था ऐसा ही मेलापन इन के कपड़ों पर नुमूदार हो जाता था। चुनान्चे, येह अषरात आज तक इन यहूदियों में पाए जाते हैं जो इन लोगों की नस्ल से बाक़ी रह गए हैं। (تفسیر روح البیان، ج۱، ص۳۷۸، پ۲، البقرۃ:۲۴۳)

येह अ़जीबो ग़रीब वाक़िआ़ क़ुरआने मजीद की सूरए बक़रह में खुदावन्दे क़ुद्दूस ने इस त़रह़ बयान फ़रमाया कि

اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِیْنَ خَرَجُوْا مِنْ دِیَارِهِمْ وَ هُمْ اُلُوْفٌ حَذَرَ الْمَوْتِ۪ فَقَالَ لَهُمُ اللّٰهُ مُوْتُوْا۫ ثُمَّ اَحْیَاهُمْؕ اِنَّ اللّٰهَ لَذُوْ فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَ لٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا یَشْكُرُوْنَ(۲۴۳) (پ۲، البقرۃ:۲۴۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- ऐ मह़बूब क्या तुम ने न देखा था उन्हें जो अपने घरों से निकले और वोह हज़ारों थे मौत के डर से तो **अल्लाह** ने उन से फ़रमाया मर जाओ फिर उन्हें ज़िन्दा फ़रमा दिया बेशक **अल्लाह** लोगों पर फ़ज़्ल करने वाला है मगर अकषर लोग नाशुक्रे हैं।

दर्से हिदायत :- बनी इस्राईल के इस मह़य्यिरुल उ़क़ूल वाक़िए से मुन्दरिजए ज़ैल हिदायात मिलती हैं :

﴾1﴿ आदमी मौत के डर से भाग कर अपनी जान नहीं बचा सकता। लिहाज़ा मौत से भागना बिल्कुल ही बेकार है। **अल्लाह** तआ़ला ने जो मौत मुक़द्दर फ़रमा दी है वोह अपने वक़्त पर ज़रूर आएगी न एक सेकन्ड अपने वक़्त से पहले आ सकती है न एक सेकन्ड बा'द आएगी लिहाज़ा बन्दों को लाज़िम है कि रिज़ाए इलाही पर राज़ी रह कर साबिरो शाकिर रहें और ख़्वाह कितनी ही वबा फेले या घुम्सान का रन पड़े इत़्मीनान व सुकून का दामन अपने हाथ से न छोड़ें और येह यक़ीन रखें कि जब तक मेरी मौत नहीं आती मुझे कोई नहीं मार सकता और न मैं मर सकता हूं और जब मेरी मौत आ जाएगी तो मैं कुछ भी करूं, कहीं भी चला जाऊं, भाग जाऊं या डट कर खड़ा रहूं मैं किसी ह़ाल में बच नहीं सकता।

﴾2﴿ इस आयत में ख़ास तौर पर मुजाहिदीन को हिदायत की गई है कि जिहाद से गुरैज़ करना या मैदाने जंग छोड़ कर भाग जाना हरगिज़ मौत को दफ़्अ नहीं कर सकता लिहाज़ा मुजाहिदीन को मैदाने जंग में दिल मज़बूत कर के डटे रहना चाहिये और येह यक़ीन रखना चाहिये कि मैं मौत के वक़्त से पहले नहीं मर सकता, न कोई मुझे मार सकता है। येह अक़ीदा रखने वाला इस क़दर बहादुर और शेर दिल हो जाता है कि ख़ौफ़ और बुज़दिली कभी उस के क़रीब नहीं आती और उस के पाए इस्तिक़लाल में कभी बाल बराबर भी कोई लग़्ज़िश नहीं आ सकती। इस्लाम का बख़्शा हुवा येही वोह मुक़द्दस अक़ीदा है कि जिस की बदौलत मुजाहिदीने इस्लाम हज़ारों कुफ़्फ़ार के मुक़ाबले में तन्हा पहाड़ की त़रह़ जम कर जंग करते थे। यहां तक कि फ़त्हे मुबीन इन के क़दमों का बोसा लेती थी। और वोह हर जंग में मुज़फ़्फ़र व मन्सूर हो कर अज्रे अ़ज़ीम और माले ग़नीमत की दौलत से माला माल हो कर अपने घरों में इस ह़ाल में वापस आते थे कि उन के जिस्मों पर ज़ख़्मों की कोई ख़राश भी नहीं होती थी और वोह कुफ़्फ़ार के दल बादल लश्करों का सफ़ाया कर देते थे। शाइ़रे मशरिक़ ने इस मन्ज़र की तस्वीर कशी करते हुवे किसी मुजाहिदे इस्लाम की ज़बान से येह तराना सुनाया है कि

टल न सकते थे अगर जंग में अड़ जाते थे
पाउं शेरों के भी मैदां से उखड़ जाते थे
ह़क़ से सरकश हुवा कोई तो बिगड़ जाते थे
तैग़ क्या चीज़ है? हम तोप से लड़ जाते थे
नक़्श तौह़ीद का हर दिल पे बिठाया हम ने
ज़ेरे ख़न्जर भी येह पैग़ाम सुनाया हम ने

(कुल्लियाते इक़्बाल, बांगे दरा, स. 164)

लत़ीफ़ा :- मन्क़ूल है कि बनू उमय्या का बादशाह अ़ब्दुल मलिक बिन मरवान जब मुल्के शाम में ताऊ़न की वबा फेली तो मौत के डर से घोड़े पर सुवार हो कर अपने शहर से भाग निकला और साथ में अपने ख़ास

गुलाम और कुछ फ़ौज भी ले ली और वोह ताऊ़न के डर से इस क़दर ख़ाइफ़ और हरासां था कि ज़मीन पर पाउं नहीं रखता था बल्कि घोड़े की पुश्त पर सोता था। दौराने सफ़र एक रात उस को नींद नहीं आई। तो उस ने अपने गुलाम से कहा कि तुम मुझे कोई क़िस्सा सुनाओ। तो होशियार गुलाम ने बादशाह को नसीह़त करने का मौक़अ़ पा कर येह क़िस्सा सुनाया कि एक लोमड़ी अपनी जान की ह़िफ़ाज़त के लिये एक शेर की ख़िदमत गुज़ारी किया करती थी तो कोई दरिन्दा शेर की हैबत की वजह से लोमड़ी की त़रफ़ देख नहीं सकता था। और लोमड़ी निहायत ही बे ख़ौफ़ी और इत़्मीनान से शेर के साथ ज़िन्दगी बसर करती थी। अचानक एक दिन एक उ़क़ाब लोमड़ी पर झपटा तो लोमड़ी भाग कर शेर के पास चली गई। और शेर ने उस को अपनी पीठ पर बिठा लिया। उ़क़ाब दोबारा झपटा और लोमड़ी को शेर की पीठ पर से अपने चुंगल में दबा कर उड़ गया। लोमड़ी चिल्ला चिल्ला कर शेर से फ़रियाद करने लगी तो शेर ने कहा कि ऐ लोमड़ी ! मैं ज़मीन पर रहने वाले दरिन्दों से तेरी ह़िफ़ाज़त कर सकता हूं लेकिन आस्मान की त़रफ़ से ह़म्ला करने वालों से मैं तुझे नहीं बचा सकता। येह क़िस्सा सुन कर अ़ब्दुल मलिक बादशाह को बड़ी इ़ब्रत ह़ासिल हुई और उस की समझ में आ गया कि मेरी फ़ौज उन दुश्मनों से तो मेरी ह़िफ़ाज़त कर सकती है जो ज़मीन पर रहते हैं मगर जो बलाएं और वबाएं आस्मान से मुझ पर ह़म्ला आवर हों, उन से मुझ को न मेरी बादशाही बचा सकती है न मेरा ख़ज़ाना और न मेरा लश्कर मेरी ह़िफ़ाज़त कर सकता है। आस्मानी बलाओं से बचाने वाला तो बजुज़ ख़ुदा के और कोई नहीं हो सकता। येह सोच कर अ़ब्दुल मलिक बादशाह के दिल से, ताऊ़न का ख़ौफ़ जाता रहा और वोह रिज़ाए इलाही पर राज़ी रह कर सुकून व इत़्मीनान के साथ अपने शाही मह़ल में रहने लगा। (تفسیر روح البیان،ج ا،ص۳۷۸،پ۲،البقرۃ:۲۴۴)

﴾9﴿ सो बरस तक मुर्दा रहे फिर ज़िन्दा हो गए

अकषर मुफ़स्सिरीन के नज़्दीक येह वाक़िआ़ ह़ज़रते उ़ज़ैर बिन शर्ख़िया عَلَیْہِ السَّلَام का है येह जो बनी इस्राईल के एक नबी हैं। वाक़िए़ की तफ़्सील येह है कि जब बनी इस्राईल की बद आ'मालियां बहुत ज़ियादा बढ़

गई तो इन पर खुदा की त़रफ़ से येह अ़ज़ाब आया कि बुख़्ते नस्सर बाबिली एक काफ़िर बादशाह ने बहुत बड़ी फ़ौज के साथ बैतुल मुक़द्दस पर ह़म्ला कर दिया और शहर के एक लाख बाशिन्दों को क़त्ल कर दिया। और एक लाख को मुल्के शाम में इधर उधर बिखैर कर आबाद कर दिया। और एक लाख को गिरिफ़्तार कर के लौंडी ग़ुलाम बना लिया। ह़ज़रते उ़ज़ैर عَلَيْهِ السَّلَام भी उन्हीं क़ैदियों में थे। इस के बा'द उस काफ़िर बादशाह ने पूरे शहर बैतुल मुक़द्दस को तोड़ फोड़ कर मिस्मार कर दिया और बिल्कुल वीरान बना डाला।

बुख़्ते नस्सर कौन था ? :- क़ौमे अ़मालक़ा का एक लड़का इन के बुत "नस्सर" के पास लावारिष पड़ा हुवा मिला चूंकि इस के बाप का नाम किसी को नहीं मा'लूम था, इस लिये लोगों ने इस का नाम बुख़्ते नस्सर (नस्सर का बेटा) रख दिया। खुदा की शान कि येह लड़का बड़ा हो कर कहरे अस्फ़ बादशाह की त़रफ़ से सल्त़नते बाबिल पर गवर्नर मुक़र्रर हो गया। फिर येह खुद दुन्या का बहुत बड़ा बादशाह हो गया। (تفسیر جمل،ج۱،ص۳۲۱،پ۳،البقرۃ:۲۵۹)

कुछ दिनों के बा'द ह़ज़रते उ़ज़ैर عَلَيْهِ السَّلَام जब किसी त़रह़ "बुख़्ते नस्सर" की क़ैद से रिहा हुवे तो एक गधे पर सुवार हो कर अपने शहर बैतुल मुक़द्दस में दाख़िल हुवे। अपने शहर की वीरानी और बरबादी देख कर उन का दिल भर आया और वोह रो पड़े। चारों त़रफ़ चक्कर लगाया मगर उन्हें किसी इन्सान की शक्ल नज़र नहीं आई। हां येह देखा कि वहां के दरख़्तों पर ख़ूब ज़ियादा फल आए हैं जो पक कर तय्यार हो चुके हैं मगर कोई इन फलों को तोड़ने वाला नहीं है। येह मन्ज़र देख कर निहायत ही ह़सरत व अफ़्सोस के साथ बे इख़्तियार आप की ज़बाने मुबारक से येह जुम्ला निकल पड़ा कि اَنّٰى يُحْيٖ هٰذِهِ اللّٰهُ بَعْدَ مَوْتِهَا या'नी इस शहर की ऐसी बरबादी और वीरानी के बा'द भला किस त़रह़ **अल्लाह** तआ़ला फिर इस को आबाद करेगा ? फिर आप ने कुछ फलों को तोड़ कर तनावुल फ़रमाया, और अंगूरों को निचोड़ कर उस का शीरा नौश फ़रमाया फिर बचे हुवे फलों को अपने झोले में डाल लिया और बचे हुवे अंगूर के शीरे को अपनी मश्क में भर लिया और अपने गधे को एक मज़्बूत़ रस्सी से बांध दिया। और फिर आप एक दरख़्त के नीचे लैट कर सो गए और इसी

नींद की ह़ालत में आप की वफ़ात हो गई और अल्लाह तआ़ला ने दरिन्दों, परन्दों, चरिन्दों और जिन्न व इन्सान सब की आंखों से आप को ओझल कर दिया कि कोई आप को न देख सका। यहां तक कि सत्तर बरस का ज़माना गुज़र गया तो मुल्के फ़ारस के बादशाहों में से एक बादशाह अपने लश्कर के साथ बैतुल मुक़द्दस के इस वीराने में दाखि़ल हुवा। और बहुत से लोगों को यहां ला कर बसाया और शहर को फिर दोबारा आबाद कर दिया। और बचे खुचे बनी इस्राईल को जो अत़राफ़ व जवानिब में बिखरे हुवे थे सब को बुला बुला कर इस शहर में आबाद कर दिया। और इन लोगों ने नई इ़मारतें बना कर और कि़स्म कि़स्म के बाग़ात लगा कर इस शहर को पहले से भी ज़ियादा ख़ूब सूरत और बा रोनक़ बना दिया।

जब ह़ज़रते उ़ज़ैर عَلَيْهِ السَّلَام को पूरे एक सो बरस वफ़ात की ह़ालत में हो गए तो अल्लाह तआ़ला ने आप को ज़िन्दा फ़रमाया तो आप ने देखा कि आप का गधा मर चुका है और उस की हड्डियां गल सड़ कर इधर उधर बिखरी पड़ी हैं। मगर थैले में रखे हुवे फल और मश्क में रखा हुवा अंगूर का शीरा बिल्कुल ख़राब नहीं हुवा, न फलों में कोई तग़य्युर न शीरे में कोई बू बास या बद मज़गी पैदा हुई है और आप ने येह भी देखा कि अब भी आप के सर और दाढ़ी के बाल काले हैं और आप की उ़म्र वोही चालीस बरस है। आप ह़ैरान हो कर सोच बिचार में पड़े हुवे थे कि आप पर वह्‌य उतरी और अल्लाह तआ़ला ने आप से दरयाफ़्त फ़रमाया कि ऐ उ़ज़ैर ! आप कितने दिनों तक यहां रहे ? तो आप ने ख़याल कर के कहा कि मैं सुब्ह़ के वक़्त सोया था और अब अ़स्र का वक़्त हो गया है, येह जवाब दिया कि मैं दिन भर या दिन भर से कुछ कम सोता रहा तो अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि नहीं ऐ उ़ज़ैर ! तुम पूरे एक सो बरस यहां ठहरे रहे, अब तुम हमारी क़ुदरत का नज़ारा करने के लिये ज़रा अपने गधे को देखो कि उस की हड्डियां गल सड़ कर बिखर चुकी हैं और अपने खाने पीने की चीज़ों पर नज़र डालो कि उन में कोई ख़राबी और बिगाड़ नहीं पैदा हुवा। फिर इरशाद फ़रमाया कि ऐ उ़ज़ैर ! अब तुम देखो कि किस त़रह़ हम इन हड्डियों को उठा कर इन पर गोश्त पोस्त चढ़ा कर इस गधे

को ज़िन्दा करते हैं। चुनान्चे, हज़रते उज़ैर عَلَيْهِ السَّلَام ने देखा कि अचानक बिखरी हुई हड्डियों में हरकत पैदा हुई और एक दम तमाम हड्डियां जम्अ हो कर अपने अपने जोड़ से मिल कर गधे का ढांचा बन गया और लम्हा भर में इस ढांचे पर गोश्त पोस्त भी चढ़ गया और गधा ज़िन्दा हो कर अपनी बोली बोलने लगा। येह देख कर हज़रते उज़ैर عَلَيْهِ السَّلَام ने बुलन्द आवाज़ से येह कहा

اَعْلَمُ اَنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ ﴿۲۵۹﴾ (پ۳، البقرۃ:۲۵۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- मैं खूब जानता हूं कि **अल्लाह** सब कुछ कर सकता है।

इस के बा'द हज़रते उज़ैर عَلَيْهِ السَّلَام शहर का दौरा फ़रमाते हुवे उस जगह पहुंच गए जहां एक सो बरस पहले आप का मकान था। तो न किसी ने आप को पहचाना न आप ने किसी को पहचाना। हां अलबत्ता येह देखा कि एक बहुत ही बूढ़ी और अपाहज औ़रत मकान के पास बैठी है जिस ने अपने बचपन में हज़रते उज़ैर عَلَيْهِ السَّلَام को देखा था। आप ने उस से पूछा कि क्या येही उज़ैर का मकान है तो उस ने जवाब दिया कि जी हां। फिर बुढ़िया ने कहा कि उज़ैर का क्या ज़िक्र है? उन को तो सो बरस हो गए कि वोह बिल्कुल ही ला पता हो चुके हैं येह कह कर बुढ़िया रोने लगी तो आप ने फ़रमाया कि ऐ बुढ़िया! मैं ही उज़ैर हूं तो बुढ़िया ने कहा कि سُبْحٰنَ اللّٰه आप कैसे उज़ैर हो सकते हैं? आप ने फ़रमाया कि ऐ बुढ़िया! मुझ को **अल्लाह** तआ़ला ने एक सो बरस मुर्दा रखा। फिर मुझ को ज़िन्दा फ़रमा दिया और मैं अपने घर आ गया हूं तो बुढ़िया ने कहा कि हज़रते उज़ैर عَلَيْهِ السَّلَام तो ऐसे बा कमाल थे कि उन की हर दुआ़ मक्बूल होती थी अगर आप वाके़ई हज़रते उज़ैर (عَلَيْهِ السَّلَام) हैं तो मेरे लिये दुआ़ कर दीजिये कि मेरी आंखों में रोशनी आ जाए और मेरा फ़ालिज अच्छा हो जाए। हज़रते उज़ैर عَلَيْهِ السَّلَام ने दुआ़ कर दी तो बुढ़िया की आंखें ठीक हो गईं और उस का फ़ालिज भी अच्छा हो गया। फिर उस ने ग़ौर से आप को देखा तो पहचान लिया और बोल उठी कि मैं शहादत देती हूं कि आप यक़ीनन हज़रते उज़ैर عَلَيْهِ السَّلَام ही हैं फिर वोह बुढ़िया आप को ले कर बनी इस्राईल के मह़ल्ले में गई। इत्तिफ़ाक़ से वोह सब लोग एक

मजलिस में जम्अ थे और इसी मजलिस में आप का लड़का भी मौजूद था जो एक सो अठ्ठारह बरस का हो चुका था। और आप के चन्द पोते भी थे जो सब बूढ़े हो चुके थे। बुढ़िया ने मजलिस में शहादत दी और ए'लान किया कि ऐ लोगो ! बिला शुबा येह ह़ज़रते उ़ज़ैर عَلَيْهِ السَّلَام ही हैं मगर किसी ने बुढ़िया की बात को सह़ीह़ नहीं माना। इतने में इन के लड़के ने कहा कि मेरे बाप के दोनों कन्धों के दरमियान काले रंग का मसा था जो चांद की शक्ल का था। चुनान्चे, आप ने अपना कुर्ता उतार कर दिखाया तो वोह मसा मौजूद था। फिर लोगों ने कहा कि ह़ज़रते उ़ज़ैर को तो तौरात ज़बानी याद थी अगर आप उ़ज़ैर हैं तो ज़बानी तौरात पढ़ कर सुनाइये। आप ने बिग़ैर किसी झिजक के फ़ौरन पूरी तौरात पढ़ कर सुना दी। बुख़्ते नस्सर बादशाह ने बैतुल मुक़द्दस को तबाह करते वक़्त चालीस हज़ार तौरात के आ़लिमों को चुन चुन कर क़त्ल कर दिया था और तौरात की कोई जिल्द भी उस ने ज़मीन पर बाक़ी नहीं छोड़ी थी। अब येह सुवाल पैदा हुवा कि ह़ज़रते उ़ज़ैर ने तौरात सह़ीह़ पढ़ी है या नहीं ? तो एक आदमी ने कहा कि मैं ने अपने बाप से सुना है कि जिस दिन हम लोगों को बुख़्ते नस्सर ने गिरिफ़्तार किया था उस दिन एक वीराने में एक अंगूर की बैल की जड़ में तौरेत की एक जिल्द दफ़्न कर दी गई थी अगर तुम लोग मेरे दादा के अंगूर की जगह की निशान देही कर दो तो मैं तौरात की एक जिल्द बरआमद कर दूंगा। उस वक़्त पता चल जाएगा कि ह़ज़रते उ़ज़ैर ने जो तौरात पढ़ी है वोह सह़ीह़ है या नहीं ? चुनान्चे, लोगों ने तलाश कर के और ज़मीन खोद कर तौरात की जिल्द निकाल ली तो वोह ह़र्फ़ ब ह़र्फ़ ह़ज़रते उ़ज़ैर की ज़बानी याद की हुई तौरात के मुत़ाबिक़ थी। येह अ़जीबो ग़रीब और ह़ैरत अंगेज़ माजरा देख कर सब लोगों ने एक ज़बान हो कर येह कहना शुरूअ़ कर दिया कि बेशक ह़ज़रते उ़ज़ैर येही हैं और यक़ीनन येह खुदा के बेटे हैं। चुनान्चे, उसी दिन से येह ग़लत़ और मुशरिकाना अ़क़ीदा यहूदियों में फैल गया कि مَعَاذَاللّٰه ह़ज़रते उ़ज़ैर खुदा के बेटे हैं। चुनान्चे, आज तक दुन्या भर के यहूदी इस बात़िल अ़क़ीदे पर जमे हुवे हैं कि ह़ज़रते उ़ज़ैर عَلَيْهِ السَّلَام खुदा के बेटे हैं। (مَعَاذَاللّٰه) (تفسیر جمل علی الجلالین، ج ،ص۳۲۲،پ۳،البقرۃ:۲۵۹)

अल्लाह तआ़ला ने क़ुरआने मजीद की सूरए बक़रह में इस वाक़िए़ को इन लफ़्ज़ों में बयान फ़रमाया है।

اَوْ كَالَّذِیْ مَرَّ عَلٰى قَرْیَةٍ وَّ هِیَ خَاوِیَةٌ عَلٰى عُرُوْشِهَا ۚ قَالَ اَنّٰى یُحْیٖ هٰذِهِ اللّٰهُ بَعْدَ مَوْتِهَا ۚ فَاَمَاتَهُ اللّٰهُ مِائَةَ عَامٍ ثُمَّ بَعَثَهٗ ؕ قَالَ كَمْ لَبِثْتَ ؕ قَالَ لَبِثْتُ یَوْمًا اَوْ بَعْضَ یَوْمٍ ؕ قَالَ بَلْ لَّبِثْتَ مِائَةَ عَامٍ فَانْظُرْ اِلٰى طَعَامِكَ وَ شَرَابِكَ لَمْ یَتَسَنَّهْ ۚ وَ انْظُرْ اِلٰى حِمَارِكَ وَ لِنَجْعَلَكَ اٰیَةً لِّلنَّاسِ وَ انْظُرْ اِلَى الْعِظَامِ كَیْفَ نُنْشِزُهَا ثُمَّ نَكْسُوْهَا لَحْمًا ؕ فَلَمَّا تَبَیَّنَ لَهٗ ۙ قَالَ اَعْلَمُ اَنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ ﴿۲۵۹﴾ (پ۳،البقرۃ:۲۵۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :– या उस की त़रह़ जो गुज़रा एक बस्ती पर और वोह ढई (गिरी) पड़ी थी अपनी छतों पर। बोला : इसे क्यूं कर जिलाएगा **अल्लाह** इस की मौत के बा'द तो **अल्लाह** ने उसे मुर्दा रखा सो बरस फिर ज़िन्दा कर दिया, फ़रमाया : तू यहां कितना ठहरा, अ़र्ज़ की : दिन भर ठहरा होऊंगा या कुछ कम। फ़रमाया : नहीं बल्कि तुझे सो बरस गुज़र गए और अपने खाने और पानी को देख कि अब तक बू न लाया और अपने गधे को देख (कि जिस की हड्डियां तक सलामत न रहीं) और येह इस लिये कि तुझे हम लोगों के वासिते़ निशानी करें और इन हड्डियों को देख क्यूंकर हम इन्हें उठान देते फिर इन्हें गोश्त पहनाते हैं जब येह मुआ़मला इस पर ज़ाहिर हो गया बोला : मैं ख़ूब जानता हूं कि **अल्लाह** सब कुछ कर सकता है।

दर्से हिदायत :– ﴾1﴿ इन आयतों में साफ़ साफ़ मौजूद है कि एक ही जगह पर एक ही आबो हवा में ह़ज़रते उ़ज़ैर عَلَيْهِ السَّلَام का गधा तो मर कर गल सड़ गया और उस की हड्डियां रेज़ा रेज़ा हो कर बिखर गईं मगर फलों और शीरए अंगूर और ख़ुद ह़ज़रते उ़ज़ैर عَلَيْهِ السَّلَام की ज़ात में किसी क़िस्म का कोई तग़य्युर नहीं हुवा। यहां तक कि सो बरस में इन के बाल भी सफ़ेद नहीं हुवे। इस से षाबित होता है कि एक ही क़ब्रिस्तान के अन्दर एक ही आबो हवा में अगर बा'ज़ मुर्दों की लाशें गल सड़ कर फ़ना हो

जाएं और बा'ज़ बुज़ुर्गों की लाशें सलामत रह जाएं और उन के कफ़न भी मैले न हों ऐसा हो सकता है, बल्कि बारहा ऐसा हुवा है और ह़ज़रते उ़ज़ैर عَلَيْهِ السَّلَام का येह कुरआनी वाक़िआ़ इस की बेहतरीन दलील है। (واللہ تعالٰی اعلم)

﴾2﴿ बैतुल मुक़द्दस की तबाही और वीरानी देख कर ह़ज़रते उ़ज़ैर عَلَيْهِ السَّلَام ग़म में डूब गए और फ़िक्र मन्द हो कर येह कह दिया कि इस शहर की बरबादी और वीरानी के बा'द क्यूंकर **अल्लाह** तआ़ला इस शहर को दोबारा आबाद फ़रमाएगा ? इस से षाबित होता है कि अपने वत़न और शहर से मह़ब्बत करना और उल्फ़त रखना येह सालिह़ीन और **अल्लाह** वालों का त़रीक़ा है।(واللہ تعالٰی اعلم)

﴾10﴿ ताबूते सकीना

येह शमशाद की लकड़ी का एक सन्दूक़ था जो ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام पर नाज़िल हुवा था। येह आप की आख़िरे ज़िन्दगी तक आप के पास ही रहा। फिर बत़ौरे मीराष यके बा'द दीगरे आप की अवलाद को मिलता रहा। यहां तक कि येह ह़ज़रते या'क़ूब عَلَيْهِ السَّلَام को मिला और आप के बा'द आप की अवलादे बनी इस्राईल के क़ब्ज़े में रहा। और ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام को मिल गया तो आप उस में तौरात शरीफ़ और अपना ख़ास ख़ास सामान रखने लगे।

येह बड़ा ही मुक़द्दस और बा बरकत सन्दूक़ था। बनी इस्राईल जब कुफ़्फ़ार से जिहाद करते थे और कुफ़्फ़ार के लश्करों की कषरत और उन की शौकत देख कर सहम जाते और उन के सीनों में दिल धड़कने लगते तो वोह इस सन्दूक़ को अपने आगे रख लेते थे तो इस सन्दूक़ से ऐसी रह़मतों और बरकतों का ज़ुहूर होता था कि मुजाहिदीन के दिलों में सुकून व इत़्मीनान का सामान पैदा हो जाता था और मुजाहिदीन के सीनों में लरज़ते हुवे दिल पथ्थर की चट्टानों से ज़ियादा मज़बूत़ हो जाते थे। और जिस क़दर सन्दूक़ आगे बढ़ता था आस्मान से نَصْرٌ مِّنَ اللّٰهِ وَفَتْحٌ قَرِیْبٌ ط की बिशारते उ़ज़्मा नाज़िल हुवा करती और फ़त्हे मुबीन ह़ासिल हो जाया करती थी।

बनी इस्राईल में जब कोई इख़्तिलाफ़ पैदा होता था तो लोग इसी सन्दूक़ से फ़ैसला कराते थे। सन्दूक़ से फ़ैसले की आवाज़ और फ़त्ह की बिशारत सुनी जाती थी। बनी इस्राईल इस सन्दूक़ को अपने आगे रख कर और इस को वसीला बना कर दुआएं मांगते थे तो इन की दुआएं मक़्बूल होती थीं और बलाओं की मुसीबतें और वबाओं की आफ़तें टल जाया करती थीं। अल ग़रज़ येह सन्दूक़ बनी इस्राईल के लिये ताबूते सकीना, बरकत व रहमत का ख़ज़ीना और नुस्रते ख़ुदावन्दी के नुज़ूल का निहायत मुक़द्दस और बेहतरीन ज़रीआ था मगर जब बनी इस्राईल तरह तरह के गुनाहों में मुलव्विष हो गए और इन लोगों में मआसी व तुग़यानी और सरकशी व इस्यान का दौर दौरा हो गया तो इन की बद आ'मालियों की नुहूसत से इन पर ख़ुदा का येह ग़ज़ब नाज़िल हो गया कि क़ौमे अमालक़ा के कुफ़्फ़ार ने एक लश्करे जर्रार के साथ इन लोगों पर हम्ला कर दिया, उन काफ़िरों ने बनी इस्राईल का क़त्ले आम कर के इन की बस्तियों को ताख़्त व ताराज कर डाला। इमारतों को तोड़ फोड़ कर सारे शहर को तहस नहस कर डाला, और इस मुतबर्रक सन्दूक़ को भी उठा कर ले गए। इस मुक़द्दस तबर्रुक को नजासतों के कूड़े ख़ाने में फेंक दिया। लेकिन इस बे अदबी का क़ौमे अमालक़ा पर येह वबाल पड़ा कि येह लोग तरह तरह की बीमारियों और बलाओं के हुजूम में झन्झोड़ दिये गए। चुनान्चे, क़ौमे अमालक़ा के पांच शहर बिल्कुल बरबाद और वीरान हो गए। यहां तक कि उन काफ़िरों को यक़ीन हो गया कि येह सन्दूक़े रहमत की बे अदबी का अज़ाब हम पर पड़ गया है तो उन काफ़िरों की आंखें खुल गईं। चुनान्चे, उन लोगों ने इस मुक़द्दस सन्दूक़ को एक बेल गाड़ी पर लाद कर बेलों को बनी इस्राईल की बस्तियों की तरफ़ हांक दिया।

फिर **अल्लाह** तआला ने चार फ़िरिश्तों को मुक़र्रर फ़रमा दिया जो इस मुबारक सन्दूक़ को बनी इस्राईल के नबी हज़रते शमवील عَلَیْہِ السَّلَام की ख़िदमत में लाए। इस तरह फिर बनी इस्राईल की खोई हुई ने'मत

दोबारा इन को मिल गई। और येह सन्दूक़ ठीक उस वक़्त ह़ज़रते शमवील عَلَيْهِ السَّلَام के पास पहुंचा, जब कि ह़ज़रते शमवील عَلَيْهِ السَّلَام ने त़ालूत को बादशाह बना दिया था। और बनी इस्राईल त़ालूत की बादशाही तस्लीम करने पर तय्यार नहीं थे और येही शर्त़ ठहरी थी कि मुक़द्दस सन्दूक़ आ जाए तो हम त़ालूत की बादशाही तस्लीम कर लेंगे। चुनान्चे, सन्दूक़ आ गया और बनी इस्राईल त़ालूत की बादशाही पर रिज़ा मन्द हो गए।

(تفسیر الصاوی،ج۱،ص۲۰۹۔تفسیر روح البیان،ج۱، ص۳۸۵۔پ۲، البقرۃ۲۴۷)

ताबूते सकीना में क्या था ? :- इस मुक़द्दस सन्दूक़ में ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام का अ़सा और उन की मुक़द्दस जूतियां और ह़ज़रते हारून عَلَيْهِ السَّلَام का इमामा, ह़ज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام की अंगूठी, तौरात की तख़्तियों के चन्द टुकड़े, कुछ मन्न व सलवा, इस के इ़लावा ह़ज़राते अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام की सूरतों के हुल्ये वग़ैरा सब सामान थे।

(تفسیر روح البیان،ج۱،ص۳۸۶،پ۲،البقرۃ:۲۴۸)

कु़रआने मजीद में ख़ुदावन्दे कु़द्दूस ने सूरए बक़रह में इस मुक़द्दस सन्दूक़ का तज़्किरा फ़रमाते हुवे इरशाद फ़रमाया कि

وَقَالَ لَهُمْ نَبِيُّهُمْ اِنَّ اٰيَةَ مُلْكِهٖۤ اَنْ يَّاْتِيَكُمُ التَّابُوْتُ فِيْهِ سَكِيْنَةٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَبَقِيَّةٌ مِّمَّا تَرَكَ اٰلُ مُوْسٰى وَاٰلُ هٰرُوْنَ تَحْمِلُهُ الْمَلٰٓئِكَةُ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿۲۴۸﴾ (پ۲،البقرۃ۲۴۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- और उन से उन के नबी ने फ़रमाया : उस की बादशाही की निशानी येह है कि आए तुम्हारे पास ताबूत जिस में तुम्हारे रब की त़रफ़ से दिलों का चैन है और कुछ बची हुई चीज़ें हैं मुअ़ज़्ज़ज़ मूसा और मुअ़ज़्ज़ज़ हारून के तर्के की, उठाते लाएंगे उसे फ़िरिश्ते बेशक उस में बड़ी निशानी है तुम्हारे लिये अगर ईमान रखते हो।

दर्से हिदायत :- बनी इस्राईल के सन्दूक़ के इस वाक़िए से चन्द मसाइल व फ़वाइद पर रोशनी पड़ती है जो याद रखने के क़ाबिल हैं :

﴾1﴿ मा'लूम हुवा कि बुज़ुर्गों के तबर्रुकात की खुदावन्दे कुद्दूस के दरबार में बड़ी इ़ज़्ज़त व अ़ज़मत है और इन के ज़रीए मख़्लूके खुदा को बड़े बड़े फ़ुयूज़ो बरकात हासिल होते हैं। देख लो ! इस सन्दूक़ में ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام की जूतियां, आप का अ़सा और ह़ज़रते हारून عَلَيْهِ السَّلَام की पगड़ी थी, तो अल्लाह तआ़ला की बारगाह में येह सन्दूक़ इस क़दर मक़्बूल और मुकर्रम व मुअ़ज़्ज़म हो गया कि फ़िरिश्तों ने इस को अपने नूरानी कन्धों पर उठा कर ह़ज़रते शमवील عَلَيْهِ السَّلَام के दरबारे नबुव्वत में पहुंचाया और खुदावन्दे कुद्दूस ने कुरआने मजीद में इस बात की शहादत दी कि فِيۡهِ سَكِيۡنَةٌ مِّنۡ رَّبِّكُمۡ या'नी इस सन्दूक़ में तुम्हारे रब की त़रफ़ से सकीना या'नी मोमिनों के कुलूब का इत़्मीनान और इन की रूहों की तस्कीन का सामान था। मत़लब येह कि इस पर रह़मते इलाही के अन्वारो बरकात का नुज़ूल और इस पर रह़मतों की बारिश हुवा करती थी तो मा'लूम हुवा कि बुज़ुर्गों के तबर्रुकात जहां और जिस जगह भी होंगे ज़रूर उन पर रह़मते खुदावन्दी का नुज़ूल होगा। और इस पर नाज़िल होने वाली रह़मतों और बरकतों से मोअमिनीन को सुकूने क़ल्ब और इत़्मीनाने रूह़ के फ़ुयूज़ो बरकात मिलते रहेंगे।

﴾2﴿ जिस सन्दूक़ में अल्लाह वालों के लिबास व अ़सा और जूतियां हों जब उस सन्दूक़ पर इत़्मीनान का सकीना और अन्वारो बरकात का ख़ज़ीना खुदा की त़रफ़ से उतरना, कुरआन से षाबित है तो भला जिस क़ब्र में इन बुज़ुर्गों का पूरा जिस्म रखा होगा, क्या उन क़ब्रों पर रह़मत व बरकत और सकीना व इत़्मीनान नहीं उतरेगा ? हर आ़क़िल इन्सान जिस को खुदावन्दे आ़लम ने बसारत के साथ साथ ईमानी बसीरत भी अ़त़ा फ़रमाई है, वोह ज़रूर इस बात पर ईमान लाएगा कि जब बुज़ुर्गों के लिबास और इन की जूतियों पर सकीनए रह़मत का नुज़ूल होता है तो इन बुज़ुर्गों की क़ब्रों पर भी रह़मते खुदावन्दी का ख़ज़ीना ज़रूर नाज़िल होगा। और जब बुज़ुर्गों की क़ब्रों पर रह़मतों की बारिश होती है तो जो मुसलमान इन मुक़द्दस क़ब्रों के पास ह़ाज़िर होगा ज़रूर उस पर भी बारिशे अन्वारे रह़मत के चन्द क़त़रात बरस ही जाएंगे क्यूं कि जो मूसलाधार बारिश में

खड़ा होगा ज़रूर उस का कपड़ा और बदन भीगेगा, जो दरिया में ग़ोता लगाएगा ज़रूर उस का बदन पानी से तर होगा, जो इत्र की दुकान पर बैठेगा, ज़रूर उस को ख़ुश्बू नसीब होगी। तो षाबित हो गया कि जो बुज़ुर्गों की क़ब्रों पर हाज़िरी देंगे ज़रूर वोह फ़ुयूज़ो बरकात की दौलतों से मालामाल होंगे और ज़रूर उन पर ख़ुदा की रह़मतों का नुज़ूल होगा जिस से उन के मसाइबो आलाम दूर होंगे और दीनो दुन्या के फ़वाइद व मनाफ़ेअ़ ह़ासिल होंगे।

﴾3﴿ येह भी मा'लूम हुवा कि जो लोग बुज़ुर्गों के तबर्रुकात या इन की क़ब्रों की इहानत व बे अदबी करेंगे वोह ज़रूर क़हरे क़ह्हार और ग़ज़बे जब्बार में गिरिफ़्तार होंगे क्यूंकि क़ौमे अ़मालक़ा जिन्हों ने इस सन्दूक़ की बे अदबी की थी उन पर ऐसा क़हरे इलाही का पहाड़ टूटा कि वोह बलाओं के हुजूम से बिलबिला उठे और काफ़िर होते हुवे उन्हों ने इस बात को मान लिया कि हम पर बलाओं और वबाओं का ह़म्ला इसी सन्दूक़ की बे अदबी की वजह से हुवा है। चुनान्चे, इसी लिये इन लोगों ने इस मुक़द्दस सन्दूक़ को बेल गाड़ी पर लाद कर बनी इस्राईल की बस्ती में भेज दिया ताकि वोह लोग ग़ज़बे इलाही की बलाओं के पन्जए क़ह्र से नजात पा लें।

﴾4﴿ जब इस सन्दूक़ की बरकत से बनी इस्राईल को जिहाद में फ़त्हे मुबीन मिलती थी तो ज़रूर बुज़ुर्गों की क़ब्रों से भी मोअमिनीन की मुश्किलात दफ़्अ़ होंगी और मुरादें पूरी होंगी क्यूंकि ज़ाहिर है कि बुज़ुर्गों के लिबास से कहीं ज़ियादा अषरे रह़मत बुज़ुर्गों के बदन में होगा।

﴾5﴿ इस वाक़िए से येह भी मा'लूम हुवा कि जो क़ौम सरकशी और इस्यान के तूफ़ान में पड़ कर **अल्लाह** व रसूल (عَزَّوَجَلَّ وصَلَّی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلَّم) की नाफ़रमान हो जाती है उस क़ौम की ने'मतें छीन ली जाती हैं। चुनान्चे, आप ने पढ़ लिया कि जब बनी इस्राईल सरकश हो कर ख़ुदा के नाफ़रमान हो गए और क़िस्म क़िस्म की बदकारियों में पड़ कर गुनाहों का भूत इन के सरों पर अ़फ़रिय्यत बन कर सुवार हो गया तो इन के जुर्मों की नुहूसतों ने इन्हें येह बुरा दिन दिखाया कि सन्दूक़े सकीना इन के पास से क़ौमे अ़मालक़ा के कुफ़्फ़ार उठा ले गए और बनी इस्राईल कई बरसों तक इस ने'मते उ़ज़्मा से मह़रूम हो गए। (واللہ تعالٰی اعلم)

﴾11﴿ ज़ब्ह़ हो कर ज़िन्दा हो जाने वाले परन्दे

हज़रते इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلَيْهِ السَّلَام ने एक मरतबा ख़ुदावन्दे कुद्दूस के दरबार में येह अ़र्ज़ किया कि या अल्लाह तू मुझे दिखा दे कि तू मुर्दों को किस त़रह़ ज़िन्दा फ़रमाएगा ? तो अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि ऐ इब्राहीम ! क्या इस पर तुम्हारा ईमान नहीं है ? तो आप ने अ़र्ज़ किया कि क्यूं नहीं ? मैं इस पर ईमान तो रखता हूं लेकिन मेरी तमन्ना येह है कि इस मन्ज़र को अपनी आंखों से देख लूं ताकि मेरे दिल को क़रार आ जाए तो अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि तुम चार परन्दों को पालो और उन को ख़ूब खिला पिला कर अच्छी त़रह़ हिला मिला लो फिर तुम उन्हें ज़ब्ह़ कर के और उन का क़ीमा बना कर अपने दो नवाह़ के चन्द पहाड़ों पर थोड़ा थोड़ा गोश्त रख दो । फिर उन परन्दों को पुकारो तो वोह परन्दे ज़िन्दा हो कर दौड़ते हुवे तुम्हारे पास आ जाएंगे और तुम मुर्दों के ज़िन्दा होने का मन्ज़र अपनी आंखों से देख लोगे । चुनान्चे, इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام ने एक मुर्ग़, एक कबूतर, एक गिध, एक मोर । इन चार परन्दों को पाला । और एक मुद्दत तक इन चार परन्दों को खिला पिला कर ख़ूब हिला मिला लिया । फिर इन चार परन्दों को ज़ब्ह़ कर के इन के सरों को अपने पास रख लिया और इन चारों का क़ीमा बना कर थोड़ा थोड़ा गोश्त अत़राफ़ व जवानिब के पहाड़ों पर रख दिया और दूर से खड़े हो कर इन परन्दों का नाम ले कर पुकारा कि يٰاَيُّهَا الدِّيْكُ (ऐ मुर्ग़) يٰاَيَّتُهَا الْحَمَامَةُ (ऐ कबूतर) يٰاَيُّهَا النَّسْرُ (ऐ गिध) يٰاَيُّهَا الطَّاؤُسُ (ऐ मोर) आप की पुकार पर एक दम पहाड़ों से गोश्त का क़ीमा उड़ना शुरूअ़ हो गया और हर परन्द का गोश्त, पोस्त, हड्डी, पर, अलग हो कर चार परन्द तय्यार हो गए और वोह चारों परन्द बिला सरों के दौड़ते हुवे ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام के पास आ गए और अपने सरों से जुड़ कर दाना चुगने लगे और अपनी अपनी बोलियां बोलने लगे और ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام ने अपनी आंखों से मुर्दों के ज़िन्दा होने का मन्ज़र देख लिया और इन के दिल को इत़्मीनान व क़रार मिल गया ।

इस वाक़िए़ का ज़िक्र ख़ुदावन्दे करीम ने कुरआने मजीद की सूरए बक़रह में इन लफ़्ज़ों के साथ बयान फ़रमाया है कि

وَ اِذْ قَالَ اِبْرٰهٖمُ رَبِّ اَرِنِیْ كَیْفَ تُحْیِ الْمَوْتٰىؕ قَالَ اَوَ لَمْ تُؤْمِنْؕ قَالَ بَلٰى وَ لٰـكِنْ لِّیَطْمَىٕنَّ قَلْبِیْؕ قَالَ فَخُذْ اَرْبَعَةً مِّنَ الطَّیْرِ فَصُرْهُنَّ اِلَیْكَ ثُمَّ اجْعَلْ عَلٰى كُلِّ جَبَلٍ مِّنْهُنَّ جُزْءًا ثُمَّ ادْعُهُنَّ یَاْتِیْنَكَ سَعْیًاؕ وَ اعْلَمْ اَنَّ اللّٰهَ عَزِیْزٌ حَكِیْمٌ۠ (۲۶۰) (پ۳،البقرۃ:۲۶۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :– और जब अ़र्ज़ की इब्राहीम ने ऐ रब मेरे मुझे दिखा दे तू क्यूंकर मुर्दे जिलाएगा ? फ़रमाया : क्या तुझे यक़ीन नहीं ? अ़र्ज़ की : यक़ीं क्यूं नहीं मगर येह चाहता हूं कि मेरे दिल को क़रार आ जाए । फ़रमाया : तो अच्छा, चार परन्दे ले कर अपने साथ हिला ले फिर उन का एक एक टुकड़ा हर पहाड़ पर रख दे फिर उन्हें बुला वोह तेरे पास चले आएंगे पाउं से दौड़ते और जान रख कि **अल्लाह** ग़ालिब हिक्मत वाला है ।

दर्से हिदायत :– मज़कूरा बाला कुरआनी वाक़िए से मुन्दरिजए ज़ैल मसाइल पर ख़ास तौर से रोशनी पड़ती है । इन को बग़ौर पढ़िये और हिदायत का नूर ह़ासिल कीजिये और दूसरों को भी रोशनी दिखाइये ।

मुर्दों को पुकारना :– चारों परन्दों का क़ीमा बना कर ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام ने पहाड़ियों पर रख दिया था । फिर **अल्लाह** तआ़ला का हुक्म हुवा कि ثُمَّ ادْعُهُنَّ या'नी इन मुर्दे परन्दों को पुकारो । चुनान्चे, आप ने चारों को नाम ले कर पुकारा तो इस से येह मस्अला षाबित हो गया कि मुर्दों को पुकारना शिर्क नहीं है क्यूंकि जब मुर्दा परन्दों को **अल्लाह** तआ़ला ने पुकारने का हुक्म फ़रमाया और एक जलीलुल क़द्र पैग़म्बर ने इन मुर्दों को पुकारा तो हरगिज़ हरगिज़ येह शिर्क नहीं हो सकता । क्यूंकि ख़ुदावन्दे करीम कभी भी किसी को शिर्क का हुक्म नहीं देगा न कोई नबी हरगिज़ हरगिज़ कभी शिर्क का काम कर सकता है । तो जब मरे हुवे परन्दों को पुकारना शिर्क नहीं तो वफ़ात पाए हुवे ख़ुदा के वलियों और शहीदों को पुकारना क्यूंकर शिर्क हो सकता है ? जो लोग वलियों और शहीदों के पुकारने को शिर्क कहते हैं और या ग़ौष का ना'रा लगाने वालों को मुशरिक कहते हैं, उन्हें थोड़ी देर सर झुका कर सोचना चाहिये कि इस कुरआनी वाक़िए

की रोशनी में उन्हें हिदायत का नूर नज़र आ जाए और वोह अहले सुन्नत के त़रीक़े पर सिराते़ मुस्तक़ीम की शाहराह पर चल पड़ें। (واللّٰه الموفق)

तसव्वुफ़ का एक नुक्ता :- ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام ने जिन चार परन्दों को ज़ब्ह़ किया इन में से हर परन्द एक बुरी ख़स्लत में मश्हूर है मषलन मोर को अपनी शक्लो सूरत की ख़ूब सूरती पर घमन्ड रहता है और मुर्ग़ में कषरते शहवत की बुरी ख़स्लत है और गिध में ह़िर्स और लालच की बुरी आ़दत है और कबूतर को अपनी बुलन्द परवाज़ी और ऊंची उड़ान पर नख़्वत व ग़ुरूर होता है। तो इन चारों परन्दों के ज़ब्ह़ करने से इन चारों ख़स्लतों को ज़ब्ह़ करने की त़रफ़ इशारा है कि चारों परन्द ज़ब्ह़ किये गए तो ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام को मुर्दों के ज़िन्दा होने का मन्ज़र नज़र आया और इन के दिल में नूरे इत़्मीनान की तजल्ली हुई। जिस की बदौलत इन्हें नफ़्से मुत़्मइन्ना की दौलत मिल गई तो जो शख़्स येह चाहता है कि उस का दिल ज़िन्दा हो जाए और उस को नफ़्से मुत़्मइन्ना की दौलत नसीब हो जाए उस को चाहिये कि मुर्ग़ ज़ब्ह़ करे या'नी अपनी शहवत पर छुरी फेर दे और मोर को ज़ब्ह़ करे या'नी अपनी शक्लो सूरत और लिबास के घमन्ड को ज़ब्ह़ कर डाले और गिध को ज़ब्ह़ करे या'नी ह़िर्स और लालच का गला काट डाले और कबूतर को ज़ब्ह़ करे या'नी अपनी बुलन्द परवाज़ी और ऊंचे मर्तबों के ग़ुरूरो नख़्वत पर छुरी चला दे। अगर कोई इन चारों बुरी ख़स्लतों को ज़ब्ह़ कर डालेगा तो اِنْ شَاءَ اللّٰه تعالٰی वोह अपने दिल के ज़िन्दा होने का मन्ज़र अपनी आंखों से देख लेगा और उस को नफ़्से मुत़्मइन्ना की सरफ़राज़ी का शरफ़ ह़ासिल हो जाएगा। (واللّٰه تعالٰی اعلم)

(تفسیر جمل، ج۱، ص۳۲۸، پ۳، البقرۃ:۲۶۰)

﴾12﴿ त़ालूत की बादशाही

बनी इस्राईल का निज़ाम यूं चलता था कि हमेशा इन लोगों में एक बादशाह होता था। जो मुल्की निज़ाम चलाता था और एक नबी होता था जो निज़ामे शरीअ़त और दीनी उमूर की हिदायत व रहनुमाई

किया करता था। और यूं दस्तूर चला आता था कि बादशाही यहूद इब्ने या'कूब عَلَیْہِ السَّلَام के ख़ानदान में रहती थी और नबुव्वत लावी बिन या'कूब عَلَیْہِ السَّلَام के ख़ानदान का तुर्रए इम्तियाज़ था। ह़ज़रते शमवील عَلَیْہِ السَّلَام जब नबुव्वत से सरफ़राज़ किये गए तो इन के ज़माने में कोई बादशाह नहीं था तो बनी इस्राईल ने आप से दरख़्वास्त की, कि आप किसी को हमारा बादशाह बना दीजिये तो आप ने हुक्मे ख़ुदावन्दी के मुत़ाबिक़ "त़ालूत" को बादशाह बना दिया जो बनी इस्राईल में सब से ज़ियादा त़ाक़तवर और सब से बड़ा आ़लिम था। लेकिन बहुत ही ग़रीब व मुफ़्लिस था। चमड़ा पका कर या बकरियों की चरवाही कर के ज़िन्दगी बसर करता था। इस पर बनी इस्राईल को ए'तिराज़ हुवा कि त़ालूत शाही ख़ानदान से नहीं है लिहाज़ा येह क्यूंकर और कैसे हमारा बादशाह हो सकता है ? इस से ज़ियादा तो बादशाहत के ह़क़दार हम लोग हैं क्यूंकि हम लोग शाही ख़ानदान से हैं। फिर त़ालूत के पास कुछ ज़ियादा माल भी नहीं है। एक ग़रीब व मुफ़्लिस इन्सान भला तख़्ते शाही के लाइक़ क्यूंकर हो सकता है। बनी इस्राईल के इन ए'तिराज़ का जवाब देते हुवे ह़ज़रते शमवील عَلَیْہِ السَّلَام ने येह तक़रीर फ़रमाई कि

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- फ़रमाया : इसे **अल्लाह** ने तुम पर चुन लिया और इसे इ़ल्म और जिस्म में कुशादगी ज़ियादा दी और **अल्लाह** अपना मुल्क जिसे चाहे दे। और **अल्लाह** वुस्अ़त वाला इ़ल्म वाला है। और उन से उन के नबी ने फ़रमाया इस की बादशाही की निशानी येह है कि आए तुम्हारे पास ताबूत जिस में तुम्हारे रब की त़रफ़ से दिलों का चैन है।

(پ ۲،البقرۃ:۲۴۷،۲۴۸)

चुनान्चे, थोड़ी ही देर के बा'द चार फ़िरिश्ते सन्दूक़ ले कर आ गए और सन्दूक़ को ह़ज़रते शमवील عَلَیْہِ السَّلَام के पास रख दिया। येह देख कर तमाम बनी इस्राईल ने त़ालूत की बादशाही को तस्लीम कर लिया और आप ने बादशाह बन कर न सिर्फ़ इन्तिज़ामे मुल्की संभाला बल्कि बनी इस्राईल की फ़ौज भरती कर के क़ौमे अ़मालक़ा के कुफ़्फ़ार से जिहाद भी फ़रमाया।

अल्लाह तआला ने इस वाक़िए का ज़िक्र कुरआने मजीद में फ़रमाते हुवे इस त़रह़ इरशाद फ़रमाया जिस का तर्जमा येह है कि

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- और उन से उन के नबी ने फ़रमाया कि बेशक अल्लाह ने त़ालूत को तुम्हारा बादशाह बना कर भेजा है। बोले : इसे हम पर बादशाही क्यूंकर होगी ? और हम इस से ज़ियादा सल्त़नत के मुस्तह़िक़ हैं और इसे माल में भी वुस्अ़त नहीं दी गई, फ़रमाया इसे अल्लाह ने तुम पर चुन लिया और इसे इल्म और जिस्म में कुशादगी ज़ियादा दी और अल्लाह अपना मुल्क जिसे चाहे दे और अल्लाह वुस्अ़त वाला इल्म वाला है और उन से उन के नबी ने फ़रमाया : इस की बादशाही की निशानी येह है कि आए तुम्हारे पास ताबूत जिस में तुम्हारे रब की त़रफ़ से दिलों का चैन है और कुछ बची हुई चीज़ें हैं मुअ़ज़्ज़ज़ मूसा और मुअ़ज़्ज़ज़ हारून के तर्के की उठाते लाएंगे इसे फ़िरिश्ते। बेशक इस में बड़ी निशानी है तुम्हारे लिये, अगर ईमान रखते हो। (پ۲،البقرۃ:۲۴۷،۲۴۸)

दर्से हिदायत :- ﴿1﴾ इस वाक़िए से जहां बहुत से मसाइल पर रोशनी पड़ती है एक बहुत ही वाज़ेह़ दर्स येह मिलता है कि अल्लाह तआला के फ़ज़्ल और उस की नवाज़िश की कोई ह़द नहीं है। वोह चाहे तो छोटे से छोटे आदमी को मिनटों बल्कि सेकन्डों में बड़े से बड़ा आदमी बना दे। देख लो ह़ज़रते त़ालूत एक बहुत ही कम दरजे के आदमी थे और इतने मुफ़्लिस थे कि या तो दबगर थे जो चमड़े को दबाग़त दे कर अपनी रोज़ी ह़ासिल करते थे या बकरियां चरा कर इस की उजरत से गुज़र बसर करते थे मगर लम्ह़े भर में अल्लाह तआला ने उन्हें साह़िबे तख़्तो ताज बना कर बादशाह बना दिया।

﴿2﴾ इस वाक़िए से और कुरआने मजीद की इबारत से मा'लूम हुवा कि जिस्मानी तुवानाई और इल्म की वुस्अ़त बादशाही के लिये मालदारी से ज़ियादा ज़रूरी है क्यूंकि बिग़ैर जिस्मानी त़ाक़त और इल्म के निज़ामे मुल्की को चलाना और सल्त़नत का इन्तिज़ाम करना तक़रीबन मुह़ाल और नामुमकिन है। इस से ज़ाहिर हुवा कि इल्म का दरजा माल से बहुत बुलन्द तर है। (واللہ تعالٰی اعلم)

﴾13﴿ ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام किस त़रह़ बादशाह बने ?

जब त़ालूत बनी इस्राईल के बादशाह बन गए तो आप ने बनी इस्राईल को जिहाद के लिये तय्यार किया और एक काफ़िर बादशाह "जालूत" से जंग करने के लिये अपनी फ़ौज को ले कर मैदाने जंग में निकले। जालूत बहुत ही क़द आवर और निहायत ही त़ाक़तवर बादशाह था। वोह अपने सर पर लोहे की जो टोपी पहनता था उस का वज़्न तीन सो रत़ल था। जब दोनों फ़ौजें मैदाने जंग में लड़ाई के लिये सफ़ आराई कर चुकीं तो ह़ज़रते त़ालूत ने अपने लश्कर में येह ए'लान फ़रमा दिया कि जो शख़्स जालूत को क़त्ल करेगा, मैं अपनी शहज़ादी का निकाह़ उस के साथ कर दूंगा। और अपनी आधी सल्त़नत भी उस को अ़त़ा कर दूंगा। येह फ़रमाने शाही सुन कर ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام आगे बढ़े जो अभी बहुत ही कमसिन थे और बीमारी से चेहरा ज़र्द हो रहा था। और ग़ुर्बत व मुफ़्लिसी का येह आ़लम था कि बकरियां चरा कर इस की उजरत से गुज़र बसर करते थे। रिवायत है कि जब ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام घर से जिहाद के लिये रवाना हुवे थे तो रास्ते में एक पथ्थर येह बोला कि ऐ ह़ज़रते दावूद ! मुझे उठा लीजिये क्यूंकि मैं ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام का पथ्थर हूं। फिर दूसरे पथ्थर ने आप को पुकारा कि ऐ ह़ज़रते दावूद ! मुझे उठा लीजिये क्यूंकि मैं ह़ज़रते हारून عَلَيْهِ السَّلَام का पथ्थर हूं। फिर एक तीसरे पथ्थर ने आप को पुकार कर अ़र्ज़ किया कि ऐ ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام मुझे उठा लीजिये क्यूंकि मैं जालूत का क़ातिल हूं। आप عَلَيْهِ السَّلَام ने उन तीनों पथ्थरों को उठा कर अपने झोले में रख लिया। जब जंग शुरूअ़ हुई तो ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام अपनी गोफन ले कर सफ़ों से आगे बढ़े और जब जालूत पर आप की नज़र पड़ी तो आप ने इन तीनों पथ्थरों को अपनी गोफन में रख कर और बिस्मिल्लाह पढ़ कर गोफन से तीनों पथ्थरों को जालूत के ऊपर फेंका और येह तीनों पथ्थर जा कर जालूत की नाक और खोपड़ी पर लगे और उस के भेजे को पाश पाश कर के सर के पीछे से निकल कर तीस जालूतियों को लगे और सब के सब मक़्तूल हो कर गिर पड़े। फिर ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام ने जालूत की लाश को घसीटते

हुवे ला कर अपने बादशाह त़ालूत के क़दमों में डाल दिया इस पर ह़ज़रते त़ालूत और बनी इस्राईल बे ह़द खुश हुवे।

जालूत के क़त्ल हो जाने से उस का लश्कर भाग निकला और ह़ज़रते त़ालूत को फ़त्ह़े मुबीन हो गई और अपने ए'लान के मुत़ाबिक़ ह़ज़रते त़ालूत ने ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام के साथ अपनी लड़की का निकाह़ कर दिया और अपनी आधी सल्त़नत का इन को सुल्त़ान बना दिया। फिर पूरे चालीस बरस के बा'द जब ह़ज़रते त़ालूत बादशाह का इन्तिक़ाल हो गया तो ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام पूरी सल्त़नत के बादशाह बन गए और जब ह़ज़रते शमवील عَلَيْهِ السَّلَام की वफ़ात हो गई तो अल्लाह तआ़ला ने ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام को सल्त़नत के साथ नबुव्वत से भी सरफ़राज़ फ़रमा दिया। आप से पहले सल्त़नत और नबुव्वत दोनों ए'ज़ाज़ एक साथ किसी को भी नहीं मिला था। आप पहले शख़्स हैं कि इन दोनों ओ़हदों पर फ़ाइज़ हो कर सत्तर बरस तक सल्त़नत और नबुव्वत दोनों मन्सबों के फ़राइज़ पूरे करते रहे और फिर आप के बा'द आप के फ़रज़न्द ह़ज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام को भी अल्लाह तआ़ला ने सल्त़नत और नबुव्वत दोनों मर्तबों से सरफ़राज़ फ़रमाया। (تفسیر جمل علی الجلالین،ج۱،ص۳۰۸،پ۲،البقرۃ ۲۵۱)

इस वाक़िए का इजमाली बयान क़ुरआने मजीद की सूरए बक़रह में इस तरह है कि

وَقَتَلَ دَاوٗدُ جَالُوْتَ وَاٰتٰىهُ اللّٰهُ الْمُلْكَ وَالْحِكْمَةَ وَعَلَّمَهٗ مِمَّا يَشَآءُ ؕ (پ۲،البقرۃ:۲۵۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- और क़त्ल किया दावूद ने जालूत को और अल्लाह ने उसे सल्त़नत और ह़िक्मत अ़त़ा फ़रमाई और उसे जो चाहा सिखाया।

ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام का ज़रीअ़ए मआ़श :- ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام ने बा वुजूद येह कि अ़ज़ीम सल्त़नत के बादशाह थे मगर सारी उ़म्र वोह अपने हाथ की दस्तकारी की कमाई से अपने खुर्दो नोश का सामान करते रहे। अल्लाह तआ़ला ने आप को येह मो'जिज़ा अ़त़ा फ़रमाया था कि आप लोहे को हाथ में लेते तो वोह मोम की त़रह़ नर्म हो जाया करता था

और आप उस से ज़िरहें बनाया करते थे और इन को फ़रोख़्त कर के इस रक़म को अपना ज़रीअ़ए मआ़श बनाए हुवे थे और अल्लाह तआ़ला ने आप को परन्दों की बोली सिखा दी थी। (روح البیان،ج۱،ص۳۹۱،پ۲،البقرۃ:۲۵۱)

दर्से हिदायत :- ﴾1﴿ ह़ज़रते त़ालूत की सरगुज़श्त की त़रह़ ह़ज़रते दावूद عَلَیْہِ السَّلَام की मुक़द्दस ज़िन्दगी से येही सबक़ मिलता है कि अल्लाह तआ़ला जब अपना फ़ज़्लो करम फ़रमाता है तो एक लम्हे में राई पहाड़ और ज़र्रे को आफ़्ताब बना देता है। ग़ौर करो कि ह़ज़रते दावूद عَلَیْہِ السَّلَام एक कमसिन लड़के थे और ख़ुद निहायत ही मुफ़्लिस और एक ग़रीब बाप के बेटे थे। मगर अचानक अल्लाह तआ़ला ने इन को कितने अ़ज़ीम और बड़े बड़े मरातिब व दरजात के ए'ज़ाज़ से सरफ़राज़ फ़रमा दिया कि इन के सर पर ताजे शाही रख कर इन्हें बादशाह बना दिया। और एक बादशाह की शहज़ादी इन के निकाह़ में आई और फिर नबुव्वत का बुलन्द मर्तबा इन्हें अ़त़ा फ़रमा दिया कि इस से बढ़ कर इन्सान के लिये कोई बुलन्द मर्तबा हो सकता ही नहीं। फिर अल्लाह तआ़ला की क़ुदरते क़ाहिरा का जल्वा देखो कि जालूत जैसे जाबिर और त़ाक़तवर बादशाह का क़ातिल ह़ज़रते दावूद عَلَیْہِ السَّلَام को बना दिया जो एक कमसिन लड़के और बीमार थे और वोह भी इन के तीन पथ्थरों से क़त्ल हुवा। ह़ालांकि जालूत के सामने इन छोटे छोटे तीन पथ्थरों की क्या ह़क़ीक़त थी ? जब कि वोह तीन सो रत़ल वज़्न की फ़ौलादी टोपी पहने हुवे था। मगर ह़क़ीक़त तो येह है कि अल्लाह तआ़ला अगर चाहे तो एक च्यूंटी को हाथी पर ग़ालिब कर दे और अल्लाह तआ़ला अगर चाहे तो हाथी एक च्यूंटी का कुछ भी नहीं बिगाड़ सकता।

﴾2﴿ वाक़िअ़ए मज़्कूरा बाला में आप ने पढ़ लिया कि त़ालूत दबगरी या'नी चमड़ा पकाने का पेशा करते थे या बकरियां चराते थे और ह़ज़रते दावूद عَلَیْہِ السَّلَام भी पहले बकरियां चराया करते थे और फिर जब अल्लाह तआ़ला ने इन को बादशाह बना दिया और नबुव्वत के शरफ़ से भी सरफ़राज़ फ़रमा दिया तो इन्हों ने अपना ज़रीअ़ए मआ़श ज़िरहें बनाने के पेशे को बना लिया। इस से मा'लूम हुवा कि रिज़्के़ ह़लाल त़लब करने के लिये कोई पेशा इख़्तियार करना ख़्वाह वोह दबगरी हो या चरवाही हो या

लोहारी हो या कपड़ा बुनना हो, अल ग़रज़ कोई पेशा हरगिज़ हरगिज़ न ज़लील है न इन पेशों के ज़रीए़ रोज़ी ह़ासिल करने वालों के लिये कोई ज़िल्लत है। जो लोग बंकरों और दूसरे पेशावरों को मह़्ज़ इन के पेशे की बिना पर ज़लील व ह़क़ीर समझते हैं वोह इन्तिहाई जहालत व गुमराही के गढ़े में गिरे हुवे हैं। रिज़्के़ ह़लाल त़लब करने के लिये कोई जाइज़ पेशा इख़्तियार करना येह अम्बिया व मुरसलीन और सालिह़ीन का मुक़द्दस त़रीक़ा है। लिहाज़ा हरगिज़ हरगिज़ पेशावर मुसलमान को ह़क़ीर ज़लील शुमार नहीं करना चाहिये बल्कि ह़क़ीक़त तो येह है कि पेशावर मुसलमान उन लोगों से हज़ारों दरजे बेहतर है जो सरकारी नोकरियों और रिश्वतों और धोका देही के ज़रीए़ रक़में ह़ासिल कर के अपना पेट पालते हैं और अपने शरीफ़ होने का दा'वा करते हैं ह़ालांकि शरअ़न उस से ज़ियादा ज़लील कौन होगा जिस की कमाई ह़लाल न हो या मुश्तबा हो । (واللہ تعالٰی اعلم)

﴾14﴿ मेह़राबे मरयम

ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام की वालिदए माजिदा ह़ज़रते मरयम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا के वालिद का नाम "इमरान" और मां का नाम "ह़न्ना' था। जब बीबी मरयम अपनी मां के शिकम में थीं उस वक़्त इन की मां ने येह मन्नत मान ली थी कि जो बच्चा पैदा होगा मैं उस को बैतुल मुक़द्दस की ख़िदमत के लिये आज़ाद कर दूंगी। चुनान्चे, जब ह़ज़रते मरयम पैदा हुईं तो इन की वालिदा इन को बैतुल मुक़द्दस में ले कर गईं। उस वक़्त बैतुल मुक़द्दस के तमाम आ़लिमों और आ़बिदों के इमाम ह़ज़रते ज़करिय्या عَلَيْهِ السَّلَام थे जो ह़ज़रते मरयम के ख़ालू थे। ह़ज़रते ज़करिय्या عَلَيْهِ السَّلَام ने ह़ज़रते मरयम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا को अपनी कफ़ालत और परवरिश में ले लिया और बैतुल मुक़द्दस की बालाई मन्ज़िल में तमाम मन्ज़िलों से अलग एक मेह़राब बना कर ह़ज़रते मरयम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا को इस मेह़राब में ठहराया। चुनान्चे, ह़ज़रते मरयम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا इस मेह़राब में अकेली ख़ुदा की इ़बादत में मसरूफ़ रहने लगीं और ह़ज़रते ज़करिय्या عَلَيْهِ السَّلَام सुब्ह़ो शाम मेह़राब में इन की ख़बर गीरी और ख़ुर्दो नोश का इन्तिज़ाम करने के लिये आते जाते रहे।

चन्द ही दिनों में ह़ज़रते मरयम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا की मेह़राब के अन्दर येह करामत नुमूदार हुई कि जब ह़ज़रते ज़करिय्या عَلَيْهِ السَّلَام मेह़राब

में जाते तो वहां जाड़ों के फल गरमी में और गरमी के फल जाड़ों में पाते। ह़ज़रते ज़करिय्या عَلَيْهِ السَّلَام ह़ैरान हो कर पूछते कि ऐ मरयम ! येह फल कहां से तुम्हारे पास आते हैं ? तो ह़ज़रते मरयम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا येह जवाब देतीं कि येह फल **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से आते हैं और **अल्लाह** जिस को चाहता है बिला ह़िसाब रोज़ी अ़त़ा फ़रमाता है।

ह़ज़रते ज़करिय्या عَلَيْهِ السَّلَام को ख़ुदावन्दे क़ुद्दूस ने नबुव्वत के शरफ़ से नवाज़ा था मगर उन के कोई अवलाद नहीं थी और वोह बिल्कुल ज़ईफ़ हो चुके थे। बरसों से उन के दिल में फ़रज़न्द की तमन्ना मौजज़न थी और बारहा उन्हों ने गिड़ गिड़ा कर ख़ुदा से अवलादे नरीना के लिये दुआ़ भी मांगी थी मगर ख़ुदा की शाने बे नियाज़ी कि बावुजूद इस के अब तक उन को कोई फ़रज़न्द नहीं मिला। जब उन्हों ने ह़ज़रते मरयम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا की मेह़राब में येह करामत देखी कि उस जगह बे मौसिम का फल आता है तो उस वक़्त उन के दिल में येह ख़याल आया कि मेरी उ़म्र अब इतनी ज़ईफ़ी की हो चुकी है कि अवलाद के फल का मौसिम ख़त्म हो चुका है। मगर वोह **अल्लाह** जो ह़ज़रते मरयम की मेह़राब में बे मौसिम के फल अ़त़ा फ़रमाता है वोह क़ादिर है कि मुझे भी बे मौसिम की अवलाद (का फल) अ़त़ा फ़रमा दे। चुनान्चे, आप ने मेह़राबे मरयम में दुआ़ मांगी और आप की दुआ़ मक़्बूल हो गई। और **अल्लाह** तआ़ला ने बुढ़ापे में आप को एक फ़रज़न्द अ़त़ा फ़रमाया जिन का नाम ख़ुद ख़ुदावन्दे आ़लम ने "यह़्या" रखा और **अल्लाह** तआ़ला ने उन को नबुव्वत का शरफ़ भी अ़त़ा फ़रमाया। क़ुरआने मजीद में ख़ुदावन्दे क़ुद्दूस ने इस वाक़िए़ को इस त़रह़ बयान फ़रमाया :

كُلَّمَا دَخَلَ عَلَيْهَا زَكَرِيَّا الْمِحْرَابَ ۙ وَجَدَ عِنْدَهَا رِزْقًا ۚ قَالَ يٰمَرْيَمُ
اَنّٰى لَكِ هٰذَا ؕ قَالَتْ هُوَ مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يَرْزُقُ مَنْ يَّشَآءُ بِغَيْرِ
حِسَابٍ ﴿۳۷﴾ هُنَالِكَ دَعَا زَكَرِيَّا رَبَّهٗ ۚ قَالَ رَبِّ هَبْ لِيْ مِنْ لَّدُنْكَ
ذُرِّيَّةً طَيِّبَةً ۚ اِنَّكَ سَمِيْعُ الدُّعَآءِ ﴿۳۸﴾ فَنَادَتْهُ الْمَلٰٓئِكَةُ وَهُوَ قَآئِمٌ يُّصَلِّيْ
فِي الْمِحْرَابِ ۙ اَنَّ اللّٰهَ يُبَشِّرُكَ بِيَحْيٰى مُصَدِّقًۢا بِكَلِمَةٍ مِّنَ اللّٰهِ
وَسَيِّدًا وَّحَصُوْرًا وَّنَبِيًّا مِّنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿۳۹﴾ (پ۳،اٰل عمران:۳۷تا۳۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- जब ज़करिय्या उस के पास उस की नमाज़ पढ़ने की जगह जाते उस के पास नया रिज़्क़ पाते। कहा : ऐ मरयम ! येह तेरे पास कहां से आया बोलीं वोह अल्लाह के पास से है बेशक अल्लाह जिसे चाहे बे गिनती दे। यहां पुकारा ज़करिय्या अपने रब को। बोला : ऐ रब मेरे मुझे अपने पास से दे सुथरी अवलाद बेशक तू ही है दुआ सुनने वाला, तो फ़िरिश्तों ने उसे आवाज़ दी और वोह अपनी नमाज़ की जगह खड़ा नमाज़ पढ़ रहा था। बेशक अल्लाह आप को मुज़्दा देता है यह्या का जो अल्लाह की त़रफ़ के एक कलिमे की तस्दीक़ करेगा और सरदार और हमेशा के लिये औ़रतों से बचने वाला और नबी हमारे ख़ासों में से।

दर्से हिदायत :- इस वाक़िए़ से मुन्दरिजए ज़ैल इ़ब्रतों की तजल्ली होती है जिन से हर मुसलमान को सबक़ ह़ासिल करना बहुत ज़रूरी है।

ह़ज़रते मरयम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا बा करामत वलिय्या हैं :- वाक़िअ़ए मज़्कूरा से मा'लूम हुवा कि ह़ज़रते मरयम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا साहि़बे करामत और मर्तबए विलायत पर फ़ाइज़ हैं क्यूंकि ख़ुदा की त़रफ़ से इन की मेह़राब में फल आते थे और वोह भी जाड़ों के फल गरमी में और गरमी के फल जाड़ों में। येह इन की एक बहुत ही अ़ज़ीमुश्शान और वाज़ेह़ करामत है जो इन की विलायत की शाहिदे अ़द्ल है।

इ़बादत गाह मक़ामे मक़्बूलिय्यत है :- इस वाक़िए़ से येह भी षाबित हुवा कि अल्लाह वाले या अल्लाह वालियां जिस जगह इ़बादत करें वोह जगह इस क़दर मुक़द्दस हो जाती है कि वहां रह़मते ख़ुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ का नुज़ूल होता है और वहां पर दुआ़एं मक़्बूल हुवा करती हैं जैसा कि ह़ज़रते ज़करिय्या عَلَیْہِ السَّلَام की दुआ़ मेह़राबे मरयम में मक़्बूल हुई। ह़ालांकि वोह इस से पहले बैतुल मुक़द्दस में बार बार येह दुआ़ मांग चुके थे मगर उन की मुराद पूरी नहीं हुई थी।

क़ब्रों के पास दुआ़ :- जहां अल्लाह के मक़्बूल बन्दे और मक़्बूल बन्दियां चन्द दिन बैठ कर इ़बादत करें जब इन जगहों पर दुआ़एं मक़्बूल होती हैं तो इन मक़्बूलाने बारगाहे इलाही की क़ब्रों के पास जहां इन बुज़ुर्गों का पूरा जिस्म बरसहा बरस तक रहा है, वहां भी ज़रूर दुआ़एं

मक़्बूल होंगी। चुनान्चे, ह़ज़रते इमाम शाफ़ेई رَحۡمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ का बयान है कि जब किसी मस्अले का ह़ल मेरे लिये मुश्किल हो जाता था तो मैं बग़दाद जा कर ह़ज़रते इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा رَحۡمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ की क़ब्रे मुबारक के पास बैठ कर अपने और ख़ुदा के दरमियान इमामे ममदूह़ की मुबारक क़ब्र को वसीला बना कर दुआ़ मांगता था तो मेरी मुराद बर आती थी और मस्अला ह़ल हो जाया करता था।

(الخیرات الحسان، الفصل الخامس و الثلاثون فی تادب الائمہ معہ فی مماتہ الخ، ص۲۳۰)

(इस क़िस्म के वाक़िआ़त के लिये पढ़िये हमारी किताब औलियाए रिजालुल ह़दीष व रूह़ानी ह़िकायात)

﴾15﴿ मक़ामे इब्राहीम

येह एक मुक़द्दस पथ्थर है जो का'बए मुअ़ज़्ज़मा से चन्द गज़ की दूरी पर रखा हुवा है। येह वोही पथ्थर है कि जब ह़ज़रते इब्राहीम عَلَیۡہِ السَّلَام का'बए मुकर्रमा की ता'मीर फ़रमा रहे थे तो जब दीवारें सर से ऊंची हो गईं तो इसी पथ्थर पर खड़े हो कर आप ने का'बए मुअ़ज़्ज़मा की दीवारों को मुकम्मल फ़रमाया। येह आप का मो'जिज़ा था कि येह पथ्थर मोम की त़रह़ नर्म हो गया और आप के दोनों मुक़द्दस क़दमों का इस पथ्थर पर बहुत गहरा निशान पड़ गया। आप के क़दमों के मुबारक निशान की बदौलत इस मुबारक पथ्थर की फ़ज़ीलत व अ़ज़मत में इस त़रह़ चार चांद लग गए कि ख़ुदावन्दे क़ुद्दूस ने अपनी किताब मुक़द्दस क़ुरआने मजीद में दो जगह इस की अ़ज़मत का ख़ुत़बा इरशाद फ़रमाया। एक जगह तो येह इरशाद फ़रमाया कि

فِيهِ اٰيٰتٌۢ بَيِّنٰتٌ مَّقَامُ اِبْرٰهِيْمَ ۚ (پ۴، آل عمران:۹۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :– इस में खुली निशानियां हैं, इब्राहीम के खड़े होने की जगह।

या'नी का'बए मुकर्रमा में ख़ुदा की बहुत सी रोशन और खुली हुई निशानियां हैं और इन निशानियों में से एक बड़ी निशानी "**मक़ामे इब्राहीम**" है और दूसरी जगह इस पथ्थर की अ़ज़मत का ए'लान करते हुवे येह फ़रमाया कि :

وَاتَّخِذُوْا مِنْ مَّقَامِ اِبْرٰهٖمَ مُصَلًّى ؕ (پ ۱، البقرۃ:۱۲۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- और इब्राहीम के खड़े होने की जगह को नमाज़ का मक़ाम बनाओ ।

चार हज़ार बरस के तवील ज़माने से इस बा बरकत पथ्थर पर हज़रते इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلَيْهِ السَّلَام के मुबारक क़दमों के निशान मौजूद हैं । इस तवील मुद्दत से येह पथ्थर खुले आस्मान के नीचे ज़मीन पर रखा हुवा है । इस पर चार हज़ार बरसातें गुज़र गईं, हज़ारों आंधियों के झोंके इस से टकराए । बारहा हरमे का'बा में पहाड़ी नालों से बरसात में सैलाब आया और येह मुक़द्दस पथ्थर सैलाब के तेज़ धारों में डूबा रहा, करोड़ों इन्सानों ने इस पर हाथ फेरा मगर इस के बा वुजूद आज तक हज़रते ख़लील عَلَيْهِ السَّلَام के जलीलुल क़द्र क़दमों के निशान इस पथ्थर पर बाक़ी हैं जो बिला शुबा हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام का एक बहुत ही बड़ा और निहायत ही मुअ़ज़्ज़म मो'जिज़ा है । और यक़ीनन येह पथ्थर ख़ुदावन्दे क़ुद्दूस की आयाते बय्यिनात और खुली हुई रोशन निशानियों में से एक बहुत बड़ा निशान है । और उस की शान का येह अ़ज़ीमुश्शान निशान हर मुसलमान के लिये बहुत बड़ी इ़ब्रत का सामान है कि ख़ुदावन्दे क़ुद्दूस ने तमाम मुसलमानों को येह हुक्म दिया कि तुम लोग मेरे मुक़द्दस घर ख़ानए का'बा के त़वाफ़ के बा'द इसी पथ्थर के पास दो रक्अ़त नमाज़ अदा करो । तुम लोग नमाज़ तो मेरे लिये पढ़ो और सजदा मेरा अदा करो लेकिन मुझे येह मह़बूब है कि सजदों के वक़्त तुम्हारी पेशानियां उस मुक़द्दस पथ्थर के पास ज़मीन पर लगें कि जिस पथ्थर पर मेरे ख़लीले जलील हज़रते इब्राहीम (عَلَيْهِ السَّلَام) के क़दमों का निशान बना हुवा है ।

दर्से हिदायत :- मुसलमानो ! मक़ामे इब्राहीम की अ़ज़मते शान से येह सबक़ मिलता है कि जिस जगह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मुक़द्दस बन्दों का कोई निशान मौजूद हो वोह जगह **अल्लाह** तआ़ला के नज़दीक बहुत ज़ियादा इ़ज़्ज़त व अ़ज़मत वाली है और उस जगह ख़ुदा की इ़बादत ख़ुदा के नज़दीक बहुत ही बेहतर और मह़बूब तर है ।

अब गौर करो कि मक़ामे इब्राहीम जब हज़रते ख़लीलुल्लाह عَلَيْهِ السَّلَام के क़दमों के निशान की वजह से इतना मुअज़्ज़म व मुकर्रम हो गया तो ख़ुदा के महबूबे अकरम और हबीबे मुअज़्ज़म صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की क़ब्रे अन्वर की अज़्मत व बुज़ुर्गी और इस के तक़द्दुस व शरफ़ का क्या आलम होगा कि जहां हबीबे ख़ुदा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का सिर्फ़ निशान ही नहीं बल्कि ख़ुदा के महबूबे अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का पूरा जिस्मे अन्वर मौजूद है और इस ज़मीन का ज़र्रा ज़र्रा अन्वारे नबुव्वत की तजल्लियों से रश्के आफ़्ताब व ग़ैरते माहताब बना हुवा है। मुसलमानो ! काश क़ुरआने मजीद की येह आयतें लोगों की आंखों में ईमानी बसीरत का नूर पैदा करें ताकि लोग क़ब्रे अन्वर की ता'ज़ीमो तकरीम कर के दोनों जहां में मुकर्रम व मुअज़्ज़म बन जाएं और इस की तौहीन व बेअदबी कर के शैतान के पन्जए गुमराही में गिरिफ़्तार न हों और जहन्नम के अज़ाबे मुहीन में न पड़ जाएं और काश इन चमकती हुई आयाते बय्यिनात से नजदियों और वहाबियों को इब्रत हासिल हो जो हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की क़ब्रे मुनव्वर को मिट्टी का ढेर कह कर इस की तौहीन व बेअदबी करते रहते हैं और गुम्बदे ख़ज़रा को मुन्हदिम करने और गिरा कर मिसमार कर देने और निशाने क़ब्र मिटा देने का प्लान बनाते रहते हैं। (نعوذبالله منه)

﴾16﴿ हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام के चार मो'जिज़ात

हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام ने बनी इस्राईल के सामने अपनी नबुव्वत और मो'जिज़ात का ए'लान करते हुवे येह तक़रीर फ़रमाई। जो क़ुरआने मजीद की सूरए आले इमरान में है :

وَرَسُوْلًا اِلٰى بَنِیْۤ اِسْرَآءِیْلَ ۙ۬ اَنِّیْ قَدْ جِئْتُكُمْ بِاٰیَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ ۙ اَنِّیْۤ اَخْلُقُ لَكُمْ مِّنَ الطِّیْنِ كَهَیْـٴَـةِ الطَّیْرِ فَاَنْفُخُ فِیْهِ فَیَكُوْنُ طَیْرًۢا بِاِذْنِ اللّٰهِ ۚ وَاُبْرِئُ الْاَكْمَهَ وَالْاَبْرَصَ وَاُحْیِ الْمَوْتٰى بِاِذْنِ اللّٰهِ ۚ وَاُنَبِّئُكُمْ بِمَا تَاْكُلُوْنَ وَمَا تَدَّخِرُوْنَ ۙ فِیْ بُیُوْتِكُمْ ؕ اِنَّ فِیْ ذٰلِكَ لَاٰیَةً لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِیْنَ ﴿ۚ۴۹﴾ (پ۳،آل عمران:۴۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- और रसूल होगा बनी इस्राईल की त़रफ़ येह फ़रमाता हुवा कि मैं तुम्हारे पास एक निशानी लाया हूं तुम्हारे रब की त़रफ़ से कि मैं तुम्हारे लिये मिट्टी से परन्द की सी मूरत बनाता हूं फिर उस में फूंक मारता हूं तो वोह फ़ौरन परन्द हो जाती है अल्लाह के हुक्म से, और मैं शिफ़ा देता हूं मादर ज़ाद अन्धे और सपेद (सफ़ेद) दाग़ वाले को, और मैं मुर्दे जिलाता (ज़िन्दा करता) हूं अल्लाह के हुक्म से, और तुम्हें बताता हूं जो तुम खाते और जो अपने घरों में जम्अ़ कर रखते हो। बेशक इन बातों में तुम्हारे लिये बड़ी निशानी है अगर तुम ईमान रखते हो।

इस तक़रीर में आप ने अपने चार मो'जिज़ात का ए'लान फ़रमाया :

﴾1﴿ मिट्टी के परन्द बना कर इन में फूंक मार कर इन को उड़ा देना

﴾2﴿ मादर ज़ाद अन्धे और कोढ़ी को शिफ़ा देना

﴾3﴿ मुर्दों को ज़िन्दा करना

﴾4﴿ और जो कुछ खाया और जो कुछ घरों में छुपा कर रखा उस की ख़बर देना।

अब इन मो'जिज़ात की कुछ तफ़्सील भी पढ़ लीजिये :

मिट्टी के परन्द बना कर उड़ा देना :- जब बनी इस्राईल ने येह मो'जिज़ा त़लब किया कि मिट्टी का परन्द बना कर उड़ा दें तो ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام ने मिट्टी के चमगादड़ बना कर इन को उड़ा दिया। ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام ने परन्दों में से चमगादड़ को इस लिये मुन्तख़ब फ़रमाया कि परन्दों में सब से बढ़ कर मुकम्मल और अ़जीबो ग़रीब येही परन्दा है क्यूंकि इस के आदमी की त़रह़ दांत भी होते हैं और येह आदमी की त़रह़ हंसता भी है और येह बिग़ैर पर के अपने बाज़ूओं से उड़ता है और येह परन्दा जानवरों की त़रह़ बच्चा जनता है और इस को ह़ैज़ भी आता है। रिवायत है कि जब तक बनी इस्राईल देखते रहते येह चमगादड़ उड़ते रहते और अगर उन की नज़रों से ओझल हो जाते तो गिर कर मर जाते थे। ऐसा इस लिये होता था ताकि ख़ुदा के पैदा किये हुवे और बन्दए ख़ुदा के पैदा किये परन्द में फ़र्क़ और इमतियाज़ बाक़ी रहे। (روح البیان،ج۲،ص۳۷،پ۳، آل عمران:۴۹)

मादर ज़ाद अन्धों को शिफ़ा देना :- रिवायत है कि एक दिन में पचास अन्धों और कोढ़ियों को आप की दुआ़ से इस शर्त़ पर शिफ़ा ह़ासिल हुई कि वोह ईमान लाएंगे। (تفسیر جمل،ج۱،ص۴۱۹،پ۳،آل عمران ۴۹)

मुर्दों को ज़िन्दा करना :- रिवायत है कि आप ने चार मुर्दों को ज़िन्दा फ़रमाया :

(1) आ़ज़र अपने दोस्त को। (2) एक बुढ़िया के लड़के को। (3) एक उ़श्र वसूल करने वाले की लड़की को (4) ह़ज़रते साम बिन नूह़ عَلَیْہِ السَّلَام को

आ़ज़र :- येह ह़ज़रते ईसा عَلَیْہِ السَّلَام के एक मुख़्लिस दोस्त थे जब इन का इन्तिक़ाल होने लगा तो इन की बहन ने आप के पास क़ासिद भेजा कि आप का दोस्त मर रहा है। उस वक़्त आप अपने दोस्त से तीन दिन की दूरी की मसाफ़त पर थे। आ़ज़र के इन्तिक़ाल व दफ़्न के बा'द ह़ज़रते ईसा عَلَیْہِ السَّلَام वहां पहुंचे और आ़ज़र की क़ब्र के पास तशरीफ़ ले गए और आ़ज़र को पुकारा तो वोह ज़िन्दा हो कर अपनी क़ब्र से बाहर निकल आए और बरसों ज़िन्दा रहे और साह़िबे अवलाद भी हुवे।

बुढ़िया का बेटा :- येह मर गया था और लोग इस का जनाज़ा उठा कर इस को दफ़्न करने के लिये जा रहे थे। नागहां ह़ज़रते ईसा عَلَیْہِ السَّلَام का उधर से गुज़र हुवा तो वोह आप की दुआ़ से ज़िन्दा हो कर जनाज़े से उठ बैठा और कपड़ा पहन कर अपने जनाज़े की चारपाई उठाए हुवे अपने घर आया और मुद्दतों ज़िन्दा रहा और उस की अवलाद भी हुई।

आ़शिर की बेटी :- एक चुंगी वुसूल करने वाले की लड़की मर गई थी। उस की मौत के एक दिन बा'द ह़ज़रते ईसा عَلَیْہِ السَّلَام की दुआ़ से ज़िन्दा हो गई और बहुत दिनों तक ज़िन्दा रही और उस के कई बच्चे भी हुवे।

ह़ज़रते साम बिन नूह़ :- ऊपर के तीनों मुर्दों को आप ने ज़िन्दा फ़रमाया तो बनी इस्राईल के शरीरों ने कहा कि येह तीनों दर ह़क़ीक़त मरे हुवे नहीं थे बल्कि इन तीनों पर सक्ता त़ारी था इस लिये वोह होश में आ गए

लिहाज़ा आप किसी पुराने मुर्दे को ज़िन्दा कर के हमें दिखाइये तो आप ने फ़रमाया कि ह़ज़रते साम बिन नूह़ عَلَيْهِ السَّلَام को वफ़ात पाए हुवे चार हज़ार बरस का ज़माना गुज़र गया। तुम लोग मुझे उन की क़ब्र पर ले चलो मैं उन को ख़ुदा के हुक्म से ज़िन्दा कर देता हूं तो आप ने उन की क़ब्र के पास जा कर इस्मे आ'ज़म पढ़ा तो फ़ौरन ही ह़ज़रते साम बिन नूह़ عَلَيْهِ السَّلَام क़ब्र से ज़िन्दा हो कर निकल आए और घबराए हुवे पूछा कि क़ियामत क़ाइम हो गई ? फिर वोह ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام पर ईमान लाए फिर थोड़ी देर बा'द उन का इन्तिक़ाल हो गया।

जो खाया और छुपाया उस को बता दिया :- ह़दीष शरीफ़ में है कि ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام अपने मक्तब में बनी इस्राईल के बच्चों को उन के मां बाप जो कुछ खाते और जो कुछ घरों में छुपा कर रखते वोह सब बता दिया करते थे। जब वालिदैन ने बच्चों से दरयाफ़्त किया कि तुम्हें इन बातों की कैसे ख़बर होती है ? तो बच्चों ने बता दिया कि हम को ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام मक्तब में बता देते हैं। येह सुन कर मां बाप ने बच्चों को मक्तब जाने से रोक दिया और कहा कि ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام जादूगर हैं। (مَعَاذَاللّٰهِ عَزَّوَجَلَّ) जब ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام बच्चों की तलाश में बस्ती के अन्दर दाख़िल हुवे तो बनी इस्राईल ने अपने बच्चों को एक मकान के अन्दर छुपा दिया कि बच्चे यहां नहीं हैं ! आप ने पूछा कि घर में कौन हैं ? तो शरीरों ने कह दिया कि घर में सुवर बन्द हैं। तो आप ने फ़रमाया कि अच्छा सुवर ही होंगे। चुनान्चे, लोगों ने इस के बा'द मकान का दरवाज़ा खोला तो मकान में से सुवर ही निकले। इस बात का बनी इस्राईल में चरचा हो गया और बनी इस्राईल ने ग़ैज़ो ग़ज़ब में भर कर आप के क़त्ल का मन्सूबा बना लिया। येह देख कर ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام की वालिदा ह़ज़रते बीबी मरयम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا आप को साथ ले कर मिस्र को हिजरत कर गईं। इस त़रह़ आप शरीरों के शर से मह़फ़ूज़ रहे। (تفسیر جمل علی الجلالین،ص۹ ۱ ۴،پ۳، آل عمران ۴۹)

﴾17﴿ ह़ज़रते ईसा عَلَیْهِ السَّلَام आस्मान पर

ह़ज़रते ईसा عَلَیْهِ السَّلَام ने जब यहूदियों के सामने अपनी नबुव्वत का ए'लान फ़रमाया तो चूंकि यहूदी तौरात में पढ़ चुके थे कि ह़ज़रते ईसा मसीह़ عَلَیْهِ السَّلَام इन के दीन को मन्सूख़ कर देंगे। इस लिये यहूदी आप के दुश्मन हो गए। यहां तक कि जब ह़ज़रते ईसा عَلَیْهِ السَّلَام ने येह मह़सूस फ़रमा लिया कि यहूदी अपने कुफ़्र पर अड़े रहेंगे और वोह मुझे क़त्ल कर देंगे तो एक दिन आप ने लोगों को मुख़ात़ब कर के फ़रमाया कि مَنْ اَنْصَارِیْۤ اِلَی اللّٰهِ ؕ या'नी कौन मेरे मददगार होते हैं **अल्लाह** के दीन की त़रफ़। बारह या उन्नीस ह़वारियों ने येह कहा कि نَحْنُ اَنْصَارُ اللّٰهِ ۚ اٰمَنَّا بِاللّٰهِ ۚ وَ اشْهَدْ بِاَنَّا مُسْلِمُوْنَ ﴿۵۲﴾ या'नी हम ख़ुदा के दीन के मददगार हैं। हम **अल्लाह** पर ईमान लाए और आप गवाह हो जाएं कि हम मुसलमान हैं।

बाक़ी तमाम यहूदी अपने कुफ़्र पर जमे रहे यहां तक कि जोशे अ़दावत में इन यहूदियों ने आप के क़त्ल का मन्सूबा बना लिया और एक शख़्स को यहूदियों ने जिस का नाम ''त़त़यानूस'' था आप के मकान में आप को क़त्ल कर देने के लिये भेजा। इतने में अचानक **अल्लाह** तआ़ला ने ह़ज़रते जिब्रईल عَلَیْهِ السَّلَام को एक बदली के साथ भेजा और उस बदली ने आप को आस्मान की त़रफ़ उठा लिया। आप की वालिदा जोशे मह़ब्बत में आप के साथ चिमट गईं तो आप ने फ़रमाया कि अम्मां जान ! अब क़ियामत के दिन हमारी और आप की मुलाक़ात होगी और बदली ने आप को आस्मान पर पहुंचा दिया। येह वाक़िआ़ बैतुल मुक़द्दस में शबे क़द्र की मुबारक रात में वुक़ूअ़ पज़ीर हुवा। उस वक़्त आप की उ़म्र शरीफ़ ब क़ौले अ़ल्लामा जलालुद्दीन सुयूत़ी عَلَیْهِ الرَّحْمَة 33 बरस की थी और ब क़ौले अ़ल्लामा ज़ुरक़ानी (शारेह़ मवाहिब) उस वक़्त आप की उ़म्र शरीफ़ एक सो बीस बरस की थी और ह़ज़रते अ़ल्लामा जलालुद्दीन सुयूत़ी عَلَیْهِ الرَّحْمَة ने भी आख़िर में इसी क़ौल की त़रफ़ रुजूअ़ फ़रमाया।

(تفسیر جمل علی الجلالین، ج۱، ص۴۲۷، پ۳، آل عمران:۵۷)

"त़त़्यानूस" जब बहुत देर मकान से बाहर नहीं निकला तो यहूदियों ने मकान में घुस कर देखा तो अल्लाह तआ़ला ने "त़त़्यानूस" को ह़ज़रते ईसा عَلَیْہِ السَّلَام की शक्ल का बना दिया। यहूदियों ने "त़त़्यानूस" को ह़ज़रते ईसा समझ कर क़त्ल कर दिया। इस के बा'द त़त़्यानूस के घर वालों ने ग़ौर से देखा तो सिर्फ़ चेहरा ह़ज़रते ईसा عَلَیْہِ السَّلَام का था बाक़ी सारा बदन त़त़्यानूस ही का था तो इस के अहले ख़ानदान ने कहा कि अगर येह मक़्तूल ह़ज़रते ईसा हैं तो हमारा आदमी त़त़्यानूस कहां है? और अगर येह त़त़्यानूस है तो ह़ज़रते ईसा कहां गए? इस पर खुद यहूदियों में जंगो जिदाल की नौबत आ गई और खुद यहूदियों ने एक दूसरे को क़त्ल करना शुरूअ़ कर दिया और बहुत से यहूदी क़त्ल हो गए। खुदावन्दे क़ुद्दूस ने क़ुरआने मजीद में इस वाक़िए़ को इस त़रह़ बयान फ़रमाया कि

وَمَكَرُوْا وَمَكَرَ اللّٰهُ ؕ وَاللّٰهُ خَيْرُ الْمٰكِرِيْنَ ﴿۵۴﴾ اِذْ قَالَ اللّٰهُ يٰعِيْسٰۤى اِنِّىْ مُتَوَفِّيْكَ وَرَافِعُكَ اِلَىَّ وَمُطَهِّرُكَ مِنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَجَاعِلُ الَّذِيْنَ اتَّبَعُوْكَ فَوْقَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْۤا اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ ۚ ثُمَّ اِلَىَّ مَرْجِعُكُمْ فَاَحْكُمُ بَيْنَكُمْ فِيْمَا كُنْتُمْ فِيْهِ تَخْتَلِفُوْنَ ﴿۵۵﴾ (پ۳، آل عمران:۵۴،۵۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- और काफ़िरों ने मक्र किया और अल्लाह ने उन के हलाक की खुफ़्या तदबीर फ़रमाई और अल्लाह सब से बेहतर छुपी तदबीर वाला है याद करो जब अल्लाह ने फ़रमाया : ऐ ईसा! मैं तुझे पूरी उ़म्र तक पहुंचाऊंगा और तुझे अपनी त़रफ़ उठा लूंगा और तुझे काफ़िरों से पाक कर दूंगा और तेरे पैरूओं को क़ियामत तक तेरे मुन्किरों पर ग़लबा दूंगा फिर तुम सब मेरी त़रफ़ पलट कर आओगे तो मैं तुम में फ़ैसला फ़रमा दूंगा जिस बात में झगड़ते हो।

आप के आस्मान पर चले जाने के बा'द ह़ज़रते मरयम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने छे बरस दुन्या में रह कर वफ़ात पाई। (बुख़ारी व मुस्लिम की) रिवायत है कि क़ुर्बे क़ियामत के वक़्त ह़ज़रते ईसा عَلَیْہِ السَّلَام ज़मीन पर उतरेंगे और नबिय्ये आख़िरुज़्ज़मां صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की शरीअ़त पर

अ़मल करेंगे और दज्जाल व खिन्ज़ीर को क़त्ल फ़रमाएंगे और सलीब को तोड़ेंगे और सात बरस तक दुन्या में अ़द्ल फ़रमा कर वफ़ात पाएंगे और मदीनए मुनव्वरा में गुम्बदे ख़ज़रा के अन्दर मदफ़ून होंगे।

(تفسیر جمل علی الجلالین، ج ۱،ص۴۲۷،پ۳، آل عمران:۵۷)

और कुरआने मजीद में ईसाइयों का रद्द करते हुवे येह भी नाज़िल हुवा कि

وَمَا قَتَلُوْهُ يَقِيْنًا ﴿۱۵۷﴾ بَلْ رَّفَعَهُ اللّٰهُ اِلَيْهِ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَزِيْزًا حَكِيْمًا ﴿۱۵۸﴾ (پ۶،النساء:۱۵۷،۱۵۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- और बेशक उन्हों ने इस को क़त्ल न किया बल्कि अल्लाह ने इसे अपनी त़रफ़ उठा लिया और अल्लाह ग़ालिब हिक्मत वाला है।

और इस से ऊपर वाली आयत में है कि

وَمَا قَتَلُوْهُ وَمَا صَلَبُوْهُ وَلٰكِنْ شُبِّهَ لَهُمْ ؕ (پ۶،النساء:۱۵۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- उन्हों ने न इसे क़त्ल किया और न इसे सूली दी बल्कि उन के लिये इस की शबीह (शक्लो सूरत) का एक बना दिया गया।

ख़ुलासए कलाम येह है कि ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام यहूदियों के हाथों मक़्तूल नहीं हुवे और अल्लाह ने आप को आस्मानों पर उठा लिया, जो येह अ़क़ीदा रखे कि ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام क़त्ल हो गए और सूली पर चढ़ाए गए जैसा कि नसारा का अ़क़ीदा है तो वोह शख़्स काफ़िर है क्यूंकि कुरआने मजीद में साफ़ साफ़ मज़्कूर है कि ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام न मक़्तूल हुवे न सूली पर लटकाए गए।

﴾18﴿ ईसाइयों का मुबाहले से फ़िरार

नजरान (यमन) के नसरानियों का एक वफ़्द मदीनए मुनव्वरा आया। येह चौदह आदमियों की जमाअ़त थी जो सब के सब नजरान के अशराफ़ थे और इस वफ़्द की क़ियादत करने वाले तीन शख़्स थे

﴾1﴿ अबू ह़ारिषा बिन अ़ल्क़मा जो ईसाइयों का पोपे आ'ज़म था।

﴾2﴿ उहैब जो उन लोगों का सरदारे आ'ज़म था।

﴾3﴿ अ़ब्दुल मसीह़ जो सरदारे आ'ज़म का नाइब था और "आ़क़िब" कहलाता था।

येह सब नुमाइन्दे निहायत क़ीमती और नफ़ीस लिबास पहन कर अ़स्र के बा'द मस्जिदे नबवी में दाख़िल हुवे और अपने क़िब्ले की त़रफ़ मुंह कर के अपनी नमाज़ अदा की । फिर अबू ह़ारिषा और एक दूसरा शख़्स दोनों हु़ज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवे और आप ने निहायत करीमाना लहजे में इन दोनों से गुफ़्त्गू फ़रमाई और ह़स्बे ज़ैल मुकालमा हुवा ।

नबी صلى الله عليه وسلم **:** तुम लोग इस्लाम क़बूल कर के **अल्लाह** तआ़ला के फ़रमां बरदार बन जाओ ।

अबू ह़ारिषा : हम लोग पहले ही से **अल्लाह** तआ़ला के फ़रमां बरदार हो चुके हैं ।

नबी صلى الله عليه وسلم **:** तुम लोगों का येह कहना सह़ीह़ नहीं क्यूंकि तुम लोग सलीब की परस्तिश करते हो और **अल्लाह** के लिये बेटा बताते हो और ख़िन्ज़ीर खाते हो ।

अबू ह़ारिषा : आप लोग हमारे पैग़म्बर ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام को गालियां क्यूं देते हो ?

नबी صلى الله عليه وسلم **:** हम लोग ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام को क्या कहते हैं ?

अबू ह़ारिषा : आप लोग ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام को बन्दा कहते हैं ह़ालांकि वोह ख़ुदा के बेटे हैं !

नबी صلى الله عليه وسلم **:** हां ! हम येह कहते हैं कि ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام ख़ुदा के बन्दे और उस के रसूल हैं और वोह कलिमतुल्लाह जो कुंवारी मरयम के शिकम से बिग़ैर बाप के **अल्लाह** तआ़ला के हुक्म से पैदा हुवे ।

अबू ह़ारिषा : क्या कोई इन्सान बिग़ैर बाप के पैदा हो सकता है ? जब आप लोग येह मानते हैं कि कोई इन्सान ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام का बाप नहीं तो फिर आप लोगों को येह मानना पड़ेगा कि उन का बाप **अल्लाह** तआ़ला है ।

नबी صلى الله عليه وسلم **:** अगर किसी का बाप कोई इन्सान न हो तो इस से येह लाज़िम नहीं आता कि उस का बाप ख़ुदा ही हो । ख़ुदावन्दे तआ़ला अगर चाहे तो बिग़ैर बाप के भी आदमी पैदा हो सकता है ।

देखो हज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام को तो बिग़ैर मां बाप के अल्लाह तआला ने मिट्टी से पैदा फ़रमा दिया अगर उस ने हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام को बिग़ैर बाप के पैदा कर दिया तो इस में तअज्जुब की कौन सी बात है ?

हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के इस पैग़म्बराना तर्ज़े इस्तिदलाल और हकीमाना गुफ़्तगू से चाहिये तो येह था कि येह वफ़्द अपनी नस्रानिय्यत को छोड़ कर दामने इस्लाम में आ जाता मगर इन लोगों ने हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से झगड़ा शुरूअ़ कर दिया। यहां तक कि बह्स व तकरार का सिलसिला बहुत दराज़ हो गया तो अल्लाह तआला ने सूरए आले इमरान की येह आयत नाज़िल फ़रमाई :

فَمَنْ حَآجَّكَ فِيْهِ مِنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَكَ مِنَ الْعِلْمِ فَقُلْ تَعَالَوْا نَدْعُ اَبْنَآءَنَا وَاَبْنَآءَكُمْ وَنِسَآءَنَا وَنِسَآءَكُمْ وَاَنْفُسَنَا وَاَنْفُسَكُمْ ۣ ثُمَّ نَبْتَهِلْ فَنَجْعَلْ لَّعْنَتَ اللّٰهِ عَلَى الْكٰذِبِيْنَ ﴿۶۱﴾ (پ۳،آل عمران:۶۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- फिर ऐ महबूब ! जो तुम से ईसा के बारे में हुज्जत करें बा'द इस के कि तुम्हें इल्म आ चुका तो उन से फ़रमा दो आओ हम तुम बुलाएं अपने बेटे और तुम्हारे बेटे और अपनी औ़रतें और तुम्हारी औ़रतें और अपनी जानें और तुम्हारी जानें फिर मुबाहला करें तो झूटों पर अल्लाह की ला'नत डालें।

कुरआन की इस दा'वते मुबाहला को अबू हारिषा ने मन्ज़ूर कर लिया। और तै पाया कि सुब्ह निकल कर मैदान में मुबाहला करेंगे लेकिन जब अबू हारिषा नस्रानियों के पास पहुंचा तो उस ने अपने आदमियों से कहा कि ऐ मेरी क़ौम ! तुम लोगों ने अच्छी तरह जान लिया और पहचान लिया कि मुहम्मद (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) नबिय्ये आख़िरुज़्ज़मान हैं और ख़ूब याद रखो कि जो क़ौम किसी नबिय्ये बरहक़ के साथ मुबाहला करती है उस क़ौम के छोटे बड़े सब हलाक हो जाते हैं। इस लिये बेहतर येही है कि इन से सुल्ह कर के अपने वतन को वापस चले चलो और हरगिज़ हरगिज़ इन से मुबाहला न करो। चुनान्चे, सुब्ह को अबू हारिषा

जब हुज़ूर عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के सामने आया तो येह देखा कि आप हज़रते हुसैन رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को गोद में उठाए हुवे और हज़रते हसन رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की उंगली थामे हुवे हैं हज़रते फ़ातिमा व हज़रते अली (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) आप के पीछे चल रहे हैं और आप इन लोगों से फ़रमा रहे हैं कि मैं जब दुआ करूं तो तुम लोग "आमीन" कहना। येह मन्ज़र देख कर अबू हारिषा ख़ौफ़ से कांप उठा और कहने लगा कि ऐ गुरौहे नसारा ! मैं ऐसे चेहरों को देख रहा हूं कि अगर **अल्लाह** तआला चाहे तो इन चेहरों की बदौलत पहाड़ भी अपनी जगह से हट कर चल पड़ेगा ! लिहाज़ा ऐ मेरी क़ौम ! हरगिज़ हरगिज़ मुबाहला न करो वरना हलाक हो जाओगे और रूए ज़मीन पर कहीं कोई भी नस्रानी बाक़ी न रहेगा। फिर उस ने कहा कि ऐ अबल क़ासिम ! हम आप से मुबाहला नहीं करेंगे और हम येह चाहते हैं कि हम अपने ही दीन पर क़ाइम रहें। हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन लोगों से कहा कि तुम लोग इस्लाम क़बूल कर लो ताकि तुम लोगों को मुसलमानों के हुक़ूक़ हासिल हो जाएं, नस्रानियों ने इस्लाम क़बूल करने से साफ़ इन्कार कर दिया। तो आप ने फ़रमाया कि फिर मेरे लिये तुम्हारे साथ जंग के सिवा कोई चारह नहीं। येह सुन कर नस्रानियों ने कहा कि हम लोग अरबों से जंग करने की ताक़त नहीं रखते। लिहाज़ा हम इस शर्त पर सुल्ह करते हैं कि आप हम से जंग न करें और हम को अपने ही दीन पर क़ाइम रहने दें और हम बतौरे जिज़्या आप को हर साल एक हज़ार कपड़ों के जोड़े देते रहेंगे। चुनान्चे, हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस शर्त पर सुल्ह फ़रमाई और उन नस्रानियों के लिये अम्नो अमान का परवाना लिख दिया। इस के बा'द आप ने फ़रमाया कि नजरान वालों पर हलाकत व बरबादी आन पहुंची थी। मगर येह लोग बच गए अगर येह लोग मुझ से मुबाहला करते तो मस्ख़ हो कर बन्दर और ख़िन्ज़ीर बन जाते और इन की वादी में ऐसी आग भड़क उठती कि नजरान की कुल आबादी यहां तक कि चरिन्दे और परन्दे भी जल भुन कर राख का ढेर बन जाते और रूए ज़मीन के तमाम ईसाई साल भर में फ़ना हो जाते। (روح البیان،ج۲،ص۴۴،پ۳،آل عمران:۶۱)

दर्से हिदायत :– इस से मा'लूम हुवा कि खुदा के रसूलों के साथ मुबाहला करना हलाकत व बरबादी है बल्कि अम्बिया व औलिया और अल्लाह वालों का मुक़ाबला करना और इन लोगों की बद दुआ़ का सामना करना, बरबादी व हलाकत है बल्कि खुदा के इन महबूब बन्दों की ज़रा सी बे अदबी और दिल आज़ारी भी इन्सान को फ़ना के घाट उतार देती है और ऐसी तबाही व बरबादी लाती है जिस का कोई इलाज ही नहीं।

ह़ज़रते ख़ुजनदी عَلَيْهِ الرَّحْمَة और बिसाती शाइर :– चुनान्चे, मन्क़ूल है कि ह़ज़रते कमालुद्दीन ख़ुजनदी عَلَيْهِ الرَّحْمَة एक मरतबा शाइरों के मजमअ़ में तशरीफ़ ले गए तो बिसाती शाइर ने आप को देख कर निहायत ही बद तमीज़ी और बेहूदगी के अन्दाज़ में येह मिस्रअ़ बक दिया :

از کجائی از کجائی اے لُوند

तर्जमा :– तुम कहां से आए तुम कहां से आए ऐ बद मआ़श ! (مَعَاذَاللہ)

आप ने येह समझ कर कि नशे में बक रहा है कुछ ज़ियादा नाराज़ नहीं हुवे बल्कि तफ़रीह़न जवाब में एक मिस्रअ़ कह दिया कि !

از خجندم، از خجندم از خجند

तर्जमा :– मैं ख़ुजनद से आया, मैं ख़ुजनद से आया, मैं ख़ुजनद से आया

फिर आप ने मजमअ़ से मुख़ात़ब हो कर फ़रमा दिया कि येह नशे में बदमस्त है जो मुंह में आता है कह देता है, इस से कुछ न कहो येह सुन कर बिसाती कमीने ने आप की हिजू में एक शे'र येह कह दिया कि

اے ملحد خجندی ریش بزرگ داری
کز غایت بزرگی دہ ریش می تواں گفت

तर्जमा :– ऐ मुल्ह़िद ख़ुजनदी तू बहुत बड़ी दाढ़ी रखता है कि इस की बड़ाई को देख कर इस को दस दाढ़ियां कह सकते हैं ! (مَعَاذَاللہ)

मजमए़ आ़म में येह हिजू सुन कर आप को सख़्त नागवारी हुई और आप ने क़हर आलूद नज़रों से देख कर बद दुआ़ दी तो बिग़ैर किसी

बीमारी के बिसाती शाइर एक दम मर कर ज़मीन पर गिर पड़ा और सब लोग देखते के देखते रह गए। (روح البیان،ج۲،ص۴۵،پ۳،آل عمران:۲۳)

अबुल हसन हमदानी की मुरग़ी :- बुज़ुर्गों के मिज़ाज के ख़िलाफ़ कोई काम करना भी बड़ी बड़ी मुसीबतों का पेश ख़ैमा हुवा करता है। चुनान्चे, हज़रते ख़्वाजा अबुल हसन हमदानी का वाक़िआ है कि येह एक मरतबा हज़रते ख़्वाजा जा'फ़र ख़ालिदी عَلَيْهِ الرَّحْمَة की ज़ियारत को गए और घर में येह कह गए थे कि मेरे लिये तन्नूर में मुरग़ी भून कर तय्यार रखी जाए। हज़रते ख़्वाजा जा'फ़र ख़ालिदी عَلَيْهِ الرَّحْمَة ने इन को हुक्म दिया कि तुम रात मेरे यहां बसर करो। मगर इन का दिल चूंकि मुरग़ी में लगा हुवा था इस लिये कोई ख़ूब सूरत बहाना कर के येह अपने घर रवाना हो गए। हज़रते ख़्वाजा जा'फ़र के दिल पर इस का मलाल गुज़रा। इस की नुहूसत का येह अषर हुवा कि जब ख़्वाजा अबुल हसन हमदानी दस्तरख़्वान पर मुरग़ी खाने के लिये बैठे और ज़रा सी ग़फ़लत हुई तो एक कुत्ता घर में आ गया और मुरग़ी ले कर भागा और उस को एक गन्दी नाली में डाल दिया। हज़रते ख़्वाजा अबुल हसन हमदानी जब सुब्ह को हज़रते ख़्वाजा जा'फ़र ख़ालिदी عَلَيْهِ الرَّحْمَة की ख़िदमत में हाज़िर हुवे तो आप ने इन को देखते ही फ़रमाया कि जो शख़्स मशाइख़े किराम की क़ल्बी ख़्वाहिश का एहतिराम नहीं करता, उस पर इसी त़रह एक कुत्ता मुसल्लत़ कर दिया जाता है जो उस को ईज़ा देता है। येह सुन कर ख़्वाजा अबुल हसन हमदानी शर्मो नदामत से पानी पानी हो गए। (روح البیان،ج۲،ص۴۶،پ۳،آل عمران:۲۳)

बल्ख़ का हर आदमी झूटा हो गया :- हज़रते ख़्वाजा अबू अ़ली दक़्क़ाक़ عَلَيْهِ الرَّحْمَة का बयान है कि जब बल्ख़ वालों ने बिला क़ुसूर हज़रते ख़्वाजा मुहम्मद बिन फ़ज़्ल قُدِّسَ سِرُّهٗ को शहर बदर कर दिया तो आप ने शहर वालों को येह बद दुआ़ दी कि या अल्लाह इन लोगों को सच्चाई की तौफ़ीक़ न दे। इस का येह अन्जाम हुवा कि बरसों तक इस शहर में कोई सच्चा आदमी बाक़ी न रहा और शहर का हर आदमी बला का झूटा हो गया और येह झूटों का शहर कहलाने लगा।

(روح البیان،ج۲،ص۴۶،پ۳،آل عمران:۲۳)

बहर हाल बुज़ुर्गों को अपनी किसी ह़रकत से कभी नाराज़ नहीं करना चाहिये वरना इन बुज़ुर्गों के क़ल्ब का अदना सा ग़ुबार क़हरे इलाही की आंधी बन कर, तुम्हें हलाकत व बरबादी के ग़ार में गिरा कर, नैस्तो नाबूद कर देगा।

ख़ुदा का क़हर है उन की निगाह की गर्दिश
गिरा जो उन की नज़र से संभल नहीं सकता

﴾19﴿ पांच हज़ार फ़िरिश्ते मैदाने जंग में

जंगे बद्र कुफ़्र व इस्लाम का मशहूर तरीन मा'रिका है। 17 रमज़ान सि. 2 हि. में मक्का और मदीने के दरमियान मक़ामे "बद्र" में येह जंग हुई। इस लड़ाई में ता'दाद और अस्लहे के लिह़ाज़ से मुसलमान बहुत ही कमतर और पस्त ह़ाली में थे। मुसलमानों में बूढ़े, जवान और बच्चे और अन्सार व मुहाजिरीन कुल मिल कर तीन सो तेरह मुजाहिदीने इस्लाम इल्मे नबवी के ज़ेरे साया कुफ़्फ़ार के एक अज़ीम लश्कर से नबर्द आज़्मा थे। सामाने जंग की क़िल्लत का येह आ़लम था कि पूरी इस्लामी फ़ौज में छे ज़िहें और आठ तल्वारें थीं। और कुफ़्फ़ार का लश्कर तक़रीबन एक हज़ार निहायत ही जंगजू और बहादुरों पर मुश्तमिल था और इन बहादुरों के साथ एक सो बेहतरीन घोड़े, सात सो ऊंट और क़िस्म क़िस्म के मोहलिक हथियार थे। इस जंग में मुसलमानों की घबराहट और बेचैनी एक क़ुदरती बात थी। हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم रात भर जाग कर ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ से लौ लगाए मस्रूफ़े दुआ़ थे कि

"इलाही! अगर येह चन्द नुफ़ूस हलाक हो गए तो फिर क़ियामत तक रूए ज़मीन पर तेरी इ़बादत करने वाले न रहेंगे।"

(السیرۃ النبویۃ لابن ھشام، مناشدۃ الرسول ربہ النصر، ج ۱، ص ۵۵۴، ملخصاً)

दुआ़ मांगते हुवे आप की चादर मुबारक दोशे अन्वर से ज़मीन पर गिर पड़ी और आप पर रिक़्क़त त़ारी हो गई। यहां तक कि आंसू जारी हो गए। ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ आप के यारे ग़ार थे। आप को इस त़रह़ बे क़रार देख कर उन के दिल का सुकून व क़रार जाता रहा।

उन्हों ने चादर मुबारक उठा कर आप के मुक़द्दस कन्धे पर डाल दिया और आप का दस्ते मुबारक थाम कर भर्राई हुई आवाज़ में बड़े अदब के साथ अ़र्ज़ किया कि हुज़ूर ! अब बस कीजिये। अल्लाह तआ़ला ज़रूर अपना वा'दा पूरा फ़रमाएगा। अपने यारे ग़ार सिद्दीक़े जांनिषार رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की गुज़ारिश मान कर आप ने दुआ़ ख़त्म कर दी और निहायत इत्मीनान के साथ पैग़म्बराना लहजे में येह फ़रमाया कि

سَیُهْزَمُ الْجَمْعُ وَیُوَلُّوْنَ الدُّبُرَ ﴿۴۵﴾ (پ۲۷، القمر: ۴۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- अब भगाई जाती है येह जमाअ़त और पीठें फेर देंगे।

सुब्ह को हुज़ूर عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने आयाते जिहाद की तिलावत फ़रमा कर ऐसा वलवला अंगेज़ वा'ज़ फ़रमाया कि मुजाहिदीन की रगों में ख़ून का क़त़रा क़त़रा जोशो ख़रोश का समुन्दर बन कर तूफ़ानी मौजें मारने लगा। और आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने येह बिशारत भी दी कि अगर सब्र के साथ तुम मुजाहिदीन मैदाने जंग में डटे रहे तो अल्लाह तआ़ला तुम्हारी मदद के लिये आस्मान से फ़िरिश्तों की फ़ौज भेज देगा।

चुनान्चे, पांच हज़ार फ़िरिश्तों की फ़ौज मैदाने जंग में उतर पड़ी और दम ज़दन में मैदाने जंग का नक़्शा ही बदल गया। हज़रते अ़ली رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ मुहाजिरीन का झन्डा लहरा रहे थे और हज़रते सा'द बिन उ़बादा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ अन्सार के अ़लमबरदार थे। कुफ़्फ़ार के सत्तर आदमी क़त्ल हो गए। और सत्तर गिरिफ़्तार हुवे बाक़ी अपना सारा सामान छोड़ कर फ़िरार हो गए। कुफ़्फ़ार के मक़्तूलीन में क़ुरैश के बड़े बड़े नामवर सरदार जो बहादुरी और सिपहगिरी में यक्ताए रोज़गार थे। एक एक कर के सब मौत के घाट उतार दिये गए। यहां तक कि कुफ़्फ़ारे क़ुरैश की लश्करी त़ाक़त ही फ़ना हो गई। मुसलमानों में कुल चौदह ख़ुश नसीबों को शहादत का शरफ़ मिला जिन में छे मुहाजिर और आठ अन्सार थे और मुसलमानों को बे शुमार माले ग़नीमत मिला जो कुफ़्फ़ार छोड़ कर फ़िरार हो गए थे।

अल्लाह तआ़ला ने जंगे बद्र और फ़िरिश्तों की फ़ौज का तज़्किरा क़ुरआने मजीद में इन लफ़्ज़ों के साथ फ़रमाया कि

وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدْرٍ وَّ اَنْتُمْ اَذِلَّةٌ ۚ فَاتَّقُوا اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ
تَشْكُرُوْنَ ﴿۱۲۳﴾ اِذْ تَقُوْلُ لِلْمُؤْمِنِيْنَ اَلَنْ يَّكْفِيَكُمْ اَنْ يُّمِدَّكُمْ رَبُّكُمْ
بِثَلٰثَةِ اٰلٰفٍ مِّنَ الْمَلٰٓئِكَةِ مُنْزَلِيْنَ ﴿۱۲۴﴾ بَلٰٓى ۙ اِنْ تَصْبِرُوْا وَ تَتَّقُوْا
وَيَاْتُوْكُمْ مِّنْ فَوْرِهِمْ هٰذَا يُمْدِدْكُمْ رَبُّكُمْ بِخَمْسَةِ اٰلٰفٍ مِّنَ الْمَلٰٓئِكَةِ
مُسَوِّمِيْنَ ﴿۱۲۵﴾ وَمَا جَعَلَهُ اللّٰهُ اِلَّا بُشْرٰى لَكُمْ وَلِتَطْمَئِنَّ قُلُوْبُكُمْ بِهٖ ۗ وَمَا
النَّصْرُ اِلَّا مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْحَكِيْمِ ﴿۱۲۶﴾ (پ۴، آل عمران: ۱۲۳ تا ۱۲۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :– और बेशक अल्लाह ने बद्र में तुम्हारी मदद की जब तुम बिल्कुल बे सरो सामान थे। तो अल्लाह से डरो कि कहीं तुम शुक्र गुज़ार हो। जब ऐ महबूब तुम मुसलमानों से फ़रमाते थे : क्या तुम्हें येह काफ़ी नहीं कि तुम्हारा रब तुम्हारी मदद करे तीन हज़ार फ़िरिश्ते उतार कर, हां क्यूं नहीं अगर तुम सब्र व तक़्वा करो और काफ़िर इसी दम तुम पर आ पड़ें तो तुम्हारा रब तुम्हारी मदद को पांच हज़ार फ़िरिश्ते निशान वाले भेजेगा और येह फ़त्ह अल्लाह ने न की मगर तुम्हारी खुशी के लिये और इसी लिये कि इस से तुम्हारे दिलों को चैन मिले, और मदद नहीं मगर अल्लाह ग़ालिब हिक्मत वाले के पास से।

दर्से हिदायत :– जंगे बद्र में मुसलमानों की ता'दाद और सामाने जंग की क़िल्लत के बा वुजूद फ़त्हे मुबीन ने मुसलमानों के क़दमों का बोसा लिया। इस से येह सबक़ मिलता है कि फ़त्ह कषरते ता'दाद और सामाने जंग की फ़िरावानी पर मौक़ूफ़ नहीं। बल्कि फ़त्ह का दारो मदार नुस्रते खुदावन्दी पर है कि वोह जब चाहता है तो फ़िरिश्तों की फ़ौज आस्मान से मैदाने जंग में उतार कर मुसलमानों की इमदाद व नुस्रत फ़रमा देता है और मुसलमान क़िल्लते ता'दाद और सामाने जंग न होने के बा वुजूद फ़त्हमन्द हो कर कुफ़्फ़ार के लश्करों को तहस नहस कर के फ़ना के घाट उतार देता है, मगर अल्लाह तआला ने इस के लिये दो शर्तें रखी हैं, एक सब्र और दूसरा तक़्वा। अगर मुसलमान सब्र व तक़्वा के दामन को थामे हुवे खुदा की मदद पर भरोसा कर के जंग में अड़ जाएं तो اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ हमेशा और हर महाज़ पर फ़त्हे मुबीन मुसलमानों के क़दम चूमेगी और कुफ़्फ़ार शिकस्त

खा कर राहे फ़िरार इख़्तियार करेंगे या मुसलमानों की मार से फ़ना हो कर फ़िन्नार हो जाएंगे। बस ज़रूरत है कि मुसलमान सब्र व तक़्वा के हथियारों से लैस हो कर खुदा की मदद का भरोसा कर के कुफ़्फ़ार के ह़म्लों का मुक़ाबला करने के लिये मैदाने जंग में इस्तिक़ामत का पहाड़ बन कर खड़े रहें और हरगिज़ हरगिज़ ता'दाद की कमी और सामाने जंग की क़िल्लत व कषरत की परवाह न करें क्यूंकि फ़रमाने खुदावन्दी है कि

وَمَاالنَّصۡرُ اِلَّامِنۡ عِنۡدِاللّٰهِ कि मदद फ़रमाने वाला तो बस **अल्लाह** ही है। सच कहा है कहने वाले ने

काफ़िर हो तो तल्वार पे करता है भरोसा
मोमिन हो तो बे तैग़ भी लड़ता है सिपाही

﴾20﴿ सब से पहला क़ातिल व मक़्तूल

रूए ज़मीन पर सब से पहला क़ातिल क़ाबील और सब से पहला मक़्तूल हाबील है "क़ाबील व हाबील" येह दोनों ह़ज़रते आदम عَلَيۡهِ السَّلَام के फ़रज़न्द हैं। इन दोनों का वाक़िआ़ येह है कि ह़ज़रते ह़व्वा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنۡهَا के हर ह़म्ल में एक लड़का और एक लड़की पैदा होते थे। और एक ह़म्ल के लड़के का दूसरे ह़म्ल की लड़की से निकाह़ किया जाता था। इस दस्तूर के मुताबिक़ ह़ज़रते आदम عَلَيۡهِ السَّلَام ने क़ाबील का निकाह़ "लियूज़ा" से जो हाबील के साथ पैदा हुई थी करना चाहा। मगर क़ाबील इस पर राज़ी न हुवा क्यूंकि इक़्लीमा ज़ियादा ख़ूब सूरत थी इस लिये वोह इस का त़लबगार हुवा।

ह़ज़रते आदम عَلَيۡهِ السَّلَام ने इस को समझाया कि इक़्लीमा तेरे साथ पैदा हुई है। इस लिये वोह तेरी बहन है। उस के साथ तेरा निकाह़ नहीं हो सकता। मगर क़ाबील अपनी ज़िद पर अड़ा रहा। बिल आख़िर ह़ज़रते आदम عَلَيۡهِ السَّلَام ने येह हुक्म दिया कि तुम दोनों अपनी अपनी क़ुरबानियां खुदावन्दे क़ुद्दूस عَزَّوَجَلَّ के दरबार में पेश करो। जिस की क़ुरबानी मक़्बूल होगी वोही इक़्लीमा का ह़क़दार होगा। उस ज़माने में क़ुरबानी की मक़्बूलिय्यत की येह निशानी थी कि आस्मान से एक आग उतर कर इस को खा लिया करती थी। चुनान्चे, क़ाबील ने गेहूं की कुछ

बालीं और हाबील ने एक बकरी कुरबानी के लिये पेश की। आस्मानी आग ने हाबील की कुरबानी को खा लिया और क़ाबील के गैहूं को छोड़ दिया। इस बात पर क़ाबील के दिल में बुग्ज़ व ह़सद पैदा हो गया और उस ने हाबील को क़त्ल कर देने की ठान ली और हाबील से कह दिया कि मैं तुझ को क़त्ल कर दूंगा। हाबील ने कहा कि कुरबानी क़बूल करना अल्लाह तआ़ला का काम है और वोह मुत्तक़ी बन्दों ही की कुरबानी क़बूल करता है। अगर तू मुत्तक़ी होता तो ज़रूर तेरी कुरबानी क़बूल होती। साथ ही हाबील ने येह भी कह दिया कि अगर तू मेरे क़त्ल के लिये हाथ बढ़ाएगा तो मैं तुझ पर अपना हाथ नहीं उठाऊंगा क्यूंकि मैं अल्लाह से डरता हूं। मैं येह चाहता हूं कि मेरा और तेरा गुनाह दोनों तेरे ही पल्ले पड़े और तू दोज़ख़ी हो जाए क्यूंकि बे इन्साफ़ों की येही सज़ा है। आख़िर क़ाबील ने अपने भाई हाबील को क़त्ल कर दिया। ब वक़्ते क़त्ल हाबील की उ़म्र बीस बरस की थी और क़त्ल का येह ह़ादिषा मक्कए मुकर्रमा में जबले षौर के पास या जबले ह़िरा की घाटी में हुवा। और बा'ज़ का क़ौल है कि बसरा में जिस जगह मस्जिदे आ'ज़म बनी हुई है मंगल के दिन येह सानेह़ा हुवा। (واللّٰہ تعالٰی اعلم)

रिवायत है कि जब हाबील क़त्ल हो गए तो सात दिनों तक ज़मीन में ज़लज़ला रहा। और वुहूश व तुयूर और दरिन्दों में इज़्तिराब और बे चैनी फेल गई और क़ाबील जो बहुत ही गोरा और ख़ूब सूरत था भाई का ख़ून बहाते ही उस का चेहरा बिल्कुल काला और बद सूरत हो गया। और ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام को बे ह़द रंजो क़लक़ हुवा। यहां तक कि हाबील के रंजो ग़म में एक सो बरस तक कभी आप عَلَيْهِ السَّلَام को हंसी नहीं आई। और सुरयानी ज़बान में आप ने हाबील का मरषिया कहा जिस का अ़रबी अश्आ़र में तर्जमा येह है

تَغَيَّرَتِ الْبِلَادُ وَمَنْ عَلَيْهَا فَوَجْهُ الْاَرْضِ مُغْبَرٌّ قَبِيْحٌ

تَغَيَّرَ كُلُّ ذِىْ لَوْنٍ وَطَعْمٍ وَقَلَّ بَشَاشَةُ الْوَجْهِ الصَّبِيْحُ

तर्जमा : तमाम शहरों और उन के बाशिन्दों में तग़य्युर पैदा हो गया और ज़मीन का चेहरा गुबार आलूद और क़बीह़ हो गया। हर रंग और मज़े वाली चीज़ बदल गई और गोरे चेहरे की रोनक़ कम हो गई।

हज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام ने शदीद ग़ज़ब नाक हो कर क़ाबील को फिटकार कर अपने दरबार से निकाल दिया और वोह बद नसीब इक्लीमा को साथ ले कर यमन की सर ज़मीन "अ़दन" में चला गया वहां इब्लीस उस के पास आ कर कहने लगा कि हाबील की कुरबानी को आग ने इस लिये खा लिया कि वोह आग की पूजा किया करता था लिहाज़ा तू भी एक आग का मन्दर बना कर आग की परस्तिश किया कर। चुनान्चे, क़ाबील पहला वोह शख़्स है जिस ने आग की इबादत की। और येह रूए ज़मीन पर पहला शख़्स है जिस ने **अल्लाह** तआला की नाफ़रमानी की और सब से पहले ज़मीन पर ख़ूने नाहक़ किया और येह पहला वोह मुजरिम है जो जहन्नम में सब से पहले डाला जाएगा और ह़दीष शरीफ़ में है कि रूए ज़मीन पर क़ियामत तक जो भी ख़ूने नाहक़ होगा क़ाबील उस में हिस्सेदार होगा क्यूंकि इसी ने सब से पहले क़त्ल का दस्तूर निकाला और क़ाबील का अन्जाम येह हुवा कि इस के एक लड़के ने जो कि अन्धा था इस को एक पथ्थर मार कर क़त्ल कर दिया और येह बद बख़्त नबी ज़ादा होने के बा वुजूद आग की परस्तिश करते हुवे कुफ्रो शिर्क की हालत में अपने लड़के के हाथ से मारा गया। (روح البیان،ج۲،ص۳۷۹،پ۶،المائدۃ:۲۷ تا ۳۰)

हाबील के क़त्ल हो जाने के पांच बरस बा'द हज़रते शीष عَلَيْهِ السَّلَام पैदा हुवे जब कि हज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام की उ़म्र शरीफ़ एक सो तीस बरस की हो चुकी थी। आप ने अपने इस हौनहार फ़रज़न्द का नाम "शीष" रखा। येह सुरयानी ज़बान का लफ़्ज़ है और अ़रबी में इस के मा'ना "हिबतुल्लाह" या'नी **अल्लाह** का अ़तिय्या है। हज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام ने पचास सहीफ़े जो आप पर नाज़िल हुवे थे इन सब की हज़रते शीष عَلَيْهِ السَّلَام को ता'लीम दी और इन को अपना वसी व ख़लीफ़ा और सज्जादा नशीन बनाया। और इन की नस्ल में ख़ैरो बरकत होने की दुआएं मांगीं। हमारे हुज़ूर ख़ातिमुन्नबिय्यीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इन ही हज़रते शीष عَلَيْهِ السَّلَام की अवलाद में से हैं। (روح البیان،ج۲،ص۳۷۶،پ۶،المائدۃ:۳۰)

इस वाक़िए को कुरआने करीम में अल्लाह तआ़ला ने इस तरह़ बयान फ़रमाया है कि

وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَاَ ابْنَیْ اٰدَمَ بِالْحَقِّۘ اِذْ قَرَّبَا قُرْبَانًا فَتُقُبِّلَ مِنْ اَحَدِهِمَا
وَلَمْ یُتَقَبَّلْ مِنَ الْاٰخَرِؕ قَالَ لَاَقْتُلَنَّكَؕ قَالَ اِنَّمَا یَتَقَبَّلُ اللّٰهُ مِنَ
الْمُتَّقِیْنَ(۲۷) لَىٕنْۢ بَسَطْتَّ اِلَیَّ یَدَكَ لِتَقْتُلَنِیْ مَاۤ اَنَا بِبَاسِطٍ یَّدِیَ اِلَیْكَ
لِاَقْتُلَكَۚ اِنِّیْۤ اَخَافُ اللّٰهَ رَبَّ الْعٰلَمِیْنَ(۲۸) اِنِّیْۤ اُرِیْدُ اَنْ تَبُوْٓاَ بِاِثْمِیْ وَ
اِثْمِكَ فَتَكُوْنَ مِنْ اَصْحٰبِ النَّارِۚ وَ ذٰلِكَ جَزٰٓؤُا الظّٰلِمِیْنَ(۲۹) فَطَوَّعَتْ لَهٗ
نَفْسُهٗ قَتْلَ اَخِیْهِ فَقَتَلَهٗ فَاَصْبَحَ مِنَ الْخٰسِرِیْنَ(۳۰) (پ٦، المائدۃ: ٢٧ تا ٣٠)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :–और इन्हें पढ़ कर सुनाओ आदम के दो बेटों की सच्ची ख़बर जब दोनों ने एक एक नियाज़ (कुरबानी) पेश की तो एक की क़बूल हुई और दूसरे की न क़बूल हुई। बोला : क़सम है मैं तुझे क़त्ल कर दूंगा। कहा : अल्लाह उसी से क़बूल करता है जिसे डर है बेशक अगर तू अपना हाथ मुझ पर बढ़ाएगा कि मुझे क़त्ल करे तो मैं अपना हाथ तुझ पर न बढ़ाऊंगा कि तुझे क़त्ल करूं, मैं अल्लाह से डरता हूं जो मालिक सारे जहान का। मैं तो येह चाहता हूं कि मेरा और तेरा गुनाह दोनों तेरे ही पल्ले पड़े तो तू दोज़ख़ी हो जाए। और बे इन्साफ़ों की येही सज़ा है तो उस के नफ़्स ने उसे भाई के क़त्ल का चाउ दिलाया (क़त्ल पर उभारा) तो उसे क़त्ल कर दिया तो रह गया नुक़्सान में।

दर्से हिदायत :– इस वाक़िए से चन्द हिदायतों के सबक़ मिलते हैं :

﴾1﴿ दुन्या में सब से पहला जो क़त्ल और ख़ूने नाह़क़ हुवा वोह एक औ़रत के मुआ़मले में हुवा। लिहाज़ा किसी औ़रत के फ़ितनए इश्क़ में मुब्तला होने से ख़ुदा की पनाह मांगनी चाहिये।

﴾2﴿ क़ाबील ने जज़्बए ह़सद में गिरिफ़्तार हो कर अपने भाई को क़त्ल कर दिया। इस से मा'लूम हुवा कि ह़सद इन्सान की कितनी बुरी और ख़त़रनाक क़ल्बी बीमारी है। इसी लिये कुरआने मजीद में وَمِنْ شَرِّ حَاسِدٍ اِذَا حَسَدَ(۵) (پ۳۰، الفلق:۵) फ़रमा कर हुक्म दिया गया कि ह़ासिद के ह़सद से ख़ुदा की पनाह मांगते रहो।

﴾3﴿ ख़ूने नाह़क़ कितना बड़ा जुर्मे अ़ज़ीम है कि इस जुर्म की वजह से एक नबी عَلَيْهِ السَّلَام का फ़रज़न्द अपने बाप ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام के दरबार से रांदए दरगाह हो कर कुफ़्रो शिर्क में मुब्तला हो कर मर गया। और क़ियामत तक होने वाले हर ख़ूने नाह़क़ में ह़िस्सेदार बन कर अ़ज़ाबे जहन्नम में गिरिफ़्तार रहेगा।

﴾4﴿ इस से मा'लूम हुवा कि जो शख़्स कोई बुरा त़रीक़ा ईजाद करे तो क़ियामत तक जितने लोग इस बुरे त़रीक़े पर अ़मल करेंगे सब के गुनाह में वोह बराबर का शरीक और ह़िस्सेदार बनेगा।

﴾5﴿ इस से येह भी मा'लूम हुवा कि नेकों की अवलाद का नेक होना कोई ज़रूरी नहीं है, नेकों की अवलाद बुरी भी हो सकती है। क्यूंकि ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام ख़ुदा के मुक़द्दस नबी और सफ़िय्युल्लाह हैं मगर इन का बेटा क़ाबील कितना ख़राब हुवा, वोह आप पढ़ चुके। हमेशा हर शख़्स को चाहिये कि फ़रज़न्दे सालेह़ और नेक अवलाद की दुआ़एं ख़ुदा से मांगता रहे। (واللہ تعالٰی اعلم)

मस्जिद से मह़ब्बत की फ़ज़ीलत

ह़ज़रते अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ रिवायत करते हैं कि नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने उल्फ़त निशान है : "जो मस्जिद से उल्फ़त (मह़ब्बत) रखता है अल्लाह तआ़ला उस से उल्फ़त रखता है।" (طبرانی اوسط، حدیث ۶۳۸۳)

ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुर्रऊफ़ मनावी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی इस की शर्ह़ में लिखते हैं : मस्जिद से उल्फ़त इस त़रह़ है कि रिज़ाए इलाही के लिये इस में ए'तिकाफ़, नमाज़, ज़िक्रुल्लाह, और शरई मसाइल सीखने सीखाने के लिये बैठे रहने की आ़दत बनाना है और अल्लाह तआ़ला का उस बन्दे से मह़ब्बत करना इस त़रह़ है कि अल्लाह तआ़ला उस को अपने सायए रह़मत में जगह अ़त़ा फ़रमाता और उस को अपनी ह़िफ़ाज़त में दाख़िल करता है।

(فیض القدیر، ج ۶، ص ۱۰۷) (फ़ैज़ाने सुन्नत, जि. 1, स. 1281)

﴾21﴿ मुर्दा दफ़्न करना कव्वे ने सिखाया

जब क़ाबील ने हाबील को क़त्ल कर दिया तो चूंकि इस से पहले कोई आदमी मरा ही नहीं था इस लिये क़ाबील हैरान था कि भाई की लाश को क्या करूं। चुनान्चे, कई दिनों तक वोह लाश को अपनी पीठ पर लादे फिरा। फिर इस ने देखा कि दो कव्वे आपस में लड़े और एक ने दूसरे को मार डाला। फिर ज़िन्दा कव्वे ने अपनी चोंच और पन्जों से ज़मीन कुरैद कर एक गढ़ा खोदा और इस में मरे हुवे कव्वे को डाल कर मिट्टी से दबा दिया। येह मन्ज़र देख कर क़ाबील को मा'लूम हुवा कि मुर्दे की लाश को ज़मीन में दफ़्न करना चाहिये। चुनान्चे, उस ने क़ब्र खोद कर उस में भाई की लाश को दफ़्न कर दिया। (مدارک التنزیل، ج۱، ص۴۸۶، پ۶، المائدۃ ۳۱)

क़ुरआने मजीद ने इस वाक़िए़ को इन लफ़्ज़ों में बयान फ़रमाया है कि

فَبَعَثَ اللّٰهُ غُرَابًا یَّبْحَثُ فِی الْاَرْضِ لِیُرِیَهٗ كَیْفَ یُوَارِیْ سَوْءَةَ اَخِیْهِ ؕ قَالَ یٰوَیْلَتٰۤى اَعَجَزْتُ اَنْ اَكُوْنَ مِثْلَ هٰذَا الْغُرَابِ فَاُوَارِیَ سَوْءَةَ اَخِیْ ۚ فَاَصْبَحَ مِنَ النّٰدِمِیْنَ ﴿۳۱﴾ ۛ (پ۶، المائدۃ:۳۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- तो **अल्लाह** ने एक कव्वा भेजा ज़मीन कुरैदता कि उसे दिखाए क्यूंकर (किस त़रह़) अपने भाई की लाश छुपाए, बोला : हाए ख़राबी मैं इस कव्वे जैसा भी न हो सका कि मैं अपने भाई की लाश छुपाता तो पचताता रह गया।

दर्से हिदायत :- ﴾1﴿ इस वाक़िए़ से सबक़ मिलता है कि आदमी इल्म सीखने में छोटे से छोटे उस्ताद का यहां तक कि कव्वे का भी मोहताज है।

﴾2﴿ इसी से मा'लूम हुवा कि इन्सान पर उस की दुन्यावी ज़िन्दगी की राह में जब कोई मुश्किल दरपेश हो जाती है तो **अल्लाह** तआला ऐसा रहीमो करीम है कि किसी न किसी त़रीक़े से यहां तक कि चरिन्दों और परन्दों के ज़रीए भी मुश्किलात ह़ल करने की राह दिखा देता है। (واللہ تعالٰی اعلم)

﴾22﴿ आस्मानी दस्तर ख़्वान

हज़रते ईसा عَلَیْہِ السَّلَام के हवारियों ने येह अ़र्ज़ किया कि ऐ ईसा बिन मरयम ! क्या आप का रब येह कर सकता है कि वोह आस्मान से हमारे पास एक दस्तर ख़्वान उतार दे ? तो हज़रते ईसा عَلَیْہِ السَّلَام ने फ़रमाया कि इस तरह़ की निशानियां त़लब करने से अगर तुम लोग मोमिन हो तो ख़ुदा से डरो। येह सुन कर ह़वारियों ने कहा कि हम निशानी त़लब करने के लिये येह सुवाल नहीं कर रहे हैं बल्कि हमारा मक़्सद येह है कि हम शिकम सैर हो कर ख़ूब खाएं और हम को अच्छी त़रह़ आप की सदाक़त का इ़ल्म हो जाए ताकि हमारे दिलों को क़रार आ जाए और हम इस बात के गवाह बन जाएं ताकि बनी इस्राईल को हमारी शहादत से यक़ीन और इत़्मीनाने कुल्ली ह़ासिल हो जाए और मोअमिनीन का यक़ीन और बढ़ जाए और कुफ़्फ़ार ईमान लाएं।

﴾1﴿ ह़वारियों की इस दरख़्वास्त पर हज़रते ईसा عَلَیْہِ السَّلَام ने बारगाहे ख़ुदावन्दी में इस तरह़ दुआ़ मांगी :

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- ऐ रब हमारे ! हम पर आस्मान से एक ख़्वान उतार कि वोह हमारे लिये ईद हो हमारे अगले पिछलों की और तेरी त़रफ़ से निशानी और हमें रिज़्क़ दे और तू सब से बेहतर रोज़ी देने वाला है। (پ۷،المائدۃ:۱۱۴)

हज़रते ईसा عَلَیْہِ السَّلَام की दुआ़ पर अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि दस्तर ख़्वान तो उतार दूंगा लेकिन इस के बा'द बनी इस्राईल में से जो कुफ़्र करेगा मैं उस को ऐसा अ़ज़ाब दूंगा कि तमाम जहान वालों में से किसी को ऐसा अ़ज़ाब नहीं दूंगा। चुनान्चे, अल्लाह तआ़ला के हुक्म से चन्द फ़िरिश्ते एक दस्तर ख़्वान ले कर आस्मान से उतरे जिस में सात मछलियां और सात रोटियां थीं। (تفسیر جلالین،ص۱۱۰،پ۷،المائدۃ:۱۱۵)

हज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि फ़िरिश्ते दस्तर ख़्वान में रोटी और गोश्त ले कर आस्मान से ज़मीन पर नाज़िल हुवे और बा'ज़ रिवायतों में येह भी आया है कि तली हुई एक बहुत बड़ी

मछली थी जिस में कांटा नहीं था और उस में से रोग़न टपक रहा था और इस के सर के पास नमक और दुम के पास सिर्का था और इस के इर्द गिर्द क़िस्म क़िस्म की सब्ज़ियां थीं और पांच रोटियां थीं। एक रोटी के ऊपर रोग़ने ज़ैतून, दूसरी पर शहद, तीसरी पर घी, चौथी पर पनीर, पांचवीं पर गोश्त की बोटियां थीं। दस्तर ख़्वान के इन सामानों को देख कर हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام के एक हवारी शमऊन ने कहा जो तमाम हवारियों का सरदार था, कि ऐ रूहुल्लाह ! येह दस्तर ख़्वान दुन्या के खानों में से है या आख़िरत के। तो आप ने फ़रमाया कि येह न तो दुन्या के खानों में से है न आख़िरत के बल्कि **अल्लाह** तआला ने अपनी कुदरते कामिला से तुम्हारे लिये इस खाने को अभी अभी ईजाद फ़रमा कर भेजा है।

(تفسیر جمل علی الجلالین،ج۲،ص۳۰۴،پ۷،المائدۃ:۱۱۵)

फिर हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام ने बनी इस्राईल को हुक्म दिया कि खूब शिकम सैर हो कर खाओ। और ख़बरदार इस में किसी क़िस्म की ख़ियानत न करना। और कल के लिये ज़ख़ीरा बना कर न रखना। मगर बनी इस्राईल ने इस में ख़ियानत भी कर डाली और कल के लिये ज़ख़ीरा बना कर भी रख लिया। इस नाफ़रमानी की वजह से **अल्लाह** तआला का इन लोगों पर येह अज़ाब आया कि येह लोग रात को सोए तो अच्छे ख़ासे थे मगर सुब्ह को उठे तो मस्ख़ हो कर कुछ ख़िन्ज़ीर और कुछ बन्दर बन गए फिर हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام ने इन लोगों की मोत के लिये दुआ मांगी तो तीसरे दिन येह लोग मर कर दुन्या से नैस्तो नाबूद हो गए और किसी को येह भी नहीं मा'लूम हुवा कि इन की लाशों को ज़मीन निगल गई या **अल्लाह** ने इन को क्या कर दिया।

(تفسیر جمل علی الجلالین،ج۲،ص۳۰۴،پ۷،المائدۃ:۱۱۵)

अल्लाह तआला ने इस अजीब और अज़ीमुश्शान वाक़िए का तज़्किरा कुरआने मजीद की सूरए माइदह में फ़रमाया है।

और इसी वाक़िए की वजह से इस सूरह का नाम "माइदह" रखा गया। "माइदह" दस्तर ख़्वान को कहते हैं

قَالَ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ اللّٰهُمَّ رَبَّنَآ اَنْزِلْ عَلَيْنَا مَآىِٕدَةً مِّنَ السَّمَآءِ تَكُوْنُ لَنَا عِيْدًا لِّاَوَّلِنَا وَاٰخِرِنَا وَاٰيَةً مِّنْكَ ۚ وَارْزُقْنَا وَاَنْتَ خَيْرُ الرّٰزِقِيْنَ ﴿۱۱۴﴾ قَالَ اللّٰهُ اِنِّيْ مُنَزِّلُهَا عَلَيْكُمْ ۚ فَمَنْ يَّكْفُرْ بَعْدُ مِنْكُمْ فَاِنِّيْٓ اُعَذِّبُهٗ عَذَابًا لَّآ اُعَذِّبُهٗٓ اَحَدًا مِّنَ الْعٰلَمِيْنَ ﴿۱۱۵﴾ (پ۷،المائدۃ:۱۱۴، ۱۱۵)

तर्जमए कन्जुल ईमान :- ईसा इब्ने मरयम ने अ़र्ज़ की : ऐ **अल्लाह** ऐ रब हमारे हम पर आस्मान से एक ख़्वान उतार कि वोह हमारे लिये ईद हो हमारे अगले पिछलों की और तेरी त़रफ़ से निशानी और हमें रिज़्क़ दे और तू सब से बेहतर रोज़ी देने वाला है। **अल्लाह** ने फ़रमाया कि मैं इसे तुम पर उतारता हूं फिर अब जो तुम में कुफ़्र करेगा तो बेशक मैं उसे वोह अ़ज़ाब दूंगा कि सारे जहान में किसी पर न करूंगा।

दर्से हिदायत :- वाक़िअ़ए मज़्कूरा से बहुत सी इ़ब्रतें और नसीह़तें मिलती हैं। जिन में से येह दो सबक़ तो बहुत ही वाज़ेह़ हैं :

﴾1﴿ ह़ज़राते अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام की मुख़ालफ़त और नाफ़रमानी कितना ख़ौफ़नाक जुर्मे अ़ज़ीम है। देख लो ! कि बनी इस्राईल ने जब अपने नबी عَلَيْهِ السَّلَام की मुख़ालफ़त व नाफ़रमानी करते हुवे आस्मानी दस्तर ख़्वान में ख़ियानत की और कल के लिये ज़ख़ीरा बना कर रख लिया तो अ़ज़ाबे इलाही ने इन को ख़िन्ज़ीर, बन्दर बना कर दुन्या से इस त़रह़ नैस्तो नाबूद कर दिया कि इन की क़ब्रों का निशान भी बाक़ी न रहा।

जो लोग **अल्लाह** व रसूल की अमानतों में ख़ियानत करते हैं। उन्हें इस हौलनाक अ़ज़ाब से इ़ब्रत ह़ासिल करनी चाहिये और तौबा कर लेनी चाहिये। (واللہ تعالٰی اعلم)

﴾2﴿ ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام की दुआ़ में येह जुम्ला कि जिस दिन दस्तर ख़्वान नाज़िल होगा वोह दिन हमारे अगलों और पिछलों के लिये ईद का दिन होगा। इस से येह सबक़ मिलता है कि जिस दिन क़ुदरते ख़ुदावन्दी का कोई ख़ास निशान ज़ाहिर हो, उस दिन ख़ुशी मनाना और मसर्रत व शादमानी का इज़्हार कर के ईद मनाना येह ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام की मुक़द्दस सुन्नत है।

इसी त़रह़ हु़ज़ूरे अन्वर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की विलादते बा सआ़दत की रात और उस का दिन यक़ीनन ख़ुदावन्दे क़ुद्दूस के एक निशाने आ'ज़म के ज़ुहूर की रात और दिन है लिहाज़ा मीलादुन्नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़ुशी मनाना और इस तारीख़ को ईदे मीलाद कहना यक़ीनन क़ुरआने मजीद की ता'लीम के ऐ़न मुत़ाबिक़ है। ख़ुशी मनाना, घरों और मह़फ़िलों की आराइश करना, अच्छे अच्छे पकवान पका कर ख़ुद भी खाना और दूसरों को भी खिलाना येही सब ईद की निशानियां, और ईद मनाने के त़रीक़े हैं जिन पर बारहवीं शरीफ़ को अहले सुन्नत व जमाअ़त अ़मल कर के ईदे मीलाद की ख़ुशी मनाते हैं और जो लोग इस से चिड़ते हैं और इस तारीख़ को अपने घर अन्धेरा रखते हैं, झाड़ू भी नहीं लगाते और मैले कुचैले कपड़े पहन कर मुंह लटकाए फिरते हैं और ईदे मीलाद की ख़ुशी मनाने वालों को बिदअ़ती कह कर फबतियां कसते हैं, उन्हें उन के ह़ाल पर छोड़ देना चाहिये और अहले सुन्नत को चाहिये कि ख़ूब ख़ूब ख़ुशी मनाएं और कषरत से मीलाद शरीफ़ की मजलिस मुनअ़क़िद करें और ख़ूब झूम झूम कर सलातो सलाम पढ़ें :

मिष्ले फ़ारस ज़लज़ले हों नज्द में   ज़िक्रे आयाते विलादत कीजिये

(ह़दाइक़े बख़्शिश, ह़िस्सा अव्वल स. **140**)

﴾23﴿ ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام का ए'लाने तौह़ीद

मुफ़स्सिरीन का बयान है कि "नमरूद बिन किनआ़न" बड़ा जाबिर बादशाह था। सब से पहले इसी ने ताजे शाही अपने सर पर रखा। इस से पहले किसी बादशाह ने ताज नहीं पहना था। येह लोगों से ज़बरदस्ती अपनी परस्तिश कराता था और काहिन और नुजूमी इस के दरबार में ब कषरत इस के मुक़र्रब थे। नमरूद ने एक रात येह ख़्वाब देखा कि एक सितारा निकला और उस की रोशनी में चांद, सूरज वग़ैरा सारे सितारे बे नूर हो कर रह गए। काहिनों और नुजूमियों ने इस ख़्वाब की येह ता'बीर दी कि एक फ़रज़न्द ऐसा होगा जो तेरी बादशाही के ज़वाल का बाइ़ष होगा। येह सुन कर नमरूद बेह़द परेशान हो गया और

उस ने येह हुक्म दे दिया कि मेरे शहर में जो बच्चा पैदा हो वोह क़त्ल कर दिया जाए। और मर्द औ़रतों से जुदा रहें। चुनान्चे, हज़ारों बच्चे क़त्ल कर दिये गए। मगर तक़्दीराते इलाहिय्या को कौन टाल सकता है ? इसी दौरान ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام पैदा हो गए और बादशाह के ख़ौफ़ से इन की वालिदा ने शहर से दूर पहाड़ के एक ग़ार में इन को छुपा दिया इसी ग़ार में छुप कर इन की वालिदा रोज़ाना दूध पिला दिया करती थीं। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन का क़ौल है कि सात बरस की उ़म्र तक और बा'ज़ों ने तह़रीर फ़रमाया कि सतरह बरस तक आप इसी ग़ार में परवरिश पाते रहे। (واللہ تعالٰی اعلم)

(روح البیان، ج۳، ص۵۹، پ۷، الانعام:۷۵)

उस ज़माने में आ़म तौर पर लोग सितारों की पूजा किया करते थे। एक रात आप عَلَيْهِ السَّلَام ने ज़हरा या मुश्तरी सितारे को देखा तो क़ौम को तौह़ीद की दा'वत देने के लिये आप ने निहायत ही नफ़ीस और दिल नशीन अन्दाज़ में लोगों के सामने इस त़रह़ तक़रीर फ़रमाई कि ऐ लोगो ! क्या सितारा मेरा रब है ? फिर जब वोह सितारा डूब गया तो आप ने फ़रमाया कि डूब जाने वालों से मैं मह़ब्बत नहीं रखता। फिर इस के बा'द जब चमकता चांद निकला तो आप ने फ़रमाया कि क्या येह मेरा रब है ? फिर जब वोह भी ग़ुरूब हो गया तो आप ने फ़रमाया कि अगर मेरा रब मुझे हिदायत न फ़रमाता तो मैं भी इन्हीं गुमराहों में से होता। फिर जब चमकते दमकते सूरज को देखा तो आप ने फ़रमाया कि येह तो इन सब से बड़ा है, क्या येह मेरा रब है ? फिर जब येह भी ग़ुरूब हो गया तो आप ने फ़रमाया कि ऐ मेरी क़ौम ! मैं इन तमाम चीज़ों से बेज़ार हूं जिन को तुम लोग ख़ुदा का शरीक ठहराते हो। और मैं ने अपनी हस्ती को उस ज़ात की त़रफ़ मुतवज्जेह कर लिया है जिस ने आस्मानों और ज़मीनों को पैदा फ़रमाया है। बस मैं सिर्फ़ उसी एक ज़ात का आ़बिद और पुजारी बन गया हूं और मैं शिर्क करने वालों में से नहीं हूं। फिर इन की क़ौम इन से झगड़ा करने लगी तो आप ने फ़रमाया कि तुम लोग मुझ से ख़ुदा के बारे में झगड़ते हो ? उस ख़ुदा ने तो मुझे हिदायत दी है और मैं तुम्हारे झूटे मा'बूदों से बिल्कुल

नहीं डरता। सुन लो ! बिग़ैर मेरे रब के हुक्म के तुम लोग और तुम्हारे देवता मेरा कुछ भी नहीं बिगाड़ सकते। मेरा रब हर चीज़ को जानता है। क्या तुम लोग मेरी नसीहत को नहीं मानोगे ? इस वाक़िए को मुख़्तसर मगर बहुत जामेअ़ अल्फ़ाज़ में कुरआने मजीद ने यूं बयान फ़रमाया है :

فَلَمَّا جَنَّ عَلَيْهِ الَّيْلُ رَاٰ كَوْكَبًا ۚ قَالَ هٰذَا رَبِّيْ ۚ فَلَمَّاۤ اَفَلَ قَالَ لَاۤ
اُحِبُّ الْاٰفِلِيْنَ ﴿۷۶﴾ فَلَمَّا رَاَ الْقَمَرَ بَازِغًا قَالَ هٰذَا رَبِّيْ ۚ فَلَمَّاۤ اَفَلَ
قَالَ لَئِنْ لَّمْ يَهْدِنِيْ رَبِّيْ لَاَكُوْنَنَّ مِنَ الْقَوْمِ الضَّآلِّيْنَ ﴿۷۷﴾ فَلَمَّا رَاَ
الشَّمْسَ بَازِغَةً قَالَ هٰذَا رَبِّيْ هٰذَاۤ اَكْبَرُ ۚ فَلَمَّاۤ اَفَلَتْ قَالَ يٰقَوْمِ
اِنِّيْ بَرِيْٓءٌ مِّمَّا تُشْرِكُوْنَ ﴿۷۸﴾ اِنِّيْ وَجَّهْتُ وَجْهِيَ لِلَّذِيْ فَطَرَ السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضَ حَنِيْفًا وَّمَاۤ اَنَا مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿۷۹﴾ (پ۷، الانعام:۷۶تا۷۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :– फिर जब उन पर रात का अन्धेरा आया एक तारा देखा बोले इसे मेरा रब ठहराते हो ? फिर जब वोह डूब गया बोले मुझे खुश नहीं आते डूबने वाले फिर जब चांद चमकता देखा बोले इसे मेरा रब बताते हो ? फिर जब वोह डूब गया कहा अगर मुझे मेरा रब हिदायत न करता तो मैं भी इन्हीं गुमराहों में होता फिर जब सूरज जग मगाता देखा बोले इसे मेरा रब कहते हो ? येह तो इन सब से बड़ा है। फिर जब वोह डूब गया, कहा : ऐ क़ौम मैं बेज़ार हूं उन चीज़ों से जिन्हें तुम शरीक ठहराते हो। मैं ने अपना मुंह उस की त़रफ़ किया जिस ने आस्मानो ज़मीन बनाए एक उसी का हो कर और मैं मुशरिकों में नहीं।

दर्से हिदायत :– ग़ौर कीजिये कि कितना दिलकश त़र्ज़े बयान और किस क़दर मुअष्षिर त़रीक़ए इस्तिद्लाल है कि न कोई सख़्त कलामी है, न किसी की दिल आज़ारी, न किसी के जज़्बात को ठेस लगा कर उस को गुस्सा दिलाना है बस अपने मक़्सद को निहायत ही ह़सीन पैराए और खूब सूरत अन्दाज़ में मुनकिरीन के सामने दलील के साथ पेश कर देना है। हमारे सख़्त गो और तल्ख़ ज़बान मुक़र्रिरीन के लिये इस में हिदायत का बेहतरीन दर्स है। मौला तआ़ला तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए। आमीन।

﴾24﴿ फ़िरऔ़नियों पर लगातार पांच अ़ज़ाब

जब ह़ज़रते मूसा عَلَيۡهِ السَّلَام का अ़सा अज़्दहा बन कर जादूगरों के सांपों को निगल गया तो जादूगर सजदे में गिर कर ईमान लाए। मगर फ़िरऔ़न और उस के मुत्तबेईन ने अब भी ईमान क़बूल नहीं किया। बल्कि फ़िरऔ़न का कुफ़्र और उस की सरकशी और ज़ियादा बढ़ गई और उस ने बनी इस्राईल के मोअमिनीन और ह़ज़रते मूसा عَلَيۡهِ السَّلَام की दिल आज़ारी और ईज़ा रसानी में भरपूर कोशिश शुरूअ़ कर दी और त़रह़ त़रह़ से सताना शुरूअ़ कर दिया। फ़िरऔ़न के मज़ालिम से तंग दिल हो कर ह़ज़रते मूसा عَلَيۡهِ السَّلَام ने खुदावन्दे क़ुद्दूस के दरबार में इस त़रह़ दुआ़ मांगी कि "ऐ मेरे रब ! फ़िरऔ़न ज़मीन में बहुत ही सरकश हो गया है और इस की क़ौम ने अ़हद शिकनी की है लिहाज़ा तू इन्हें ऐसे अ़ज़ाबों में गिरिफ़्तार फ़रमा ले जो इन के लिये सज़ावार हो। और मेरी क़ौम और बा'द वालों के लिये इ़ब्रत हो।" (روح البیان، ج٣،ص٢٢٠،پ٩،الاعراف:١٣٣)

ह़ज़रते मूसा عَلَيۡهِ السَّلَام की दुआ़ के बा'द **अल्लाह** तआ़ला ने फ़िरऔ़नियों पर लगातार पांच अ़ज़ाबों को मुसल्लत़ फ़रमा दिया वोह पांचों अ़ज़ाब येह हैं :

﴾1﴿ **तूफ़ान :-** नागहां एक अब्र आया और हर त़रफ़ अन्धेरा छा गया फिर इन्तिहाई ज़ोरदार बारिश होने लगी। यहां तक कि तूफ़ान आ गया और फ़िरऔ़नियों के घरों में पानी भर गया। और वोह इस में खड़े रह गए और पानी उन की गर्दनों तक आ गया उन में से जो बैठा वोह डूब कर हलाक हो गया। न हिल सकते थे न कोई काम कर सकते थे। उन की खेतियां और बाग़ात तूफ़ान के धारों से बरबाद हो गए। सनीचर से सनीचर तक मुसलसल सात रोज़ तक वोह लोग इसी मुसीबत में मुब्तला रहे और बा वुजूद येह कि बनी इस्राईल के मकानात फ़िरऔ़नियों के घरों से मिले हुवे थे मगर बनी इस्राईल के घरों में सैलाब का पानी नहीं आया और वोह निहायत ही अम्नो चैन के साथ अपने घरों में रहते थे। जब फ़िरऔ़नियों को इस मुसीबत के बरदाश्त करने की ताब व त़ाक़त न रही

और वोह बिल्कुल ही आ़जिज़ हो गए तो उन लोगों ने ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام से अ़र्ज़ किया कि आप हमारे लिये दुआ़ फ़रमाइये कि येह मुसीबत टल जाए तो हम ईमान लाएंगे और बनी इस्राईल को आप के पास भेज देंगे। चुनान्चे, आप ने दुआ़ मांगी तो तूफ़ान की बला टल गई और ज़मीन में ऐसी सर सब्ज़ी और शादाबी नुमूदार हुई कि इस से पहले कभी भी देखने में न आई थी। खेतियां बहुत शानदार हुईं और ग़ल्लों और फलों की पैदावार बेशुमार हुई येह देख कर फ़िरऔ़नी कहने लगे कि येह तूफ़ान का पानी तो हमारे लिये बहुत बड़ी ने'मत का सामान था। फिर वोह अपने अ़हद से फिर गए और ईमान नहीं लाए और फिर सरकशी और ज़ुल्मो इ़स्यान की गर्म बाज़ारी शुरूअ़ कर दी।

﴿2﴾ **टिड्डियां :-** एक माह तक तो फ़िरऔ़नी निहायत आ़फ़िय्यत से रहे। लेकिन जब इन का कुफ़्र व तकब्बुर और ज़ुल्मो सितम फिर बढ़ने लगा तो **अल्लाह** तआ़ला ने अपने क़हरो अ़ज़ाब को टिड्डियों की शक्ल में भेज दिया कि चारों त़रफ़ से टिड्डियों के झुन्ड के झुन्ड आ गए जो इन की खेतियों और बाग़ों को बल्कि यहां तक कि इन के मकानों की लकड़ियां तक को खा गईं और फ़िरऔ़नियों के घरों में येह टिड्डियां भर गईं जिस से इन का सांस लेना मुश्किल हो गया मगर बनी इस्राईल के मोअमिनीन के खेत और बाग़ और मकानात इन टिड्डियों की यलग़ार से बिल्कुल मह़फ़ूज़ रहे। येह देख कर फ़िरऔ़नियों को बड़ी इ़ब्रत हो गई और आख़िर इस अ़ज़ाब से तंग आ कर फिर ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के आगे अ़हद किया कि आप इस अ़ज़ाब के दफ़्अ़ होने के लिये दुआ़ फ़रमा दें तो हम लोग ज़रूर ईमान ले आएंगे और बनी इस्राईल पर कोई ज़ुल्मो सितम न करेंगे। चुनान्चे, आप की दुआ़ से सातवें दिन येह अ़ज़ाब भी टल गया और येह लोग फिर एक माह तक निहायत ही आराम व राह़त में रहे। लेकिन फिर अ़हद शिकनी की और ईमान नहीं लाए। इन लोगों के कुफ़्र और इ़स्यान में फिर इज़ाफ़ा होने लगा। ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام और मोअमिनीन को ईज़ाएं देने लगे और कहने लगे कि हमारी जो खेतियां और फल बच गए हैं वोह हमारे लिये काफ़ी हैं। लिहाज़ा हम अपना दीन छोड़ कर ईमान नहीं लाएंगे।

﴾3﴿ **घुन :-** ग़रज़ एक माह के बा'द इन लोगों पर "कुम्मल" का अज़ाब मुसल्लत़ हो गया। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन का बयान है कि येह घुन था जो इन फ़िरऔ़नियों के अनाजों और फलों में लग कर तमाम ग़ल्लों और मेवों को खा गया और बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि येह एक छोटा सा कीड़ा था, जो खेतों की तय्यार फ़स्लों को चट कर गया और इन के कपड़ों में घुस कर इन के चमड़ों को काट काट कर इन्हें मुर्ग़े बिस्मिल की त़रह़ तड़पाने लगा। यहां तक कि इन के सर के बालों, दाढ़ी, मूंछों, भंवों, पलकों को चाट चाट कर और चेहरों को काट काट कर इन्हें चैचक रू बना दिया। येह कीड़े इन के खानों, पानियों और बरतनों में घुस जाते थे। जिस से येह लोग न कुछ खा सकते थे न कुछ पी सकते थे न लम्ह़े भर के लिये सो सकते थे। यहां तक कि एक हफ़्ते में इस क़हरे आस्मानी व बलाए नागहानी से बिलबिला कर येह लोग चीख़ पड़े और फिर ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के ह़ुज़ूर ह़ाज़िर हो कर दुआ़ की दरख़्वास्त करने लगे और ईमान लाने का अ़हद देने लगे चुनान्चे, आप ने इन लोगों की बेक़रारी और गिर्या व ज़ारी पर रह़्म खा कर दुआ़ कर दी। और येह अ़ज़ाब भी रफ़्अ़ दफ़्अ़ हो गया। लेकिन फ़िरऔ़नियों ने फिर अपने अ़हद को तोड़ डाला। और पहले से भी ज़ियादा ज़ुल्म व उ़दवान पर कमर बस्ता हो गए। फिर एक माह के बा'द इन लोगों पर मेंडक का अ़ज़ाब नाज़िल हो गया।

﴾4﴿ **मेंडक :-** इन फ़िरऔ़नियों की बस्तियों और इन के घरों में अचानक बेशुमार मेंडक पैदा हो गए और इन ज़ालिमों का येह ह़ाल हो गया कि जो आदमी जहां भी बैठता उस की मजलिस में हज़ारों मेंडक भर जाते थे। कोई आदमी बात करने या खाने के लिये मुंह खोलता तो उस के मुंह में मेंडक कूद कर घुस जाते। हांडियों में मेंडक, उन के जिस्मों पर सेंकडों मेंडक सुवार रहते। उठने, बैठने, लैटने किसी ह़ालत में भी मेंडकों से नजात नहीं मिलती थी। इस अ़ज़ाब से फ़िरऔ़नी रो पड़े और फिर रोते गिड़ गिड़ाते ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام की बारगाह में दुआ़ की भीक मांगने के लिये आए और बड़ी बड़ी क़स्में खा कर अ़हदो पैमान करने लगे कि अब हम ज़रूर ईमान लाएंगे और मोअमिनीन को कभी ईज़ा नहीं देंगे। चुनान्चे, ह़ज़रते

मूसा عَلَيْهِ السَّلَام की दुआ़ से सातवें दिन येह अ़ज़ाब भी उठा लिया गया मगर येह मर्दूद क़ौम राह़त मिलते ही फिर अपना अ़हद तोड़ कर अपनी पहली ख़बीष ह़रकतों में मश्ग़ूल हो गई। मोअमिनीन को सताने लगे और ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام की तौहीन व बे अदबी करने लगे तो फिर अ़ज़ाबे इलाही ने इन ज़ालिमों को अपनी गिरिफ़्त में ले लिया और उन लोगों पर ख़ून का अ़ज़ाब क़हरे इलाही बन कर उतर पड़ा।

﴾5﴿ **ख़ून :-** एक दम बिल्कुल अचानक उन लोगों के तमाम कूंओं, नह्रों का पानी ख़ून हो गया तो उन लोगों ने फ़िरऔ़न से फ़रियाद की, तो उस सरकश ने कहा कि येह ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام की जादूगरी और नज़रबन्दी है। येह सुन कर फ़िरऔ़नियों ने कहा कि येह कैसी और कहां की नज़र बन्दी है ? कि हमारे खाने पीने के बरतन ख़ून से भरे पड़े हैं और मोअमिनीन पर इस का ज़रा भी अषर नहीं तो फ़िरऔ़न ने हुक्म दिया कि फ़िरऔ़नी लोग मोअमिनीन के साथ एक ही बरतन से पानी निकालें। मगर ख़ुदा की शान कि मोअमिनीन उसी बरतन से पानी निकालते तो निहायत ही साफ़ सफ़्फ़ाफ़ और शीरीं पानी निकलता और फ़िरऔ़नी जब उसी बरतन से पानी निकालते तो ताज़ा ख़ालिस ख़ून निकलता। यहां तक कि फ़िरऔ़नी लोग प्यास से बे क़रार हो कर मोअमिनीन के पास आए और कहा कि हम दोनों एक ही बरतन से एक ही साथ मुंह लगा कर पानी पियेंगे मगर क़ुदरते ख़ुदावन्दी का अ़जीब जल्वा नज़र आता। एक ही बरतन से एक साथ मुंह लगा कर दोनों पानी पीते थे मगर मोअमिनीन के मुंह में जो जाता वोह पानी होता था और फ़िरऔ़न वालों के मुंह में जो जाता वोह ख़ून होता था। मजबूर हो कर फ़िरऔ़न और फ़िरऔ़नी लोग घास और दरख़्तों की जड़ें और छालें चबा चबा कर चूसते थे मगर इस की रुतूबत भी उन के मुंह में जा कर ख़ून बन जाती थी। अल ग़रज़ फ़िरऔ़नियों ने फिर गिड़ गिड़ा कर ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام से दुआ़ की दरख़्वास्त की। तो आप ने पैग़म्बराना रह़्मो करम फ़रमा कर फिर इन लोगों के लिये दुआ़ए ख़ैर फ़रमा दी तो सातवें दिन इस ख़ूनी अ़ज़ाब का साया भी उन के सरों से उठ गया। अल ग़रज़ इन सरकशों पर मुसलसल

पांच अ़ज़ाब आते रहे और हर अ़ज़ाब सातवें दिन टलता रहा और हर दो अ़ज़ाबों के दरमियान एक माह का फ़ासिला होता रहा मगर फ़िरऔ़न और फ़िरऔ़नियों के दिलों पर शक़ावत व बद बख़्ती की ऐसी मोहर लग चुकी थी कि फिर भी वोह ईमान नहीं लाए और अपने कुफ़्र पर अड़े रहे और हर मरतबा अपना अ़हद तोड़ते रहे। यहां तक कि अल्लाह तआ़ला के क़हरो ग़ज़ब का आख़िरी अ़ज़ाब आ गया कि फ़िरऔ़न और उस के मुत्तबेई़न सब दरियाए नील में ग़र्क़ हो कर हलाक हो गए और हमेशा के लिये ख़ुदा की दुन्या इन अ़हद शिकनों और मर्दूदों से पाक व साफ़ हो गई और येह लोग दुन्या से इस त़रह़ नैस्तो नाबूद कर दिये गए कि रूए ज़मीन पर इन की क़ब्रों का निशान भी बाक़ी नहीं रह गया। (تفسیر الصاوی،ج۲،ص۸۰۳،پ۹،الاعراف:۱۳۳)

कु़रआने मजीद ने इन मज़्कूरए बाला पांचों अ़ज़ाबों की तस्वीर कशी इन अल्फ़ाज़ में फ़रमाई है :–

فَاَرْسَلْنَا عَلَیْهِمُ الطُّوْفَانَ وَ الْجَرَادَ وَ الْقُمَّلَ وَ الضَّفَادِعَ وَ الدَّمَ
اٰیٰتٍ مُّفَصَّلٰتٍ قف فَاسْتَكْبَرُوْا وَ كَانُوْا قَوْمًا مُّجْرِمِیْنَ ﴿۱۳۳﴾ وَ لَمَّا وَقَعَ
عَلَیْهِمُ الرِّجْزُ قَالُوْا یٰمُوْسَى ادْعُ لَنَا رَبَّكَ بِمَا عَهِدَ عِنْدَكَ ج لَىٕنْ
كَشَفْتَ عَنَّا الرِّجْزَ لَنُؤْمِنَنَّ لَكَ وَ لَنُرْسِلَنَّ مَعَكَ بَنِیْۤ
اِسْرَآءِیْلَ ﴿۱۳۴﴾ ج فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُمُ الرِّجْزَ اِلٰۤى اَجَلٍ هُمْ بٰلِغُوْهُ اِذَا هُمْ
یَنْكُثُوْنَ ﴿۱۳۵﴾ فَانْتَقَمْنَا مِنْهُمْ فَاَغْرَقْنٰهُمْ فِی الْیَمِّ بِاَنَّهُمْ كَذَّبُوْا بِاٰیٰتِنَا
وَ كَانُوْا عَنْهَا غٰفِلِیْنَ ﴿۱۳۶﴾ (پ۹،الاعراف:۱۳۳ تا ۱۳۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :– तो भेजा हम ने उन पर तूफ़ान और टिड्डी और घुन (या किलनी या जूएं) और मेंडक और ख़ून जुदा जुदा निशानियां तो उन्हों ने तकब्बुर किया और वोह मुजरिम क़ौम थी और जब उन पर अ़ज़ाब पड़ता कहते : ऐ मूसा ! हमारे लिये अपने रब से दुआ़ करो उस अ़हद के सबब जो उस का तुम्हारे पास है बेशक अगर तुम हम पर से अ़ज़ाब उठा दोगे तो हम ज़रूर तुम पर ईमान लाएंगे और बनी इस्राईल

को तुम्हारे साथ कर देंगे फिर जब हम उन से अ़ज़ाब उठा लेते एक मुद्दत के लिये जिस तक उन्हें पहुंचना है जभी वोह फिर जाते तो हम ने उन से बदला लिया तो उन्हें दरिया में डुबो दिया इस लिये कि हमारी आयतें झुटलाते और इन से बे ख़बर थे।

दर्से हिदायत :- ﴾1﴿ इन वाक़िआत से येह सबक़ मिलता है कि अ़हद शिकनी और अल्लाह के नबियों की तकज़ीब व तौहीन कितना बड़ा और हौलनाक जुर्मे अ़ज़ीम है कि इस की वजह से फ़िरऔ़नियों पर बार बार अ़ज़ाबे इलाही क़िस्म क़िस्म की सूरतों में उतरा। यहां तक कि आख़िर में वोह दरिया में ग़र्क़ कर के दुन्या से फ़ना कर दिये गए। लिहाज़ा हर मुसलमान को अ़हद शिकनी और सरकशी और गुनाहों से बचते रहना लाज़िम है कि कहीं बद आ'मालियों की नुहूसतों से हम पर भी क़हरे इलाही अ़ज़ाब की सूरत में न उतर पड़े।

﴾2﴿ हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام का सब्र व तहम्मुल और इन की रक़ीक़ुल क़ल्बी बिला शुबा इन्तिहा को पहुंची हुई थी कि बार बार अ़हद शिकनी करने वाले अपने दुश्मनों की आहो फ़ुग़ां पर रह़्म खा कर इन के अ़ज़ाब को दफ़्अ़ करने की दुआ़ फ़रमाते रहे इस से मा'लूम हुवा कि क़ौम के हादी और इन के पेशवा के लिये सब्र व तहम्मुल और अ़फ़्वो दरगुज़र की ख़स्लत इन्तिहाई ज़रूरी है और उ़-लमाए किराम को जो ह़ज़राते अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام के नाइबीन हैं इन के लिये बेह़द लाज़िम व ज़रूरी है कि वोह अपने मुख़ालिफ़ीन और बद ख़्वाहों से इन्तिक़ाम का जज़्बा न रखें बल्कि सब्रो तहम्मुल कर के अपने मुजरिमों को बार बार मुआ़फ़ करते रहें। कि येह ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام की मुक़द्दस सुन्नत भी है और हमारे नबिय्ये आख़िरुज़्ज़मां صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का तो येह एक बड़ा ही ख़ास और ख़ुसूसी तुर्रए इम्तियाज़ है कि आप ने कभी भी अपनी ज़ात के लिये अपने दुश्मनों से कोई भी इन्तिक़ाम नहीं लिया बल्कि हमेशा उन को मुआ़फ़ फ़रमा दिया करते थे। और येह आप की मुक़द्दस ता'लीम का बहुत ही ताबनाक और दरख़्शां इरशाद है कि

صِلْ مَنْ قَطَعَکَ وَاعْفُ عَمَّنْ ظَلَمَکَ وَاَحْسِنْ اِلٰی مَنْ اَسَاءَ اِلَیْکَ

या'नी तुम से जो तअ़ल्लुक़ काटे तुम उस से तअ़ल्लुक़ जोड़ो। और जो तुम पर ज़ुल्म करे उस को मुआफ़ कर दो और जो तुम्हारे साथ बुरा बरताव करे तुम उस के साथ अच्छा सुलूक करो।

हज़रते शैख़ सा'दी عَلَیْهِ الرَّحْمَة ने इसी ह़दीष की तर्जुमानी करते हुवे इरशाद फ़रमाया कि

بدی رابدی سهل باشد جزا   اگر مردی اَحْسِنْ اِلٰی مَنْ اَسَا

या'नी बुराई का बुरा बदला देना तो बहुत आसान है लेकिन अगर तुम जवां मर्द हो तो बुराई करने वाले के साथ भलाई करो।

﴾25﴿ ह़ज़रते सालेह़ عَلَیْهِ السَّلَام की ऊंटनी

ह़ज़रते सालेह़ عَلَیْهِ السَّلَام क़ौमे षमूद की त़रफ़ नबी बना कर भेजे गए। आप ने जब क़ौमे षमूद को ख़ुदा (عَزَّوَجَلَّ) का फ़रमान सुना कर ईमान की दा'वत दी तो इस सरकश क़ौम ने आप से येह मो'जिज़ा त़लब किया कि आप इस पहाड़ की चट्टान से एक गाभन ऊंटनी निकालिये जो ख़ूब फ़र्बा और हर क़िस्म के उ़यूब व नक़ाइस से पाक हो। चुनान्चे, आप ने चट्टान की त़रफ़ इशारा फ़रमाया तो वोह फ़ौरन ही फट गई और उस में से एक निहायत ही ख़ूब सूरत व तन्दुरुस्त और ख़ूब बुलन्द क़ामत ऊंटनी निकल पड़ी जो गाभन थी और निकल कर उस ने एक बच्चा भी जना और येह अपने बच्चे के साथ मैदानों में चरती फिरती रही।

इस बस्ती में एक ही तालाब था जिस में पहाड़ों के चश्मों से पानी गिर कर जम्अ़ होता था। आप ने फ़रमाया कि ऐ लोगो ! देखो येह मो'जिज़े की ऊंटनी है। एक रोज़ तुम्हारे तालाब का सारा पानी येह पी डालेगी और एक रोज़ तुम लोग पीना। क़ौम ने इस को मान लिया फिर आप ने क़ौमे षमूद के सामने येह तक़रीर फ़रमाई कि

يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ؕ قَدْ جَآءَتْكُمْ بَيِّنَةٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ ؕ هٰذِهٖ نَاقَةُ اللّٰهِ لَكُمْ اٰيَةً فَذَرُوْهَا تَاْكُلْ فِيْۤ اَرْضِ اللّٰهِ وَلَا تَمَسُّوْهَا بِسُوْٓءٍ فَيَاْخُذَكُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿۷۳﴾ (پ۸،الاعراف:۷۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- ऐ मेरी क़ौम **अल्लाह** को पूजो उस के सिवा तुम्हारा कोई मा'बूद नहीं बेशक तुम्हारे पास तुम्हारे रब की त़रफ़ से

रोशन दलील आई येह अल्लाह का नाक़ा है तुम्हारे लिये निशानी तो उसे छोड़ दो कि अल्लाह की ज़मीन में खाए और उसे बुराई से हाथ न लगाओ कि तुम्हें दर्दनाक अ़ज़ाब आएगा।

चन्द दिन तो क़ौमे षमूद ने इस तक्लीफ़ को बरदाश्त किया कि एक दिन उन को पानी नहीं मिलता था। क्यूंकि उस दिन तालाब का सारा पानी ऊंटनी ही पी जाती थी। इस लिये उन लोगों ने तै़ कर लिया कि इस ऊंटनी को क़त्ल कर डालें।

क़िदार बिन सालिफ़ :- चुनान्चे, इस क़ौम में क़िदार बिन सालिफ़ जो सुर्ख़ रंग का भूरी आंखों वाला और पस्त क़द आदमी था और एक ज़िनाकार औ़रत का लड़का था। सारी क़ौम के हुक्म से इस ऊंटनी को क़त्ल करने के लिये तय्यार हो गया। ह़ज़रते सालेह़ عَلَيْهِ السَّلَام मन्अ़ ही करते रहे, लेकिन क़िदार बिन सालिफ़ ने पहले तो ऊंटनी के चारों पाउं को काट डाला। फिर इस को ज़ब्ह़ कर दिया और इन्तिहाई सरकशी के साथ ह़ज़रते सालेह़ عَلَيْهِ السَّلَام से बे अदबाना गुफ़्त्गू करने लगा।

चुनान्चे, खुदावन्दे क़ुद्दूस का इरशाद है कि

فَعَقَرُوا النَّاقَةَ وَعَتَوْا عَنْ اَمْرِ رَبِّهِمْ وَقَالُوْا يٰصٰلِحُ ائْتِنَا بِمَا تَعِدُنَاۤ اِنْ كُنْتَ مِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿۷۷﴾ (پ۸،الاعراف۷۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- पस नाक़े की कूचें (क़दम) काट दीं और अपने रब के हुक्म से सरकशी की और बोले : ऐ सालेह़ ! हम पर ले आओ जिस का तुम वा'दा दे रहे हो अगर तुम रसूल हो।

ज़लज़ले का अ़ज़ाब :- क़ौमे षमूद की इस सरकशी पर अ़ज़ाबे खुदावन्दी का ज़ुहूर इस त़रह़ हुवा कि पहले एक ज़बरदस्त चिंघाड़ की खौ़फ़नाक आवाज़ आई। फिर शदीद ज़लज़ला आया जिस से पूरी आबादी उथल पथल हो कर चकना चूर हो गई। तमाम इमारतें टूट फूट कर तहस नहस हो गईं और क़ौमे षमूद का एक एक आदमी घुटनों के बल औंधा गिर कर मर गया। क़ुरआने मजीद ने फ़रमाया कि

فَاَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ فَاَصْبَحُوْا فِيْ دَارِهِمْ جٰثِمِيْنَ ﴿۷۸﴾ (پ۸،الاعراف:۷۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- तो उन्हें ज़लज़ले ने आ लिया तो सुब्ह़ को अपने घरों में औंधे रह गए।

ह़ज़रते सालेह़ عَلَیْہِ السَّلَام ने जब देखा कि पूरी बस्ती ज़लज़लों के झटकों से तबाहो बरबाद हो कर ईंट पथ्थरों का ढेर बन गई और पूरी क़ौम हलाक हो गई तो आप को बड़ा सदमा और क़लक़ हुवा। और आप को क़ौमे षमूद और इन की बस्ती के वीरानों से इस क़दर नफ़रत हो गई कि आप ने इन लोगों की त़रफ़ से मुंह फेर लिया। और इस बस्ती को छोड़ कर दूसरी जगह तशरीफ़ ले गए और चलते वक़्त मुर्दा लाशों से येह फ़रमा कर रवाना हो गए कि

يٰقَوْمِ لَقَدْ اَبْلَغْتُكُمْ رِسَالَةَ رَبِّیْ وَنَصَحْتُ لَكُمْ وَلٰكِنْ لَّا تُحِبُّوْنَ النّٰصِحِیْنَ ﴿۷۹﴾ (پ۸،الاعراف:۷۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- ऐ मेरी क़ौम बेशक मैं ने तुम्हें अपने रब की रिसालत पहुंचा दी और तुम्हारा भला चाहा मगर तुम ख़ैर ख़्वाहों के ग़रज़ी (पसन्द करने वाले) ही नहीं।

ख़ुलासए कलाम येह है कि क़ौमे षमूद की पूरी बस्ती बरबाद व वीरान हो कर खन्डर बन गई और पूरी क़ौम फ़ना के घाट उतर गई कि आज उन की नस्ल का कोई इन्सान रूए ज़मीन पर बाक़ी नहीं रह गया।

(تفسیر الصاوی،ج۲،ص۶۸۸،پ۸،الاعراف:۷۳۔۷۷تا ۷۹ ملخصاً)

दर्से हिदायत :- इस वाक़िए से येह सबक़ मिलता है कि जब एक नबी की एक ऊंटनी को क़त्ल कर देने वाली क़ौम अ़ज़ाबे इलाही की तबाह कारियों से इस त़रह़ फ़ना हो गई कि उन की नस्ल का कोई इन्सान भी रूए ज़मीन पर बाक़ी न रह गया तो जो क़ौम अपने नबी की आल व अवलाद को क़त्ल कर डालेगी भला वोह अ़ज़ाबे इलाही के क़ह्र से कब और किस त़रह़ मह़फ़ूज़ रह सकती है? चुनान्चे, तारीख़ शाहिद है कि करबला में अहले बैते नबुव्वत को शहीद करने वाले यज़ीदी कूफ़ियों और शामियों का येही ह़श्र हुवा कि मुख़्तार बिन उ़बैद के दौरे हुकूमत में यज़ीदियों का बच्चा बच्चा क़त्ल कर दिया गया और इन के घरों को ताख़्त व ताराज कर के इन पर गधों के हल चलाए गए और आज रूए ज़मीन पर इन यज़ीदियों की नस्ल का कोई एक बच्चा भी बाक़ी नहीं रह गया।

एक लाख चालीस हज़ार यज़ीदी मक़्तूल :- ह़ाकिम मुह़द्दिष ने एक ह़दीष रिवायत की है कि अल्लाह तआ़ला ने अपने ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर वह़्य भेजी थी कि क़ौमे यहूद ने ह़ज़रते ज़करिय्या عَلَیْہِ السَّلَام को क़त्ल कर दिया तो इन के एक ख़ून के बदले सत्तर हज़ार यहूदी क़त्ल हुवे और आप के नवासे ह़ज़रते इमामे ह़ुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के एक ख़ून के बदले सत्तर सत्तर हज़ार या'नी एक लाख चालीस हज़ार कूफ़ी व शामी मक़्तूल होंगे। चुनान्चे, अल्लाह तआ़ला का वा'दा इस त़रह़ पूरा हुवा कि मुख़्तार बिन उ़बैद की लड़ाई में सत्तर हज़ार कूफ़ी व शामी क़त्ल हुवे और फिर अ़ब्बासी सल्त़नत के बानी अ़ब्दुल्लाह सफ़्फ़ाह़ के हुक्म से सत्तर हज़ार कूफ़ी व शामी मारे गए। यूं कुल मिल कर एक लाख चालीस हज़ार मक़्तूल हो गए।

(المستدرک، کتاب التفسیر، باب اخبار القتل عوض الحسین......الخ، ج۳،ص۷، رقم ۲۳۰۱)

बहर ह़ाल येह याद रखिये कि अल्लाह तआ़ला अपने मह़बूबों की हर हर चीज़ को अपना मह़बूब बना लेता है। लिहाज़ा ख़ुदा (عَزَّوَجَلَّ) के मह़बूबों की आल व अज़्वाज हों या अस्ह़ाब व अह़बाब या इन से निस्बत व तअ़ल्लुक़ रखने वाली कोई भी चीज़ हो इन में से किसी की भी तौहीन और बे अदबी से ख़ुदावन्दे क़ह्हार का क़ह्रो ग़ज़ब ज़रूर किसी न किसी अ़ज़ाब की सूरत में ज़ाहिर होता है। लिहाज़ा हर वोह चीज़ जिस को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूबों से निस्बत ह़ासिल हो जाए उस की ता'ज़ीम व तकरीम लाज़िम व ज़रूरी है और उस की तौहीन व बेअदबी अ़ज़ाबे इलाही की हरी झन्डी और तबाही व बरबादी का सिग्नल है। (والعياذ بالله منه)

अ़ज़ाब की ज़मीन मन्ह़ूस :- रिवायत है कि जब जंगे तबूक के मौक़अ़ पर सफ़र में ह़ुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم क़ौमे षमूद की बस्तियों के खन्डरात के पास से गुज़रे तो आप ने फ़रमाया कि ख़बरदार कोई शख़्स इस गाऊं में दाख़िल न हो और न इस गाऊं के कूंएं का कोई शख़्स पानी पिये और तुम लोग इस अ़ज़ाब की जगह से ख़ौफ़े इलाही عَزَّوَجَلَّ में डूब कर रोते हुवे और मुंह ढांपे हुवे जल्द से जल्द गुज़र जाओ, कहीं ऐसा न हो कि तुम पर भी अ़ज़ाब उतर पड़े। (روح البیان، ج۳،ص۱۹۴، پ۸،الاعراف:۷۹)

﴾26﴿ क़ौमे आ़द की आंधी

क़ौमे आ़द मक़ामे "अह़क़ाफ़" में रहती थी जो उ़मान व ह़ज़्रमौत के दरमियान एक बड़ा रेगिस्तान है। इन के मौरिषे आ'ला का नाम आ़द बिन औ़स बिन इरम बिन साम बिन नूह़ है। पूरी क़ौम के लोग इन को मौरिषे आ'ला "आ़द" के नाम से पुकारने लगे। येह लोग बुत परस्त और बहुत बद आ'माल व बद किरदार थे। अल्लाह तआ़ला ने अपने पैग़म्बर ह़ज़रते हूद عَلَيْهِ السَّلَام को इन लोगों की हिदायत के लिये भेजा मगर इस क़ौम ने अपने तकब्बुर और सरकशी की वजह से ह़ज़रते हूद عَلَيْهِ السَّلَام को झुटला दिया और अपने कुफ़्र पर अड़े रहे। ह़ज़रते हूद عَلَيْهِ السَّلَام बार बार इन सरकशों को अ़ज़ाबे इलाही से डराते रहे, मगर इस शरीर क़ौम ने निहायत ही बे बाकी और गुस्ताख़ी के साथ अपने नबी से येह कह दिया कि

اَجِئْتَنَا لِنَعْبُدَ اللّٰهَ وَحْدَهٗ وَنَذَرَ مَا كَانَ يَعْبُدُ اٰبَآؤُنَا ۚ فَاْتِنَا بِمَا تَعِدُنَاۤ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿۷۰﴾ (پ۸،الاعراف:۷۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- क्या तुम हमारे पास इस लिये आए हो कि हम एक अल्लाह को पूजें और जो हमारे बाप दादा पूजते थे, उन्हें छोड़ दें ? तो लाओ जिस का हमें वा'दा दे रहे हो अगर सच्चे हो।

आख़िर अ़ज़ाबे इलाही की झलकियां शुरूअ़ हो गईं। तीन साल तक बारिश ही नहीं हुई। और हर त़रफ़ क़ह़त़ (खुश्क साली) का दौर दौरा हो गया। यहां तक कि लोग अनाज के दाने दाने को तरस गए। उस ज़माने का येह दस्तूर था कि जब कोई बला और मुसीबत आती थी तो लोग मक्कए मुअ़ज़्ज़मा जा कर ख़ानए का'बा में दुआ़एं मांगते थे तो बलाएं टल जाती थीं। चुनान्चे, एक जमाअ़त मक्कए मुअ़ज़्ज़मा गई। इस जमाअ़त में मुर्षद बिन सा'द नामी एक शख़्स भी था जो मोमिन था मगर अपने ईमान को क़ौम से छुपाए हुवे था। जब इन लोगों ने का'बए मुअ़ज़्ज़मा में दुआ़ मांगनी शुरूअ़ की तो मुर्षद बिन सा'द का ईमानी जज़्बा बेदार हो गया और उस ने तड़प कर कहा कि ऐ मेरी क़ौम तुम लाख दुआ़एं मांगो, मगर ख़ुदा की क़सम उस वक़्त तक पानी नहीं बरसेगा जब तक तुम अपने नबी ह़ज़रते हूद عَلَيْهِ السَّلَام पर ईमान न लाओगे।

हज़रते मुर्षद बिन सा'द ने जब अपना ईमान ज़ाहिर कर दिया तो क़ौमे आ़द के शरीरों ने इन को मार पीट कर अलग कर दिया और दुआ़एं मांगने लगे। उस वक़्त अल्लाह तआ़ला ने तीन बदलियां भेजीं। एक सफ़ेद, एक सुर्ख़, एक सियाह और आस्मान से एक आवाज़ आई कि ऐ क़ौमे आ़द ! तुम लोग अपनी क़ौम के लिये इन तीन बदलियों में से एक बदली को पसन्द कर लो। इन लोगों ने काली बदली को पसन्द कर लिया और येह लोग इस ख़याल में मगन थे कि काली बदली ख़ूब ज़ियादा बारिश देगी। चुनान्चे, वोह अब्रे सियाह क़ौमे आ़द की आबादियों की त़रफ़ चल पड़ा। क़ौमे आ़द के लोग काली बदली को देख कर बहुत ख़ुश हुवे। ह़ज़रते हूद عَلَيْهِ السَّلَام ने फ़रमाया कि ऐ मेरी क़ौम ! देख लो अ़ज़ाबे इलाही अब्र की सूरत में तुम्हारी त़रफ़ बढ़ रहा है मगर क़ौम के गुस्ताख़ों ने अपने नबी को झुटला दिया और कहा कि कहां का अ़ज़ाब और कैसा अ़ज़ाब ? هٰذَا عَارِضٌ مُّمْطِرُنَا येह तो बादल है जो हमें बारिश देने के लिये आ रहा है।

(روح البیان، ج۳، ص۱۸۷ تا ۱۸۹، پ ۸، الاعراف:۷۰)

येह बादल पश्चिम की त़रफ़ से आबादियों की त़रफ़ बराबर बढ़ता रहा और एक दम नागहां इस में से एक आंधी आई जो इतनी शदीद थी कि ऊंटों को मअ़ इन के सुवार के उड़ा कर कहीं से कहीं फेंक देती थी। फिर इतनी ज़ोरदार हो गई कि दरख़्तों को जड़ों से उखाड़ कर उड़ा ले जाने लगी। येह देख कर क़ौमे आ़द के लोगों ने अपने संगीन महल्लों में दाख़िल हो कर दरवाज़ों को बन्द कर लिया मगर आंधी के झोंके न सिर्फ़ दरवाज़ों को उखाड़ कर ले गए बल्कि पूरी इमारतों को झंझोड़ कर इन की ईंट से ईंट बजा दी। सात रात और आठ दिन मुसलसल येह आंधी चलती रही। यहां तक कि क़ौमे आ़द का एक एक आदमी मर कर फ़ना हो गया। और इस क़ौम का एक बच्चा भी बाक़ी न रहा।

जब आंधी ख़त्म हुई तो उस क़ौम की लाशें ज़मीन पर इस त़रह पड़ी हुई थीं जिस त़रह खजूरों के दरख़्त उखड़ कर ज़मीन पर पड़े हों चुनान्चे, इरशादे रब्बानी है :

وَاَمَّا عَادٌ فَاُهْلِكُوْا بِرِيْحٍ صَرْصَرٍ عَاتِيَةٍ ۙ﴿۶﴾ سَخَّرَهَا عَلَيْهِمْ سَبْعَ لَيَالٍ وَّ
ثَمٰنِيَةَ اَيَّامٍ ۙ حُسُوْمًا ۙ فَتَرَى الْقَوْمَ فِيْهَا صَرْعٰى ۙ كَاَنَّهُمْ اَعْجَازُ
نَخْلٍ خَاوِيَةٍ ۚ﴿۷﴾ فَهَلْ تَرٰى لَهُمْ مِّنْ بَاقِيَةٍ ﴿۸﴾ (پ۲۹،الحاقة:۶تا۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- और रहे आ़द वोह हलाक किये गए निहायत सख़्त गरजती आंधी से वोह उन पर क़ुव्वत से लगा दी सात रातें और आठ दिन लगातार तो उन लोगों को उन में देखो पछड़े (मरे) हुवे गोया वोह खजूर के डन्ड (सूखे तने) हैं गिरे हुवे तो तुम उन में से किसी को बचा हुवा देखते हो ?

फिर क़ुदरते ख़ुदावन्दी से काले रंग के परन्दों का एक ग़ौल नुमूदार हुवा। जिन्हों ने इन की लाशों को उठा कर समुन्दर में फेंक दिया। और ह़ज़रते हूद عَلَيْهِ السَّلَام ने उस बस्ती को छोड़ दिया और चन्द मोअमिनीन को जो ईमान लाए थे साथ ले कर मक्कए मुकर्रमा चले गए। और आख़िर ज़िन्दगी तक बैतुल्लाह शरीफ़ में इ़बादत करते रहे।

(تفسیر الصاوی،ج۲،ص۶۸۶،پ۸،الاعراف:۷۰)

दर्से हिदायत :- क़ुरआने करीम के इस दर्दनाक वाक़िए़ से येह सबक़ मिलता है कि "क़ौमे आ़द" जो बड़ी त़ाक़तवर और क़द आवर क़ौम थी और इन लोगों की माली ख़ुशह़ाली भी निहायत मुस्तह़्कम थी क्यूंकि लहलहाती खेतियां और हरे भरे बाग़ात इन के पास थे। पहाड़ों को तराश तराश कर इन लोगों ने गर्मियों और सर्दियों के लिये अलग अलग मह़ल्लात ता'मीर किये थे। इन लोगों को अपनी कषरत और त़ाक़त पर बड़ा ए'तिमाद, अपने तमव्वुल और सामाने ऐ़शो इ़शरत पर बड़ा नाज़ था। मगर कुफ़्र और बद आ'मालियों व बद कारियों की नुह़ूसत ने इन लोगों को क़हरे इलाही के अ़ज़ाब में इस त़रह़ गिरिफ़्तार कर दिया कि आंधी के झोंकों और झटकों ने इन की पूरी आबादी को झन्झोड़ कर चकना चूर कर दिया। और इस पूरी क़ौम के वुजूद को सफ़्ह़े हस्ती से इस त़रह़ मिटा दिया कि इन की क़ब्रों का भी कहीं निशान बाक़ी न रहा। तो फिर भला

हम लोगों जैसी कमज़ोर क़ौमों का क्या ठिकाना है ? कि अज़ाबे इलाही के झटकों की ताब ला सकें। इस लिये जिन लोगों को अपनी और अपनी नस्लों की ख़ैरिय्यत व बक़ा मन्ज़ूर है, उन्हें लाज़िम है कि वोह **अल्लाह** व रसूल عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللہ تعالیٰ علیہ والہٖ وسلَّم की नाफ़रमानियों और बद आ'मालियों से हमेशा बचते रहें। अपनी कोशिश और ताक़त भर आ'माले सालेह़ और नेकियां करते रहें, वरना कुरआने मजीद की आयतें हमें झन्झोड़ कर येह सबक़ दे रही हैं कि नेकी की ताषीर आबादी और बदी की ताषीर बरबादी है। कुरआने मजीद में पढ़ लो कि وَالْمُؤْتَفِكٰتُ بِالْخَاطِئَةِ ۚ (پ۲۹،الحاقۃ:۹) या'नी बहुत सी बस्तियां अपनी बदकारियों और बद आ'मालियों की वजह से हलाक व बरबाद कर दी गईं। और दूसरी आयत में येह भी पढ़ लो कि

وَلَوْ اَنَّ اَهْلَ الْقُرٰۤى اٰمَنُوْا وَ اتَّقَوْا لَفَتَحْنَا عَلَيْهِمْ بَرَكٰتٍ مِّنَ السَّمَآءِ وَ الْاَرْضِ وَ لٰكِنْ كَذَّبُوْا فَاَخَذْنٰهُمْ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿۹۶﴾ (پ۹،الاعراف:۹۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- और अगर बस्तियों वाले ईमान लाते और डरते तो ज़रूर हम उन पर आस्मान और ज़मीन से बरकतें खोल देते मगर उन्हों ने तो झुटलाया तो हम ने उन्हें उन के किये पर गिरिफ़्तार किया।

﴾27﴿ उलट पलट हो जाने वाला शहर

येह ह़ज़रते लूत़ عَلَيْهِ السَّلَام का शहर "सदूम" है। जो मुल्के शाम में सूबा "ह़िम्स" का एक मश्हूर शहर है। ह़ज़रते लूत़ عَلَيْهِ السَّلَام बिन हारान बिन तारिख़, येह ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام के भतीजे हैं। येह लोग इराक़ में शहर "बाबिल" के बाशिन्दे थे फिर ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام वहां से हिजरत कर के "फ़िलिस्त़ीन" तशरीफ़ ले गए और ह़ज़रते लूत़ عَلَيْهِ السَّلَام मुल्के शाम के एक शहर "उर्दन" में मुक़ीम हो गए और **अल्लाह** तआ़ला ने आप को नबुव्वत अ़त़ा फ़रमा कर "सदूम" वालों की हिदायत के लिये भेज दिया। (تفسیر الصاوی،ج۲،ص۶۸۹،پ۸،الاعراف:۸۰)

शहर सदूम :- शहरे सदूम की बस्तियां बहुत आबाद और निहायत सर सब्ज़ो शादाब थीं और वहां त़रह़ त़रह़ के अनाज और क़िस्म क़िस्म के फल और मेवे ब कषरत पैदा होते थे। शहर की ख़ुशह़ाली की वजह से

अकषर जा बजा के लोग मेहमान बन कर इन आबादियों में आया करते थे और शहर के लोगों को इन मेहमानों की मेहमान नवाज़ी का बार उठाना पड़ता था। इस लिये इस शहर के लोग मेहमानों की आमद से बहुत ही कबीदा ख़ातिर और तंग हो चुके थे। मगर मेहमानों को रोकने और भगाने की कोई सूरत नज़र नहीं आ रही थी। इस माहोल में इब्लीसे लईन एक बूढ़े की सूरत में नुमूदार हुवा। और इन लोगों से कहने लगा कि अगर तुम लोग मेहमानों की आमद से नजात चाहते हो तो इस की येह तदबीर है कि जब भी कोई मेहमान तुम्हारी बस्ती में आए तो तुम लोग ज़बरदस्ती उस के साथ बद फ़े'ली करो। चुनान्चे, सब से पहले इब्लीस खुद एक ख़ूब सूरत लड़के की शक्ल में मेहमान बन कर इस बस्ती में दाख़िल हुवा। और इन लोगों से ख़ूब बद फ़े'ली कराई इस तरह येह फ़े'ले बद इन लोगों ने शैतान से सीखा। फिर रफ़्ता रफ़्ता इस बुरे काम के येह लोग इस क़दर आदी बन गए कि औरतों को छोड़ कर मर्दों से अपनी शहवत पूरी करने लगे।

(روح البیان،ج۳،ص۱۹۷،پ۸،الاعراف:۸۴)

चुनान्चे, हज़रते लूत عَلَيْهِ السَّلَام ने इन लोगों को इस फ़े'ले बद से मन्अ़ करते हुवे इस तरह वा'ज़ फ़रमाया कि

اَتَاْتُوْنَ الْفَاحِشَةَ مَا سَبَقَكُمْ بِهَا مِنْ اَحَدٍ مِّنَ الْعٰلَمِیْنَ﴿۸۰﴾ اِنَّكُمْ لَتَاْتُوْنَ الرِّجَالَ شَهْوَةً مِّنْ دُوْنِ النِّسَآءِؕ بَلْ اَنْتُمْ قَوْمٌ مُّسْرِفُوْنَ﴿۸۱﴾ (پ۸،الاعراف:۸۰،۸۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- अपनी क़ौम से कहा : क्या वोह बेहयाई करते हो जो तुम से पहले जहान में किसी ने न की तुम तो मर्दों के पास शहवत से जाते हो औरतें छोड़ कर बल्कि तुम लोग हद से गुज़र गए।

हज़रते लूत عَلَيْهِ السَّلَام के इस इस्लाही और मुस्लिहाना वा'ज़ को सुन कर इन की क़ौम ने निहायत बे बाकी और इन्तिहाई बे हयाई के साथ क्या कहा? इस को कुरआन की ज़बान से सुनिये :

وَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهٖۤ اِلَّاۤ اَنْ قَالُوْۤا اَخْرِجُوْهُمْ مِّنْ قَرْیَتِكُمْۚ اِنَّهُمْ اُنَاسٌ یَّتَطَهَّرُوْنَ﴿۸۲﴾ (پ۸،الاعراف:۸۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- और उस की क़ौम का कुछ जवाब न था मगर येही कहना कि इन को अपनी बस्ती से निकाल दो येह लोग तो पाकीज़गी चाहते हैं।

जब क़ौमे लूत़ की सरकशी और बद फ़े'ली क़ाबिले हिदायत न रही तो अल्लाह तआ़ला का अ़ज़ाब आ गया। चुनान्चे, ह़ज़रते जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام चन्द फ़िरिश्तों को हमराह ले कर आस्मान से उतर पड़े। फिर येह फ़िरिश्ते मेहमान बन कर ह़ज़रते लूत़ عَلَيْهِ السَّلَام के पास पहुंचे और येह सब फ़िरिश्ते बहुत ही ह़सीन और ख़ूब सूरत लड़कों की शक्ल में थे। इन मेहमानों के हुस्नो जमाल को देख कर और क़ौम की बदकारी का ख़याल कर के ह़ज़रते लूत़ عَلَيْهِ السَّلَام बहुत फ़िक्र मन्द हुवे। थोड़ी देर बा'द क़ौम के बद फ़े'लों ने ह़ज़रते लूत़ عَلَيْهِ السَّلَام के घर का मुह़ासरा कर लिया और उन मेहमानों के साथ बद फ़े'ली के इरादे से दीवार पर चढ़ने लगे। ह़ज़रते लूत़ عَلَيْهِ السَّلَام ने निहायत दिल सोज़ी के साथ इन लोगों को समझाना और इस बुरे काम से मन्अ़ करना शुरूअ़ कर दिया। मगर येह बद फ़े'ल और सरकश क़ौम अपने बे हूदा जवाब और बुरे इक़्दाम से बाज़ न आई। तो आप अपनी तन्हाई और मेहमानों के सामने रुस्वाई से तंग दिल हो कर ग़मगीन व रन्जीदा हो गए। येह मन्ज़र देख कर ह़ज़रते जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام ने फ़रमाया कि ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नबी आप बिल्कुल कोई फ़िक्र न करें। हम लोग अल्लाह तआ़ला के भेजे हुवे फ़िरिश्ते हैं जो इन बदकारों पर अ़ज़ाब ले कर उतरे हैं। लिहाज़ा आप मोअमिनीन और अपने अहलो इयाल को साथ ले कर सुब्ह़ होने से क़ब्ल ही इस बस्ती से दूर निकल जाएं और ख़बरदार कोई शख़्स पीछे मुड़ कर इस बस्ती की त़रफ़ न देखे वरना वोह भी इस अ़ज़ाब में गिरिफ़्तार हो जाएगा। चुनान्चे, ह़ज़रते लूत़ عَلَيْهِ السَّلَام अपने घर वालों और मोअमिनीन को हमराह ले कर बस्ती से बाहर निकल गए। फिर ह़ज़रते जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام इस शहर की पांचों बस्तियों को अपने परों पर उठा कर आस्मान की त़रफ़ बुलन्द हुवे और

कुछ ऊपर जा कर इन बस्तियों को उलट दिया और येह आबादियां ज़मीन पर गिर कर चकना चूर हो कर ज़मीन पर बिखर गईं। फिर कंकर के पथ्थरों का मींह बरसा और इस ज़ोर से संग बारी हुई कि क़ौमे लूत़ के तमाम लोग मर गए और इन की लाशें भी टुकड़े टुकड़े हो कर बिखर गईं। ऐन उस वक़्त जब की येह शहर उलट पलट हो रहा था। ह़ज़रते लूत़ عَلَیْہِ السَّلَام की एक बीवी जिस का नाम "वाइ़ला" था जो दर ह़क़ीक़त मुनाफ़िक़ा थी और क़ौम के बदकारों से मह़ब्बत रखती थी उस ने पीछे मुड़ कर देख लिया और येह कहा कि "हाए रे मेरी क़ौम" येह कह कर खड़ी हो गई फिर अ़ज़ाबे इलाही का एक पथ्थर उस के ऊपर भी गिर पड़ा और वोह भी हलाक हो गई। चुनान्चे, कुरआने मजीद में ह़क़ तआ़ला का इरशाद है कि

فَاَنْجَیْنٰهُ وَ اَهْلَهٗۤ اِلَّا امْرَاَتَهٗ ﳲ كَانَتْ مِنَ الْغٰبِرِیْنَ(۸۳) وَ اَمْطَرْنَا عَلَیْهِمْ مَّطَرًاؕ فَانْظُرْ كَیْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُجْرِمِیْنَ۠(۸۴) (پ۸،الاعراف:۸۳،۸۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- तो हम ने उसे और उस के घर वालों को नजात दी मगर उस की औ़रत वोह रह जाने वालों में हुई और हम ने उन पर एक मींह बरसाया तो देखो कैसा अन्जाम हुवा मुजरिमों का।

जो पथ्थर इस क़ौम पर बरसाए गए वोह कंकरों के टुकड़े थे। और हर पथ्थर पर उस शख़्स का नाम लिखा हुवा था जो उस पथ्थर से हलाक हुवा। (تفسیر الصاوی،ج۲،ص۶۹۱،پ۸،الاعراف:۸۴)

दर्से हिदायत :- इस वाक़िए़ से मा'लूम हुवा कि लिवात़त किस क़दर शदीद और हौलनाक गुनाहे कबीरा है कि इस जुर्म में क़ौमे लूत़ की बस्तियां उलट पलट कर दी गईं और मुजरिमीन पथराव के अ़ज़ाब से मर कर दुन्या से नैस्तो नाबूद हो गए।

मन्क़ूल है कि ह़ज़रते सुलैमान عَلَیْہِ السَّلَام ने एक मरतबा इब्लीसे लईन से पूछा कि अल्लाह तआ़ला को सब से बढ़ कर कौन सा गुनाह नापसन्द है? तो इब्लीस ने कहा कि सब से ज़ियादा अल्लाह तआ़ला

को येह गुनाह नापसन्द है कि मर्द, मर्द से बद फ़े'ली करे और औ़रत, औ़रत से अपनी ख़्वाहिश पूरी करे। और ह़दीष में है कि औ़रत का अपनी फुरुज को दूसरी औ़रत की फुरुज से रगड़ना येह इन दोनों की ज़िनाकारी है जो गुनाहे कबीरा है। (روح البیان،ج۳،ص۱۹۸،پ۸،الاعراف:۸۴)

(लिवात़त की मुमानअ़त का तफ़्सीली बयान हमारी किताब ''जहन्नम के ख़त़रात'' में पढ़िये)

﴾28﴿ सामरी का बछड़ा

फ़िरऔ़न की हलाकत के बा'द बनी इस्राईल इस के पन्जे से आज़ाद हो कर सब ईमान लाए और ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام को ख़ुदावन्दे करीम का येह हुक्म हुवा कि वोह चालीस रातों का कोहे तूर पर ए'तिकाफ़ करें इस के बा'द उन्हें किताब (तौरात) दी जाएगी। चुनान्चे, ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام कोहे तूर पर चले गए और बनी इस्राईल को अपने भाई ह़ज़रते हारून عَلَيْهِ السَّلَام के सिपुर्द कर दिया। आप चालीस दिन तक दिन भर रोज़ादार रह कर सारी रात इ़बादत में मश्ग़ूल रहते।

सामरी :- बनी इस्राईल में एक ह़रामी शख़्स था जिस का नाम सामरी था जो त़बई त़ौर पर निहायत गुमराह और गुमराह कुन आदमी था। इस की मां ने बिरादरी में रुस्वाई व बदनामी के डर से इस को पैदा होते ही पहाड़ के एक ग़ार में छोड़ दिया था और ह़ज़रते जिब्रईल عَلَيْهِ السَّلَام ने इस को अपनी उंगली से दूध पिला पिला कर पाला था। इस लिये येह ह़ज़रते जिब्रईल عَلَيْهِ السَّلَام को पहचानता था। इस का पूरा नाम ''मूसा सामरी'' है और ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام का नाम भी ''मूसा'' है। मूसा सामरी को ह़ज़रते जिब्रईल عَلَيْهِ السَّلَام ने पाला था और ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام की परवरिश फ़िरऔ़न के घर हुई थी। मगर ख़ुदा की शान कि फ़िरऔ़न के घर परवरिश पाने वाले मूसा عَلَيْهِ السَّلَام तो ख़ुदा के रसूल हुवे और ह़ज़रते जिब्रईल عَلَيْهِ السَّلَام का पाला हुवा मूसा सामरी काफ़िर हुवा और बनी इस्राईल को गुमराह कर के उस ने बछड़े की पूजा कराई। इस बारे में किसी आ़रिफ़ ने क्या ख़ूब कहा है :

اِذَاالْمَرْءُ لَمْ يُخْلَقْ سَعِيْدًا مِّنَ الْاَزَلِ
فَقَدْ خَابَ مَنْ رَبّٰى وَخَابَ الْمُؤَمِّلِ
فَمُوْسَى الَّذِیْ رَبَّاہُ جِبْرِيْلُ كَافِرٌ
وَمُوْسَى الَّذِیْ رَبَّاہُ فِرْعَوْنُ مُرْسَلٌ

या'नी जब कोई आदमी अज़ल ही से नेक बख़्त नहीं होता तो वोह भी नामुराद होता है। और उस की परवरिश करने वाले की कोशिश भी नाकाम और नामुराद होती है। देख लो मूसा सामरी जो ह़ज़रते जिब्रईल عَلَيْهِ السَّلَام का पाला हुवा था वोह काफ़िर हुवा और ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام जो फ़िरऔन की परवरिश में रहे वोह ख़ुदा के रसूल हुवे। इस का राज़ येही है कि मूसा सामरी अज़ली शक़ी और पैदाइशी बद बख़्त था तो ह़ज़रते जिब्रईल عَلَيْهِ السَّلَام की तरबियत और परवरिश ने इस को कुछ भी नफ़्अ़ न दिया, और वोह काफ़िर का काफ़िर ही रह गया और ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام चूंकि अज़ली सईद और नेक बख़्त थे इस लिये फ़िरऔन जैसे काफ़िर की परवरिश से भी उन को कोई नुक़्सान नहीं पहुंचा।

(تفسیر الصاوی،ج۱،ص۶۳،پ۱،البقرۃ:۵۱)

जिन दिनों ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام कोहे तूर पर मो'तकिफ़ थे। सामरी ने आप की ग़ैर मौजूदगी को ग़नीमत जाना और येह फ़ितना बरपा कर दिया कि उस ने बनी इस्राईल के सोने चांदी के ज़ेवरात को मांग कर पिघलाया और उस से एक बछड़ा बनाया। और ह़ज़रते जिब्रईल عَلَيْهِ السَّلَام के घोड़े के क़दमों की ख़ाक जो उस के पास मह़फ़ूज़ थी उस ने वोह ख़ाक बछड़े के मुंह में डाल दी तो वोह बछड़ा बोलने लगा। फिर सामरी ने बनी इस्राईल से येह कहा कि ऐ मेरी क़ौम ! ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام कोहे तूर पर ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ के दीदार के लिये तशरीफ़ ले गए हैं। ह़ालांकि तुम्हारा ख़ुदा तो येही बछड़ा है। लिहाज़ा तुम लोग इसी की इ़बादत करो। सामरी की इस तक़रीर से बनी इस्राईल गुमराह हो गए और बारह हज़ार आदमियों के सिवा सारी क़ौम ने चांदी सोने के बछड़े को बोलता देख कर उस को ख़ुदा मान लिया और उस के आगे सर ब सुजूद हो कर उस बछड़े को पूजने लगे।

चुनान्चे, खुदावन्दे कुद्दूस का इरशाद है :

وَاتَّخَذَ قَوْمُ مُوْسٰى مِنْۢ بَعْدِهٖ مِنْ حُلِیِّهِمْ عِجْلًا جَسَدًا لَّهٗ خُوَارٌ (پ۹،الاعراف:۱۴۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- और मूसा के बा'द उस की क़ौम अपने ज़ेवरों से एक बछड़ा बना बैठी, बे जान का धड़, गाए की त़रह़ आवाज़ करता।

जब चालीस दिनों के बा'द ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام खुदा عَزَّوَجَلَّ से हम कलाम हो कर और तौरात शरीफ़ साथ ले कर बस्ती में तशरीफ़ लाए और क़ौम को बछड़ा पूजते हुवे देखा तो आप पर बेह़द ग़ज़ब व जलाल त़ारी हो गया। आप ने जोशे ग़ज़ब में तौरात शरीफ़ को ज़मीन पर डाल दिया और अपने भाई ह़ज़रते हारून عَلَيْهِ السَّلَام की दाढ़ी और सर के बाल पकड़ कर घसीटना और मारना शुरूअ़ कर दिया और फ़रमाने लगे कि क्यूं तुम ने इन लोगों को इस काम से नहीं रोका। ह़ज़रते हारून عَلَيْهِ السَّلَام मा'ज़ेरत करने लगे। जैसा कि कुरआने मजीद में है :

قَالَ ابْنَ اُمَّ اِنَّ الْقَوْمَ اسْتَضْعَفُوْنِیْ وَ كَادُوْا یَقْتُلُوْنَنِیْ ﳲ فَلَا تُشْمِتْ بِیَ الْاَعْدَآءَ وَ لَا تَجْعَلْنِیْ مَعَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِیْنَ ﴿۱۵۰﴾ (پ۹،الاعراف:۱۵۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- कहा : ऐ मेरे मां जाए ! क़ौम ने मुझे कमज़ोर समझा और क़रीब था कि मुझे मार डालें तो मुझ पर दुश्मनों को न हंसा और मुझे ज़ालिमों में न मिला।

ह़ज़रते हारून عَلَيْهِ السَّلَام की मा'ज़ेरत सुन कर ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام का गुस्सा ठन्डा पड़ गया। इस के बा'द आप ने अपने भाई ह़ज़रते हारून عَلَيْهِ السَّلَام के लिये रह़मत व मग़्फ़िरत की दुआ़ मांगी। फिर आपने उस बछड़े को तोड़ फोड़ कर और जला कर और उस को रेज़ा रेज़ा कर के दरिया में बहा दिया।

दर्से हिदायत :- मज़्कूरा बाला कुरआनी वाक़िए़ से ख़ास त़ौर पर दो सबक़ मिलते हैं :

﴾1﴿ इस से उ़-लमाए किराम को येह सबक़ मिलता है कि उ़-लमाए किराम को कभी अपने मज़्हब के अ़वाम की त़रफ़ से ग़ाफ़िल नहीं रहना चाहिये बल्कि हमेशा अ़वाम को मज़्हबी बातें बताते रहना चाहिये। आप

ने देखा कि सामरी ने चालीस दिन ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام की ग़ैर मौजूदगी से फ़ाएदा उठा कर सारी क़ौम को बहका कर गुमराह कर दिया। इसी त़रह़ अगर उ़-लमाए अहले सुन्नत अपनी क़ौम की हिदायत व ख़बरगीरी से ग़ाफ़िल रहेंगे तो बद मज़हबों को मौक़अ़ मिल जाएगा कि इन लोगों को बहका कर गुमराह कर दें।

﴾2﴿ ह़ज़रते जिब्रईल عَلَیْہِ السَّلَام के घोड़े के पाउं की ख़ाक में जब येह अषर था कि बछड़े के मुंह में पड़ते ही बछड़ा बोलने लगा तो इस से मा'लूम हुवा कि **अल्लाह** वालों के क़दमों के नीचे की ख़ाक में भी ख़ैरो बरकत के अषरात हुवा करते हैं। लिहाज़ा ख़ुदा के नेक बन्दों के ग़ुबार आलूद क़दमों को धो कर मकानों में पानी छिड़कना जैसा कि बा'ज़ ख़ुश अ़क़ीदा मुरीदीन का त़रीक़ा है येह कोई लग़्व और बेकार काम नहीं बल्कि इस से फ़ुयूज़ो बरकात और फ़वाइद ह़ासिल होने की उम्मीद है और येह शरअ़न जाइज़ भी है।(واللہ تعالٰی اعلم)

﴾29﴿ सरों के ऊपर पहाड़

ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام ने तौरात शरीफ़ के अह़काम पढ़ कर बनी इस्राईल को सुनाए और फ़रमाया कि तुम लोग इस पर अ़मल करो। जब बनी इस्राईल ने तौरात शरीफ़ के अह़काम को सुना तो एक दम उन्हों ने इन अह़काम को क़बूल करने से ही इन्कार कर दिया। इस सरकशी पर **अल्लाह** तआ़ला का येह ग़ज़ब नाज़िल हुवा कि नागहां कोहे तूर जड़ से उखड़ कर हवा में उड़ता हुवा बनी इस्राईल के सरों के ऊपर हवा में मुअ़ल्लक़ हो गया जो तीन मील लम्बी और तीन मील चोड़ी ज़मीन में डेरे डाले हुवे मुक़ीम थे। जब बनी इस्राईल ने येह देखा की पहाड़ इन के सरों पर लटक रहा है तो सब के सब सजदे में गिर कर अ़हद करने लगे कि हम ने तौरात के सब अह़कामात को क़बूल किया। और हम इन पर अ़मल भी करेंगे। मगर इन लोगों ने सजदे में अपने रुख़सार और बाईं भंऊ को ज़मीन पर रखा और दाहिनी आंख से पहाड़ को देखते रहे कि कहीं हमारे ऊपर गिर तो नहीं रहा है। येही वजह है कि अब भी यहूदी इसी त़रह़ सजदा करते हैं कि बायां रुख़्सार और बायां भंऊ ज़मीन पर

रखते हैं। बहर ह़ाल बनी इस्राईल ने जब तौबा कर ली और तौरात के अह़काम पर अ़मल करने का अ़हद कर लिया तो फिर येह पहाड़ उड़ कर अपनी जगह पर चला गया। क़ुरआने मजीद ने इस वाक़िए़ को चन्द जगहों पर बयान फ़रमाया है मषलन सूरए आ'राफ़ में है कि

وَ اِذْ نَتَقْنَا الْجَبَلَ فَوْقَهُمْ كَاَنَّهٗ ظُلَّةٌ وَّ ظَنُّوْۤا اَنَّهٗ وَاقِعٌۢ بِهِمْۚ خُذُوْا مَاۤ اٰتَیْنٰكُمْ بِقُوَّةٍ وَّ اذْكُرُوْا مَا فِیْهِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ۠ (پ۹،الاعراف:۱۷۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :– और जब हम ने पहाड़ उन पर उठाया गोया वोह साइबान है और समझे कि वोह उन पर गिर पड़ेगा लो जो हम ने तुम्हें दिया ज़ोर से और याद करो जो इस में है कि कहीं तुम परहेज़गार हो।

दर्से हिदायत :– इस वाक़िए़ से मा'लूम हुवा कि नावाक़िफ़ों या सरकशों को किसी नेक काम के करने या अच्छी बात को क़बूल करने पर डरा धमका कर मजबूर करना येह ऐन ह़िक्मत और ख़ुदावन्दे क़ुद्दूस की मुक़द्दस सुन्नत है। (واللہ تعالٰی اعلم)

﴾30﴿ ज़बान लटक कर सीने पर आ गई

बलअ़म बिन बाऊ़रा :– येह शख़्स अपने दौर का बहुत बड़ा आ़लिम और आ़बिदो ज़ाहिद था। और इस को इस्मे आ'ज़म का भी इ़ल्म था। येह अपनी जगह बैठा हुवा अपनी रूह़ानिय्यत से अ़र्शे आ'ज़म को देख लिया करता था। और बहुत ही मुस्तजाबुद्दा'वात था कि इस की दुआ़एं बहुत ज़ियादा मक़्बूल हुवा करती थीं। इस के शागिर्दों की ता'दाद भी बहुत ज़ियादा थी, मश्हूर येह है कि इस की दर्सगाह में त़ालिबे इ़ल्मों की दवातें बारह हज़ार थीं।

जब ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام "क़ौमे जब्बारीन" से जिहाद करने के लिये बनी इस्राईल के लश्करों को ले कर रवाना हुवे तो बलअ़म बिन बाऊ़रा की क़ौम इस के पास घबराई हुई आई और कहा कि ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام बहुत बड़ा और निहायत ही त़ाक़तवर लश्कर ले कर ह़म्ला आवर होने वाले हैं। और वोह येह चाहते हैं कि हम लोगों को हमारी ज़मीनों से निकाल कर येह ज़मीन अपनी क़ौम बनी इस्राईल को दे दें। इस लिये आप ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के लिये ऐसी बद दुआ़ कर दीजिये कि वोह शिकस्त खा कर वापस चले जाएं। आप चूंकि मुस्तजाबुद्दा'वात हैं इस

लिये आप की दुआ़ ज़रूर मक़्बूल हो जाएगी। येह सुन कर बलअ़म बिन बाऊ़रा कांप उठा। और कहने लगा कि तुम्हारा बुरा हो। ख़ुदा की पनाह ! ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के रसूल हैं। और इन के लश्कर में मोमिनों और फ़िरिश्तों की जमाअ़त है इन पर भला मैं कैसे और किस त़रह़ बद दुआ़ कर सकता हूं ? लेकिन इस की क़ौम ने रो रो कर और गिड़ गिड़ा कर इस त़रह़ इसरार किया कि इस ने येह कह दिया कि इस्तिख़ारा कर लेने के बा'द अगर मुझे इजाज़त मिल गई तो बद दुआ़ कर दूंगा। मगर इस्तिख़ारा के बा'द जब इस को बद दुआ़ की इजाज़त नहीं मिली तो इस ने साफ़ साफ़ जवाब दे दिया कि अगर मैं बद दुआ़ करूंगा तो मेरी दुन्या व आख़िरत दोनों बरबाद हो जाएंगी।

इस के बा'द इस की क़ौम ने बहुत से गिरां क़दर हदाया और तह़ाइफ़ इस की ख़िदमत में पेश कर के बे पनाह इस्रार किया। यहां तक कि बलअ़म बिन बाऊ़रा पर ह़िर्स और लालच का भूत सुवार हो गया, और वोह माल के जाल में फंस गया। और अपनी गधी पर सुवार हो कर बद दुआ़ के लिये चल पड़ा। रास्ते में बार बार इस की गधी ठहर जाती और मुंह मोड़ कर भाग जाना चाहती थी। मगर येह उस को मार मार कर आगे बढ़ाता रहा। यहां तक कि गधी को अल्लाह तआ़ला ने गोयाई की त़ाक़त अ़त़ा फ़रमाई। और उस ने कहा कि अफ़्सोस ! ऐ बलअ़म बाऊ़रा तू कहां और किधर जा रहा है ? देख ! मेरे आगे फ़िरिश्ते हैं जो मेरा रास्ता रोकते और मेरा मुंह मोड़ कर मुझे पीछे धकेल रहे हैं। ऐ बलअ़म ! तेरा बुरा हो, क्या तू अल्लाह के नबी और मोअमिनीन की जमाअ़त पर बद दुआ़ करेगा ? गधी की तक़रीर सुन कर भी बलअ़म बिन बाऊ़रा वापस नहीं हुवा। यहां तक कि "ह़सबान" नामी पहाड़ पर चढ़ गया। और बुलन्दी से ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के लश्करों को बग़ौर देखा और मालो दौलत के लालच में उस ने बद दुआ़ शुरूअ़ कर दी। लेकिन ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की शान कि वोह ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के लिये बद दुआ़ करता था। मगर उस की ज़बान पर उस की क़ौम के लिये बद दुआ़ जारी हो जाती थी। येह देख कर कई मरतबा उस की क़ौम ने टोका कि ऐ बलअ़म ! तुम तो

उलटी बद दुआ़ कर रहे हो । तो उस ने कहा कि ऐ मेरी क़ौम ! मैं क्या करूं मैं बोलता कुछ और हूं और मेरी ज़बान से कुछ और ही निकलता है। फिर अचानक उस पर येह ग़ज़बे इलाही नाज़िल हो गया कि नागहां उस की ज़बान लटक कर उस के सीने पर आ गई । उस वक़्त बलअ़म बिन बाऊ़रा ने अपनी क़ौम से रो रो कर कहा कि अफ़्सोस मेरी दुन्या व आख़िरत दोनों बरबाद व ग़ारत हो गईं । मेरा ईमान जाता रहा और मैं क़हरे क़हहार व ग़ज़बे जब्बार में गिरिफ़्तार हो गया। अब मेरी कोई दुआ़ क़बूल नहीं हो सकती। मगर मैं तुम लोगों को मक्र की एक चाल बताता हूं तुम लोग ऐसा करो तो शायद ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام के लश्करों को शिकस्त हो जाए । तुम लोग हज़ारों ख़ूब सूरत लड़कियों को बेहतरीन पोशाक और ज़ेवरात पहना कर बनी इस्राईल के लश्करों में भेज दो । अगर इन का एक आदमी भी ज़िना करेगा तो पूरे लश्कर को शिकस्त हो जाएगी । चुनान्चे, बलअ़म बिन बाऊ़रा की क़ौम ने उस के बताए हुवे मक्र का जाल बिछाया। और बहुत सी ख़ूब सूरत दोशीज़ाओं को बनाव सिंघार करा कर बनी इस्राईल के लश्करों में भेजा । यहां तक कि बनी इस्राईल का एक रईस एक लड़की के हुस्नो जमाल पर फ़रेफ़्ता हो गया और उस को अपनी गोद में उठा कर ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام के सामने गया। और फ़तवा पूछा कि ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नबी ! येह औ़रत मेरे लिये ह़लाल है या नहीं ? आप ने फ़रमाया कि ख़बरदार ! येह तेरे लिये ह़राम है। फ़ौरन इस को अपने से अलग कर दे। और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के अ़ज़ाब से डर। मगर उस रईस पर ग़लबए शहवत का ऐसा ज़बरदस्त भूत सुवार हो गया था कि वोह अपने नबी عَلَیْہِ السَّلَام के फ़रमान को ठुकरा कर उस औ़रत को अपने ख़ैमे में ले गया। और ज़िनाकारी में मश्ग़ूल हो गया। इस गुनाह की नुहूसत का येह अषर हुवा कि बनी इस्राईल के लश्कर में अचानक ताऊ़न (प्लेग) की वबा फैल गई और घन्टे भर में सत्तर हज़ार आदमी मर गए और सारा लश्कर तित्तर बित्तर हो कर नाकाम व नामुराद वापस चला आया । जिस का ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام के क़ल्बे मुबारक पर बहुत ही बड़ा सदमा गुज़रा ।

(تفسیر الصاوی،ج۲،ص۷۲۷،پ۹،الاعراف، ۱۷۵)

बलअ़म बिन बाऊ़रा पहाड़ से उतर कर मर्दूदे बारगाहे इलाही हो गया। आख़िरी दम तक उस की ज़बान उस के सीने पर लटकती रही और वोह बे ईमान हो कर मर गया। इस वाक़िए़ को क़ुरआने करीम ने इन अल्फ़ाज़ में बयान फ़रमाया है।

وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَاَ الَّذِیْۤ اٰتَیْنٰهُ اٰیٰتِنَا فَانْسَلَخَ مِنْهَا فَاَتْبَعَهُ الشَّیْطٰنُ فَكَانَ مِنَ الْغٰوِیْنَ۝۱۷۵ وَ لَوْ شِئْنَا لَرَفَعْنٰهُ بِهَا وَ لٰكِنَّهٗۤ اَخْلَدَ اِلَى الْاَرْضِ وَ اتَّبَعَ هَوٰىهُۚ فَمَثَلُهٗ كَمَثَلِ الْكَلْبِۚ اِنْ تَحْمِلْ عَلَیْهِ یَلْهَثْ اَوْ تَتْرُكْهُ یَلْهَثْؕ ذٰلِكَ مَثَلُ الْقَوْمِ الَّذِیْنَ كَذَّبُوْا بِاٰیٰتِنَاۚ فَاقْصُصِ الْقَصَصَ لَعَلَّهُمْ یَتَفَكَّرُوْنَ۝۱۷۶ (پ۹،الاعراف:۱۷۵،۱۷۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :– और ऐ मह़बूब इन्हें उस का अह़वाल सुनाओ जिसे हम ने अपनी आयतें दीं तो वोह उन से साफ़ निकल गया तो शैत़ान उस के पीछे लगा तो गुमराहों में हो गया। और हम चाहते तो आयतों के सबब उसे उठा लेते मगर वोह तो ज़मीन पकड़ गया और अपनी ख़्वाहिश का ताबेअ़ हुवा तो उस का ह़ाल कुत्ते की त़रह़ है तो उस पर ह़म्ला करे तो ज़बान निकाले और छोड़ दे तो ज़बान निकाले येह ह़ाल है उन का जिन्हों ने हमारी आयतें झुटलाईं तो तुम नसीह़त सुनाओ कि कहीं वोह ध्यान करें।

बलअ़म बिन बाऊ़रा क्यूं ज़लील हुवा ? :– रिवायत है कि बा'ज़ अम्बियाए किराम ने ख़ुदा तआ़ला से दरयाफ़्त किया कि तू ने बलअ़म बिन बाऊ़रा को इतनी ने'मतें अ़त़ा फ़रमा कर फिर इस को क्यूं इस क़ा'रे मज़िल्लत में गिरा दिया ? तो अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि उस ने मेरी ने'मतों का कभी भी शुक्र अदा नहीं किया। अगर वोह शुक्र गुज़ार होता तो मैं उस की करामतों को सल्ब कर के उस को दोनों जहां में इस त़रह़ ज़लीलो ख़्वार और ग़ाइबो ख़ासिर न करता।

(تفسیر روح البیان،ج۳،ص ۱۳۹،پ۸،الاعراف:۱۰)

दर्से हिदायत :– बलअ़म बिन बाऊ़रा की इस सरगुज़िश्त से चन्द अस्बाक़े हिदायत मिलते हैं :

﴿1﴾ इस से उन आ़लिमों और लीडरों को सबक़ ह़ासिल करना चाहिये जो मालदारों या हुकूमतों से रक़में ले कर ख़िलाफ़े शरीअ़त बातें करते हैं और जान बूझ कर अपने दीन व ईमान का सौदा करते हैं। देख लो बलअ़म बिन बाऊ़रा क्या था और क्या हो गया ? येह क्यूं हुवा ? इस लिये और सिर्फ़ इस लिये कि वोह मालो दौलत के लालच में गिरिफ़्तार हो गया और दानिस्ता (जानबूझ कर) अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नबी पर बद दुआ़ करने के लिये तय्यार हो गया। तो इस का उस पर येह वबाल पड़ा कि दुन्या व आख़िरत में मलऊ़न हो कर इस त़रह़ मर्दूद व मत़रूद हो गया कि उ़म्र भर कुत्ते की त़रह़ लटकती हुई ज़बान लिये फिरा और आख़िरत में जहन्नम की भड़कती और शो'ला बार आग का ईंधन बन गया। लिहाज़ा हर मुसलमान ख़ुसूसन उ़-लमा व मशाइख़ को मालो दौलत के ह़िर्स और लालच के जाल से हमेशा परहेज़ करना चाहिये और हरगिज़ कभी भी माल की त़म्अ़ में दीन के अन्दर मुदाहनत नहीं करनी चाहिये। वरना ख़ूब समझ लो कि क़हरे इलाही عَزَّوَجَلَّ की तल्वार लटक रही है। (والعياذ بالله منه)

﴿2﴾ इस सानेह़ा से आ़म मुसलमान भी येह सबक़ सीखें कि ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام का लश्कर जिस में मलाइका और मोअमिनीन थे। ज़ाहिर है कि इस लश्कर के नाकाम होने का कोई सुवाल ही नहीं पैदा होता था क्यूंकि येह ऐसा रूह़ानी और मलकूती लश्कर था कि इन के घोड़ों की टाप से पहाड़ लर्ज़ा बर अन्दाम हो जाते, मगर सिर्फ़ एक बद नसीब के गुनाह के सबब ऐसी नुहूसत फैल गई कि मलाइका लश्कर से अलग हो गए और ताऊ़न के अ़ज़ाब ने पूरे लश्कर में ऐसी अबतरी फैला दी कि पूरा लश्कर बिखर गया और येह फ़ौजे ज़फ़र मौजे नाकाम व ना मुराद हो कर पस्पा हो गई।

इस लिये मुसलमानों को लाज़िम है कि अगर वोह कुफ़्फ़ार के मुक़ाबले में मुज़फ़्फ़र व मन्सूर और फ़त्ह़याब होना चाहते हैं तो हर वक़्त गुनाहों और बदकारियों की नुहूसतों से बचते रहें वरना फ़िरिश्तों की मदद ख़त्म हो जाएगी। और मुसलमानों का रो'ब कुफ़्फ़ार के दिलों से निकल जाएगा और मुसलमानों को न सिर्फ़ नाकामी का मुंह देखना पड़ेगा बल्कि इन की अ़सकरी त़ाक़त ही फ़ना हो जाएगी और पूरी क़ौम सफ़ह़े हस्ती से ह़र्फ़े ग़लत़ की त़रह़ मिट जाएगी। (نعوذبالله منه)

﴾31﴿ हज़रते यूनुस عَلَيْهِ السَّلَام मछली के पेट में

हज़रते युनूस عَلَيْهِ السَّلَام को अल्लाह तआला ने शहर "नैनवा" के बाशिन्दों की हिदायत के लिये रसूल बना कर भेजा था।

नैनवा :- येह मौसुल के अ़लाके़ का एक बड़ा शहर था। यहां के लोग बुत परस्ती करते थे और कुफ्रो शिर्क में मुब्तला थे। हज़रते यूनुस عَلَيْهِ السَّلَام ने इन लोगों को ईमान लाने और बुत परस्ती छोड़ने का हुक्म दिया। मगर इन लोगों ने अपनी सरकशी और तमर्रुद की वजह से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के रसूल عَلَيْهِ السَّلَام को झुटला दिया और ईमान लाने से इन्कार कर दिया। हज़रते यूनुस عَلَيْهِ السَّلَام ने इन्हें ख़बर दी कि तुम लोगों पर अ़न क़रीब अ़ज़ाब आने वाला है। येह सुन कर शहर के लोगों ने आपस में येह मश्वरा किया कि हज़रते यूनुस عَلَيْهِ السَّلَام ने कभी कोई झूटी बात नहीं कही है। इस लिये येह देखो कि अगर वोह रात को इस शहर में रहें जब तो समझ लो कि कोई ख़त़रा नहीं है और अगर उन्हों ने इस शहर में रात न गुज़ारी तो यक़ीन कर लेना चाहिये कि ज़रूर अ़ज़ाब आएगा। रात को लोगों ने येह देखा कि हज़रते यूनुस عَلَيْهِ السَّلَام शहर से बाहर तशरीफ़ ले गए। और वाक़ेई सुब्ह़ होते ही अ़ज़ाब के आषार नज़र आने लगे कि चारों त़रफ़ से काली बदलियां नुमूदार हुईं और हर त़रफ़ से धुवां उठ कर शहर पर छा गया। येह मन्ज़र देख कर शहर के बाशिन्दों को यक़ीन हो गया कि अ़ज़ाब आने वाला ही है तो लोगों को हज़रते यूनुस عَلَيْهِ السَّلَام की तलाश व जुस्त्जू हुई मगर वोह दूर दूर तक कहीं नज़र नहीं आए। अब शहर वालों को और ज़ियादा ख़त़रा और अन्देशा हो गया। चुनान्चे, शहर के तमाम लोग ख़ौफ़े ख़ुदावन्दी से डर कर कांप उठे और सब के सब औ़रतों, बच्चों बल्कि अपने मवेशियों को साथ ले कर और फटे पुराने कपड़े पहन कर रोते हुवे जंगल में निकल गए और रो रो कर सिद्क़ दिल से हज़रते यूनुस عَلَيْهِ السَّلَام पर ईमान लाने का इक़रार व ए'लान करने लगे। शोहर बीवी से और माएं बच्चों से अलग हो कर सब के सब इस्तिग़्फ़ार में मश्ग़ूल हो गए और दरबारे बारी में गिड़ गिड़ा कर गिर्या व ज़ारी शुरूअ़ कर दी। जो मज़ालिम आपस में हुवे थे एक दूसरे से मुआ़फ़ कराने लगे

और जितनी हक़ तलफ़ियां हुई थीं सब की आपस में मुआफ़ी तलाफ़ी करने लगे। ग़रज़ सच्ची तौबा कर के ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ से येह अ़हद कर लिया कि ह़ज़रते यूनुस عَلَيْهِ السَّلَام जो कुछ ख़ुदा का पैग़ाम लाए हैं हम उस पर सिद्क़ दिल से ईमान लाए, अल्लाह तआ़ला को शहर वालों की बे क़रारी और मुख़्लिसाना गिर्या व ज़ारी पर रह़्म आया और अ़ज़ाब उठा लिया गया। नागहां धुवां और अ़ज़ाब की बदलियां रफ़अ़ हो गईं और तमाम लोग फिर शहर में आ कर अम्नो चैन के साथ रहने लगे।

इस वाक़िए को ज़िक्र करते हुवे ख़ुदावन्दे क़ुद्दूस ने क़ुरआने मजीद में यूं इरशाद फ़रमाया है कि

فَلَوْلَا كَانَتْ قَرْيَةٌ اٰمَنَتْ فَنَفَعَهَاۤ اِيْمَانُهَاۤ اِلَّا قَوْمَ يُوْنُسَؕ لَمَّاۤ اٰمَنُوْا كَشَفْنَا عَنْهُمْ عَذَابَ الْخِزْيِ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَمَتَّعْنٰهُمْ اِلٰى حِيْنٍ ﴿۹۸﴾ (پ ۱۱، یونس: ۹۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- तो हुई होती न कोई बस्ती कि ईमान लाती तो उस का ईमान काम आता, हां यूनुस की क़ौम जब ईमान लाए हम ने उन से रुस्वाई का अ़ज़ाब दुन्या की ज़िन्दगी में हटा दिया और एक वक़्त तक उन्हें बरतने दिया।

मत़्लब येह है कि जब किसी क़ौम पर अ़ज़ाब आ जाता है तो अ़ज़ाब आ जाने के बा'द ईमान लाना मुफ़ीद नहीं होता मगर ह़ज़रते यूनुस عَلَيْهِ السَّلَام की क़ौम पर अ़ज़ाब की बदलियां आ जाने के बा'द भी जब वोह लोग ईमान लाए तो उन से अ़ज़ाब उठा लिया गया।

अ़ज़ाब टलने की दुआ़ :- त़बरानी शरीफ़ की रिवायत है कि शहर नैनवा पर जब अ़ज़ाब के आषार ज़ाहिर होने लगे और ह़ज़रते यूनुस عَلَيْهِ السَّلَام बा वुजूदे तलाश व जुस्त्जू के लोगों को नहीं मिले तो शहर वाले घबरा कर अपने एक आ़लिम के पास गए जो साहिबे ईमान और शैख़े वक़्त थे और इन से फ़रियाद करने लगे तो इन्हों ने हुक्म दिया कि तुम लोग येह वज़ीफ़ा पढ़ कर दुआ़ मांगो يَاحَيُّ حِيْنَ لَا حَيَّ وَ يَاحَيُّ يُحْيِ الْمَوْتٰى وَيَاحَيُّ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ चुनान्चे, लोगों ने येह पढ़ कर दुआ़ मांगी तो अ़ज़ाब टल गया। लेकिन

मश्हूर मुहृद्दिष और साहि़बे करामत वली ह़ज़रते फ़ुज़ैल बिन इयाज़ عَلَيْهِ الرَّحْمَة का क़ौल है कि शहरे नैनवा का अ़ज़ाब जिस दुआ़ की बरकत से दफ़्अ़ हुवा वोह दुआ़ येह थी कि

اَللّٰھُمَّ اِنَّ ذُنُوبَنَا قَدْ عَظُمَتْ وَجَلَّتْ وَاَنْتَ اَعْظَمُ وَاَجَلُّ فَافْعَلْ بِنَا مَا اَنْتَ اَھْلُہٗ وَلَا تَفْعَلْ بِنَا مَانَحْنُ اَھْلُہٗ

बहर हा़ल अ़ज़ाब टल जाने के बा'द जब ह़ज़रते यूनुस عَلَيْهِ السَّلَام शहर के क़रीब आए तो आप ने शहर में अ़ज़ाब का कोई अषर नहीं देखा। लोगों ने अ़र्ज़ किया कि आप अपनी क़ौम में तशरीफ़ ले जाइये। तो आप ने फ़रमाया कि किस त़रह़ अपनी क़ौम में जा सकता हूं? मैं तो उन लोगों को अ़ज़ाब की ख़बर दे कर शहर से निकल गया था, मगर अ़ज़ाब नहीं आया। तो अब वोह लोग मुझे झूटा समझ कर क़त्ल कर देंगे। आप येह फ़रमा कर और गुस्से में भर कर शहर से पलट आए और एक कश्ती में सुवार हो गए येह कश्ती जब बीच समुन्दर में पहुंची तो खड़ी हो गई। वहां के लोगों का येह अ़क़ीदा था कि वोही कश्ती समुन्दर में खड़ी हो जाया करती थी जिस कश्ती में कोई भागा हुवा ग़ुलाम सुवार हो जाता है। चुनान्चे, कश्ती वालों ने क़ुरआ़ निकाला तो ह़ज़रते यूनुस عَلَيْهِ السَّلَام के नाम का क़ुरआ़ निकला। तो कश्ती वालों ने आप को समुन्दर में फेंक दिया और कश्ती ले कर रवाना हो गए और फ़ौरन ही एक मछली आप को निगल गई और मछली के पेट में जहां बिल्कुल अन्धेरा था आप मुक़य्यद हो गए। मगर इसी हा़लत में आप ने आयते करीमा لَآ اِلٰہَ اِلَّآ اَنْتَ سُبْحٰنَکَ ٭ اِنِّیْ کُنْتُ مِنَ الظّٰلِمِیْنَ ﴿۸۷﴾ (پ۱۷، الانبیاء:۸۷) का वज़ीफ़ा पढ़ना शुरूअ़ कर दिया तो इस की बरकत से **अल्लाह** तआ़ला ने आप को इस अन्धेरी कोठड़ी से नजात दी और मछली ने किनारे पर आ कर आप को उगल दिया। उस वक़्त आप बहुत ही नह़ीफ़ व कमज़ोर हो चुके थे। ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की शान कि उस जगह कद्दू की एक बेल उग गई और आप उस के साये में आराम करते रहे फिर जब आप में कुछ तुवानाई आ गई तो आप अपनी क़ौम में तशरीफ़ लाए और सब लोग इन्तिहाई मह़ब्बत व एह़तिराम के साथ पेश आ कर आप पर ईमान लाए।

(تفسیر الصاوی، ج۳، ص۸۹۳، پ۱۱، یونس:۹۸)

हज़रते यूनुस عَلَیْهِ السَّلَام की इस दर्दनाक सरगुज़िश्त को क़ुरआने करीम ने इन अल्फ़ाज़ों में बयान फ़रमाया है :

وَ اِنَّ یُوْنُسَ لَمِنَ الْمُرْسَلِیْنَ ﴿۱۳۹﴾ اِذْ اَبَقَ اِلَى الْفُلْكِ الْمَشْحُوْنِ ﴿۱۴۰﴾
فَسَاهَمَ فَكَانَ مِنَ الْمُدْحَضِیْنَ ﴿۱۴۱﴾ فَالْتَقَمَهُ الْحُوْتُ وَ هُوَ مُلِیْمٌ ﴿۱۴۲﴾ فَلَوْ
لَاۤ اَنَّهٗ كَانَ مِنَ الْمُسَبِّحِیْنَ ﴿۱۴۳﴾ لَلَبِثَ فِیْ بَطْنِهٖۤ اِلٰى یَوْمِ یُبْعَثُوْنَ ﴿۱۴۴﴾
فَنَبَذْنٰهُ بِالْعَرَآءِ وَ هُوَ سَقِیْمٌ ﴿۱۴۵﴾ وَ اَنْۢبَتْنَا عَلَیْهِ شَجَرَةً مِّنْ یَّقْطِیْنٍ ﴿۱۴۶﴾
وَ اَرْسَلْنٰهُ اِلٰى مِائَةِ اَلْفٍ اَوْ یَزِیْدُوْنَ ﴿۱۴۷﴾ فَاٰمَنُوْا فَمَتَّعْنٰهُمْ اِلٰى
حِیْنٍ ﴿۱۴۸﴾ (پ۲۳، الصافات:۱۳۹ تا ۱۴۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- और बेशक यूनुस पैग़म्बरों से है जब कि भरी कश्ती की त़रफ़ निकल गया तो क़ुरआ डाला तो धकेले हुओं में हुवा फिर उसे मछली ने निगल लिया और वोह अपने आप को मलामत करता था तो अगर वोह तस्बीह़ करने वाला न होता ज़रूर उस के पेट में रहता जिस दिन तक लोग उठाए जाएंगे फिर हम ने उसे मैदान पर डाल दिया और वोह बीमार था और हम ने उस पर कद्दू का पेड़ उगाया और हम ने उसे लाख आदमियों की त़रफ़ भेजा बल्कि ज़ियादा तो वोह ईमान ले आए तो हम ने उन्हें एक वक़्त तक बरतने दिया।

दर्से हिदायत :- ﴾1﴿ नैनवा वालों की सरगुज़िश्त से येह सबक़ मिलता है कि जब किसी क़ौम पर कोई बला अ़ज़ाब बन कर नाज़िल हो तो उस बला से नजात पाने का येही त़रीक़ा है कि लोगों को तौबा व इस्तिग़फ़ार में मश्ग़ूल हो कर दुआ़एं मांगनी चाहिये तो उम्मीद है कि बन्दों की बे क़रारी और उन की गिर्या व ज़ारी पर अरह़मुर्राह़िमीन रह़म फ़रमा कर बलाओं के अ़ज़ाब को दफ़्अ़ फ़रमा देगा।

﴾2﴿ हज़रते यूनुस عَلَیْهِ السَّلَام की दिल हिला देने वाली मुसीबत और मुश्किलात से येह हिदायत मिलती है कि **अल्लाह** तआ़ला अपने ख़ास बन्दों को किस किस त़रह़ इम्तिह़ान में डालता है। लेकिन जब बन्दे इम्तिह़ान में पड़ कर सब्रो इस्तिक़ामत का दामन नहीं छोड़ते और ऐन बलाओं के तूफ़ान में

भी ख़ुदा की याद से ग़ाफ़िल नहीं होते तो अरह़मुर्राह़िमीन अपने बन्दों की नजात का ग़ैब से ऐसा इन्तिज़ाम फ़रमा देता है कि कोई इस को सोच भी नहीं सकता। ग़ौर कीजिये कि ह़ज़रते यूनुस عَلَيْهِ السَّلَام को जब कश्ती वालों ने समुन्दर में फेंक दिया तो इन की ज़िन्दगी और सलामती का कौन सा ज़रीआ़ बाक़ी रह गया था ? फिर इन्हें मछली ने निगल लिया तो अब भला इन की ह़यात का कौन सा सहारा रह गया था ? मगर इस ह़ालत में आप ने जब आयते करीमा का वज़ीफ़ा पढ़ा तो अल्लाह तआ़ला ने इन्हें मछली के पेट में भी ज़िन्दा व सलामत रखा और मछली के पेट से इन्हें एक मैदान में पहुंचा दिया और फिर इन्हें तन्दुरुस्ती व सलामती के साथ इन की क़ौम और वत़न में पहुंचा दिया। और इन की तब्लीग़ की बदौलत एक लाख से ज़ाइद आदमियों को हिदायत मिल गई।

﴾32﴿ चार महीने के बच्चे की गवाही

ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام को जब इन के भाइयों ने कूंएं में डाल दिया तो एक शख़्स जिस का नाम मालिक बिन ज़ुअ़र था जो मदयन का बाशिन्दा था। एक क़ाफ़िले के हमराह इस कूंएं के पास पहुंचा और अपना डोल कूंएं में डाला तो ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام ने इस डोल को पकड़ लिया और मालिक बिन ज़ुअ़र ने आप को कूंएं में से निकाल लिया तो आप के भाइयों ने उस से कहा कि येह हमारा भागा हुवा ग़ुलाम है। अगर तुम इस को ख़रीद लो तो हम बहुत ही सस्ता तुम्हारे हाथ बेच देंगे। चुनान्चे, उन के भाइयों ने सिर्फ़ बीस दिरहम में ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام को बेच डाला मगर शर्त़ येह लगा दी कि तुम इस को यहां से इतनी दूर ले जाओ कि इस की ख़बर भी हमारे सुनने में न आए। मालिक बिन ज़ुअ़र ने इन को ख़रीद कर मिस्र के बाज़ार का रुख़ किया और बाज़ार में इन को फ़रोख़्त करने का ए'लान किया। उन दिनों मिस्र का बादशाह रय्यान बिन वलीद अ़मलीक़ी था और उस ने अपने वज़ीरे आ'ज़म क़ित़फ़ीर मिस्री को मिस्र की हुकूमत और ख़ज़ाने सोंप दिये थे और मिस्र में लोग इस को "अ़ज़ीज़े मिस्र" के ख़िताब से पुकारते थे। जब अ़ज़ीज़े मिस्र को मा'लूम हुवा कि बाज़ारे मिस्र में एक बहुत ही ख़ूब सूरत ग़ुलाम फ़रोख़्त के लिये लाया

गया है और लोग इस की ख़रीदारी के लिये बड़ी बड़ी रक़में ले कर बाज़ार में जम्अ़ हो गए हैं तो अ़ज़ीज़े मिस्र ने ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام के वज़्न बराबर सोना, और इतनी ही चांदी, और इतना ही मुश्क, और इतने ही ह़रीर क़ीमत दे कर ख़रीद लिया और घर ले जा कर अपनी बीवी "ज़ुलेख़ा" से कहा कि इस ग़ुलाम को निहायत ही ए'ज़ाज़ व इकराम के साथ रखो। उस वक़्त आप की उ़म्र शरीफ़ तेरह या सतरह बरस की थी। "ज़ुलेख़ा" ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام के ह़ुस्नो जमाल पर फ़रेफ़्ता हो गई और एक दिन ख़ूब बनाव सिंघार कर के तमाम दरवाज़ों को बन्द कर दिया और ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام को तन्हाई में लुभाने लगी। आप ने مَعَاذَ الله कह कर फ़रमाया कि मैं अपने मालिक अ़ज़ीज़े मिस्र के एह़सान को फ़रामोश कर के हरगिज़ उस के साथ कोई ख़ियानत नहीं कर सकता। फिर जब ख़ुद ज़ुलेख़ा आप की त़रफ़ लपकी तो आप भाग निकले। और ज़ुलेख़ा ने दौड़ कर पीछे से आप का पैराहन पकड़ लिया जो फट गया और आप के पीछे ज़ुलेख़ा दौड़ती हुई सद्र दरवाज़े पर पहुंच गई। इत्तिफ़ाक़ से ठीक उसी ह़ालत में अ़ज़ीज़े मिस्र मकान में दाख़िल हुवा। और दोनों को दौड़ते हुवे देख लिया तो ज़ुलेख़ा ने अ़ज़ीज़े मिस्र से कहा कि इस ग़ुलाम की सज़ा येह है कि इस को जैल ख़ाने भेज दिया जाए या और कोई दूसरी सख़्त सज़ा दी जाए क्यूंकि इस ने तुम्हारी घरवाली के साथ बुराई का इरादा किया था। (مَعَاذَاللهِ عَزَّوَجَلَّ) ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام ने फ़रमाया कि ऐ अ़ज़ीज़े मिस्र ! येह बिल्कुल ही ग़लत़ बयानी कर रही है। इस ने ख़ुद मुझे लुभाया और मैं इस से बचने के लिये भागा तो इस ने मेरा पीछा किया। अ़ज़ीज़े मिस्र दोनों का बयान सुन कर ह़ैरान रह गया और बोला कि ऐ यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام मैं किस त़रह़ बावर कर लूं कि तुम सच्चे हो ? तो आप ने फ़रमाया कि घर में चार महीने का एक बच्चा पालने में लैटा हुवा है जो ज़ुलेख़ा के मामूं का लड़का है। उस से दरयाफ़्त कर लीजिये कि वाक़िआ़ क्या है ? अ़ज़ीज़े मिस्र ने कहा कि भला चार माह का बच्चा क्या जाने और वोह कैसे बोलेगा ? तो आप ने फ़रमाया कि **अल्लाह**

तआला उस को ज़रूर मेरी बे गुनाही की शहादत देने की कुदरत अता फ़रमाएगा क्यूंकि मैं बे कुसूर हूं। चुनान्चे, अज़ीज़े मिस्र ने जब उस बच्चे से पूछा तो उस बच्चे ने बा आवाज़े बुलन्द फ़सीह ज़बान में येह कहा कि

اِنْ كَانَ قَمِيْصُهٗ قُدَّ مِنْ قُبُلٍ فَصَدَقَتْ وَهُوَ مِنَ الْكٰذِبِيْنَ ﴿۲۶﴾ وَاِنْ كَانَ قَمِيْصُهٗ قُدَّ مِنْ دُبُرٍ فَكَذَبَتْ وَهُوَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿۲۷﴾ (پ۱۲،یوسف:۲۶،۲۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- गवाही दी अगर इन का कुर्ता आगे से चिरा है तो औरत सच्ची है और इन्हों ने ग़लत कहा और अगर इन का कुर्ता पीछे से चाक हुवा तो औरत झूटी है और येह सच्चे।

बच्चे की ज़बान से अज़ीज़े मिस्र ने येह शहादत सुन कर जो देखा तो उन का कुर्ता पीछे से फटा हुवा था। तो उस वक़्त अज़ीज़े मिस्र ने हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام की बे गुनाही का ए'लान करते हुवे येह कहा :

اِنَّهٗ مِنْ كَيْدِكُنَّ ؕ اِنَّ كَيْدَكُنَّ عَظِيْمٌ ﴿۲۸﴾ يُوْسُفُ اَعْرِضْ عَنْ هٰذَا ٜ وَاسْتَغْفِرِيْ لِذَنْۢبِكِ ۚۖ اِنَّكِ كُنْتِ مِنَ الْخٰطِـِٕيْنَ ﴿۲۹﴾ع (پ۱۲،یوسف:۲۸،۲۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- बेशक येह तुम औरतों का चरित्र (फ़रैब) है बेशक तुम्हारा चरित्र (फ़रैब) बड़ा है ऐ यूसुफ़ तुम इस का ख़याल न करो और ऐ औरत तू अपने गुनाह की मुआफ़ी मांग बेशक तू ख़तावारों में है।

﴾33﴿ हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام का कुर्ता

हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام के भाइयों ने जब इन को कूंएं में डाल कर अपने वालिद हज़रते या'कूब عَلَيْهِ السَّلَام से जा कर येह कह दिया कि हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام को भेड़िया खा गया तो हज़रते या'कूब عَلَيْهِ السَّلَام को बे इन्तिहा रंज व क़लक़ और बे पनाह सदमा हुवा। और वोह अपने बेटे के ग़म में बहुत दिनों तक रोते रहे और ब कषरत रोने की वजह से बीनाई कमज़ोर हो गई थी। फिर बरसों के बा'द जब बरादराने यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام क़हत के ज़माने में ग़ल्ला लेने के लिये दूसरी मरतबा मिस्र गए और भाइयों ने आप को पहचान कर इज़्हारे नदामत करते हुवे मुआफ़ी तलब की तो आप

ने उन्हें मुआ़फ़ करते हुवे येह फ़रमाया कि आज तुम पर कोई मलामत नहीं **अल्लाह** तआ़ला तुम्हें मुआ़फ़ फ़रमा दे वोह अरह़मुर्राह़िमीन है।

जब आप ने अपने भाइयों से अपने वालिदे माजिद ह़ज़रते या'क़ूब عَلَيْهِ السَّلَام का ह़ाल पूछा और भाइयों ने बताया कि वोह तो आप की जुदाई में रोते रोते बहुत ही निढाल हो गए हैं। और उन की बीनाई भी बहुत कमज़ोर हो गई है। भाइयों की ज़बानी वालिदे माजिद का ह़ाल सुन कर ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام बहुत ही रन्जीदा और ग़मगीन हो गए फिर आप ने अपने भाइयों से फ़रमाया कि

اِذْهَبُوْا بِقَمِیْصِیْ هٰذَا فَاَلْقُوْهُ عَلٰى وَجْهِ اَبِیْ یَاْتِ بَصِیْرًاۚ وَ اْتُوْنِیْ بِاَهْلِكُمْ اَجْمَعِیْنَ۠ ﴿۹۳﴾ (پ۱۳،یوسف:۹۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- मेरा येह कुर्ता ले जाओ इसे मेरे बाप के मुंह पर डालो उन की आंखें खुल जाएंगी और अपने सब घरभर (घरवालों) को मेरे पास ले आओ।

चुनान्चे, बरादराने यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام इस कुर्ते को ले कर मिस्र से किनआ़न को रवाना हुवे। आप के भाइयों में से यहूदा ने कहा कि इस कुर्ते को मैं ले कर ह़ज़रते या'क़ूब عَلَيْهِ السَّلَام के पास जाऊंगा। क्यूंकि ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام को कूंएं में डाल कर इन का ख़ून आलूद कुर्ता भी मैं ही उन के पास ले कर गया था। और मैं ने ही येह कह कर उन को ग़मगीन किया था कि ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام को भेड़िया खा गया। तो चूंकि मैं ने उन्हें ग़मगीन किया था लिहाज़ा आज मैं ही येह कुर्ता दे कर और ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام की ज़िन्दगी की ख़ुश ख़बरी सुना कर उन को ख़ुश करना चाहता हूं। चुनान्चे, यहूदा इस पैराहन को ले कर अस्सी कोस तक नंगे सर बरहना पा दौड़ता हुवा चला गया। रास्ते की ख़ूराक के लिये सात रोटियां उस के पास थीं मगर फ़र्ते मसर्रत और जल्द पहुंचने के शौक़ में वोह इन रोटियों को भी न खा सका। और जल्द से जल्द सफ़र तै कर के वालिदे मोह़तरम की ख़िदमत में पहुंच गया।

यहूदा जैसे ही कुर्ता ले कर मिस्र से किनआन की त़रफ़ रवाना हुवा। किन्आन में ह़ज़रते या'कूब عَلَيْهِ السَّلَام को ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام की ख़ुश्बू मह़सूस हुई और आप ने अपने पोतों से फ़रमाया कि

اِنِّیْ لَاَجِدُ رِیْحَ یُوْسُفَ لَوْلَاۤ اَنْ تُفَنِّدُوْنِ ﴿۹۴﴾ (پ۱۳، یوسف:۹۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- कहा बेशक मैं यूसुफ़ की ख़ुश्बू पाता हूं अगर मुझे येह न कहो कि सठ (बहक) गया।

आप के पोतों ने जवाब दिया कि ख़ुदा की क़सम आप अब भी अपनी उस पुरानी वारफ़्तगी में पड़े हुवे हैं भला कहां यूसुफ़ हैं और कहां उन की ख़ुश्बू ? लेकिन जब यहूदा कुर्ता ले कर किनआन पहुंचा और जैसे ही कुर्ते को ह़ज़रते या'कूब عَلَيْهِ السَّلَام के चेहरे पर डाला तो फ़ौरन ही उन की आंखों में रोशनी आ गई। चुनान्चे, **अल्लाह** तआ़ला ने कुरआने मजीद में फ़रमाया कि

فَلَمَّاۤ اَنْ جَآءَ الْبَشِیْرُ اَلْقٰىهُ عَلٰى وَجْهِهٖ فَارْتَدَّ بَصِیْرًا ۚ قَالَ اَلَمْ اَقُلْ لَّكُمْ ۚۙ اِنِّیْۤ اَعْلَمُ مِنَ اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿۹۶﴾ (پ۱۳، یوسف:۹۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- फिर जब ख़ुशी सुनाने वाला आया उस ने वोह कुर्ता या'कूब के मुंह पर डाला उसी वक़्त उस की आंखें फिर आईं (रोशन हो गईं) कहा मैं न कहता था कि मुझे **अल्लाह** की वोह शानें मा'लूम हैं जो तुम नहीं जानते।

यहूदा मिस्र से ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام का कुर्ता ले कर जैसे ही किनआन की त़रफ़ चला। ह़ज़रते या'कूब عَلَيْهِ السَّلَام ने किनआन में बैठे हुवे ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام की ख़ुश्बू सूंघ ली। इस बारे में ह़ज़रते शैख़ सा'दी عَلَيْهِ الرَّحْمَة ने एक बड़ी नसीह़त आमोज़ और लज़ीज़ ह़िकायत लिखी है जो बहुत ही दिलकश और निहायत ही कैफ़ आवर है।

ह़िकायत :- یکے پرسید ازاں گم کردہ فرزند   کہ اے عالی گہر! پیر خرد مند

ह़ज़रते या'कूब عَلَيْهِ السَّلَام से जिन के फ़रज़न्द गुम हो गए थे, किसी ने येह पूछा कि ऐ आ़ली ज़ात और बुज़ुर्ग अ़क़्लमन्द

زمصرش بوئے پیراھن شمیدی چرا در چاہِ کنعانش ندیدی

आप ने मिस्र जैसे दूर दराज़ मक़ाम से ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام के कुर्ते की ख़ुश्बू सूंघ ली। और जब ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام किनआ़न ही की सर ज़मीन में एक कूंएं के अन्दर थे तो आप को इतने क़रीब से भी उन की ख़ुश्बू मह़सूस नहीं हुई इस की क्या वजह है? तो ह़ज़रते या'क़ूब عَلَيْهِ السَّلَام ने येह जवाब दिया कि

بگفتا حال ما برق جهان است دمے پیدا و دیگر دم نهان است

گھے برطارمِ اعلیٰ نشینم گھے برپشت پائے خود نہ بینم

या'नी हम **अल्लाह** वालों का ह़ाल कौंदने वाली बिजली की मानिन्द है कि दम भर में ज़ाहिर और दम भर में पोशीदा हो जाती है। कभी तो हम लोगों पर **अल्लाह** तआ़ला की सिफ़ाते नूरानिय्या की तजल्ली होती है तो हम लोग आस्मानों पर जा बैठते हैं और सारी काएनात हमारे पेशे नज़र हो जाती है और कभी जब हम पर इस्तिग़राक़ की कैफ़िय्यत त़ारी होती है तो हम लोग ख़ुदा की ज़ातो सिफ़ात में ऐसे मुस्तग़रक़ हो जाते हैं कि तमाम मासिवा **अल्लाह** से बे नियाज़ हो जाते हैं। यहां तक कि हम अपनी पुश्ते पा को भी नहीं देख पाते। येही वजह है कि मिस्र से तो पैराहने यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام को हम ने सूंघ कर उस की ख़ुश्बू मह़सूस कर ली। क्यूंकि उस वक़्त हम पर कश्फ़ी कैफ़िय्यत त़ारी थी मगर किनआ़न के कूंएं में से हम को ह़ज़रते यूसुफ़ की ख़ुश्बू इस लिये मह़सूस न हो सकी कि उस वक़्त हम पर इस्तिग़राक़ी कैफ़िय्यत का ग़लबा था और हमारा येह ह़ाल था कि

मैं किस की लूं ख़बर, मुझे तो अपनी ख़बर नहीं !

दर्से हिदायत :- इस पूरे वाक़िए़ से ख़ास त़ौर पर दो सबक़ मिलते हैं :

﴾1﴿ येह कि अल्लाह वालों के लिबास और कपड़ों में भी बड़ी बरकत और करामत पिन्हां होती है। लिहाज़ा बुज़ुर्गों के लिबास व पोशाक को

तबर्रुक बना कर रखना और इन से बरकत व शिफ़ा ह़ासिल करना और इन को खुदावन्दे कुद्दूस की बारगाह में वसीला बना कर दुआ़ मांगना येह मक़्बूलिय्यत और हुसूले सआ़दत का एक बहुत बड़ा ज़रीआ़ है।

﴾2﴿ अल्लाह वालों का ह़ाल हर वक़्त और हमेशा यक्सां ही नहीं रहता बल्कि कभी तो उन पर **अल्लाह** तआ़ला की तजल्लियात के अन्वार से ऐसा ह़ाल त़ारी होता है कि इस वक़्त वोह सारे आ़लम के ज़र्रे ज़र्रे को देखने लगते हैं और कभी वोह **अल्लाह** तआ़ला की तजल्लियात में इस त़रह़ गुम हो जाते हैं कि तजल्लियों के मुशाहदे में मुस्तग़रक़ हो कर सारे आ़लम से बे तवज्जोह हो जाते हैं। इस वक़्त उन पर ऐसी कैफ़िय्यत त़ारी हो जाती है कि उन को कुछ भी नज़र नहीं आता। यहां तक कि वोह अपना नाम तक भूल जाते हैं। तसव्वुफ़ की येह दो कशफ़ी व इस्तिग़राक़ी कैफ़िय्यत ऐसी हैं जिन को हर शख़्स नहीं समझ सकता बल्कि इन कैफ़िय्यात व अह़वाल को वोही लोग समझ सकते हैं जो साह़िबे निस्बत व अहले इदराक हैं जिन पर खुद येह अह़वाल व कैफ़िय्यात त़ारी होती रहती हैं। सच है

لذتِ مے نہ شناسی بخدا تا نہ چشی

और इस ह़ाल व कैफ़िय्यत का त़ारी होना इस बात पर मौक़ूफ़ है कि ज़िक्रो फ़िक्र और मुराक़बे के साथ साथ शैख़े कामिल की बात़िनी तवज्जोह से दिल की सफ़ाई और इन्जलाए क़ल्बी पैदा हो जाए। सुल्त़ाने तसव्वुफ़ ह़ज़रते मौलाना रूमी عَلَيْهِ الرَّحْمَة ने इसी नुक्ते की त़रफ़ इशारा करते हुवे फ़रमाया :

صد کتاب و صدورق در نار کُن　　　روئے دل را جانب دلدار کُن

और किसी दूसरे आ़रिफ़ ने येह फ़रमाया कि :

از ''کنز'' و ''ھدایہ'' نہ تواں یافت خدارا

سی پارۂ دل خواں کہ کتابے بہ ازیں نیست

या'नी ख़ाली ''कन्ज़ुल दक़ाइक़'' व ''हिदाया'' पढ़ लेने से खुदा नहीं मिल सकता बल्कि दिल के सिपारे को पढ़ो क्यूंकि इस से बेहतर कोई किताब नहीं है।

मगर इस दौरे नफ़्सानिय्यत में जब कि तसव्वुफ़ के अ़लम बरदारों ने अपनी बे अ़मली से तसव्वुफ़ के मज़बूत़ व मुस्तह़्कम मह़ल की ईंट से ईंट बजा दी है और मह़्ज़ झाड़ फूंक और शो'बदा बाज़ियों पर पीरी मुरीदी का ढोंग चला रहे हैं और ख़ाली रंग बिरंग के कपड़ों और नई नई तराश ख़राश की पोशाकों और तस्बीह़ व अ़सा को शैख़िय्यत का मे'यार बना रखा है। भला तसव्वुफ़ की ह़क़ीक़ी कैफ़िय्यात व तजल्लियात को लोग कब और कैसे और कहां से समझ सकते हैं ? इस लिये इस बारे में अरबाबे तसव्वुफ़ इस के सिवा और क्या कह सकते हैं कि

ह़क़ीक़त ख़ुराफ़ात में खो गई   येह उम्मत रिवायात में खो गई

﴾34﴿ सूरए यूसुफ़ का ख़ुलासा

अल्लाह तआ़ला ने ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام के क़िस्से को "अह़सनुल क़सस" या'नी तमाम क़िस्सों में सब से अच्छा क़िस्सा फ़रमाया है। इस लिये कि ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام की मुक़द्दस ज़िन्दगी के उतार चढ़ाव में और रंज व राह़त और ग़म व सुरूर के मद्दो जज़्र में हर एक वाक़िआ़ बड़ी बड़ी इ़ब्रतों और नसीह़तों के सामान अपने दामन में लिये हुवे है इस लिये हम इस क़िस्सए अ़जीबिय्या का ख़ुलासा तह़रीर करते हैं। ताकि नाज़िरीन इस से इ़ब्रत ह़ासिल करें और ख़ुदावन्दे क़ुद्दूस की क़ुदरतों का मुशाहदा करें।

ह़ज़रते या'क़ूब बिन इस्ह़ाक़ बिन इब्राहीम (عَلَيْهِمُ السَّلَام) के बारह बेटे थे जिन के नाम येह हैं :

(1) यहूदा (2) रोबील (3) शमऊ़न (4) लावी (5) ज़बूलून (6) यसजर (7) दान (8) नफ़्ताई (9) जाद (10) आशर (11) यूसुफ़ (12) बन्यामैन

ह़ज़रते बिन्यामीन ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام के ह़क़ीक़ी भाई थे। बाक़ी दूसरी माओं से थे। ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام अपने तमाम भाइयों में सब से ज़ियादा अपने बाप के प्यारे थे और चूंकि इन की पेशानी पर नबुव्वत के निशान दरख़्शां थे इस लिये ह़ज़रते या'क़ूब عَلَيْهِ السَّلَام इन का बेह़द इकराम

और इन से इन्तिहाई महब्बत फ़रमाते थे। सात बरस की उम्र में हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام ने येह ख़्वाब देखा कि ग्यारह सितारे और चांद व सूरज इन को सजदा कर रहे हैं। हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام ने जब अपना येह ख़्वाब अपने वालिदे माजिद हज़रते या'कूब عَلَيْهِ السَّلَام को सुनाया तो आप ने इन को मन्अ़ फ़रमा दिया कि प्यारे बेटे ! ख़बर दार ! तुम अपना येह ख़्वाब अपने भाइयों से मत बयान कर देना वरना वोह लोग जज़्बए ह़सद में तुम्हारे ख़िलाफ़ कोई ख़ुफ़्या चाल चल देंगे। चुनान्चे, ऐसा ही हुवा कि इन के भाइयों को इन से ह़सद होने लगा। यहां तक कि सब भाइयों ने आपस में मश्वरा कर के येह मन्सूबा तय्यार कर लिया कि इन को किसी त़रह़ घर से ले जा कर जंगल के कूंएं में डाल दें। इस मन्सूबे की तक्मील के लिये सब भाई जम्अ़ हो कर ह़ज़रते या'कूब عَلَيْهِ السَّلَام के पास गए। और बहुत इस्रार कर के शिकार और तफ़रीह़ का बहाना बना कर इन को जंगल में ले जाने की इजाज़त ह़ासिल कर ली। और इन को घर से कन्धों पर बिठा कर ले चले। लेकिन जंगल में पहुंच कर दुश्मनी के जोश में इन को ज़मीन पर पटख़ दिया। और सब ने बहुत ज़ियादा मारा। फिर इन का कुर्ता उतार कर और हाथ पाउं बांध कर एक गहरे और अन्धेरे कूंएं में गिरा दिया। लेकिन फ़ौरन ही ह़ज़रते जिब्रईल عَلَيْهِ السَّلَام ने कूंएं में तशरीफ़ ला कर इन को ग़र्क़ होने से इस त़रह़ बचा लिया कि इन को एक पथ्थर पर बिठा दिया जो इस कूंएं में था। और हाथ पाउं खोल कर तसल्ली देते हुवे इन का ख़ौफ़ो हरास दूर कर दिया। और घर से चलते वक़्त ह़ज़रते या'कूब عَلَيْهِ السَّلَام ने ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام का जो कुर्ता ता'वीज़ बना कर आप के गले में डाल दिया था वोह निकाल कर इन को पहना दिया जिस से उस अन्धेरे कूंएं में रोशनी हो गई।

ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام के भाई आप को कूंएं में डाल कर और आप के पैराहन को एक बकरी के ख़ून में लत पत कर के अपने घर को रवाना हो गए और मकान के बाहर ही से चीख़ें मार कर रोने लगे। ह़ज़रते या'कूब عَلَيْهِ السَّلَام घबरा कर घर से बाहर निकले। और रोने का सबब पूछा कि तुम लोग क्यूं रो रहे हो ? क्या तुम्हारी बकरियों को कोई नुक़्सान पहुंच

गया है ? फिर ह़ज़रते या'कू़ब عَلَیْہِ السَّلَام ने दरयाफ़्त फ़रमाया कि मेरा यूसुफ़ कहां है ? मैं उस को नहीं देख रहा हूं। तो भाइयों ने रोते हुवे कहा कि हम लोग खेल में दौड़ते हुवे दूर निकल गए और यूसुफ़ عَلَیْہِ السَّلَام को अपने सामान के पास बिठा कर चले गए तो एक भेडिया आया और वोह उन को फाड़ कर खा गया। और येह उन का कुर्ता है। उन लोगों ने कुर्ते में ख़ून तो लगा लिया था लेकिन कुर्ते को फाड़ना भूल गए थे। ह़ज़रते या'कू़ब عَلَیْہِ السَّلَام ने अश्क बार हो कर अपने नूरे नज़र के कुर्ते को जब हाथ में ले कर ग़ौर से देखा तो कुर्ता बिल्कुल सलामत है और कहीं से भी फटा नहीं है तो आप उन लोगों के मक्र और झूट को भांप गए। और फ़रमाया कि बड़ा होशियार और सियाना भेड़िया था कि मेरे यूसुफ़ को तो फाड़ कर खा गया मगर उन के कुर्ते पर एक ज़रा सी ख़राश भी नहीं आई और आप ने साफ़ साफ़ फ़रमा दिया कि येह सब तुम लोगों की कारस्तानी और मक्रो फ़रैब है। फिर आप ने दुखे हुवे दिल से निहायत दर्द भरी आवाज़ में फ़रमाया :

فَصَبْرٌ جَمِیْلٌ ؕ وَ اللّٰهُ الْمُسْتَعَانُ عَلٰى مَا تَصِفُوْنَ ﴿۱۸﴾ (پ۱۲،یوسف:۱۸)

ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَیْہِ السَّلَام तीन दिन उस कूंएं में तशरीफ़ फ़रमा रहे। येह कूंआं खारी था। मगर आप की बरकत से इस का पानी बहुत लज़ीज़ और निहायत शीरीं हो गया। इत्तिफ़ाक़ से एक क़ाफ़िला मदयन से मिस्र जा रहा था। जब क़ाफ़िले का एक आदमी जिस का नाम मालिक बिन ज़ुअ़र खुज़ाई था, पानी भरने के लिये आया और कूंएं में डोल डाला तो ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَیْہِ السَّلَام डोल पकड़ कर लटक गए मालिक बिन ज़ुअ़र ने डोल खींचा तो आप कूंएं से बाहर निकल आए। जब उस ने आप के ह़ुस्नो जमाल को देखा तो یٰبُشْرٰی هٰذَا غُلٰمٌ ؕ कह कर अपने साथियों को ख़ुश ख़बरी सुना ने लगा। ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَیْہِ السَّلَام के भाई जो इस जंगल में रोज़ाना बकरियां चराया करते थे, बराबर रोज़ाना कूंएं में झांक झांक कर देखा करते थे। जब इन लोगों ने आप को कूंएं में नहीं देखा तो तलाश करते हुवे क़ाफ़िले में पहुंचे और आप को देख कर कहने लगे कि येह तो हमारा भागा हुवा ग़ुलाम है जो बिल्कुल ही नाकारा और नाफ़रमान है। येह किसी काम का नहीं है। अगर तुम लोग इस को ख़रीदो तो हम बहुत

ही सस्ता तुम्हारे हाथ फ़रोख़्त कर देंगे मगर शर्त् येह है कि तुम लोग इस को यहां से इतनी दूर ले जा कर फ़रोख़्त करना कि यहां तक इस की ख़बर न पहुंचे। हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام भाइयों के ख़ौफ़ से ख़ामोश खड़े रहे और एक लफ़्ज़ भी न बोले। फिर इन के भाइयों ने इन को मालिक बिन जुअ़र के हाथ सिर्फ़ बीस दिरहमों में फ़रोख़्त कर दिया।

मालिक बिन जुअ़र इन को ख़रीद कर मिस्र के बाज़ार में ले गया। और वहां अ़ज़ीज़े मिस्र ने इन को बहुत गिरां क़ीमत दे कर ख़रीद लिया और अपने शाही महल में ले जा कर अपनी मलिका "ज़ुलेख़ा" से कहा कि तुम इस गुलाम को निहायत ए'ज़ाज़ व इकराम के साथ अपनी ख़िदमत में रखो। चुनान्चे, आप अ़ज़ीज़े मिस्र के शाही महल में रहने लगे। और मलिका ज़ुलेख़ा इन से बहुत महब्बत करने लगी बल्कि इन के हुस्नो जमाल पर फ़रेफ़्ता हो कर आ़शिक़ हो गई और उस का जोशे इ़श्क़ यहां तक बढ़ा कि एक दिन "ज़ुलेख़ा" इ़श्क़ो महब्बत में वालिहाना तौर पर आप को फुसलाने और लुभाने लगी। और आप को हम बिस्तरी की दा'वत देने लगी। आप ने مَعَاذَاللّٰه कह कर इन्कार फ़रमा दिया। और साफ़ कह दिया कि मैं अपने मालिक अ़ज़ीज़े मिस्र के साथ ख़ियानत कर के उस के एहसानों की नाशुक्री नहीं कर सकता। और आप घर में से भाग निकले। तो मलिका ज़ुलेख़ा ने दौड़ कर पीछे से आप का पैराहन पकड़ लिया। और आप का पैराहन पीछे से फट गया। ऐन इसी हालत में अ़ज़ीज़े मिस्र मकान में आ गए और दोनों को देख लिया। तो ज़ुलेख़ा ने आप पर तोहमत लगा दी। अ़ज़ीज़े मिस्र हैरान हो गया कि इन दोनों में से कौन सच्चा है? इत्तिफ़ाक़ से मकान में एक चार माह का बच्चा पालने में लैटा हुवा था। उस ने शहादत दी कि अगर कुर्ता आगे से फटा हो तो यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام क़ुसूरवार हैं और अगर कुर्ता पीछे से फटा हो तो ज़ुलेख़ा की ख़ता है और यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام बे क़ुसूर हैं। जब अ़ज़ीज़े मिस्र ने देखा तो कुर्ता पीछे से फटा हुवा था। फ़ौरन अ़ज़ीज़े मिस्र ने ज़ुलेख़ा को ख़ताकार क़रार दे कर डांटा और हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام से येह कहा कि इस का ख़याल व मलाल न कीजिये। फिर ज़ुलेख़ा के मशवरे से अ़ज़ीज़े मिस्र ने

यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام को क़ैद ख़ाने में भिजवा दिया। इस त़रह़ अचानक ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام अज़ीज़े मिस्र के शाही मह़ल से निकल कर जेल ख़ाने की कोठरी में चले गए। और आप ने जेल में पहुंच कर येह कहा कि ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ येह क़ैद ख़ाने की कोठरी मुझ को इस बला से ज़ियादा मह़बूब है जिस की त़रफ़ ज़ुलेख़ा मुझे बुला रही थी। फिर आप सात बरस या बारह बरस जेल ख़ाने में रहे और क़ैदियों को तौह़ीद और आ'माले सालेह़ा की दा'वत देते और वा'ज़ फ़रमाते रहे।

येह अ़जीब इत्तिफ़ाक़ कि जिस दिन आप क़ैद ख़ाने में दाख़िल हुवे उसी दिन आप के साथ बादशाहे मिस्र के दो ख़ादिम एक शराब पिलाने वाला, दूसरा बावरची दोनों जेल ख़ाने में दाख़िल हुवे और दोनों ने अपना एक एक ख़्वाब ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام से बयान किया और आप ने उन दोनों के ख़्वाबों की ता'बीर बयान फ़रमा दी जो सो फ़ीसदी सह़ीह़ षाबित हुई। इस लिये आप का नाम मुअ़ब्बर (ता'बीर देने वाला) होना मश्हूर हो गया।

इसी दौरान मिस्र के बादशाहे आ'ज़म रय्यान बिन वलीद ने येह ख़्वाब देखा कि सात फ़र्बा गायों को सात दुब्ली गाएं खा रही हैं और सात हरी बालियां हैं और सात सूखी बालियां हैं। बादशाहे आ'ज़म ने अपने दरबारियों से इस ख़्वाब की ता'बीर दरयाफ़्त की तो लोगों ने इस ख़्वाब को ख़्वाबे परेशां कह कर इस की कोई ता'बीर नहीं बताई। इतने में बादशाह का साक़ी जो क़ैद ख़ाने से रिहा हो कर आ गया था, उस ने कहा कि मुझे इस ख़्वाब की ता'बीर मा'लूम करने के लिये जेल ख़ाने में जाने की इजाज़त दी जाए। चुनान्चे, येह बादशाह का फ़िरस्तादा हो कर क़ैद ख़ाने में ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام के पास गया और बादशाह का ख़्वाब बयान कर के ता'बीर दरयाफ़्त की, कि सात दुब्ली गाएं सात मोटी गायों को खा रही हैं और सात हरी बालियां हैं और सात सूखी। ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام ने फ़रमाया कि सात बरस मुसलसल खेती करो और उन के अनाजों को बालियों में मह़फ़ूज़ रखो। फिर सात बरस तक सख़्त ख़ुश्क साली रहेगी, क़ह़त़ के इन सात बरसों में पहले सात बरसों का मह़फ़ूज़ किया हुवा अनाज लोग खाएंगे इस के बा'द फिर हरयाली का साल आएगा।

क़ासिद ने वापस जा कर बादशाह से उस के ख़्वाब की ता'बीर बताई तो बादशाह ने हुक्म दिया कि ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام को जेल ख़ाने से निकाल कर मेरे दरबार में लाओ। क़ासिद रिहाई का परवाना ले कर जेल ख़ाने में पहुंचा तो आप ने फ़रमाया कि पहले ज़ुलेख़ा और दूसरी औ़रतों के ज़रीए़ मेरी बे गुनाही और पाक दामनी का इज़्हार करा लिया जाए इस के बा'द ही मैं जेल से बाहर निकलूंगा। चुनान्चे, बादशाह ने इस की तह़क़ीक़ कराई तो तह़क़ीक़ात के दौरान ज़ुलेख़ा ने इक़रार कर लिया कि मैं ने ख़ुद ही ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام को फुसलाया था। ख़त़ा मेरी है। ह़ज़रते यूसुफ़ सच्चे और पाक दामन हैं। इस के बा'द बादशाह ने ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام को दरबार में बुला कर कह दिया कि आप हमारे मो'तमद और हमारे दरबार के मुअ़ज़्ज़ज़ हैं। ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام ने कहा कि आप ज़मीन के ख़ज़ानों के इन्तिज़ामी उमूर और ह़िफ़ाज़ती निज़ाम के इन्तिज़ाम पर मेरा तक़र्रुर कर दें। मैं पूरे निज़ाम को संभाल लूंगा। बादशाह ने ख़ज़ाने का इन्तिज़ामी मुआ़मला और मुल्क के निज़ाम व इन्सिराम का पूरा शो'बा आप के सिपुर्द कर दिया। इस त़रह़ मुल्के मिस्र की हुक्मरानी का इक़्तिदार आप को मिल गया।

इस के बा'द आप ने ख़ज़ानों का निज़ाम अपने हाथ में ले कर सात साल तक खेती का प्लान चलाया और अनाजों को बालियों में मह़फ़ूज़ रखा। यहां तक कि क़ह़त़ और ख़ुश्क साली का ज़ोर शुरूअ़ हो गया तो पूरी सल्त़नत के लोग ग़ल्ले की ख़रीदारी के लिये मिस्र आना शुरूअ़ हो गए और आप ने ग़ल्लों की फ़रोख़्त शुरूअ़ कर दी।

इसी सिलसिले में आप के भाई किन्आ़न से मिस्र आए। ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام ने तो इन लोगों को देखते ही पहली नज़र में पहचान लिया मगर आप के भाइयों ने आप को बिल्कुल ही नहीं पहचाना। आप ने इन लोगों को ग़ल्ला दे दिया और फिर फ़रमाया कि तुम्हारा एक भाई (बिन्यामीन) है आइन्दा उस को भी साथ ले कर आना। अगर तुम लोग आइन्दा उस को न लाए तो तुम्हें ग़ल्ला नहीं मिलेगा।

भाइयों ने जवाब दिया कि हम उस के वालिद को रिज़ामन्द करने की कोशिश करेंगे फिर ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام ने अपने ग़ुलामों से कहा कि तुम लोग इन की नक़्दियों को इन की बोरियों में डाल दो ताकि येह लोग जब अपने घर पहुंच कर इन नक़्दियों को देखेंगे तो उम्मीद है कि ज़रूर येह लोग वापस आएंगे। चुनान्चे, जब येह लोग अपने वालिद के पास पहुंचे तो कहने लगे कि अब्बा जान ! अब क्या होगा ? अ़ज़ीज़े मिस्र ने तो येह कह दिया है कि जब तक तुम लोग "बिन्यामीन" को साथ ले कर न आओगे तुम्हें ग़ल्ला नहीं मिलेगा। लिहाज़ा आप "बिन्यामीन" को हमारे साथ भेज दें ताकि हम इन के ह़िस्से का भी ग़ल्ला ले लें। और आप इत़्मीनान रखें कि हम लोग इन की ह़िफ़ाज़त करेंगे। इस के बा'द जब इन लोगों ने अपनी बोरियों को खोला तो ह़ैरान रह गए कि इन की रक़्में और नक़्दियां इन की बोरियों में मौजूद थीं। येह देख कर बरादराने यूसुफ़ ने फिर अपने वालिद से कहा कि अब्बा जान ! इस से बढ़ कर अच्छा सुलूक और क्या चाहिये ? देख लीजिये अ़ज़ीज़े मिस्र ने हम को पूरा पूरा ग़ल्ला भी दिया है और हमारी नक़्दियों को भी वापस कर दिया है लिहाज़ा आप बिला ख़ौफ़ो ख़त़र हमारे भाई "बिन्यामीन" को हमारे साथ भेज दें।

ह़ज़रते या'क़ूब عَلَيْهِ السَّلَام ने फ़रमाया कि मैं एक मरतबा "यूसुफ़" के मुआ़मले में तुम लोगों पर भरोसा कर चुका हूं तो तुम लोगों ने क्या कर डाला, अब दोबारा मैं तुम लोगों पर कैसे भरोसा कर लूं ? मैं इस त़रह़ "बिन्यामीन" को हरगिज़ तुम लोगों के साथ नहीं भेजूंगा। लेकिन हां अगर तुम लोग ह़लफ़ उठा कर मेरे सामने अ़हद करो तो अलबत्ता मैं इस को भेज सकता हूं। येह सुन कर सब भाइयों ने ह़लफ़ ले कर अ़हद किया और आप ने इन लोगों के साथ "बिन्यामीन" को भेज दिया।

जब येह लोग अ़ज़ीज़े मिस्र के दरबार में पहुंचे तो ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام ने अपने भाई "बिन्यामीन" को अपनी मस्नद पर बिठा लिया। और चुपके से इन के कान में कह दिया कि मैं तुम्हारा भाई "यूसुफ़" हूं। लिहाज़ा तुम कोई फ़िक्र व ग़म न करो। फिर आप ने सब को अनाज दिया और सब ने अपनी अपनी बोरियों को संभाल लिया। जब सब चलने लगे

तो आप ने "बिन्यामीन" को अपने पास रोक लिया। अब बरादराने यूसुफ़ सख़्त परेशान हुवे। अपने वालिद के रू बरू येह अ़हद कर के आए थे कि हम अपनी जान पर खेल कर बिन्यामीन की हिफ़ाज़त करेंगे और यहां "बिन्यामीन" इन के हाथ से छीन लिये गए। अब घर जाएं तो क्यूंकर और यहां ठहरें तो कैसे ? येह मुआ़मला देख कर सब से बड़ा भाई "यहूदा" कहने लगा कि ऐ मेरे भाइयो ! सोचो कि तुम लोग वालिद साहिब को क्या क्या अ़हदो पैमान दे कर आए हो ? और इस से पहले तुम अपने भाई यूसुफ़ के साथ कितनी बड़ी तक़्सीर कर चुके हो। लिहाज़ा मैं तो जब तक वालिद साहिब हुक्म न दें इस ज़मीन से हट नहीं सकता। हां तुम लोग घर जाओ और वालिद साहिब से सारा माजरा अ़र्ज़ कर दो। चुनान्चे, यहूदा के सिवा दूसरे सब भाई लौट कर घर आए और अपने वालिद से सारा हाल बयान किया। तो ह़ज़रते या'क़ूब عَلَيْهِ السَّلَام ने फ़रमाया कि यूसुफ़ की त़रह़ बिन्यामीन के मुआ़मले में भी तुम लोगों ने ह़ीला साज़ी की है। तो ख़ैर, मैं सब्र करता हूं और सब्र बहुत अच्छी चीज़ है। फिर आप ने मुंह फेर कर रोना शुरूअ़ कर दिया। और कहा कि हाए अफ़्सोस ! और ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام को याद कर के इतना रोए कि शिद्दते ग़म से निढाल हो गए और रोते रोते आंखें सफ़ेद हो गईं। आप की ज़बान से यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام का नाम सुन कर ह़ज़रते या'क़ूब عَلَيْهِ السَّلَام से इन के बेटों पोतों ने कहा कि अब्बा जान !आप हमेशा यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام को याद करते रहेंगे यहां तक कि लबे गोर हो जाएं या जान से गुज़र जाएं। अपने बेटों पोतों की बात सुन कर आप ने फ़रमाया कि मैं अपने ग़म और परेशानी की फ़रियाद अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ही से करता हूं और मैं जो कुछ जानता हूं वोह तुम लोगों को मा'लूम नहीं। ऐ मेरे बेटो ! तुम लोग जाओ। और यूसुफ़ और उस के भाई "बिन्यामीन" को तलाश करो। और ख़ुदा की रह़मत से मायूस मत हो जाओ क्यूंकि ख़ुदा की रह़मत से मायूस हो जाना काफ़िरों का काम है।

चुनान्चे, बरादराने यूसुफ़ फिर मिस्र को रवाना हुवे और जा कर अ़ज़ीज़े मिस्र से कहा कि ऐ अ़ज़ीज़े मिस्र ! हमारे घर वालों को बहुत बड़ी मुसीबत पहुंच गई है और हम चन्द खोटे सिक्के ले कर आए हैं।

लिहाज़ा आप बतौरे ख़ैरात के कुछ गल्ला दे दीजिये अपने भाइयों की ज़बान से घर की दास्तान और ख़ैरात का लफ्ज़ सुन कर ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام पर रिक्क़त त़ारी हो गई और आप ने भाइयों से पूछा कि तुम लोगों को याद है कि तुम लोगों ने यूसुफ़ और उस के भाई बिन्यामीन के साथ क्या क्या सुलूक किया है ? येह सुन कर भाइयों ने हैरान हो कर पूछा कि सच मुच आप यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام ही हैं ? तो आप ने फ़रमाया कि हां। मैं ही यूसुफ़ हूं। और बिन्यामीन मेरा भाई है। अल्लाह तआला ने हम पर बड़ा फ़ज़्लो एहसान फ़रमाया है। येह सुन कर भाइयों ने निहायत शर्मिन्दगी और लजाजत के साथ कहना शुरूअ़ किया कि बिला शुबा हम लोग वाक़ेई बड़े ख़त़ाकार हैं और अल्लाह तआला ने आप को हम लोगों पर बहुत फ़ज़ीलत बख़्शी है। भाइयों की शर्मिन्दगी और लजाजत से मुतअष्षिर हो कर आप का दिल भर आया और आप ने फ़रमाया कि आज मैं तुम लोगों को मलामत नहीं करूंगा। जाओ मैं ने सब कुछ मुआफ़ कर दिया। अल्लाह तआला तुम्हें मुआफ़ फ़रमाए। अब तुम लोग मेरा येह कुर्ता ले कर घर जाओ। और अब्बा जान के चेहरे पर इस को डाल दो तो उन की आंखों में रोशनी आ जाएगी। फिर तुम लोग सब घर वालों को साथ ले कर मिस्र चले आओ।

बड़ा भाई यहूदा कहने लगा कि येह कुर्ता मैं ले कर जाऊंगा क्यूंकि ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام का कुर्ता बकरी के ख़ून में रंग कर मैं ही उन के पास ले गया था। तो जिस त़रह़ मैं ने उन्हें वोह कुर्ता दे कर ग़मगीन किया था। आज येह कुर्ता ले जा कर उन को ख़ुश कर दूंगा। चुनान्चे, यहूदा येह कुर्ता ले कर घर पहुंचा और अपने वालिद के चेहरे पर डाल दिया तो उन की आंखों में बीनाई आ गई। फिर ह़ज़रते या'क़ूब عَلَيْهِ السَّلَام ने तहज्जुद के वक़्त के बा'द अपने सब बेटों के लिये दुआ फ़रमाई और येह दुआ मक़्बूल हो गई। चुनान्चे, आप पर येह वह़्य उतरी कि आप के साहिबज़ादों की ख़त़ाएं बख़्श दी गईं।

फिर मिस्र को रवानगी का सामान होने लगा। ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام ने अपने वालिद और सब अहलो इयाल को लाने के लिये भाइयों के साथ दो सो सुवारियां भेज दीं थीं। ह़ज़रते या'क़ूब عَلَيْهِ السَّلَام ने अपने

घर वालों को जम्अ़ किया तो कुल बहत्तर या तिहत्तर आदमी थे जिन को साथ ले कर आप मिस्र रवाना हो गए मगर अल्लाह तआ़ला ने आप की नस्ल में इतनी बरकत अ़ता फ़रमाई कि जब ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के वक़्त में बनी इस्राईल मिस्र से निकले तो छे लाख से ज़ियादा थे। हालांकि ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام का ज़माना ह़ज़रते या'क़ूब عَلَيْهِ السَّلَام के मिस्र जाने से सिर्फ़ चार सो साल बा'द का ज़माना है। जब ह़ज़रते या'क़ूब عَلَيْهِ السَّلَام अपने अहलो इ़याल के साथ मिस्र के क़रीब पहुंचे तो ह़ज़रते यूसुफ़ ने चार हज़ार लश्कर और बहुत से मिस्री सुवारों को साथ ले कर आप का इस्तिक़बाल किया और सदहा रेशमी झन्डे और क़ीमती परचम लहराते हुवे क़ितारें बांधे हुवे मिस्री बाशिन्दे जुलूस के साथ रवाना हुवे। ह़ज़रते या'क़ूब عَلَيْهِ السَّلَام अपने फ़रज़न्द "यहूदा" के हाथ पर टेक लगाए तशरीफ़ ला रहे थे। जब इन लश्करों और सुवारों पर आप की नज़र पड़ी तो आप ने दरयाफ़्त फ़रमाया कि येह फ़िरऔ़ने मिस्र का लश्कर है? तो यहूदा ने अ़र्ज़ किया कि जी नहीं। येह आप के फ़रज़न्द ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام हैं जो अपने लश्करों और सुवारों के साथ आप के इस्तिक़बाल के लिये आए हुवे हैं! आप को मुतअ़ज्जिब देख कर ह़ज़रते जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام ने फ़रमाया कि ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नबी ज़रा सर उठा कर फ़ज़ाए आस्मानी में नज़र फ़रमाइये कि आप के सुरूर व शादमानी में शिर्कत के लिये मलाइका का जम्मे ग़फ़ीर ह़ाज़िर है जो मुद्दतों आप के ग़म में रोते रहे हैं। मलाइका की तस्बीह़ और घोड़ों की हिनहिनाहट और त़बल व बोक़ की आवाज़ों ने अ़जीब समां पैदा कर दिया था।

जब बाप बेटे दोनों क़रीब हो गए और ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام ने सलाम का इरादा किया तो ह़ज़रते जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام ने कहा कि आप ज़रा तवक़्क़ुफ़ कीजिये और अपने पिदरे बुज़ुर्गवार को उन के रिक़्क़त अंगेज़ सलाम का मौक़अ़ दीजिये चुनान्चे, ह़ज़रते या'क़ूब عَلَيْهِ السَّلَام ने इन लफ़्ज़ों के साथ सलाम कहा कि "اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا مُذْهِبَ الْاَحْزَانِ" या'नी ऐ तमाम ग़मों को दूर करने वाले आप पर सलाम हो। फिर बाप बेटों ने निहायत गर्मजोशी के साथ मुआ़नक़ा किया और फ़र्ते मसर्रत में दोनों ख़ूब रोए।

फिर एक इस्तिक़बालिय्या ख़ैमे में तशरीफ़ ले गए जो ख़ूब मुज़य्यन और आरास्ता किया गया था। वहां थोड़ी देर ठहर कर जब शाही महल में रोनक़ अफ़्रोज़ हुवे तो ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام ने सहारा दे कर अपने वालिदे मोह़तरम को तख़्ते शाही पर बिठाया। और इन के इर्द गिर्द आप के ग्यारह भाई और आप की वालिदा सब बैठ गए और सब के सब बयक वक़्त ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام के आगे सजदे में गिर पड़े। उस वक़्त ह़ज़रते यूसुफ عَلَيْهِ السَّلَام ने अपने वालिदे बुज़ुर्गवार को मुख़ात़ब कर के येह कहा :

يٰۤاَبَتِ هٰذَا تَاْوِيْلُ رُءْيَایَ مِنْ قَبْلُ٘ قَدْ جَعَلَهَا رَبِّیْ حَقًّاؕ وَ قَدْ اَحْسَنَ بِیْۤ اِذْ اَخْرَجَنِیْ مِنَ السِّجْنِ وَ جَآءَ بِكُمْ مِّنَ الْبَدْوِ مِنْۢ بَعْدِ اَنْ نَّزَغَ الشَّیْطٰنُ بَیْنِیْ وَ بَیْنَ اِخْوَتِیْؕ اِنَّ رَبِّیْ لَطِیْفٌ لِّمَا یَشَآءُؕ اِنَّهٗ هُوَ الْعَلِیْمُ الْحَكِیْمُ۝۱۰۰ (پ۱۳، یوسف:۱۰۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :– ऐ मेरे बाप येह मेरे पहले ख़्वाब की ता'बीर है बेशक इसे मेरे रब ने सच्चा किया और बेशक उस ने मुझ पर एह़सान किया कि मुझे क़ैद से निकाला और आप सब को गाऊं से ले आया बा'द इस के कि शैत़ान ने मुझ में और मेरे भाइयों में नाचाक़ी करा दी थी बेशक मेरा रब जिस बात को चाहे आसान कर दे बेशक वोही इल्मो ह़िक्मत वाला है।

या'नी मेरे ग्यारह भाई सितारे हैं और मेरे बाप सूरज और मेरी वालिदा चांद है और येह सब मुझ को सजदा कर रहे हैं। येही आप का ख़्वाब था जो बचपन में देखा था कि ग्यारह सितारे और सूरज व चांद मुझे सजदा कर रहे हैं। येह तारीख़ी वाक़िआ मुह़र्रम की दस तारीख़ (आ़शूरा के दिन) वुक़ूअ़ पज़ीर हुवा।

ह़ज़रते या'क़ूब عَلَيْهِ السَّلَام **की वफ़ात :–** अस्ह़ाबे तवारीख़ का बयान है कि ह़ज़रते या'क़ूब عَلَيْهِ السَّلَام मिस्र में अपने फ़रज़न्द ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام के पास चोबीस साल तक निहायत आराम व ख़ुशह़ाली में रहे। जब आप की वफ़ात का वक़्त क़रीब आया तो आप ने येह वसिय्यत फ़रमाई कि मेरा जनाज़ा मुल्के शाम में ले जा कर मुझे मेरे वालिद ह़ज़रते इस्ह़ाक़ عَلَيْهِ السَّلَام की

क़ब्र के पहलू में दफ़्न करना। चुनान्चे, आप की वफ़ात के बा'द आप के जिस्मे मुक़द्दस को लकड़ी के सन्दूक़ में रख कर मिस्र से शाम लाया गया। ठीक उसी वक़्त आप के भाई ह़ज़रते "ग़ैस" की वफ़ात हुई और आप दोनों भाइयों की विलादत भी एक साथ हुई थी। और दोनों एक ही क़ब्र में दफ़्न किये गए और दोनों भाइयों की उ़म्रें एक सो सेंतालीस बरस की हुईं। ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَیْہِ السَّلَام अपने वालिद और चचा को दफ़्न फ़रमा कर फिर मिस्र तशरीफ़ लाए और अपने वालिदे माजिद के बा'द 23 साल तक मिस्र पर हुकूमत फ़रमाते रहे। इस के बा'द आप की भी वफ़ात हो गई।

ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَیْہِ السَّلَام की क़ब्र :- आप की वफ़ात के बा'द आप के मक़ामे दफ़्न में सख़्त इख़्तिलाफ़ पैदा हो गया। हर मह़ल्ले वाले ह़ुसूले बरकत के लिये अपने ही मह़ल्ले में दफ़्न पर इस्रार करने लगे। आख़िर इस बात पर सब का इत्तिफ़ाक़ हो गया कि आप को बीच दरियाए नील में दफ़्न किया जाए ताकि दरिया का पानी आप की क़ब्रे मुनव्वर को छूता हुवा गुज़रे। और तमाम मिस्र वाले आप के फ़ुयूज़ो बरकात से फ़ैज़याब होते रहें। चुनान्चे, आप को संगे मर मर के सन्दूक़ में रख कर दरियाए नील के बीच में दफ़्न किया गया। यहां तक कि चार सो बरस के बा'द ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام ने आप के ताबूत शरीफ़ को दरिया से निकाल कर आप के आबाओ अजदाद की क़ब्रों के पास मुल्के शाम में दफ़्न फ़रमाया। ब वक़्ते वफ़ात आप की उ़म्र शरीफ़ एक सो बीस बरस की थी और आप के वालिदे मोह़तरम ह़ज़रते या'क़ूब عَلَیْہِ السَّلَام ने 147 बरस की उ़म्र पाई। और आप के दादा ह़ज़रते इस्ह़ाक़ عَلَیْہِ السَّلَام की उ़म्र शरीफ़ 180 साल की हुई और आप के परदादा ह़ज़रते इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلَیْہِ السَّلَام की उ़म्र शरीफ़ 175 साल की हुई। (روح البیان، ج۴،ص۳۲۴، پ۱۳، یوسف:۱۰۰)

﴾35﴿ मक्कए मुकर्रमा क्यूं कर आबाद हुवा ?

ह़ज़रते इब्राहीम عَلَیْہِ السَّلَام के फ़रज़न्द ह़ज़रते इस्माईल عَلَیْہِ السَّلَام सर ज़मीने शाम में ह़ज़रते हाजरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا के शिकमे मुबारक से पैदा हुवे। ह़ज़रते इब्राहीम عَلَیْہِ السَّلَام की बीवी ह़ज़रते सारा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا के कोई अवलाद न थी। इस लिये इन्हें रश्क पैदा हुवा और इन्हों ने ह़ज़रते

इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام से कहा कि आप ह़ज़्रते हाजरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهَا और इन के बेटे इस्माईल को मेरे पास से जुदा कर के कहीं दूर कर दीजिये। ख़ुदावन्दे क़ुद्दूस की ह़िक्मत ने एक सबब पैदा फ़रमा दिया। चुनान्चे, आप पर वह़्य नाज़िल हुई कि आप ह़ज़्रते हाजरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهَا और इस्माईल عَلَيْهِ السَّلَام को उस सर ज़मीन में छोड़ आएं जहां बे आबो गियाह मैदान और ख़ुश्क पहाड़ियों के सिवा कुछ भी नहीं है। चुनान्चे, ह़ज़्रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام ने ह़ज़्रते हाजरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهَا और ह़ज़्रते इस्माईल عَلَيْهِ السَّلَام को साथ ले कर सफ़र फ़रमाया। और उस जगह आए जहां का'बए मुअ़ज़्ज़मा है। यहां उस वक़्त न कोई आबादी थी न कोई चश्मा, न दूर दूर तक पानी या आदमी का कोई नामो निशान था। एक तौशादान में कुछ खजूरें और एक मश्क में पानी ह़ज़्रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام वहां रख कर रवाना हो गए। ह़ज़्रते हाजरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهَا ने फ़रियाद की, कि ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नबी ! इस सुनसान बियाबान में जहां न कोई मूनिस है न ग़म ख़्वार, आप हमें बे यारो मददगार छोड़ कर कहां जा रहे हैं ? कई बार ह़ज़्रते हाजरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهَا ने आप को पुकारा मगर आप ने कोई जवाब नहीं दिया। आख़िर में ह़ज़्रते हाजरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهَا ने सुवाल किया कि आप इतना फ़रमा दीजिये कि आप ने अपनी मरज़ी से हमें यहां ला कर छोड़ा है या ख़ुदावन्दे क़ुद्दूस के हुक्म से आप ने ऐसा किया है ? तो आप عَلَيْهِ السَّلَام ने फ़रमाया कि ऐ हाजरा ! मैं ने जो कुछ किया है वोह **अल्लाह** तआ़ला के हुक्म से किया है। येह सुन कर ह़ज़्रते हाजरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهَا ने कहा कि अब आप जाइये, मुझे यक़ीने कामिल और पूरा पूरा इत़्मीनान है कि ख़ुदावन्दे करीम मुझ को और मेरे बच्चे को ज़ाएअ़ नहीं फ़रमाएगा।

इस के बा'द ह़ज़्रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام ने एक लम्बी दुआ़ मांगी और वहां से मुल्के शाम चले आए। चन्द दिनों में खजूरें और पानी ख़त्म हो जाने पर ह़ज़्रते हाजरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهَا पर भूक और प्यास का ग़लबा हुवा और इन के सीने में दूध ख़ुश्क हो गया और बच्चा भूक व प्यास से तड़पने लगा। ह़ज़्रते हाजरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهَا ने पानी की तलाश व जुस्त्जू में सात

चक्कर सफ़ा व मरवा की दोनों पहाड़ियों के लगाए मगर पानी का कोई सुराग़ दूर दूर तक नहीं मिला। यहां तक कि ह़ज़रते इस्माईल عَلَیْہِ السَّلَام प्यास की शिद्दत से एड़ियां पटक पटक कर रो रहे थे। ह़ज़रते जिब्रईल عَلَیْہِ السَّلَام ने आप की एड़ियों के पास ज़मीन पर अपना पैर मार कर एक चश्मा जारी कर दिया। और इस पानी में दूध की ख़ासिय्यत थी कि येह ग़िज़ा और पानी दोनों का काम करता था। चुनान्चे, येही ज़म ज़म का पानी पी पी कर ह़ज़रते हाजरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھَا और ह़ज़रते इस्माईल ज़िन्दा रहे। यहां तक कि ह़ज़रते इस्माईल عَلَیْہِ السَّلَام जवान हो गए और शिकार करने लगे तो शिकार के गोश्त और ज़म ज़म के पानी पर गुज़र बसर होने लगी। फिर क़बीलए जुरहम के कुछ लोग अपनी बकरियों को चराते हुवे इस मैदान में आए और पानी का चश्मा देख कर ह़ज़रते हाजरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھَا की इजाज़त से यहां आबाद हो गए और इस क़बीले की एक लड़की से ह़ज़रते इस्माईल عَلَیْہِ السَّلَام की शादी भी हो गई। और रफ़्ता रफ़्ता यहां एक आबादी हो गई। फिर ह़ज़रते इब्राहीम عَلَیْہِ السَّلَام को ख़ुदावन्दे क़ुद्दूस का येह हुक्म हुवा कि ख़ानए का'बा की ता'मीर करें। चुनान्चे, आप ने ह़ज़रते इस्माईल عَلَیْہِ السَّلَام की मदद से ख़ानए का'बा को ता'मीर फ़रमाया। उस वक़्त ह़ज़रते इब्राहीम عَلَیْہِ السَّلَام ने अपनी अवलाद और बाशिन्दगाने मक्कए मुकर्रमा के लिये जो एक त़वील दुआ़ मांगी। वोह क़ुरआने मजीद की मुख़्तलिफ़ सूरतों में मज़कूर है। चुनान्चे, सूरए इब्राहीम में आप की इस दुआ़ का कुछ ह़िस्सा इस त़रह़ मज़कूर है।

رَبَّنَاۤ اِنِّیۡۤ اَسۡکَنۡتُ مِنۡ ذُرِّیَّتِیۡ بِوَادٍ غَیۡرِ ذِیۡ زَرۡعٍ عِنۡدَ بَیۡتِکَ الۡمُحَرَّمِ ۙ رَبَّنَا لِیُقِیۡمُوا الصَّلٰوۃَ فَاجۡعَلۡ اَفۡـِٕدَۃً مِّنَ النَّاسِ تَہۡوِیۡۤ اِلَیۡہِمۡ وَارۡزُقۡہُمۡ مِّنَ الثَّمَرٰتِ لَعَلَّہُمۡ یَشۡکُرُوۡنَ ﴿۳۷﴾ (پ۱۳، ابراھیم:۳۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :– ऐ मेरे रब ! मैं ने अपनी कुछ अवलाद एक नाले में बसाई जिस में खेती नहीं होती तेरे हुरमत वाले घर के पास, ऐ हमारे रब इस लिये कि वोह नमाज़ क़ाइम रखें तो तू लोगों के कुछ दिल उन की त़रफ़ माइल कर दे और उन्हें कुछ फल खाने को दे शायद वोह एह़सान मानें।

येह मक्कए मुकर्रमा की आबादी की इब्तिदाई तारीख़ है जो क़ुरआने मजीद से षाबित हुई है।

दुआ़ए इब्राहीमी का अषर :– इस दुआ़ में ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام ने ख़ुदावन्दे क़ुद्दूस से दो चीज़ें त़लब कीं एक तो येह कि कुछ लोगों के दिल अवलादे इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام की त़रफ़ माइल हों और दूसरे इन लोगों को फलों की रोज़ी खाने को मिले। سُبْحٰنَ اللّٰه आप की येह दुआ़एं मक़्बूल हुईं। चुनान्चे, इस त़रह़ लोगों के दिल अहले मक्का की त़रफ़ माइल हुवे कि आज करोड़हा करोड़ इन्सान मक्कए मुकर्रमा की ज़ियारत के लिये तड़प रहे हैं और हर दौर में त़रह़ त़रह़ की तक्लीफ़ें उठा कर मुसलमान ख़ुश्की और समुन्दर और हवाई रास्तों से मक्कए मुकर्रमा जाते रहे। और क़ियामत तक जाते रहेंगे और अहले मक्का की रोज़ी में फलों की कषरत का येह आ़लम है कि बा वुजूद येह कि शहरे मक्का और इस के क़ुर्बो जवार में कहीं न कोई खेती है न कोई बाग़ बाग़ीचा है। मगर मक्कए मुकर्रमा की मन्डियों और बाज़ारों में इस कषरत से क़िस्म क़िस्म के मेवे और फल मिलते हैं कि फ़र्ते तअ़ज्जुब से देखने वालों की आंखें फटी की फटी रह जाती हैं। अल्लाह तआ़ला ने "त़ाइफ़" की ज़मीन में हर क़िस्म के फलों की पैदावार की सलाह़िय्यत पैदा फ़रमा दी है कि वहां से क़िस्म क़िस्म के मेवे और फल और त़रह़ त़रह़ की सब्ज़ियां और तरकारियां मक्कए मुअ़ज़्ज़मा में आती रहती हैं और इस के इ़लावा मिस्र व इ़राक़ बल्कि यूरोप के मुमालिक से मेवे और फल ब कषरत मक्कए मुकर्रमा आया करते हैं। येह सब ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام की दुआ़ओं की बरकतों के अषरात व षमरात हैं जो बिलाशुबा दुन्या के अ़जाइबात में से हैं।

इस के बा'द आप ने येह दुआ़ मांगी जिस में आप ने अपनी अवलाद के इ़लावा तमाम मोअमिनीन के लिये भी दुआ़ मांगी।

رَبِّ اجْعَلْنِیْ مُقِیْمَ الصَّلٰوةِ وَ مِنْ ذُرِّیَّتِیْ ﳓ رَبَّنَا وَ تَقَبَّلْ دُعَآءِ ﴿۴۰﴾

رَبَّنَا اغْفِرْ لِیْ وَ لِوَالِدَیَّ وَ لِلْمُؤْمِنِیْنَ یَوْمَ یَقُوْمُ الْحِسَابُ ﴿۴۱﴾ (پ ۱۳، ابراھیم: ۴۰، ۴۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- ऐ मेरे रब ! मुझे नमाज़ का क़ाइम करने वाला रख और कुछ मेरी अवलाद को ऐ हमारे रब और मेरी दुआ़ सुन ले ऐ हमारे रब मुझे बख़्श दे और मेरे मां बाप को और सब मुसलमानों को जिस दिन हिसाब क़ाइम होगा।

दर्से हिदायत :- इस वाक़िए से दो बातें ख़ास तौर पर मा'लूम हुई :

﴾1﴿ हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام अपने रब तआ़ला के बहुत ही इत़ाअ़त गुज़ार और फ़रमां बरदार थे कि वोह बच्चा जिस को बड़ी बड़ी दुआ़ओं के बा'द बुढ़ापे में पाया था जो आप की आंखों का नूर और दिल का सुरूर था, फ़ित्री तौर पर हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام इस को कभी अपने से जुदा नहीं कर सकते थे मगर जब अल्लाह तआ़ला का येह हुक्म हो गया कि ऐ इब्राहीम ! तुम अपने प्यारे फ़रज़न्द और उस की मां को अपने घर से निकाल कर वादिये बत़्हा की उस सुनसान जगह पर ले जा कर छोड़ आओ जहां सर छुपाने को दरख़्त का पत्ता और प्यास बुझा ने को पानी का एक क़त़रा भी नहीं है, न वहां कोई यारो मददगार है, न कोई मूनिसो ग़म ख़्वार है। दूसरा कोई इन्सान होता तो शायद इस के तसव्वुर ही से उस के सीने में दिल धड़कने लगता, बल्कि शिद्दते ग़म से दिल फट जाता। मगर हज़रते इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلَيْهِ السَّلَام ख़ुदा का येह हुक्म सुन कर न फ़िक्र मन्द हुवे, न एक लम्हे के लिये सोच बिचार में पड़े, न रंजो ग़म से निढाल हुवे बल्कि फ़ौरन ही ख़ुदा का हुक्म बजा लाने के लिये बीवी और बच्चे को ले कर मुल्के शाम से सरज़मीने मक्का में चले गए और वहां बीवी बच्चे को छोड़ कर मुल्के शाम चले आए। **अल्लाहु अक्बर** ! इस जज़्बए इत़ाअ़त शिआ़री और जोशे फ़रमां बरदारी पर हमारी जां क़ुरबान !

﴾2﴿ हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام ने अपने फ़रज़न्द हज़रते इस्माईल عَلَيْهِ السَّلَام और उन की अवलाद के लिये निहायत ही महब्बत भरे अन्दाज़ में उन की मक़्बूलिय्यत और रिज़्क़ के लिये जो दुआ़एं मांगीं। इस से येह सबक़ मिलता है कि अपनी अवलाद से महब्बत करना और उन के लिये दुआ़एं मांगना येह हज़राते अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام का मुबारक त़रीक़ा है जिस पर हम सब मुसलमानों को अ़मल करना हमारी सलाह़ व फ़लाह़े दारैन का ज़रीआ़ है। (واللہ تعالٰی اعلم)

﴾36﴿ अबू लहब की बीवी को रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم नज़र न आए

जब सूरए “تَبَّتْ يَدَا” नाज़िल हुई और अबू लहब और उस की बीवी “उम्मे जमील” की इस सूरह में मज़म्मत उतरी तो अबू लहब की बीवी उम्मे जमील ग़ुस्से में आपे से बाहर हो गई। और एक बहुत बड़ा पथ्थर ले कर वोह ह़रमे का'बा में गई। उस वक़्त हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم नमाज़ में तिलावते कुरआन फ़रमा रहे थे और क़रीब ही ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه बैठे हुवे थे। “उम्मे जमील” बड़ बड़ाती हुई आई और हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पास से गुज़रती हुई ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه के पास आई और मारे ग़ुस्से के मुंह में झाग भरते हुवे कहने लगी कि बताओ तुम्हारे रसूल कहां हैं? मुझे मा'लूम हुवा है कि इन्हों ने मेरी और मेरे शोहर की हिज्व की है। ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने फ़रमाया कि मेरे रसूल शाइ़र नहीं हैं कि किसी की हिज्व करें। फिर वोह ग़ैज़ो ग़ज़ब में भरी हुई पूरे ह़रमे का'बा में चक्कर लगाती फिरी और बकती झकती हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को ढूंडती फिरी। मगर जब वोह हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को न देख सकी तो बड़ बड़ाती हुई ह़रम से बाहर जाने लगी और ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه से कहने लगी कि मैं तुम्हारे रसूल का सर कुचलने के लिये येह पथ्थर ले कर आई थी मगर अफ़्सोस कि वोह मुझे नहीं मिले। ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से इस वाक़िए़ का ज़िक्र किया तो आप ने फ़रमाया कि मेरे पास से वोह कई बार गुज़री मगर मेरे और उस के दरमियान एक फ़िरिश्ता इस त़रह़ ह़ाइल हो गया कि आंख फाड फाड कर देखने के बा वुजूद वोह मुझे न देख सकी। इस वाक़िए़ के मुतअ़ल्लिक़ येह आयत नाज़िल हुई :

وَ اِذَا قَرَاْتَ الْقُرْاٰنَ جَعَلْنَا بَیْنَكَ وَ بَیْنَ الَّذِیْنَ لَا یُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ حِجَابًا مَّسْتُوْرًا ﴿۴۵﴾ (خزائن العرفان، ص۵۱۵،پ ۱۵، بنی اسرائیل ۴۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :– और ऐ महबूब ! तुम ने कुरआन पढ़ा हम ने तुम पर और उन में कि आख़िरत पर ईमान नहीं लाते एक छुपा हुवा पर्दा कर दिया।

दर्से हिदायत :– उम्मे जमील अंखियारी होते हुवे और आंखें फाड़ कर देखने के बा वुजूद हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के पास ही से तलाश करती हुई बार बार गुज़री मगर वोह आप को नहीं देख सकी। बिला शुबा येह एक अजीब बात है और इस को हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मो'जिज़े के सिवा कुछ भी नहीं कहा जा सकता। इस क़िस्म के मो'जिज़ात हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की तरफ़ से बारहा सादिर हुवे हैं और बहुत से औलियाउल्लाह से भी ऐसी करामतें बारहा सादिर हुई हैं और औलिया की येह करामतें भी हमारे नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मो'जिज़ात ही हैं। क्यूंकि वली की करामत दर हक़ीक़त उस के नबी का मो'जिज़ा हुवा करता है।

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّبَارِکْ وَسَلِّمْ

﴾37﴿ अस्हाबे कह्फ़ (ग़ार वाले)

हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام के आस्मान पर उठा लिये जाने के बा'द ईसाइयों का हाल बेहद ख़राब और निहायत अबतर हो गया। लोग बुत परस्ती करने लगे और दूसरों को भी बुत परस्ती पर मजबूर करने लगे। खुसूसन इन का एक बादशाह "दक़यानूस" तो इस क़दर ज़ालिम था कि जो शख़्स बुत बरस्ती से इन्कार करता था येह उस को क़त्ल कर डालता था।

अस्हाबे कह्फ़ कौन थे ? :– अस्हाबे कह्फ़ शहर "उफ़्सूस" के शुरफ़ा थे जो बादशाह के मोअज़्ज़ज़ दरबारी भी थे। मगर येह लोग साहिबे ईमान और बुत परस्ती से इन्तिहाई बेज़ार थे। "दक़यानूस" के ज़ुल्मो जब्र से परेशान हो कर येह लोग अपना ईमान बचाने के लिये उस के दरबार से भाग निकले और क़रीब के पहाड़ में एक ग़ार के अन्दर पनाह गुज़ीं हुवे और सो गए, तो तीन सो बरस से ज़ियादा अर्से तक इसी हाल में सोते रह गए। दक़यानूस ने जब इन लोगों को तलाश कराया और उस को मा'लूम हुवा कि येह लोग ग़ार के अन्दर हैं तो वोह बेहद नाराज़ हुवा। और फ़र्ते ग़ैज़ो ग़ज़ब में येह हुक्म दे दिया कि ग़ार को एक संगीन दीवार उठा कर बन्द कर दिया जाए ताकि येह लोग उसी में रह कर मर जाएं और

वोही ग़ार इन लोगों की क़ब्र बन जाए। मगर दक़्यानूस ने जिस शख़्स के सिपुर्द येह काम किया था वोह बहुत ही नेक दिल और साहिबे ईमान आदमी था। उस ने अस्हाबे कह्फ़ के नाम इन की ता'दाद और इन का पूरा वाक़िआ एक तख़्ती पर कन्दा करा कर तांबे के सन्दूक़ के अन्दर रख कर दीवार की बुन्याद में रख दिया। और इसी तृरह् की एक तख़्ती शाही ख़ज़ाने में भी मह्फ़ूज़ करा दी। कुछ दिनों के बा'द दक़्यानूस बादशाह मर गया और सल्त़नतें बदलती रहीं। यहां तक कि एक नेक दिल और इन्साफ़ परवर बादशाह जिस का नाम "बेदरूस" था, तख़्त नशीन हुवा जिस ने अड़सठ साल तक बहुत शानो शौकत के साथ हुकूमत की। उस के दौर में मज़हबी फ़िरक़ा बन्दी शुरूअ़ हो गई और बा'ज़ लोग मरने के बा'द उठने और क़ियामत का इन्कार करने लगे। क़ौम का येह ह़ाल देख कर बादशाह रंजो ग़म में डूब गया और वोह तन्हाई में एक मकान के अन्दर बन्द हो कर ख़ुदावन्दे क़ुद्दूस عَزَّوَجَلَّ के दरबार में निहायत बे क़रारी के साथ गिर्या व ज़ारी कर के दुआ़एं मांगने लगा कि या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ कोई ऐसी निशानी ज़ाहिर फ़रमा दे ताकि लोगों को मरने के बा'द ज़िन्दा हो कर उठने और क़ियामत का यक़ीन हो जाए। बादशाह की येह दुआ़ मक़्बूल हो गई और अचानक बकरियों के एक चरवाहे ने अपनी बकरियों को ठहराने के लिये उसी ग़ार को मुन्तख़ब किया और दीवार को गिरा दिया। दीवार गिरते ही लोगों पर ऐसी हैबत व दहशत सुवार हो गई कि दीवार गिराने वाले लर्ज़ां बरअन्दाम हो कर वहां से भाग गए और अस्ह़ाबे कह्फ़ ब हुक्मे इलाही अपनी नींद से बेदार हो कर उठ बैठे और एक दूसरे से सलाम व कलाम में मश्ग़ूल हो गए और नमाज़ भी अदा कर ली। जब इन लोगों को भूक लगी तो इन लोगों ने अपने एक साथी यमलीख़ा से कहा कि तुम बाज़ार जा कर कुछ खाना लाओ और निहायत ख़ामोशी से येह भी मा'लूम करो कि "दक़्यानूस" हम लोगों के बारे में क्या इरादा रखता है ? "यमलीख़ा" ग़ार से निकल कर बाज़ार गए और येह देख कर हैरान रह गए कि शहर में हर त़रफ़ इस्लाम का चर्चा है और लोग ए'लानिय्या ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام का कलिमा पढ़ रहे हैं। यमलीख़ा येह

मन्ज़र देख कर महवे हैरत हो गए कि इलाही येह माजरा क्या है ? कि इस शहर में तो ईमान व इस्लाम का नाम लेना भी जुर्म था आज येह इन्क़िलाब कहां से और क्यूं कर आ गया ?

फिर येह एक नानबाई की दुकान पर खाना लेने गए और दक़यानूसी ज़माने का रूपिया दुकानदार को दिया जिस का चलन बन्द हो चुका था बल्कि कोई इस सिक्के का देखने वाला भी बाक़ी नहीं रह गया था। दुकानदार को शुबा हुवा कि शायद इस शख़्स को कोई पुराना ख़ज़ाना मिल गया है चुनान्चे, दुकानदार ने इन को हुक्काम के सिपुर्द कर दिया और हुक्काम ने इन से ख़ज़ाने के बारे में पूछ गछ शुरूअ़ कर दी और कहा कि बताओ ख़ज़ाना कहां है ? "यमलीख़ा" ने कहा कि कोई ख़ज़ाना नहीं है। येह हमारा ही रूपिया है। हुक्काम ने कहा कि हम किस तरह मान लें कि रूपिया तुम्हारा है ? येह सिक्का तीन सो बरस पुराना है और बरसों गुज़र गए कि इस सिक्के का चलन बन्द हो गया और तुम अभी जवान हो। लिहाज़ा साफ़ साफ़ बताओ कि येह उ़क़दा ह़ल हो जाए। येह सुन कर यमलीख़ा ने कहा कि तुम लोग येह बताओ कि दक़यानूस बादशाह का क्या ह़ाल है ? हुक्काम ने कहा कि आज रूए ज़मीन पर इस नाम का कोई बादशाह नहीं है। हां सेंकड़ों बरस गुज़रे कि इस नाम का एक बे ईमान बादशाह गुज़रा है जो बुत परस्त था। "यमलीख़ा" ने कहा कि अभी कल ही तो हम लोग उस के ख़ौफ़ से अपने ईमान और जान को बचा कर भागे हैं। मेरे साथी क़रीब ही के एक ग़ार में मौजूद हैं। तुम लोग मेरे साथ चलो मैं तुम लोगों को उन से मिला दूं। चुनान्चे, हुक्काम और अ़माइदीने शहर कषीर ता'दाद में उस ग़ार के पास पहुंचे। अस्ह़ाबे कह्फ़ "यमलीख़ा" के इन्तिज़ार में थे। जब इन की वापसी में देर हुई तो उन लोगों ने येह ख़याल कर लिया कि शायद यमलीख़ा गिरिफ़्तार हो गए और जब ग़ार के मुंह पर बहुत से आदमियों का शोरो ग़ौग़ा इन लोगों ने सुना तो समझ बैठे कि ग़ालिबन दक़यानूस की फ़ौज हमारी गिरिफ़्तारी के लिये आन पहुंची है। तो येह लोग निहायत इख़्लास के साथ ज़िक्रे इलाही और तौबा व इस्तिग़फ़ार में मश्ग़ूल हो गए।

हुक्काम ने ग़ार पर पहुंच कर तांबे का सन्दूक़ बर आमद किया और उस के अन्दर से तख़्ती निकाल कर पढ़ा तो उस तख़्ती पर अस्हाबे कह्फ़ का नाम लिखा था और येह भी तह़रीर था कि येह मोमिनों की जमाअ़त अपने दीन की ह़िफ़ाज़त के लिये दक़्यानूस बादशाह के ख़ौफ़ से इस ग़ार में पनाह गुज़ीं हुई है। तो दक़्यानूस ने ख़बर पा कर एक दीवार से इन लोगों को ग़ार में बन्द कर दिया है। हम येह ह़ाल इस लिये लिखते हैं कि जब कभी भी येह ग़ार खुले तो लोग अस्ह़ाबे कह्फ़ के ह़ाल पर मुत्तलअ़ हो जाएं। हुक्काम तख़्ती की इ़बारत पढ़ कर ह़ैरान रह गए। और इन लोगों ने अपने बादशाह "बेदरूस" को इस वाक़िए की इत्तिलाअ़ दी। फ़ौरन ही बेदरूस बादशाह अपने उमरा और अ़माइदीने शहर को साथ ले कर ग़ार के पास पहुंचा तो अस्ह़ाबे कह्फ़ ने ग़ार से निकल कर बादशाह से मुआ़नक़ा किया और अपनी सरगुज़िश्त बयान की। बेदरूस बादशाह सजदे में गिर कर ख़ुदावन्दे क़ुद्दूस का शुक्र अदा करने लगा कि मेरी दुआ़ क़बूल हो गई और अल्लाह तआ़ला ने ऐसी निशानी ज़ाहिर कर दी जिस से मौत के बा'द ज़िन्दा हो कर उठने का हर शख़्स को यक़ीन हो गया। अस्ह़ाबे कह्फ़ बादशाह को दुआ़एं देने लगे कि अल्लाह तआ़ला तुम्हारी बादशाही की ह़िफ़ाज़त फ़रमाए। अब हम तुम्हें अल्लाह के सिपुर्द करते हैं। फिर अस्ह़ाबे कह्फ़ ने السلام علیکم कहा और ग़ार के अन्दर चले गए और सो गए और इसी ह़ालत में अल्लाह तआ़ला ने उन लोगों को वफ़ात दे दी। बादशाह बेदरूस ने साल की लकड़ी का सन्दूक़ बनवा कर अस्ह़ाबे कह्फ़ की मुक़द्दस लाशों को इस में रखवा दिया और अल्लाह तआ़ला ने अस्ह़ाबे कह्फ़ का ऐसा रो'ब लोगों के दिलों में पैदा कर दिया कि किसी की येह मजाल नहीं कि ग़ार के मुंह तक जा सके। इस त़रह़ अस्ह़ाबे कह्फ़ की लाशों की ह़िफ़ाज़त का अल्लाह तआ़ला ने सामान कर दिया। फिर बेदरूस बादशाह ने ग़ार के मुंह पर एक मस्जिद बनवा दी और सालाना एक दिन मुक़र्रर कर दिया कि तमाम शहर वाले इस दिन ई़द की त़रह़ ज़ियारत के लिये आया करें। (خازن، ج۳،ص۱۹۸۔۲۰۰)

अस्ह़ाबे कह्फ़ की ता'दाद :– अस्ह़ाबे कह्फ़ की ता'दाद में जब लोगों का इख़्तिलाफ़ हुवा तो येह आयत नाज़िल हुई :

قُلْ رَّبِّیْۤ اَعْلَمُ بِعِدَّتِهِمْ مَّا یَعْلَمُهُمْ اِلَّا قَلِیْلٌ ﯼ (پ۱۵،الکھف:۲۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- तुम फ़रमाओ मेरा रब उन की गिनती ख़ूब जानता है उन्हें नहीं जानते मगर थोड़े ।

हज़रते अब्दुल्लाह बिन अब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا ने फ़रमाया कि मैं उन्ही कम लोगों में से हूं जो अस्हाबे कह्फ़ की ता'दाद को जानते हैं। फिर आप ने फ़रमाया कि अस्हाबे कह्फ़ की ता'दाद सात है। और आठवां उन का कुत्ता है। (تفسیر صاوی، ج۴،ص۱۱۹۱، پ۱۵،الکھف:۲۲)

कुरआने मजीद में **अल्लाह** तआला ने अस्हाबे कह्फ़ का हाल बयान फ़रमाते हुवे इरशाद फ़रमाया कि

اَمْ حَسِبْتَ اَنَّ اَصْحٰبَ الْكَهْفِ وَ الرَّقِیْمِۙ كَانُوْا مِنْ اٰیٰتِنَا عَجَبًا ﴿۹﴾ اِذْ اَوَى الْفِتْیَةُ اِلَى الْكَهْفِ فَقَالُوْا رَبَّنَاۤ اٰتِنَا مِنْ لَّدُنْكَ رَحْمَةً وَّ هَیِّئْ لَنَا مِنْ اَمْرِنَا رَشَدًا ﴿۱۰﴾ فَضَرَبْنَا عَلٰۤى اٰذَانِهِمْ فِی الْكَهْفِ سِنِیْنَ عَدَدًاۙ ﴿۱۱﴾ ثُمَّ بَعَثْنٰهُمْ لِنَعْلَمَ اَیُّ الْحِزْبَیْنِ اَحْصٰى لِمَا لَبِثُوْۤا اَمَدًا۠ ﴿۱۲﴾ نَحْنُ نَقُصُّ عَلَیْكَ نَبَاَهُمْ بِالْحَقِّؕ اِنَّهُمْ فِتْیَةٌ اٰمَنُوْا بِرَبِّهِمْ وَ زِدْنٰهُمْ هُدًى ﴿۱۳﴾ (پ۱۵،الکھف:۹۔۱۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- क्या तुम्हें मा'लूम हुवा कि पहाड़ की खो और जंगल के किनारे वाले हमारी एक अजीब निशानी थे। जब उन जवानों ने ग़ार में पनाह ली फिर बोले ऐ हमारे रब हमें अपने पास से रहमत दे और हमारे काम में हमारे लिये राहयाबी (राह पाने) के सामान कर। तो हम ने उस ग़ार में उन के कानों पर गिनती के कई बरस थपका फिर हम ने उन्हें जगाया कि देखें दो गुरौहों में कौन उन के ठहरने की मुद्दत ज़ियादा ठीक बताता है हम उन का ठीक ठीक हाल तुम्हें सुनाएं वोह कुछ जवान थे कि अपने रब पर ईमान लाए और हम ने उन को हिदायत बढ़ाई।

इस से अगली आयतों में **अल्लाह** तआला ने अस्हाबे कह्फ़ का पूरा पूरा हाल बयान फ़रमाया है कि जिस को हम पहले ही तह्रीर कर चुके हैं।

अस्ह़ाबे कह्फ़ के नाम :- इन के नामों में भी बहुत इख़्तिलाफ़ है। ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि इन के नाम येह हैं। यमलीख़ा, मकशलीना, मशलीना, मरनूश, दबरनूश, शाज़नूश और सातवां चरवाहा था जो इन लोगों के साथ हो गया था। ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने उस का ज़िक्र नहीं फ़रमाया। और इन लोगों के कुत्ते का नाम "क़ित़मीर" था और इन लोगों के शहर का नाम "उफ़सूस" था और ज़ालिम बादशाह का नाम "दक़्यानूस" था। (مدارک التنزیل، ج۳، ص ۲۰۶، پ۱۵، الکھف:۲۲)

और तफ़्सीरे सावी में लिखा है कि अस्ह़ाबे कह्फ़ के नाम येह हैं। मकसमलीना, यमलीख़ा, तूनस, नैनूस, सारियूनस, ज़ूनुवानस, फ़्लस्त त़यूनस, येह आख़िरी चरवाहे थे जो रास्ते में साथ हो लिये थे और इन लोगों के कुत्ते का नाम "क़ित़मीर" था। (صاوی، ج۴، ص۱۱۹۱، پ۱۵، الکھف:۲۲)

अस्ह़ाबे कह्फ़ के नामों के ख़वास :- ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا से रिवायत है कि अस्ह़ाबे कह्फ़ के नामों का ता'वीज़ नव कामों के लिये फ़ाइदे मन्द है।

(1) भागे हुवे को बुलाने के लिये और दुश्मनों से बच कर भागने के लिये। (2) आग बुझाने के लिये कपड़े पर लिख कर आग में डाल दें (3) बच्चों के रोने और तीसरे दिन आने वाले बुख़ार के लिये। (4) दर्दे सर के लिये दाएं बाज़ू पर बांधें। (5) उम्मुस्सिबयान के लिये गले में पहनाएं। (6) ख़ुश्की और समुन्दर में सफ़र मह़फ़ूज़ होने के लिये। (7) माल की ह़िफ़ाज़त के लिये। (8) अ़क़्ल बढ़ने के लिये। (9) गुनहगारों की नजात के लिये। (صاوی، ج۴، ص۱۱۹۱، پ۱۵، الکھف:۲۲)

अस्ह़ाबे कह्फ़ कितने दिनों तक सोते रहे :- जब क़ुरआन की आयत

وَلَبِثُوْا فِیْ كَهْفِهِمْ ثَلٰثَ مِائَةٍ سِنِیْنَ وَازْدَادُوْا تِسْعًا ﴿۲۵﴾ (پ۱۵، الکھف:۲۵)

(और वोह अपने ग़ार में तीन सो बरस ठहरे नव ऊपर) नाज़िल हुई। तो कुफ़्फ़ार कहने लगे कि हम तीन सो बरस के मुतअ़ल्लिक़ तो जानते हैं कि अस्ह़ाबे कह्फ़ इतनी मुद्दत तक ग़ार में रहे मगर हम नव बरस को नहीं जानते

तो हुज़ूरे अक्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि तुम लोग शम्सी साल जोड़ रहे हो और कुरआने मजीद ने क़मरी साल के हिसाब से मुद्दत बयान की है और शम्सी साल के हर सो बरस में तीन साल क़मरी बढ़ जाते हैं।

(صاوی، ج۴، ص۱۱۹۳، پ۱۵، الکھف:۲۵)

दर्से हिदायत :- «1» मरने के बा'द ज़िन्दा हो कर उठना हक़ है और अस्हाबे कह्फ़ का वाक़िआ इस की निशानी और दलील है। जो कुरआने मजीद में मौजूद है।

«2» जो अपने दीनो ईमान की हिफ़ाज़त के लिये अपना वतन छोड़ कर हिजरत करता है **अल्लाह** तआला ग़ैब से उस की हिफ़ाज़त का ऐसा ऐसा सामान फ़रमा देता है कि कोई इस को सोच भी नहीं सकता।

«3» अल्लाह वालों के नामों में बरकत और नफ़्अ़ बख़्श ताषीरात होती हैं।

«4» बेदरूस एक ईमानदार और नेक दिल बादशाह ने अस्हाबे कह्फ़ के ग़ार की ज़ियारत के लिये सालाना एक दिन मुक़र्रर किया। इस से मा'लूम हुवा कि बुज़ुर्गाने दीन के उ़र्स का दस्तूर बहुत क़दीम ज़माने से चला आ रहा है।

«5» बुज़ुर्गों के मज़ारों के पास मस्जिदे ता'मीर करना और वहां इबादत करना भी बहुत पुराना मुबारक त़रीक़ा है क्यूंकि बेदरूस बादशाह ने अस्हाबे कह्फ़ के ग़ार के पास एक मस्जिद बना दी थी जिस का ज़िक्र कुरआने मजीद की सूरए कह्फ़ में है। (واللہ تعالٰی اعلم)

«38» सफ़रे मजमउ़ल बह़रैन की झलकियां

एक रिवायत है कि जब फ़िरऔ़न मअ़ अपने लश्कर के दरियाए नील में ग़र्क़ हो गया और ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام को बनी इस्राईल के साथ मिस्र में क़रार नसीब हुवा तो एक दिन मूसा عَلَیْہِ السَّلَام का **अल्लाह** तआला से इस तरह मुकालमा शुरूअ़ हुवा।

हज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام : ख़ुदावन्द ! तेरे बन्दों में सब से ज़ियादा तुझ को महबूब कौन सा बन्दा है ?

अल्लाह तआला : जो मेरा ज़िक्र करता है और मुझे कभी फ़रामोश न करे।

हज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام : सब से बेहतर फ़ैसला करने वाला कौन है ?

अल्लाह तआला : जो हक़ के साथ फ़ैसला करे और कभी भी ख़्वाहिशे इन्सानी की पैरवी न करे

हज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام : तेरे बन्दों में सब से ज़ियादा इल्म वाला कौन है ?

अल्लाह तआला : जो हमेशा अपने इल्म के साथ दूसरों से इल्म सीखता रहे ताकि इस त़रह़ उसे कोई ऐसी बात मिल जाए जो उसे हिदायत की त़रफ़ राहनुमाई करे या उस को हलाकत से बचा ले।

हज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام : अगर तेरे बन्दों में कोई मुझ से ज़ियादा इल्म वाला हो तो मुझे उस का पता बता दे ?

अल्लाह तआला : "ख़िज़्र" तुम से ज़ियादा इल्म वाले हैं।

हज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام : मैं उन्हें कहां तलाश करूं ?

अल्लाह तआला : साहि़ले समुन्दर पर चट्टान के पास।

हज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام : मैं वहां कैसे और किस त़रह़ पहुंचूं ?

अल्लाह तआला : तुम एक टोकरी में एक मछली ले कर सफ़र करो। जहां वोह मछली गुम हो जाए बस वहीं ख़िज़्र से तुम्हारी मुलाक़ात होगी।

(مدارک التنزیل، ج۳، ص۲۱۷، پ۱۵، الکھف:۶۰)

इस के बा'द ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام ने अपने ख़ादिम और शागिर्द ह़ज़रते यूशअ़ बिन नून बिन अफ़राईम बिन यूसुफ़ (عَلَیْہِمُ السَّلَام) को अपना

रफ़ीक़े सफ़र बना कर "**मजमउ़ल बह़रैन**" का सफ़र फ़रमाया। ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام चलते चलते जब बहुत दूर चले गए तो एक जगह सो गए। उसी जगह मछली टोकरी में से तड़प कर समुन्दर में कूद गई। और जिस जगह पानी में डूबी वहां पानी में एक सूराख़ बन गया। ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام नींद से बेदार हो कर चलने लगे। जब दोपहर के खाने का वक़्त हुवा तो आप ने अपने शागिर्द ह़ज़रते यूशअ़ बिन नून عَلَيْهِ السَّلَام से मछली त़लब फ़रमाई तो उन्हों ने अ़र्ज़ किया कि चट्टान के पास जहां आप सो गए थे, मछली कूद कर समुन्दर में चली गई और मैं आप को बताना भूल गया। आप ने फ़रमाया कि हमें तो उस जगह ही की तलाश थी। बहर ह़ाल फिर आप अपने क़दमों के निशानात को तलाश करते हुवे उस जगह पहुंच गए जहां ह़ज़रते ख़िज़्र عَلَيْهِ السَّلَام से मुलाक़ात की जगह बताई गई थी।

वहां पहुंच कर ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने देखा कि एक बुज़ुर्ग कपड़ों में लिपटे हुवे बैठे हैं। जब ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने उन को सलाम किया तो उन्हों ने तअ़ज्जुब से फ़रमाया कि इस ज़मीन में सलाम करने वाले कहां से आ गए? फिर उन्हों ने पूछा कि आप कौन हैं? तो आप ने फ़रमाया कि मैं "मूसा" हूं। तो उन्हों ने दरयाफ़्त किया कि कौन मूसा? क्या आप बनी इस्राईल के मूसा हैं? तो आप ने फ़रमाया कि जी हां! तो ह़ज़रते ख़िज़्र عَلَيْهِ السَّلَام ने कहा कि ऐ मूसा! मुझे **अल्लाह** तआ़ला ने एक ऐसा इ़ल्म दिया है कि जिस को आप नहीं जानते। और आप को **अल्लाह** तआ़ला ने ऐसा इ़ल्म दिया कि जिस को मैं नहीं जानता। मत़लब येह था कि मैं इ़ल्मे "**असरार**" जानता हूं। जिस का आप को इ़ल्म नहीं और आप "**इ़ल्मुश्शराएअ़**" जानते हैं जिस को मैं नहीं जानता।

फिर ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने फ़रमाया कि ऐ ख़िज़्र! क्या आप मुझे इस की इजाज़त देते हैं कि मैं आप के पीछे पीछे चलूं ताकि **अल्लाह** तआ़ला ने आप को जो उ़लूम दिये हैं आप कुछ मुझे भी ता'लीम दें।

तो ह़ज़रते ख़िज़्र عَلَیْہِ السَّلَام ने कहा कि आप मेरे साथ सब्र न कर सकेंगे। ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام ने फ़रमाया कि मैं ان شاءالله تعالیٰ सब्र करूंगा। और कभी भी कोई नाफ़रमानी नहीं करूंगा। ह़ज़रते ख़िज़्र عَلَیْہِ السَّلَام ने कहा कि शर्त़ येह है कि आप मुझ से किसी बात के मुतअ़ल्लिक़ कोई सुवाल न करें। यहां तक कि मैं ख़ुद आप को बता दूं। ग़रज़ इस अ़हदो मुआ़हदे के बा'द ह़ज़रते ख़िज़्र عَلَیْہِ السَّلَام ने ह़ज़रते मूसा और यूशअ़ बिन नून (عَلَیْہِمُ السَّلَام) को अपने साथ ले कर समुन्दर के किनारे किनारे चलना शुरूअ़ कर दिया। यहां तक कि एक कश्ती पर नज़र पड़ी। और कश्ती वालों ने इन तीनों साहि़बान को कश्ती पर सुवार कर लिया और कश्ती का किराया भी नहीं मांगा। जब येह लोग कश्ती में बैठ गए तो ह़ज़रते ख़िज़्र عَلَیْہِ السَّلَام ने अपने झोले में से कुलहाड़ी निकाली और कश्ती को फाड़ कर उस का एक तख़्ता निकाल कर समुन्दर में फेंक दिया। येह मन्ज़र देख कर ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام बरदाश्त न कर सके और ह़ज़रते ख़िज़्र عَلَیْہِ السَّلَام से येह सुवाल कर बैठे कि

اَخَرَقْتَهَا لِتُغْرِقَ اَهْلَهَا ۚ لَقَدْ جِئْتَ شَیْــٴًـا اِمْرًا ﴿۷۱﴾ (پ ۱۵، الکھف: ۷۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- क्या तुम ने इसे इस लिये चीरा कि इस के सुवारों को डुबा दो बेशक येह तुम ने बुरी बात की।

ह़ज़रते ख़िज़्र عَلَیْہِ السَّلَام ने कहा कि क्या मैं ने आप से कह नहीं दिया था कि आप मेरे साथ सब्र न कर सकेंगे। ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام ने मा'ज़िरत करते हुवे फ़रमाया कि मैं ने भूल कर सुवाल कर दिया। लिहाज़ा आप मेरी भूल पर गिरिफ़्त न कीजिये और मेरे काम में मुश्किल न डालिये।

फिर येह ह़ज़रात कुछ दूर आगे को चले। तो ह़ज़रते ख़िज़्र عَلَیْہِ السَّلَام ने एक नाबालिग़ बच्चे को देखा जो अपने मां बाप का इकलौता बेटा था। ह़ज़रते ख़िज़्र عَلَیْہِ السَّلَام ने गला दबा कर और ज़मीन पर पटक कर उस बच्चे को क़त्ल कर डाला ! येह होशरुबा ख़ूनी मन्ज़र देख कर ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام में सब्र की ताब न रही और आप ने ज़रा सख़्त लहजे में ह़ज़रते ख़िज़्र عَلَیْہِ السَّلَام से कह दिया :

اَقَتَلْتَ نَفْسًا زَكِيَّةًۢ بِغَيْرِ نَفْسٍ ؕ لَقَدْ جِئْتَ شَيْـًٔا نُّكْرًا ﴿۷۴﴾ (پ ۱۵، الکھف:۷۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- मूसा ने कहा क्या तुम ने एक सुथरी जान बे किसी जान के बदले क़त्ल कर दी बेशक तुम ने बहुत बुरी बात की।

हज़रते ख़िज़्र عَلَيْهِ السَّلَام ने फिर येही जवाब दिया कि क्या मैं ने आप से येह नहीं कह दिया था कि आप हरगिज़ मेरे साथ सब्र न कर सकेंगे। हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने फ़रमाया कि अच्छा अब अगर इस के बा'द मैं आप से कुछ पूछूं तो आप मेरे साथ न रहियेगा। इस में शक नहीं कि मेरी त़रफ़ से आप का उ़ज़्र पूरा हो चुका है।

फिर इस के बा'द इन हज़रात ने साथ साथ चलना शुरूअ़ कर दिया। यहां तक कि येह लोग एक गाऊं में पहुंचे और गाऊं वालों से खाना त़लब किया। मगर गाऊं वालों में से किसी ने भी इन सालेह़ीन की दा'वत नहीं की। फिर इन दोनों ने गाऊं में एक गिरती हुई दीवार पाई तो हज़रते ख़िज़्र عَلَيْهِ السَّلَام ने इस्मे आ'ज़म पढ़ कर दीवार सीधी कर दी। हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام गाऊं वालों की बद अख़्लाक़ी से बेज़ार थे ही, आप को ग़ुस्सा आ गया, बरदाश्त न कर सके और येह फ़रमाया :

لَوْ شِئْتَ لَتَّخَذْتَ عَلَيْهِ اَجْرًا ﴿۷۷﴾ (پ ۱۶، الکھف:۷۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- तुम चाहते तो इस पर कुछ मज़दूरी ले लेते।

येह सुन कर हज़रते ख़िज़्र عَلَيْهِ السَّلَام ने कह दिया कि अब मेरे और आप के दरमियान जुदाई है और जिन चीज़ों को देख कर आप सब्र न कर सके उन का राज़ अब मैं आप को बता दूंगा। सुनिये जो कश्ती मैं ने फाड़ डाली वोह चन्द मिस्कीनों की थी जिस की आमदनी से वोह लोग गुज़र बसर करते थे और आगे एक ज़ालिम बादशाह रहता था जो सालिम और अच्छी कश्तियों को छीन लिया करता था और ऐबदार कश्तियों को छोड़ दिया करता था तो मैं ने क़स्दन एक तख़्ता निकाल कर उस कश्ती को ऐबदार कर दिया ताकि ज़ालिम बादशाह के ग़ज़ब से महफ़ूज़ रहे। और जिस लड़के को मैं ने क़त्ल कर दिया उस के वालिदैन बहुत नेक और सालेह़ थे। और येह लड़का पैदाइशी काफ़िर था और वालिदैन उस लड़के

से बे पनाह महब्बत करते थे और उस की हर ख़्वाहिश पूरी करते थे तो हमें येह ख़ौफ़ व ख़तरा नज़र आया कि वोह लड़का कहीं अपने वालिदैन को भी कुफ़्र में न मुब्तला कर दे। इस लिये मैं ने उस लड़के को क़त्ल कर के उस के वालिदैन को कुफ़्र से बचा लिया। अब उस के वालिदैन सब्र करेंगे तो अल्लाह तआला उस लड़के के बदले में उस के वालिदैन को एक बेटी अता फ़रमाएगा, जो एक नबी से बियाही जाएगी और उस के शिकम से एक नबी पैदा होगा जो एक उम्मत को हिदायत करेगा। और गिरती हुई दीवार को सीधी करने का राज़ येह था कि येह दीवार दो यतीम बच्चों की थी जिस के नीचे इन दोनों का ख़ज़ाना था और इन दोनों का बाप एक सालेह और नेक आदमी था। अगर अभी येह दीवार गिर जाती तो इन यतीमों का ख़ज़ाना गाऊं वाले ले लेते। इस लिये आप के परवर दगार ने येह चाहा कि येह दोनों यतीम बच्चे जवान हो कर अपना ख़ज़ाना खुद निकाल लें, इस लिये अभी मैं ने दीवार को गिरने नहीं दिया। येह खुदावन्दे तआला की इन बच्चों पर मेहरबानी है और ऐ मूसा عَلَيْهِ السَّلَام आप यक़ीन व इत्मीनान रखें कि मैं ने जो कुछ भी किया है अपनी तरफ़ से नहीं किया है बल्कि मैं ने येह सब कुछ अल्लाह तआला के हुक्म से किया है। इस के बा'द हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام अपने वतन वापस चले आए।

(مدارک التنزیل، ج۳،ص۲۱۹۔۲۲۱،پ۱۵۔۱۶،الکهف ملخصاً)

हज़रते ख़िज़्र عَلَيْهِ السَّلَام का तआरुफ़ :– हज़रते ख़िज़्र عَلَيْهِ السَّلَام की कुन्यत अबुल अब्बास और नाम "बलया" और उन के वालिद का नाम "मलकान" है। "बलया" सुरयानी ज़बान का लफ़्ज़ है । अरबी ज़बान में इस का तर्जमा "अहमद" है। "ख़िज़्र" इन का लक़ब है और इस लफ़्ज़ को तीन तरह से पढ़ सकते हैं। ख़ज़िर, ख़ज़्र, ख़िज़्र,। "ख़िज़्र" के मा'ना सब्ज़ चीज़ के हैं। येह जहां बैठते थे वहां आप की बरकत से हरी हरी घास उग जाती थी इस लिये लोग इन को "**ख़िज़्र**" कहने लगे।

येह बहुत ही आली ख़ानदान हैं। और इन के आबाओ अजदाद बादशाह थे। बा'ज़ आरिफ़ीन ने फ़रमाया कि जो मुसलमान इन का और

इन के वालिद का नाम और इन की कुन्यत याद रखेगा, ان شاء اللہ تعالی उस का ख़ातिमा ईमान पर होगा। (صاوی، ج۴،ص۱۲۰۷،پ۱۵،الکھف:۲۵)

हज़रते ख़िज़्र عَلَیْہِ السَّلَام **ज़िन्दा वली हैं :-** बा'ज़ लोगों ने हज़रते ख़िज़्र عَلَیْہِ السَّلَام को नबी बताया है लेकिन अकषर उ़-लमा का क़ौल येह है कि आप वली हैं। (جلالین،ص۲۴۹، پ۱۵، الکھف:۲۵)

और जमहूर उ़-लमा का येही क़ौल है कि आप अब भी ज़िन्दा हैं और क़ियामत तक ज़िन्दा रहेंगे क्यूंकि आप ने आबे ह़यात पी लिया है। आप के गिर्द ब कषरत औलियाए किराम जम्अ़ रहते हैं और फ़ैज़ पाते हैं। चुनान्चे, आ़रिफ़ बिल्लाह ह़ज़रते सय्यिद बिकरी ने अपने क़सीदे "दर्दुल सह़र" में आप के बारे में येह तह़रीर फ़रमाया है कि

حَیٌّ وَحَقِّکَ لَمْ یَقُلْ بِوَفَاتِہٖ اِلَّا الَّذِیْ لَمْ یَلْقَ نُوْرَ جَمَالِہٖ
فَعَلَیْہِ مِنِّیْ کُلَّمَا ھَبَّ الصَّبَا اَزْکٰی سَلَامٍ طَابَ فِیْ اِرْسَالِہٖ

तेरे ह़क़ की क़सम ! कि ह़ज़रते ख़िज़्र عَلَیْہِ السَّلَام ज़िन्दा हैं उन की वफ़ात का क़ाइल वोही होगा जो उन के नूरे जमाल से मुलाक़ात नहीं कर सका है तो मेरी त़रफ़ से उन पर जब जब बादे सबा चले सुथरा सलाम हो कि पाकीज़गी के साथ बादे सबा उस को पहुंचाए।

ह़ज़रते ख़िज़्र عَلَیْہِ السَّلَام हुज़ूर ख़ातमुन्नबिय्यीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ियारत से मुशर्रफ़ हुवे हैं। इस लिये येह सह़ाबी भी हैं।

(صاوی، ج۴،ص۱۲۰۸،پ۱۵، الکھف:۲۵)

﴾39﴿ ज़ुल क़रनैन और याजूज व माजूज

ज़ुल क़रनैन का नाम "सिकन्दर" है। येह ह़ज़रते ख़िज़्र عَلَیْہِ السَّلَام के ख़ाला ज़ाद भाई हैं। ह़ज़रते ख़िज़्र عَلَیْہِ السَّلَام इन के वज़ीर और जंगलों में अ़लमबरदार रहे हैं। येह ह़ज़रते साम बिन नूह़ عَلَیْہِ السَّلَام की अवलाद में से हैं और येह एक बुढ़िया के इकलौते फ़रज़न्द हैं। ह़ज़रते इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلَیْہِ السَّلَام के दस्ते ह़क़ परस्त पर इस्लाम क़बूल कर के मुद्दतों उन की

सोहबत में रहे और हज़रते इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلَيْهِ السَّلَام ने इन को कुछ वसिय्यतें भी फ़रमाई थीं। सहीह़ क़ौल येही है कि येह नबी नहीं हैं बल्कि एक बन्दए सालेह़ हैं जो विलायत के शरफ़ से सरफ़राज़ हैं।

(صاوی، ج۴، ص۱۲۱۴، پ۱۶، الکھف:۸۳)

ज़ुल क़रनैन क्यूं कहलाए ? :- हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने फ़रमाया कि येह ज़ुल क़रनैन (दो सींगों वाले) के लक़ब से इस लिये मश्हूर हो गए कि इन्हों ने दुन्या के दो सींगों या'नी दोनों किनारों का चक्कर लगाया था। और बा'ज़ का क़ौल है कि इन के दौर में लोगों के दो क़रन ख़त्म हो गए सो बरस का एक क़रन होता है। और बा'ज़ कहते हैं कि इन के दो गैसू थे इस लिये ज़ुल क़रनैन कहलाते हैं। और येह भी एक क़ौल है कि इन के ताज पर दो सींग बने हुवे थे। और बा'ज़ इस के क़ाइल हैं कि ख़ुद इन के सर पर दोनों त़रफ़ उभार था जो सींग जैसा नज़र आता था और बा'ज़ों ने येह वजह बताई कि चूंकि इन के बाप और मां नजीबुत्तरफ़ैन और शरीफ़ ज़ादे थे इस लिये लोग इन को ज़ुल क़रनैन कहने लगे। (واللہ تعالٰی اعلم)

(مدارک التنزیل، ج۳، ص۲۲۲، پ۱۶، الکھف:۸۳)

अल्लाह तआला ने उन को तमाम रूए ज़मीन की बादशाही अ़ता फ़रमाई थी। दुन्या में कुल चार बादशाह ऐसे हुवे हैं जिन को पूरी ज़मीन की पूरी बादशाही मिली। इन में दो मोअमिनीन थे और दो काफ़िर। मोमिन तो **हज़रते सुलैमान** عَلَيْهِ السَّلَام और **ज़ुल क़रनैन** हैं और काफ़िर एक **बख़्ते नस्र** और दूसरा **नमरूद** है। और तमाम रूए ज़मीन के एक पांचवें बादशाह इस उम्मत में होने वाले हैं जिन का इस्मे गिरामी हज़रते इमाम महदी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ है। (صاوی، ج۴، ص۱۲۱۶، پ۱۶، الکھف:۸۳)

ज़ुल क़रनैन के तीन सफ़र :- क़ुरआने मजीद में हज़रते ज़ुल क़रनैन के तीन सफ़रों का ह़ाल बयान हुवा है जो सूरए कह्फ़ में है। हम क़ुरआने मजीद ही से इन तीनों सफ़रों का ह़ाल तह़रीर करते हैं, जिन की रूदाद बहुत ही अ़जीब और इब्रत ख़ेज़ है।

पहला सफ़र :- हज़रते ज़ुल क़रनैन ने पुरानी किताबों में पढ़ा था कि साम बिन नूह عَلَيْهِ السَّلَام की अवलाद में से एक शख़्स आबे हयात के चश्मे से पानी पी लेगा तो उस को मौत न आएगी। इस लिये हज़रते ज़ुल क़रनैन ने मग़रिब का सफ़र किया। आप के साथ हज़रते ख़िज़्र عَلَيْهِ السَّلَام भी थे वोह तो आबे हयात के चश्मे पर पहुंच गए और उस का पानी भी पी लिया मगर हज़रते ज़ुल क़रनैन के मुक़द्दर में नहीं था, वोह महरूम रह गए। इस सफ़र में आप जानिबे मग़रिब रवाना हुवे तो जहां तक आबादी का नामो निशान है वोह सब मन्ज़िलें तै कर के आप एक ऐसे मक़ाम पर पहुंचे कि उन्हें सूरज ग़ुरूब के वक़्त ऐसा नज़र आया कि वोह एक सियाह चश्मे में डूब रहा है। जैसा कि समुन्दरी सफ़र करने वालों को आफ़्ताब समुन्दर के काले पानी में डूबता नज़र आता है। वहां उन को एक ऐसी क़ौम मिली जो जानवरों की खाल पहने हुवे थी। इस के सिवा कोई दूसरा लिबास उन के बदन पर नहीं था और दरियाई मुर्दा जानवरों के सिवा उन की ग़िज़ा का कोई दूसरा सामान नहीं था। येह क़ौम "**नासिक**" कहलाती थी। हज़रते ज़ुल क़रनैन ने देखा कि इन के लश्कर बेशुमार हैं और येह लोग बहुत ही ताक़तवर और जंग जू हैं। तो हज़रते ज़ुल क़रनैन ने इन लोगों के गिर्द अपनी फ़ौजों का घेरा डाल कर इन लोगों को बेबस कर दिया। चुनान्चे, कुछ तो मुशर्रफ़ ब ईमान हो गए और कुछ आप की फ़ौजों के हाथों मक़्तूल हो गए।

दूसरा सफ़र :- फिर आप ने मशरिक़ का सफ़र फ़रमाया यहां तक कि जब सूरज तुलूअ़ होने की जगह पहुंचे तो येह देखा कि वहां एक ऐसी क़ौम है जिन के पास कोई इमारत और मकानात नहीं हैं। उन लोगों का येह हाल था कि सूरज तुलूअ़ होने के वक़्त येह लोग ज़मीन की ग़ारों में छुप जाते थे। और सूरज ढल जाने के बा'द ग़ारों से निकल कर अपनी रोज़ी की तलाश में लग जाते थे। येह लोग क़ौमे "**मन्सक**" कहलाते थे। हज़रते ज़ुल क़रनैन ने इन लोगों के मुक़ाबले में भी लश्कर आराई की और जो लोग ईमान लाए उन के साथ बेहतरीन सुलूक किया और जो अपने कुफ़्र पर अड़े रहे उन को तहे तैग़ कर दिया।

तीसरा सफ़र :– फिर आप ने शिमाल की जानिब सफ़र फ़रमाया यहां तक कि "सदीन" (दो पहाड़ों के दरमियान) में पहुंचे तो वहां की आबादी की अ़जीबो ग़रीब ज़बान थी। उन लोगों के साथ इशारों से ब मुश्किल बात चीत की जा सकती थी। उन लोगों ने ह़ज़रते ज़ुल क़रनैन से याजूज माजूज के मज़ालिम की शिकायत की और आप की मदद के त़ालिब हुवे।

याजूज व माजूज :– येह याफ़ष बिन नूह़ عَلَيْهِ السَّلَام की अवलाद में से एक फ़सादी गुरौह है। और इन लोगों की ता'दाद बहुत ही ज़ियादा है। येह लोग बला के जंग जू ख़ूंख़्वार और बिल्कुल ही वह़शी और जंगली हैं जो बिल्कुल जानवरों की त़रह़ रहते हैं। मौसिमे रबीअ़ में येह लोग अपने ग़ारों से निकल कर तमाम खेतियां और सब्ज़ियां खा जाते थे। और खुश्क चीज़ों को लाद कर ले जाते थे। आदमियों और जंगली जानवरों यहां तक कि सांप, बिच्छू, गिरगिट और हर छोटे बड़े जानवर को खा जाते थे।

सद्दे सिकन्दरी :– ह़ज़रते ज़ुल क़रनैन से लोगों ने फ़रियाद की, कि आप हमें याजूज व माजूज के शर और उन की ईज़ा रसानियों से बचाइये और इन लोगों ने इन के इवज़ कुछ माल देने की भी पेशकश की तो ह़ज़रते ज़ुल क़रनैन ने फ़रमाया कि मुझे तुम्हारे माल की ज़रूरत नहीं है। अल्लाह तआ़ला ने मुझे सब कुछ दिया है। बस तुम लोग जिस्मानी मेह़नत से मेरी मदद करो। चुनान्चे, आप ने दोनों पहाड़ों के दरमियान बुन्याद खुदवाई। जब पानी निकल आया तो इस पर पिघलाए हुवे तांबे के गारे से पथ्थर जमाए गए और लोहे के तख़्ते नीचे ऊपर चुन कर उन के दरमियान में लकड़ी और कोइला भरवा दिया। और उस में आग लगवा दी। इस त़रह़ येह दीवार पहाड़ की बुलन्दी तक ऊंची कर दी गई और दोनों पहाड़ों के दरमियान कोई जगह न छोड़ी गई। फिर पिघलाया हुवा तांबा दीवार में पिला दिया गया जो सब मिल कर बहुत ही मज़बूत़ और निहायत मुस्तह़्कम दीवार बन गई। (خزائن العرفان،ص۵۴۵۔۵۴۷،پ۱۶، الکھف:۸۶تا۹۸)

कु़रआने मजीद की सूरए कहफ़ में حَتّٰۤى اِذَا بَلَغَ مَغْرِبَ الشَّمْسِ से خُبْرًا ۝۹۱ तक पहले सफ़र का ज़िक्र है फिर ثُمَّ اَتْبَعَ سَبَبًا ۝۸۹ से مِنْ اَمْرِنَا يُسْرًا ۝۸۸ तक दूसरे सफ़र का तज़्किरा है और ثُمَّ اَتْبَعَ سَبَبًا ۝۹۲ से وَ كَانَ وَعْدُ رَبِّيْ حَقًّا ۝۹۸ तक तीसरे सफ़र की रूदाद है।

सद्दे सिकन्दरी कब टूटेगी ? :- ह़दीष शरीफ़ में है कि याजूज व माजूज रोज़ाना इस दीवार को तोड़ते हैं और दिन भर जब मेह़नत करते करते इस को तोड़ने के क़रीब हो जाते हैं तो इन में से कोई कहता है कि अब चलो बाक़ी को कल तोड़ डालेंगे। दूसरे दिन जब वोह लोग आते हैं तो ख़ुदा के हुक्म से वोह दीवार पहले से भी ज़ियादा मज़बूत़ हो जाती है जब इस दीवार के टूटने का वक़्त आएगा तो इन में से कोई कहेगा कि अब चलो। ان شاء الله تعالٰى कल इस दीवार को तोड़ डालेंगे। इन लोगों के ان شاء الله تعالٰى कहने की बरकत और इस कलिमे का येह षमरा होगा कि दूसरे दिन दीवार टूट जाएगी। येह क़ियामत क़रीब होने का वक़्त होगा। दीवार टूटने के बा'द याजूज व माजूज निकल पड़ेंगे और ज़मीन में हर त़रफ़ फ़ितना व फ़साद और क़त्लो ग़ारत करेंगे। चश्मों और तालाबों का पानी पी डालेंगे और जानवरों और दरख़्तों को खा डालेंगे। ज़मीन पर हर जगहों में फेल जाएंगे। मगर मक्कए मुकर्रमा व मदीनए त़य्यिबा व बैतुल मुक़द्दस इन तीनों शहरों में येह दाख़िल न हो सकेंगे। फिर ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام की दुआ़ से उन लोगों की गर्दनों में कीड़े पैदा हो जाएंगे और येह सब के सब हलाक हो जाएंगे। कु़रआने मजीद में है :

حَتّٰۤى اِذَا فُتِحَتْ يَاْجُوْجُ وَ مَاْجُوْجُ وَ هُمْ مِّنْ كُلِّ حَدَبٍ يَّنْسِلُوْنَ ۝۹۶ (پ۱۷، الانبياء:۹۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- यहां तक कि जब खोले जाएंगे याजूज व माजूज और वोह हर बुलन्दी से ढलकते होंगे।

﴾40﴿ शजरे मरयम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا और नहरे जिब्रील عَلَیْہِ السَّلَام

हज़रते ईसा عَلَیْہِ السَّلَام हज़रते बीबी मरयम के शिकम से बिग़ैर बाप के पैदा हुवे हैं। जब विलादत का वक़्त आया तो हज़रते बीबी मरयम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا आबादी से कुछ दूर एक खजूर के सूखे दरख़्त के नीचे तन्हाई में बैठ गईं और उसी दरख़्त के नीचे हज़रते ईसा عَلَیْہِ السَّلَام की विलादत हुई। चूंकि आप बिग़ैर बाप के कुंवारी पाक मरयम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के शिकम से पैदा हुवे। इस लिये हज़रते मरयम बड़ी फ़िक्रमन्द और बेहद उदास थीं और बदगोई व ता'ना ज़नी के ख़ौफ़ से बस्ती में नहीं आ रही थीं। और एक ऐसी सुनसान ज़मीन में खजूर के सूखे दरख़्त के नीचे बैठी हुई थीं कि जहां खाने पीने का कोई सामान नहीं था। नागहां हज़रते जिब्रील عَلَیْہِ السَّلَام उतर पड़े और अपनी एड़ी ज़मीन पर मार कर एक नहर जारी कर दी और अचानक खजूर का सूखा दरख़्त हरा भरा हो कर पुख़्ता फल लाया। और हज़रते जिब्रील عَلَیْہِ السَّلَام ने हज़रते मरयम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को पुकार कर उन से यूं कलाम फ़रमाया :

فَنَادٰىهَا مِنْ تَحْتِهَاۤ اَلَّا تَحْزَنِیْ قَدْ جَعَلَ رَبُّكِ تَحْتَكِ سَرِیًّا ﴿۲۴﴾ وَ هُزِّیْۤ اِلَیْكِ بِجِذْعِ النَّخْلَةِ تُسٰقِطْ عَلَیْكِ رُطَبًا جَنِیًّا ﴿۲۵﴾ فَكُلِیْ وَ اشْرَبِیْ وَ قَرِّیْ عَیْنًا ۚ (پ۱۶، مریم ۲۴-۲۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :– तो उसे उस के तले से पुकारा कि ग़म न खा बेशक तेरे रब ने तेरे नीचे एक नहर बहा दी है और खजूर की जड़ पकड़ कर अपनी तरफ़ हिला तुझ पर ताज़ी पकी खजूरें गिरेंगी तो खा और पी और आंख ठन्डी रख।

सूखे दरख़्त में फल लग जाना और नहर का अचानक जारी होना, बिलाशुबा येह दोनों हज़रते मरयम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की करामात हैं।

दर्से हिदायत :- इस से पहले के सफ़्हात में आप पढ़ चुके हैं कि ह़ज़रते बीबी मरयम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا जब बच्ची थीं और बैतुल मुक़द्दस की मेह़राब में इ़बादत करती थीं तो बिग़ैर किसी मेह़नत के वहां बिला मौसिम के फल मिला करते थे। मगर ह़ज़रते ईसा عَلَیْہِ السَّلَام के पैदाइश के बा'द पकी हुई खजूरें तो ह़ज़रते मरयम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को ज़रूर मिलीं। लेकिन ख़ुदावन्दे तआ़ला का हुक्म हुवा कि खजूर की जड़ें हिलाओ तब तुम को खजूरें मिलेंगी। इस से येह सबक़ मिलता है कि आदमी जब तक साह़िबे अवलाद नहीं होता तो उस को बिला मेह़नत के भी रोज़ी मिल जाया करती है और वोह कहीं न कहीं खा पी लिया करता है। मगर जब आदमी साह़िबे अवलाद हो जाए तो उस पर लाज़िम है कि मेह़नत कर के रोज़ी ह़ासिल करे। देखो ह़ज़रते मरयम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا जब तक साह़िबे अवलाद नहीं हुई थीं तो बिला किसी मेह़नत व मशक़्क़त के उन के मेह़राबे इ़बादत में फलों की रोज़ी मिला करती थी। मगर जब उन के फ़रज़न्द ह़ज़रते ईसा عَلَیْہِ السَّلَام पैदा हो गए तो अब ख़ुदा का येह हुक्म हुवा कि खजूर के दरख़्त को हिलाओ और मेह़नत करो और इस के बा'द खजूरें मिलेंगी। (واللہ تعالٰی اعلم)

भलाई की मोहर और गुनाह मुआ़फ़

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : जो येह दुआ़ मजलिस से उठते वक़्त तीन मरतबा पढ़े तो उस की ख़त़ाएं मिटा दी जाती हैं और जो मजलिसे ख़ैर व मजलिसे ज़िक्र में पढ़े तो उस के लिये ख़ैर (या'नी भलाई) पर मोहर लगा दी जाएगी। वोह दुआ़ येह है :

سُبْحٰنَکَ اللّٰھُمَّ وَبِحَمْدِکَ لَا اِلٰہَ اِلَّا اَنْتَ اَسْتَغْفِرُکَ وَاَتُوْبُ اِلَیْکَ.

(फ़ैज़ाने सुन्नत, जि. 1, स. 176) (ابو داؤد شریف کتاب الادب ص ٦٧٤ ج ٢)

﴾41﴿ हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام की पहली तक़रीर

जब हज़रते मरयम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام को गोद में ले कर बनी इस्राईल की बस्ती में तशरीफ़ लाईं तो क़ौम ने आप पर बदकारी की तोहमत लगाई। और लोगों ने कहना शुरूअ़ कर दिया कि ऐ मरयम ! तुम ने येह बहुत बुरा काम किया। ह़ालांकि तुम्हारे वालिदैन में तो कोई ख़राबी नहीं थी। और तुम्हारी मां भी बदकार नहीं थी। बिग़ैर शोहर के तुम्हारे लड़का कैसे हो गया ? जब क़ौम ने बहुत ज़ियादा त़ा'ना ज़नी और बदगोई की तो हज़रते मरयम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا ख़ुद तो ख़ामोश रहीं मगर इरशाद किया कि इस बच्चे से तुम लोग सब कुछ पूछ लो। तो लोगों ने कहा कि हम इस बच्चे से क्या और क्यूं कर और किस त़रह़ गुफ़्त्गू करें ? येह तो अभी बच्चा है जो पालने में पड़ा हुवा है। क़ौम का येह कलाम सुन कर हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام ने तक़रीर शुरूअ़ कर दी। जिस का ज़िक्र अल्लाह तआला ने कुरआने मजीद में यूं फ़रमाया है :

قَالَ اِنِّیْ عَبْدُ اللّٰهِ ۛ اٰتٰىنِیَ الْكِتٰبَ وَ جَعَلَنِیْ نَبِیًّا ۙ﴿۳۰﴾ وَّ جَعَلَنِیْ مُبٰرَكًا
اَیْنَ مَا كُنْتُ ۪ وَ اَوْصٰنِیْ بِالصَّلٰوةِ وَ الزَّكٰوةِ مَا دُمْتُ حَیًّا ۖ﴿۳۱﴾ وَّ بَرًّۢا
بِوَالِدَتِیْ ۫ وَ لَمْ یَجْعَلْنِیْ جَبَّارًا شَقِیًّا ﴿۳۲﴾ وَ السَّلٰمُ عَلَیَّ یَوْمَ وُلِدْتُّ وَ
یَوْمَ اَمُوْتُ وَ یَوْمَ اُبْعَثُ حَیًّا ﴿۳۳﴾ (پ۱٦، مریم:۳۰-۳۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- बच्चे ने फ़रमाया मैं हूं अल्लाह का बन्दा उस ने मुझे किताब दी और मुझे ग़ैब की ख़बरें बताने वाला (नबी) किया और उस ने मुझे मुबारक किया मैं कहीं होऊं और मुझे नमाज़ व ज़कात की ताकीद फ़रमाई जब तक जियूं। और अपनी मां से अच्छा सुलूक करने वाला और मुझे ज़बरदस्त बद बख़्त न किया और वोही सलामती मुझ पर जिस दिन मैं पैदा हुवा और जिस दिन मरूंगा और जिस दिन ज़िन्दा उठाया जाऊंगा।

दर्से हिदायत :- ﴾1﴿ येह हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام का मो'जिज़ा है कि पैदा होते ही फ़सीह़ ज़बान में ऐसी जामेअ़ तक़रीर फ़रमाई। इस तक़रीर में सब

से पहले आप ने अपने को ख़ुदा का बन्दा कहा। ताकि कोई उन्हें ख़ुदा या ख़ुदा का बेटा न कह सके। क्यूंकि लोग आइन्दा आप पर तोहमत लगाने वाले थे। और येह तोहमत अल्लाह तआ़ला पर लगती थी। इस लिये आप के मन्सबे रिसालत का येही तक़ाज़ा था कि अपनी वालिदा पर लगाई जाने वाली तोहमत को रफ़्अ़ करने से पहले उस तोहमत को दफ़्अ़ करें जो अल्लाह तआ़ला पर लगाई जाने वाली थी। अल्लाहु अक्बर ! सच है ख़ुदावन्दे क़ुद्दूस जिस को नबुव्वत के शरफ़ से नवाज़ता है यक़ीनन उस की विलादत निहायत ही पाक और त़य्यिबो त़ाहिर होती है और बचपन ही से उस की नबुव्वत के आ'ला आषार ज़ाहिर होने लगते हैं।

﴾2﴿ सूरए मरयम के इस रुकूअ़ में अल्लाह तआ़ला ने ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام का पूरा ज़िक्र मीलाद शरीफ़ में बयान फ़रमाया है और आख़िर में सलाम का ज़िक्र है। इस से मा'लूम हुवा कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का मीलाद पढ़ कर आख़िर में सलातो सलाम पढ़ना येह ख़ुद अल्लाह तआ़ला की मुक़द्दस सुन्नत है और येही अहले सुन्नत व जमाअ़त का मुबारक अ़मल है।

﴾3﴿ ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام की मज़्कूरा बाला तक़रीर से मा'लूम हुवा कि नमाज़, ज़कात और मां-बाप के साथ हुस्ने सुलूक येह ऐसे फ़राइज़ हैं जो ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام की शरीअ़त में भी फ़र्ज़ थे।

﴾42﴿ ह़ज़रते इदरीस عَلَيْهِ السَّلَام

आप का नाम "अख़नूख़" है। आप ह़ज़रते नूह़ عَلَيْهِ السَّلَام के वालिद के दादा हैं। ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام के बा'द आप ही पहले रसूल हैं। आप के वालिद ह़ज़रते शीष बिन आदम عليهما السلام हैं। सब से पहले जिस शख़्स ने क़लम से लिखा वोह आप ही हैं। कपड़ों के सीने और सिले हुवे कपड़े पहनने की इब्तिदा भी आप ही से हुई। इस से पहले लोग जानवरों की खालें पहनते थे। सब से पहले हथियार बनाने वाले, तराज़ू और पैमाने क़ाइम करने वाले और इल्मे नुजूम व ह़िसाब में नज़र

फ़रमाने वाले भी आप ही हैं। येह सब काम आप ही से शुरूअ़ हुवे। **अल्लाह** तआ़ला ने आप पर तीस सह़ीफ़े नाज़िल फ़रमाए, और आप **अल्लाह** तआ़ला की किताबों का ब कषरत दर्स दिया करते थे। इस लिये आप का लक़ब "इदरीस" हो गया, और आप का येह लक़ब इस क़दर मश्हूर हो गया कि बहुत से लोगों को आप का अस्ली नाम मा'लूम ही नहीं। और कुरआने मजीद में भी आप का नाम "**इदरीस**" ही ज़िक्र किया गया है।

आप को **अल्लाह** तआ़ला ने आस्मान पर उठा लिया है। बुख़ारी व मुस्लिम की ह़दीष में है कि हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने शबे मे'राज ह़ज़रते इदरीस عَلَيْهِ السَّلَام को चौथे आस्मान पर देखा। ह़ज़रते का'बुल अह़बार رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه वग़ैरा से मरवी है। ह़ज़रते इदरीस عَلَيْهِ السَّلَام ने मलकुल मौत से फ़रमाया कि मौत का मज़ा चखना चाहता हूं, कैसा होता है? तुम मेरी रूह़ क़ब्ज़ कर के दिखाओ। मलकुल मौत ने इस हुक्म की ता'मील की और रूह़ क़ब्ज़ कर के उसी वक़्त आप की त़रफ़ लौटा दी और आप ज़िन्दा हो गए। फिर आप ने फ़रमाया कि अब मुझे जहन्नम दिखाओ ताकि ख़ौफ़े इलाही ज़ियादा हो। चुनान्चे, येह भी किया गया जहन्नम को देख कर आप ने दारोग़ए जहन्नम से फ़रमाया कि दरवाज़ा खोलो, मैं उस दरवाज़े से गुज़रना चाहता हूं। चुनान्चे, ऐसा ही किया गया और आप इस पर से गुज़रे। फिर आप ने मलकुल मौत से फ़रमाया कि मुझे जन्नत दिखाओ, वोह आप को जन्नत में ले गए। आप दरवाज़ों को खुलवा कर जन्नत में दाख़िल हुवे। थोड़ी देर इन्तिज़ार के बा'द मलकुल मौत ने कहा कि अब आप अपने मक़ाम पर तशरीफ़ ले चलिये। आप ने फ़रमाया कि अब मैं यहां से कहीं नहीं जाऊंगा। **अल्लाह** तआ़ला ने फ़रमाया है कि كُلُّ نَفْسٍ ذَآئِقَةُ الْمَوْتِ तो मौत का मज़ा मैं चख ही चुका हूं और **अल्लाह** तआ़ला ने येह फ़रमाया है कि وَاِنْ مِّنْكُمْ اِلَّا وَارِدُهَا कि हर शख़्स को जहन्नम पर गुज़रना है तो मैं गुज़र चुका। अब मैं जन्नत में पहुंच

गया और जन्नत में पहुंचने वालों के लिये खुदावन्दे कुद्दूस ने येह फ़रमाया है कि وَمَا هُمْ مِّنْهَا بِمُخْرَجِيْنَ कि जन्नत में दाख़िल होने वाले जन्नत से निकाले नहीं जाएंगे। अब मुझे जन्नत से चलने के लिये क्यूं कहते हो ? अल्लाह तआला ने मलकुल मौत को वह्य भेजी कि हज़रते इदरीस (عَلَيْهِ السَّلَام) ने जो कुछ किया मेरे इज़्न से किया और वोह मेरे ही इज़्न से जन्नत में दाख़िल हुवे। लिहाज़ा तुम उन्हें छोड़ दो। वोह जन्नत ही में रहेंगे। चुनान्चे, हज़रते इदरीस عَلَيْهِ السَّلَام आस्मानों के ऊपर जन्नत में हैं और ज़िन्दा हैं। (خزائن العرفان، ص٥٥٦۔٥٥٧، مريم:٥٦۔٥٨)

हज़रते इदरीस عَلَيْهِ السَّلَام के आस्मानों पर उठाए जाने और इन को मिलने वाली ने'मतों का मुख़्तसर और इजमाली तज़्किरा कुरआने मजीद की सूरए मरयम में है :

وَاذْكُرْ فِي الْكِتٰبِ اِدْرِيْسَ ۫ اِنَّهٗ كَانَ صِدِّيْقًا نَّبِيًّا ۟ۙ وَّرَفَعْنٰهُ مَكَانًا عَلِيًّا ۝
اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ اَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ مِّنَ النَّبِيّٖنَ مِنْ ذُرِّيَّةِ اٰدَمَ ۗ (پ١٦، مريم:٥٦۔٥٨)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :–और किताब में इदरीस को याद करो बेशक वोह सिद्दीक़ था ग़ैब की ख़बरें देता और हम ने उसे बुलन्द मकान पर उठा लिया येह हैं जिन पर अल्लाह ने एहसान किया ग़ैब की ख़बरें बताने वालों में से आदम की अवलाद से।

दर्से हिदायत :– हज़रते इदरीस عَلَيْهِ السَّلَام के वाक़िए से येह हिदायत का सबक़ मिलता है कि अल्लाह तआला का रसूलों और नबियों पर कितना बड़ा फ़ज़्लो करम और इन्आमो इकराम है। इस लिये हर मुसलमान के लिये वाजिबुल ईमान और लाज़िमुल अमल है कि खुदावन्दे कुद्दूस के रसूलों और नबियों की ता'ज़ीमो तकरीम और इन का अदबो एहतिराम रखे और इन के ज़िक्रे जमील से ख़ैरो बरकत हासिल करता रहे। कुरआने मजीद की मुक़द्दस आयतों और हदीषों में बार बार खुदा के इन बर गुज़ीदा रसूलों और नबियों का ज़िक्रे जमील इस बात की दलील है कि इन बुज़ुर्गों का ज़िक्रे ख़ैर और तज़्किरा मूजिबे रहमत व बाइषे ख़ैरो बरकत है। (واللّٰه تعالٰی اعلم)

﴾43﴿ दरिया की मौजों से मां की गोद में

फ़िरऔन को नुजूमियों ने येह ख़बर दी थी कि बनी इस्राईल में एक ऐसा बच्चा पैदा होगा जो तेरी सल्तनत की बरबादी का सबब होगा। इस लिये फ़िरऔन ने अपनी फ़ौजों को येह हुक्म दे दिया था कि बनी इस्राईल में जो लड़का पैदा हो उस को क़त्ल कर दिया जाए इसी मुसीबत व आफ़त के दौर में हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام पैदा हुवे तो इन की वालिदा ने फ़िरऔन के ख़ौफ़ से इन को एक सन्दूक़ में रख कर सन्दूक़ को मज़बूती से बन्द कर के दरियाए नील में डाल दिया। दरिया से निकल कर एक नहर फ़िरऔन के महल ही के नीचे बहती थी। येह सन्दूक़ दरियाए नील से बहते हुवे नहर में चला गया। इत्तिफ़ाक़ से फ़िरऔन और उस की बीवी "आसिया" दोनों महल में बैठे हुवे नहर का नज़ारा कर रहे थे। जब इन दोनों ने सन्दूक़ को देखा तो ख़ुद्दाम को हुक्म दिया कि उस सन्दूक़ को निकाल कर महल में लाएं। जब सन्दूक़ खोला गया तो इस में से एक निहायत ख़ूब सूरत बच्चा निकला जिस के चेहरे पर हुस्नो जमाल के साथ साथ अन्वारे नबुव्वत की तजल्लियात चमक रही थीं। फ़िरऔन और आसिया दोनों इस बच्चे को देख कर दिलो जान से इस पर क़ुरबान होने लगे और आसिया ने फ़िरऔन से कहा कि

قُرَّتُ عَيْنٍ لِّيْ وَلَكَ ؕ لَا تَقْتُلُوْهُ ۖ عَسٰۤى اَنْ يَّنْفَعَنَاۤ اَوْ نَتَّخِذَهٗ وَلَدًا وَّهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ۝ (پ ۲۰، القصص:۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- येह बच्चा मेरी और तेरी आंखों की ठन्डक है इसे क़त्ल न करो शायद येह हमें नफ़्अ़ दे या हम इसे बेटा बना लें और वोह बे ख़बर थे।

इस पूरे वाक़िए को कुरआने मजीद ने सूरए ताहा में इस तरह बयान फ़रमाया है कि तर्जमा येह है :

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- जब हम ने तेरी मां को इल्हाम किया जो इल्हाम करना था कि इस बच्चे को सन्दूक़ में रख कर दरिया में डाल दे तो दरिया उसे किनारे पर डाले कि इसे वोह उठा ले जो मेरा दुश्मन और इस का दुश्मन है। मैं ने तुझ पर अपनी तरफ़ की महब्बत डाली और इस लिये कि तू मेरी निगाह के सामने तय्यार हो।

चूंकि अभी ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام शीर ख़्वार बच्चे थे। इस लिये इन को दूध पिलाने वाली किसी औ़रत की तलाश हुई मगर आप किसी औ़रत का दूध पीते ही नहीं थे। इधर ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام की वालिदा बेह़द परेशान थीं कि ना मा'लूम मेरा बच्चा कहां और किस ह़ाल में होगा? परेशान हो कर इन्हों ने ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام की बहन "मरयम" को जुस्त्जूए ह़ाल के लिये फ़िरऔ़न के मह़ल में भेजा। और मरयम ने जब येह ह़ाल देखा कि बच्चा किसी औ़रत का दूध नहीं पीता तो इन्हों ने फ़िरऔ़न से कहा कि मैं एक औ़रत को लाती हूं शायद कि येह उस का दूध पीने लगें। चुनान्चे, "मरयम" ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام की वालिदा को फ़िरऔ़न के मह़ल में ले कर गईं और इन्हों ने जैसे ही जोशे मह़ब्बत में सीने से चिमटा कर दूध पिलाया तो आप दूध पीने लगे। इस त़रह़ ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام की वालिदा को इन का बिछड़ा हुवा लाल मिल गया। इस वाक़िए़ का तज़किरा कुरआने मजीद की सूरए क़सस में इस त़रह़ बयान किया गया है।

وَاَصْبَحَ فُؤَادُ اُمِّ مُوْسٰى فٰرِغًا ؕ اِنْ كَادَتْ لَتُبْدِیْ بِهٖ لَوْلَاۤ اَنْ رَّبَطْنَا عَلٰى قَلْبِهَا لِتَكُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِیْنَ ﴿۱۰﴾ وَ قَالَتْ لِاُخْتِهٖ قُصِّیْهِ٘ فَبَصُرَتْ بِهٖ عَنْ جُنُبٍ وَّ هُمْ لَا یَشْعُرُوْنَ ﴿۱۱﴾ۙ وَ حَرَّمْنَا عَلَیْهِ الْمَرَاضِعَ مِنْ قَبْلُ فَقَالَتْ هَلْ اَدُلُّكُمْ عَلٰۤى اَهْلِ بَیْتٍ یَّكْفُلُوْنَهٗ لَكُمْ وَ هُمْ لَهٗ نٰصِحُوْنَ ﴿۱۲﴾ فَرَدَدْنٰهُ اِلٰۤى اُمِّهٖ كَیْ تَقَرَّ عَیْنُهَا وَ لَا تَحْزَنَ وَ لِتَعْلَمَ اَنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ وَّ لٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا یَعْلَمُوْنَ ﴿۱۳﴾ع (پ۲۰،القصص:۱۰۔۱۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- और सुब्ह़ को मूसा की मां का दिल बे सब्र हो गया ज़रूर क़रीब था कि वोह उस का ह़ाल खोल देती अगर हम न ढारस बन्धाते उस के दिल पर कि उसे हमारे वा'दे पर यक़ीन रहे और (इस की मां ने) इस की बहन से कहा उस के पीछे चली जा तो वोह उसे दूर से देखती रही और उन को ख़बर न थी और हम ने पहले ही सब दाइयां इस पर ह़राम कर दी थीं तो बोली क्या मैं तुम्हें बता दूं ऐसे घरवाले कि

तुम्हारे इस बच्चे को पाल दें और वोह इस के ख़ैर ख़्वाह हैं तो हम ने इसे इस की मां की त़रफ़ फेरा कि मां की आंख ठन्डी हो और ग़म न खाए और जान ले कि **अल्लाह** का वा'दा सच्चा है लेकिन अकसर लोग नहीं जानते।

हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام की वालिदा का नाम :- हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام की वालिदा का नाम "यूहानिज़" और बाप का नाम "इमरान" है। और हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام की बहन का नाम "मरयम" है, मगर याद रखो कि येह वोह मरयम नहीं हैं जो हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام की वालिदा हैं। हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام की वालिदा "मरयम" हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام की बहन से सेंकड़ों बरस बा'द को हुई हैं। (صاوی، ج ٣، ص ١٢٤٦، ١٢٤٥)

दर्से हिदायत :- ﴾1﴿ इस वाक़िए से येह सबक़ मिलता है कि जब **अल्लाह** तआ़ला का फ़ज़्ल होता है तो दुश्मन से वोह काम करा लेता है जो दोस्त भी नहीं कर सकते। देख लीजिये कि फ़िरऔन हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام का सब से बड़ा दुश्मन था। मगर हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام की परवरिश फ़िरऔन ही के घर में हुई।

﴾2﴿ येह भी मा'लूम हुवा कि जब **अल्लाह** तआ़ला किसी की हिफ़ाज़त फ़रमाता है तो कोई भी उस को न ज़ाएअ़ कर सकता है न ज़रर पहुंचा सकता है। ग़ौर करो कि हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام को किस त़रह़ ब हिफ़ाज़त, सिह़्ह़त व सलामती के साथ **अल्लाह** तआ़ला ने फिर उन की मां की गोद में पहुंचा दिया। (واللہ تعالٰی اعلم)

﴾44﴿ हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام की बुत शिकनी

हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام ने बुत परस्ती के मुआ़मले में पहले तो अपनी क़ौम से मुनाज़रा कर के ह़क़ को ज़ाहिर कर दिया। मगर लोगों ने ह़क़ को क़बूल नहीं किया बल्कि येह कहा कि कल हमारी ईद का दिन है और हमारा एक बहुत बड़ा मेला लगेगा, वहां आप चल कर देखें कि हमारे दीन में क्या लुत़्फ़ और कैसी बहार है।

इस क़ौम का येह दस्तूर था कि सालाना इन लोगों का एक मेला लगता था। लोग एक जंगल में जम्अ़ होते और दिन भर लह्वो ला'ब में मश्ग़ूल रह कर शाम को बुत ख़ाने में जा कर बुतों की पूजा करते और

बुतों के चढ़ावे, मिठाइयों और खानों को परशाद के तौर पर खाते। हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام क़ौम की दा'वत पर थोड़ी दूर तो मेले की तरफ़ चले लेकिन फिर अपनी बीमारी का उ़ज़्र कर के वापस चले आए और क़ौम के लोग मेले में चले गए। फिर जो मेले में नहीं गए आप ने उन लोगों से साफ़ साफ़ कह दिया :

وَتَاللّٰهِ لَاَكِيْدَنَّ اَصْنَامَكُمْ بَعْدَ اَنْ تُوَلُّوْا مُدْبِرِيْنَ ﴿۵۷﴾ (پ ۱۷، الانبياء:۵۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- और मुझे **अल्लाह** की क़सम है मैं तुम्हारे बुतों का बुरा चाहूंगा बा'द इस के कि तुम फिर जाओ पीठ दे कर।

चुनान्चे, इस के बा'द आप एक कुल्हाड़ी ले कर बुत ख़ाने में तशरीफ़ ले गए और देखा कि उस में छोटे बड़े बहुत से बुत हैं और दरवाज़े के सामने एक बहुत बड़ा बुत है। इन झूटे मा'बूदों को देख कर तौहीदे इलाही के जज़्बे से आप जलाल में आ गए और कुल्हाड़ी मार मार कर बुतों को चकना चूर कर डाला और सब से बड़े बुत को छोड़ दिया और कुल्हाड़ी उस के कन्धे पर रख कर आप बुत ख़ाने से बाहर चले आए। क़ौम के लोग जब मेले से वापस आ कर बुत पूजने और परशाद खाने के लिये बुत ख़ाने में घुसे तो येह देख कर हैरान रह गए कि उन के देवता टूटे फूटे पड़े हुवे हैं। एक दम सब बोखला गए और शोर मचा कर चिल्लाने लगे।

مَنْ فَعَلَ هٰذَا بِاٰلِهَتِنَاۤ اِنَّهٗ لَمِنَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿۵۹﴾ (پ ۱۷، الانبياء:۵۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- किस ने हमारे ख़ुदाओं के साथ येह काम किया बेशक वोह ज़ालिम है।

तो कुछ लोगों ने कहा कि हम ने एक जवान को जिस का नाम "इब्राहीम" है उस की ज़बान से इन बुतों को बुरा भला कहते हुवे सुना है। क़ौम ने कहा कि उस जवान को लोगों के सामने लाओ। शायद लोग गवाही दें कि उस ने बुतों को तोड़ा है। चुनान्चे, हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام बुलाए गए। तो क़ौम के लोगों ने पूछा कि ऐ इब्राहीम ! क्या तुम ने हमारे

खुदाओं के साथ येह सुलूक किया है ? तो ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام ने फ़रमाया कि तुम्हारे इस बड़े बुत ने किया होगा क्यूंकि कुल्हाड़ी इस के कान्धे पर है। आख़िर तुम लोग अपने इन टूटे फूटे खुदाओं ही से क्यूं नहीं पूछते कि किस ने तुम्हें तोड़ा है ? अगर येह बुत बोल सकते हों तो इन ही से पूछ लो वोह खुद बता दें कि किस ने इन्हें तोड़ा है। क़ौम ने सर झुका कर कहा कि ऐ इब्राहीम ! हम इन खुदाओं से क्या और कैसे पूछें ? आप तो जानते ही हैं कि येह बुत बोल नहीं सकते। येह सुन कर ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام ने जलाल में तड़प कर फ़रमाया :

قَالَ اَفَتَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا یَنْفَعُكُمْ شَیْــٴًـا وَّ لَا یَضُرُّكُمْ ﴿۶۶﴾
اُفٍّ لَّكُمْ وَ لِمَا تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿۶۷﴾ (پ۱۷، الانبیاء:۶۶۔۶۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :– कहा तो क्या अल्लाह के सिवा ऐसे को पूजते हो जो न तुम्हें नफ़्अ़ दे और न नुक़्सान पहुंचाए। तुफ़ है तुम पर और उन बुतों पर जिन को अल्लाह के सिवा पूजते हो तो क्या तुम्हें अ़क़्ल नहीं ?

आप की इस ह़क़ गोई का ना'रा सुन कर क़ौम ने कोई जवाब नहीं दिया बल्कि शोर मचाया और चिल्ला चिल्ला कर बुत परस्तों को बुलाया।

حَرِّقُوْهُ وَ انْصُرُوْۤا اٰلِهَتَكُمْ اِنْ كُنْتُمْ فٰعِلِیْنَ ﴿۶۸﴾ (پ۱۷، الانبیاء:۶۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :– इन को जला दो और अपने खुदाओं की मदद करो अगर तुम्हें करना है।

चुनान्चे, ज़ालिमों ने इतना लम्बा चौड़ा आग का अलाव जलाया कि इस आग के शो'ले इतने बुलन्द हो रहे थे कि इस के ऊपर से कोई परन्दा भी उड़ कर नहीं जा सकता था। फिर आप को नंगे बदन कर के इन ज़ुल्मो सितम के मुजस्समों ने एक गोफन के ज़रीए़ उस आग में फेंक दिया और अपने इस ख़याल में मगन थे कि ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام जल कर राख हो गए होंगे, मगर अह़कमुल ह़ाकिमीन का फ़रमान इस आग के लिये येह सादिर हो गया कि

قُلْنَا يٰنَارُ كُوْنِىْ بَرْدًا وَّسَلٰمًا عَلٰۤى اِبْرٰهِيْمَ ﴿ۙ۶۹﴾ (پ۱۷، الانبیاء: ۶۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :– हम ने फ़रमाया ऐ आग हो जा ठन्डी और सलामती इब्राहीम पर।

चुनान्चे, नतीजा येह हुवा जिस को कुरआन ने अपने क़ाहिराना लहजे में इरशाद फ़रमाया कि

وَ اَرَادُوْا بِهٖ كَیْدًا فَجَعَلْنٰهُمُ الْاَخْسَرِیْنَ ﴿ۚ۷۰﴾ (پ۱۷، الانبیاء: ۷۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :– और उन्हों ने इस का बुरा चाहा तो हम ने उन्हें सब से बढ़ कर ज़ियांकार कर दिया।

आग बुझ गई और ह़ज़रते इब्राहीम عَلَیْهِ السَّلَام ज़िन्दा और सलामत रह कर निकल आए और ज़ालिम लोग कफ़े अफ़्सोस मल कर रह गए।

ह़ज़रते इब्राहीम عَلَیْهِ السَّلَام का तवक्कुल :– रिवायत है कि जब नमरूद ने अपनी सारी क़ौम के रू बरू ह़ज़रते इब्राहीम عَلَیْهِ السَّلَام को आग में फेंक दिया तो ज़मीनो आस्मान की तमाम मख़्लूक़ात चीख़ मार कर बारगाहे खुदावन्दी में अ़र्ज़ करने लगीं कि खुदावन्द ! तेरे ख़लील आग में डाले जा रहे हैं और इन के सिवा ज़मीन में कोई और इन्सान तेरी तौह़ीद का अ़लमबरदार और तेरा परस्तार नहीं, लिहाज़ा तू हमें इजाज़त दे कि हम इन की इम्दाद व नुस्रत करें तो अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि इब्राहीम मेरे ख़लील हैं और मैं उन का मा'बूद हूं तो अगर ह़ज़रते इब्राहीम तुम सभों से फ़रियाद कर के मदद त़लब करें तो मेरी इजाज़त है कि सब उन की मदद करो। और अगर वोह मेरे सिवा किसी और से कोई मदद त़लब न करें तो तुम सब सुन लो कि मैं उन का दोस्त और ह़ामी व मददगार हूं। लिहाज़ा तुम अब उन का मुआ़मला मेरे ऊपर छोड़ दो। इस के बा'द आप के पास पानी का फ़िरिश्ता आया और कहा कि अगर आप फ़रमाएं तो मैं पानी बरसा कर इस आग को बुझा दूं। फिर हवा का फ़िरिश्ता ह़ाज़िर हुवा और उस ने कहा कि अगर आप का हुक्म हो तो मैं ज़बरदस्त आंधी चला कर

इस आग को उड़ा दूं तो आप ने उन दोनों फ़िरिश्तों से फ़रमाया कि मुझे तुम लोगों की कोई ज़रूरत नहीं। मुझ को मेरा अल्लाह काफ़ी है और वोही मेरा बेहतरीन कारसाज़ है वोही जब चाहेगा और जिस तरह उस की मरज़ी होगी मेरी मदद फ़रमाएगा। (صاوی،ج۴،ص۱۳۰۷،پ۱۷، الانبیاء:۶۸)

कौन सी दुआ पढ़ कर आप आग में गए :- एक रिवायत में येह भी आया है कि जब काफ़िरों ने आप को आग में डाला तो आप ने उस वक़्त येह दुआ पढ़ी لَا اِلٰـــهَ اِلاَّ اَنْـتَ سُبْحَانَکَ لَکَ الْحَمْدُ وَلَکَ الْمُلْکُ لاَ شَرِیْکَ لَکَ और जब आप आग के शो'लों में दाख़िल हो गए तो हज़रते जिब्रील عَلَیْهِ السَّلَام तशरीफ़ लाए और कहा कि ऐ ख़लीलल्लाह ! क्या आप को कोई हाजत है ? तो आप ने फ़रमाया कि तुम से कोई हाजत नहीं है तो हज़रते जिब्रील عَلَیْهِ السَّلَام ने कहा कि फिर ख़ुदा ही से अपनी हाजत अर्ज़ कीजिये तो आप ने जवाब दिया कि वोह मेरे हाल को ख़ूब जानता है। लिहाज़ा मुझे उस से सुवाल करने की कोई ज़रूरत ही नहीं है। उस वक़्त हज़रते इब्राहीम عَلَیْهِ السَّلَام की उम्र शरीफ़ सोलह या बीस बरस की थी।

आप कितनी देर तक आग में रहे ? :- इस बारे में कि आप कितनी मुद्दत तक आग के अन्दर रहे, तीन अक़्वाल हैं।

(1) बा'ज़ मुफ़स्सिरीन का क़ौल है की सात दिनों तक आप आग के शो'लों में रहे।

(2) और बा'ज़ ने येह तहरीर किया है कि चालीस दिन रहे।

(3) और बा'ज़ कहते हैं कि पचास दिन तक आप आग में रहे। (واللہ تعالیٰ اعلم)

(صاوی، ج۴،ص۱۳۰۷،پ۱۷،الانبیاء:۶۸)

दर्से हिदायत :- इस वाक़िए से उन लोगों को तसल्ली मिलती है जो बातिल की ताग़ूती ताक़तों के बिल मुक़ाबिल इस्तिक़ामत का पहाड़ बन कर डट जाते हैं।

आज भी हो जो इब्राहीम सा ईमां पैदा   आग कर सकती है अन्दाज़े गुलिस्तां पैदा

﴾45﴿ हज़रते अय्यूब عَلَيْهِ السَّلَام का इम्तिहान

हज़रते अय्यूब عَلَيْهِ السَّلَام हज़रते इस्हाक़ عَلَيْهِ السَّلَام की अवलाद में से हैं और इन की वालिदा हज़रते लूत عَلَيْهِ السَّلَام के ख़ानदान से हैं। **अल्लाह** तआला ने आप को हर तरह की ने'मतों से नवाज़ा था। हुस्ने सूरत भी और माल व अवलाद की कषरत भी, बेशुमार मवैशी और खेत व बाग़ वग़ैरा के आप मालिक थे। जब **अल्लाह** तआला ने आप को आज़माइश व इम्तिहान में डाला तो आप का मकान गिर पड़ा और आप के तमाम फ़रज़न्दान इस के नीचे दब कर मर गए और तमाम जानवर जिस में सेंकड़ों ऊंट और हज़ार हा बकरियां थीं, सब मर गए। तमाम खेतियां और बाग़ात भी बरबाद हो गए। ग़रज़ आप के पास कुछ भी बाक़ी न रहा। आप को जब इन चीज़ों के हलाक व बरबाद होने की ख़बर दी जाती थी तो आप हम्दे इलाही करते और शुक्र बजा लाते थे और फ़रमाते थे कि मेरा क्या था और क्या है जिस का था उस ने ले लिया। जब तक उस ने मुझे दे रखा था मेरे पास था, जब उस ने चाहा ले लिया। मैं हर हाल में उस की रिज़ा पर राज़ी हूं। इस के बा'द आप बीमार हो गए और आप के जिस्म मुबारक पर बड़े बड़े आबले पड़ गए। इस हाल में सब लोगों ने आप को छोड़ दिया, बस फ़क़त आप की बीवी जिन का नाम "रहमत बिन्ते अफ़राईम" था। जो हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام की पोती थीं, आप की ख़िदमत करती थीं। सालहा साल तक आप का येही हाल रहा, आप आबलों और फोड़ों के ज़ख़्मों से बड़ी तक्लीफ़ों में रहे।

फ़ाइदा :- आ़म तौर पर लोगों में मश्हूर है कि مَعَاذَالله आप को कोढ़ की बीमारी हो गई थी। चुनान्चे, बा'ज़ ग़ैर मो'तबर किताबों में आप के कोढ़ के बारे में बहुत सी ग़ैर मो'तबर दास्तानें भी तह़रीर हैं, मगर याद रखो कि येह सब बातें सरता पा बिल्कुल ग़लत़ हैं, और हरगिज़ हरगिज़ आप या कोई नबी भी कभी कोढ़ और जुज़ाम की बीमारी में मुब्तला नहीं हुवा। इस लिये कि येह मस्अला मुत्तफ़िक़ अ़लैह है कि अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام का तमाम उन बीमारियों से मह़फ़ूज़ रहना ज़रूरी है जो अ़वाम के नज़्दीक

बाइषे नफ़रत व ह़क़ारत हैं। क्यूंकि अम्बिया عَلَيۡهِمُ السَّلَام का येह फ़र्ज़े मन्सबी है कि वोह तब्लीग़ व हिदायत करते रहें तो ज़ाहिर है कि जब अ़वाम इन की बीमारियों से नफ़रत कर के इन से दूर भागेंगे तो भला तब्लीग़ का फ़रीज़ा क्यूं कर अदा हो सकेगा? अल ग़रज़ ह़ज़रते अय्यूब عَلَيۡهِ السَّلَام हरगिज़ कभी कोढ़ और जुज़ाम की बीमारी में मुब्तला नहीं हुवे बल्कि आप के बदन पर कुछ आबले और फोड़े फुन्सियां निकल आई थीं जिन से आप बरसों तक्लीफ़ और मशक़्क़त झेलते रहे और बराबर साबिरो शाकिर रहे। फिर आप ने ब हुक्मे इलाही अपने रब से यूं दुआ़ मांगी :

اَنِّیۡ مَسَّنِیَ الضُّرُّ وَ اَنۡتَ اَرۡحَمُ الرّٰحِمِیۡنَ ﴿۸۳﴾ (پ۱۷،الانبیاء:۸۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- मुझे तक्लीफ़ पहुंची और तू सब मेहरवालों से बढ़ कर मेहरवाला है।

जब आप ख़ुदा की आज़माइश में पूरे उतरे और इम्तिह़ान में कामयाब हो गए तो आप की दुआ़ मक़्बूल हुई और अरह़मुर्राह़िमीन ने हुक्म फ़रमाया कि ऐ अय्यूब عَلَيۡهِ السَّلَام अपना पाउं ज़मीन पर मारो। आप ने ज़मीन पर पाउं मारा तो फ़ौरन एक चश्मा फूट पड़ा। हुक्मे इलाही हुवा कि इस पानी से ग़ुस्ल करो, चुनान्चे, आप ने ग़ुस्ल किया तो आप के बदन की तमाम बीमारियां दूर हो गईं। फिर आप चालीस क़दम दूर चले तो दोबारा ज़मीन पर क़दम मारने का हुक्म हुवा और आप के क़दम मारते ही फिर एक दूसरा चश्मा नुमूदार हो गया जिस का पानी बेह़द ठन्डा, बहुत शीरीं और निहायत लज़ीज़ था। आप ने वोह पानी पिया तो आप के बात़िन में नूर ही नूर पैदा हो गया। और आप को आ'ला दरजे की सिह़्ह़त व नूरानिय्यत ह़ासिल हो गई और अल्लाह तआ़ला ने आप की तमाम अवलाद को दोबारा ज़िन्दा फ़रमा दिया और आप की बीवी को दोबारा जवानी बख़्शी और उन के कषीर अवलाद हुई, फिर आप का तमाम हलाक शुदा माल व मवैशी और अस्बाब व सामान भी आप को मिल गया बल्कि पहले जिस क़दर मालो दौलत का ख़ज़ाना था उस से कहीं ज़ियादा मिल गया।

इस बीमारी की ह़ालत में एक दिन आप ने अपनी बीवी साह़िबा को पुकारा तो वोह बहुत देर कर के ह़ाज़िर हुईं इस पर ग़ुस्से में आ कर

आप ने इन को सो दुर्रे मारने की क़सम खा ली थी तो अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि ऐ अय्यूब عَلَيْهِ السَّلَام आप एक सींकों की झाड़ू से एक मरतबा अपनी बीवी को मार दीजिये इस त़रह़ आप की क़सम पूरी हो जाएगी। चुनान्चे, अल्लाह तआ़ला ने कुरआने मजीद में इस वाक़िए़ को इस त़रह़ बयान फ़रमाया है :

اُرْكُضْ بِرِجْلِكَ ۚ هٰذَا مُغْتَسَلٌۢ بَارِدٌ وَّ شَرَابٌ ﴿۴۲﴾ وَ وَهَبْنَا لَهٗۤ اَهْلَهٗ وَ مِثْلَهُمْ مَّعَهُمْ رَحْمَةً مِّنَّا وَ ذِكْرٰى لِاُولِی الْاَلْبَابِ ﴿۴۳﴾ وَ خُذْ بِیَدِكَ ضِغْثًا فَاضْرِبْ بِّهٖ وَ لَا تَحْنَثْ ؕ اِنَّا وَجَدْنٰهُ صَابِرًا ؕ نِعْمَ الْعَبْدُ ؕ اِنَّهٗۤ اَوَّابٌ ﴿۴۴﴾ (پ۲۳، ص:۴۲۔۴۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- हम ने फ़रमाया ज़मीन पर अपना पाउं मार येह है ठन्डा चश्मा नहाने और पीने को और हम ने उसे उस के घर वाले और इन के बराबर और अ़ता फ़रमा दिये अपनी रह़मत करने और अ़क़्लमन्दों की नसीह़त को और फ़रमाया कि अपने हाथ में एक झाड़ू ले कर उस से मार दे और क़सम न तोड़ बेशक हम ने इसे साबिर पाया क्या अच्छा बन्दा बेशक वोह बहुत रुजूअ़ लाने वाला है।

अल ग़रज़ ह़ज़रते अय्यूब عَلَيْهِ السَّلَام इस इम्तिह़ान में पूरे पूरे कामयाब हो गए। और अल्लाह तआ़ला ने इन को अपनी नवाज़िशों और इनायतों से हर त़रह़ सरफ़राज़ फ़रमा दिया और कुरआने मजीद में इन की मद्ह़ ख़्वानी फ़रमा कर "اَوَّابٌ" के ला जवाब ख़िताब से इन के सर मुबारक पर सर बुलन्दी का ताज रख दिया।

दर्से हिदायत :- ह़ज़रते अय्यूब عَلَيْهِ السَّلَام के इस वाक़िअ़ए इम्तिह़ान में येह हिदायत मिलती है कि अल्लाह तआ़ला के नेक बन्दों का भी खुदा की त़रफ़ से इम्तिह़ान हुवा करता है और जब वोह इम्तिह़ान में कामयाब और आज़माइश में पूरे उतरते हैं तो खुदावन्दे कुद्दूस उन के मरातिब व दरजात में इतनी आ'ला सरबुलन्दी अ़ता फ़रमा देता है कि कोई इन्सान इस को सोच भी नहीं सकता और इस वाक़िए़ से येह सबक़ भी मिलता है कि इम्तिह़ान की आज़माइश के वक़्त सब्र करना और खुदावन्दे आ़लम عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा पर राज़ी रहना इस का फल कितना अच्छा, कितना मीठा और किस क़दर लज़ीज़ होता है। (واللہ تعالٰی اعلم)

﴾46﴿ हज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام और एक च्यूंटी

हज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام हज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام के फ़रज़न्द हैं। येह अपने मुक़द्दस बाप के जा नशीन हुवे और अल्लाह तआ़ला ने इन को भी नबुव्वत और सल्त़नत दोनों सआ़दतों से सरफ़राज़ फ़रमा कर तमाम रूए ज़मीन का बादशाह बना दिया और चालीस बरस तक आप तख़्ते सल्त़नत पर जल्वा गर रहे। जिन्न व इन्सान व शयात़ीन और चरिन्दों, परन्दों, दरिन्दों सब पर आप की हुकूमत थी सब की ज़बानों का आप को इल्म अ़त़ा किया गया और त़रह़ त़रह़ की अ़जीबो ग़रीब सन्अ़तें आप के ज़माने में ब रूएकार आईं। चुनान्चे, कुरआने मजीद में है :

وَوَرِثَ سُلَيْمٰنُ دَاوٗدَ وَقَالَ يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ عُلِّمْنَا مَنْطِقَ الطَّيْرِ وَاُوْتِيْنَا مِنْ كُلِّ شَیْءٍؕ اِنَّ هٰذَا لَهُوَ الْفَضْلُ الْمُبِيْنُ ﴿۱۶﴾ (پ۱۹، النمل:۱۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :– और सुलैमान दावूद का जा नशीन हुवा और कहा ऐ लोगो हमें परन्दों की बोली सिखाई गई और हर चीज़ में से हम को अ़त़ा हुवा बेशक येही ज़ाहिर फ़ज़्ल है।

इसी त़रह़ कुरआने मजीद में दूसरी जगह इरशाद हुवा।

وَلِسُلَيْمٰنَ الرِّيْحَ غُدُوُّهَا شَهْرٌ وَّرَوَاحُهَا شَهْرٌۚ وَاَسَلْنَا لَهٗ عَيْنَ الْقِطْرِؕ وَمِنَ الْجِنِّ مَنْ يَّعْمَلُ بَيْنَ يَدَيْهِ بِاِذْنِ رَبِّهٖؕ وَمَنْ يَّزِغْ مِنْهُمْ عَنْ اَمْرِنَا نُذِقْهُ مِنْ عَذَابِ السَّعِيْرِ ﴿۱۲﴾ يَعْمَلُوْنَ لَهٗ مَا يَشَآءُ مِنْ مَّحَارِيْبَ وَتَمَاثِيْلَ وَجِفَانٍ كَالْجَوَابِ وَقُدُوْرٍ رّٰسِيٰتٍؕ (پ۲۲، سبا:۱۲،۱۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :– और सुलैमान के बस में हवा कर दी उस की सुब्ह़ की मन्ज़िल एक महीने की राह और शाम की मन्ज़िल एक महीने की राह और हम ने उस के लिये पिघले हुवे तांबे का चश्मा बहाया और जिन्नों में से वोह जो उस के आगे काम करते उस के रब के हुक्म से और जो उन में हमारे हुक्म से फिरे हम उसे भड़कती आग का अ़ज़ाब चखाएंगे। उस के लिये बनाते जो वोह चाहता ऊंचे ऊंचे महल और तस्वीरें और बड़े हौज़ों के बराबर लगन और लंगरदार देगें।

रिवायत है कि एक मरतबा ह़ज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام जिन्नो इन्स वग़ैरा अपने तमाम लश्करों को ले कर ताइफ़ या शाम में "वादिये नम्ल" से गुज़रे जहां च्यूंटियां ब कषरत थीं तो च्यूंटियों की मलिका जो मादा और लंगड़ी थी उस ने तमाम च्यूंटियों से कहा कि ऐ च्यूंटियो ! तुम सब अपने घरों में चली जाओ वरना ह़ज़रते सुलैमान और उन का लश्कर तुम्हें बे ख़बरी में कुचल डालेगा। च्यूंटी की इस तक़रीर को ह़ज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام ने तीन मील की दूरी से सुन लिया और मुस्कुरा कर हंस दिये। चुनान्चे, रब तआ़ला ने क़ुरआने मजीद में फ़रमाया :

حَتّٰۤى اِذَاۤ اَتَوْا عَلٰى وَادِ النَّمْلِ ۙ قَالَتْ نَمْلَةٌ يّٰۤاَيُّهَا النَّمْلُ ادْخُلُوْا مَسٰكِنَكُمْ ۚ لَا يَحْطِمَنَّكُمْ سُلَيْمٰنُ وَجُنُوْدُهٗ ۙ وَهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿۱۸﴾ فَتَبَسَّمَ ضَاحِكًا مِّنْ قَوْلِهَا (پ۱۹، النمل۱۸،۱۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- यहां तक कि जब च्यूंटियों के नाले पर आए एक च्यूंटी बोली ऐ च्यूंटियो ! अपने घरों में चली जाओ तुम्हें कुचल न डालें सुलैमान और उन के लश्कर बे ख़बरी में तो उस की बात से मुस्कुरा कर हंसा।

दर्से हिदायत :- इस क़ुरआनी वाक़िए से चन्द अस्बाक़ हिदायात मा'लूम हुवे।

(1) च्यूंटी की आवाज़ को तीन मील की दूरी से सुन लेना येह ह़ज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام का मो'जिज़ा है और इस से मा'लूम हुवा कि ह़ज़राते अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام की बसारत व समाअ़त को आ़म इन्सानों की बसारत व समाअ़त पर क़ियास नहीं कर सकते बल्कि ह़क़ येह है कि अम्बियाए किराम का सुनना और देखना और दूसरी ताक़तें आ़म इन्सानों की ताक़तों से बढ़ चढ़ कर हुवा करती हैं।

(2) च्यूंटी की तक़रीर से मा'लूम हुवा कि च्यूंटियों का भी येह अ़क़ीदा है कि किसी नबी के सह़ाबी जान बूझ कर किसी पर ज़ुल्म नहीं कर सकते क्यूंकि च्यूंटी ने وَهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿۱۸﴾ कहा या'नी ह़ज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام

और इन की फ़ौज अगर च्यूंटियों को कुचल डालेंगे तो बेख़बरी के आ़लम में लाशुऊ़री तौ़र पर ऐसा करेंगे। वरना जान बूझ कर एक नबी के सह़ाबी होते हुवे वोह किसी पर ज़ुल्म व ज़ियादती नहीं करेंगे। अफ़्सोस कि च्यूंटियां तो येह अ़क़ीदा रखती हैं कि नबी के सह़ाबी जान बूझ कर किसी पर ज़ुल्म नहीं कर सकते। मगर राफ़िज़ियों का गुरौह इन च्यूंटियों से भी गया गुज़रा षाबित हुवा कि इन ज़ालिमों ने हु़ज़ूर सय्यिदुल मुरसलीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मुक़द्दस सह़ाबा पर तोहमत लगाई कि उन बुज़ुर्गों ने जान बूझ कर ह़ज़रते बीबी फ़ात़िमा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا और अहले बैत पर ज़ुल्म किया। (مَعَاذَ اللّٰه)

(3) येह भी मा'लूम हुवा कि ह़ज़राते अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام का हंसना, तबस्सुम और मुस्कुराहट ही होता है। जैसा कि अह़ादीष में वारिद हुवा है कि येह ह़ज़रात कभी क़हक़हा मार कर नहीं हंसते।

(خزائن العرفان،ص۶۸۰،پ۱۹،النمل:۱۹)

लत़ीफ़ा :– मन्क़ूल है कि एक मरतबा ह़ज़रते क़तादा मुह़द्दिष رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه जो निहायत ही बुलन्द पाया आ़लिम और जामेउ़ल उ़लूम अ़ल्लामा थे। बिल ख़ुसूस इल्मे ह़दीष और तफ़्सीर में तो अपना मिष्ल नहीं रखते थे। कूफ़ा तशरीफ़ लाए तो इन की ज़ियारत के लिये एक अ़ज़ीमुश्शान मजमअ़ जम्अ़ हो गया। आप ने तक़रीर फ़रमाते हुवे ह़ाज़िरीन से कई बार येह फ़रमाया कि "سَلُوْا عَمَّا شِئْتُمْ" या'नी मुझ से जो चाहो पूछ लो। ह़ाज़िरीन पर आप की इ़ल्मी जलालत का ऐसा सिक्का बैठा हुवा था कि सब लोग दम बख़ुद व साकित व ख़ामोश बैठे रहे मगर जब आप ने बार बार ललकारा तो ह़ज़रते इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه जो अभी बहुत कम उ़म्र थे ख़ुद तो कमाले अदब से कुछ न बोले मगर आप ने लोगों से कहा कि आप लोग ह़ज़रते क़तादा عَلَيْهِ الرَّحْمَة से येह पूछिये कि वादिये नम्ल में जिस च्यूंटी की तक़रीर सुन कर ह़ज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام मुस्कुरा कर हंस पड़े थे। वोह च्यूंटी नर थी या मादा ! चुनान्चे, जब लोगों

ने येह सुवाल किया तो हज़रते क़तादा عَلَيْهِ الرَّحْمَة ऐसे सटपटाए कि बिल्कुल ला जवाब हो कर ख़ामोश हो गए फिर लोगों ने इमाम अबू हनीफ़ा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से दरयाफ़्त किया तो आप ने फ़रमाया कि **"वोह च्यूंटी मादा थी"** हज़रते क़तादा عَلَيْهِ الرَّحْمَة ने फ़रमाया कि इस का षुबूत ? इमाम अबू हनीफ़ा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने जवाब दिया कि इस का षुबूत येह है कि कुरआने मजीद में इस च्यूंटी के लिये قَالَتْ نَمْلَةٌ मुअन्नस का सीग़ा ज़िक्र किया गया है। अगर येह च्यूंटी नर होती तो "قَالَ نَمْلٌ" मुज़क्कर का सीग़ा ज़िक्र किया गया होता। हज़रते क़तादा عَلَيْهِ الرَّحْمَة ने इस दलील को तस्लीम कर लिया और इमाम अबू हनीफ़ा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की दानाई और कुरआन फ़हमी पर हैरान रह गए और अपने बड़े बोल पर नादिम हुवे।

﴾47﴿ हज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام का हुदहुद

यूं तो सभी परन्दे हज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام के मुसख़्ख़र और ताबेए फ़रमान थे लेकिन आप का हुद हुद आप की फ़रमां बरदारी और ख़िदमत गुज़ारी में बहुत मश्हूर है। इसी हुद-हुद ने आप को मुल्के सबा की मलिका "बिल्क़ीस" के बारे में ख़बर दी थी कि वोह एक बहुत बड़े तख़्त पर बैठ कर सल्तनत करती है और बादशाहों के शायाने शान जो भी सरो सामान होता है वोह सब कुछ उस के पास है मगर वोह और उस की क़ौम सितारों के पुजारी हैं। इस ख़बर के बा'द हज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام ने बिल्क़ीस के नाम जो ख़त़ इरसाल फ़रमाया, उस को येही हुद-हुद ले कर गया था। चुनान्चे, कुरआने करीम का इरशाद है कि हज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام ने फ़रमाया :

"तुम मेरा येह ख़त़ ले कर जाओ। और उन के पास येह ख़त़ डाल कर फिर उन से अलग हो कर तुम देखो कि वोह क्या जवाब देते हैं।"

(پ ۱۹، النمل،۲۸)

चुनान्चे, हुद-हुद ख़त़ ले कर गया और बिल्क़ीस की गोद में उस ख़त़ को ऊपर से गिरा दिया। उस वक़्त उस ने अपने गिर्द उमरा और अरकाने सल्त़नत का मजमअ़ इकठ्ठा किया फिर ख़त़ को पढ़ कर लर्ज़ा बर अन्दाम हो गई और अपने अराकीन से येह कहा कि

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :– ऐ सरदारो ! बेशक मेरी त़रफ़ एक इ़ज़्ज़त वाला ख़त़ डाला गया बेशक वोह सुलैमान की त़रफ़ से है और बेशक वोह अल्लाह के नाम से है जो निहायत मेहरबान रह़्म वाला येह कि मुझ पर बुलन्दी न चाहो और गर्दन रखते मेरे हु़ज़ूर ह़ाज़िर हो । (پ ۱۹، النمل۲۹ تا ۳۱)

ख़त़ सुना कर बिल्क़ीस ने अपनी सल्त़नत के अमीरों और वज़ीरों से मश्वरा किया तो उन लोगों ने अपनी त़ाक़त और जंगी महारत का ए'लान व इज़्हार कर के ह़ज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام से जंग का इरादा ज़ाहिर किया । उस वक़्त अ़क़्लमन्द बिल्क़ीस ने अपने अमीरों और वज़ीरों को समझाया कि जंग मुनासिब नहीं है क्यूंकि इस से शहर वीरान और शहर के इ़ज़्ज़तदार बाशिन्दे ज़लीलो ख़्वार हो जाएंगे । इस लिये मैं येह मुनासिब ख़याल करती हूं कि कुछ हदाया व तह़ाइफ़ उन के पास भेज दूं इस से इम्तिह़ान हो जाएगा कि ह़ज़रते सुलैमान सिर्फ़ बादशाह हैं या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नबी भी हैं । अगर वोह नबी होंगे तो हरगिज़ मेरा हदिय्या क़बूल नहीं करेंगे बल्कि हम लोगों को अपने दीन के इत्तिबाअ़ का हुक्म देंगे और अगर वोह सिर्फ़ बादशाह होंगे तो मेरा हदिय्या क़बूल कर के नर्म हो जाएंगे । चुनान्चे, बिल्क़ीस ने पांच सो ग़ुलाम और पांच सो लोंडियां बेहतरीन लिबास और ज़ेवरों से आरास्ता कर के भेजे और इन लोगों के साथ पांच सो सोने की ईंटें, और बहुत से जवाहिरात और मुश्को अ़म्बर और एक जड़ाव ताज मअ़ एक ख़त़ के अपने क़ासिद के साथ भेजा । हुद-हुद सब देख कर रवाना हो गया और ह़ज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام के दरबार में आ कर सब ख़बरें पहुंचा दीं । चुनान्चे, बिल्क़ीस का क़ासिद जब चन्द दिनों के बा'द तमाम सामानों को ले कर दरबार में ह़ाज़िर हुवा तो ह़ज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام ने ग़ज़ब नाक हो कर क़ासिद से फ़रमाया :

قَالَ اَتُمِدُّوْنَنِ بِمَالٍ٘ فَمَاۤ اٰتٰىنَ اللّٰهُ خَيْرٌ مِّمَّاۤ اٰتٰىكُمْ١ۚ بَلْ اَنْتُمْ بِهَدِيَّتِكُمْ تَفْرَحُوْنَ۝۳۶ اِرْجِعْ اِلَيْهِمْ فَلَنَاْتِيَنَّهُمْ بِجُنُوْدٍ لَّا قِبَلَ لَهُمْ بِهَا وَ لَنُخْرِجَنَّهُمْ مِّنْهَاۤ اَذِلَّةً وَّ هُمْ صٰغِرُوْنَ۝۳۷ (پ۱۹، النمل۳۶۔۳۷)

तर्जमए कन्जुल ईमान :- फ़रमाया क्या माल से मेरी मदद करते हो तो जो मुझे **अल्लाह** ने दिया वोह बेहतर है उस से जो तुम्हें दिया बल्कि तुम्हीं अपने तोहफ़े पर खुश होते हो पलट जा उन की तरफ़ तो ज़रूर हम उन पर वोह लश्कर लाएंगे जिन की उन्हें ताक़त न होगी और ज़रूर हम उन को उस शहर से ज़लील कर के निकाल देंगे यूं कि वोह पस्त होंगे।

चुनान्चे, इस के बा'द जब क़ासिद ने वापस आ कर बिल्क़ीस को सारा माजरा सुनाया तो बिल्क़ीस हज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام के दरबार में हाज़िर हो गई और हज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام का दरबार और यहां के अजाइबात देख कर उस को यक़ीन आ गया कि हज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام खुदा عَزَّوَجَلَّ के नबिय्ये बर हक़ हैं और इन की सल्तनत **अल्लाह** तआला ही की तरफ़ से है। हज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام ने बिल्क़ीस को अपने दीन की दा'वत दी तो उस ने निहायत ही इख़्लास के साथ इस्लाम क़बूल कर लिया फिर हज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام ने बिल्क़ीस से निकाह कर के उस को अपने महल में रख लिया।

इस सिलसिले में हुद-हुद ने जो कारनामे अन्जाम दिये वोह बिलाशुबा अजाइबाते आलम में से हैं जो यक़ीनन हज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام के मो'जिज़ात में से हैं।

﴾48﴿ तख़्ते बिल्क़ीस किस तरह आया

मलिकए सबा "बिल्क़ीस" का तख़्ते शाही अस्सी गज़ लम्बा और चालीस गज़ चौड़ा था, येह सोने चांदी और तरह तरह के जवाहिरात और मोतियों से आरास्ता था, जब हज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام ने बिल्क़ीस के क़ासिद और उस के हदाया व तहाइफ़ को ठुकरा दिया और उस को येह हुक्म नामा भेजा कि वोह मुसलमान हो कर मेरे दरबार में हाज़िर हो जाए तो आप के दिल में येह ख़्वाहिश पैदा हुई कि बिल्क़ीस के यहां आने से पहले ही उस का तख़्त मेरे दरबार में आ जाए चुनान्चे, आप ने अपने दरबार में दरबारियों से येह फ़रमाया :

قَالَ یٰۤاَیُّهَا الْمَلَؤُا اَیُّكُمْ یَاْتِیْنِیْ بِعَرْشِهَا قَبْلَ اَنْ یَّاْتُوْنِیْ مُسْلِمِیْنَ ﴿۳۸﴾
قَالَ عِفْرِیْتٌ مِّنَ الْجِنِّ اَنَا اٰتِیْكَ بِهٖ قَبْلَ اَنْ تَقُوْمَ مِنْ مَّقَامِكَ ۚ وَ
اِنِّیْ عَلَیْهِ لَقَوِیٌّ اَمِیْنٌ ﴿۳۹﴾ (پ ۱۹، النمل: ۳۸،۳۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :– सुलैमान ने फ़रमाया ऐ दरबारियो ! तुम में कौन है कि वोह उस का तख़्त मेरे पास ले आए क़ब्ल इस के कि वोह मेरे हुज़ूर मुतीअ़ हो कर ह़ाज़िर हों एक बड़ा ख़बीष जिन्न बोला कि वोह तख़्त हुज़ूर में ह़ाज़िर कर दूंगा क़ब्ल इस के कि हुज़ूर इजलास बरख़ास्त करें और मैं बेशक इस पर कुव्वत वाला अमानतदार हूं।

जिन्न का बयान सुन कर ह़ज़रते सुलैमान عَلَیْهِ السَّلَام ने फ़रमाया कि मैं येह चाहता हूं कि इस से भी जल्द वोह तख़्त मेरे दरबार में आ जाए। येह सुन कर आप के वज़ीर ह़ज़रते "आसिफ़ बिन बरख़िया" رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه जो इस्मे आ'ज़म जानते थे और एक बा करामत वली थे। इन्हों ने ह़ज़रते सुलैमान عَلَیْهِ السَّلَام से अ़र्ज़ किया जैसा कि कुरआने मजीद में है :

قَالَ الَّذِیْ عِنْدَهٗ عِلْمٌ مِّنَ الْكِتٰبِ اَنَا اٰتِیْكَ بِهٖ قَبْلَ اَنْ یَّرْتَدَّ اِلَیْكَ
طَرْفُكَ ؕ (پ۱۹، النمل: ۴۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :– उस ने अ़र्ज़ की जिस के पास किताब का इ़ल्म था कि मैं उसे हुज़ूर में ह़ाज़िर कर दूंगा एक पल मारने से पहले।

चुनान्चे, ह़ज़रते आसिफ़ बिन बरख़िया ने रूह़ानी कुव्वत से बिल्क़ीस के तख़्त को मुल्के सबा से बैतुल मुक़द्दस तक ह़ज़रते सुलैमान عَلَیْهِ السَّلَام के मह़ल में खींच लिया और तख़्त ज़मीन के नीचे नीचे चल कर लम्ह़ा भर में एक दम ह़ज़रते सुलैमान عَلَیْهِ السَّلَام की कुरसी के क़रीब नुमूदार हो गया। तख़्त को देख कर ह़ज़रते सुलैमान عَلَیْهِ السَّلَام ने येह कहा :

هٰذَا مِنْ فَضْلِ رَبِّیْ ۫ۖ لِیَبْلُوَنِیْۤ ءَاَشْكُرُ اَمْ اَكْفُرُ ؕ وَ مَنْ شَكَرَ فَاِنَّمَا
یَشْكُرُ لِنَفْسِهٖ ۚ وَ مَنْ كَفَرَ فَاِنَّ رَبِّیْ غَنِیٌّ كَرِیْمٌ ﴿۴۰﴾ (پ۱۹، النمل: ۴۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :– येह मेरे रब के फ़ज़्ल से है ताकि मुझे आज़माए कि मैं शुक्र करता हूं या नाशुक्री और जो शुक्र करे तो वोह अपने भले को शुक्र करता है और जो नाशुक्री करे तो मेरा रब बे परवाह है सब ख़ूबियों वाला।

दर्से हिदायत :– इस कुरआनी वाक़िए से षाबित होता है कि **अल्लाह** तआ़ला अपने औलिया को बड़ी बड़ी रूहानी ताक़त व कुव्वत अ़ता फ़रमाता है। देख लीजिये हज़रते आसिफ़ बिन बरख़िया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने पलक झपकने भर की मुद्दत में तख़्ते बिल्क़ीस को मुल्के सबा से दरबारे सुलैमान में हाज़िर कर दिया। और ख़ुद अपनी जगह से हिले भी नहीं। इसी त़रह़ बहुत से औलियाए किराम ने सेंकड़ों मील की दूरी से आदमियों और जानवरों को लम्ह़ा भर में बुला लिया है। येह सब औलिया की उस रूहानी ताक़त का करिश्मा है जो ख़ुदावन्दे कुद्दूस अपने वलियों को अ़ता फ़रमाता है इस लिये कभी हरगिज़ औलियाए किराम को अपने जैसा न ख़याल करना और न उन के आ'ज़ा की ताक़तों को आ़म इन्सानों की ताक़तों पर क़ियास करना। कहां अ़वाम और कहां औलिया। औलियाए किराम को अपने जैसा समझ लेना येह गुमराही का सर चश्मा है। हज़रते मौलाना रूमी عَلَیْہِ الرَّحْمَۃ ने मषनवी शरीफ़ में इसी मज़्मून पर रोशनी डालते हुवे बड़ी वज़ाह़त के साथ तह़रीर फ़रमाया है।

جملہ عالم زیں سبب گمراہ شد — کم کسے ز ابدال حق آگاہ شد

तमाम दुन्या इस वजह से गुमराह हो गई — कि ख़ुदा के औलिया से बहुत कम लोग आगाह हुवे

اولیاء را ہمچو خود پنداشتند — ہمسری با انبیاء برداشتند

लोगों ने औलिया को अपने जैसा समझ लिया — और अम्बिया के साथ बराबरी कर बैठे

ایں ندانستند ایشاں از عمیٰ — ہست فرقے درمیاں بے انتہا

उन लोगों ने अपने अन्धेपन से येह नहीं जाना — कि अ़वाम और औलिया के दरमियान बे इन्तिहा फ़र्क़ है

बहर ह़ाल ख़ुलासए कलाम येह है कि औलियाए किराम को आ़म इन्सानों की त़रह़ नहीं समझना चाहिये बल्कि येह अ़क़ीदा रख कर औलियाए किराम की ता'ज़ीमो तकरीम करनी चाहिये कि उन लोगों पर

खुदावन्दे करीम का ख़ास फ़ज़्ले अ़ज़ीम है और येह लोग बे पनाह रूहानी ताक़तों के बादशाह बल्कि शहनशाह हैं। येह लोग अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के हुक्म से बड़ी बड़ी बलाएं और मुसीबतें टाल सकते हैं और इन की क़ब्रों का भी अदब रखना लाज़िम है कि औलिया की क़ब्रों पर फ़ुयूज़ व बरकाते खुदावन्दी की बारिश होती रहती है और जो अ़क़ीदत व महब्बत से इन की क़ब्रों की ज़ियारत करता है वोह ज़रूर इन बुज़ुर्गों के फ़ुयूज़ो बरकात से फ़ैज़याब हुवा करता है। इस ज़माने में **फ़िर्क़ए वहाबिय्या** औलियाए किराम की बे अदबी करता रहता है। मैं अपने **सुन्नी भाइयों** को येह नसीह़त व वसिय्यत करता हूं कि इन गुमराहों से हमेशा दूर रहें। और इन लोगों के ज़ाहिरी सादा लिबासों और वुज़ू व नमाज़ों से फ़रैब न खाएं कि इन लोगों के दिल बहुत गन्दे हैं और येह लोग नूरे ईमान की तजल्लियों से मह़रूम हो चुके हैं (معاذاللہ منھم)

﴾49﴿ ह़ज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام की बे मिष्ल वफ़ात

मुल्के शाम में जिस जगह ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام का ख़ैमा गाड़ा गया था। ठीक उसी जगह ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام ने बैतुल मुक़द्दस की बुन्याद रखी। मगर इमारत पूरी होने से क़ब्ल ही ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام की वफ़ात का वक़्त आन पहुंचा। और आप ने अपने फ़रज़न्द ह़ज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام को इस इमारत की तक्मील की वसिय्यत फ़रमाई। चुनान्चे ह़ज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام ने जिन्नों की एक जमाअ़त को इस काम पर लगाया और इमारत की ता'मीर होती रही। यहां तक कि आप की वफ़ात का वक़्त भी क़रीब आ गया और इमारत मुकम्मल न हो सकी तो आप ने येह दुआ़ मांगी कि इलाही मेरी मौत जिन्नों की जमाअ़त पर ज़ाहिर न होने पाए ताकि वोह बराबर इमारत की तकमील में मसरूफ़े अ़मल रहें और इन सभों को जो इल्मे ग़ैब का दा'वा है वोह भी बात़िल ठहर जाए। येह दुआ़ मांग कर आप मेह़राब में दाख़िल हो गए और अपनी आ़दत के मुत़ाबिक़ अपनी लाठी टेक कर इबादत में खड़े हो गए और इसी ह़ालत में आप की वफ़ात हो गई मगर जिन्न मज़दूर येह समझ कर कि आप ज़िन्दा खड़े हुवे हैं बराबर काम में मसरूफ़ रहे और अ़र्सए

दराज़ तक आप का इसी हालत में रहना जिन्नों के गुरोह के लिये कुछ बाइषे हैरत इस लिये नहीं हुवा कि वोह बारहा देख चुके थे कि आप एक एक माह बल्कि कभी कभी दो दो माह बराबर इबादत में खड़े रहा करते हैं। गरज़ एक साल तक वफ़ात के बा'द आप अपनी लाठी के सहारे खड़े रहे यहां तक कि ब हुक्मे इलाही दीमकों ने आप के अ़सा को खा लिया और अ़सा के गिर जाने से आप का जिस्मे मुबारक ज़मीन पर आ गया। उस वक़्त जिन्नों की जमाअ़त और तमाम इन्सानों को पता चला कि आप की वफ़ात हो गई है। कुरआने मजीद में **अल्लाह** तआ़ला ने इस वाक़िए को इन लफ़्ज़ों में बयान फ़रमाया है कि

فَلَمَّا قَضَيْنَا عَلَيْهِ الْمَوْتَ مَا دَلَّهُمْ عَلٰى مَوْتِهٖۤ اِلَّا دَآبَّةُ الْاَرْضِ تَاْكُلُ مِنْسَاَتَهٗ ۚ فَلَمَّا خَرَّ تَبَيَّنَتِ الْجِنُّ اَنْ لَّوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ الْغَيْبَ مَا لَبِثُوْا فِي الْعَذَابِ الْمُهِيْنِ ﴿۱۴﴾ (پ۲۲،سبا:۱۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- फिर जब हम ने उस पर मौत का हुक्म भेजा जिन्नों को उस की मौत न बताई मगर ज़मीन की दीमक ने कि उस का अ़सा खाती थी फिर जब सुलैमान ज़मीन पर आया जिन्नों की ह़क़ीक़त खुल गई अगर ग़ैब जानते होते तो इस ख़्वारी के अ़ज़ाब में न होते।

दर्से हिदायत :- (1) इस कुरआनी वाक़िए से येह हिदायत मिलती है कि ह़ज़राते अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام के मुक़द्दस बदन वफ़ात के बा'द सड़ते गलते नहीं हैं। क्यूंकि आप ने अभी अभी पढ़ लिया कि एक साल तक ह़ज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام वफ़ात के बा'द अ़सा के सहारे खड़े रहे। और इन के जिस्म मुबारक में किसी क़िस्म का कोई तग़य्युर रूनुमा नहीं हुवा। येही ह़ाल तमाम अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام का उन की क़ब्रों में है कि उन के बदन को मिट्टी खा नहीं सकती। चुनान्चे, ह़दीष शरीफ़ में है जिस को इब्ने माजा ने रिवायत किया है कि

اِنَّ اللّٰهَ حَرَّمَ عَلَى الْاَرْضِ اَنْ تَاْكُلَ اَجْسَادَ الْاَنْبِيَاءِ فَنَبِيُّ اللّٰهِ حَيٌّ يُرْزَقُ

(سنن ابن ماجه، كتاب الجنائز، باب ذكر وفاته.....الخ، ج٣، ص٢٩١، رقم ١٦٣٧)

बेशक अल्लाह ने ज़मीन पर ह़राम फ़रमा दिया है कि वोह अम्बिया के जिस्मों को खाए लिहाज़ा अल्लाह के नबी ज़िन्दा हैं और उन को रोज़ी दी जाती है।

और ह़ाशियए मिश्कात में तह़रीर है कि हर नबी की येही शान है कि वोह क़ब्रों में ज़िन्दा हैं और अल्लाह तआ़ला उन को रोज़ी अ़ता फ़रमाता है और येह ह़दीष सह़ीह़ है। और इमाम बैहक़ी ने फ़रमाया है कि अम्बिया عَلَيۡهِمُ السَّلَام मुख़्तलिफ़ अवक़ात में मुतअ़द्दिद मक़ामात पर तशरीफ़ ले जाएं येह जाइज़ व दुरुस्त है।

(مرقاۃ المفاتیح، کتاب الصلوٰۃ، باب الجمعۃ، الفصل الثالث، ج۳، ص ۴۲۰، رقم ۱۳۶۶)

इसी लिये अहले सुन्नत व जमाअ़त का येही अ़क़ीदा है कि ह़ज़राते अम्बिया عَلَيۡهِمُ السَّلَام अपनी अपनी मुक़द्दस क़ब्रों में ह़याते जिस्मानी के लवाज़िम के साथ ज़िन्दा हैं। **वहाबिय्यों** का येह अ़क़ीदा है कि **वोह मर कर मिट्टी में मिल गए।** इसी लिये येह गुस्ताख़ फ़िर्क़ा अम्बियाए किराम की क़ब्रों को मिट्टी का ढेर कह कर उन मुक़द्दस क़ब्रों की तौहीन और उन को मुन्हदिम करने की कोशिश में लगा रहता है। ह़द हो गई कि आ़लमे इस्लाम की इन्तिहाई बेचैनी के बा वुजूद गुम्बदे ख़ज़रा को मिस्मार कर देने की स्कीमें बराबर ह़ुकूमते सऊ़दिय्या में बनती रहती हैं मगर ख़ुदावन्दे करीम का येह फ़ज़्ले अ़ज़ीम है कि अब तक वोह इस प्लान को ब-रूएकार नहीं ला सके हैं और ان شاء اللہ تعالٰی आइन्दा भी उन का येह शैत़ानी प्लान पूरा न हो सकेगा। क्यूंकि

जिस का ह़ामी हो ख़ुदा उस को घटा सकता है कौन
जिस का ह़ाफ़िज़ हो ख़ुदा उस को मिटा सकता है कौन

(2) ह़ज़रते सुलैमान عَلَيۡهِ السَّلَام की उ़म्र शरीफ़ 53 साल की हुई। 13 बरस की उ़म्र में आप को बादशाही मिली और चालीस बरस तक आप तख़्ते सल्त़नत पर जल्वा गर रहे। आप का मज़ारे अक़्दस बैतुल मुक़द्दस में है। واللہ تعالٰی اعلم

﴾50﴿ क़ारून का अन्जाम

क़ारून हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के चचा "यसहर" का बेटा था। बहुत ही शकील और ख़ूब सूरत आदमी था। इसी लिये लोग उस के हुस्नो जमाल से मुतअष्षिर हो कर उस को "मुनव्वर" कहा करते थे। इस के साथ साथ उस में येह कमाल भी था कि वोह बनी इस्राईल में "**तौरात**" का बहुत बड़ा आ़लिम, और बहुत ही मिलनसार व बा अख़्लाक़ इन्सान था। और लोग उस का बहुत ही अदबो एह़तिराम करते थे।

लेकिन बे शुमार दौलत उस के हाथ में आते ही उस के ह़ालात में एक दम तग़य्युर पैदा हो गया और सामरी की त़रह़ मुनाफ़िक़ हो कर हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام का बहुत बड़ा दुश्मन हो गया और आ'ला दरजे का मुतकब्बिर और मग़रूर हो गया। जब ज़कात का हुक्म नाज़िल हुवा तो उस ने हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के रू बरू येह अ़हद किया कि वोह अपने तमाम मालों में से हज़ारहवां हिस्सा ज़कात निकालेगा मगर जब उस ने मालों का हिसाब लगाया तो एक बहुत बड़ी रक़म ज़कात की निकली। येह देख कर उस पर एक दम हि़र्स व बुख़्ल का भूत सुवार हो गया और न सिर्फ़ ज़कात का मुन्किर हो गया बल्कि आ़म तौ़र पर बनी इस्राईल को बहकाने लगा कि हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام इस बहाने तुम्हारे मालों को ले लेना चाहते हैं, यहां तक कि हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام से लोगों को बर गुश्ता करने के लिये उस ख़बीष ने येह गन्दी और घिनावनी चाल चली कि एक औ़रत को बहुत ज़ियादा मालो दौलत दे कर आमादा कर लिया कि वोह आप पर बदकारी का इल्ज़ाम लगाए। चुनान्चे, ऐन उस वक़्त जब कि हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام वा'ज़ फ़रमा रहे थे। क़ारून ने आप को टोका कि फ़ुलानी औ़रत से आप ने बदकारी की है। हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने फ़रमाया कि उस औ़रत को मेरे सामने लाओ। चुनान्चे, वोह औ़रत बुलाई गई तो हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने फ़रमाया कि ऐ औ़रत ! उस अल्लाह की क़सम ! जिस ने बनी इस्राईल के लिये दरिया को फाड़ दिया। और आ़फ़िय्यत व सलामती के साथ दरिया के पार करा कर फ़िरऔ़न से नजात दी।

सच सच कह दे कि वाक़िआ क्या है ? ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के जलाल से औ़रत सहम कर कांपने लगी और उस ने मजमए़ आ़म में साफ़ साफ़ कह दिया कि ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नबी ! मुझ को क़ारून ने कषीर दौलत दे कर आप पर बोहतान लगाने के लिये आमादा किया है। उस वक़्त ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام आबदीदा हो कर सजदए शुक्र में गिर पड़े और ब-ह़ालते सजदा आप ने येह दुआ़ मांगी कि या अल्लाह ! क़ारून पर अपना क़ह्‌र व ग़ज़ब नाज़िल फ़रमा दे । फिर आप ने मजमअ़ से फ़रमाया कि जो क़ारून का साथी हो वोह क़ारून के साथ ठहरा रहे और जो मेरा साथी हो वोह क़ारून से जुदा हो जाए। चुनान्चे, दो ख़बीषों के सिवा तमाम बनी इस्राईल क़ारून से अलग हो गए।

फिर ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने ज़मीन को हुक्म दिया कि ऐ ज़मीन ! तू इस को पकड़ ले तो क़ारून एक दम घुटनों तक ज़मीन में धंस गया फिर आप ने दोबारा ज़मीन से येही फ़रमाया तो वोह कमर तक ज़मीन में धंस गया। येह देख कर क़ारून रोने और बिलबिलाने लगा और क़राबत व रिश्तेदारी का वासित़ा देने लगा मगर आप ने कोई इल्तिफ़ात न फ़रमाया। यहां तक कि वोह बिल्कुल ज़मीन में धंस गया । दो मन्ह़ूस आदमी जो क़ारून के साथी हुवे थे, लोगों से कहने लगे कि ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने क़ारून को इस लिये धंसा दिया है ताकि क़ारून के मकान और उस के ख़ज़ानों पर ख़ुद क़ब्ज़ा कर लें। तो आप ने अल्लाह तआ़ला से दुआ़ मांगी कि क़ारून का मकान और ख़ज़ाना भी ज़मीन में धंस जाए। चुनान्चे, क़ारून का मकान जो सोने का था और उस का सारा ख़ज़ाना, सभी ज़मीन में धंस गया। (صاوی، ج۴، ص۱۵۴۶ـ۱۵۴۷،پ۲۰، القصص:۸۱)

क़ारून का ख़ज़ाना :- इस को क़ुरआन की ज़बान से सुनिये। अल्लाह तआ़ला का इरशाद है कि हम ने क़ारून को इतने ख़ज़ाने दिये थे कि उन ख़ज़ानों की कुन्जियां एक मज़बूत़ और त़ाक़तवर जमाअ़त ब मुश्किल उठा सकती थी। क़ुरआने मजीद में है :

اِنَّ قَارُوْنَ كَانَ مِنْ قَوْمِ مُوْسٰى فَبَغٰى عَلَيْهِمْ ۪ وَ اٰتَيْنٰهُ مِنَ الْكُنُوْزِ مَاۤ اِنَّ مَفَاتِحَهٗ لَتَنُوْٓاُ بِالْعُصْبَةِ اُولِی الْقُوَّةِ ۗ (پ۲۰،القصص:۷۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- बेशक क़ारून मूसा की क़ौम से था फिर उस ने उन पर ज़ियादती की और हम ने उस को इतने ख़ज़ाने दिये जिन की कुंजिया एक ज़ोरआवर जमाअ़त पर भारी थीं।

हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام की नसीहत :- हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने क़ारून को जो नसीहत फ़रमाई वोह येह है कि जिस को क़ुरआने मजीद ने बयान फ़रमाया है। इसी ख़ैर ख़्वाही वाली नसीहत को सुन कर क़ारून हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام का दुश्मन हो गया। ग़ौर कीजिये कि कितनी मुख़्लिसाना और किस क़दर प्यारी नसीहत है जो हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के साथ साथ सारी क़ौमे क़ारून को सुनाई जाती रही कि :

اِذْ قَالَ لَهٗ قَوْمُهٗ لَا تَفْرَحْ اِنَّ اللّٰهَ لَا یُحِبُّ الْفَرِحِیْنَ ﴿۷۶﴾ وَ ابْتَغِ فِیْمَاۤ اٰتٰىكَ اللّٰهُ الدَّارَ الْاٰخِرَةَ وَ لَا تَنْسَ نَصِیْبَكَ مِنَ الدُّنْیَا وَ اَحْسِنْ كَمَاۤ اَحْسَنَ اللّٰهُ اِلَیْكَ وَ لَا تَبْغِ الْفَسَادَ فِی الْاَرْضِ (پ۲۰،القصص:۷۶،۷۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- जब उस से उस की क़ौम ने कहा इतरा नहीं बेशक अल्लाह इतराने वालों को दोस्त नहीं रखता और जो माल तुझे अल्लाह ने दिया है उस से आख़िरत का घर त़लब कर और दुन्या में अपना ह़िस्सा न भूल और एह़सान कर जैसा अल्लाह ने तुझ पर एह़सान किया और ज़मीन में फ़साद न चाह।

क़ारून ने अपने माल के घमन्ड में इस मुख़्लिसाना नसीहत को ठुकरा दिया और ख़ूब बन संवर कर तकब्बुर और ग़ुरूर से इतराता हुवा क़ौम के सामने आया और हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام की बदगोई और ईज़ा रसानी करने लगा। इस का नतीजा क्या हुवा? इस को क़ुरआन की ज़बान से सुनिये और ख़ुदा की इस क़ाहिराना गिरिफ़्त पर ख़ौफ़े इलाही से थर्राते रहिये। अल्लाह अक्बर

क़ारून ज़मीन में धंस गया :-

فَخَسَفْنَا بِهٖ وَ بِدَارِهِ الْاَرْضَ فَمَا كَانَ لَهٗ مِنْ فِئَةٍ یَّنْصُرُوْنَهٗ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَ مَا كَانَ مِنَ الْمُنْتَصِرِیْنَ ﴿۸۱﴾ (پ۲۰،القصص:۸۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- तो हम ने उसे और उस के घर को ज़मीन में धंसा दिया तो उस के पास कोई जमाअ़त न थी कि **अल्लाह** से बचाने में उस की मदद करती और न वोह बदला ले सका।

दर्से हिदायत :- येह इब्रत नाक वाक़िआ़ हमें येह दर्से हिदायत देता है कि अगर **अल्लाह** तआ़ला मालो दौलत अ़ता फ़रमाए तो इस फ़र्ज़ को लाज़िम जाने कि अपने अम्वाल की ज़कात अदा करता रहे और हरगिज़ हरगिज़ अपने मालो दौलत पर ग़ुरूर और घमन्ड कर के न इतराए। क्यूंकि **अल्लाह** तआ़ला ही दौलत देता है और जब वोह चाहता है पल भर में दौलत छीन भी लेता है। हर वक़्त इस का ध्यान रखते हुवे तवाज़ोअ़ और इन्किसारी की आ़दत रखे और हरगिज़ हरगिज़ कभी अम्बिया व औलिया व सालिह़ीन की ईज़ा रसानी व बदगोई न करे कि इन मक़्बूलाने बारगाहे इलाही की दुआ़ और बद दुआ़ से वोह हो जाया करता है जिस का लोग तसव्वुर और ख़याल भी नहीं कर सकते। (واللہ تعالٰی اعلم)

जन्नत में भी उ़-लमा की ह़ाजत होगी

मदीने के सुल्त़ान, रह़मते आ़लमिय्यान सरवरे ज़ीशान صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने पुरनूर है : जन्नती जन्नत में उ़-लमाए किराम के मोह़ताज होंगे, इस लिये कि वोह हर जुमुआ़ को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के दीदार से मुशर्रफ़ होंगे **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाएगा : تمنوا علی ما شئتم या'नी मुझ से मांगो, जो चाहो। वोह जन्नती "**उ़-लमाए किराम**" की त़रफ़ मुतवज्जेह होंगे कि अपने रब्बे करीम عَزَّوَجَلَّ से क्या मांगें ? वोह फ़रमाएंगे : येह मांगो, वोह मांगो जैसे वोह लोग दुन्या में उ़-लमाए किराम के मोह़ताज थे, जन्नत में भी उन के मोह़ताज होंगे। (फ़ैज़ाने सुन्नत, जि.1, स.1172)

(الفردوس بمأثور الخطاب، ج۱، ۲۳۰،الحدیث۸۸۰، الجامع الصغیر للسیوطی، ص۱۳۵، حدیث۲۲۳۵)

﴾51﴿ रूमी मग़्लूब हो कर फिर ग़ालिब होंगे

फ़ारस और रूम की दोनों सल्तनतों में जंग छिड़ी हुई थी और चूंकि अहले फ़ारस मजूसी थे । इस लिये अ़रब के मुशरिकीन उन का ग़लबा पसन्द करते थे और रूमी चूंकि अहले किताब थे इस लिये मुसलमानों को उन का फ़त्ह़याब होना अच्छा लगता था । खुसरू परवेज़ बादशाहे फ़ारस और क़ैसरे रूम दोनों बादशाहों की फ़ौजें सर ज़मीने शाम के क़रीब मा'रिका आरा हुईं और घमसान की जंग के बा'द अहले फ़ारस ग़ालिब हुवे । मुसलमानों को येह ख़बर बड़ी गिरां गुज़री और कुफ़्फ़ारे मक्का इस ख़बर से मसरूर हो कर मुसलमानों से कहने लगे कि तुम भी अहले किताब और रूमी नसारा भी अहले किताब, और अहले फ़ारस भी आतश परस्त और हम भी बुत परस्त, हमारे भाई तुम्हारे भाइयों पर ग़ालिब हो गए । अगर हमारी तुम्हारी जंग हुई तो इसी त़रह़ हम भी तुम पर ग़ालिब होंगे । इस मौक़अ़ पर कुरआने मजीद की येह आयतें नाज़िल हुईं जिन में ग़ैब की ख़बर दी गई है :

الٓمّٓ ۚ﴿۱﴾ غُلِبَتِ الرُّوۡمُ ۙ﴿۲﴾ فِیۡۤ اَدۡنَی الۡاَرۡضِ وَ ہُمۡ مِّنۡۢ بَعۡدِ غَلَبِہِمۡ سَیَغۡلِبُوۡنَ ۙ﴿۳﴾ فِیۡ بِضۡعِ سِنِیۡنَ ۬ؕ (پ ۲۱، الروم: ۱-۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- रूमी मग़्लूब हुवे पास की ज़मीन में और अपनी मग़्लूबी के बा'द अ़न क़रीब ग़ालिब होंगे चन्द बरस में ।

हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رضی اللہ تعالٰی عنہ ने इन आयात को सुन कर कुफ़्फ़ारे मक्का में येह ए'लान करा दिया कि खुदा की क़सम ! रूमी अहले फ़ारस पर ग़लबा पा जाएंगे । लिहाज़ा ऐ अहले मक्का ! तुम इस वक़्त के नतीजए जंग से खुशी न मनाओ । चूंकि ब ज़ाहिर रूमियों के फ़त्ह़याब होने के अस्बाब दूर दूर तक नज़र न आते थे इस लिये "उबय्य बिन ख़लफ़" आप के बिल मुक़ाबिल खड़ा हो गया और आप के और उस के दरमियान सो सो ऊंट की शर्त़ लग गई कि अगर नव साल के अन्दर रूमी ग़ालिब न आए तो हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رضی اللہ تعالٰی عنہ एक सो ऊंट देंगे और अगर रूमी ग़ालिब आ जाएं तो उबय्य बिन ख़लफ़ एक सो ऊंट

देगा। उस वक़्त तक जूआ इस्लाम में ह़राम नहीं हुवा था । ख़ुदा की शान कि सात ही बरस में क़ुरआन की इस ग़ैबी ख़बर की सदाक़त का ज़ुहूर हो गया और ख़ालिस सुल्हे हुदैबिय्या के दिन सि. 6 हि. में रूमी अहले फ़ारस पर ग़ालिब हो गए और रूमियों ने "मदाइन" में घोड़े बांधे और इराक़ में "रूमिय्या" नामी शहर बसाया और ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने शर्त़ के सो ऊंट उबय्य बिन ख़लफ़ की अवलाद से वुसूल कर लिये क्यूंकि वोह उस दरमियान में मर चुका था। हुज़ूर सय्यिदे आलम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को हुक्म दिया कि शर्त़ के ऊंटों को जो उन्हों ने उबय्य बिन ख़लफ़ की अवलाद से वुसूल किये हैं सब सदक़ा कर दें ! और अपनी ज़ात पर कुछ भी सर्फ़ न करें। (مدارک التنزیل، ج۳،ص۴۵۸،پ۲۱، الروم: ۳)

दर्से हिदायत :- फ़ारस व रूम की जंग में रूमी इस दरजे शिकस्त खा चुके थे कि उन की अ़स्करी त़ाक़त ही फ़ना हो गई थी और ब ज़ाहिर उन के फ़त्ह़याब होने का कोई इम्कान ही नहीं था। मगर सात ही बरस में रूमियों को ऐसी फ़त्ह़ ह़ासिल हो गई कि कोई इस को सोच भी नहीं सकता था। रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की येह ग़ैबी ख़बर आप की सिह़्ह़ते नबुव्वत और क़ुरआने करीम के कलामे इलाही होने की रोशन दलील है। سُبْحٰنَ اللّٰہ सच है।

हज़ार फ़ल्सफ़ियों की चुनां चुनीं बदली ख़ुदा की बात बदलनी न थी नहीं बदली

﴾52﴿ ग़ज़्वए अह़ज़ाब की आंधी

"**ग़ज़्वए अह़ज़ाब**" सि. 4 या सि. 5 हि. में पेश आया। इस जंग का दूसरा नाम "ग़ज़्वए ख़न्दक़" भी है। जब "बनू नज़ीर" के यहूदियों को जिला वत़न कर दिया गया तो यहूदियों के सरदारों ने मक्का जा कर कुफ़्फ़ारे मक्का को नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ जंग करने की तरग़ीब दिलाई और वा'दा किया कि हम तुम्हारा साथ देंगे। चुनान्चे, उन यहूदियों ने कषीर ता'दाद में हथियार और रक़म दे कर कुफ़्फ़ारे मक्का को मदीने पर ह़म्ला करने पर उभार दिया। और अबू सुफ़्यान ने मुशरिकीन व यहूदियों के बहुत से क़बाइल को जम्अ़ कर के एक अ़ज़ीम फ़ौज के साथ

मदीने पर धावा बोल कर हम्ला कर दिया। मक्का से क़बीलए "खुज़ाआ" के चन्द लोगों ने हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को कुफ़्फ़ार की इन तय्यारियों की इत्तिलाअ़ दे दी तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सलमान फ़ारसी رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه के मश्वरे से मदीने के गिर्द एक ख़न्दक़ खुदवानी शुरूअ़ कर दी। इस ख़न्दक़ को खोदने में मुसलमानों के साथ खुद रह़मते आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने भी काम किया। मुसलमान ख़न्दक़ खोद कर फ़ारिग़ ही हुवे थे कि मुशरिकीन एक लश्करे जर्रार ले कर टूट पड़े और मदीनए त़य्यिबा पर हल्ला बोल दिया। और तीन त़रफ़ से काफ़िरों का लश्कर इस ज़ोरो शोर के साथ उमंड पड़ा कि शहरे मदीना की फ़ज़ाओं में हर त़रफ़ गर्दो ग़ुबार का तूफ़ान उठ गया। इस ख़ौफ़नाक चढ़ाई और लश्करे कुफ़्फ़ार की मा'रिका आराई का नक़्शा क़ुरआन की ज़बान से सुनिये :

اِذْ جَآءُوْكُمْ مِّنْ فَوْقِكُمْ وَ مِنْ اَسْفَلَ مِنْكُمْ وَ اِذْ زَاغَتِ الْاَبْصَارُ وَ بَلَغَتِ الْقُلُوْبُ الْحَنَاجِرَ وَ تَظُنُّوْنَ بِاللّٰهِ الظُّنُوْنَا ۝۱۰ هُنَالِكَ ابْتُلِیَ الْمُؤْمِنُوْنَ وَ زُلْزِلُوْا زِلْزَالًا شَدِیْدًا ۝۱۱ (پ ۲۱، الاحزاب: ۱۰ـ۱۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :– जब काफ़िर तुम पर आए तुम्हारे ऊपर से और तुम्हारे नीचे से और जब कि ठिटक कर रह गईं निगाहें और दिल गलों के पास आ गए और तुम **अल्लाह** पर त़रह़ त़रह़ के गुमान करने लगे (उम्मीद व यास के) वोह जगह थी कि मुसलमानों की जांच हुई और ख़ूब सख़्ती से झन्झोड़े गए।

इस लड़ाई में मुनाफ़िक़ीन जो मुसलमानों के दोश ब दोश खड़े थे वोह कुफ़्फ़ार के इन लश्करों को देखते ही बुज़दिल हो कर फिसल गए और इन के निफ़ाक़ का पर्दा चाक हो गया। और वोह जंग से जान चुरा कर अपने घरों में छुप कर बैठे रहने की इजाज़त त़लब करने लगे। लेकिन इस्लाम के सच्चे जां निषार मुहाजिरीन व अन्सार इस त़रह़ सीना सिपर हो कर डट गए कि वोह कोहे सल्अ़ और कोहे उहुद की पहाड़ियां सर उठा उठा कर इन मुजाहिदीन की ऊलुल अ़ज़्मियों और जां निषारियों को हैरत की निगाह से देखने लगीं ! इन फ़िदा कारों की ईमानी जुराअत व इस्लामी

शुजाअत की तस्वीर सफ़्हाते कुरआन पर ब सूरते तहरीर देखिये खुदावन्दे आलम का इरशाद है :

وَلَمَّا رَاَ الْمُؤْمِنُوْنَ الْاَحْزَابَ ۙ قَالُوْا هٰذَا مَا وَعَدَنَا اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ وَصَدَقَ اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ ۫ وَمَا زَادَهُمْ اِلَّاۤ اِيْمَانًا وَّتَسْلِيْمًا ﴿۲۲﴾ (پ۲۱،الاحزاب:۲۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- और जब मुसलमानों ने काफ़िरों के लश्कर देखे बोले येह है वोह जो हमें वा'दा दिया था अल्लाह और उस के रसूल ने और सच फ़रमाया अल्लाह और उस के रसूल ने और इस से उन्हें न बढ़ा मगर ईमान और अल्लाह की रिज़ा पर राज़ी होना।

कुफ़्फ़ार ने जब मदीने के गिर्द ख़न्दक़ को हाइल देखा तो हैरान रह गए और कहने लगे कि येह तो ऐसी तदबीर है कि जिस से अ़रब के लोग अब तक नावाक़िफ़ थे। बहर हाल काफ़िरों ने ख़न्दक़ के किनारे से मुसलमानों पर तीर अन्दाज़ी और संगबारी शुरूअ़ कर दी। कहीं कहीं से काफ़िरों ने ख़न्दक़ को पार भी कर लिया और जम कर लड़ाई भी हुई। मुसलमान काफ़िरों के इस मुहासरे से गो परेशान थे। मगर उन के अ़ज़्मे इस्तिक़लाल में बाल बराबर भी फ़र्क़ नहीं आया। वोह अपने अपने मोरचों पर जम कर दिफ़ाई जंग लड़ते रहे। अचानक एक दम अल्लाह तआ़ला ने मुसलमानों की इस त़रह़ मदद फ़रमाई कि नागहां मशरिक़ की जानिब से एक ऐसी तूफ़ान खेज़ और हलाकत अंगेज़ शदीद आंधी आई जो क़हरे क़हहार व ग़ज़बे जब्बार बन कर लश्करे कुफ़्फ़ार पर खुदा की मार बन गई। देगें चूल्हों से उलट पलट हो कर इधर उधर लुढ़क गईं। ख़ैमे उखड़ उखड़ कर उड़ गए और हर त़रफ़ घटा टोप अन्धेरा छा गया। और शदीद सर्दी की लहरों ने काफ़िरों को झन्झोड़ डाला। फिर अल्लाह तआ़ला ने फ़िरिश्तों की फ़ौज भेज दी जिन के रो'ब व दबदबे से कुफ़्फ़ार के दिल लरज़ गए। और उन पर ऐसी दहशत व वहशत सुवार हो गई कि उन्हें राहे फ़रार इख़्तियार करने के सिवा कोई चारा ही न रहा। चुनान्चे, लश्करे कुफ़्फ़ार के सिपह सालार अबू सुफ़्यान ने हांपते कांपते हुवे अपने लश्कर

में ए'लान कर दिया कि राशन ख़त्म हो चुका और मौसिम निहायत ख़राब है और यहूदियों ने हमारा साथ छोड़ दिया। लिहाज़ा अब मदीने का मुहासरा बेकार है। येह कह कर कूच का नक़्क़ारा बजा दिया और बहुत सा सामान छोड़ कर मैदाने जंग से भाग निकला और दूसरे क़बाइल भी तित्तर बित्तर हो कर इधर उधर भाग गए और पन्दरह या चोबीस रोज़ के बा'द मदीने का मत्लअ़ कुफ़्फ़ार के गर्दो गुबार से साफ़ हो गया।

(مدارج النبوت (فارسی) ج۲، ص ۱۷۲۔۱۷۳ ، بحث غزوۂ خندق)

गज़्वए अह़ज़ाब की येही वोह आंधी है जिस का ज़िक्र ख़ुदावन्दे कुद्दूस ने कुरआन में इस त़रह़ फ़रमाया है।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اذْكُرُوْا نِعْمَةَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ اِذْ جَآءَتْكُمْ جُنُوْدٌ فَاَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِيْحًا وَّ جُنُوْدًا لَّمْ تَرَوْهَا ؕ (پ۲۱،الاحزاب:۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :– ऐ ईमान वालो ! **अल्लाह** का एह़सान अपने ऊपर याद करो जब तुम पर कुछ लश्कर आए तो हम ने उन पर आंधी और वोह लश्कर भेजे जो तुम्हें नज़र न आए।

दर्से हिदायत :– इस वाक़िए़ से हम को येह सबक़ मिलता है कि जब कुफ़्फ़ार का मुक़ाबला जंग में हो तो मुसलमानों को किसी ह़ाल में भी हरगिज़ हरगिज़ मायूस न होना चाहिये और येह यक़ीन रख कर मुक़ाबले पर डटे रहना चाहिये कि ज़रूर ज़रूर नुस्रते ख़ुदावन्दी और इम्दादे ग़ैबी मुसलमानों की मदद करेगी बस शर्त़ येह है कि इख़्लासे निय्यत के साथ मुसलमान षाबित क़दम रहें और सब्रो इस्तिक़लाल के साथ मैदाने जंग में डटे रहें। चुनान्चे, जंगे बद्र व जंगे उहुद व जंगे अह़ज़ाब वग़ैरा कुफ़्र व इस्लाम की लड़ाइयों में येह मन्ज़र नज़र आया कि इन्तिहाई मुश्किल ह़ालात में भी जब मुसलमान षाबित क़दम रहे तो ग़ैब से नुस्रते ख़ुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ और इम्दादे ग़ैबी ने इस त़रह़ जल्वा दिखाया कि दम ज़दन में जंग का पांसा पलट गया और मुसलमानों को फ़त्ह़े मुबीन ह़ासिल हो गई और कुफ़्फ़ार बा वुजूदे अपनी कषरत व शौकत के शिकस्त खा कर भाग निकले। (واللہ تعالٰی اعلم)

﴾53﴿ क़ौमे सबा का सैलाब

"सबा" अ़रब का एक क़बीला है जो अपने मूरिषे आ'ला सबा बिन यशजब बिन या'रब बिन क़हत़ान के नाम से मश्हूर है। इस क़ौम की बस्ती यमन में शहरे "सन्आ़" से छे मील की दूरी पर वाके़अ़ थी। इस आबादी की आबो हवा और ज़मीन इतनी साफ़ और इस क़दर लत़ीफ़ व पाकीज़ा थी कि इस में मच्छर न मख्खी न पिस्सू न खटमल न सांप न बिच्छू। मौसिम निहायत मो'तदिल न गर्मी न सर्दी। यहां के बाग़ात में कषीर फल आते थे। कि जब कोई शख़्स सर पर टोकरा लिये गुज़रता तो बिग़ैर हाथ लगाए क़िस्म क़िस्म के फलों से उस का टोकरा भर जाता था। ग़रज़ येह क़ौम बड़ी फ़ारिग़ुलबाली और ख़ुशह़ाली में अम्नो सुकून और आराम व चैन से ज़िन्दगी बसर करती थी मगर ने'मतों की कषरत और ख़ुशह़ाली ने इस क़ौम को सरकश बना दिया था। अल्लाह तआ़ला ने इस क़ौम की हिदायत के लिये यके बा'द दीगरे तेरह नबियों को भेजा जो इस क़ौम को ख़ुदा की ने'मतें याद दिला दिला कर अ़ज़ाबे इलाही से डराते रहे। मगर इन सरकशों ने ख़ुदा के मुक़द्दस नबियों को झुटला दिया और इस क़ौम का सरदार जिस का नाम "ह़म्माद" था वोह इतना मुतकब्बिर और सरकश आदमी था कि जब उस का लड़का मर गया तो उस ने आस्मान की त़रफ़ थूका और अपने कुफ़्र का ए'लान कर दिया। और ए'लानिय्या लोगों को कुफ़्र की दा'वत देने लगा और जो कुफ़्र करने से इन्कार करता, उस को क़त्ल कर देता था और ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ के नबियों से निहायत ही बे अदबी और गुस्ताख़ी के साथ कहता था कि आप लोग अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से कह दीजिये कि वोह अपनी ने'मतों को हम से छीन ले। जब ह़म्माद और उस की क़ौम का तुग़यान व इस्यान बहुत ज़ियादा बढ़ गया तो अल्लाह तआ़ला ने इस क़ौम पर सैलाब का अ़ज़ाब भेजा। जिस से इन लोगों के बाग़ात और अम्वाल व मकानात सब ग़र्क़ हो कर फ़ना हो गए और पूरी बस्ती रैत के तोदों में दफ़्न हो गई और इस त़रह़ येह क़ौम तबाहो बरबाद हो गई कि इन की बरबादी मुल्के अ़रब में ज़रबुल मषल बन गई। उ़म्दा और लज़ीज़ फलों के बाग़ात की जगह झाऊ और जंगली बेरूं के ख़ारदार और ख़ौफ़नाक जंगल उग गए और येह क़ौम उ़म्दा और लज़ीज़ फलों के लिये तरस गई।

सैलाब किस तृरह आया ? :- क़ौमे सबा की बस्ती के किनारे पहाड़ों के दामन में बन्द बांध कर मलिका बिल्क़ीस ने तीन बड़े बड़े तालाब नीचे ऊपर बना दिये थे। एक चूहे ने ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ के हुक्म से बन्द की दीवार में सूराख़ कर दिया और वोह बढ़ते बढ़ते बहुत बड़ा शिगाफ़ बन गया और यहां तक कि बन्द की दीवार टूट गई और नागहां ज़ोरदार सैलाब आ गया। बस्ती वाले इस सूराख़ व शिगाफ़ से ग़ाफ़िल थे और अपने घरों में चैन की बांसरी बजा रहे थे कि अचानक सैलाब के धारों ने इन की बस्ती को ग़ारत कर डाला। और हर तृरफ़ बरबादी और वीरानी का दौर दौरा हो गया। अल्लाह तआ़ला ने क़ौमे सबा के इस हलाकत आफ़रीं सैलाब का तज़्किरा फ़रमाते हुवे कुरआने मजीद में फ़रमाया :

لَقَدْ كَانَ لِسَبَاٍ فِیْ مَسْكَنِهِمْ اٰیَةٌۚ جَنَّتٰنِ عَنْ یَّمِیْنٍ وَّ شِمَالٍ۬ؕ كُلُوْا مِنْ
رِّزْقِ رَبِّكُمْ وَ اشْكُرُوْا لَهٗؕ بَلْدَةٌ طَیِّبَةٌ وَّ رَبٌّ غَفُوْرٌ(۱۵) فَاَعْرَضُوْا
فَاَرْسَلْنَا عَلَیْهِمْ سَیْلَ الْعَرِمِ وَ بَدَّلْنٰهُمْ بِجَنَّتَیْهِمْ جَنَّتَیْنِ ذَوَاتَیْ اُكُلٍ
خَمْطٍ وَّ اَثْلٍ وَّ شَیْءٍ مِّنْ سِدْرٍ قَلِیْلٍ(۱۶) ذٰلِكَ جَزَیْنٰهُمْ بِمَا كَفَرُوْاؕ وَ
هَلْ نُجٰزِیْۤ اِلَّا الْكَفُوْرَ(۱۷) (پ ۲۲، سبا: ۱۵ ـ ۱۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- बेशक सबा के लिये उन की आबादी में निशानी थी दो बाग़ दहने और बाएं। अपने रब का रिज़्क़ खाओ और उस का शुक्र अदा करो पाकीज़ा शहर, बख़्शने वाला रब तो उन्हों ने मुंह फेरा तो हम ने उन पर ज़ोर का अहला (सैलाब) भेजा और उन के बाग़ों के इवज़ दो बाग़ उन्हें बदल दिये जिन में बकटा (बद मज़ा) मेवा और झाऊ (झाड़ी) और कुछ थोड़ी सी बैरियां हम ने उन्हें येह बदला दिया उन की नाशुक्री की सज़ा और हम किसे सज़ा देते हैं ? उसी को जो नाशुक्रा है।

दर्से हिदायत :- क़ौमे सबा की येह हलाकत व बरबादी उन की सरकशी और ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की ने'मतों की नाशुक्री के सबब से हुई। उन की बद आ'मालियां और ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ के नबियों के साथ बे अदबियां और गुस्ताख़ियां जब बहुत बढ़ गईं तो ख़ुदावन्दे क़ह्हार व जब्बार का क़ह्र व ग़ज़ब अ़ज़ाब बन कर सैलाब की सूरत में आ गया और उन को तबाहो बरबाद कर दिया गया।

सच है कि नेकी का अषर आबादी और बदी का अषर बरबादी है। लिहाज़ा हर ने'मत पाने वाली क़ौम को लाज़िम है कि खुदा की ने'मतों का शुक्र अदा करे और सरकशी व गुनाह से हमेशा किनारा कशी इख़्तियार करे, वरना ख़त़रा है कि अ़ज़ाबे इलाही न उतर पड़े क्यूंकि जो क़ौम सरकशी और बद आ'माली को अपना त़रीक़ए कार बना लेती है, उस का लाज़िमी अषर येही होता है कि वोह क़ौम अ़ज़ाबे इलाही की मार से बरबाद और उस की आबादियां तहस नहस हो कर वीरान बन जाती हैं। (نعوذبالله منه)

﴾54﴿ ह़ज़रते ईसा عَلَیْہِ السَّلَام के तीन मुबल्लिग़ीन

"अन्त़ाकिय्या" मुल्के शाम का एक बेहतरीन शहर था। जिन की फ़सीलें संगीन दीवारों से बनी हुई थीं और पूरा शहर पांच पहाड़ों से घिरा हुवा था। और शहर की आबादी का रक़बा बारह मील तक फेला हुवा था। ह़ज़रते ईसा عَلَیْہِ السَّلَام ने अपने ह़वारियों में से दो मुबल्लिग़ों को तब्लीग़े दीन के लिये उस शहर में भेजा। एक का नाम "सादिक़" और दूसरे का नाम "मस्दूक़" था। जब येह दोनों शहर में पहुंचे तो एक बूढ़े चरवाहे से इन दोनों की मुलाक़ात हुई जिस का नाम "**ह़बीब नज्जार**" था। सलाम के बा'द ह़बीब नज्जार ने पूछा कि आप लोग कौन हैं और कहां से आए हैं और मक़्सद क्या है ? तो इन दोनों साहिबान ने कहा कि हम दोनों ह़ज़रते ईसा عَلَیْہِ السَّلَام के भेजे हुवे मुबल्लिग़ीन हैं और इस बस्ती वालों को तौह़ीद और खुदा परस्ती की दा'वत देने आए हैं तो ह़बीब नज्जार ने कहा कि आप लोगों के पास इस की कोई निशानी भी है ? तो इन दोनों ने कहा कि जी हां हम लोग मरीज़ों और मादर ज़ाद अन्धों को खुदा عَزَّوَجَلَّ के हुक्म से शिफ़ा देते हैं। (येह इन दोनों की करामत और ह़ज़रते ईसा عَلَیْہِ السَّلَام का मो'जिज़ा था)। येह सुन कर ह़बीब नज्जार ने कहा कि मेरा एक लड़का मुद्दतों से बीमार है। क्या आप लोग उस को तन्दुरुस्त कर देंगे ? इन दोनों ने कहा कि जी हां ! उस को हमारे पास लाओ। चुनान्चे, इन दोनों ने उस मरीज़ लड़के पर अपना हाथ फेर दिया और वोह फ़ौरन ही तन्दुरुस्त हो कर खड़ा हो गया। येह ख़बर बिजली की त़रह़ सारे शहर में फेल गई और बहुत से मरीज़ जम्अ़ हो गए और सब शिफ़ायाब भी हो गए।

इस शहर का बादशाह "अन्त़ीख़ा" नामी एक बुत परस्त था वोह इन दोनों की ज़बान से तौह़ीद की दा'वत सुन कर मारे ग़ुस्से के आपे से बाहर हो गया। और उस ने दोनों मुबल्लिग़ों को गिरिफ़्तार कर के सो सो दुर्रे लगा कर जैल ख़ाने में क़ैद कर दिया। इस के बा'द ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام ने अपने ह़वारियों के सरदार ह़ज़रते "शमऊ़न" رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को अन्त़ाकिय्या भेजा। आप किसी त़रह़ बादशाह के दरबार में पहुंच गए और बादशाह से कहा कि आप ने हमारे दो आदमियों को कोड़े लगा कर जैल ख़ाने में क़ैद कर दिया है। कम से कम आप उन दोनों की पूरी बात तो सुन लेते। बादशाह ने उन दोनों को जैल ख़ाने से बुलवा कर गुफ़्त्गू शुरूअ़ की तो इन दोनों ने कहा कि हम येही कहने के लिये यहां आए हैं कि तुम लोग इन बुतों की इ़बादत को छोड़ कर ख़ुदाए वह़दहू की इ़बादत करो जिस ने तुम को और तुम्हारे बुतों को भी पैदा किया है। जब बादशाह ने इन दोनों से कोई निशानी त़लब की तो इन दोनों साह़िबों ने एक ऐसे मादर ज़ाद अन्धे को जिस के सर में आंखें थीं ही नहीं, हाथ फेर दिया तो उस की पेशानी में आंखों के दो सूराख़ बन गए। फिर इन दोनों साह़िबान ने मिट्टी के दो ग़लूले (गोले) बना कर इन सूराख़ों में रख कर दुआ़ कर दी तो येह दोनों ग़लूले आंखें बन कर रोशन हो गए और मादर ज़ाद अन्धा अंखयारा बन गया। ह़ज़रते शमऊ़न ने फ़रमाया कि ऐ बादशाह! क्या तुम्हारे बुतों में भी येह क़ुदरत है? बादशाह ने कहा कि नहीं तो ह़ज़रते शमऊ़न ने फ़रमाया कि फिर तुम उस की इ़बादत क्यूं नहीं करते जो ऐसी क़ुदरत वाला है कि अन्धों को आंखें अ़त़ा फ़रमा देता है। येह सुन कर बादशाह ने कहा कि क्या तुम्हारा ख़ुदा मुर्दों को ज़िन्दा कर सकता है? अगर वोह मुर्दों को ज़िन्दा कर सकता है तो एक मुर्दे को ज़िन्दा कर दे जो मेरे एक दहक़ान का लड़का है और वोह कई रोज़ से मरा पड़ा है। और मैं ने उस के बाप के इन्तिज़ार में अभी तक उस को दफ़्न नहीं किया है। बादशाह इन तीनों साह़िबान को ले कर लड़के की लाश के पास गया और इन तीनों साह़िबान ने दुआ़ मांगी तो ख़ुदा के हुक्म से वोह मुर्दा ज़िन्दा हो गया। और बुलन्द आवाज़ से कहा कि मैं बुत परस्त था तो मैं मरने के बा'द जहन्नम की वादियों में दाख़िल किया गया। लिहाज़ा मैं तुम लोगों को अ़ज़ाबे इलाही

से डराते हुवे अल्लाह पर ईमान लाने की दा'वत देता हूं और तुम लोगों को नसीहत करता हूं कि खुदा के पैग़म्बर हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام का कलिमा पढ़ कर इन तीनों मुबल्लिग़ीन की बात मान कर इन लोगों के साथ अच्छा सुलूक करो क्यूंकि येह तीनों साहिबान हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام के हवारी और उन के फ़िरस्तादे हैं।

येह मन्ज़र देख कर और मुर्दे की तक़रीर सुन कर सब के सब हैरान रह गए। इतने में हबीब नज्जार भी दौड़ते हुवे पहुंच गए और इन्हों ने भी बादशाह और सारे शहर वालों को मुबल्लिग़ीन की तस्दीक़ के लिये पुर ज़ोर तक़रीर कर के आमादा कर लिया। यहां तक कि बादशाह और उस के तमाम दरबारियों ने ईमान की दा'वत को क़बूल कर लिया और सब साहिबे ईमान हो गए मगर चन्द मन्हूस लोग जो बुतों की महब्बत में अक़्ल व होश खो चुके थे वोह ईमान नहीं लाए बल्कि हबीब नज्जार को क़त्ल कर दिया तो उन मर्दूदों पर अज़ाब आया और अज़ाबे इलाही से हलाक कर दिये गए। (تفسیر صاوی، ج۵، ص۱۷۰۸۔۱۷۱۰، پ۲۲، یٰسٓ:۱۳)

इस वाक़िए को कुरआने मजीद ने इन लफ़्ज़ों में बयान फ़रमाया है :

وَاضْرِبْ لَهُمْ مَّثَلًا اَصْحٰبَ الْقَرْیَةِۘ اِذْ جَآءَهَا الْمُرْسَلُوْنَۚ﴿۱۳﴾ اِذْ
اَرْسَلْنَاۤ اِلَیْهِمُ اثْنَیْنِ فَكَذَّبُوْهُمَا فَعَزَّزْنَا بِثَالِثٍ فَقَالُوْۤا اِنَّاۤ اِلَیْكُمْ
مُّرْسَلُوْنَ﴿۱۴﴾ قَالُوْا مَاۤ اَنْتُمْ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَاۙ وَ مَاۤ اَنْزَلَ الرَّحْمٰنُ مِنْ
شَیْءٍۙ اِنْ اَنْتُمْ اِلَّا تَكْذِبُوْنَ﴿۱۵﴾ قَالُوْا رَبُّنَا یَعْلَمُ اِنَّاۤ اِلَیْكُمْ
لَمُرْسَلُوْنَ﴿۱۶﴾ وَ مَا عَلَیْنَاۤ اِلَّا الْبَلٰغُ الْمُبِیْنُ﴿۱۷﴾ قَالُوْۤا اِنَّا تَطَیَّرْنَا بِكُمْۚ
لَىٕنْ لَّمْ تَنْتَهُوْا لَنَرْجُمَنَّكُمْ وَ لَیَمَسَّنَّكُمْ مِّنَّا عَذَابٌ اَلِیْمٌ﴿۱۸﴾ قَالُوْا
طَآىٕرُكُمْ مَّعَكُمْؕ اَىٕنْ ذُكِّرْتُمْؕ بَلْ اَنْتُمْ قَوْمٌ مُّسْرِفُوْنَ﴿۱۹﴾ وَ جَآءَ مِنْ
اَقْصَا الْمَدِیْنَةِ رَجُلٌ یَّسْعٰى قَالَ یٰقَوْمِ اتَّبِعُوا الْمُرْسَلِیْنَۙ﴿۲۰﴾ اتَّبِعُوْا
مَنْ لَّا یَسْــٴَـلُكُمْ اَجْرًا وَّ هُمْ مُّهْتَدُوْنَ﴿۲۱﴾ (پ۲۲، یٰسٓ:۱۳۔۲۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- और उन से मिषाल बयान करो उस शहर वालों की जब उन के पास फ़िरस्तादे (रसूल) आए जब हम ने उन की तरफ़ दो भेजे फिर उन्हों ने उन को झुटलाया तो हम ने तीसरे से ज़ोर दिया अब उन सब ने कहा कि बेशक हम तुम्हारी त़रफ़ भेजे गए हैं बोले तुम तो नहीं मगर हम जैसे आदमी और रह़मान ने कुछ नहीं उतारा तुम निरे झूटे हो वोह बोले हमारा रब जानता है कि बेशक ज़रूर हम तुम्हारी त़रफ़ भेजे गए हैं और हमारे ज़िम्मे नहीं मगर साफ़ पहुंचा देना बोले हम तुम्हें मन्हूस समझते हैं बेशक तुम अगर बाज़ न आए तो ज़रूर हम तुम्हें संगसार करेंगे बेशक हमारे हाथों तुम पर दुख की मार पड़ेगी। उन्हों ने फ़रमाया तुम्हारी नुहूसत तो तुम्हारे साथ है क्या इस पर बुदकते हो कि तुम समझाए गए बल्कि तुम ह़द से बढ़ने वाले लोग हो और शहर के परले कनारे से एक मर्द दौड़ता आया बोला ऐ मेरी क़ौम ! भेजे हुओं की पैरवी करो ऐसों की पैरवी करो जो तुम से कुछ नेग (अज्र) नहीं मांगते और वोह राह पर हैं।

दर्से हिदायत :- ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام के तीनों मुबल्लिग़ीन या'नी सादिक़ व मस्दूक़ और शमऊ़न की सरगुज़िश्त और तब्लीग़े दीन की राह में उन ह़ज़रात की दुश्वारियां और क़ैदो बन्द के मसाइब और होशरुबा धमकियों को देख कर येह सबक़ मिलता है कि तब्लीग़े दीन करने वालों को बड़ी बड़ी मुसीबतों और मुश्किलात का सामना करना पड़ता है। मगर जब आदमी इस राह में मुस्तक़िल मिज़ाज बन कर षाबित क़दम रहता है और सब्रो तह़म्मुल के साथ इस दीनी काम में डटा रहता है तो अल्लाह तआ़ला ग़ैब से उस की कामयाबी का सामान पैदा फ़रमा देता है वोह मुक़ल्लिबुल क़ुलूब और हादी है वोह एक लम्ह़े में मुन्किरीन के दिलों को बदल देता है और दिलों की गुमराही दूर फ़रमा कर हिदायत का नूर बख़्श देता है। (واللہ تعالٰی اعلم)

﴾55﴿ फूला बाग़ मिनटों में ताराज

हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام के आस्मान पर उठा लिये जाने के थोड़े दिनों बा'द का वाक़िआ़ है कि यमन में "सन्आ़" शहर से दो कोस की दूरी पर एक बाग़ था जिस का नाम "ज़रदान" था। इस बाग़ का मालिक बहुत ही नेक नफ़्स और सख़ी आदमी था। उस का येह दस्तूर था कि फलों को तोड़ने के वक़्त वोह फ़क़ीरों और मिस्कीनों को बुलाता था और ए'लान कर देता था कि जो फल हवा से गिर पड़ें या जो हमारी झोली से अलग जा कर गिरें वोह सब तुम लोग ले लिया करो। इस त़रह़ उस बाग़ का बहुत सा फल फ़ुक़रा व मसाकीन को मिल जाया करता था। बाग़ का मालिक मर गया तो उस के तीनों बेटे उस बाग़ के मालिक हुवे मगर येह तीनों बहुत बख़ील हुवे। उन लोगों ने आपस में तै कर लिया कि अगर फ़क़ीरों और मिस्कीनों को हम लोग बुलाएंगे तो बहुत से फल येह लोग ले जाएंगे और हम लोगों के अहलो इ़याल की रोज़ी में तंगी हो जाएगी। चुनान्चे, इन तीनों भाइयों ने क़सम खा कर येह तै कर लिया कि सूरज निकलने से क़ब्ल ही चल कर हम लोग बाग़ का फल तोड़ लें ताकि फ़ुक़रा व मसाकीन को ख़बर ही न हो। चुनान्चे, इन लोगों की बद निय्यती की नुहू़सत ने येह असरे बद दिखाया कि नागहां रात ही में **अल्लाह** तआ़ला ने बाग़ में एक आग भेज दी। जिस ने पूरे बाग़ को जला कर ख़ाक सियाह कर डाला और उन लोगों को इस की ख़बर भी न हुई। येह लोग अपने मन्सूबे के मुत़ाबिक़ रात के आख़िरी हि़स्से में निहायत ख़ामोशी के साथ फल तोड़ने के लिये रवाना हो गए और रास्ते में चुपके चुपके बातें करते थे ताकि फ़क़ीरों और मिस्कीनों को ख़बर न मिल जाए। लेकिन येह लोग जब बाग़ के पास पहुंचे तो वहां जले हुवे दरख़्तों को देख कर है़रान रह गए। चुनान्चे, एक बोल पड़ा कि हम लोग रास्ता भूल कर किसी और जगह चले आए हैं मगर उन में से जो ब निस्बत दूसरे भाइयों के कुछ नेक नफ़्स था। उस ने कहा कि हम रास्ता नहीं भूले हैं बल्कि **अल्लाह** तआ़ला ने हम लोगों को फलों से मह़रूम कर दिया है लिहाज़ा तुम लोग ख़ुदा की तस्बीह़ पढ़ो तो इन सभों ने येह पढ़ना

शुरूअ़ कर दिया कि سُبۡحٰنَ رَبِّنَاۤ اِنَّا كُنَّا ظٰلِمِیۡنَ ﴿۲۹﴾ या'नी हमारे रब के लिये पाकी है हम लोग यक़ीनन ज़ालिम हैं कि हम ने फ़ुक़रा व मसाकीन का ह़क़ मार लिया फिर वोह तीनों भाई एक दूसरे को मलामत करने लगे और आख़िर में येह कहने लगे कि

عَسٰى رَبُّنَاۤ اَنۡ يُّبۡدِلَنَا خَيۡرًا مِّنۡهَاۤ اِنَّاۤ اِلٰى رَبِّنَا رٰغِبُوۡنَ ﴿۳۲﴾ (پ۲۹،القلم:۳۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- उम्मीद है कि हमें हमारा रब इस से बेहतर बदल दे हम अपने रब की त़रफ़ रग़बत लाते हैं।

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया कि इन लोगों ने सच्चे दिल से तौबा कर ली तो अल्लाह तआ़ला ने इन लोगों की तौबा क़बूल फ़रमा ली और फिर इन लोगों को इस के बदले एक दूसरा बाग़ अ़त़ा फ़रमा दिया जिस में बहुत ज़ियादा और बहुत बड़े बड़े फल आने लगे। इस बाग़ का नाम "ह़ैवान" था और उस में एक एक अंगूर इतना बड़ा बड़ा होता था कि उस का एक ख़ोशा एक ख़च्चर का बोझ हो जाया करता था। अबू ख़ालिद यमानी का बयान है कि मैं उस बाग़ में गया था तो मैं ने देखा कि उस बाग़ में अंगूरों के ख़ोशे ह़ब्शी आदमी के क़द के बराबर बड़े थे। (تفسیر صاوی،ج۶،ص۲۲۱۲،پ۲۹،القلم:۳۲)

दर्से हिदायत :- इस वाक़िए से सबक़ मिलता है कि सख़ावत और नेक निय्यती का अषर माल में ख़ैरो बरकत और माल की फ़िरावानी है और बख़ीली व बद निय्यती का षमरा माल की हलाकत व बरबादी है। और येह भी मा'लूम हुवा कि सच्ची तौबा कर लेने से अल्लाह तआ़ला ज़ाइल शुदा ने'मत से बड़ी और बढ़ कर ने'मत अ़त़ा फ़रमा दिया करता है। सच है कि

ذٰلِكَ فَضۡلُ اللّٰهِ يُؤۡتِيۡهِ مَنۡ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ ذُو الۡفَضۡلِ الۡعَظِيۡمِ

﴾56﴿ दरबारे दावूद عَلَیْہِ السَّلَام में एक अ़जीब मुक़द्दमा

ह़ज़रते दावूद عَلَیْہِ السَّلَام की निनानवे बीवियां थीं। इस के बा'द आप ने एक दूसरी औ़रत को निकाह़ का पैग़ाम दिया जिस को एक मुसलमान ने पहले से पैग़ाम दे रखा था लेकिन आप का पैग़ाम पहुंचने के बा'द औ़रत के औलिया दूसरे की त़रफ़ भला कब और कैसे तवज्जोह कर

सकते थे ? आप से निकाह़ हो गया। येह बात न तो शरअ़न नाजाइज़ थी, न उस ज़माने के रस्मो रवाज के ख़िलाफ़ थी। लेकिन ह़ज़राते अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام की शान बहुत ही अरफ़अ़ व आ'ला होती है। येह आप के मन्सबे आ़ली के मुनासिब न था। इस लिये अल्लाह तआ़ला की मरज़ी येह हुई कि आप को इस पर मुतनब्बेह और आगाह कर दिया जाए।

चुनान्चे, इस का ज़रीआ़ येह बनाया कि फ़िरिश्ते मुद्दई और मुद्दआ़ अ़लैह बन कर आप के दरबार में एक मुक़द्दमा ले कर आए और बजाए दरवाज़े से दाख़िल होने के दीवार फांद कर मस्जिद में आए। आप इन लोगों को दीवार फांदते देख कर कुछ घबरा गए। तो फ़िरिश्तों ने कहा कि आप डरें नहीं। हम दो फ़रीक़ हैं कि एक ने दूसरे पर ज़ियादती की है। लिहाज़ा आप हमारा ठीक ठीक फ़ैसला कर दीजिये और हमें सीधी राह चलाइये। हमारा मुक़द्दमा येह है कि मेरा येह भाई इस के पास निनानवे दुम्बियां हैं और मेरे पास एक ही दुम्बी है। अब येह कहता है कि तू अपनी एक दुम्बी भी मेरे ह़वाले कर दे और इस बात के लिये मुझ पर दबाव डालता है। येह सुन कर ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام ने फ़ौरन येह फ़ैसला फ़रमा दिया कि बेशक येह ज़ियादती है कि वोह तेरी दुम्बी को अपनी दुम्बियों में मिला लेने को कहता है और इस में कोई शुबा नहीं कि अकषर साझे वाले एक दूसरे पर ज़ियादती करते रहते हैं। बजुज़ उन लोगों के जो साह़िबे ईमान और नेक अ़मल हों और ऐसों की ता'दाद बहुत ही कम है। मुक़द्दमे का फ़ैसला सुना कर ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام का माथा ठनका और इन्हों ने समझ लिया कि इस मुक़द्दमे की पेशी दर ह़क़ीक़त येह मेरा इम्तिह़ान था। चुनान्चे, फ़ौरन ही आप सजदे में गिर पड़े और ख़ुदा से मुआ़फ़ी मांगने लगे तो अल्लाह तआ़ला ने आप को मुआ़फ़ फ़रमा दिया। चुनान्चे, क़ुरआने मजीद में है :

فَغَفَرْنَا لَهٗ ذٰلِكَ ؕ وَ اِنَّ لَهٗ عِنْدَنَا لَزُلْفٰى وَ حُسْنَ مَاٰبٍ ﴿۲۵﴾ یٰدَاوٗدُ اِنَّا جَعَلْنٰكَ خَلِیْفَةً فِی الْاَرْضِ فَاحْكُمْ بَیْنَ النَّاسِ بِالْحَقِّ وَ لَا تَتَّبِعِ الْهَوٰى فَیُضِلَّكَ عَنْ سَبِیْلِ اللّٰهِ ؕ (پ۲۳، صٓ:۲۵،۲۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- तो हम ने उसे येह मुआफ़ फ़रमा दिया और बेशक उस के लिये हमारी बारगाह में ज़रूर क़ुर्ब और अच्छा ठिकाना है। ऐ दावूद बेशक हम ने तुझे ज़मीन में नाइब किया तो लोगों में सच्चा हुक्म कर और ख़्वाहिश के पीछे न जाना कि तुझे अल्लाह की राह से बहका देगी।

दर्से हिदायत :- हज़राते अम्बियाए किराम عَلَيۡهِمُ السَّلَام की शान बहुत ही अज़ीमुश्शान है इस लिये बहुत ही मा'मूली और छोटी छोटी बातों पर भी ख़ुदावन्दे क़ुद्दूस की त़रफ़ से इन हज़रात को आगाही दी जाती है और येह नुफ़ूसे क़ुदसिय्या भी बारगाहे ख़ुदावन्दी में इस क़दर मुत़ीअ़ और मुतवाज़ेअ़ होते हैं कि फ़ौरन ही दरबारे ख़ुदावन्दी में सजदा रेज़ हो कर अफ़्वे तक़सीर की इस्तिदआ़ करने लगते हैं। मषल मश्हूर है कि حَسَنَاتُ الۡاَبۡرَارِ سَيِّئَاتُ الۡمُقَرَّبِيۡن या'नी नेक लोगों की नेकियां मुक़र्रबीन के लिये ख़त़ाओं का दरजा रखती हैं। क्यूं न हो।

जिन के रुत्बे हैं सिवा उन को सिवा मुश्किल है

﴾57﴿ اِنۡ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ छोड़ने का नुक़्सान

हज़रते सुलैमान عَلَيۡهِ السَّلَام की निनानवे बीवियां थीं। एक मरतबा आप ने फ़रमाया कि मैं रात भर अपनी निनानवे बीवियों के पास दौरा करूंगा और सब के एक एक लड़का पैदा होगा तो मेरे येह सब लड़के अल्लाह की राह में घोड़ों पर सुवार हो कर जिहाद करेंगे। मगर येह फ़रमाते वक़्त आप ने اِنۡ شَآءَ اللّٰہ नहीं कहा। ग़ालिबन आप उस वक़्त किसी ऐसे शग़्ल में थे कि इस का ख़याल न रहा। इस "اِنۡ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ" को छोड़ देने का येह अषर हुवा कि सिर्फ़ एक औरत ह़ामिला हुई और उस के भी एक नाक़िसुल ख़ल्क़त (कच्चा बच्चा) हुवा। हुज़ूर ख़ातिमुन्नबिय्यीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि अगर हज़रते सुलैमान عَلَيۡهِ السَّلَام ने "اِنۡ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ" कह दिया होता तो उन सब औरतों के लड़के पैदा होते और वोह ख़ुदा की राह में जिहाद करते। (بخاری شریف، کتاب الجهاد، باب من طلب الولد للجهاد، ج۲،ص ۲۲،رقم ۲۸۱۹)

क़ुरआने मजीद में अल्लाह तआ़ला ने इस वाक़िए को इजमालन बहुत मुख़्तसर त़रीक़े पर इस तरह़ बयान फ़रमाया है :

وَلَقَدْ فَتَنَّا سُلَیْمٰنَ وَ اَلْقَیْنَا عَلٰی كُرْسِیِّهٖ جَسَدًا ثُمَّ اَنَابَ ﴿۳۴﴾ قَالَ رَبِّ اغْفِرْ لِیْ وَ هَبْ لِیْ مُلْكًا لَّا یَنْۢبَغِیْ لِاَحَدٍ مِّنْۢ بَعْدِیْۚ اِنَّكَ اَنْتَ الْوَهَّابُ ﴿۳۵﴾ (پ۲۳، صٓ:۳۴،۳۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- और बेशक हम ने सुलैमान को जांचा और उस के तख़्त पर एक बे जान बदन डाल दिया फिर रुजूअ़ लाया अ़र्ज़ की ऐ मेरे रब मुझे बख़्श दे और मुझे ऐसी सल्त़नत अ़त़ा कर कि मेरे बा'द किसी को लाइक़ न हो बेशक तू ही बड़ी दैन वाला।

दर्से हिदायत :- इस कुरआनी वाक़िए़ से येह सबक़ मिलता है कि मुसलमान को लाज़िम है कि आइन्दा के लिये जो काम करने को कहे तो "ان شاء الله تعالٰی" ज़रूर कह दे। इस मुक़द्दस जुम्ले की बरकत से बड़ी उम्मीद है कि वोह काम हो जाएगा। और "ان شاء الله تعالٰی" छोड़ देने का अन्जाम सरासर नुक़्सान और नाकामी व मह़रूमी है। ग़ौर कीजिये कि ह़ज़रते सुलैमान عَلَیْهِ السَّلَام जो खुदावन्दे कुद्दूस के प्यारे नबी और बे मिषाल बादशाह भी हैं। मगर इन्हों ने ला शुऊ़री त़ौर पर ان شاء الله تعالٰی कहना छोड़ दिया तो इन का मक़्सद जो आ'ला दरजे की इ़बादत थी पूरा नहीं हुवा और वोह इस बात पर निहायत मुतअस्सिफ़ और रन्जीदा हो कर खुदा की त़रफ़ रुजूअ़ हुवे, वोह अपनी मग़्फ़िरत की दुआ़ मांगने लगे, फिर भला हम तुम गुनहगारों का क्या ठिकाना है? कि अगर हम तुम ان شاء الله تعالٰی कहना छोड़ देंगे तो भला किस त़रह़ हम अपने मक़्सद में कामयाब होंगे? लिहाज़ा ان شاء الله تعالٰی कहना ज़रूर याद रखिये। क्यूंकि **अल्लाह** तआ़ला ने हमारे रसूले मक़्बूल हुज़ूर ख़ातिमुन्नबिय्यीन صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को कुरआने मजीद में बड़ी ताकीद के साथ येह हुक्म दिया है कि आइन्दा के लिये जो काम भी करने को कहिये तो ज़रूर "ان شاء الله تعالٰی" कह लीजिये।

चुनान्चे, **अल्लाह** तआ़ला ने अपने ह़बीब صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को येह हुक्म फ़रमाया :

وَلَا تَقُوْلَنَّ لِشَایْءٍ اِنِّیْ فَاعِلٌ ذٰلِكَ غَدًا ﴿۲۳﴾ اِلَّاۤ اَنْ یَّشَآءَ اللّٰهُ ۫

وَاذْكُرْ رَّبَّكَ اِذَا نَسِیْتَ (پ۱۵،الكهف:۲۳،۲۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- और हरगिज़ किसी बात को न कहना कि मैं कल येह कर दूंगा मगर येह कि **अल्लाह** चाहे और अपने रब की याद कर जब तू भूल जाए।

﴾58﴿ अस्हाबुल उख़्दूद के मज़ालिम

"अस्हाबुल उख़्दूद" के बारे में मुफ़स्सिरीन का इख़्तिलाफ़ है कि येह कौन लोग थे ? और इन का क्या वाक़िआ़ था। इस बारे में ह़ज़रते सुहैब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि अगली उम्मतों में एक बादशाह था जो ख़ुदाई का दा'वा करता था और एक जादूगर उस के दरबार का बहुत ही मुक़र्रब था। एक दिन जादूगर ने बादशाह से कहा कि मैं अब बूढ़े हो चुका हूं। लिहाज़ा तुम एक लड़के को मेरे पास भेज दो ताकि मैं उस को अपना जादू सिखा दूं। चुनान्चे, बादशाह ने एक होशियार लड़के को जादूगर के पास भेज दिया। लड़का रोज़ाना जादूगर के पास आने जाने लगा लेकिन रास्ते में एक ईमानदार राहिब रहता था। लड़का एक दिन उस राहिब के पास बैठा तो उस की बातें लड़के को बहुत पसन्द आ गईं। चुनान्चे, लड़का जादूगर के पास आने जाने में रोज़ाना राहिब के पास बैठने लगा। एक दिन लड़के ने देखा कि एक बड़ा और मुहीब जानवर खड़ा इन्सानों का रास्ता रोके हुवे है। लड़के ने येह मन्ज़र देख कर येह कहा कि आज येह ज़ाहिर हो जाएगा कि जादूगर अफ़्ज़ल है या राहिब ? चुनान्चे, लड़के ने एक पथ्थर उठा कर येह दुआ़ मांगी कि या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अगर तेरे दरबार में येह मज़हब जादूगर से ज़ियादा मक़्बूल व महबूब हो तो इस जानवर को इसी पथ्थर से मक़्तूल फ़रमा दे। येह दुआ़ कर के लड़के ने जानवर को उस पथ्थर से मार दिया तो येह बहुत बड़ा जानवर एक छोटे से पथ्थर से क़त्ल हो कर मर गया और लोगों का रास्ता खुल गया। लड़के ने राहिब से येह पूरा वाक़िआ़ बयान किया तो राहिब ने

कहा कि ऐ लड़के ! ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ के दरबार में तेरा मरतबा बुलन्द हो गया है। लिहाज़ा अब तू अ़न क़रीब इम्तिह़ान में डाला जाएगा। इस लिये किसी को मेरा पता न बताना और इम्तिह़ान के वक़्त सब्र करना। इस के बा'द येह लड़का इस क़दर साहि़बे करामत हो गया कि इस की दुआ़ओं से मादर ज़ाद अन्धे और कोढ़ी शिफ़ा पाने लगे। रफ़्ता रफ़्ता बादशाह के दरबार में उस का चरचा होने लगा तो बादशाह का एक बहुत ही मुक़र्रब हम नशीन जो अन्धा हो गया था, उस लड़के के पास बहुत से हदाया और तह़ाइफ़ ले कर ह़ाज़िर हुवा। और अपनी बसारत के लिये दुआ़ का त़ालिब हुवा। तो लड़के ने कहा कि अगर तू **अल्लाह** तआ़ला पर ईमान लाए तो मैं तेरे लिये दुआ़ करूंगा। चुनान्चे, वोह ईमान लाया और लड़के ने उस के लिये दुआ़ कर दी तो फ़ौरन ही वोह अंखयारा हो गया और बादशाह के दरबार में गया तो बादशाह ने पूछा कि तुम्हारी आंखों में बसारत कैसे आ गई ? तो मुक़र्रब हम नशीन ने कहा कि मेरे रब ने मुझे बसारत अ़त़ा फ़रमा दी है। बादशाह ने ग़ज़ब नाक हो कर कहा कि क्या मेरे सिवा भी तुम्हारा कोई रब है ? तो उस ने कहा कि हां, **अल्लाह** तआ़ला मेरा और तेरा दोनों का रब है। बादशाह ने उस को त़रह़ त़रह़ की सज़ाएं दे कर पूछा कि किस ने तुझे येह बताया है ? तो उस ने लड़के का नाम बता दिया। फिर बादशाह ने लड़के को क़ैद कर के उस को इस क़दर मारा पीटा कि उस ने राहिब का नाम बता दिया। बादशाह ने राहिब को गिरिफ़्तार कर के उस से कहा कि तुम अपने अ़क़ीदे को छोड़ दो मगर राहिब ने साफ़ साफ़ कह दिया कि मैं अपने इस अ़क़ीदे पर आख़िरी दम तक क़ाइम रहूंगा। येह सुन कर बादशाह आग बगोला हो गया और उस ने राहिब के सर पर आरा चलवा कर उस के दो टुकड़े कर दिये। इस के बा'द बादशाह ने अपने मुक़र्रब हम नशीन के सर पर भी आरा चलवा दिया। फिर लड़के को सिपाहियों के सिपुर्द किया और हुक्म दिया कि इस को पहाड़ की चोटी पर चढ़ा कर ऊपर से नीचे लुढ़का दो। लड़के ने पहाड़ पर चढ़ कर दुआ़ मांगी तो एक ज़लज़ला आया और बादशाह के सिपाही ज़लज़ले के झटकों से हलाक हो गए और लड़का सलामती के साथ फिर बादशाह के सामने आ कर खड़ा हो गया। फिर बादशाह ने ग़ैज़ो ग़ज़ब में भर कर हुक्म

दिया कि इस लड़के को कश्ती पर बिठा कर समुन्दर में ले जाओ और समुन्दर की गहराई में ले जा कर इस को समुन्दर में फेंक दो। चुनान्चे, बादशाह के सिपाही इस को कश्ती में बिठा कर ले गए। फिर जब लड़के ने दुआ मांगी तो कश्ती ग़र्क़ हो गई और सब सिपाही हलाक हो गए और लड़का सिह्हत व सलामती के साथ बादशाह के सामने आ कर खड़ा हो गया और बादशाह हैरान रह गया। फिर लड़के ने बादशाह से कहा कि अगर तू मुझ को शहीद करना चाहता है तो इस की सिर्फ़ एक ही सूरत है कि तू मुझ को सूली पर लटका कर और येह पढ़ कर मुझे तीर मार कि "بِسْمِ اللّٰهِ رَبِّ الْغُلَامْ" चुनान्चे, इसी तरकीब से बादशाह ने उस लड़के को तीर मार कर शहीद कर दिया।

येह मन्ज़र देख कर हज़ारों के मजमअ़ ने बुलन्द आवाज़ से येह ए'लान करना शुरूअ़ कर दिया कि हम इस लड़के के रब पर ईमान लाए। बादशाह ग़ुस्से में बोखला गया और उस ने गढ़ा खुदवा कर उस में आग जलवाई। जब आग के शो'ले ख़ूब बुलन्द होने लगे तो उस ने ईमानदारों को पकड़वा कर उस आग में डालना शुरूअ़ कर दिया। यहां तक कि सतत्तर मोअमिनीन को उस आग में जला डाला। आख़िर में एक ईमान वाली औ़रत अपने बच्चे को गोद में लिये हुवे आई और जब बादशाह ने उस को आग में डालने का इरादा किया तो वोह कुछ घबराई तो उस के दूध पीते बच्चे ने कहा कि ऐ मेरी मां ! सब्र कर तू ह़क़ पर है। बच्चे की आवाज़ सुन कर उस की मां का जज़्बए ईमानी बेदार हो गया और वोह मुत़्मइन हो गई। फिर ज़ालिम बादशाह ने उस मोमिना को भी उस के बच्चे के साथ आग में फेंक दिया।

बादशाह और उस के साथी ख़न्दक़ के किनारे मोअमिनीन के आग में जलने का मन्ज़र कुरसियों पर बैठ कर देख रहे थे और अपनी कामयाबी पर ख़ुशी मना रहे थे और क़हक़हे लगा रहे थे कि एक दम क़हरे इलाही ने ज़ालिमों को अपनी गिरिफ़्त में ले लिया। और वोह इस त़रह़ कि ख़न्दक़ की आग के शो'ले इस क़दर भड़क कर बुलन्द हुवे कि बादशाह और उस के साथियों को आग ने अपनी लपेट में ले लिया और सब के सब लम्ह़ा भर में जल कर राख का ढेर हो गए और बाक़ी तमाम दूसरे मोअमिनीन को **अल्लाह** तआ़ला ने काफ़िर और ज़ालिम के शर से बचा लिया : (تفسیر صاوی، ج٦، ص ٢٣٣٩-٢٣٤٠، پ ٣٠،البروج:٤-٧)

इस वाक़िए को अल्लाह तआला ने कुरआने मजीद में इन लफ़्ज़ों के साथ बयान फ़रमाया है :

قُتِلَ اَصۡحٰبُ الۡاُخۡدُوۡدِ ۙ﴿۴﴾ النَّارِ ذَاتِ الۡوَقُوۡدِ ۙ﴿۵﴾ اِذۡ هُمۡ عَلَيۡهَا قُعُوۡدٌ ۙ﴿۶﴾
وَّهُمۡ عَلٰى مَا يَفۡعَلُوۡنَ بِالۡمُؤۡمِنِيۡنَ شُهُوۡدٌ ؕ﴿۷﴾ (پ۳۰،البروج:۴-۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- खाई वालों पर ला'नत हो वोह उस भड़कती आग वाले जब वोह उस के किनारों पर बैठे थे और वोह खुद गवाह हैं जो कुछ मुसलमानों के साथ कर रहे थे।

दर्से हिदायत :- (1) इस वाक़िए से येह हिदायत का सबक़ मिलता है कि उ़मूमन खुदा की त़रफ़ से इम्तिह़ान हुवा करता है और ब वक़्ते इम्तिह़ान मोमिनों का बलाओं और मुसीबतों पर साबिरो शाकिर रहना ही इस इम्तिह़ान की कामयाबी है।

(2) येह भी मा'लूम हुवा की ईमाने कामिल की येही निशानी है कि मोमिन खुदा عَزَّوَجَلَّ की राह में पड़ने वाली तक्लीफ़ों और मुसीबतों से घबरा कर कभी भी उस में तअ़ज्जुब नहीं पैदा होता, बल्कि मोमिन ख़्वाह फूलों के हार के नीचे हो या तल्वार के नीचे, पानी में ग़र्क़ किया जाए या आग के शो'लों में जलाया जाए हर ह़ाल में बहर सूरत वोह अपने ईमान पर इस्तिक़ामत व इस्तिक़लाल के साथ पहाड़ की त़रह़ क़ाइम रहता है और इस का ख़ातिमा ईमान ही पर होता है। येह वोह सआ़दते उ़ज़्मा है कि जिस को नसीब हो जाए उस की खुश बख़्तियों की मे'राज हो जाती है और वोह खुदा عَزَّوَجَلَّ और रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में वोह क़ुर्ब ह़ासिल कर लेता है कि आस्मानों के फ़िरिश्ते उस के आ'ला मरातिब की सर बुलन्दियों के मद्दाह़ और षना ख़्वां बन जाते हैं।

﴾59﴿ चार क़ाबिले इ़ब्रत औ़रतें

वाहिला :- येह ह़ज़रते नूह़ عَلَيْهِ السَّلَام की बीवी थी। इस को एक नबिय्ये बरह़क़ की ज़ौजिय्यत का शरफ़ ह़ासिल हुवा और बरसों येह अल्लाह तआ़ला के नबी عَلَيْهِ السَّلَام की सोह़बत से सरफ़राज़ रही मगर इस की बद नसीबी क़ाबिले इ़ब्रत है कि इस को ईमान नसीब नहीं हुवा बल्कि येह ह़ज़रते नूह़ عَلَيْهِ السَّلَام की दुश्मनी और तौहीन व बे अदबी के सबब से बे ईमान हो कर मर गई और जहन्नम में दाख़िल हुई।

येह हमेशा अपनी क़ौम में झूटा प्रोपेगन्डा करती रहती थी कि हज़रते नूह عَلَيْهِ السَّلَام मजनून और पागल हैं, लिहाज़ा उन की कोई बात न मानो।

वाइ़ला :- येह हज़रते लूत़ عَلَيْهِ السَّلَام की बीवी थी। येह भी अल्लाह के एक जलीलुल क़द्र नबी عَلَيْهِ السَّلَام की ज़ौजिय्यत व सोह़बत से बरसों सरफ़राज़ रही मगर इस के सर पर बद नसीबी का ऐसा शैत़ान सुवार था कि सच्चे दिल से कभी ईमान नहीं लाई बल्कि उ़म्र भर मुनाफ़िक़ा रही और अपने निफ़ाक़ को छुपाती रही। जब क़ौमे लूत़ पर अ़ज़ाब आया और पथ्थरों की बारिश होने लगी, उस वक़्त हज़रते लूत़ عَلَيْهِ السَّلَام अपने घर वालों और मोअमिनीन को साथ ले कर बस्ती से बाहर चले गए थे। "वाइ़ला" भी आप के साथ थी। आप ने फ़रमा दिया था कि कोई शख़्स बस्ती की त़रफ़ न देखे वरना वोह भी अ़ज़ाब में मुब्तला हो जाएगा। चुनान्चे, आप के साथ वालों में से किसी ने भी बस्ती की त़रफ़ नहीं देखा और सब अ़ज़ाब से मह़फ़ूज़ रहे लेकिन वाइ़ला चूंकि मुनाफ़िक़ा थी उस ने हज़रते लूत़ عَلَيْهِ السَّلَام के फ़रमान को ठुकरा कर बस्ती की त़रफ़ देख लिया और शहर को उलट पलट होते देख कर चिल्लाने लगी कि "يَاقَوْمَاهُ" हाए रे मेरी क़ौम, येह ज़बान से निकलते ही नागहां अ़ज़ाब का एक पथ्थर इस को भी लगा और येह भी हलाक हो कर जहन्नम रसीद हो गई।

आसिया :- आसिया बिन्ते मुज़ाहि़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا येह फ़िरऔ़न की बीवी हैं। फ़िरऔ़न तो हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام का बदतरीन दुश्मन था लेकिन हज़रते आसिया رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا ने जब जादूगरों को हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के मुक़ाबले में मग़लूब होते देख लिया तो फ़ौरन उन के दिल में ईमान का नूर चमक उठा और वोह ईमान ले आईं। जब फ़िरऔ़न को ख़बर हुई तो उस ज़ालिम ने इन पर बड़े बड़े अ़ज़ाब किये, बहुत ज़ियादा ज़दो कौब के बा'द चौमीख़ा कर दिया या'नी चार खूंटियां गाड़ कर हज़रते आसिया رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا के चारों हाथों पैरों में लोहे की मैख़ें ठोंक कर चारों खूंटों में इस त़रह़ जकड़ दिया कि वोह हिल भी नहीं सकती थीं और भारी पथ्थर सीने पर रख कर धूप की तपिश में डाल दिया और दाना पानी बन्द कर दिया लेकिन इन मसाइब व शदाइद के बा वुजूद वोह अपने

ईमान पर क़ाइम व दाइम रहीं और फ़िरऔन के कुफ़्र से ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की पनाह और जन्नत की दुआएं मांगती रहीं और इसी ह़ालत में उन का ख़ातिमा बिल ख़ैर हो गया और वोह जन्नत में दाख़िल हो गईं और इब्ने कैसान का क़ौल है कि वोह ज़िन्दा ही उठा कर जन्नत में पहुंचा दी गईं।

मरयम :- मरयम बिन्ते इमरान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا, येह ह़ज़रते ईसा عَلَیْہِ السَّلَام की वालिदा हैं। चूंकि ह़ज़रते ईसा عَلَیْہِ السَّلَام इन के शिकम से बिग़ैर बाप के पैदा हुवे इस लिये इन की क़ौम ने त़ा'न व बद गोइयों से इन को बड़ी बड़ी ईज़ाएं पहुंचाईं मगर येह साबिर रह कर इतने बड़े बड़े मरातिब व दर्जात से सरफ़राज़ हुईं कि ख़ुदावन्दे क़ुद्दूस ने क़ुरआने मजीद में इन की मदह़ो षना का बार बार ख़ुत़बा इरशाद फ़रमाया। इन चारों औ़रतों के बारे में क़ुरआने मजीद ने सूरए तह़रीम में फ़रमाया जिस का तर्जमा येह है :

"अल्लाह तआ़ला काफ़िरों की मिषाल देता है। जैसे ह़ज़रते नूह़ (عَلَیْہِ السَّلَام) की औ़रत (वाहिला) और ह़ज़रते लूत़ (عَلَیْہِ السَّلَام) की औ़रत (वाइला) येह दोनों हमारे दो मुक़र्रब बन्दों के निकाह़ में थीं। फिर इन दोनों ने उन दोनों से दग़ा किया तो वोह दोनों पैग़म्बरान, इन दोनों औ़रतों के कुछ काम न आए और इन दोनों औ़रतों के बारे में ख़ुदा का येह फ़रमान हो गया कि तुम दोनों जहन्नमी औ़रतों के साथ जहन्नम में दाख़िल हो जाओ। और अल्लाह तआ़ला मुसलमानों की मिषाल बयान फ़रमाता है। फ़िरऔ़न की बीवी (आसिया) जब उन्हों ने अ़र्ज़ की ऐ मेरे रब ! मेरे लिये अपने पास जन्नत में घर बना और मुझे फ़िरऔ़न और उस के काम से नजात दे और मुझे ज़ालिम लोगों से नजात बख़्श और इमरान की बेटी मरयम जिस ने अपनी पारसाई की ह़िफ़ाज़त की तो हम ने उस में अपनी त़रफ़ की रूह़ फूंकी और उस ने अपने रब की बातों और उस की किताबों की तस्दीक़ की और फ़रमां बरदारों में से हुई। (پ۲۸، التحریم:۱۰ـ۱۲)

दर्से हिदायत :- वाहिला और वाइ़ला दोनों नबी की बीवियां हो कर कुफ़्र व निफ़ाक़ में गिरिफ़्तार हो कर जहन्नम रसीद हुईं और फ़िरऔ़न जैसे काफ़िर की बीवी ह़ज़रते आसिया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ईमाने कामिल की दौलत पा कर जन्नत में दाख़िल हुईं और ह़ज़रते आसिया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ह़क़ ज़ाहिर हो जाने के बा'द इस त़रह़ ईमान लाईं कि फ़िरऔ़न के सब आराम व राह़त को ठुकरा दिया और बे पनाह तक्लीफ़ों और ईज़ाओं के बा वुजूद अपने ईमान पर क़ाइम रहीं, बिलाशुबा येह बातें क़ाबिले इ़ब्रत हैं।

﴾60﴿ ह़ज़रते फ़ात़िमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के तीन रोज़े

ह़ज़रते ह़सन व ह़ज़रते ह़ुसैन رَضِیَ اللّٰہ تعَالیٰ عَنْهُمَا बचपन में एक मरतबा बीमार हो गए तो ह़ज़रते अ़ली व ह़ज़रते फ़ात़िमा व ह़ज़रते फ़िज़्ज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم ने इन शाहज़ादों की सिह़्ह़त के लिये तीन रोज़ों की मन्नत मानी। **अल्लाह** तआ़ला ने दोनों शाहज़ादों को शिफ़ा दे दी। जब नज़्र के रोज़ों को अदा करने का वक़्त आया तो सब ने रोज़े की निय्यत कर ली। ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ एक यहूदी से तीन साअ़ जव लाए। एक एक साअ़ तीनों दिन पकाया लेकिन जब इफ़्त़ार का वक़्त आया और तीनों रोज़ादारों के सामने रोटियां रखी गईं तो एक दिन मिस्कीन, एक दिन यतीम, एक दिन क़ैदी दरवाज़े पर आ गए और रोटियों का सुवाल किया तो तीनों दिन सब रोटियां साइलों को दे दी गईं और सिर्फ़ पानी से इफ़्त़ार कर के अगला रोज़ा रख लिया गया। (ह़ज़रते फ़िज़्ज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ह़ज़रते बीबी फ़ात़िमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के घर की ख़ादिमा थीं।) (تفسیر خزائن العرفان،ص۱۰۴۳،پ۲۹، الدھر:۸_۹)

क़ुरआने मजीद में **अल्लाह** तआ़ला ने अपने मह़बूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की प्यारी बेटी के घर की इस सरगुज़िश्त को इन लफ़्ज़ों में बयान फ़रमाया :

وَ یُطْعِمُوْنَ الطَّعَامَ عَلٰی حُبِّهٖ مِسْكِیْنًا وَّ یَتِیْمًا وَّ اَسِیْرًا ﴿۸﴾ اِنَّمَا نُطْعِمُكُمْ

لِوَجْهِ اللّٰهِ لَا نُرِیْدُ مِنْكُمْ جَزَآءً وَّ لَا شُكُوْرًا ﴿۹﴾ (پ۲۹،الدھر:۸_۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- और खाना खिलाते हैं उस की मह़ब्बत पर मिस्कीन और यतीम और असीर (क़ैदी) को उन से कहते हैं हम तुम्हें ख़ास **अल्लाह** के लिये खाना देते हैं तुम से कोई बदला या शुक्र गुज़ारी नहीं मांगते।

दर्से हिदायत :- سُبْحٰنَ اللّٰہ इस वाकिए से अहले बैते नबुव्वत की सख़ावत का अजीबो ग़रीब और अदीमुल मिषाल हाल मा'लूम होता है। मुसलसल तीन रोज़े और सहरी व इफ़्तार में सिर्फ़ पानी पी कर रोज़े रखना और खुद भूके रह कर रोटियां साइलों को दे देना येह कोई मा'मूली बात नहीं है। **अल्लाहु अक्बर** ! किसी ने क्या खूब कहा है कि

भूके रहते थे ख़ुद औरों को खिला देते थे
कैसे साबिर थे मुहम्मद ﷺ के घराने वाले

﴾61﴿ शद्दाद की जन्नत

येह आप "क़ौमे आद की आंधी" उन्वान में पढ़ चुके हैं कि क़ौमे आद का मूरिषे आ'ला आद बिन औस बिन इरम बिन साम बिन नूह है। इस "आद" के बेटों में "शद्दाद" भी है। येह बड़ी शानो शौकत का बादशाह हुवा है। इस ने अपने वक़्त में तमाम बादशाहों को अपने झन्डे के नीचे जम्अ कर के सब को अपना मुतीओ फ़रमां बरदार बना लिया था। इस ने पैग़म्बरों की ज़बान से जन्नत का ज़िक्र सुन कर बराहे सरकशी दुन्या में एक जन्नत बनानी चाही और इस इरादे से एक बहुत बड़ा शहर बनाया जिस के महल सोने चांदी की ईंटों से ता'मीर किये गए और ज़बरजद और याकूत के सुतून इन की इमारतों में नसब किये गए और ऐसे ही फ़र्श मकानों में बनाए गए। संगरेज़ों की जगह आबदार मोती बिछाए गए। हर महल के गिर्द जवाहिरात से पुर नहरें जारी की गईं। क़िस्म क़िस्म के दरख़्त ज़ीनत और साए के लिये लगाए गए। अल ग़रज़ इस सरकश ने अपने ख़याल से जन्नत की तमाम चीज़ें और हर क़िस्म की ऐशो इशरत के सामान इस शहर में जम्अ कर दिये। जब येह शहर मुकम्मल हुवा तो शद्दाद बादशाह अपने आ'याने सल्तनत के साथ इस की तरफ़ रवाना हुवा। जब एक मन्ज़िल का फ़ासिला बाक़ी रह गया तो आस्मान से एक हौलनाक आवाज़ आई जिस से **अल्लाह** तआला ने शद्दाद और उस के तमाम साथियों को हलाक कर दिया और वोह अपनी बनवाई हुई **जन्नत** को देख भी न सका।

हज़रते अमीरे मुआविया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के दौरे हुकूमत में हज़रते अब्दुल्लाह बिन क़िलाबा अपने गुमशुदा ऊंट को तलाश करते हुवे

सहराए अदन से गुज़र कर उस शहर में पहुंचे और उस की तमाम ज़ीनतों और आराइशों को देखा मगर वहां कोई रहने बसने वाला इन्सान नहीं मिला। येह थोड़े से जवाहिरात वहां से ले कर चले आए। जब येह ख़बर हज़रते अमीरे मुआविया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को मा'लूम हुई तो उन्हों ने अब्दुल्लाह बिन क़िलाबा को बुला कर पूरा हाल दरयाफ़्त किया और इन्हों ने जो कुछ देखा था सब कुछ बयान कर दिया। फिर हज़रते अमीरे मुआविया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने का'बे अहबार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को बुला कर दरयाफ़्त किया कि क्या दुन्या में कोई ऐसा शहर मौजूद है? तो उन्हों ने फ़रमाया कि हां जिस का ज़िक्र कुरआने मजीद में भी आया है। येह शहर शद्दाद बिन आद ने बनाया था लेकिन येह सब अज़ाबे इलाही से हलाक हुवे और इस क़ौम में से कोई एक आदमी भी बाक़ी नहीं रहा और आप के ज़माने में एक मुसलमान जिस की आंखें नीली, क़द छोटा और उस के अब्रू पर एक तिल होगा, अपने ऊंट को तलाश करते हुवे इस वीरान शहर में दाख़िल होगा, इतने में अब्दुल्लाह बिन क़िलाबा आ गए। तो का'बे अहबार ने इन को देख कर फ़रमाया कि ब ख़ुदा वोह शख़्स जो शद्दाद की बनाई हुई जन्नत को देखेगा, वोह येही शख़्स है। (تفسیر خزائن العرفان، ص۱۰۷۰۔۱۰۶۹، پ۳۰، الفجر:۸)

क़ौमे आद और दूसरी सरकश क़ौमों का हाल बयान करते हुवे कुरआने मजीद ने इरशाद फ़रमाया :

اَلَمْ تَرَ كَيْفَ فَعَلَ رَبُّكَ بِعَادٍ ۙ﴿۶﴾ اِرَمَ ذَاتِ الْعِمَادِ ۙ﴿۷﴾ الَّتِیْ لَمْ یُخْلَقْ مِثْلُهَا فِی الْبِلَادِ ۙ﴿۸﴾ وَ ثَمُوْدَ الَّذِیْنَ جَابُوا الصَّخْرَ بِالْوَادِ ۙ﴿۹﴾ وَ فِرْعَوْنَ ذِی الْاَوْتَادِ ۙ﴿۱۰﴾ الَّذِیْنَ طَغَوْا فِی الْبِلَادِ ۙ﴿۱۱﴾ فَاَكْثَرُوْا فِیْهَا الْفَسَادَ ۙ﴿۱۲﴾ فَصَبَّ عَلَیْهِمْ رَبُّكَ سَوْطَ عَذَابٍ ۚ﴿۱۳﴾ (پ۳۰، الفجر:۶۔۱۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- क्या तुम ने न देखा तुम्हारे रब ने आद के साथ कैसा किया और वोह इरम हद से ज़ियादा तूल वाले कि उन जैसा शहरों में पैदा न हुवा और षमूद जिन्हों ने वादी में पथ्थर की चट्टानें काटीं और फ़िरऔन कि चौमीख़ा करता (सख़्त सज़ाएं देता) जिन्हों ने शहरों में सरकशी की फिर उन में बहुत फ़साद फेलाया तो उन पर तुम्हारे रब ने अज़ाब का कोड़ा ब-कुव्वत मारा।

दर्से हिदायत :- अल्लाह तआला को बन्दों की सरकशी और तकब्बुर व गुरूर बेहद नापसन्द है इस लिये खुदावन्दे कुद्दूस का दस्तूर है कि हर सरकश और मुतकब्बिर क़ौम जिस ने ज़मीन में अपनी सरकशी और जुल्म व उदवान से फ़साद फेलाया। उस क़ौम को क़हरे इलाही ने किसी न किसी अज़ाब की सूरत में ज़ाहिर हो कर हलाक व बरबाद कर दिया। शद्दाद और क़ौमे आद के दूसरे अफ़राद सब अपनी सरकशी और तकब्बुर की वजह से खुदा के मबग़ूज़ ठहरे और जब इन लोगों का तमर्रुद और जुल्म व उदवान इस दरजे बढ़ गया कि रूए ज़मीन का ज़र्रा ज़र्रा उन के गुनाहों और बद आ'मालियों से बिल बिला उठा तो खुदावन्दे क़हहार व जब्बार के अज़ाबों ने इन सब सरकशों और ज़ालिमों को तबाहो बरबाद कर के सफ़हए हस्ती से हर्फ़े ग़लत़ की त़रह मिटा दिया। लिहाज़ा उन क़ौमों के उरूज व ज़वाल और इन लोगों के अज़ाबे इलाही से पामाल होने की दास्तानों से इब्रत व नसीहत हासिल करनी चाहिये। क्यूंकि कुरआने करीम में इन अक़वाम के अन्जाम के ज़िक्र का मक़्सद ही येह है कि अहले कुरआन इन की दास्तान सुन कर इब्रत पकड़ें और ख़ौफ़े इलाही से हर दम लर्ज़ा बर अन्दाम रहें। मुसलमानों को लाज़िम है कि कुरआने मजीद की ब-कषरत तिलावत करें और इस का तर्जमा भी पढ़ा करें और इन अक़वाम की हलाकत से इब्रत हासिल करें। हर वक़्त तौबा व इस्तिग़फ़ार करते रहें और हर क़िस्म की बद ए'तिक़ादियों और बद आ'मालियों से हमेशा बचते रहें। आ'माले सालेहा की कोशिश करते रहें और मालो दौलत के गुरूर व घमन्ड में सरकशी व तकब्बुर न करें बल्कि हमेशा दिल में ख़ौफ़े खुदा عَزَّوَجَلَّ रख कर तवाज़ोअ व इन्किसारी को अपनी आदत बनाएं और जहां तक हो सके अपनी ज़िन्दगी में अच्छे आ'माल करते रहें। واللّٰہ ھُوَ الموفق

﴾62﴿ अस्हाबे फ़ील व लश्करे अबाबील

यमन व हबशा का बादशाह "अबरहा" था। उस ने शहरे "सन्आ" में एक गिरजाघर बनाया था और उस की ख़्वाहिश थी कि हज करने वाले बजाए मक्कए मुकर्रमा के सन्आ में आएं और इसी गिरजाघर का त़वाफ़ करें और यहीं हज का मैला हुवा करे। अ़रब खुसूसन कुरैशियों

को येह बात बहुत शाक़ गुज़री। चुनान्चे, क़ुरैश के क़बीलए बनू किनाना के एक शख़्स ने आपे से बाहर हो कर सन्आ़ का सफ़र किया और अबरहा के गिरजा घर में दाख़िल हो कर पेशाब पाख़ाना कर दिया। और इस के दरो दीवार को नजासत से आलूदा कर डाला। इस ह़रकत पर **अबरहा बादशाह** को बहुत तैश आया और उस ने का'बए मुअ़ज़्ज़मा को ढा देने की क़सम खा ली। और इस इरादे से अपना लश्कर ले कर रवाना हो गया। इस लश्कर में बहुत से हाथी थे और इन का पेश रू एक बहुत बड़ा कोह पैकर हाथी था जिस का नाम मह़मूद था। अबरहा ने अपनी फ़ौज ले कर मक्कए मुकर्रमा पर चढ़ाई कर दी और अहले मक्का के सब जानवरों को अपने क़ब्ज़े में ले लिया। जिस में अ़ब्दुल मुत्त़लिब के ऊंट भी थे। येही अ़ब्दुल मुत्त़लिब जो हमारे हुज़ूर ख़ातिमुन्नबिय्यीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दादा हैं, ख़ानए का'बा के मुतवल्ली और अहले मक्का के सरदार थे। येह बहुत ही रो'बदार और निहायत ही जसीम व बा शिकोह आदमी थे। येह अबरहा के पास आए, अबरहा ने इन की बहुत ता'ज़ीम की और आने का मक़्सद पूछा तो आप ने फ़रमाया कि तुम मेरे ऊंटों को मुझे वापस दे दो। येह सुन कर अबरहा ने कहा कि मुझे बड़ा तअ़ज्जुब हो रहा है कि मैं तो तुम्हारे का'बा को ढाने के लिये फ़ौज ले कर आया हूं जो तुम्हारा और तुम्हारे बाप दादा का एक बहुत मुक़द्दस व मोह़तरम मक़ाम है। आप ने इस के बारे में कुछ भी मुझ से नहीं कहा, सिर्फ़ अपने ऊंटों का मुत़ालबा कर रहे हैं ? ह़ज़रते अ़ब्दुल मुत्त़लिब ने फ़रमाया कि मैं अपने ऊंटों ही का मालिक हूं इस लिये ऊंटों के लिये कह रहा हूं और का'बा का जो मालिक है वोह ख़ुद इस की ह़िफ़ाज़त फ़रमाएगा। मुझे इस की कोई फ़िक्र नहीं। अबरहा ने आप के ऊंटों को वापस कर दिया। फिर आप ने क़ुरैश से फ़रमाया कि तुम लोग पहाड़ों की घाटियों और चोटियों पर पनाह गुज़ीं हो जाओ। चुनान्चे, क़ुरैश ने आप के मश्वरे पर अ़मल किया। इस के बा'द ह़ज़रते अ़ब्दुल मुत्त़लिब ने का'बे का दरवाज़ा पकड़ कर बारगाहे इलाही में का'बे की ह़िफ़ाज़त के लिये ख़ूब रो रो कर दुआ़ मांगी और दुआ़ से फ़ारिग़ हो कर आप भी अपनी क़ौम के साथ पहाड़ की चोटी पर चढ़ गए। अबरहा ने सुब्ह़ तड़के अपने लश्करों को ले

कर का'बए मुक़द्दसा पर धावा बोल देने का हुक्म दे दिया और हाथियों को चलने के लिये उठाया लेकिन हाथियों का पेश रू महमूद जो सब से बड़ा था वोह का'बे की तरफ़ न चला जिस तरफ़ उस को चलाते थे चलता था मगर का'बए मुकर्रमा की तरफ़ जब उस को चलाते थे तो वोह बैठ जाता था। इतने में अल्लाह तआला ने समुन्दर की जानिब से परन्दों का लश्कर भेज दिया और हर परन्दे के पास तीन कंकरियां थीं, दो पन्जों में और एक चोंच में। अबाबीलों के इस लश्कर ने अबरहा की फ़ौजों पर इस ज़ोर की संग बारी की, कि अबरहा की फ़ौज बद हवास हो कर भागने लगी। मगर कंकरियां गो छोटी छोटी थीं लेकिन वोह क़हरे इलाही के पथ्थर थे कि परन्दे जब उन कंकरियों को गिराते तो वोह संगरेज़े फ़ील सुवारों के ख़ोद को तोड़ कर, सर से निकल कर, जिस्म को चीर कर, हाथी के बदन को छेदते हुवे ज़मीन पर गिरते थे। हर कंकरी पर उस शख़्स का नाम लिखा था जो उस कंकरी से हलाक किया गया। इस तरह अबरहा का पूरा लश्कर हलाक व बरबाद हो गया और का'बए मुअज़्ज़मा महफ़ूज़ रह गया। येह वाक़िआ जिस साल वुक़ूअ पज़ीर हुवा उस साल को अहले अरब "आमुल फ़ील" (हाथी वाला साल) कहने लगे और इस वाक़िए से पचास रोज़ के बा'द हुज़ूर सय्यिदे आलम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की विलादत हुई। (تفسیر خزائن العرفان، ص۱۰۸۳، پ۳۰، الفیل)

इस वाक़िए को अल्लाह तआला ने कुरआने मजीद में बयान फ़रमाते हुवे एक सूरत नाज़िल फ़रमाई जिस का नाम ही "सूरए फ़ील" है या'नी

اَلَمْ تَرَ كَيْفَ فَعَلَ رَبُّكَ بِاَصْحٰبِ الْفِيْلِ ؕ﴿۱﴾ اَلَمْ يَجْعَلْ كَيْدَهُمْ فِيْ تَضْلِيْلٍ ۙ﴿۲﴾ وَّ اَرْسَلَ عَلَيْهِمْ طَيْرًا اَبَابِيْلَ ۙ﴿۳﴾ تَرْمِيْهِمْ بِحِجَارَةٍ مِّنْ سِجِّيْلٍ ۪ۙ﴿۴﴾ فَجَعَلَهُمْ كَعَصْفٍ مَّاْكُوْلٍ ﴿۵﴾ (پ۳۰، الفیل:۱۔۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- ऐ महबूब क्या तुम ने न देखा ? तुम्हारे रब ने उन हाथी वालों का क्या हाल किया, क्या उन का दाऊं तबाही में न डाला और उन पर परन्दों की टुकड़ियां (फ़ौजें) भेजीं कि उन्हें कंकर के पथ्थरों से मारते तो उन्हें कर डाला जैसे खाई खेती की पत्ती (भूसा)।

दर्से हिदायत :- इस से मा'लूम हुवा कि क़ुरआने मजीद की त़रह़ का'बए मुअ़ज़्ज़मा की हिफ़ाज़त का ज़िम्मा भी ख़ुदावन्दे क़ुद्दूस ने अपने ज़िम्मए करम पर ले रखा है कि कोई त़ाग़ूती त़ाक़त न क़ुरआने मजीद को फ़ना कर सकती है न का'बा को सफ़्ह़ए हस्ती से मिटा सकती है क्यूंकि ख़ुदावन्दे करीम इन दोनों का मुह़ाफ़िज़ व निगहबान है। (واللہ تعالٰی اعلم)

﴾63﴿ फ़त्ह़े मक्का की पेश गोई

हिजरत के वक़्त इन्तिहाई रन्जीदगी के आ़लम में ह़ुज़ूर ताजदारे आ़लम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने यारे ग़ार सिद्दीक़े जां निषार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को साथ ले कर रात की तारीकी में मक्का से हिजरत फ़रमा कर अपने वत़ने अ़ज़ीज़ को ख़ैरबाद कह दिया था और मक्का से निकलते वक़्त ख़ुदा के मुक़द्दस घर ख़ानए का'बा पर एक ह़सरत भरी निगाह डाल कर येह फ़रमाते हुवे मदीने रवाना हुवे थे कि "ऐ मक्का ! ख़ुदा की क़सम ! तू मेरी निगाहे मह़ब्बत में तमाम दुन्या के शहरों से ज़ियादा प्यारा है। अगर मेरी क़ौम मुझे न निकालती तो मैं हरगिज़ तुझे न छोड़ता।" उस वक़्त किसी को येह ख़याल भी नहीं हो सकता था कि मक्का को इस बे सरोसामानी के आ़लम में ख़ैरबाद कहने वाला सिर्फ़ आठ ही बरस बा'द एक फ़ातेह़े आ'ज़म की शानो शौकत के साथ इसी शहर मक्का में नुज़ूले इजलाल फ़रमाएगा और का'बतुल्लाह में दाख़िल हो कर अपने सजदों के जमाल व जलाल से ख़ुदा के मुक़दस घर की अ़ज़मत को सरफ़राज़ फ़रमाएगा। लेकिन हुवा येह कि अहले मक्का ने सुल्ह़े ह़ुदैबिय्या के मुआ़हदे को तोड़ डाला। और सुल्ह़ नामे से ग़द्दारी कर के "अ़हद शिकनी" के मुर्तकिब हो गए कि ह़ुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ह़लीफ़ बनू ख़ुज़ाआ़ को मक्का वालों ने बे दर्दी के साथ क़त्ल कर दिया। बेचारे बनू ख़ुज़ाआ़ उस ज़ालिमाना ह़म्ले की ताब न ला कर ह़रमे का'बा में पनाह लेने के लिये भागे तो इन दरिन्दा सिफ़्त इन्सानों ने ह़रमे इलाही के एह़तिराम को भी ख़ाक में मिला दिया और ह़रमे का'बा में भी ज़ालिमाना त़ौर पर बनू ख़ुज़ाआ़ का ख़ून बहाया। इस ह़म्ले में बनू ख़ज़ाआ़ के तेईस आदमी क़त्ल हो गए। इस त़रह़ अहले मक्का ने अपनी इस ह़रकत से ह़ुदैबिय्या के मुआ़हदे को तोड़ डाला। और येही फ़त्ह़े मक्का की तम्हीद हुई।

चुनान्चे, **10** रमज़ान सि. **8** हि. को रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मदीने से दस हज़ार लश्करे पुर अन्वार साथ ले कर मक्का की त़रफ़ रवाना हुवे। मदीने से चलते वक़्त हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और तमाम सह़ाबए किराम रोज़ादार थे लेकिन जब आप मक़ामे "कदीद" में पहुंचे तो पानी मांगा और अपनी सुवारी पर बैठे हुवे पूरे लश्कर को दिखा कर आप ने पानी नौश फ़रमाया और सब को रोज़ा छोड़ देने का हुक्म फ़रमाया। चुनान्चे, आप और आप के अस्ह़ाब ने सफ़र और जिहाद में होने की वजह से रोज़ा रखना मौक़ूफ़ कर दिया।

(بخاری شریف، کتاب المغازی، باب غزوۃ الفتح فی رمضان، رقم۴۲۷۶، ج۵، ص ۱۴۲)

ग़रज़ फ़ातिह़ाना शानो शौकत के साथ बानिये का'बा के जानशीन हुज़ूर रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सर ज़मीने मक्का में नुज़ूले इजलाल फ़रमाया और हुक्म दिया कि मेरा झन्डा मक़ामे "ह़जून" (जन्नतुल मा'ला) के पास गाड़ा जाए और ह़ज़रते ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के नाम फ़रमान जारी कर दिया कि वोह फ़ौजों के साथ मक्का के बालाई ह़िस्से या'नी "कदा" की त़रफ़ से मक्का में दाख़िल हों।

(بخاری شریف،کتاب المغازی،باب این رکزالنبی صلی اللہ علیہ وسلم الخ،رقم۴۲۸۰،ج۵،ص۱۴۷)

रह़मते आ़लमियान صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मक्का की सरज़मीन में क़दम रखते ही जो पहला फ़रमाने शाही जारी फ़रमाया वोह येह ए'लान था कि जिस के लफ़्ज़ लफ़्ज़ में **रह़मतों के दरिया** मौजें मार रहे हैं :

"जो शख़्स हथियार डाल देगा उस के लिये अमान है। जो शख़्स अपना दरवाज़ा बन्द कर लेगा उस के लिये अमान है जो का'बा में दाख़िल हो जाएगा उस के लिये अमान है।"

इस मौक़अ़ पर ह़ज़रते अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह ! अबू सुफ़्यान एक फ़ख़्र पसन्द आदमी है उस के लिये कोई ऐसी इम्तियाज़ी बात फ़रमा दीजिये कि उस का सर फ़ख़्र से ऊंचा हो जाए तो आप ने फ़रमाया कि **"जो अबू सुफ़्यान के घर में दाख़िल हो जाए उस के लिये अमान है।"**

हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जब फ़ातिह़ाना हैषिय्यत से मक्का में दाख़िल होने लगे तो आप अपनी ऊंटनी "क़स्वा" पर सुवार थे और आप एक सियाह रंग का इमामा बांधे हुवे थे। और बुख़ारी में है कि आप के सर

पर "मुग़फ़्फ़र" था। आप के एक जानिब ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और दूसरी जानिब उसैद बिन हुज़ैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ थे और आप के चारों त़रफ़ जोश में भरा हुवा हथियारों में डूबा हुवा लश्कर था जिस के दरमियान को क़ुब्बए नबवी था। इस शाहाना जुलूस के जाहो जलाल के बा वुजूद शहनशाहे रिसालत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की शाने तवाज़ोअ़ का येह आ़लम था कि आप सूरए फ़त्ह़ की तिलावत फ़रमाते हुवे इस त़रह़ सर झुकाए हुवे ऊंटनी पर बैठे हुवे थे कि आप का सर मुबारक ऊंटनी के पालान से लग लग जाता था। आप की येह कैफ़िय्यते तवाज़ोअ़ ख़ुदावन्दे क़ुद्दूस का शुक्र अदा करने और उस की बारगाहे अ़ज़्मत में अपनी इ़ज्ज़ व नियाज़ मन्दी का इज़्हार करने के लिये थी। (زرقانی، ج ۲،ص ۳۲۰۔۳۲۱)

बैतुल्लाह में दाख़िला :– फिर आप अपनी ऊंटनी पर सुवार हो कर और ह़ज़रते उसामा बिन ज़ैद को ऊंटनी के पीछे बिठा कर मस्जिदे ह़राम की त़रफ़ रवाना हुवे और ह़ज़रते बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और ह़ज़रते उ़षमान बिन त़लह़ा जह़बी (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) का'बा के किलीद बरदार भी आप के साथ थे। आप ने मस्जिदे ह़राम में अपनी ऊंटनी को बिठाया और का'बे का त़वाफ़ किया और ह़जरे अस्वद को बोसा दिया।

(بخاری شریف، کتاب المغازی، باب دخول النبی صلی اللہ علیہ وسلم من اعلیٰ مکۃ، رقم ۴۲۸۹، ج۵،ص ۱۴۸۔۱۴۹)

का'बा के अन्दरूने ह़िसार तीन सो साठ बुतों की क़त़ार थी। आप ख़ुद ब नफ़्से नफ़ीस एक छड़ी ले कर खड़े हुवे और इन बुतों को छड़ी की नोक से ठोंके मार मार कर गिराते जाते थे। और "وَجَآءَ الْحَقُّ وَزَهَقَ الْبَاطِلُ ؕ اِنَّ الْبَاطِلَ كَانَ زَهُوْقًا ۝" की आयत तिलावत फ़रमाते थे। या'नी ह़क़ आ गया और बात़िल मिट गया और बात़िल मिटने ही की चीज़ थी। (بخاری شریف، کتاب المغازی، باب این رکز النبی صلی اللہ علیہ وسلم الرایۃ یوم الفتح، رقم الحدیث ۴۲۸۷، ج۵، ص ۱۴۸)

फिर उन बुतों को जो ऐ़न का'बे के अन्दर थे आप ने उन सब को निकालने का ह़ुक्म फ़रमाया। जब तमाम बुतों से का'बा पाक हो गया तो आप अपने साथ उसामा बिन ज़ैद और ह़ज़रते बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم और उ़षमान बिन त़लह़ा जह़बी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को साथ ले कर ख़ानए का'बा के अन्दर तशरीफ़ ले गए और तमाम गोशों पर तक्बीर पढ़ी और दो रक्अ़त नमाज़ भी पढ़ी। (بخاری، ج ۱،ص ۲۱۸ و بخاری، ج ۲، ص ۲۱۴)

का'बए मुक़द्दसा के अन्दर से जब आप बाहर निकले तो ह़ज़रते ड़षमान बिन त़लह़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को बुला कर का'बा की कुंजी उन के हाथ में अ़त़ा फ़रमाई और इरशाद फ़रमाया कि خُذُوْهَا خَالِدَةً تَالِدَةً لَّايَنْزِعُهَا مِنْكُمْ اِلاَّ ظَالِمٌ या'नी लो येह कुंजी हमेशा हमेशा के लिये तुम लोगों में रहेगी। येह कुंजी तुम से वोही छीनेगा जो ज़ालिम होगा। (زرقانی، ج ۲، ص ۲۳۹)

शहनशाहे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **का दरबारे आ़म :-** इस के बा'द ह़रमे इलाही में आप ने सब से पहला दरबारे आ़म मुन्अ़क़िद फ़रमाया जिस में अफ़्वाजे इस्लाम के इ़लावा हज़ारों कुफ़्फ़ार व मुशरिकीन के अ़वामो ख़्वास का एक ज़बरदस्त इज़्दिहाम था। इस दरबार में आप ने एक ख़ुत़्बा दिया और फिर अहले मक्का को मुख़ात़ब कर के आप ने फ़रमाया कि बोलो, तुम को मा'लूम है कि आज मैं तुम से क्या मुआ़मला करने वाला हूं।

इस दहशत अंगेज़ और ख़ौफ़नाक सुवाल से तमाम मुजरिमीन ह़वास बाख़्ता हो कर कांप उठे, लेकिन जबीने रह़मत के पैग़म्बराना तेवरों को देख कर सब यक ज़बान हो कर बोले ''اَخٌ كَرِيْمٌ وَابْنُ اَخٍ كَرِيْمٍ'' या'नी आप करम वाले भाई और करम वाले बाप के बेटे हैं। येह सुन कर फ़ातेह़े मक्का صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने करीमाना लहजे में इरशाद फ़रमाया कि

لَا تَثْرِيْبَ عَلَيْكُمُ الْيَوْمَ فَاذْهَبُوْا اَنْتُمُ الطُّلَقَاءُ

आज तुम पर कोई मलामत नहीं, जाओ तुम सब आज़ाद हो।

(شرح الزرقانی، باب غزوة الفتح الأعظم، ج۳، ص ۴۴۹ و السنن الکبریٰ للبیهقی، کتاب السیر، باب فتح مکة حرسها اللّٰه تعالیٰ، الحدیث: ۱۸۲۷۶، ج۹، ص ۲۰۰)

बिल्कुल ग़ैर मुतवक़्क़ेअ़ त़ौर पर एक दम अचानक येह फ़रमाने रह़मत सुन कर सब मुजरिमों की आंखें फ़र्त़े नदामत से अश्कबार हो गईं। और कुफ़्फ़ार की ज़बानों पर لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ के ना'रों से ह़रमे का'बा के दरोदीवार पर बारिशे अन्वार होने लगी। मुजरिमों की नज़र में नागहां एक अ़जीब इन्क़िलाब बरपा हो गया कि समां ही बदल गया, फ़ज़ा ही पलट गई और एक दम ऐसा मह़सूस होने लगा कि

जहां तारीक था ज़ुल्मत कदा था सख़्त काला था
कोई पर्दे से क्या निकला, घर घर उजाला था

फ़त्हे मक्का की तारीख़ :- इस में बड़ा इख़्तिलाफ़ येह है कि मक्कए मुकर्रमा कौन सी तारीख़ में फ़त्ह हुवा ? इमाम बैहक़ी ने 13 रमज़ान, इमामे मुस्लिम ने 16 रमज़ान, इमाम अह्मद ने 18 रमज़ान बताया, मगर मुहम्मद बिन इस्हाक़ ने अपने मशाइख़ की एक जमाअ़त से रिवायत करते हुवे फ़रमाया कि 20 रमज़ान 8 हि. को मक्का फ़त्ह हुवा। (واللہ تعالیٰ اعلم)

(شرح الزرقانی، باب غزوۃ الفتح الأعظم ،ج۳،ص۳۹۶۔۳۹۷)

फ़त्हे मक्का की पेशन गोइयां और बिशारतें क़ुरआने करीम की चन्द आयतों में मज़्कूर हैं इन में से सूरए नस्र भी है। चुनान्चे, ख़ुदावन्दे करीम ने इरशाद फ़रमाया :

اِذَا جَآءَ نَصْرُ اللّٰهِ وَ الْفَتْحُ ۙ﴿۱﴾ وَ رَاَیْتَ النَّاسَ یَدْخُلُوْنَ فِیْ دِیْنِ اللّٰهِ اَفْوَاجًا ۙ﴿۲﴾ فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَ اسْتَغْفِرْهُ ؕ اِنَّهٗ كَانَ تَوَّابًا ﴿۳﴾ (پ۳۰،النصر:۱۔۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- जब अल्लाह की मदद और फ़त्ह आए और लोगों को तुम देखो कि अल्लाह के दीन में फ़ौज फ़ौज दाख़िल होते हैं तो अपने रब की षना करते हुवे उस की पाकी बोलो और उस से बख़्शिश चाहो बेशक वोह बहुत तौबा क़बूल करने वाला है।

दर्से हिदायत :- फ़त्हे मक्का के वाक़िए से येह सबक़ मिलता है कि हुज़ूर रह्मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस मौक़अ़ पर अ़फ़्वो दर गुज़र और रह्मो करम का जो ए'लान व इज़्हार फ़रमाया तारीख़े आ़लम में किसी फ़ातेह की ज़िन्दगी में इस की मिषाल नहीं मिल सकती।

ग़ौर फ़रमाइये कि अशराफ़े क़ुरैश के इन ज़ालिमों और ज़फ़ाकारों में वोह लोग भी थे जो बारहा आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर पथ्थर की बारिश कर चुके थे, वोह ख़ूंख़्वार भी थे जिन्हों ने बारहा आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर क़ातिलाना ह़म्ले किये थे, वोह बे रह्म व बे दर्द भी थे जिन्हों ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दन्दाने मुबारक को शहीद, और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के चेहरए अन्वर को लहू लुहान कर डाला था। वोह औबाश भी थे जो

बरसहा बरस तक अपनी बोहतान तराशियों और शर्मनाक गालियों से आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के क़ल्बे मुबारक को ज़ख़्मी कर चुके थे। वोह सफ़्फ़ाक और दरिन्दा सिफ़त भी थे जो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के गले में चादर का फन्दा डाल कर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का गला घोंट चुके थे। वोह ज़ुल्मो सितम के मुजस्समे, और पाप के पुतले भी थे, जिन्हों ने आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की साहिबज़ादी ह़ज़रते ज़ैनब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا को नेज़ा मार कर ऊंट से गिरा दिया था और उन का ह़म्ल साक़ित़ हो गया था। वोह जफ़ाकार व ख़ूंख़्वार भी थे जिन के जारेह़ाना ह़म्लों और ज़ालिमाना यलग़ार से बार बार मदीने के दरो दीवार हिल चुके थे। वोह सितम गार भी थे जिन्हों ने हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के प्यारे चचा ह़ज़रते ह़म्ज़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को क़त्ल किया और उन की नाक कान काटने वाले, उन की आंखें फोड़ने वाले, उन का जिगर चबाने वाले भी इस मज्मअ़ में मौजूद थे। वोह बे रह़म भी थे जिन्हों ने शम्ए़ नबुव्वत के जां निषार परवानों ह़ज़रते बिलाल, ह़ज़रते सुहैब, ह़ज़रते अ़म्मार, ह़ज़रते ख़ुब्बाब, ह़ज़रते ख़ुबैब, ह़ज़रते ज़ैद बिन दशिन्ना رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم को रस्सियों से बांध बांध कर कोड़े मार मार कर जलती रैतों पर लिटाया था, किसी को आग के दहकते हुवे कोइलों पर सुलाया था, किसी को सूली पर लटका कर शहीद कर दिया था। येह तमाम जोरो जफ़ा और ज़ुल्मो सितम गारी के पैकर, जिन के जिस्म के रौंगटे रौंगटे और बदन के बाल बाल, ज़ुल्मो उ़दवान और सरकशी व तुग़यान के वबाल से शर्मनाक मज़ालिम और ख़ौफ़नाक जुर्मों के पहाड़ बन चुके थे, आज येह सब के सब दस बारह हज़ार मुहाजिरीन व अन्सार के लश्कर की ह़िरासत में मुजरिम बने हुवे खड़े कांप रहे थे और अपने दिलों में येह सोच रहे थे कि शायद आज हमारी लाशों को कुत्तों से नोचवा कर हमारी बोटियां चीलों और कव्वों को खिला दी जाएंगी और अन्सार व मुहाजिरीन की ग़ज़बनाक फ़ौजें हमारे बच्चे बच्चे को ख़ाको ख़ून में मिला कर हमारी नस्लों को नेस्तो नाबूद कर डालेंगी और हमारी बस्तियों को ताख़्तो ताराज कर के तहस नहस कर देंगी, मगर इन सब मुजरिमीन को रह़मते आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने येह कह कर मुआ़फ़ फ़रमा दिया कि

इन्तिक़ाम तो कैसा ? बदला तो कहां का ? आज तुम पर कोई मलामत भी नहीं। ऐ आस्मान बोल ! ऐ ज़मीन बता ! ऐ चांद व सूरज तुम बोलो ! क्या तुम ने रूए ज़मीन पर ऐसा फ़ातेह़ और रह़्म दिल शहनशाह कभी देखा है ? या कभी सुना है ? सुन लो तुम्हारे पास इस के सिवा कोई जवाब नहीं है कि हु़जू़र عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के सिवा और कोई फ़ातेह़ न हुवा है न होगा। क्यूंकि रसूले अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपने हर कमाल में बे मिष्ल व बे मिषाल हैं।

मुसलमानो ! येह है हमारे हु़जू़रे अन्वर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का उस्वए ह़सना और सीरते मुबारका। लिहाज़ा हम मुसलमानों पर लाज़िम है कि अपने प्यारे रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के उस्वए ह़सना और सीरते मुक़द्दसा पर अ़मल करते हुवे अपने दुश्मनों से बदला और इन्तिक़ाम लेने का जज़्बा अपने दिल से निकाल कर अपने दुश्मनों को दरगुज़र करने और मुआ़फ़ कर देने की कोशिश करें। क्यूंकि लोगों की तक़्सीरात और ख़त़ाओं को मुआ़फ़ कर देना, येह हमारे रसूले अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नत भी है और येही उम्मत के लिये हु़जू़र صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ता'लीम भी है। जैसा कि आप गुज़श्ता सफ़ह़ात पर येह ह़दीष पढ़ चुके हैं कि "صِلْ مَنْ قَطَعَكَ وَاعْفُ عَمَّنْ ظَلَمَكَ وَاَحْسِنْ اِلٰى مَنْ اَسَاءَ كَ" या'नी जो तुम से तअ़ल्लुक़ काटे तुम उस से मैल मिलाप रखो और जो तुम पर ज़ुल्म करे उस को मुआ़फ़ कर दिया करो और जो तुम्हारे साथ बद सुलूकी करे तुम उस के साथ एह़सान और अच्छा सुलूक करो और कु़रआने मजीद में भी अ़फ़्वे तक़्सीर और दुश्मनों से दरगुज़र कर देने वालों के बड़े बड़े दरजात व मरातिब बयान किये गए हैं। इरशादे बारी तआ़ला है कि

وَالْعَافِيْنَ عَنِ النَّاسِ ط (پ۴،ال عمران:۱۳۴)

या'नी लोगों की ख़त़ाओं को मुआ़फ़ कर देने वाले **अल्लाह** तआ़ला के मह़बूब बन्दे हैं और बड़े दरजात वाले हैं।

ख़ुदावन्दे करीम हर मुसलमान को रसूले अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के उस्वए ह़स्ना और सीरते मुबारका पर अ़मल करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए। (आमीन)

﴾64﴿ जादू का इलाज

रिवायत है कि लबीद बिन आ'सम यहूदी और उस की बेटियों ने हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर जादू कर दिया था जिस का अषर हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के (ज़ाहिरी) जिस्मे मुबारक पर नुमूदार हुवा। लेकिन आप के क़ल्ब और अ़क़्ल व ए'तिक़ाद पर कुछ भी अषर नहीं हो सका। चन्द रोज़ के बा'द ह़ज़रते जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام हाज़िरे ख़िदमत हुवे और उन्हों ने अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم एक यहूदी ने आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर जादू कर दिया है और जादू का जो कुछ सामान है वोह फुलां कूंएं में एक पथ्थर के नीचे दबा दिया गया है। हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه को भेजा। उन्हों ने कूंएं का पानी निकाल कर पथ्थर उठा या तो उस के नीचे से खजूर के गाभे की थेली बर आमद हुई। उस में हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मूए मुबारक जो कंघी से टूटे थे और कंघी के टूटे हुवे कुछ दन्दाने और एक डोर या कमान का चिल्ला जिस में ग्यारह गिरहें लगी हुई थीं और एक मोम का पुतला जिस में ग्यारह सूइयां चुभी थीं। येह सब सामान पथ्थर के नीचे से निकला और येह सब सामान हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में लाया गया।

इस के बा'द कुरआने मजीद की दोनों सूरतें قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ ۙ और قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاسِ ۙ नाज़िल हुईं। इन दोनों सूरतों में ग्यारह आयतें हैं। हर एक आयत के पढ़ने से एक एक गिरह खुलती जाती थी। यहां तक कि सब गिरहें खुल गईं और हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बिल्कुल शिफ़ायाब हो गए। और जादू का सारा सामान ज़ेरे ज़मीन दफ़्न कर दिया गया। (تفسیر خزائن العرفان،ص۱۰۹۸)

दर्से हिदायत :- ता'वीज़ात और अ़मलियात जिस में कोई लफ़्ज़ कुफ़्रो शिर्क का न हो जाइज़ हैं। इसी त़रह़ गन्डे बनाना और इन पर गिरहें लगा कर आयाते कुरआन और अस्माए इलाहिय्या पढ़ कर फूंक मारना भी जाइज़ है। जमहूर सह़ाबा और ताबेई़न इसी पर हैं, और ह़दीषे आ़इशा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا में है कि जब हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के घर वालों में से

कोई बीमार होता तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इन दोनों सूरतों को पढ़ कर उस पर दम फ़रमाते थे । (تفسیر خزائن العرفان ، ص ۷۶۳،پ ۳۰،الفلق:۴)

और बुख़ारी व मुस्लिम की ह़दीष में है कि हु़ज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم रात को जब बिस्तरे मुबारक पर तशरीफ़ लाते तो अपने दोनों हाथों पर दम फ़रमाया करते और अपने सर से पाउं तक पूरे जिस्मे मुबारक पर अपने दोनों हाथों को फिराया करते थे जहां तक दस्ते मुबारक पहुंच सकते, येह अ़मल तीन मरतबा फ़रमाते ।(تفسیر خزائن العرفان ، ص ۷۶۳،پ ۳۰،الفلق:۴)

खुलासा येह है कि قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ ۙ और قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاسِ ۙ येह दोनों सूरतें जिन्न व शयात़ीन और नज़्रे बद व आसेब और तमाम अमराज़ खुसूसन जादू टोने का मुजर्रब इलाज हैं । इन को लिख कर ता'वीज़ बनाएं और गले में पहनाएं । और इन को बार बार पढ़ कर मरीज़ पर दम करें और खाने पानी और दवाओं पर पढ़ कर फूंक मारें और मरीज़ को खिलाएं पिलाएं । ان شاء اللہ تعالٰی हर मरज़ खुसूसन जादू टोना दफ़्अ़ हो जाएगा और मरीज़ शिफ़ायाब हो जाएगा । इसी त़रह़ क़ुरआने मजीद की दूसरी तमाम सूरतों के ख़ुसूसी ख़्वास हैं जिन को हम ने अपनी किताब **''जन्नती ज़ेवर''** में तफ़्सील के साथ तह़रीर कर दिया है और इन आ'माल की हर सुन्नी मुसलमान पाबन्दे शरीअ़त को हम ने इजाज़त भी दे दी है । लिहाज़ा सुन्नी मुसलमानों को चाहिये कि वोह इन आ'माले क़ुरआनी के फ़वाइद व मनाफ़ेअ़ से खुद भी फ़ैज़याब हों और दूसरे लोगों को भी फ़ाइदा पहुंचाएं । ह़दीष शरीफ़ में है कि

"خَیْرُ النَّاسِ مَنْ یَّنْفَعُ النَّاسَ"

या'नी बेहतरीन आदमी वोह है जो लोगों को नफ़्अ़ पहुंचाए । (واللہ تعالٰی اعلم)

(کشف الخفاء ومزیل الالباس ، ج ۱ ،ص ۳۴۸،رقم الحدیث ۱۲۵۲)

सूरतुल फ़लक़

قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ ۙ﴿۱﴾ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ ۙ﴿۲﴾ وَ مِنْ شَرِّ غَاسِقٍ اِذَا وَقَبَ ۙ﴿۳﴾ وَ مِنْ شَرِّ النَّفّٰثٰتِ فِی الْعُقَدِ ۙ﴿۴﴾ وَ مِنْ شَرِّ حَاسِدٍ اِذَا حَسَدَ ﴿۵﴾ (پ ۳۰،الفلق:۱۔۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- तुम फ़रमाओ मैं उस की पनाह लेता हूं जो सुब्ह़ का पैदा करने वाला है उस की सब मख़्लूक़ के शर से और अन्धेरी डालने वाले के शर से जब वोह डूबे और उन औ़रतों के शर से जो गिरहों में फूंकती हैं और ह़सद वाले के शर से जब वोह मुझ से जले।

सूरतुन्नास

قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاسِ ۙ﴿۱﴾ مَلِكِ النَّاسِ ۙ﴿۲﴾ اِلٰهِ النَّاسِ ۙ﴿۳﴾ مِنْ شَرِّ الْوَسْوَاسِ ۙ۬ الْخَنَّاسِ ۙ﴿۴﴾ الَّذِیْ یُوَسْوِسُ فِیْ صُدُوْرِ النَّاسِ ۙ﴿۵﴾ مِنَ الْجِنَّةِ وَ النَّاسِ ﴿۶﴾ (پ۳۰،النّاس:۱۔۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- तुम कहो मैं उस की पनाह में आया जो सब लोगों का रब सब लोगों का बादशाह सब लोगों का खुदा उस के शर से जो दिल में बड़े ख़त़रे डाले और दबक रहे वोह जो लोगों के दिलों में वस्वसे डालते हैं जिन्न और आदमी।

﴾65﴿ ह़ज़रते ख़िज़्र عَلَيْهِ السَّلَام की बताई हुई दुआ़

ह़ज़रते अ़ल्लामा मुह़म्मद बिन सम्माक عَلَيْهِ الرَّحْمَة बहुत जलीलुल क़द्र मुह़द्दिष और बा करामत वली थे। एक मरतबा येह बहुत सख़्त बीमार हो गए तो इन के मुतवस्सिलीन इन का क़ारूरा ले कर एक नसरानी त़बीब के पास चले। रास्ते में इन लोगों को एक बहुत ही खुश पोशाक बुज़ुर्ग मिले जिन के बदन से बेहतरीन खुश्बू आ रही थी। इन्हों ने फ़रमाया कि तुम लोग कहां जा रहे हो? इन लोगों ने कहा कि ह़ज़रते मुह़म्मद बिन सम्माक عَلَيْهِ الرَّحْمَة बहुत सख़्त अ़लील हैं येह उन का क़ारूरा है जिस को हम फ़ुलां त़बीब के पास ले जा रहे हैं। येह सुन कर उन बुज़ुर्ग ने फ़रमाया कि سُبْحٰنَ اللہ एक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के वली के लिये तुम लोग एक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के दुश्मन से मदद त़लब कर रहे हो? क़ारूरा फेंक कर वापस जाओ और मुह़म्मद बिन सम्माक عَلَيْهِ الرَّحْمَة से कह दो कि मक़ामे दर्द पर وَبِالْحَقِّ اَنْزَلْنٰهُ وَبِالْحَقِّ نَزَلَ ؕ (پ۱۵،بنی اسرآئیل۱۰۵) पढ़ कर दम करें।

येह फ़रमा कर बुज़ुर्ग ग़ाइब हो गए और लोगों ने वापस हो कर हज़रते मुहम्मद बिन सम्माक عَلَيْهِ الرَّحْمَة से ज़िक्र किया तो आप ने मक़ामे दर्द पर हाथ रख कर आयत के इन दोनों जुम्लों को पढ़ा तो फ़ौरन ही आराम हो गया। फिर हज़रते मुहम्मद बिन सम्माक عَلَيْهِ الرَّحْمَة ने लोगों से फ़रमाया कि वोह बुज़ुर्ग जिन्हों ने तुम लोगों को येह वज़ीफ़ा बताया, तुम्हें येह ख़बर है कि वोह कौन बुज़ुर्ग थे ? लोगों ने कहा कि जी नहीं। हम लोगों ने उन्हें नहीं पहचाना। तो हज़रते मुहम्मद बिन सम्माक عَلَيْهِ الرَّحْمَة ने फ़रमाया कि वोह बुज़ुर्ग हज़रते सय्यिदुना ख़िज़्र عَلَيْهِ السَّلَام थे।

(تفسیر مدارک التنزیل، ج۳، ص ۱۹۵، پ ۱۵ ،بنی اسرائیل :۱۰۵)

कुरआने मजीद की आयत का इतना सा टुकड़ा हर मरज़ की मुकम्मल दवा और मुजर्रब इलाज है। मरज़ की जगह पर हाथ रख कर पढ़ दिया जाए तो बीमारी दूर हो जाती है। लेकिन शर्त़ येह है कि पढ़ने वाला पाबन्दे शरीअ़त और सिद्क़े मक़ाल व रिज़्क़े ह़लाल पर कार बन्द हो। बिलाशुबा येह आयत शिफ़ाए अमराज़ के लिये कुरआने मजीद के अ़जाइब में से है। (واللہ تعالٰی اعلم)

وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى خَيْرِ خَلْقِهٖ مُحَمَّدٍ وَّاٰلِهٖ وَصَحْبِهٖ اَجْمَعِيْنَ

तिलावत की अहम्मिय्यत व आदाब

عَنْ اَبِیْ هُرَيْرَةَ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نَزَلَ الْقُرْاٰنُ عَلٰى خَمْسَةِ اَوْجُهٍ حَلَالٍ وَحَرَامٍ وَمُحْكَمٍ وَمُتَشَابِهٍ وَاَمْثَالٍ فَاَحِلُّوا الْحَلَالَ وَحَرِّمُوا الْحَرَامَ وَعَمِلُوْا بِالْمُحْكَمِ وَاٰمِنُوْا بِالْمُتَشَابِهِ وَاعْتَبِرُوْا بِالْاَمْثَالِ۔

(مشکاۃ المصابیح،کتاب الإیمان،باب الاعتصام بالکتاب و السنۃ،الفصل الثانی،ج۱،ص۹۹،رقم۱۸۲)

हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है इन्हों ने कहा कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि कुरआन पांच त़रीक़ों पर नाज़िल हुवा। ह़लाल व ह़राम व मोह़कम व मुतशाबेह और अमषाल। तो तुम लोग ह़लाल को ह़लाल जानो और ह़राम को ह़राम जानो और मोह़कम पर अ़मल करो और मुतशाबेह पर ईमान लाओ और अमषालों (गुज़िश्ता उम्मतों के क़िस्सों और मिषालों) से इ़ब्रत ह़ासिल करो। कुरआने अ़ज़ीम

के मज़्कूरा बाला पांचों मज़ामीन पर मुत्त़लअ़ होने के लिये ज़रूरी है कि कुरआने पाक को बग़ौर और बार बार समझ कर पढ़ा जाए। इसी लिये तिलावते कुरआने मजीद का इस क़दर ज़ियादा षवाब है कि हर ह़र्फ़ के बदले दस नेकियां मिलती हैं या'नी मषलन किसी ने सिर्फ़ الٓـــمٓ पढ़ा और उस की तिलावत मक़्बूल हो गई तो उस को तीस नेकियां मिलेंगी क्यूंकि उस ने कुरआन के तीन ह़र्फ़ों को पढ़ा है।

तिलावत के चन्द आदाब

﴾1﴿ मिस्वाक कर के सह़ीह़ त़रीक़े से वुज़ू कर ले और क़िब्ला रू हो कर बैठ जाए और اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ पढ़ कर अल्फ़ाज़ व मआ़नी में ग़ौरो फ़िक्र करते हुवे दिल को पूरी त़रह़ मुतवज्जेह कर के ख़ुशूअ़ व ख़ुज़ूअ़ और निहायत इज्ज़ व इन्किसारी के साथ तिलावत में मश्ग़ूल हो और न बहुत बुलन्द आवाज़ से पढ़े और न बहुत पस्त आवाज़ करे। बल्कि दरमियानी आवाज़ से पढ़े।

﴾2﴿ बेहतर येह है कि देख कर तिलावत करे क्यूंकि कुरआने मजीद को देखना भी इ़बादत है और इ़बादतों में षवाब भी दो गुना मिलता है। ह़दीष शरीफ़ में है कि जिस ने देख कर कुरआने मजीद की तिलावत की उस के लिये दो हज़ार नेकियां लिखी जाएंगी और जिस ने ज़बानी पढ़ा उस के लिये एक हज़ार नेकियां लिखी जाएंगी।

(كنز العمال، كتاب الاذكار،قسم الاقوال،الباب فی تلاوة القرآن الخ رقم ۲۳۰۱، ج ۱، ص ۲۶۰)

﴾3﴿ तीन दिन से कम में कुरआने करीम न ख़त्म करे बल्कि कम अज़ कम तीन दिन या सात दिन या चालीस दिन में कुरआने करीम ख़त्म करे ताकि मआ़नी व मत़ालिब को समझ कर तिलावत करे।

﴾4﴿ तरतील के साथ इत़मीनान से और ठहर ठहर कर तिलावत करे। इरशादे रब्बानी है :

وَرَتِّلِ الْقُرْاٰنَ تَرْتِيْلًا ﴿۴﴾ط (پ۲۹،المزمّل:۴)

या'नी ख़ूब ठहर ठहर कर कुरआने मजीद को पढ़ो।

इस में कई फ़ाएदे हैं, अव्वलन तो इस से कु़रआने मजीद की अ़ज़्मत ज़ाहिर होती है । और षानिय्यन कु़रआने मजीद के अ़जाइब व ग़राइब को सोचना और मआ़नी को समझना ही तिलावत का मक़्सूदे आ'ज़्म है और येह तरतील के बिग़ैर दुश्वार है ।

﴿5﴾ ब वक़्ते तिलावत हर लफ़्ज़ के मआ़नी पर नज़्र रखे और वा'दा व वई़द को समझने की कोशिश करे और हर ख़ि़ताब में अपने को मुख़ा़त़ब तसव्वुर करे और अम्र व नह्‌य और क़सस व ह़िकायात में अपने आप को मरजए़ ख़ि़ताब समझे और अह़काम पर अ़मल पैरा होने और ममनूआ़त से बाज़ रहने का पुख़्ता इरादा कर ले ।

﴿6﴾ दौराने तिलावत जिस जगह जन्नत और उस की ने'मतों का ज़िक्र आए या ह़िफ़्ज़ो अमान और सलामतिये ईमान या किसी भी पसन्दीदा चीज़ का ज़िक्र आए तो ठहर कर दुआ़ करे और जिस जगह जहन्नम और उस के अ़ज़ाबों का ज़िक्र आए या उन जैसी किसी भी बाइ़षे ख़ौफ़ चीज़ का तज़्किरा आए तो ठहर कर इन चीज़ों से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की पनाह मांगे और ख़ौफ़े इलाही عَزَّوَجَلَّ से रो पड़े और अगर रोना न आए तो कम अज़ कम रोने की सूरत बना ले ।

﴿7﴾ रात के वक़्त तिलावत की कषरत करे क्यूंकि इस वक़्त ज़ेह्न पुर सुकून और दिल मुत़मइन होता है । तिलावत के लिये सब से अफ़्ज़ल वक़्त साल भर में रमज़ान शरीफ़ के आख़िरी दस अय्याम और ज़ुल ह़िज्जा के इब्तिदाई दस दिन हैं । इस के बा'द जुमुआ़ फिर दो शम्बा फिर पंज शम्बा और रात में तिलावत का बेहतरीन वक़्त मग़रिब और इ़शा के दरमियान है और इस के बा'द निस्फ़ शब के बा'द और दिन में सब से उ़म्दा सुब्ह़ का वक़्त है ।

﴿8﴾ ख़ुश इल्ह़ानी और तजवीद के साथ ह़ुरूफ़ की सह़ीह़ अदाएगी और अवक़ाफ़ की रिआ़यत करते हुवे तिलावत करे मगर इस का लिह़ाज़ रहे कि ख़ुश इल्ह़ानी के लिये क़वाइदे मूसीक़ी और गाने के लहजों का हरगिज़ हरगिज़ इस्ति'माल न करे ।

﴾9﴿ तिलावत के वक़्त कुरआने करीम की अ़ज़्मत पर नज़र रखे और आयते करीमा

لَوْ اَنْزَلْنَا هٰذَا الْقُرْاٰنَ عَلٰى جَبَلٍ لَّرَاَیْتَهٗ خَاشِعًا مُّتَصَدِّعًا مِّنْ خَشْیَةِ اللّٰهِ ؕ (پ۲۸،الحشر:۲۱)

या'नी अगर हम येह कुरआन किसी पहाड़ पर उतारते तो ज़रूर तू उसे देखता झुका हुवा पाश पाश होता अल्लाह के ख़ौफ़ से।

आयत के इस मज़्मून को ब वक़्ते तिलावत अपने ज़ेह्न में हाज़िर रखे और ख़ौफ़े इलाही से भरपूर हो कर निहायत आ़जिज़ी के साथ तिलावत करे।

﴾10﴿ जो आयतें अपने ह़ाल के मुत़ाबिक़ हों, उन को बार बार पढ़ना चाहिये और कुरआने अ़ज़ीम पढ़ते वक़्त येह ख़याल जमाए कि गोया ख़ुदावन्दे तआ़ला के ह़ुज़ूर में पढ़ रहा है। जब इस मन्ज़िल पर पहुंच जाए तो येह तसव्वुर जमाए कि गोया रब्बे करीम मुझ ही से ख़िताब फ़रमा रहा है और इस तरक़्क़ी की इन्तिहा येह है कि येह तसव्वुर पैदा हो जाए कि कुरआने अ़ज़ीम पढ़ने वाला गोया अल्लाह तआ़ला और उस की सिफ़ात व अफ़्आ़ल को उस के कलाम में देख रहा है। लेकिन येह बुलन्द मर्तबा सिद्दीक़ीन के लिये मख़्सूस है हर कसो नाक़िस को येह ह़ासिल नहीं होता।

﴾11﴿ जब तन्हाई में हो तो दरमियानी आवाज़ से तिलावत करना बेहतर है। लेकिन अगर बुलन्द आवाज़ से तिलावत करने में रियाकारी का ख़ौफ़ हो या किसी नमाज़ी की नमाज़ में ख़लल का अन्देशा हो या कुछ लोग गुफ़्तगू में मसरूफ़ हैं और उन के तिलावत न सुनने का गुमान हो तो इन सूरतों में कुरआने मजीद को आहिस्ता पढ़ना बेहतर है। ऐसे मवाक़ेअ़ के लिये ह़दीषों में वारिद हुवा है कि "पोशीदा अ़मल" ज़ाहिरी अ़मल से सत्तर गुना ज़ियादा षवाब रखता है।

बहर ह़ाल कुरआने मजीद की तिलावत के वक़्त आदाब का लिह़ाज़ रखना निहायत ज़रूरी है ताकि दीन व दुन्या की बे शुमार बरकतें ह़ासिल हों और हरगिज़ हरगिज़ आदाब से ग़फ़्लत न होने पाए कि येह ग़फ़्लत बरकाते दीन से बहुत बड़ी मह़रूमी का सबब है।

اَللّٰھُمَّ اجْعَلْنَا مِنَ الصِّدِّیْقِیْنَ وَلَا تَجْعَلْنَا مِنَ الْغَافِلِیْنَ اٰمِین بِجَاہِ سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ

صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَعَلٰی اٰلِہٖ وَصَحْبِہٖ اَجْمَعِیْنَ ○

ग़राइबुल क़ुरआन

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

مُبَسمِلاً وَّمُحَمِّدًا وَّمُصَلِّيًا

अ़र्ज़े मुसन्निफ़

بِحَمۡدِاللّٰهِ تَعَالٰى "**अ़जाइबुल क़ुरआन**" तब्अ़ हो जाने के बा'द जो पेंसठ उ़न्वानों पर क़ुरआनी अ़जाइबात का बेहतरीन गुलदस्ता है। अब क़ुरआने मजीद के मज़ीद चन्द अ़जाइबात और तअ़ज्जुब ख़ेज़ व ह़ैरत अंगेज़ वाक़िआ़त का मजमूआ़, जो सत्तर उ़न्वानों पर मुश्तमिल है, नीज़ इन उ़न्वानात से तअ़ल्लुक़ रखने वाली आयतों का तर्जमा, तफ़्सीर व शाने नुज़ूल व निकात व दर्से हिदायत "**ग़राइबुल क़ुरआन**" के नाम से नाज़िरीन की ख़िदमत में पेश करता हूं।

अ़जाइबुल क़ुरआन और "**ग़राइबुल क़ुरआन**" येह दोनों किताबें क़ुरआने मजीद के मज़ामीन पर अय्यामे अ़लालत में मेरी मेह़नतों का षमरा हैं। मौला तआ़ला अपने ह़बीबे करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के तुफ़ैल मेरी इन दीनी तस्नीफ़ात को क़बूलिय्यते दारैन की करामतों से सरफ़राज़ फ़रमाए। और मेरे लिये, नीज़ वालिदैन, असातिज़ा व तलामिज़ा व मुरीदीन के लिये ज़ादे आख़िरत व ज़रीअ़ए मग़फ़िरत बनाए और मेरे नवासे अ़ज़ीज़ुल क़द्र मौलाना फ़ैज़ुल ह़क़ साह़िब को फ़ैज़ाने इल्मो अ़मल व बरकाते दारैन की दौलतों से माला माल फ़रमाए कि वोह इस किताब की तदवीन व तबयीज़ में मेरे शरीके कार बने रहे। (आमीन)

नाज़िरीने किराम से गुज़ारिश है कि वोह मेरी मुकम्मल सिह़्ह़त व आ़फ़िय्यत के लिये दुआ़एं करते रहें। ताकि मैं सिह़्ह़त मन्द हो कर आख़िरे ह़यात तक दर्से ह़दीष व मवाइज़ व तस्नीफ़ात का काम जारी रख सकूं।

وما ذالک علی اللّٰه بعزیز وهو حسبی ونعم الوکیل وصلی اللّٰه تعالٰی علی حبیبه محمد واله وصحبه اجمعین

अ़ब्दुल मुस्तफ़ा अल आ'ज़मी (عُفِيَ عَنۡهُ) घोसी

23 रमज़ान सि. 1402 हि.

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ
مُبَسْمِلاً وَّمُحَمِّدًا وَّمُصَلِّیًا

﴾1﴿ तख़्लीके़ आदम عَلَيْهِ السَّلَام

हज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام की न मां हैं न बाप। बल्कि **अल्लाह** तआ़ला ने इन को मिट्टी से बनाया है। चुनान्चे, रिवायत है कि जब खुदावन्दे कुद्दूस عَزَّوَجَلَّ ने आप को पैदा करने का इरादा फ़रमाया तो ह़ज़रते इज़्राईल عَلَيْهِ السَّلَام को हुक्म दिया कि ज़मीन से एक मुठ्ठी मिट्टी लाएं। हुक्मे खुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ के मुताबिक़ ह़ज़रते इज़्राईल عَلَيْهِ السَّلَام ने आस्मान से उतर कर ज़मीन से एक मुठ्ठी मिट्टी उठाई तो पूरी रूए ज़मीन की ऊपरी परत छिलके के मानिन्द उतर कर आप की मुठ्ठी में आ गई। जिस में साठ रंगों और मुख़्तलिफ़ कैफ़िय्यतों वाली मिट्टियां थीं। या'नी सफे़द व सियाह और सुर्ख़ व ज़र्द रंगों वाली और नर्म व सख़्त, शीरीं व तल्ख़, नम्कीन व फीकी वग़ैरा कैफ़िय्यतों वाली मिट्टियां शामिल थी। (تذکرۃ الانبیاء، ص ۴۸)

फिर इस मिट्टी को मुख़्तलिफ़ पानियों से गूंधने का हुक्म फ़रमाया। चुनान्चे, एक मुद्दत के बा'द येह चिपकने वाली बन गई। फिर एक और मुद्दत तक येह गूंधी गई तो कीचड़ की त़रह़ बूदार गारा बन गई। फिर येह खुश्क हो कर खनखनाती और बजती हुई मिट्टी बन गई। फिर इस मिट्टी से ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام का पुतला बना कर जन्नत के दरवाज़े पर रख दिया गया जिस को देख देख कर फ़िरिश्तों की जमाअ़त तअ़ज्जुब करती थी। क्यूंकि फ़िरिश्तों ने ऐसी शक्लो सूरत की कोई मख़्लूक़ कभी देखी ही नहीं थी। फिर **अल्लाह** तआ़ला ने इस पुतले में रूह़ को दाख़िल होने का हुक्म फ़रमाया। चुनान्चे, रूह़ दाख़िल हो कर जब आप के नथनों में पहुंची तो आप को छींक आई और जब रूह़ ज़बान तक पहुंच गई, तो आप ने اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ पढ़ा और **अल्लाह** तआ़ला ने फ़रमाया "یرحمک اللہ"

या'नी अल्लाह तआ़ला तुम पर रह़मत फ़रमाए। ऐ अबू मुह़म्मद (आदम) मैं ने तुम को अपनी ह़म्द ही के लिये बनाया है। फिर रफ़्ता रफ़्ता पूरे बदन में रूह़ पहुंच गई और आप ज़िन्दा हो कर उठ खड़े हुवे।

(تفسیر خازن،ج ا، ص ۴۳،پ ا، البقرۃ:۳۰)

तिर्मिज़ी और अबू दावूद में येह ह़दीष है कि ह़ज़रते आदम عَلَیْہِ السَّلَام का पुतला जिस मिट्टी से बनाया गया चूंकि वोह मुख़्तलिफ़ रंगों और मुख़्तलिफ़ कैफ़िय्यतों की मिट्टियों का मजमूआ़ थी इसी लिये आप की अवलाद या'नी इन्सानों में मुख़्तलिफ़ रंगों और क़िस्म क़िस्म के मिज़ाजों वाले लोग हो गए। (تفسیر صاوی،ج ا،ص ۴۹،پ ا،البقرۃ:۳۰)

ह़ज़रते आदम عَلَیْہِ السَّلَام की कुन्यत अबू मुह़म्मद या अबुल बशर और आप का लक़ब "ख़लीफ़तुल्लाह" है और आप सब से पहले अल्लाह तआ़ला के नबी हैं। आप ने नव सो साठ बरस की उ़म्र पाई और ब वक़्ते वफ़ात आप की अवलाद की ता'दाद एक लाख हो चुकी थी। जिन्हों ने त़रह़ त़रह़ की सन्अ़तों और इ़मारतों से ज़मीन को आबाद किया।

(تفسیر صاوی،ج ا،ص ۴۸،پ ا،البقرۃ:۳۰)

क़ुरआने मजीद में बार बार इस मज़्मून का बयान किया गया है कि ह़ज़रते आदम عَلَیْہِ السَّلَام की तख़्लीक़ मिट्टी से हुई। चुनान्चे, सूरए आले इ़मरान में इरशाद फ़रमाया कि

اِنَّ مَثَلَ عِیْسٰی عِنْدَ اللّٰہِ کَمَثَلِ اٰدَمَ ؕ خَلَقَهٗ مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ قَالَ لَهٗ كُنْ فَیَكُوْنُ ﴿۵۹﴾ (پ۳،اٰل عمران:۵۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- ईसा की कहावत अल्लाह के नज़्दीक आदम की त़रह़ है उसे मिट्टी से बनाया फिर फ़रमाया हो जा वोह फ़ौरन हो जाता है।

اِنَّا خَلَقْنٰهُمْ مِّنْ طِیْنٍ لَّازِبٍ ﴿۱۱﴾ (پ۲۳،الصّافات:۱۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- बेशक हम ने उन को चिपकती मिट्टी से बनाया।

कहीं येह फ़रमाया कि

وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ مِنْ صَلْصَالٍ مِّنْ حَمَاٍ مَّسْنُوْنٍ ﴿۲۶﴾ (پ۱۴، الحجر:۲۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- और बेशक हम ने आदमी को बजती हुई मिट्टी से बनाया जो अस्ल में एक सियाह बूदार गारा थी।

हज़रते हव्वा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا **:-** जब हज़रते आदम عَلَیْہِ السَّلَام को ख़ुदावन्दे क़ुद्दूस ने बिहिश्त में रहने का हुक्म दिया तो आप जन्नत में तन्हाई की वजह से कुछ मलूल हुवे तो **अल्लाह** तआ़ला ने आप पर नींद का ग़लबा फ़रमाया और आप गहरी नींद सो गए तो नींद ही की ह़ालत में आप की बाईं पस्ली से **अल्लाह** तआ़ला ने ह़ज़रते ह़व्वा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को पैदा फ़रमा दिया।

जब आप नींद से बेदार हुवे तो येह देख कर ह़ैरान रह गए कि एक निहायत ही ख़ूब सूरत और ह़सीनो जमील औ़रत आप के पास बैठी हुई है। आप ने उन से फ़रमाया कि तुम कौन हो ? और किस लिये यहां आई हो ? तो ह़ज़रते ह़व्वा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने जवाब दिया कि मैं आप की बीवी हूं और **अल्लाह** तआ़ला ने मुझे इस लिये पैदा फ़रमाया है ताकि आप को मुझ से उन्स और सुकूने क़ल्ब ह़ासिल हो। और मुझे आप से उन्सिय्यत और तस्कीन मिले और हम दोनों एक दूसरे से मिल कर ख़ुश रहें और प्यार व मह़ब्बत के साथ ज़िन्दगी बसर करें और ख़ुदावन्दे क़ुद्दूस عَزَّوَجَلَّ की ने'मतों का शुक्र अदा करते रहें। (تفسیر روح المعانی، ج۱، ص۳۱۶، پ۱، البقرۃ:۳۵)

क़ुरआने मजीद में चन्द मक़ामात पर **अल्लाह** तआ़ला ने ह़ज़रते ह़व्वा के बारे में इरशाद फ़रमाया, मषलन !

وَخَلَقَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَبَثَّ مِنْهُمَا رِجَالًا كَثِيْرًا وَّنِسَآءً ۚ (پ۴، النساء:۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- और उसी में से उस का जोड़ा बनाया और उन दोनों से बहुत से मर्द व औ़रत फैला दिये।

दर्से हिदायत :- ह़ज़रते आदम عَلَیْہِ السَّلَام व ह़व्वा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की तख़्लीक़ का वाक़िआ़ मज़ामीने कुरआने मजीद के उन अ़जाइबात में से है जिस के दामन में बड़ी बड़ी इ़ब्रतों और नसीह़तों के गोहरे आबदार के अम्बार पोशीदा हैं जिन में से चन्द येह हैं।

अल्लाह तआ़ला ने ह़ज़रते आदम عَلَیْہِ السَّلَام को मिट्टी से बनाया और ह़ज़रते ह़व्वा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को ह़ज़रते आदम عَلَیْہِ السَّلَام की पस्ली से पैदा फ़रमाया। कुरआन के इस फ़रमान से येह ह़क़ीक़त इ़यां होती है कि ख़ल्लाक़े आ़लम جَلَّ جَلَالُہٗ ने इन्सानों को चार त़रीक़ों से पैदा फ़रमाया है :

﴾अव्वल﴿ येह कि मर्द व औ़रत दोनों के मिलाप से, जैसा कि आ़म त़ौर पर इन्सानों की पैदाइश होती है। चुनान्चे, कुरआने मजीद में साफ़ साफ़ ए'लान है कि

اِنَّا خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ مِنْ نُّطْفَةٍ اَمْشَاجٍ ۖ (پ۲۹،الدھر:۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- बेशक हम ने आदमी को पैदा किया मिली हुई मनी से

﴾दुवुम﴿ येह कि तन्हा मर्द से एक इन्सान पैदा हो। और वोह ह़ज़रते ह़व्वा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا हैं कि **अल्लाह** तआ़ला ने उन को ह़ज़रते आदम عَلَیْہِ السَّلَام की बाईं पस्ली से पैदा फ़रमा दिया।

﴾सिवुम﴿ येह कि तन्हा एक औ़रत से एक इन्सान पैदा हो। और वोह ह़ज़रते ई़सा عَلَیْہِ السَّلَام हैं जो कि पाक दामन कुंवारी बीबी मरयम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के शिकम से बिग़ैर बाप के पैदा हुवे।

﴾चहारुम﴿ येह कि बिग़ैर मर्द व औ़रत के भी एक इन्सान को ख़ुदावन्दे कुद्दूस عَزَّوَجَلَّ ने पैदा फ़रमा दिया और वोह इन्सान ह़ज़रते आदम عَلَیْہِ السَّلَام हैं कि **अल्लाह** तआ़ला ने उन को मिट्टी से बना दिया।

इन वाक़िआ़त से मुन्दरिजए ज़ैल अस्बाक़ की त़रफ़ राहनुमाई होती है।

﴾1﴿ ख़ुदावन्दे कुद्दूस ऐसा क़ादिरो क़य्यूम और ख़ल्लाक़ है कि इन्सानों को किसी ख़ास एक ही त़रीक़े से पैदा फ़रमाने का पाबन्द नहीं है, बल्कि वोह ऐसी अ़ज़ीम कुदरत वाला है कि वोह जिस त़रह़ चाहे इन्सानों को पैदा फ़रमा दे। चुनान्चे, मज़्कूरए बाला चार त़रीक़ों से उस ने इन्सानों को पैदा फ़रमा दिया। जो उस की कुदरत व ह़िक्मत और उस की अ़ज़ीमुश्शान ख़ल्लाक़िय्यत का **निशाने आ'ज़म** है।

سُبْحٰنَ اللّٰه ख़ुदावन्दे क़ुद्दूस की शाने ख़ालिक़िय्यत की अ़ज़मत का क्या कहना ? जिस ख़ल्लाक़े आ़लम ने कुरसी व अ़र्श और लौहो क़लम और ज़मीनो आस्मान को "कुन" फ़रमा कर मौजूद फ़रमा दिया और उस की क़ुदरते कामिला और ह़िक्मते बालिग़ा के हुज़ूर ख़ल्क़ते इन्सानी की भला ह़क़ीक़त व है़षिय्यत ही क्या है । लेकिन इस में कोई शक नहीं कि तख़्लीक़े इन्सान उस क़ादिरे मुत़लक़ का वोह तख़्लीक़ी शाहकार है कि काएनाते आ़लम में इस की कोई मिषाल नहीं । क्यूंकि वुजूदे इन्सान आ़लमे ख़ल्क़ की तमाम मख़्लूक़ात के नुमूनों का एक जामेअ़ मुरक्क़अ़ है । **अल्लाह** अक्बर ! क्या ख़ूब इरशाद फ़रमाया । मौलाए काएनात ह़ज़रते अ़ली मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कि

اَتَحْسِبُ اِنَّکَ جِرْمٌ صَغِیْرٌ وَفِیْکَ اِنْطَوَی الْعَالَمُ الْاَکْبَرُ

तर्जमा :- ऐ इन्सान ! क्या तू येह गुमान करता है कि तू एक छोटा सा जिस्म है ? हालांकि तेरी अ़ज़मत का येह ह़ाल है कि तेरे अन्दर आ़लमे अक्बर सिमटा हुवा है ।

﴾2﴿ मुमकिन था कि कोई मर्द येह ख़याल करता कि अगर हम मर्दों की जमाअ़त न होती तो तन्हा औ़रतों से कोई इन्सान पैदा नहीं हो सकता था । इसी त़रह़ मुमकिन था कि औ़रतों को येह गुमान होता कि अगर हम औ़रतें न होतीं तो तन्हा मर्दों से कोई इन्सान पैदा न होता । इसी त़रह़ मुमकिन था कि औ़रत व मर्द दोनों मिल कर येह नाज़ करते कि अगर हम मर्दों और औ़रतों का वुजूद न होता तो कोई इन्सान पैदा नहीं हो सकता था, तो **अल्लाह** तआ़ला ने चारों त़रीक़ों से इन्सानों को पैदा फ़रमा कर औ़रतों और मर्दों दोनों का मुंह बन्द कर दिया कि देख लो, हम ऐसे क़ादिरो क़य्यूम हैं कि ह़ज़रते ह़व्वा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को तन्हा मर्द या'नी ह़ज़रते आदम عَلَیْہِ السَّلَام की पस्ली से पैदा फ़रमा दिया । लिहाज़ा ऐ औ़रतो ! तुम येह गुमान मत रखो कि अगर औ़रतें न होतीं तो कोई इन्सान पैदा न होता । इसी त़रह़ ह़ज़रते ईसा عَلَیْہِ السَّلَام को तन्हा औ़रत के शिकम से बिग़ैर मर्द के पैदा फ़रमा कर मर्दों को तम्बीह फ़रमा दी कि ऐ मर्दो ! तुम येह नाज़ न करो कि अगर तुम न होते तो इन्सानों की पैदाइश नहीं हो सकती थी । देख लो ! हम ने ह़ज़रते ईसा عَلَیْہِ السَّلَام को तन्हा औ़रत के शिकम से बिग़ैर मर्द

के पैदा फ़रमा दिया। और ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام को बिग़ैर मर्द व औ़रत के मिट्टी से पैदा फ़रमा कर औ़रतों और मर्दों का मुंह बन्द फ़रमा दिया कि ऐ औ़रतो और मर्दो ! तुम कभी भी अपने दिल में ख़याल न लाना कि अगर हम दोनों न होते तो इन्सानों की जमाअ़त पैदा नहीं हो सकती थी। देख लो ! ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام के न बाप हैं न मां, बल्कि हम ने उन को मिट्टी से पैदा फ़रमा दिया। سُبْحٰنَ اللّٰه सच फ़रमाया अल्लाह جَلَّ جَلَالُهٗ ने कि

اَللّٰهُ خَالِقُ كُلِّ شَیْءٍ وَّ هُوَ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ﴿۱۶﴾ (پ ۱۳، الرعد: ۱۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- अल्लाह (عَزَّوَجَلَّ) हर चीज़ का बनाने वाला है और वोह अकेला सब पर ग़ालिब है।

वोह जिस को चाहे और जैसे चाहे और जब चाहे पैदा फ़रमा देता है। उस के अफ़्आ़ल और उस की कु़दरत किसी अस्बाब व इ़लल, और किसी ख़ास तौर त़रीक़ों की बन्दिशों के मोह़ताज नहीं हैं। वोह فَعَّالٌ لِّمَا یُرِیْدُ ﴿۱۶﴾ (پ ۳۰، البروج: ۱۶) है।

या'नी वोह जो चाहता है करता है। उस की शान يَفْعَلُ اللّٰهُ مَا يَشَاءُ وَيَفْعَلُ اللّٰهُ مَا يُرِيْد है। या'नी जिस चीज़ और जिस काम का वोह इरादा फ़रमाता है उस को कर डालता है। न कोई उस की मशिय्यत व इरादे में दख़्ल अन्दाज़ हो सकता है, न किसी को उस के किसी काम में चून व चरा की मजाल हो सकती है। (واللّٰہ تعالٰی اعلم)

﴾2﴿ ख़िलाफ़ते आदम عَلَيْهِ السَّلَام

ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام का लक़ब "ख़लीफ़तुल्लाह" है। जब अल्लाह तआ़ला ने ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام को अपनी ख़िलाफ़त से सरफ़राज़ फ़रमाने का इरादा फ़रमाया तो इस सिलसिले में अल्लाह तआ़ला और फ़िरिश्तों में जो मुकालमा हुवा वोह बहुत ही तअ़ज्जुब ख़ैज़ होने के साथ साथ निहायत ही फ़िक्र अंगेज़ व इ़ब्रत आमोज़ भी है, जो ह़स्बे ज़ैल है :

अल्लाह तआ़ला : "ऐ फ़िरिश्तो ! मैं ज़मीन में अपना ख़लीफ़ा बनाने वाला हूं जो मेरा नाइब बन कर ज़मीन में मेरे अह़काम को नाफ़िज़ करेगा।

मलाइका : ऐ बारी तआ़ला ! क्या तू ज़मीन में ऐसे शख़्स को अपनी ख़िलाफ़त व नियाबत के शरफ़ से सरफ़राज़ फ़रमाएगा जो ज़मीन में

फ़साद बरपा करेगा और क़त्लो ग़ारतगिरी से ख़ूँरैज़ी का बाज़ार गर्म करेगा ? ऐ ख़ुदावन्दे तआ़ला ! इस शख़्स से ज़ियादा तेरी ख़िलाफ़त के हक़दार तो हम मलाइका की जमाअ़त है, क्यूंकि हम मलाइका न ज़मीन में फ़साद फैलाएंगे, न ख़ूँरैज़ी करेंगे बल्कि हम तेरी हम्दो षना के साथ तेरी सबूहिय्यत का ए'लान और तेरी क़ुद्दूसिय्यत और पाकी का बयान करते रहते हैं और तेरी तस्बीह़ व तक़्दीस से हर लह़्ज़ा व हर आन रित़्बुल्लिसान रहते हैं इस लिये हम फ़िरिश्तों की जमाअ़त ही में से किसी के सर पर अपनी ख़िलाफ़त व नियाबत का ताज रख कर उस को "**ख़लीफ़तुल्लाह**" के मुअ़ज़्ज़ज़ लक़ब से सर बुलन्द फ़रमा।

अल्लाह तआ़ला : ऐ फ़िरिश्तो ! आदम (عَلَيْهِ السَّلَام) के ख़लीफ़ा बनाने में जो ह़िक्मतें और मस्लेह़तें हैं उन को मैं ही जानता हूं, तुम गुरौहे मलाइका उन ह़िक्मतों और मस्लेह़तों को नहीं जानते।

फ़िरिश्ते बारी तआ़ला के इस इरशाद को सुन कर अगर्चे ख़ामोश तो हो गए मगर उन्हों ने अपने दिल में येह ख़याल छुपाए रखा कि अल्लाह तआ़ला ख़्वाह किसी को भी अपना ख़लीफ़ा बना दे मगर वोह फ़ज़्लो कमाल में हम फ़िरिश्तों से बढ़ कर न होगा। क्यूंकि हम मलाइका फ़ज़ीलत की जिस मन्ज़िल पर हैं वहां तक किसी मख़्लूक़ की भी रसाई न हो सकेगी। इस लिये फ़ज़ीलत के ताजदार बहर ह़ाल हम फ़िरिश्तों की जमाअ़त ही रहेगी।

इस के बा'द अल्लाह तआ़ला ने ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام को पैदा फ़रमा कर तमाम छोटी बड़ी चीज़ों का इ़ल्म उन को अ़त़ा फ़रमा दिया इस के बा'द फिर अल्लाह तआ़ला और मलाइका का ह़स्बे ज़ैल मुकालमा हुवा।

अल्लाह तआ़ला : ऐ फ़िरिश्तो ! अगर तुम अपने इस दा'वे में सच्चे हो कि तुम से अफ़्ज़ल कोई दूसरी मख़्लूक़ नहीं हो सकती तो तुम तमाम उन चीज़ों के नाम बताओ जिन को मैं ने तुम्हारे पेशे नज़र कर दिया है।

मलाइका : ऐ अल्लाह तआ़ला ! तू हर नक़्स व ऐ़ब से पाक है हमें तो बस इतना ही इ़ल्म है जो तू ने हमें अ़त़ा फ़रमा दिया है इस के सिवा हमें और किसी चीज़ का कोई इ़ल्म नहीं है हम बिल यक़ीन येह जानते हैं और मानते हैं कि बिला शुबा इ़ल्मो ह़िक्मत का ख़ालिक़ो मालिक तो सिर्फ़ तू ही है।

फिर **अल्लाह** तआ़ला ने ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام को मुख़ात़ब फ़रमा कर इरशाद फ़रमाया कि ऐ आदम तुम इन फ़िरिश्तों को तमाम चीज़ों के नाम बताओ। तो ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام ने तमाम अश्या के नाम और उन की ह़िक्मतों का इ़ल्म फ़िरिश्तों को बता दिया जिस को सुन कर फ़िरिश्ते मुतअ़ज्जिब व मह़्वे ह़ैरत हो गए।

अल्लाह तआ़ला : ऐ फ़िरिश्तो ! क्या मैं ने तुम से येह नहीं फ़रमा दिया था कि मैं आस्मानो ज़मीन की छुपी हुई तमाम चीज़ों को जानता हूं और तुम जो अ़लानिय्या येह कहते थे कि आदम फ़साद बरपा करेंगे इस को भी मैं जानता हूं और तुम जो ख़यालात अपने दिलों में छुपाए हुवे थे कि कोई मख़्लूक़ तुम से बढ़ कर अफ़्ज़ल नहीं पैदा होगी, मैं तुम्हारे दिलों में छुपे हुवे उन ख़यालात को भी जानता हूं।

फिर ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام के फ़ज़्लो कमाल के इज़्हार व ए'लान के लिये और फ़िरिश्तों से इन की अ़ज़मत व फ़ज़ीलत का ए'तिराफ़ कराने के लिये **अल्लाह** तआ़ला ने सब फ़िरिश्तों को ह़ुक्म फ़रमाया कि तुम सब ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام को सजदा करो। चुनान्चे, सब फ़िरिश्तों ने आप को सजदा किया लेकिन इब्लीस ने सजदे से इन्कार कर दिया और तकब्बुर किया तो काफ़िर हो कर मर्दूदे बारगाह हो गया।

इस पूरे मज़्मून को क़ुरआने मजीद ने अपने मो'जिज़ाना त़र्ज़े बयान में इस त़रह़ ज़िक्र फ़रमाया है :

وَاِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلٰٓىِٕكَةِ اِنِّیْ جَاعِلٌ فِی الْاَرْضِ خَلِیْفَةًؕ قَالُوْۤا
اَتَجْعَلُ فِیْهَا مَنْ یُّفْسِدُ فِیْهَا وَ یَسْفِكُ الدِّمَآءَۚ وَ نَحْنُ نُسَبِّحُ
بِحَمْدِكَ وَ نُقَدِّسُ لَكَؕ قَالَ اِنِّیْۤ اَعْلَمُ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿۳۰﴾ وَ عَلَّمَ اٰدَمَ
الْاَسْمَآءَ كُلَّهَا ثُمَّ عَرَضَهُمْ عَلَى الْمَلٰٓىِٕكَةِۙ فَقَالَ اَنْۢبِـُٔوْنِیْ بِاَسْمَآءِ
هٰۤؤُلَآءِ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِیْنَ ﴿۳۱﴾ قَالُوْا سُبْحٰنَكَ لَا عِلْمَ لَنَاۤ اِلَّا مَا
عَلَّمْتَنَاؕ اِنَّكَ اَنْتَ الْعَلِیْمُ الْحَكِیْمُ ﴿۳۲﴾ قَالَ یٰۤاٰدَمُ اَنْۢبِئْهُمْ
بِاَسْمَآىِٕهِمْۚ فَلَمَّاۤ اَنْۢبَاَهُمْ بِاَسْمَآىِٕهِمْۙ قَالَ اَلَمْ اَقُلْ لَّكُمْ اِنِّیْۤ اَعْلَمُ
غَیْبَ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِۙ وَ اَعْلَمُ مَا تُبْدُوْنَ وَ مَا كُنْتُمْ تَكْتُمُوْنَ ﴿۳۳﴾
وَ اِذْ قُلْنَا لِلْمَلٰٓىِٕكَةِ اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ فَسَجَدُوْۤا اِلَّاۤ اِبْلِیْسَؕ اَبٰى
وَ اسْتَكْبَرَ ﱪ وَ كَانَ مِنَ الْكٰفِرِیْنَ ﴿۳۴﴾ (پ ۱، البقرة: ۳۰ـ۳۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- और याद करो जब तुम्हारे रब ने फ़िरिश्तों से फ़रमाया मैं ज़मीन में अपना नाइब बनाने वाला हूं। बोले : क्या ऐसे को नाइब करेगा जो इस में फ़साद फेलाए और ख़ून रैज़ियां करे और हम तुझे सराहते हुवे तेरी तस्बीह़ करते और तेरी पाकी बोलते हैं। फ़रमाया : मुझे मा'लूम है जो तुम नहीं जानते और अल्लाह तआ़ला ने आदम को तमाम अश्या के नाम सिखाए फिर सब अश्या मलाइका पर पेश कर के फ़रमाया सच्चे हो तो इन के नाम तो बताओ, बोले पाकी है तुझे हमें कुछ इ़ल्म नहीं मगर जितना तू ने हमें सिखाया। बेशक तू ही इ़ल्मो ह़िक्मत वाला है। फ़रमाया : ऐ आदम बता दे इन्हें सब अश्या के नाम। जब आदम ने उन्हें सब के नाम बता दिये, फ़रमाया मैं न कहता था कि मैं जानता हूं आस्मानों और ज़मीन की सब छुपी चीज़ें और मैं जानता हूं जो कुछ तुम ज़ाहिर करते और जो कुछ तुम छुपाते हो और याद करो जब हम ने फ़िरिश्तों को हुक्म दिया कि आदम को सजदा करो तो सब ने सजदा किया सिवाए इब्लीस के मुन्किर हुवा और ग़ुरूर किया और काफ़िर हो गया।

दर्से हिदायत :- इन आयाते करीमा से मुन्दरिजए ज़ैल हिदायत के अस्बाक़ मिलते हैं।

﴾1﴿ अल्लाह तआ़ला की शान فَعَّالٌ لِّمَا يُرِيْدُ ﴿۱۶﴾ है। या'नी वोह जो चाहता है करता है न कोई उस के इरादे में दख़्ल अन्दाज़ हो सकता है न किसी की मजाल है कि उस के किसी काम में चूनो चरा कर सके। मगर इस के बा वुजूद ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام की तख़्लीक़ व ख़िलाफ़त के बारे में ख़ुदावन्दे क़ुद्दूस ने मलाइका की जमाअ़त से मश्वरा फ़रमाया। इस में येह हिदायत का सबक़ है कि बारी तआ़ला जो सब से ज़ियादा इ़ल्म व क़ुदरत वाला है और फ़ाइले मुख़्तार है जब वोह अपने मलाइका से मश्वरा फ़रमाता है तो बन्दे जिन का इ़ल्म और इक़्तिदार व इख़्तियार बहुत ही कम है तो उन्हें भी चाहिये कि वोह जिस किसी काम का इरादा करें तो अपने मुख़्लिस दोस्तों, और साह़िबाने अ़क़्ल हमदर्दों से अपने काम के बारे में मश्वरा कर लिया करें कि येह अल्लाह तआ़ला कि सुन्नत और उस का मुक़द्दस दस्तूर है।

﴾2﴿ फ़िरिश्तों ने ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام के बारे में येह कहा कि वोह फ़सादी और ख़ूंरेज़ हैं। लिहाज़ा उन को ख़िलाफ़ते इलाहिय्या से सरफ़राज़ करने से बेहतर येह है कि हम फ़िरिश्तों को ख़िलाफ़त का शरफ़ बख़्शा जाए। क्यूंकि हम मलाइका ख़ुदा की तस्बीह़ो तक़्दीस और उस की ह़म्दो षना को अपना शिआ़रे ज़िन्दगी बनाए हुवे हैं लिहाज़ा हम मलाइका ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام से ज़ियादा ख़िलाफ़त के मुस्तह़िक़ हैं।

फ़िरिश्तों ने अपनी येह राए इस बिना पर दी थी कि उन्हों ने अपने इजतिहाद से येह समझ लिया कि पैदा होने वाले ख़लीफ़ा में तीन क़ुव्वतें बारी तआ़ला वदीअ़त फ़रमाएगा, एक क़ुव्वते शहविय्या, दूसरी क़ुव्वते ग़ज़बिय्या, तीसरी क़ुव्वते अ़क़्लिय्या और चूंकि क़ुव्वते शहविय्या और क़ुव्वते ग़ज़बिय्या इन दोनों से लूटमार और क़त्लो ग़ारत वग़ैरा क़िस्म क़िस्म के फ़सादात रू नुमा होंगे, इस लिये फ़िरिश्तों ने बारी तआ़ला के जवाब में येह अ़र्ज़ किया कि ऐ ख़ुदावन्दे तआ़ला ! क्या तू ऐसी मख़्लूक़ को अपनी ख़िलाफ़त से सरफ़राज़ फ़रमाएगा जो ज़मीन में क़िस्म क़िस्म के फ़साद बरपा करेगी और क़त्लो ग़ारत गिरी से ज़मीन में ख़ूं रैज़ी का तूफ़ान लाएगी। इस से बेहतर तो येह है कि तू हम फ़िरिश्तों में से किसी को अपना ख़लीफ़ा बना दे। क्यूंकि हम तेरी ह़म्द के साथ तेरी तस्बीह़ पढ़ते हैं और तेरी तक़्दीस और पाकी का चर्चा करते रहते हैं तो **अल्लाह** तआ़ला ने येह फ़रमा कर फ़िरिश्तों को ख़ामोश कर दिया कि मैं जिस मख़्लूक़ को ख़लीफ़ा बना रहा हूं उस में जो जो मस्लेह़तें और जैसी जैसी ह़िक्मतें हैं उन को बस मैं ही जानता हूं तुम फ़िरिश्तों को उन ह़िक्मतों और मस्लेह़तों का इल्म नहीं है।

वोह मस्लेह़तें और ह़िक्मतें क्या थीं ? इस का पूरा पूरा इल्म तो सिर्फ़ आ़लिमुल ग़ुयूब ही को है। मगर ज़ाहिरी तौ़र पर एक ह़िक्मत और मस्लेह़त येह भी मा'लूम होती है कि फ़िरिश्तों ने ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام के बदन में क़ुव्वते शहविय्या व क़ुव्वते ग़ज़बिय्या को फ़साद व ख़ूं रैज़ी का मम्बअ़ और सर चश्मा समझ कर इन को ख़िलाफ़त का अहल नहीं समझा। मगर फ़िरिश्तों की नज़र इस पर नहीं पड़ी कि ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام में क़ुव्वते शहविय्या और क़ुव्वते ग़ज़बिय्या के साथ साथ क़ुव्वते अ़क़्लिय्या भी है और क़ुव्वते अ़क़्लिय्या की येह शान है कि अगर वोह ग़ालिब हो कर क़ुव्वते शहविय्या और क़ुव्वते ग़ज़बिय्या को अपना

मुतीअ़ व फ़रमां बरदार बना ले तो क़ुव्वते शहविय्या व क़ुव्वते ग़ज़बिय्या बजाए फ़साद व ख़ूं रैज़ी के हर ख़ैर व ख़ूबी का मम्बअ़ और हर क़िस्म की सलाहो फ़लाह़ का सरचश्मा बन जाया करती हैं, येह नुक्ता फ़िरिश्तों की निगाह से ओझल रह गया। इसी लिये बारी तआ़ला ने फ़िरिश्तों के जवाब में फ़रमाया कि मैं जो जानता हूं उस को तुम नहीं जानते और फ़िरिश्ते येह सुन कर ख़ामोश हो गए।

इस से येह हिदायत का सबक़ मिलता है कि चूंकि बन्दे ख़ुदावन्दे क़ुद्दूस के अफ़्आ़ल और उस के कामों की मस्लेहतें और हिक्मतों से कमा ह़क़्क़ुहू वाक़िफ़ नहीं हैं इस लिये बन्दों पर लाज़िम है कि अल्लाह तआ़ला के किसी फ़े'ल पर तन्क़ीद व तबसेरे से अपनी ज़बान को रोके रहें। और अपनी कम अ़क़्ली व कोताह फ़हमी का ए'तिराफ़ करते हुवे येह ईमान रखें और ज़बान से ए'लान करते रहें कि अल्लाह तआ़ला ने जो कुछ किया और जैसा भी किया बहर ह़ाल वोही ह़क़ है और अल्लाह तआ़ला ही अपने कामों की हिक्मतों और मस्लेहतों को ख़ूब जानता है जिन का हम बन्दों को इ़ल्म नहीं है।

﴾3﴿ अल्लाह तआ़ला ने ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام को तमाम अश्या के नामों, और उन की हिक्मतों का इ़ल्म ब ज़रीअ़ए इल्हाम एक लम्ह़े में अ़त़ा फ़रमा दिया। इस से मा'लूम हुवा कि इ़ल्म का ह़ुसूल किताबों के सबक़न सबक़न पढ़ने ही पर मौक़ूफ़ नहीं है बल्कि अल्लाह तआ़ला जिस बन्दे पर अपना फ़ज़्ल फ़रमा दे उस को बिग़ैर सबक़ पढ़ने और बिग़ैर किसी किताब के ब ज़रीअ़ए इल्हाम चन्द लम्ह़ों में इ़ल्म ह़ासिल करा देता है और बिग़ैर तह़सीले इ़ल्म के उस का सीना इ़ल्मो इ़रफ़ान का ख़ज़ीना बन जाया करता है। चुनान्चे, बहुत से औलियाए किराम के बारे में मो'तबर रिवायात से षाबित है कि उन्हों ने कभी किसी मद्रसे में क़दम नहीं रखा। न किसी उस्ताद के सामने ज़ानूए तलम्मुज़ किया न कभी किसी किताब को हाथ लगाया, मगर शैख़े कामिल की बात़िनी तवज्जोह और फ़ज़्ले रब्बी की ब दौलत चन्द मिनटों बल्कि चन्द सेकन्डों में इल्हाम के ज़रीए़ वोह तमाम उ़लूम व मआ़रिफ़ के जामेए़ कमालात बन गए और बुज़ुर्गों के इ़ल्मी तबह़्ह़ुर और आ़लिमाना महारत का येह आ़लम हो गया

कि बड़े बड़े दर्सगाही मौलवी जो उ़लूम व मआ़रिफ़ के पहाड़ शुमार किये जाते थे इन बुज़ुर्गों के सामने तिफ़्ले मक्तब नज़र आने लगे।

﴾4﴿ इन वाक़िआ़त से मा'लूम हुवा कि ख़ुदा की नियाबत और ख़िलाफ़त का दारो मदार कषरते इ़बादत और तस्बीह़ व तक़्दीस नहीं है बल्कि इस का दारो मदार उ़लूम व मआ़रिफ़ की कषरत पर है। चुनान्चे ह़ज़राते मलाइका عَلَيْهِمُ السَّلَام बा वुजूदे कषरते इ़बादत और तस्बीह़ व तक़्दीस "ख़लीफ़तुल्लाह" के लक़ब से सरफ़राज़ नहीं किये गए और ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام उ़लूम व मआ़रिफ़ की कषरत की बिना पर ख़िलाफ़त के शरफ़ से मुमताज़ बना दिये गए जिस पर क़ुरआने मजीद की आयाते करीमा शाहिदे अ़द्ल हैं।

﴾5﴿ इस से येह भी मा'लूम हुवा कि उ़लूम की कषरत को इ़बादत की कषरत पर फ़ज़ीलत ह़ासिल है और एक आ़लिम का दरजा एक आ़बिद से बहुत ज़ियादा बुलन्द तर है। चुनान्चे, येही वजह है कि ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام के इ़ल्मी फ़ज़्लो कमाल और बुलन्द दरजात के इज़्हार व ए'लान के लिये और मलाइका से इस का ए'तिराफ़ कराने के लिये **अल्लाह** तआ़ला ने तमाम फ़िरिश्तों को हुक्म फ़रमाया कि तमाम फ़िरिश्ते ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام के रू बरू सजदा करें। चुनान्चे, तमाम मलाइका ने हुक्मे इलाही की ता'मील करते हुवे ह़ज़रते आदम को सजदा कर लिया और वोह इस की बदौलत تقرب الى الله और मह़बूबिय्यते ख़ुदावन्दी की बुलन्द मन्ज़िल पर फ़ाइज़ हो गए और इब्लीस चूंकि अपने तकब्बुर की मन्ह़ूसिय्यत में गिरिफ़्तार हो कर इस सजदे से इन्कार कर बैठा तो वोह मर्दूदे बारगाहे इलाही हो कर ज़िल्लत व गुमराही के ऐसे अ़मीक़ ग़ार में गिर पड़ा कि क़ियामत तक वोह इस ग़ार से नहीं निकल सकता और हमेशा हमेशा वोह दोनों जहां की ला'नतों का ह़क़दार बन गया और क़हरे क़ह्हार व ग़ज़बे जब्बार में गिरिफ़्तार हो कर दाइमी अ़ज़ाबे नार का सज़ावार बन गया।

﴾6﴿ इस से येह भी मा'लूम हुवा कि किसी के इ़ल्म को जांचने और इ़ल्म की क़िल्लत व कषरत का अन्दाज़ा लगाने के लिये इम्तिह़ान का त़रीक़ा जो आज कल राइज है येह **अल्लाह** तआ़ला की सुन्नते क़दीमा है कि ख़ुदावन्दे आ़लम ने फ़िरिश्तों के इ़ल्म को कम और ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام के इ़ल्म को ज़ाइद ज़ाहिर करने के लिये फ़िरिश्तों और ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام

का इम्तिह़ान लिया। तो फ़िरिश्ते इस इम्तिह़ान में नाकाम रह गए और हज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام कामयाब हो गए।

﴾7﴿ इब्लीस ने हज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام को ख़ाक का पुतला कह कर इन की तह़क़ीर की और अपने को आतशी मख़्लूक़ कह कर अपनी बड़ाई और तकब्बुर का इज़्हार किया और सजदए आदम عَلَيْهِ السَّلَام से इन्कार किया, दर ह़क़ीक़त शैत़ान के इस इन्कार का बाइ़ष उस का तकब्बुर था इस से येह सबक़ मिलता है कि तकब्बुर वोह बुरी शै है कि बड़े से बड़े बुलन्द मरातिब व दरजात वाले को ज़िल्लत के अ़ज़ाब में गिरिफ़्तार कर देती है बल्कि बा'ज़ अवक़ात तकब्बुर कुफ़्र तक पहुंचा देता है और तकब्बुर के साथ साथ जब मह़बूबाने बारगाहे इलाही की तौहीन और तह़क़ीर का भी जज़्बा हो तो फिर तो उस की शनाअ़त व ख़बाषत और बे पनाह मन्ह़ूसिय्यत का कोई अन्दाज़ा ही नहीं कर सकता और उस के इब्लीसे लई़न होने में कोई शको शुबा किया ही नहीं जा सकता। इस लिये उन लोगों को इ़ब्रत आमोज़ सबक़ लेना चाहिये जो बुज़ुर्गाने दीन की तौहीन कर के अपनी इ़बादतों पर इज़्हारे तकब्बुर करते रहते हैं कि वोह इस दौर में इब्लीस कहलाने के मुस्तह़िक़ नहीं तो फिर क्या हैं? (واللہ تعالٰی اعلم)

﴾3﴿ उ़लूमे आदम عَلَيْهِ السَّلَام की एक फ़ेहरिस्त

हज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام को **अल्लाह** तआ़ला ने कितने और किस क़दर उ़लूम अ़त़ा फ़रमाए और किन किन चीज़ों के उ़लूम व मआ़रिफ़ को आ़लिमुल ग़ैब वश्शहादह ने एक लम्ह़े के अन्दर उन के सीनए अक़्दस में ब ज़रीअ़ए इल्हाम जम्अ़ फ़रमा दिया, जिन की बदौलत हज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام उ़लूम व मआ़रिफ़ की इतनी बुलन्द तरीन मन्ज़िल पर फ़ाइज़ हो गए कि फ़िरिश्तों की मुक़द्दस जमाअ़त आप के इ़ल्मी वक़ार व इ़रफ़ानी अ़ज़मत व इक़्तिदार के रू बरू सर ब सुजूद हो गई, इन उ़लूम की एक फ़ेहरिस्त आप क़ुत़्बे ज़माना हज़रते अ़ल्लामा शैख़ इस्माईल ह़क़्क़ी عَلَيْهِ الرَّحْمَة की शोहरए आफ़ाक़ तफ़्सीर रूह़ुल बयान शरीफ़ में पढ़िये जिस का तर्जमा ह़स्बे ज़ैल है, वोह फ़रमाते हैं :

अल्लाह तआ़ला ने हज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام को तमाम चीज़ों का नाम, तमाम ज़बानों में सिखा दिया और उन को तमाम मलाइका के नाम और तमाम अवलादे आदम के नाम, और तमाम ह़ैवानात व नबातात

व जमादात के नाम, और तमाम चीज़ की सन्अ़तों के नाम और तमाम शहरों और तमाम बस्तियों के नाम और तमाम परन्दों और दरख़्तों के नाम और जो आइन्दा आ़लमे वुजूद में आने वाले हैं सब के नाम और कि़यामत तक पैदा होने वाले तमाम जानदारों के नाम और तमाम खाने पीने की चीज़ों के नाम और जन्नत की तमाम ने'मतों के नाम और तमाम चीज़ों और सामानों के नाम, यहां तक कि पियाला और पियाली के नाम।

और ह़दीष शरीफ़ में है कि अल्लाह तआ़ला ने आप को सात लाख ज़बानें सिखाई हैं। (تفسیر روح البیان،ج۱، ص ۱۰۰، پ ۱، البقرۃ:۳۱)

इन उ़लूमे मज़्कूरए बाला की फे़हरिस्त को कु़रआने मजीद ने अपने मो'जिज़ाना जवामेउ़ल कलम के अन्दाज़े बयान में सिर्फ़ एक जुम्ले के अन्दर बयान फ़रमा दिया है। चुनान्चे, इरशादे रब्बानी है कि

وَعَلَّمَ اٰدَمَ الْاَسْمَآءَ كُلَّهَا (پ ۱، البقرۃ:۳۱)

और अल्लाह तआ़ला ने आदम को तमाम अश्या के नाम सिखाए।

दर्से हिदायत :- ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام के ख़ज़ाइने इ़ल्म की येह अ़ज़ीम फे़हरिस्त देख कर सोचिये कि जब ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام के उ़लूम व मआ़रिफ़ की येह मन्ज़िल है तो फिर हु़जू़र सय्यिदे आदम व सरवरे अवलादे आदम, ख़लीफ़तुल्लाहिल आ'ज़म ह़ज़रते मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के उ़लूमे आ़लिया की कषरत व वुस्अ़त और उन की रिफ़्अ़त व अ़ज़मत का क्या आ़लम होगा? मैं कहता हूं कि **वल्लाह** ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام के उ़लूम को सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के उ़लूम से इतनी भी निस्बत नहीं हो सकती जितनी कि एक क़त़रे को समुन्दर से और एक ज़र्रे को तमाम रूए ज़मीन से निस्बत है। **अल्लाहु अक्बर**! कहां उ़लूमे आदम और कहां उ़लूमे सय्यिदे आ़लम!

फ़र्श ता अ़र्श सब आईना, ज़माइर ह़ाज़िर
बस क़सम खाइये उम्मी तेरी दानाई की

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّبَارِكْ وَسَلِّمْ

﴾4﴿ इब्लीस क्या था और क्या हो गया?

इब्लीस जिस को शैत़ान कहा जाता है। येह फ़िरिश्ता नहीं था बल्कि जिन्न था जो आग से पैदा हुवा था। लेकिन येह फ़िरिश्तों के साथ

साथ मिला जुला रहता था और दरबारे ख़ुदावन्दी में बहुत मुक़र्रब और बड़े बड़े बुलन्द दरजात व मरातिब से सरफ़राज़ था। ह़ज़रते का'ब अह़बार رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का बयान है कि इब्लीस चालीस हज़ार बरस तक जन्नत का ख़ज़ानची रहा और अस्सी हज़ार बरस तक मलाइका का साथी रहा और बीस हज़ार बरस तक मलाइका को वा'ज़ सुनाता रहा और तीस हज़ार बरस तक मुक़र्रबीन का सरदार रहा और एक हज़ार बरस तक रूह़ानिय्यीन की सरदारी के मन्सब पर रहा और चौदह हज़ार बरस तक अ़र्श का त़वाफ़ करता रहा और पहले आस्मान में उस का नाम आ़बिद और दूसरे आस्मान में ज़ाहिद, और तीसरे आस्मान में आ़रिफ़ और चौथे आस्मान में वली और पांचवें आस्मान में तक़ी और छटे आस्मान में ख़ाज़िन और सातवें आस्मान में अ़ज़ाज़ील था और लौह़े मह़फ़ूज़ में इस का नाम इब्लीस लिखा हुवा था और येह अपने अन्जाम से ग़ाफ़िल और ख़ातिमे से बे ख़बर था।

(تفسیر صاوی، ج۱،ص۵۱،پ۱، البقرۃ:۳۴، تفسیر جمل، ج۱ ص ۶۰)

लेकिन जब **अल्लाह** तआ़ला ने ह़ज़रते आदम عَلَیْہِ السَّلَام को सजदा करने का हुक्म दिया तो इब्लीस ने इन्कार कर दिया और ह़ज़रते आदम عَلَیْہِ السَّلَام की तह़क़ीर और अपनी बड़ाई का इज़्हार कर के तकब्बुर किया इसी जुर्म की सज़ा में ख़ुदावन्दे आ़लम ने उस को मर्दूदे बारगाह कर के दोनों जहान में मलऊ़न फ़रमा दिया और उस की पैरवी करने वालों को जहन्नम में अ़ज़ाबे नार का सज़ावार बना दिया। चुनान्चे, क़ुरआने मजीद में इरशादे रब्बानी हुवा कि

قَالَ مَا مَنَعَكَ اَلَّا تَسْجُدَ اِذْ اَمَرْتُكَ ؕ قَالَ اَنَا خَیْرٌ مِّنْهُ ۚ خَلَقْتَنِیْ
مِنْ نَّارٍ وَّ خَلَقْتَهٗ مِنْ طِیْنٍ ﴿۱۲﴾ قَالَ فَاهْبِطْ مِنْهَا فَمَا یَكُوْنُ لَكَ اَنْ
تَتَكَبَّرَ فِیْهَا فَاخْرُجْ اِنَّكَ مِنَ الصّٰغِرِیْنَ ﴿۱۳﴾ قَالَ اَنْظِرْنِیْۤ اِلٰی یَوْمِ
یُبْعَثُوْنَ ﴿۱۴﴾ قَالَ اِنَّكَ مِنَ الْمُنْظَرِیْنَ ﴿۱۵﴾ قَالَ فَبِمَاۤ اَغْوَیْتَنِیْ
لَاَقْعُدَنَّ لَهُمْ صِرَاطَكَ الْمُسْتَقِیْمَ ﴿۱۶﴾ ۙ ثُمَّ لَاٰتِیَنَّهُمْ مِّنْۢ بَیْنِ اَیْدِیْهِمْ
وَ مِنْ خَلْفِهِمْ وَ عَنْ اَیْمَانِهِمْ وَ عَنْ شَمَآىٕلِهِمْ ؕ وَ لَا تَجِدُ اَكْثَرَهُمْ
شٰكِرِیْنَ ﴿۱۷﴾ قَالَ اخْرُجْ مِنْهَا مَذْءُوْمًا مَّدْحُوْرًا ؕ لَمَنْ تَبِعَكَ مِنْهُمْ
لَاَمْلَـَٔنَّ جَهَنَّمَ مِنْكُمْ اَجْمَعِیْنَ ﴿۱۸﴾ (پ۸،الاعراف:۱۲_۱۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- फ़रमाया : किस चीज़ ने तुझे रोका कि तू ने सजदा न किया जब मैं ने तुझे हुक्म दिया था बोला : मैं इस से बेहतर हूं तू ने मुझे आग से बनाया और इसे मिट्टी से बनाया। फ़रमाया : तू यहां से उतर जा तुझे नहीं पहुंचता कि यहां रह कर ग़ुरूर करे निकल तू है ज़िल्लत वालों में बोला मुझे फ़ुरसत दे उस दिन तक कि लोग उठाए जाएं, फ़रमाया : तुझे मोहलत है, बोला : तो क़सम इस की, कि तू ने मुझे गुमराह किया मैं ज़रूर तेरे सीधे रास्ते पर उन की ताक में बैठूंगा फिर ज़रूर मैं उन के पास आऊंगा उन के आगे और पीछे और दाहिने और बाएं से और तू उन में अकषर को शुक्र गुज़ार न पाएगा। फ़रमाया : यहां से निकल जा रद्द किया गया रान्दा (धुत्कारा) हुवा ज़रूर जा उन में से तेरे कहे पर चला मैं तुम सब से जहन्नम भर दूंगा।

दर्से हिदायत :- क़ुरआने मजीद के इस अ़जीब वाक़िए़ में इ़ब्रतों और नसीहतों की बड़ी बड़ी दरख़्शिन्दा और ताबिन्दा तजल्लियां हैं इसी लिये इस वाक़िए़ को ख़ुदावन्दे क़ुद्दूस ने मुख़्तलिफ़ अल्फ़ाज़ में और मुतअ़द्दद तर्ज़े बयान के साथ क़ुरआने मजीद के सात मक़ामात में बयान फ़रमाया है या'नी सूरए बक़रह, सूरए आ'राफ़, सूरए हि़ज्र, सूरए बनी इस्राईल, सूरए कह्फ़, सूरए त़ाहा, सूरए ص में इस दिल हिला देने वाले वाक़िए़ का तज़्किरा मज़्कूर है जिस से मुन्दरिजए ज़ैल ह़क़ाइक़ का दर्से हिदायत मिलता है।

(1) इस से एक बहुत बड़ा दर्से हिदायत तो येह मिलता है कि कभी हरगिज़ हरगिज़ अपनी इ़बादतों और नेकियों पर घमन्ड और ग़ुरूर नहीं करना चाहिये और किसी गुनहगार को अपनी मग़्फ़िरत से कभी मायूस नहीं होना चाहिये क्यूंकि अन्जाम क्या होगा और ख़ातिमा कैसा होगा अ़ाम बन्दों को इस की कोई ख़बर नहीं है और नजात व फ़लाह़ का दारो मदार दर ह़क़ीक़त ख़ातिमा बिल ख़ैर पर ही है। बड़े से बड़ा आ़बिद अगर उस का ख़ातिमा बिल ख़ैर न हुवा तो वोह जहन्नमी होगा और बड़े से बड़ा गुनहगार अगर उस का ख़ातिमा बिल ख़ैर हो गया तो वोह जन्नती होगा देख लो इब्लीस कितना बड़ा इ़बादत गुज़ार और किस क़दर मुक़र्रबे बारगाह था और कैसे कैसे मरातिब व दरजात के शरफ़ से सरफ़राज़ था। मगर अन्जाम

क्या हुवा ? कि उस की सारी इ़बादतें ग़ारत व अकारत हो गईं और वोह दोनों जहान में मलऊ़न हो कर अ़ज़ाबे जहन्नम का ह़क़दार बन गया। क्यूंकि उस को अपनी इ़बादतों और बुलन्दिये दरजात पर ग़ुरूर और तकब्बुर हो गया था मगर वोह अपने अन्जाम और ख़ातिमे से बिल्कुल बे ख़बर था।

ह़दीष शरीफ़ में है कि एक बन्दा अहले जहन्नम के आ'माल करता रहता है ह़ालांकि वोह जन्नती होता है और एक बन्दा अहले जन्नत के अ़मल करता रहता है ह़ालांकि वोह जहन्नमी होता है।

اِنَّـمَاالْاَعْمَالُ بِالْخَوَاتِيْم या'नी अ़मल का ए'तिबार ख़ातिमों पर है।

(مشکوٰۃالمصابیح،کتاب الایمان،باب الایمان بالقدر، الفصل الاول، ص۲۰)

ख़ुदान्वदे करीम हर मुसलमान को ख़ातिमा बिल ख़ैर की सआ़दत नसीब फ़रमाए और बुरे अन्जाम और बुरे ख़ातिमे से मह़फ़ूज़ रखे। आमीन। (واللہ تعالٰی اعلم)

﴾2﴿ इस से येह भी मा'लूम हुवा कि आ़लिम हो या जाहिल मुत्तक़ी हो या गुनहगार हर आदमी को ज़िन्दगी भर शैत़ान के वस्वसों से होशियार और उस के फ़रैबों से बचते रहना चाहिये। क्यूंकि शैत़ान ने क़सम खा कर ख़ुदा के ह़ुज़ूर में ए'लान कर दिया है कि मैं आगे पीछे और दाएं बाएं से वस्वसे डाल कर तेरे बन्दों को सिरात़े मुस्तक़ीम से बहकाता रहूंगा और बहुत से बन्दों को ख़ुदा का शुक्र गुज़ार होने से रोक दूंगा।

﴾3﴿ शैत़ान ने आगे पीछे और दाएं बाएं चार जानिबों से इन्सानों पर ह़म्ला आवर होने और वस्वसे डालने का ए'लान किया है इस से मा'लूम हुवा कि ऊपर और नीचे इन दोनों जानिबों से शैत़ान इन्सानों पर कभी ह़म्ला आवर नहीं होगा न ऊपर और नीचे की जानिब से कोई वस्वसा डाल सकेगा। लिहाज़ा अगर कोई इन्सान अपने ऊपर या नीचे की त़रफ़ से कोई रोशनी या कोई भी ह़ैरत व तअ़ज्जुब ख़ैज़ चीज़ देखे तो उसे समझ लेना चाहिये कि येह शैत़ानी करतब या इब्लीस का वस्वसा नहीं है बल्कि उस को ख़ैर समझ कर उस की जानिब मुतवज्जेह हो और ख़ुदावन्दे क़ुद्दूस की त़रफ़ से ख़ैर और भलाई की उम्मीद रखे। (واللہ تعالٰی اعلم)

﴾5﴿ बनी इस्राईल पर ताऊन का अज़ाब

जब "मैदाने तीह" में बनी इस्राईल ने येह ख़्वाहिश ज़ाहिर की, कि हम ज़मीन से उगने वाले ग़ल्ले और तरकारियां खाएंगे तो उन लोगों को हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने समझाया कि तुम लोग "मन्न व सलवा" के नफ़ीस खाने को छोड़ कर गेहूं, दाल और तरकारियों जैसी ख़सीस और घटिया गिज़ाएं क्यूं तलब कर रहे हो ? मगर जब बनी इस्राईल अपनी ज़िद पर अड़े रहे तो **अल्लाह** तआला ने हुक्म दिया कि तुम लोग मैदाने तीह से निकल कर शहरे बैतुल मुक़द्दस में दाख़िल हो जाओ और वहां बे रोक टोक अपनी पसन्द की और मन भाती गिज़ाएं खाओ मगर येह ज़रूरी है कि तुम लोग बैतुल मुक़द्दस के दरवाज़े में कमाले अदब व एहतिराम के साथ झुक कर दाख़िल होना और दाख़िल होते वक़्त येह दुआ मांगते रहना कि या **अल्लाह** ! तू हमारे गुनाहों को मुआफ़ फ़रमा दे तो हम तुम्हारे गुनाहों को बख़्श देंगे।

मगर बनी इस्राईल जो हमेशा से सरकश और शरारतों के आदी और ख़ुदा की नाफ़रमानियों के ख़ूगर थे, बैतुल मुक़द्दस के क़रीब पहुंच कर एक दम इन लोगों की रगे शरारत भड़क उठी और येह नाफ़रमान लोग बजाए झुक के दाख़िल होने के अपनी सुरीनों पर घसिटते हुवे दरवाज़े में दाख़िल हुवे और حِطَّةٌ (मुआफ़ी की दुआ) के बदले حبة فى شعرة (एक दाना है एक बाल में) कहते हुवे और मज़ाक़ व तमसख़ुर करते हुवे बैतुल मुक़द्दस के दरवाज़े में घुसते चले गए। फ़रमाने रब्बानी की इस नाफ़रमानी और हुक्मे इलाही के साथ तमसख़ुर की वजह से इन लोगों पर क़हरे ख़ुदावन्दी ब सूरते अज़ाब नाज़िल हो गया कि अचानक इन लोगों में ताऊन की बीमारी वबाई शक्ल में फैल गई और घन्टे भर में सत्तर हज़ार बनी इस्राईल दर्दो कर्ब से मछली की तरह तड़प तड़प कर मर गए।

(صاوی، ج ۱، ص ۳۱ و جلالین)

ताऊ़न :- एक मोहलिक वबाई बीमारी है जिस को डॉक्टर “प्लेग” कहते हैं इस बीमारी में गर्दन और बग़लों और कन्जे रान में आम की गुठली के बराबर गिलटियां निकल आती हैं। जिन में बेपनाह दर्द और नाक़ाबिले बरदाश्त सोज़िश होती है और शदीद बुख़ार चढ़ जाता है और आंखें सुर्ख़ हो जाती हैं और दर्दनाक जलन से शो'ले की त़रह़ जलने लगती हैं और मरीज़ शिद्दते दर्द और शदीद बे चैनी व बे क़रारी में तड़प तड़प कर बहुत जल्द मर जाता है और जिस बस्ती में येह वबा फेल जाती है उस बस्ती की अकषर आबादी मौत के घाट उतर जाती है और हर त़रफ़ वीरानी और ख़ौफ़ व हरास का दौर दौरा फेल जाता है।

अल्लाह तआ़ला ने बनी इस्राईल के इस वाक़िए का ज़िक्र फ़रमाते हुवे कुरआने मजीद में इरशाद फ़रमाया कि

وَ اِذْ قُلْنَا ادْخُلُوْا هٰذِهِ الْقَرْیَةَ فَكُلُوْا مِنْهَا حَیْثُ شِئْتُمْ رَغَدًا وَّ ادْخُلُوا
الْبَابَ سُجَّدًا وَّ قُوْلُوْا حِطَّةٌ نَّغْفِرْ لَكُمْ خَطٰیٰكُمْؕ وَ سَنَزِیْدُ الْمُحْسِنِیْنَ ﴿۵۸﴾
فَبَدَّلَ الَّذِیْنَ ظَلَمُوْا قَوْلًا غَیْرَ الَّذِیْ قِیْلَ لَهُمْ فَاَنْزَلْنَا عَلَى الَّذِیْنَ
ظَلَمُوْا رِجْزًا مِّنَ السَّمَآءِ بِمَا كَانُوْا یَفْسُقُوْنَ ﴿۵۹﴾ع (پ ۱، البقرة:۵۸_۵۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- और जब हम ने फ़रमाया उस बस्ती में जाओ फिर उस में जहां चाहो बे रोक टोक खाओ और दरवाज़े में सजदा करते दाख़िल हो और कहो हमारे गुनाह मुआफ़ हों, हम तुम्हारी ख़त़ाएं बख़्श देंगे और क़रीब है कि नेकी वालों को और ज़ियादा दे तो ज़ालिमों ने और बात बदल दी जो फ़रमाई गई थी उस के सिवा तो हम ने आस्मान से उन पर अ़ज़ाब उतारा बदला उन की बे हुक्मी का।

दर्से हिदायत :- इस वाक़िए से मा'लूम हुवा कि ख़ुदावन्दे कुद्दूस की नाफ़रमानी और अह़कामे रब्बानी के साथ तमसख़ुर व मज़ाक़ करने का कितना भयानक और किस क़दर हौलनाक अन्जाम होता है कि आख़िरत का अ़ज़ाब तो अपनी जगह बर क़रार ही है दुन्या में क़हरे इलाही ब सूरते अ़ज़ाब नाज़िल हो जाता है जिस से लोग हलाक हो कर फ़ना के घाट उतर जाते हैं और बस्तियां वीरान हो जाती हैं। معاذ الله منه

फ़ाइदा :- "ताऊ़न" बनी इस्राईल के ह़क़ में अ़ज़ाब था मगर इस ख़ैरुल उमम या'नी ख़ातिमुल अम्बिया صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की उम्मत के ह़क़ में येह बीमारी रह़मत है क्यूंकि ह़दीष शरीफ़ में आया है कि ताऊ़न की बीमारी में मरने वाला शहीद होता है। (تفسیر صاوی، ج۱،ص۶۸،پ۱،البقرۃ:۵۹)

मस्अला :- येह है कि जिस बस्ती में ताऊ़न की वबा फेली हो वहां जाना नहीं चाहिये और अगर अपनी बस्ती में वबा आ जाए तो बस्ती छोड़ कर दूसरी जगह भागना नहीं चाहिये बल्कि ताऊ़न की वबा में अपनी बस्ती ही के अन्दर ख़ुदा पर तवक्कुल कर के सब्र के साथ रहना चाहिये अगर इस बीमारी में मर गया तो शहीद होगा और ताऊ़न के डर से बस्ती छोड़ कर भागने वाले पर इतना बड़ा गुनाह होता है जितना कि जिहाद के मैदान छोड़ कर भागने वालों पर गुनाह होता है इस लिये हरगिज़ हरगिज़ भागना नहीं चाहिये बल्कि इस बीमारी में सब्र के साथ अपनी ही बस्ती में मुक़ीम रहना चाहिये कि इस पर ख़ुदावन्दे तआ़ला ने अज्रो षवाब का वा'दा फ़रमाया है। (واللہ تعالٰی اعلم)

﴾6﴿ सफ़ा व मरवा

येह छोटी छोटी दो पहाड़ियां हैं जो ह़रमे का'बए मुकर्रमा के बिल्कुल क़रीब ही हैं और आज कल तो बुलन्द इमारतों और ऊंची सड़कों और दोनों पहाड़ियों के दरमियान छत बन जाने और ता'मीरात के रद्दो बदल से दोनों पहाड़ियां बराए नाम ही कुछ बुलन्दी रखती हैं। इन्ही दोनों पहाड़ियों पर चढ़ कर और चक्कर लगा कर ह़ज़रते बीबी हाजरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا ने उस वक़्त पानी की जुस्तजू और तलाश की थी जब कि ह़ज़रते इस्माईल عَلَيْهِ السَّلَام शीर ख़्वार बच्चे थे और प्यास की शिद्दत से बे क़रार हो गए थे इसी लिये ज़मानए क़दीम से येह दोनों पहाड़ियां बहुत मुक़द्दस मानी जाती हैं और हुज्जाजे किराम इन दोनों पहाड़ियों पर चढ़ कर बड़े एह़तिराम और जज़्बए अ़क़ीदत के साथ त़वाफ़ करते और दुआ़एं मांगा करते थे।

मगर ज़मानए जाहिलिय्यत में एक मर्द जिस का नाम "असाफ़" था और एक औ़रत जिस का नाम "नाइला" था इन दोनों ख़बीषों ने

ख़ानए का'बा के अन्दर ज़िनाकारी कर ली तो इन दोनों पर येह क़हरे इलाही नाज़िल हो गया कि येह दोनों मस्ख़ हो कर पथ्थर की मूरत और बुत बन गए फिर ज़मानए जाहिलिय्यत के बुत परस्तों ने इन दोनों मुजस्समों को का'बा से उठा कर सफ़ा व मरवा की दोनों पहाड़ियों पर रख दिया और इन दोनों बुतों की पूजा करने लगे।

फिर जब अ़रब में इस्लाम फैल गया तो मुसलमान "असाफ़ व नाइला" दोनों बुतों की वजह से इन दोनों पहाड़ियों पर जाने को गुनाह समझने लगे उस वक़्त अल्लाह तआ़ला ने क़ुरआने मजीद में येह हुक्म नाज़िल फ़रमाया कि सफ़ा व मरवा के त़वाफ़ और इन दोनों की ज़ियारत में कोई ह़रज व गुनाह नहीं बल्कि ह़ज व उ़मरह दोनों इबादतों में सफ़ा व मरवा का त़वाफ़ ज़रूरी है। (تفسیر صاوی، ج۱،ص۱۳۲،پ۲، البقرۃ:۱۵۸)

फ़त्ह़े मक्का के दिन हुज़ूर सय्यिदे अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इन दोनों पहाड़ियों पर से "असाफ़ व नाइला" दोनों बुतों को तोड़ फोड़ कर नेस्तो नाबूद कर दिया और इन दोनों पहाड़ियों को ह़स्बे दस्तूरे साबिक़ मुक़द्दस व मुअ़ज़्ज़म क़रार दे कर इन दोनों का त़वाफ़ ह़ज व उ़मरह में ज़रूरी क़रार दिया गया। चुनान्चे, क़ुरआने मजीद में इरशाद हुवा कि

اِنَّ الصَّفَا وَ الْمَرْوَةَ مِنْ شَعَآىٕرِ اللّٰهِۚ فَمَنْ حَجَّ الْبَیْتَ اَوِ اعْتَمَرَ فَلَا جُنَاحَ عَلَیْهِ اَنْ یَّطَّوَّفَ بِهِمَاؕ وَ مَنْ تَطَوَّعَ خَیْرًاۙ فَاِنَّ اللّٰهَ شَاكِرٌ عَلِیْمٌ﴿۱۵۸﴾ (پ۲،البقرۃ:۱۵۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- बेशक सफ़ा और मरवा अल्लाह के निशानों से हैं तो जो इस घर का ह़ज या उ़मरह करे उस पर कुछ गुनाह नहीं कि इन दोनों के फेरे करे और जो कोई भली बात अपनी त़रफ़ से करे तो अल्लाह नेकी का सिला देने वाला ख़बरदार है।

दर्से हिदायत :- सफ़ा और मरवा दोनों पहाड़ियों पर ह़ज़रते हाजरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا ने दौड़ कर पानी तलाश किया तो एक नबी या'नी ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام की बीवी और एक नबी या'नी ह़ज़रते इस्माईल عَلَيْهِ السَّلَام

की मां ह़ज़रते बीबी हाजरा رضی اللہ تعالٰی عنہا के क़दम इन पहाड़ियों पर पड़ जाने से इन दोनों पहाड़ियों को येह इ़ज़्ज़त व अ़ज़्मत मिल गई कि ह़ज़रते बीबी हाजरा رضی اللہ تعالٰی عنہا की एक मुक़द्दस यादगार बन जाने का इन दोनों पहाड़ियों को ए'ज़ाज़ व शरफ़ मिल गया और येह दोनों पहाड़ियां ह़ज व उ़मरह करने वालों के लिये त़वाफ़ व सअ़्य का एक मक़्बूल व मोह़तरम मक़ाम बन गईं। इस से येह हिदायत का सबक़ मिलता है कि **अल्लाह** वालों और **अल्लाह** वालियों से अगर किसी जगह को कोई ख़ास तअ़ल्लुक़ ह़ासिल हो जाए तो वोह जगह बहुत मुअ़ज़्ज़ज़ व मुअ़ज़्ज़म बन जाती है और हर मुसलमान के लिये वोह जगह क़ाबिले ता'ज़ीम व लाइक़े एह़तिराम हो जाती है वरना मक्कए मुअ़ज़्ज़मा में बहुत सी पहाड़ियां और छोटे बड़े बहुत से पहाड़ हैं, मगर सफ़ा व मरवा की छोटी छोटी पहाड़ियों को जो तक़द्दुस व अ़ज़्मत ह़ासिल है वोह किसी दूसरे पहाड़ को ह़ासिल नहीं। इस की वजह इस के सिवा और क्या हो सकती है कि येह दोनों पहाड़ियां एक **अल्लाह** वाली की एक मुबारक जिद्दो जहद की यादगार हैं।

इसी पर गुम्बदे ख़ज़्रा और औलियाउल्लाह के रोज़ों और इन ह़ज़रात की इ़बादत गाहों और दूसरे मुक़द्दस मक़ामात को क़ियास कर लेना चाहिये कि येह सब ख़ासाने ख़ुदा की निस्बत व तअ़ल्लुक़ की वजह से मुअ़ज़्ज़ज़ व मुअ़ज़्ज़म और क़ाबिले तक़द्दुस व लाइक़े ता'ज़ीम व एह़तिराम हैं और इन सब जगहों की ता'ज़ीम व तौक़ीर ख़ुदावन्दे क़ुद्दूस की ख़ुश्नूदी का बाइ़ष और इन सब मक़ामात की बे अदबी व तह़क़ीर क़ह्‌रे क़ह्‌हार व ग़ज़बे जब्बार का सबब है। लिहाज़ा उन लोगों को जो गुम्बदे ख़ज़्रा और मक़ाबिरे औलियाउल्लाह की बे अदबी करते और इन को मुन्हदिम और मिस्मार करने का प्लान बनाते रहते हैं, उन्हें इन ह़क़ाइक़ के सितारों से हिदायत की रोशनी ह़ासिल करनी चाहिये और अपनी नुह़ूसतों और बद बख़्तियों से ताइब हो कर सिराते़ मुस्तक़ीम की राह पर षाबित क़दम हो जाना चाहिये। ख़ुदावन्दे क़ुद्दूस अपने ह़बीबे करीम صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلّم के तुफ़ैल में सब को हिदायत का नूर अ़त़ा फ़रमाए और सिराते़ मुस्तक़ीम की शाहराह पर चलाए। (आमीन)

﴾7﴿ सत्तर आदमी मर कर ज़िन्दा हो गए

हज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام जब कोहे तूर पर चालीस दिन के लिये तशरीफ़ ले गए तो "सामरी" मुनाफ़िक़ ने चांदी सोने के ज़ेवरात पिघला कर एक बछड़े की मूरत बना कर हज़रते जिब्राईल عَلَیْہِ السَّلَام के घोड़े के पाउं तले की मिट्टी उस मूरत के मुंह में डाल दी तो वोह ज़िन्दा हो कर बोलने लगा। फिर सामरी ने मजमए़ आ़म में येह तक़रीर शुरूअ़ कर दी कि ऐ बनी इस्राईल ! हज़रते मूसा (عَلَیْہِ السَّلَام) ख़ुदा से बातें करने के लिये कोहे तूर पर तशरीफ़ ले गए हैं लेकिन ख़ुदा तो ख़ुद हम लोगों के पास आ गया है और बछड़े की त़रफ़ इशारा कर के बोला कि येही ख़ुदा है "सामरी" ने ऐसी गुमराह कुन तक़रीर की, कि बनी इस्राईल को बछड़े के ख़ुदा होने का यक़ीन आ गया और वोह बछड़े को पूजने लगे। जब हज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام कोहे तूर से वापस तशरीफ़ लाए तो बनी इस्राईल को बछड़ा पूजते देख कर बेहद नाराज़ हुवे फिर ग़ज़ब व जलाल में आ कर उस बछड़े को तोड़ फोड़ कर बरबाद कर दिया। फिर **अल्लाह** तआ़ला का येह हुक्म नाज़िल हुवा कि जिन लोगों ने बछड़े की परस्तिश नहीं की है वोह लोग बछड़ा पूजने वालों को क़त्ल करें। चुनान्चे, सत्तर हज़ार बछड़े की पूजा करने वाले क़त्ल हो गए। इस के बा'द येह हुक्म नाज़िल हुवा कि हज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام सत्तर आदमियों को मुन्तख़ब फ़रमा कर के कोहे तूर पर ले जाएं और येह सब लोग बछड़ा पूजने वालों की त़रफ़ से मा'ज़िरत त़लब करते हुवे येह दुआ़ मांगें कि बछड़ा पूजने वालों के गुनाह मुआ़फ़ हो जाएं, चुनान्चे, हज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام ने चुन चुन कर अच्छे अच्छे सत्तर आदमियों को साथ लिया और कोहे तूर पर तशरीफ़ ले गए। जब लोग कोहे तूर पर त़लबे मा'ज़िरत व इस्तिग़फ़ार करने लगे तो **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ से आवाज़ आई कि

"ऐ बनी इस्राईल ! मैं ही हूं, मेरे सिवा तुम्हारा कोई मा'बूद नहीं मैं ने ही तुम लोगों को फ़िरऔ़न के ज़ुल्म से नजात दे कर तुम लोगों को बचाया है लिहाज़ा तुम लोग फ़क़त़ मेरी ही इबादत करो और मेरे सिवा किसी को मत पूजो।

अल्लाह तआ़ला का येह कलाम सुन कर येह सत्तर आदमी एक ज़बान हो कर कहने लगे कि ऐ मूसा ! हम हरगिज़ हरगिज़ आप की बात नहीं मानेंगे जब तक हम **अल्लाह** तआ़ला को अपने सामने न देख लें। येह सत्तर आदमी अपनी ज़िद पर बिल्कुल अड़ गए कि हम को आप खुदा का दीदार कराइये वरना हम हरगिज़ नहीं मानेंगे कि खुदावन्दे आ़लम ने येह फ़रमाया है। ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने इन लोगों को बहुत समझाया, मगर येह शरीर व सरकश लोग अपने मुत़ालबे पर अड़े रह गए यहां तक कि **अल्लाह** तआ़ला ने अपने ग़ज़ब व जलाल का इज़्हार इस त़रह़ फ़रमाया कि एक फ़िरिश्ता आया और उस ने एक ऐसी ख़ौफ़नाक चीख़ मारी कि ख़ौफ़ व हरास से लोगों के दिल फट गए और येह सत्तर आदमी मर गए। फिर ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने खुदावन्दे आ़लम से कुछ गुफ़्त्गू की और इन लोगों के लिये ज़िन्दा हो जाने की दुआ़ मांगी तो येह लोग ज़िन्दा हो गए। (تفسیر صاوی، ج۱، ص۶۴، ۶۵، پ۱، البقرۃ: ۵۵، ۵۶)

وَ اِذْ قُلْتُمْ یٰمُوْسٰى لَنْ نُّؤْمِنَ لَكَ حَتّٰى نَرَى اللّٰهَ جَهْرَةً فَاَخَذَتْكُمُ
الصّٰعِقَةُ وَ اَنْتُمْ تَنْظُرُوْنَ ﴿۵۵﴾ ثُمَّ بَعَثْنٰكُمْ مِّنْۢ بَعْدِ مَوْتِكُمْ لَعَلَّكُمْ
تَشْكُرُوْنَ ﴿۵۶﴾ (پ۱، البقرۃ: ۵۵، ۵۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- और जब तुम ने कहा ऐ मूसा हम हरगिज़ तुम्हारा यक़ीन न लाएंगे जब तक अ़लानिय्या खुदा को न देख लें तो तुम्हें कड़क ने आ लिया और तुम देख रहे थे फिर मरे पीछे हम ने तुम्हें ज़िन्दा किया कि कहीं तुम एह़सान मानो।

दर्से हिदायत :- ﴾1﴿ इस वाक़िए़ से येह सबक़ मिलता है कि अपने पैग़म्बर की बात न मान कर अपनी ज़िद पर अड़े रहना बड़ी ही ख़त़रनाक बात है फिर इन सत्तर आदमियों का मर कर ज़िन्दा हो जाना येह खुदावन्दे कुद्दूस की कुदरते कामिला का इज़्हार व ए'लान है, ताकि लोग ईमान रखें कि **अल्लाह** तआ़ला क़ियामत के दिन सब मरे हुवे इन्सानों को दोबारा ज़िन्दा फ़रमाएगा।

﴾2﴿ इस वाक़िए़ से येह भी मा'लूम हुवा कि ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام की शरीअ़त का क़ानून येह था कि गुनाहे शिर्क करने वालों को क़त्ल कर दिया

जाए, फिर क़ौम के नेक लोग उन के लिये त़लबे मा'ग़्फ़िरत और दुआए मग़्फ़िरत करें, तब उन शिर्क करने वालों की तौबा क़बूल होती थी। मगर हमारे हुज़ूर सय्यिदुल अम्बिया, ख़ातिमुन्नबिय्यीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शरीअ़त चूंकि आसान शरीअ़त है इस लिये इस के क़ानून में तौबा क़बूल होने के लिये येही काफ़ी है कि गुनाह करने वाले ने अगर्चे कुफ़्र व शिर्क का गुनाह कर लिया हो सच्चे दिल से अपने गुनाह पर अल्लाह तआ़ला के हुज़ूर शर्मिन्दा हो कर मुआ़फ़ी त़लब करे और अपने दिल में येह अ़हद व अ़ज़्म करे कि फिर वोह येह गुनाह नहीं करेगा तो अल्लाह तआ़ला उस की तौबा क़बूल फ़रमा लेगा और उस के गुनाह को मुआ़फ़ फ़रमा देगा। तौबा क़बूल होने के लिये गुनाह करने वालों को क़त्ल नहीं किया जाएगा।

सُبْحٰنَ اللّٰه येह हुज़ूर रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की रह़मत के तुफ़ैल है कि वोह अपनी उम्मत पर रऊफ़ुर्रह़ीम और बेह़द मेहरबान हैं तो इन के तुफ़ैल अल्लाह तआ़ला भी अपने ह़बीब की उम्मत पर बहुत ज़ियादा रह़ीमो करीम बल्कि अरह़मुर्राह़िमीन है।

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّبَارِكْ وَسَلِّمْ

﴾8﴿ एक तारीख़ी मुनाज़रा

येह नमरूद और ह़ज़रते इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلَيْهِ السَّلَام का मुनाज़रा है जिस की रूदाद क़ुरआने मजीद में मज़्कूर है।

नमरूद कौन था ? :- "नमरूद" बड़े तनत़ने का बादशाह था सब से पहले इस ने अपने सर पर ताजे शाही रखा और ख़ुदाई का दा'वा किया। येह वलदुज़्ज़िना और ह़रामी था और इस की मां ने ज़िना करा लिया था जिस से नमरूद पैदा हुवा था कि सल्त़नत का कोई वारिष पैदा न होगा तो बादशाहत ख़त्म हो जाएगी। लेकिन येह ह़रामी लड़का बड़ा हो कर बहुत इक़्बाल मन्द हुवा और बहुत बड़ा बादशाह बन गया। मश्हूर है कि पूरी दुन्या की बादशाही सिर्फ़ चार ही शख़्सों को मिली जिन में से दो मोमिन थे और दो काफ़िर। ह़ज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام और ह़ज़रते ज़ुल क़रनैन तो साह़िबाने ईमान थे और नमरूद व बुख़्ते नस्सर येह दोनों काफ़िर थे।

नमरूद ने अपनी सल्तनत भर में येह क़ानून नाफ़िज़ कर दिया था कि इस ने ख़ूराक की तमाम चीज़ों को अपनी तह़वील में ले लिया था। येह सिर्फ़ उन ही लोगों को ख़ूराक का सामान दिया करता था जो लोग इस की खुदाई को तस्लीम करते थे। चुनान्चे, एक मरतबा ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام उस के दरबार में ग़ल्ला लेने के लिये तशरीफ़ ले गए तो उस ख़बीष ने कहा कि पहले तुम मुझ को खुदा तस्लीम करो जभी मैं तुम को ग़ल्ला दूंगा। ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام ने भरे दरबार में अ़लल ए'लान फ़रमा दिया कि तू झूटा है और मैं सिर्फ़ एक खुदा का परस्तार हूं जो وحدہ لاشریک لہ है येह सुन कर नमरूद आपे से बाहर हो गया और आप को दरबार से निकाल दिया और एक दाना भी नहीं दिया। आप और आप के चन्द मुत्तबिईन जो मोमिन थे भूक की शिद्दत से परेशान हो कर जां बलब हो गए। उस वक़्त आप एक थैला ले कर एक टीले के पास तशरीफ़ ले गए और थैले में रैत भर कर लाए और खुदावन्दे कुद्दूस से दुआ़ मांगी तो वोह रैत आटा बन गई और आप ने उस को अपने मुत्तबिईन को खिलाया और खुद भी खाया। फिर नमरूद की दुश्मनी इस ह़द तक बढ़ गई कि उस ने आप को आग में डलवा दिया। मगर वोह आग आप पर गुलज़ार बन गई और आप सलामती के साथ उस आग से बाहर निकल आए और अ़लल ए'लान नमरूद को झूटा कह कर खुदाए وحدہ لاشریک لہ की तौह़ीद का चरचा करने लगे। नमरूद ने आप के कलिमए ह़क़ से तंग आ कर एक दिन आप को अपने दरबार में बुलाया और ह़स्बे ज़ैल मुकालमा ब सूरते मुनाज़रा शुरूअ़ कर दिया।

(تفسیر صاوی، ج۱، ص۲۱۹، ۲۲۰، پ۳، البقرۃ: ۲۵۸)

नमरूद :- ऐ इब्राहीम ! बताओ तुम्हारा रब कौन है जिस की इ़बादत की तुम लोगों को दा'वत दे रहे हो ?

ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام **:-** ऐ नमरूद ! मेरा रब वोही है जो लोगों को जिलाता और मारता है।

नमरूद :- येह तो मैं भी कर सकता हूं चुनान्चे, उस वक़्त उस ने दो क़ैदियों को जेल ख़ाने से दरबार में बुलवाया एक को मौत की सज़ा हो

चुकी थी और दूसरा रिहा हो चुका था। नमरूद ने फांसी पाने वाले को तो छोड़ दिया और बे क़ुसूर को फांसी दे दी और बोला कि देख लो कि जो मुर्दा था मैं ने उस को जिला दिया और जो ज़िन्दा था मैं ने उस को मुर्दा कर दिया।

हज़रते इब्राहीम عَلَیْہِ السَّلَام ने समझ लिया कि नमरूद बिल्कुल ही अहमक़ और निहायत ही घामड़ आदमी है जो "जिलाने और मारने" का येह मत़लब समझ बैठा, इस लिये आप ने उस के सामने एक दूसरी बहुत ही वाज़ेह़ और रोशन दलील पेश फ़रमाई चुनान्चे, आप ने इरशाद फ़रमाया :

हज़रते इब्राहीम عَلَیْہِ السَّلَام :– ऐ नमरूद ! मेरा रब वोही है जो सूरज को मशरिक़ से निकालता है अगर तू ख़ुदा है तो एक दिन सूरज को मग़रिब से निकाल दे।

हज़रते इब्राहीम عَلَیْہِ السَّلَام की येह दलील सुन कर नमरूद मबहूत व हैरान रह गया और कुछ भी न बोल सका। इस त़रह़ येह मुनाज़रा ख़त्म हो गया और हज़रते इब्राहीम عَلَیْہِ السَّلَام इस मुनाज़रे में फ़त्ह़े मन्द हो कर दरबार से बाहर तशरीफ़ लाए और तौह़ीदे इलाही का वा'ज़ अ़लल ए'लान फ़रमाना शुरूअ़ कर दिया। क़ुरआने मजीद ने इस मुनाज़रे की रूदाद इन लफ़्ज़ों में बयान फ़रमाई कि

اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِیْ حَآجَّ اِبْرٰهٖمَ فِیْ رَبِّهٖۤ اَنْ اٰتٰىهُ اللّٰهُ الْمُلْكَ ۘ اِذْ قَالَ اِبْرٰهٖمُ رَبِّیَ الَّذِیْ یُحْیٖ وَ یُمِیْتُ ۙ قَالَ اَنَا اُحْیٖ وَ اُمِیْتُ ؕ قَالَ اِبْرٰهٖمُ فَاِنَّ اللّٰهَ یَاْتِیْ بِالشَّمْسِ مِنَ الْمَشْرِقِ فَاْتِ بِهَا مِنَ الْمَغْرِبِ فَبُهِتَ الَّذِیْ كَفَرَ ؕ وَ اللّٰهُ لَا یَهْدِی الْقَوْمَ الظّٰلِمِیْنَ ۚ﴿۲۵۸﴾ (پ۳، البقرۃ:۲۵۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :– ऐ मह़बूब ! क्या तुम ने न देखा था उसे जो इब्राहीम से झगड़ा उस के रब के बारे में उस पर कि **अल्लाह** ने उसे बादशाही दी जब कि इब्राहीम ने कहा कि मेरा रब वोह है कि जिलाता और मारता है बोला मैं जिलाता और मारता हूं इब्राहीम ने फ़रमाया तो **अल्लाह** सूरज को लाता है पूरब (मशरिक़) से तू उस को पश्चिम (मग़रिब) से ले आ तो होश उड़ गए काफ़िर के और **अल्लाह** राह नहीं दिखाता ज़ालिमों को।

दर्से हिदायत :- इस वाक़िए से चन्द अस्बाक़ की रोशनी मिलती है कि

﴾1﴿ हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام ख़ुदा तआ़ला की तौह़ीद के ए'लान पर पहाड़ की त़रह़ क़ाइम रहे न नमरूद की बेशुमार फ़ौजों से ख़ाइफ़ हुवे, न उस के ज़ुल्मो जब्र से मरऊ़ब हुवे बल्कि जब उस ज़ालिम ने आप को आग के शो'लों में डलवा दिया उस वक़्त भी आप के पाए अ़ज़्मो इस्तिक़लाल में बाल बराबर लग़्ज़िश नहीं हुई और आप बराबर ना'रए तौह़ीद बुलन्द करते रहे फिर उस बे रह़्म ने आप पर दाना पानी बन्द कर दिया। इस पर भी आप के अ़ज़्म व इस्तिक़ामत में ज़र्रा बराबर फ़र्क़ नहीं आया। फिर उस ने आप को मुनाज़रे का चेलेन्ज दिया और दरबारे शाही में त़लब किया ताकि शाही रो'ब व दाब दिखा कर आप عَلَيْهِ السَّلَام को मरऊ़ब कर दे लेकिन आप ने बिल्कुल बे ख़ौफ़ हो कर मुनाज़रे का चेलेन्ज क़बूल फ़रमा लिया और दरबारे शाही में पहुंच कर ऐसी मज़बूत़ और दन्दान शिकन दलील पेश फ़रमाई कि नमरूद के होश उड़ गए और वोह हक्का बक्का हो कर ला जवाब और ख़ामोश हो गया और भरे दरबार में इस कलिमए ह़क़ की तजल्ली हो गई कि

جَآءَ الْحَقُّ وَزَهَقَ الْبَاطِلُ ؕ اِنَّ الْبَاطِلَ كَانَ زَهُوْقًا ﴿۸۱﴾ (پ۱۵، بنی اسرائیل:۸۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- ह़क़ आया और बात़िल मिट गया बेशक बात़िल को मिटना ही था।

बिल आख़िर ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام की सदाक़त व ह़क़्क़ानिय्यत का परचम सर बुलन्द हो गया और नमरूद एक मच्छर जैसी ह़क़ीर मख़्लूक़ से हलाक कर दिया गया। ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام के उस्वए ह़सना से उ़-लमाए ह़क़ को सबक़ लेना चाहिये कि बात़िल परस्तों के मुक़ाबले में हर क़िस्म के ख़ौफ़ व हरास और तकालीफ़ से बे नियाज़ हो कर आख़िरी दम तक डटे रहना चाहिये और येह ईमान व यक़ीन रखना चाहिये कि ज़रूर ज़रूर नुस्रते ख़ुदावन्दी हमारी इम्दाद व दस्तगीरी फ़रमाएगी और बिल आख़िर बात़िल परस्तों के मुक़ाबले में हम ही फ़त्ह़मन्द होंगे और बात़िल परस्त यक़ीनन ख़ाइब व ख़ासिर हो कर हलाक व बरबाद हो जाएंगे।

﴾2﴿ येह ईमान व अ़क़ीदा मज़बूत़ी के साथ रखना चाहिये कि अल्लाह तआ़ला हम ह़क़ परस्तों को ग़ैब से रोज़ी का सामान देगा क्यूंकि ज़ालिम

नमरूद ने जब ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام को ग़ल्ला देना बन्द कर दिया और मुल्क भर में इन को कहीं एक दाना भी नहीं मिला तो अल्लाह तआ़ला ने रैत और मिट्टी को इन के लिये आटा बना दिया और इस्लाम के इस अ़क़ीदे की ह़क़्क़ानिय्यत का सूरज चमक उठा कि

إِنَّ اللَّهَ هُوَ الرَّزَّاقُ ذُو الْقُوَّةِ الْمَتِينُ ﴿٥٨﴾ (پ ٢٧، الذاريات:٥٨)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- बेशक अल्लाह ही बड़ा रिज़्क़ देने वाला कुव्वत वाला कुदरत वाला है।

बहर हाल ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام का येह तर्ज़े फ़िक्र व अ़मल और आप का येह उस्वा तमाम ह़क़ परस्त आ़लिमों के लिये चराग़े राह है और ह़क़ीक़त येह है कि आप के उस्वए ह़सना पर अ़मल करने वाले ज़रूर ज़रूर कामयाबी से हम किनार होंगे येह वोह ताबन्दा ह़क़ीक़त है जो आफ़्ताबे आ़लम ताब से भी ज़ियादा ताबनाक और रोशन है। سُبْحٰنَ اللّٰه किस क़दर ह़क़ीक़त अफ़्रोज़ है येह शे'र कि

आज भी हो जो इब्राहीम सा ईमां पैदा
आग कर सकती है अन्दाज़े गुलिस्तां पैदा

﴾9﴿ इन्सानों में हमेशा दुश्मनी रहेगी

ह़ज़रते आदम और ह़ज़रते ह़व्वा عليهما السلام निहायत ही आराम और चैन के साथ जन्नत में रहते थे। अल्लाह तआ़ला ने फ़रमा दिया था कि जन्नत का जो फल भी चाहो बे रोक टोक सैर हो कर तुम दोनों खा सकते हो। मगर सिर्फ़ एक दरख़्त का फल खाने की मुमानअ़त थी कि इस के क़रीब मत जाना। वोह दरख़्त गेहूं था या अंगूर वग़ैरा था। चुनान्चे, दोनों उस दरख़्त से मुद्दते दराज़ तक बचते रहे। लेकिन इन दोनों का दुश्मन इब्लीस बराबर ताक में लगा रहा। आख़िर उस ने एक दिन अपना वस्वसा डाल ही दिया और क़सम खा कर कहने लगा कि मैं तुम दोनों का ख़ैर ख़्वाह हूं और अल्लाह तआ़ला ने जिस दरख़्त से तुम दोनों को मन्अ़ कर दिया है वोह "शजरतुल ख़ुल्द" है या'नी जो उस दरख़्त का फल खाएगा, वोह कभी जन्नत से नहीं निकाला जाएगा। पहले ह़ज़रते

हव्वा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا इस शैतानी वस्वसे का शिकार हो गईं और उन्हों ने हज़रते आदम عَلَیْہِ السَّلَام को भी इस पर राज़ी कर लिया और वोह नागहां गै़र इरादी तौ़र पर उस दरख़्त का फल खा बैठे।

आप ने अपने इजतिहाद से येह समझ लिया कि لَا تَقۡرَبَا هٰذِهِ الشَّجَرَةَ (پ۱، البقرۃ:۳۵) की नह्य तन्ज़ीही है और वाक़ेई हरगिज़ हरगिज़ नह्य तह़रीमी नहीं थी। वरना ह़ज़रते आदम عَلَیْہِ السَّلَام नबी होते हुवे हरगिज़ हरगिज़ उस दरख़्त का फल न खाते क्यूंकि नबी तो हर गुनाह से मा'सूम होता है बहर ह़ाल ह़ज़रते आदम عَلَیْہِ السَّلَام से इस सिलसिले में इजतिहादी ख़त़ा सरज़द हो गई और इजतिहादी ख़त़ा मा'सिय्यत नहीं होती।

(تفسیر خزائن العرفان، ص ۱۰۹۴، پ ۱، البقرۃ:۳۶)

लेकिन ह़ज़रते आदम عَلَیْہِ السَّلَام चूंकि दरबारे इलाही में बहुत मुक़र्रब और बड़े बड़े दरजात पर फ़ाइज़ थे इस लिये इस इजतिहादी ख़त़ा पर भी मौरिदे इ़ताब हो गए। फ़ौरन ही बिहिश्ती लिबास दोनों के बदन से गिर पड़े और येह दोनों जन्नत के पत्तों से अपना सित्र छुपाने लगे, और ख़ुदावन्दे क़ुद्दूस का हुक्म हो गया कि तुम दोनों जन्नत से ज़मीन पर उतर पड़ो। उस वक़्त **अल्लाह** तआ़ला ने ह़ज़रते आदम عَلَیْہِ السَّلَام से दो ख़ास बातें इरशाद फ़रमाईं। एक तो येह कि तुम्हारी अवलाद में बा'ज़ बा'ज़ का दुश्मन होगा कि हमेशा आपस में इन्सानों की दुश्मनी चलती रहेगी। दूसरी येह कि उ़म्र भर तुम दोनों को ज़मीन में ठहरना है फिर इस के बा'द हमारी ही त़रफ़ लौट कर आना है। चुनान्चे, क़ुरआने मजीद में इस वाक़िए़ को बयान फ़रमाते हुवे **अल्लाह** तआ़ला ने बयान फ़रमाया कि

فَاَزَلَّهُمَا الشَّيۡطٰنُ عَنۡهَا فَاَخۡرَجَهُمَا مِمَّا كَانَا فِيۡهِ ۖ وَقُلۡنَا اهۡبِطُوۡا بَعۡضُكُمۡ لِبَعۡضٍ عَدُوٌّ ۚ وَلَكُمۡ فِى الۡاَرۡضِ مُسۡتَقَرٌّ وَّمَتَاعٌ اِلٰى حِيۡنٍ ﴿۳۶﴾ (پ۱، البقرۃ:۳۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- तो शैत़ान ने जन्नत से उन्हें लग़्ज़िश दी और जहां रहते थे वहां से उन्हें अलग कर दिया और हम ने फ़रमाया नीचे उतरो आपस में एक तुम्हारा दूसरे का दुश्मन और तुम्हें एक वक़्त तक ज़मीन में ठहरना और बरतना है।

इस इरशादे रब्बानी से येह सबक़ मिलता है कि येह जो इन्सानों में मुख़्तलिफ़ वुजूहात की बिना पर अ़दावतें और दुश्मनियां चल रही हैं येह कभी ख़त्म होने वाली नहीं। लाख कोशिश करो कि दुन्या में लोगों के दरमियान अ़दावत और दुश्मनी का ख़ातिमा हो जाए मगर चूंकि येह हुक्मे ख़ुदावन्दी के बाइ़ष है इस लिये येह अ़दावतें कभी हरगिज़ ख़त्म न होंगी। कभी एक मुल्क दूसरे मुल्क का दुश्मन होगा, कभी मज़दूर और सरमायादार में दुश्मनी रहेगी, कभी अमीर व ग़रीब की अ़दावत ज़ोर पकड़ेगी, कभी मज़हबी व लिसानी दुश्मनी रंग लाएगी, कभी तहज़ीब व तमद्दुन के बाहमी टकराव की दुश्मनी उभरेगी, कभी ईमानदारों और बे ईमानों की अ़दावत रंग दिखाएगी।

अल ग़रज़ दुन्या में इन्सानों की आपस में अ़दावत व दुश्मनी का बाज़ार हमेशा गर्म ही रहेगा इस लिये लोगों को इस से रन्जीदा और कबीदा ख़ातिर होने की कोई ज़रूरत ही नहीं है और न इस अ़दावत और दुश्मनी को ख़त्म करने की तदबीरों पर ग़ौरो ख़ौज़ कर के परेशान होने से कोई फ़ाइदा है।

क्यूंकि जिस त़रह़ अन्धेरे और उजाले की दुश्मनी, आग और पानी की दुश्मनी, गर्मी और सर्दी की दुश्मनी कभी ख़त्म नहीं हो सकती, ठीक इसी त़रह़ इन्सानों में आपस की दुश्मनी कभी ख़त्म नहीं हो सकती। क्यूंकि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ह़ज़रते आदम व ह़व्वा علیهما السلام के ज़मीन पर आने से पहले ही येह फ़रमा दिया कि بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ या'नी एक इन्सान दूसरे इन्सान का दुश्मन होगा तो येह अ़दावत व दुश्मनी ख़ल्क़ी और फ़ित़्री है जो हुक्मे इलाही और उस की मशिय्यत से है तो फिर भला कौन है जो इस अ़दावत का दुन्या से ख़ातिमा करा सकता है। (واللہ تعالٰی اعلم)

﴾10﴿ आदम عَلَيْهِ السَّلَام की तौबा कैसे क़बूल हुई ?

ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام ने जन्नत से ज़मीन पर आने के बा'द तीन सो बरस तक नदामत की वजह से सर उठा कर आस्मान की त़रफ़ नहीं देखा और रोते ही रहे रिवायत है कि अगर तमाम इन्सानों के आंसू

जम्अ़ किये जाएं तो इतने नहीं होंगे जितने आंसू ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام के ख़ौफ़े इलाही से ज़मीन पर गिरे और अगर तमाम इन्सानों और ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام के आंसूओं को जम्अ़ किया जाए तो ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام के आंसू इन सब लोगों से ज़ियादा होंगे। (تفسیر صاوی، ج۱، ص۵۵، پ۱، البقرۃ:۳۷)

बा'ज़ रिवायात में है कि आप ने येह पढ़ कर दुआ़ मांगी कि

سُبْحَانَکَ اللّٰھُمَّ وَبِحَمْدِکَ وَتَبَارَکَ اسْمُکَ وَتَعَالٰی جَدُّکَ

وَ لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ ظَلَمْتُ نَفْسِیْ فَاغْفِرْلِیْ اِنَّهٗ لَایَغْفِرُ الذُّنُوْبَ اِلَّآ اَنْتَ۔

या'नी ऐ अल्लाह ! मैं तेरी ह़म्द के साथ तेरी पाकी बयान करता हूं। तेरा नाम बरकत वाला है और तेरी बुज़ुर्गी बहुत ही बुलन्द मर्तबा है और तेरे सिवा कोई मा'बूद नहीं है। मैं ने अपनी जान पर ज़ुल्म किया है तू मुझे बख़्श दे क्यूंकि तेरे सिवा कोई नहीं जो गुनाहों को बख़्श दे।

(تفسیر جمل علی الجلالین، ج۱، ص۶۳، پ۱، البقرۃ:۳۷)

और एक रिवायत में है कि आप ने पढ़ा

رَبَّنَا ظَلَمْنَآ اَنْفُسَنَا ٚ وَاِنْ لَّمْ تَغْفِرْ لَنَا وَتَرْحَمْنَا لَنَكُوْنَنَّ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿۲۳﴾

या'नी ऐ हमारे परवर दगार ! हम ने अपनी जानों पर ज़ुल्म कर लिया और अगर तू हमें रह़्म फ़रमा कर न बख़्शेगा तो हम घाटा उठाने वालों में से हो जाएंगे। (تفسیر جلالین، ص۱۳۱، پ۸، الاعراف:۲۳)

लेकिन ह़ाकिम व त़बरानी व अबू नुऐ़म व बैहक़ी ने ह़ज़रते अ़ली मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरफ़ूअ़न रिवायत की है कि जब ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام पर इ़ताबे इलाही हुवा तो आप तौबा की फ़िक्र में ह़ैरान थे। नागहां इस परेशानी के आ़लम में याद आया कि वक़्ते पैदाइश मैं ने सर उठा कर देखा था कि अ़र्श पर लिखा हुवा है لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ उसी वक़्त मैं ने समझ लिया था कि बारगाहे इलाही में वोह मर्तबा किसी को मुयस्सर नहीं जो मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को ह़ासिल है कि अल्लाह तआ़ला ने इन का नाम अपने नामे अक़्दस के साथ मिला कर अ़र्श पर तह़रीर

फ़रमाया है। लिहाज़ा आप ने अपनी दुआ में رَبَّنَا ظَلَمْنَا اَنْفُسَنَا के साथ येह अ़र्ज़ किया कि اسئلک بحق محمد ان تغفرلی और इब्ने मुन्ज़िर की रिवायत में येह कलिमात भी हैं कि

اَللّٰھُمَّ اِنِّی اَسْئَلُکَ بِجَاہِ مُحَمَّدٍ عَبْدِکَ وَکَرَامَتِہٖ عَلَیْکَ اَنْ تَغْفِرَلِیْ خَطِیْئَتِی

या'नी ऐ **अल्लाह** ! तेरे बन्दए ख़ास मुह़म्मद صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के जाह व मर्तबे के तुफ़ैल में और इन की बुज़ुर्गी के सदक़े में जो इन्हें तेरे दरबार में ह़ासिल है मैं तुझ से दुआ़ करता हूं कि तू मेरे गुनाह को बख़्श दे। येह दुआ़ करते ही ह़क़ तआ़ला ने इन की मग़फ़िरत फ़रमा दी और तौबा मक़्बूल हुई। (تفسیر خزائن العرفان، ص۱۰۹۴،۱۰۹۵، پ۱، البقرۃ۳۷)

क़ुरआने मजीद में **अल्लाह** तआ़ला ने इरशाद फ़रमाया कि

فَتَلَقّٰۤى اٰدَمُ مِنْ رَّبِّهٖ كَلِمٰتٍ فَتَابَ عَلَیْهِ ؕ اِنَّهٗ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِیْمُ ۝۳۷ (پ۱،البقرۃ۳۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- फिर सीख लिये आदम ने अपने रब से कुछ कलिमे तो **अल्लाह** ने उस की तौबा क़बूल की बेशक वोही है बहुत तौबा क़बूल करने वाला मेहरबान।

दर्से हिदायत :- इस वाक़िए़ से चन्द अस्बाक़ पर रोशनी पड़ती है जो येह हैं :

﴾1﴿ इस से मा'लूम हुवा कि मक़्बूलाने बारगाहे इलाही के वसीले से बह़क़्क़े फ़ुलां व बजाहे फ़ुलां कह कर दुआ़ मांगनी जाइज़ और ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام की सुन्नत है।

﴾2﴿ ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام की तौबा दसवीं मुह़र्रम को क़बूल हुई जन्नत से निकलते वक़्त दूसरी ने'मतों के साथ अ़रबी ज़बान भी आप से भुला दी गई थी और बजाए इस के सुरयानी ज़बान आप की ज़बान पर जारी कर दी गई थी। मगर तौबा क़बूल होने के बा'द फिर अ़रबी ज़बान भी आप को अ़ता कर दी गई। (تفسیر خزائن العرفان، ص۱۰۹۵، پ۱، البقرۃ:۳۷)

﴿3﴾ चूंकि ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام की ख़त़ा इजतिहादी थी और इजतिहादी ख़त़ा मा'सिय्यत नहीं है इस लिये जो शख़्स ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام को आ़सी या ज़ालिम कहेगा वोह नबी की तौहीन के सबब से काफ़िर हो जाएगा। **अल्लाह** तआ़ला मालिको मौला है वोह अपने बन्दए ख़ास ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام को जो चाहे फ़रमाए उस में उन की इ़ज़्ज़त है दूसरे की क्या मजाल कि ख़िलाफ़े अदब कोई लफ़्ज़ ज़बान पर लाए और क़ुरआने मजीद में **अल्लाह** तआ़ला के फ़रमाए हुवे कलिमात को दलील बनाए। **अल्लाह** तआ़ला ने हमें अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام की ता'ज़ीम व तौक़ीर और उन के अदब व इत़ाअ़त का हुक्म फ़रमाया है लिहाज़ा हम पर येही लाज़िम है कि हम ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام और दूसरे तमाम अम्बियाए किराम का अदब व एह़तिराम लाज़िम जानें और हरगिज़ हरगिज़ इन ह़ज़रात की शान में कोई ऐसा लफ़्ज़ न बोलें जिस में अदब की कमी का कोई शाइबा भी हो। (واللہ تعالٰی اعلم)

﴿11﴾ ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام के ह़वारी

ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام के बारह "ह़वारी" जो आप पर ईमान ला कर और अपने अपने इस्लाम का ए'लान कर के अपने तन मन धन से ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام की नुस्रत व ह़िमायत के लिये हर वक़्त और हर दम कमरबस्ता रहे, येह कौन लोग थे ? और इन लोगों को "ह़वारी" का लक़ब क्यूं और किस मा'ना के लिह़ाज़ से दिया गया ?

तो इस बारे में साह़िबे तफ़्सीरे जमल ने फ़रमाया कि "ह़वारी" का लफ़्ज़ "ह़ूर" से मुश्तक़ है जिस के मा'ना सफ़ेदी के हैं चूंकि इन लोगों के कपड़े निहायत सफ़ेद और साफ़ थे और इन के क़ुलूब और निय्यतें भी सफ़ाई सुथराई में बहुत बुलन्द मक़ाम रखती थीं इस बिना पर इन लोगों को "ह़वारी" कहने लगे और बा'ज़ मुफ़स्सिरीन का क़ौल है कि चूंकि येह लोग रिज़्क़े ह़लाल त़लब करने के लिये धोबी का पेशा इख़्तियार कर के कपड़ों की धुलाई करते थे इस लिये येह लोग "ह़वारी" कहलाए और एक क़ौल येह भी है कि येह सब लोग शाही ख़ानदान से थे और बहुत ही

साफ़ और सफ़ेद कपड़े पहनते थे इस लिये लोग इन को ह़वारी कहने लगे। ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام के पास एक पियाला था जिस में आप खाना खाया करते थे और वोह पियाला कभी खाने से ख़ाली नहीं होता था। किसी ने बादशाह को इस की इत्तिलाअ़ दे दी तो उस ने आप को दरबार में त़लब कर के पूछा कि आप कौन हैं ? तो आप ने फ़रमाया कि मैं ईसा बिन मरयम ख़ुदा का बन्दा और उस का रसूल हूं। वोह बादशाह आप की ज़ात और आप के मो'जिज़ात से मुतअष्षिर हो कर आप पर ईमान लाया और सल्त़नत का तख़्तो ताज छोड़ कर अपने तमाम अक़ारिब के साथ आप की ख़िदमत में रहने लगा। चूंकि शाही ख़ानदान बहुत ही सफ़ेद पोश था। इस लिये येह सब "ह़वारी" के लक़ब से मश्हूर हो गए और एक क़ौल येह भी है कि येह सफ़ेद पोश मछेरों की एक जमाअ़त थी जो मछलियों का शिकार किया करते थे, ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام इन लोगों के पास तशरीफ़ ले गए और फ़रमाया कि तुम लोग मछलियों का शिकार करते हो अगर तुम लोग मेरी पैरवी करने पर कमरबस्ता हो जाओ तो तुम लोग आदमियों का शिकार कर के उन को ह़याते जावेदानी से सरफ़राज़ करने लगोगे। उन लोगों ने आप से मो'जिज़ा त़लब किया तो उस वक़्त "शमऊ़न" नामी मछली के शिकारी ने दरिया में जाल डाल रखा था मगर सारी रात गुज़र जाने के बा वुजूद एक मछली भी जाल में नहीं आई तो आप ने फ़रमाया कि अब तुम जाल दरिया में डालो। चुनान्चे, जैसे ही उस ने जाल को दरिया में डाला लम्ह़ा भर में इतनी मछलियां जाल में फंस गईं कि जाल को कश्ती वाले नहीं उठा सके। चुनान्चे, दो कश्तियों की मदद से जाल उठाया गया और दोनों कश्तियां मछलियों से भर गईं। येह मो'जिज़ा देख कर दोनों कश्ती वाले जिन की ता'दाद बारह थी सब कलिमा पढ़ कर मुसलमान हो गए। इन ही लोगों का लक़ब "ह़वारी" है।

और बा'ज़ उ़-लमा का क़ौल है कि बारह आदमी ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام पर ईमान लाए और इन लोगों के ईमाने कामिल और हुस्ने निय्यत की बिना पर इन लोगों को येह करामत मिल गई कि जब भी इन लोगों को

भूक लगती तो येह लोग कहते कि या रूहल्लाह ! हम को भूक लगी है, तो हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام ज़मीन पर हाथ मार देते तो ज़मीन से दो रोटियां निकल कर इन लोगों के हाथों में पहुंच जाया करती थीं और जब येह लोग प्यास से फ़रियाद किया करते थे तो हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام ज़मीन पर हाथ मार दिया करते और निहायत शीरीं और ठन्डा पानी इन लोगों को मिल जाया करता था इसी त़रह़ येह लोग खाते पीते थे। एक दिन इन लोगों ने हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام से पूछा कि ऐ रूहल्लाह ! हम मोमिनों में सब से अफ़्ज़ल कौन है ? तो आप ने फ़रमाया कि जो अपने हाथ की कमाई से रोज़ी ह़ासिल कर के दिखाए। येह सुन कर इन बारह ह़ज़रात ने रिज़्क़े ह़लाल के लिये धोबी का पेशा इख़्तियार कर लिया चूंकि येह लोग कपड़ों को धो कर सफ़ेद करते थे इस लिये "ह़वारी" के लक़ब से पुकारे जाने लगे।

और एक क़ौल येह भी है कि ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام को इन की वालिदा ने एक रंगरेज़ के हां मुलाज़िम रखवा दिया था। एक दिन रंगरेज़ मुख़्तलिफ़ कपड़ों को निशान लगा कर चन्द रंगों को रंगने के लिये आप के सिपुर्द कर के कहीं बाहर चला गया। आप ने इन सब कपड़ों को एक ही रंग के बरतन में डाल दिया। रंगरेज़ ने घबरा कर कहा कि आप ने सब कपड़ों को एक ही रंग का कर दिया। ह़ालांकि मैं ने निशान लगा कर मुख़्तलिफ़ रंगों का रंगने के लिये कह दिया था। आप ने फ़रमाया कि ऐ कपड़ो ! तुम **अल्लाह** तआ़ला के हुक्म से उन्ही रंगों के हो जाओ, जिन रंगों का येह चाहता था। चुनान्चे, एक ही बरतन में से लाल, सब्ज़, पीला, जिन जिन कपड़ों को रंगरेज़ जिस जिस रंग का चाहता था वोह कपड़ा उसी रंग का हो कर निकलने लगा। आप का येह मो'जिज़ा देख कर तमाम ह़ाज़िरीन जो सफ़ेद पोश थे और जिन की ता'दाद बारह थी, सब ईमान लाए येही लोग "ह़वारी" कहलाने लगे।

ह़ज़रते इमाम क़फ़्फ़ाल عَلَيْهِ الرَّحْمَة ने फ़रमाया कि मुमकिन है कि इन बारह ह़वारियों में कुछ लोग बादशाह हों और कुछ मछेरे हों और कुछ धोबी हों और कुछ रंगरेज़ हों। चूंकि येह ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام के

मुख़्लिस जां निषार थे और इन लोगों के कुलूब और निय्यतें साफ़ थीं इस बिना पर इन बारह पाक बाज़ों और नेक नफ़्सों को "ह़वारी" का लक़बे मुअ़ज़्ज़ज़ अ़ता किया गया। क्यूंकि "ह़वारी" मा'ना मुख़्लिस दोस्त के हैं।

(تفسیر جمل علی الجلالین، ج ۱، ص ۴۲۴۔۴۲۳، پ۳، آل عمران:۵۲)

बहर ह़ाल कुरआने मजीद में ह़वारियों का ज़िक्र फ़रमाते हुवे अल्लाह तआ़ला ने इरशाद फ़रमाया कि

فَلَمَّاۤ اَحَسَّ عِیْسٰى مِنْهُمُ الْكُفْرَ قَالَ مَنْ اَنْصَارِیْۤ اِلَى اللّٰهِ ؕ قَالَ الْحَوَارِیُّوْنَ نَحْنُ اَنْصَارُ اللّٰهِ ۚ اٰمَنَّا بِاللّٰهِ ۚ وَ اشْهَدْ بِاَنَّا مُسْلِمُوْنَ ﴿۵۲﴾

(پ۳، آل عمران:۵۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- फिर जब ईसा ने उन से कुफ़्र पाया बोला कौन मेरे मददगार होते हैं अल्लाह की त़रफ़। ह़वारियों ने कहा हम दीने ख़ुदा के मददगार हैं हम अल्लाह पर ईमान लाए और आप गवाह हो जाएं कि हम मुसलमान हैं।

दूसरी जगह कुरआने मजीद में इरशाद फ़रमाया कि

وَ اِذْ اَوْحَیْتُ اِلَى الْحَوَارِیّٖنَ اَنْ اٰمِنُوْا بِیْ وَ بِرَسُوْلِیْ ۚ قَالُوْۤا اٰمَنَّا وَ اشْهَدْ بِاَنَّنَا مُسْلِمُوْنَ ﴿۱۱۱﴾ (پ۷، المائدۃ:۱۱۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- और जब मैं ने ह़वारियों के दिल में डाला कि मुझ पर और मेरे रसूल पर ईमान लाओ, बोले हम ईमान लाए और गवाह रह कि हम मुसलमान हैं।

दर्से हिदायत :- ह़ज़रते ईसा عَلَیْهِ السَّلَام के ह़वारी अगर्चे ता'दाद में सिर्फ़ बारह थे मगर यहूदियों के मुक़ाबले में आप की नुस्रत व ह़िमायत में जिस पा मर्दी और अ़ज़्म व इस्तिक़लाल के साथ डटे रहे उस से हर मुसलमान को दीन के मुआ़मले में षाबित क़दमी का सबक़ मिलता है।

इस क़िस्म के मुख़्लिस अह़बाब और मख़्सूस जां निषार अस्ह़ाब अल्लाह तआ़ला हर नबी को अ़ता फ़रमाता है। चुनान्चे, जंगे ख़न्दक़

के दिन हुज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने फ़रमाया कि हर नबी के ''हवारी'' हुवे हैं और मेरे हवारी ''ज़ुबैर'' हैं।

(مشکوٰۃالمصابیح، کتاب الفتن،باب مناقب العشرۃرضی اللہ عنھم،الفصل الاول،ص۵۶۵)

और हज़रते क़तादा का बयान है कि कु़रैश में बारह सहाबए किराम हुज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के ''हवारी'' हैं जिन के नामे नामी येह हैं। (1) हज़रते अबू बक्र (2) हज़रते उ़मर (3) हज़रते उ़षमान (4) हज़रते अ़ली (5) हज़रते हम्ज़ा (6) हज़रते जा'फ़र (7) हज़रते अबू उ़बैदा बिन अल जर्राह़ (8) हज़रते उ़षमान बिन मज़ऊ़न (9) हज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ (10) हज़रते सा'द बिन अबी वक़्क़ास (11) हज़रते त़ल्ह़ा बिन उ़बैदुल्लाह (12) हज़रते ज़ुबैर बिन अल अ़व्वाम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھُمْ। कि इन मुख़्लिस जां निषारों ने हर मौक़अ़ पर हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की नुस्रत व हि़मायत का बे मिषाल रेकॉर्ड क़ाइम कर दिया।

(تفسیر معالم التنزیل للبغوی،ج ۱، ص ۲۳۶،پ۳، آل عمران:۵۲)

जहन्नम के दरवाजे़ पर नाम

हज़रते सय्यिदुना अबू सई़द رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए गुयूब मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है :

مَنْ تَرَکَ صَلَاۃً مُتَعَمِّدًا کُتِبَ اسْمُہٗ عَلٰی بَابِ النَّارِ فِیْمَنْ یَدْخُلُھَا

या'नी ''जो कोई जान बूझ कर एक नमाज़ भी क़ज़ा कर देता है, उस का नाम जहन्नम के उस दरवाज़े पर लिख दिया जाता है जिस से वोह जहन्नम में दाख़िल होगा।''

(حلیۃ الاولیاء، ج۷، ص۲۹۹، حدیث۱۰۵۹۰) (फ़ैज़ाने सुन्नत, जि. 1 स. 1282)

﴾12﴿ मुर्तदीन से जिहाद करने वाले

हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ह़याते मुबारका में चन्द आदमी और वफ़ाते अक़्दस के बा'द बहुत लोग मुर्तद होने वाले थे जिन से इस्लाम की बक़ा को शदीद ख़त़रा लाह़िक़ होने वाला था। लेकिन क़ुरआने मजीद ने बरसों पहले येह ग़ैब की ख़बर दी और येह पेश गोई फ़रमा दी कि इस भयानक और ख़त़रनाक वक़्त पर **अल्लाह** तआ़ला एक ऐसी क़ौम को पैदा फ़रमाएगा जो इस्लाम की मुह़ाफ़ज़त करेगी और वोह ऐसी छे सिफ़तों की जामेअ़ होगी जो तमाम दुन्यवी व उख़रवी फ़ज़ाइल व कमालात का सर चश्मा हैं और येही छे सिफ़ात इन मुह़ाफ़िज़ीने इस्लाम की अ़लामात और इन की पहचान का निशान होंगी और वोह छे सिफ़ात येह हैं :

﴾1﴿ वोह **अल्लाह** तआ़ला के मह़बूब होंगे ﴾2﴿ वोह **अल्लाह** तआ़ला से मह़ब्बत करेंगे ﴾3﴿ वोह मोअमिनीन पर बहुत मेहरबान होंगे ﴾4﴿ वोह काफ़िरों के लिये बहुत सख़्त होंगे ﴾5﴿ वोह ख़ुदा की राह में जिहाद करेंगे ﴾6﴿ वोह किसी मलामत करने वाले की मलामत से ख़ाइफ़ नहीं होंगे।

साह़िबे तफ़्सीरे जमल ने कशाफ़ के ह़वाले से तह़रीर फ़रमाया है कि अ़रब के ग्यारह क़बीले इस्लाम क़बूल कर लेने के बा'द आगे पीछे इस्लाम से मुन्ह़रिफ़ हो कर मुर्तद हो गए। तीन क़बाइल तो हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की मौजूदगी में और सात क़बीले ह़ज़रते अमीरुल मोअमिनीन अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه के दौरे ख़िलाफ़त में और एक क़बीला ह़ज़रते अमीरुल मोअमिनीन उ़मर फ़ारूक़ رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه के ख़लीफ़ा होने के बा'द। मगर येह ग्यारह क़बाइल अपनी इन्तिहाई कोशिशों के बा वुजूद इस्लाम का कुछ भी न बिगाड़ सके। बल्कि मुजाहिदीने इस्लाम के सरफ़रोशाना जिहादों की बदौलत येह सब मुर्तदीन तहस नहस हो कर फ़ना के घाट उतर गए और परचमे इस्लाम बराबर बुलन्द से बुलन्द तर होता ही चला गया। और क़ुरआने मजीद का वा'दा और ग़ैब की ख़बर बिल्कुल सच और सह़ीह़ षाबित हो कर रही।

ज़मानए रिसालत के तीन मुर्तदीन :- ﴾1﴿ क़बीलए बनी मुदलिज जिस का रईस "अस्वद अ़न्सी" था जो "ज़ुल ह़िमार" के लक़ब से मश्हूर था।

हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हज़रते मुआज़ बिन जबल और यमन के सरदारों को फ़रमान भेजा कि मुर्तदीन से जिहाद करें। चुनान्चे, फ़ीरोज़ दैलमी के हाथ से अस्वद अ़न्सी क़त्ल हुवा और उस की जमाअ़त बिखर गई और हुज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को बिस्तरे अ़लालत पर येह ख़ुश ख़बरी सुनाई गई कि अस्वद अ़न्सी क़त्ल हो गया है। इस के दूसरे दिन ही हुज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام का विसाल हो गया।

《2》 क़बीलए बनू ह़नीफ़ा जिस का सरदार "मुसैलिमा कज़्ज़ाब" था। जिस से हज़रते अबू बक्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जिहाद फ़रमाया और लड़ाई के बा'द हज़रते वह़शी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के हाथ से मुसैलिमतुल कज़्ज़ाब मक़्तूल हुवा और उस का गुरौह कुछ क़त्ल हो गया और कुछ दोबारा दामने इस्लाम में आ गए।

《3》 क़बीलए बून असद, जिस का अमीर त़ल्ह़ा बिन ख़ुवैलद था। हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस के मुक़ाबले के लिये हज़रते ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को भेजा और जंग के बा'द त़ल्ह़ा बिन ख़ुवैलद शिकस्त खा कर मुल्के शाम भाग गया मगर फिर दोबारा इस्लाम क़बूल कर लिया और आख़िरी दम तक इस्लाम पर षाबित क़दम रहा और उस की फ़ौज कुछ कट गई कुछ ताइब हो कर फिर दोबारा मुसलमान हो गए।

ख़िलाफ़ते सिद्दीक़े अक्बर के सात मुर्तद क़बाइल :-

《1》 क़बीलए फ़ज़ारा जिस का सरदार उ़यैना बिन ह़सन फ़ज़ारी था 《2》 क़बीलए ग़त़फ़ान जिस का सरदार क़ुर्रा बिन सलमा क़ुशैरी था 《3》 क़बीलए बनू सुलैम जिन का सरग़ना फ़जाह बिन यालैल था 《4》 क़बीलए बनी यरबूअ़ जिस का सरबरा मालिक बिन बुरैदा था 《5》 क़बीलए बनू तमीम जिन की अमीर सजाह़ बिन्ते मुन्ज़िर एक औ़रत थी जिस ने मुसैलिमतुल कज़्ज़ाब से शादी कर ली थी 《6》 क़बीलए किन्दा जो अश्अ़ष बिन क़ैस के पैरूकार थे 《7》 क़बीलए बनू बक्र जो ख़त़मी बिन यज़ीद के ताबे'दार थे। अमीरुल मोअमिनीन हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इन मुर्तद होने वाले सातों क़बीलों से महीनों तक बड़ी ख़ूं रैज़ जंग फ़रमाई। चुनान्चे, कुछ इन में से मक़्तूल हो गए और कुछ तौबा कर के फिर दामने इस्लाम में आ गए।

दौरे फ़ारूक़ी का मुर्तद क़बीला :- अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के दौरे ख़िलाफ़त में सिर्फ़ एक ही क़बीला मुर्तद हुवा और येह क़बीलए ग़स्सान था। जिस की सरदारी जबला बिन ऐहम कर रहा था। मगर ह़ज़रते उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के परचम के नीचे सह़ाबए किराम ने जिहाद कर के इस गुरौह का क़त्ल्अ़ क़म्अ़ कर दिया और फिर इस के बा'द कोई क़बीला भी मुर्तद होने के लिये सर नहीं उठा सका।

इस त़रह़ मुर्तद होने वाले इन ग्यारह क़बीलों का सारा फ़ितना व फ़साद मुजाहिदीने इस्लाम के जिहादों की बदौलत हमेशा के लिये ख़त्म हो गया। (تفسیر جمل علی الجلالین،ج۲، ص ۲۳۹،پ۶، المائدۃ:۵۴)

इन मुर्तदीन से लड़ने वाले और इन शरीरों का क़त्ल्अ़ क़म्अ़ करने वाले सह़ाबए किराम थे। जिन के बारे में बरसों पहले कुरआने मजीद ने ग़ैब की ख़बर देते हुवे येह इरशाद फ़रमाया था कि

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَنْ يَّرْتَدَّ مِنْكُمْ عَنْ دِيْنِهٖ فَسَوْفَ يَاْتِي اللّٰهُ بِقَوْمٍ يُّحِبُّهُمْ وَيُحِبُّوْنَهٗۤ ۙ اَذِلَّةٍ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ اَعِزَّةٍ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ۫ يُجَاهِدُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَلَا يَخَافُوْنَ لَوْمَةَ لَآئِمٍ ؕ ذٰلِكَ فَضْلُ اللّٰهِ يُؤْتِيْهِ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ﴿۵۴﴾ (پ۶،المائدہ:۵۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- ऐ ईमान वालो तुम में जो कोई अपने दीन से फिरेगा तो अ़न क़रीब **अल्लाह** ऐसे लोग लाएगा कि वोह **अल्लाह** के प्यारे और **अल्लाह** उन का प्यारा मुसलमानों पर नर्म और काफ़िरों पर सख़्त **अल्लाह** की राह में लड़ेंगे और किसी मलामत करने वाले की मलामत का अन्देशा न करेंगे येह **अल्लाह** का फ़ज़्ल है जिसे चाहे दे और **अल्लाह** वुस्अ़त वाला इ़ल्म वाला है।

दर्से हिदायत :- इन आयात से ह़स्बे ज़ैल अन्वारे हिदायत की तजल्लियां नुमूदार होती हैं।

मुर्तदीन के फ़ितनों और शोरिशों से इस्लाम को कोई नुक़्सान नहीं पहुंच सकता क्यूंकि **अल्लाह** तआ़ला मुर्तदों के मुक़ाबले के लिये हर दौर में एक ऐसी जमाअ़त को पैदा फ़रमा देगा जो तमाम मुर्तदीन की फ़ितना पर्दाज़ियों को ख़त्म कर के इस्लाम का बोल बाला करती रहेगी जिन की छे निशानियां होंगी।

इन आयाते बय्यिनात से षाबित होता है कि सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم जिन्हों ने मुर्तदीन के ग्यारह क़बाइल की शोरिशों को ख़त्म कर के परचमे इस्लाम को बुलन्द से बुलन्द तर कर दिया। येह सहाबए किराम मुन्दरिजए ज़ैल छे अ़ज़ीम सिफ़ात के शरफ़ से सरफ़राज़ थे। या'नी (1) सहाबए किराम **अल्लाह** के महबूब हैं (2) वोह काफ़िरों के हक़ में बहुत सख़्त हैं (3) वोह **अल्लाह** तआ़ला के मुहिब हैं (4) वोह मुसलमानों के लिये रह़्म दिल हैं (5) वोह मुजाहिदे फ़ी सबीलिल्लाह हैं (6) वोह **अल्लाह** तआ़ला के मुआ़मले में किसी मलामत करने वाले का अन्देशा व ख़ौफ़ नहीं रखते।

फिर आयत के आख़िर में ख़ुदावन्दे क़ुद्दूस ने इन सहाबए किराम के मरातिब व दरजात की अ़ज़्मत व सर बुलन्दी पर अपने फ़ज़्लो इन्आ़म की मोहर षब्त फ़रमाते हुवे येह इरशाद फ़रमाया कि येह सब **अल्लाह** का फ़ज़्ल है और **अल्लाह** तआ़ला का फ़ज़्लो करम बड़ी वुस्अ़त वाला है और **अल्लाह** तआ़ला ही को ख़ूब मा'लूम है कि कौन उस के फ़ज़्ल का ह़क़दार है।

अल्लाहु अक्बर ! سُبْحٰنَ اللّٰہ क्या कहना है सहाबए किराम की अ़ज़्मतों की बुलन्दी का। रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم के फ़ज़्लो कमाल का ए'लान फ़रमाया और ख़ुदावन्दे क़ुद्दूस ने इन लोगों के जामेउ़ल कमालात होने का क़ुरआने मजीद में ख़ुत़्बा पढ़ा।

﴾13﴿ काफ़िरों की मायूसी

हिजरत के बा'द गो बराबर इस्लाम तरक़्क़ी करता रहा और हर महाज़ पर कुफ़्फ़ार के मुक़ाबले में मुसलमानों को फ़ुतूहात भी ह़ासिल होती रहीं और कुफ़्फ़ार अपनी चालों में नाकाम व नामुराद भी होते रहे। मगर फिर भी कुफ़्फ़ार बराबर इस्लाम की बेख़ कनी में मसरूफ़ ही रहे

और येह आस लगाए हुवे थे कि किसी न किसी दिन ज़रूर इस्लाम मिट जाएगा और फिर अ़रब में बुत परस्ती का चरचा हो कर रहेगा। कुफ़्फ़ार अपनी इसी मौहूम उम्मीद की बिना पर बराबर अपनी इस्लाम दुश्मनी स्कीमों में लगे रहे और त़रह़ त़रह़ के फ़ितने बपा करते रहे।

मगर **10** हि. ह़ज्जतुल वदाअ़ के मौक़अ़ पर जब काफ़िरों ने मुसलमानों का अ़ज़ीम मज्मअ़ मैदाने अ़रफ़ात में देखा और इन हज़ारों मुसलमानों के इस्लामी जोश और रसूल के साथ इन के वालिहाना जज़्बाते अ़क़ीदत का नज़ारा देख लिया तो कुफ़्फ़ार के ह़ौसलों और उन की मौहूम उम्मीदों पर औस पड़ गई और वोह इस्लाम की तबाही व बरबादी से बिल्कुल ही मायूस हो गए। चुनान्चे, इस वाक़िए़ की अ़क्कासी करते हुवे ख़ास़ मैदाने अ़रफ़ात में बा'दे अ़स्र येह आयात नाज़िल हुईं। (جمل ج ۱ ص ۴۶۴)

اَلْیَوْمَ یَىٕسَ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا مِنْ دِیْنِكُمْ فَلَا تَخْشَوْهُمْ وَ اخْشَوْنِؕ اَلْیَوْمَ اَكْمَلْتُ لَكُمْ دِیْنَكُمْ وَ اَتْمَمْتُ عَلَیْكُمْ نِعْمَتِیْ وَ رَضِیْتُ لَكُمُ الْاِسْلَامَ دِیْنًاؕ (پ۶،المائدۃ:۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- आज तुम्हारे दीन की त़रफ़ से काफ़िरों की आस टूट गई तो उन से न डरो और मुझ से डरो आज मैं ने तुम्हारे लिये तुम्हारा दीन कामिल कर दिया और तुम पर अपनी ने'मत पूरी कर दी और तुम्हारे लिये इस्लाम को दीन पसन्द किया।

रिवायत है कि एक यहूदी ने अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से कहा कि तुम्हारी किताब में एक ऐसी आयत है कि अगर हम यहूदियों पर ऐसी आयत नाज़िल हुई होती तो हम लोग उस दिन को ई़द का दिन बना लेते। तो आप ने फ़रमाया कि कौन सी आयत ? तो उस ने कहा कि "اَلْیَوْمَ اَكْمَلْتُ لَكُمْ دِیْنَكُمْ"(پ۶،المائدۃ:۳) वाली आयत। तो आप ने फ़रमाया कि जिस दिन और जिस जगह और जिस वक़्त येह आयत नाज़िल हुई हम उस को अच्छी त़रह़ जानते और पहचानते हैं वोह जुमुआ़ का दिन था और अ़रफ़ात का मैदान था और हु़ज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام अ़स्र के बा'द ख़ुत़बा इरशाद फ़रमा रहे थे कि येह आयत नाज़िल हुई :

आप का मत़लब येह था कि इस आयत के नुज़ूल के दिन तो हमारी दो ईदें थीं। एक तो अ़रफ़ा का दिन येह भी हमारी ईद का दिन है। दूसरा जुमुआ़ का दिन येह भी हमारी ईद ही का दिन है इस लिये अब अलग से हम को ईद मनाने की कोई ज़रूरत ही नहीं है।

(تفسیر جمل،ج۲، ص ۱۸۰، پ٦،المائدة:۳)

येह भी रिवायत है कि इस आयत के नुज़ूल के बा'द ह़ज़रते अमीरुल मोअमिनीन फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ रोने लगे। तो हुज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने दरयाफ़्त फ़रमाया कि ऐ उ़मर ! तुम रोते क्यूं हो ? तो आप ने अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह ! हमारा दीन रोज़ बरोज़ बढ़ता जा रहा है लेकिन अब जब कि येह दीन कामिल हो गया है तो येह क़ाइदा है कि "हर कमाल राज़ वाले" कि जो चीज़ अपने कमाल को पहुंच जाती है वोह घटना शुरूअ़ हो जाती है फिर इस आयत से वफ़ाते नबवी की त़रफ़ भी इशारा मिल रहा है क्यूंकि हुज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام दीन को कामिल करने ही के लिये दुन्या में तशरीफ़ लाए थे तो जब दीन कामिल हो चुका तो ज़ाहिर है कि हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) अब इस दुन्या में रहना पसन्द नहीं फ़रमाएंगे।

दर्से हिदायत :- ﴾1﴿ **अल्लाह** तआ़ला ने इस आयत में इस बात पर मोहर लगा दी कि अब काफ़िरों की कोई जिद्दो जहद और कोशिश भी इस्लाम को ख़त्म नहीं कर सकती। क्यूंकि कुफ़्फ़ार की उम्मीद व आस पर नाउम्मीदी व यास के बादल छा गए हैं। क्यूंकि इन का इस्लाम को मिटा देने का ख़्वाब अब कभी भी शर्मिन्दए ता'बीर न हो सकेगा।

﴾2﴿ इस आयत ने ए'लान कर दिया कि दीने इस्लाम मुकम्मल हो चुका है अब अगर कोई येह कहे कि इस्लाम में फ़ुलां फ़ुलां मसाइल नाक़िस रह गए हैं या इस्लाम में कुछ तरमीम और इज़ाफ़े की ज़रूरत है तो वोह शख़्स कज़्ज़ाब और झूटा है और दर ह़क़ीक़त वोह क़ुरआन की तक्ज़ीब करने वाला मुल्ह़िद और इस्लाम से ख़ारिज है। दीने इस्लाम बिलाशुबा यक़ीनन कामिल व मुकम्मल हो चुका है इस पर ईमान रखना ज़रूरियाते दीन में से है।

﴾14﴿ इस्लाम और साधू की ज़िन्दगी

उ-लमाए तफ़्सीर का बयान है कि एक दिन हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने वा'ज़ फ़रमाया और क़ियामत की हौलनाकियों का इस अन्दाज़ में बयान फ़रमाया कि सामेईन मुतअष्षिर हो कर ज़ारो क़तार रोने लगे, और लोगों के दिल दहल गए और लोग इस क़दर ख़ौफ़ो हरास से लर्ज़ा बरअन्दाम हो गए कि दस जलीलुल क़द्र सहाबए किराम हज़रते उषमान बिन मज़ऊन जमही के मकान पर जम्अ़ हुवे जिन में हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ व हज़रते अ़ली व हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद व हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र व हज़रते अबू ज़र गिफ़ारी व हज़रते सालिम व हज़रते मिक़दाद व हज़रते सलमान फ़ारसी व हज़रते मा'क़िल बिन मुक़र्रिन व हज़रते उषमान बिन मज़ऊन (رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن) थे और इन हज़रात ने आपस में मश्वरा कर के येह मन्सूबा बनाया कि अब आज से हम लोग साधू बन कर ज़िन्दगी बसर करेंगे, टाट वग़ैरा के मोटे कपड़े पहनेंगे और रोज़ाना दिन भर रोज़े रख कर सारी रात इ़बादत करेंगे, बिस्तर पर नहीं सोएंगे और अपनी औ़रतों से अलग रहेंगे और गोश्त चरबी और घी वग़ैरा कोई मुरग़्ग़न ग़िज़ा नहीं खाएंगे न कोई ख़ुश्बू लगाएंगे और साधू बन कर रूए ज़मीन में गश्त करते फिरेंगे।

जब हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को सहाबए किराम के इस मन्सूबे की इत्तिलाअ़ मिली तो आप ने हज़रते उषमान बिन मज़ऊन رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه से फ़रमाया कि मुझे ऐसी ऐसी ख़बर मा'लूम हुई है तुम बताओ कि वाक़िआ़ क्या है ? तो हज़रते उषमान बिन मज़ऊन رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه अपने साथियों को ले कर बारगाहे नबुव्वत में हाज़िर हुवे और अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह ! हुज़ूर को जो इत्तिलाअ़ मिली है वोह बिल्कुल सहीह़ है। इस मन्सूबे से बजुज़ नेकी और ख़ैर त़लब करने के हमारा कोई दूसरा मक़्सद नहीं है। येह सुन कर हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के जमाले नबुव्वत पर क़दरे जलाल का ज़ुहूर हो गया और आप ने फ़रमाया कि मैं जो दीन ले कर आया हूं उस में इन बातों का हुक्म नहीं है। सुनो ! तुम्हारे ऊपर तुम्हारी जानों का भी ह़क़ है। लिहाज़ा कुछ दिन रोज़ा रखो और कुछ दिनों में खाओ पियो और रात के कुछ हिस्से में जाग कर इ़बादत करो और

कुछ हिस्से में सो रहा करो। देखो मैं अल्लाह का रसूल हो कर कभी रोज़ा रखता हूं और कभी रोज़ा नहीं भी रखता हूं। और गोश्त, चरबी, घी भी खाता हूं। अच्छे कपड़े भी पहनता हूं और अपनी बीवियों से भी तअ़ल्लुक़ रखता हूं और ख़ुश्बू भी इस्ति'माल करता हूं येह मेरी सुन्नत है और जो मुसलमान मेरी सुन्नत से मुंह मोड़ेगा वोह मेरे त़रीक़े पर और मेरे फ़रमां बरदारों में से नहीं है।

इस के बा'द सहाबए किराम का एक मज्मअ़ जम्अ़ फ़रमा कर आप ने निहायत ही मुअष्षिर वा'ज़ बयान फ़रमाया जिस में आप ने बर मला इरशाद फ़रमाया कि सुन लो ! मैं तुम्हें इस बात का हुक्म नहीं देता कि तुम लोग साधू बन कर राहिबाना ज़िन्दगी बसर करो। मेरे दीन में गोश्त वग़ैरा लज़ीज़ ग़िज़ाओं और औरतों को छोड़ कर और तमाम दुन्यावी कामों से क़त्ए़ तअ़ल्लुक़ कर के साधूओं की त़रह़ किसी कुट्टी या पहाड़ की खो में बैठ रहना या ज़मीन में गश्त लगाते रहना हरगिज़ हरगिज़ नहीं है। सुन लो ! मेरी उम्मत की सियाह़त जिहाद है इस लिये तुम लोग बजाए ज़मीन में गश्त करते रहने के जिहाद करो और नमाज़ व रोज़ा और ह़ज व ज़कात की पाबन्दी करते हुवे ख़ुदा की इबादत करते रहो और अपनी जानों को सख़्ती में न डालो। क्यूंकि तुम लोगों से पहले अगली उम्मतों में जिन लोगों ने साधू बन कर अपनी जानों को सख़्ती में डाला, तो अल्लाह तआ़ला ने भी उन लोगों पर सख़्त सख़्त अह़काम नाज़िल फ़रमा कर उन्हें सख़्ती में मुब्तला फ़रमा दिया जिन अह़काम को वोह लोग निबाह न सके और बिल आख़िर नतीजा येह हुवा कि अल्लाह तआ़ला के अह़काम से मुंह मोड़ कर वोह लोग हलाक हो गए।

(تفسیر جمل علی الجلالین، ج۲، ص۲۶۷، پ۷، المائدۃ:۸۷)

हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के इस वा'ज़ के बा'द ही सूरए माइदह की मुन्दरिजए ज़ैल आयाते शरीफ़ा नाज़िल हो गईं।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُحَرِّمُوْا طَيِّبٰتِ مَاۤ اَحَلَّ اللّٰهُ لَكُمْ وَلَا تَعْتَدُوْاؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِيْنَ ﴿۸۷﴾ وَكُلُوْا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللّٰهُ حَلٰلًا طَيِّبًا۪ وَّاتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِيْۤ اَنْتُمْ بِهٖ مُؤْمِنُوْنَ ﴿۸۸﴾ (پ۷، المائدۃ:۸۷۔۸۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :– ऐ ईमान वालो ! ह़राम न ठहराओ वोह सुथरी चीज़ें कि **अल्लाह** तआ़ला ने तुम्हारे लिये ह़लाल कीं और ह़द से न बढ़ो। बेशक ह़द से बढ़ने वाले **अल्लाह** को नापसन्द हैं। और खाओ जो कुछ तुम्हें **अल्लाह** ने रोज़ी दी ह़लाल पाकीज़ा और डरो **अल्लाह** से जिस पर तुम्हें ईमान है।

दर्से हिदायत :– इन आयात से सबक़ मिलता है कि इस्लाम में साधू बन कर ज़िन्दगी बसर करने की इजाज़त नहीं है, उ़म्दा ग़िज़ाओं और अच्छे कपड़ों को अपने ऊपर ह़राम ठहरा कर और बीवी बच्चों से क़त्ए़ तअ़ल्लुक़ कर के साधूओं की त़रह़ किसी कुटिया में धूनी रमा कर बैठ रहना, या जंगलों और बियाबानों में चक्कर लगाते रहना, येह हरगिज़ हरगिज़ इस्लामी त़रीक़ा नहीं है। ख़ूब समझ लो कि जो मुफ़्त ख़ोर बाबा लोग इस त़रह़ की ज़िन्दगी गुज़ार कर अपनी दुर्वेशी का ढोंग रचा कर कुटियों या मैदानों में बैठे हुवे अपनी बाबाइय्यत का प्रचार कर रहे हैं और जाहिलों को अपने दामे तज़्वीर में फांसे हुवे हैं। ख़ूब आंख खोल कर देख लो और कान खोल कर सुन लो कि येह साधूओं का रंग ढंग इस्लामी त़रीक़ा नहीं है बल्कि अस्ल और सच्चा इस्लाम वोही है जो रसूले अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नत और इन के मुक़द्दस त़रीक़े के मुत़ाबिक़ हो। लिहाज़ा जो शख़्स सुन्नतों का दामन थाम कर ज़िन्दगी बसर कर रहा हो, दर ह़क़ीक़त उसी की ज़िन्दगी इस्लामी ज़िन्दगी है और सूफ़ियाए किराम की दुर्वेशाना ज़िन्दगी भी येही है।

ख़ूब समझ लो कि नबुव्वत की सुन्नतों को छोड़ कर ज़िन्दगी का जो त़रीक़ा भी इख़्तियार किया जाए वोह दर ह़क़ीक़त न इस्लामी ज़िन्दगी है न सूफ़िया की दुर्वेशाना ज़िन्दगी। लिहाज़ा आज कल जिन बाबाओं ने राहिबाना और साधूओं की ज़िन्दगी इख़्तियार कर रखी है उन के इस त़र्ज़े अ़मल को इस्लाम और बुज़ुर्गी से दूर का भी कोई तअ़ल्लुक़ नहीं है। मुसलमानों को इस से होशियार रहना चाहिये। और यक़ीन रखना चाहिये कि येह सब मक्रो कैद का ख़ूबसूरत जाल बिछाए हुवे हैं जिस में भोले भाले अ़क़ीदत मन्द मुसलमान फंसे रहते हैं और इस बहाने बाबा लोग

अपना उल्लू सीधा करते रहते हैं। एक सच्ची ह़क़ीक़त का इज़्हार और ह़क़ का ए'लान हम आ़लिमों का फ़र्ज़ है जिस को हम अदा कर रहे हैं।

मानो न मानो आप को येह इख़्तियार है
हम नेको बद जनाब को समझाए जाएंगे

﴾15﴿ दो बड़े एक छोटा दुश्मन

कुरआने मजीद ने बार बार इस मस्अले पर रोशनी डाली और ए'लान फ़रमाया कि हर काफ़िर मुसलमान का दुश्मन है और कुफ़्फ़ार के दिलो दिमाग़ में मुसलमानों के ख़िलाफ़ एक ज़ह्र भरा हुवा है और हर वक़्त और हर मौक़अ़ पर काफ़िरों के सीने मुसलमानों की अ़दावत और कीने से आग की भट्टी की त़रह़ जलते रहते हैं लेकिन सुवाल येह है कि कुफ़्फ़ार के तीन मश्हूर फ़िर्क़ों यहूद व मुशरिकीन और नसारा में से मुसलमानों के सब से बड़े और सख़्त तरीन दुश्मन कौन है? और कौन सा फ़िर्क़ा है जिस के दिल में निस्बतन मुसलमानों की दुश्मनी कम है? तो इस सुवाल के जवाब में सूरए माइदह की मुन्दरिजए ज़ैल आयते शरीफ़ा नाज़िल हुई है। लिहाज़ा इस पर कामिल ईमान रखते हुवे अपने बड़े और छोटे दुश्मनों को पहचान कर इन सभों से होशियार रहना चाहिये। इरशादे खुदावन्दी है कि

لَتَجِدَنَّ اَشَدَّ النَّاسِ عَدَاوَةً لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوا الْيَهُوْدَ وَالَّذِيْنَ اَشْرَكُوْا ۚ وَ لَتَجِدَنَّ اَقْرَبَهُمْ مَّوَدَّةً لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوا الَّذِيْنَ قَالُوْۤا اِنَّا نَصٰرٰى ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّ مِنْهُمْ قِسِّيْسِيْنَ وَ رُهْبَانًا وَّ اَنَّهُمْ لَا يَسْتَكْبِرُوْنَ ﴿۸۲﴾ (پ۷، المائدة:۸۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- ज़रूर तुम मुसलमानों का सब से बढ़ कर दुश्मन यहूदियों और मुशरिकों को पाओगे और ज़रूर तुम मुसलमानों की दोस्ती में सब से ज़ियादा क़रीब उन को पाओगे जो कहते थे हम नसारा हैं येह इस लिये कि इन में आ़लिम और दुर्वेश हैं और येह ग़ुरूर नहीं करते।

दर्से हिदायत :- इस आयत की रोशनी में गुज़श्ता तवारीख़ के सफ़ह़ात की वरक़ गरदानी कर के अपने ईमान को मज़ीद इत़्मीनान बख़्शे कि

यहूदियों और मुशरिकों ने मुसलमानों के साथ जैसी जैसी सख़्त अ़दावतों का मुज़ाहिरा किया है, ईसाइयों ने इन लोगों से बहुत कम मुसलमानों के साथ बुरा बरताव किया है और यहूदियों और मुशरिकों ने मुसलमानों पर जैसे जैसे ज़ुल्मो सितम के पहाड़ तोड़े हैं, ईसाइयों ने इस दर्जे मुसलमानों पर मज़ालिम नहीं किये हैं। लिहाज़ा मुसलमानों को चाहिये कि यहूद व मुशरिकीन को अपना सब से बड़ा दुश्मन तसव्वुर कर के कभी भी इन लोगों पर ए'तिमाद न करें और हमेशा इन बदतरीन दुश्मनों से होशियार रहें और ईसाइयों के बारे में भी येही अ़क़ीदा रखें कि येह भी मुसलमानों के दुश्मन ही हैं मगर फिर भी इन के दिलों में मुसलमानों के लिये कुछ नर्म गोशे भी हैं। इस लिये येह यहूदियों और मुशरिकों की ब निस्बत कम दरजे के दुश्मन हैं।

येही इस आयते मुबारका का ख़ुलासा व मत़लब है जो मुसलमानों के वासित़े इन के छोटे बड़े दुश्मनों की पहचान के लिये बेहतरीन शम्ए़ राह बल्कि रोशनी का मनारा है। (واللہ تعالٰی اعلم)

﴾16﴿ अम्बिया के क़ातिल

क़ुरआने मजीद ने मुतअ़द्दिद जगह पर यहूदियों की शरारतों और फ़ितना पर्दाज़ियों का तफ़्सीली बयान करते हुवे बार बार येह ए'लान फ़रमाया है कि इन ज़ालिमों ने अपने अम्बिया और पैग़म्बरों को भी क़त्ल किये बिग़ैर नहीं छोड़ा, चुनान्चे, इरशाद फ़रमाया कि

اِنَّ الَّذِيْنَ يَكْفُرُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَيَقْتُلُوْنَ النَّبِيّٖنَ بِغَيْرِ حَقٍّ ۙ وَّ يَقْتُلُوْنَ الَّذِيْنَ يَاْمُرُوْنَ بِالْقِسْطِ مِنَ النَّاسِ ۙ فَبَشِّرْهُمْ بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ﴿۲۱﴾ (پ۳، ال عمران: ۲۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- वोह जो **अल्लाह** की आयतों से मुन्किर होते और पैग़म्बरों को नाहक़ शहीद करते और इन्साफ़ का हुक्म करने वालों को क़त्ल करते हैं उन्हें ख़ुशख़बरी दो दर्दनाक अ़ज़ाब की।

हज़रते अबू उ़बैदा बिन अल जर्राह़ رضی اللہ تعالٰی عنہ से रिवायत है कि नबिय्ये अकरम صلی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلم ने इरशाद फ़रमाया कि यहूदियों ने

एक दिन में पैंतालीस नबियों और एक सो सत्तर सालिहीन को क़त्ल कर दिया था जो इन को अच्छी बातों का हुक्म दिया करते थे। (تاریخ ابن کثیر، ج ۲، ص۵۵) चुनान्चे, हज़रते यह्या व हज़रते ज़करिय्या علیهما السلام की शहादत भी इसी सिलसिले की कड़ियां हैं।

हज़रते यह्या عَلَيْهِ السَّلَام की शहादत :- इब्ने अ़साकिर ने "**अल मुस्तक़्सा फ़ी फ़ज़ाइलुल अक़्सा**" में हज़रते यह्या عَلَيْهِ السَّلَام की शहादत का वाक़िआ़ इस तरह़ तह़रीर फ़रमाया है कि दिमश्क़ के बादशाह "हद्दाद बिन हिदार" ने अपनी बीवी को तीन त़लाक़ें दे दी थीं। फिर वोह चाहता था कि वोह बिग़ैर हलाला उस को वापस कर के अपनी बीवी बना ले। उस ने हज़रते यह्या عَلَيْهِ السَّلَام से फ़तवा त़लब किया तो आप ने फ़रमाया वोह अब तुम पर ह़राम हो चुकी है उस की बीवी को येह बात सख़्त ना गवार गुज़री और वोह हज़रते यह्या عَلَيْهِ السَّلَام के क़त्ल के दरपे हो गई। चुनान्चे, उस ने बादशाह को मजबूर कर के क़त्ल की इजाज़त ह़ासिल कर ली और जब कि वोह "मस्जिदे जबरून" में नमाज़ पढ़ रहे थे ब ह़ालते सजदा उन को क़त्ल करा दिया और एक तश्त में उन का सर मुबारक अपने सामने मंगवाया। मगर कटा हुवा सर इस ह़ालत में भी येही कहता रहा कि "तू बिग़ैर ह़लाला कराए बादशाह के लिये ह़लाल नहीं" और इसी ह़ालत में उस पर ख़ुदा का येह अ़ज़ाब नाज़िल हो गया कि वोह औ़रत सर मुबारक के साथ ज़मीन में धंस गई। (البدایه والنهایه،ج۲،ص۵۵)

हज़रते ज़करिय्या عَلَيْهِ السَّلَام का मक़्तल :- यहूदियों ने जब हज़रते यह्या عَلَيْهِ السَّلَام को क़त्ल कर दिया तो फिर उन के वालिदे माजिद हज़रते ज़करिय्या عَلَيْهِ السَّلَام की त़रफ़ येह ज़ालिम लोग मुतवज्जेह हुवे कि इन को शहीद कर दें। मगर जब हज़रते ज़करिय्या عَلَيْهِ السَّلَام ने येह देखा तो वहां से हट गए और एक दरख़्त के शिगाफ़ में रूपोश हो गए। यहूदियों ने उस दरख़्त पर आरा चला दिया। जब आरा हज़रते ज़करिय्या عَلَيْهِ السَّلَام पर पहुंचा तो ख़ुदा की वह्य आई कि ख़बरदार ऐ ज़करिय्या! अगर आप ने कुछ भी आहो ज़ारी की तो हम पूरी रूए ज़मीन को तहोबाला कर देंगे। और अगर तुम ने सब्र किया तो हम भी इन यहूदियों पर अपना अ़ज़ाब

नाज़िल कर देंगे। चुनान्चे, ह़ज़रते ज़करिय्या عَلَيْهِ السَّلَام ने सब्र किया और ज़ालिम यहूदियों ने दरख़्त के साथ उन के भी दो टुकड़े कर दिये।

(البدایه والنهایه، ج ۲، ص ۵۵)

इस में इख़्तिलाफ़ है कि ह़ज़रते यह़्या عَلَيْهِ السَّلَام की शहादत का वाक़िआ़ किस जगह पेश आया ? पहला क़ौल येह है कि "मस्जिदे जबरून" में शहादत हुई। मगर ह़ज़रते सुफ़्यान सौरी ने शमर बिन अ़तिय्या से येह क़ौल नक़्ल किया है कि बैतुल मुक़द्दस में हैकल सुलैमानी और क़ुरबान गाह के दरमियान आप शहीद किये गए जिस जगह आप से पहले सत्तर अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام को यहूदी क़त्ल कर चुके थे। (تاریخ ابن کثیر، ج ۲، ص ۵۵)

बहर ह़ाल येह सब को मुसल्लम है कि यहूदियों ने ह़ज़रते यह़्या عَلَيْهِ السَّلَام को शहीद कर दिया और जब ह़ज़रते ई़सा عَلَيْهِ السَّلَام को इन की शहादत का ह़ाल मा'लूम हुवा तो आप ने अ़लल ए'लान अपनी दा'वते ह़क़ का वा'ज़ शुरूअ़ कर दिया और बिल आख़िर यहूदियों ने आप के क़त्ल का भी मन्सूबा बना लिया। बल्कि क़त्ल के लिये आप के मकान में एक यहूदी दाख़िल भी हो गया। मगर **अल्लाह** तआ़ला ने आप को एक बदली भेज कर आस्मान पर उठा लिया जिस का मुफ़स्सल वाक़िआ़ हमारी इसी किताब के अगले बाब "अ़जाइबुल क़ुरआन" में मज़्कूर है।

दर्से हिदायत :- ह़ज़रते यह़्या और ह़ज़रते ज़करिय्या علیهما السلام की शहादत के वाक़िआ़त और ह़ालात से अगर्चे ह़क़ीक़त में निगाहें बहुत से नताइज ह़ासिल कर सकती हैं। ताहम चन्द बातें ख़ुसूसी तौर पर क़ाबिले तवज्जोह हैं :

﴾1﴿ दुन्या में इन यहूदियों से ज़ियादा शक़ियुल क़ल्ब और बद बख़्त कोई और नहीं हो सकता जो ह़ज़राते अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام को नाह़क़ क़त्ल करते थे। ह़ालांकि येह बरगुज़ीदा और मुक़द्दस हस्तियां न किसी को सताती थीं न किसी के माल व दौलत पर हाथ डालती थीं बल्कि बिग़ैर किसी उजरत व इ़वज़ के लोगों की इस्लाह़ कर के उन्हें फ़लाह़ व सआ़दते दारैन की इ़ज़्ज़तों से सरफ़राज़ करती थीं। चुनान्चे, ह़ज़रते अबू उ़बैदा सह़ाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने ह़ुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से दरयाफ़्त किया कि क़ियामत के दिन सब से बड़े और ज़ियादा अ़ज़ाब का मुस्तह़िक़ कौन होगा ? तो आप ने इरशाद फ़रमाया कि

رَجُلٌ قَتَلَ نَبِیًّا اَوْمَنْ اَمَرَ بِالْمَعْرُوْفِ وَنَهٰی عَنِ الْمُنْكَرِ.

वोह शख़्स जो किसी नबी को या ऐसे शख़्स को क़त्ल करे जो भलाई का हुक्म देता हो और बुराई से रोकता हो।

(تفسیر ابن کثیر، ج۲، ص ۲۲، پ۳، آل عمران: ۲۱)

बहर हाल ज़ालिम यहूदियों ने अपनी शक़ावत से ख़ुदा के नबियों के साथ जो ज़ालिमाना सुलूक किया और जिस बे दर्दी के साथ इन मुक़द्दस नुफ़ूस का ख़ून बहाया अक़्वामे आ़लम में इस की मिषाल नहीं मिल सकती। इस लिये ख़ुदावन्दे क़ह्हार व जब्बार ने अपने क़हरो ग़ज़ब से इन ज़ालिमों को दोनों जहान में मलऊ़न कर दिया। लिहाज़ा हर मुसलमान पर लाज़िम है कि इन मलऊ़नों से हमेशा नफ़रत व दुश्मनी रखे।

﴾2﴿ बनी इस्राईल चूंकि मुख़्तलिफ़ क़बाइल में तक़्सीम थे इस लिये इन के दरमियान एक ही वक़्त में मुतअ़द्दिद नबी और पैग़म्बर मबऊ़ष होते रहे और इन सब नबियों की ता'लीमात की बुन्याद ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام की किताब तौरेत ही रही और इन सब अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام की हैषिय्यत ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के नाइबीन की रही।

﴾3﴿ उ-लमाए किराम को अपनी ज़िन्दगी की आख़िरी सांस तक ह़क़ पर डट कर इस की तब्लीग़ करते रहना चाहिये और ह़क़ के मुआ़मले में अपनी जान की भी परवाह नहीं करनी चाहिये। जैसा कि आप ने पढ़ लिया कि सर कट जाने के बा'द भी ह़ज़रते यह़्या عَلَيْهِ السَّلَام के कटे हुवे सर से येही आवाज़ आती रही कि तीन त़लाक़ों के बा'द बिग़ैर ह़लाला कराए हुवे औ़रत से उस का शोहर दोबारा निकाह़ नहीं कर सकता। (واللہ تعالٰی اعلم)

﴾17﴿ मुनाफ़िक़ों की एक साज़िश

जंगे उहुद का मुकम्मल और मुफ़स्सल बयान तो हम अपनी किताब "**सीरतुल मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم" में तह़रीर कर चुके हैं मगर हम यहां तो सिर्फ़ मुनाफ़िक़ों की एक ख़त़रनाक साज़िश का ज़िक्र कर रहे हैं जो जंगे उहुद के दिन इन बदबख़्तों ने रसूले ख़ुदा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ख़िलाफ़ की थी। जिस पर क़ुरआने मजीद ने रोशनी डाली है और जो बहुत ही क़ाबिले इ़ब्रत और निहायत ही नसीह़त आमोज़ है और वोह येह

है कि नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जब मदीने से बाहर जंग के लिये निकले तो एक हज़ार का लश्कर परचमे नबुव्वत के नीचे था। इस लश्कर में तीन सो मुनाफ़िक़ीन भी **अ़ब्दुल्लाह बिन उबय्य** की सरकरदगी में हम रिकाब थे। मुनाफ़िक़ीन पहले ही कुफ़्फ़ारे मक्का के साथ येह साज़िश कर चुके थे कि मुख़्लिस मुसलमानों को बुज़दिल बनाने के लिये येह त़रीक़ा इख़्तियार करेंगे कि शुरूअ़ में मुसलमानों के लश्कर के साथ निकलेंगे फिर मुसलमानों से कट कर मदीने वापस आ जाएंगे। चुनान्चे, मुनाफ़िक़ों का सरदार येह बहाना बना कर लश्करे इस्लाम से कट कर जुदा हो गया कि जब मुह़म्मद (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) ने हम तजरिबा कारों की बात नहीं मानी कि मदीने में रह कर मुदा-फ़अ़ाना जंग करनी चाहिये बल्कि उल्टा नौजवानों की बात मान कर मदीने से निकल पड़े तो हम को क्या ज़रूरत है कि हम अपनी जानों को हलाकत में डालें। मगर اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ कि मुनाफ़िक़ों का मक़्सद पूरा नहीं हुवा क्यूंकि मुख़्लिस मुसलमानों पर इन लोगों के लश्करे इस्लाम से जुदा हो जाने का मुत़लक़न कोई अषर नहीं पड़ा। अलबत्ता मुसलमानों के दो क़बीले "बनू सलमा" व "बनू ह़ारिषा" में कुछ थोड़ी सी बद दिली और बुज़दिली पैदा हो चुकी थी मगर मुख़्लिस मुसलमानों के जोशे जिहाद को देख कर इन दोनों क़बीलों की भी हिम्मत बुलन्द हो गई और येह लोग भी षाबित क़दम रह कर पूरे जां निषाराना जज़्बाते सरफ़रोशी के साथ मुशरिकीन के दल-बादल लश्करों से टकरा गए और आख़िरी दम तक परचमे नबुव्वत के ज़ेरे साया मुशरिकों से जंग करते रहे इस वाक़िए़ का ज़िक्र करते हुवे क़ुरआने मजीद में इरशाद फ़रमाया कि

وَ اِذْ غَدَوْتَ مِنْ اَهْلِكَ تُبَوِّئُ الْمُؤْمِنِیْنَ مَقَاعِدَ لِلْقِتَالِؕ وَ اللّٰهُ سَمِیْعٌ عَلِیْمٌۙ(۱۲۱) اِذْ هَمَّتْ طَّآىٕفَتٰنِ مِنْكُمْ اَنْ تَفْشَلَاۙ وَ اللّٰهُ وَلِیُّهُمَاؕ وَ عَلَى اللّٰهِ فَلْیَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ(۱۲۲) (پ۴،اٰل عمران:۱۲۱۔۱۲۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- और याद करो ऐ मह़बूब जब तुम सुब्ह़ को अपने दौलत ख़ाने से बर आमद हुवे मुसलमानों को लड़ाई के मोरचों पर क़ाइम करते और **अल्लाह** सुनता जानता है जब तुम में के दो गुरौहों का

इरादा हुवा कि नामर्दी कर जाएं और **अल्लाह** उन का संभालने वाला है और मुसलमानों को **अल्लाह** ही पर भरोसा चाहिये।

अल ग़रज़ जंगे उहुद में मुनाफ़िक़ों की येह ख़तरनाक साज़िश और ख़ौफ़नाक तदबीर बिल्कुल नाकाम हो कर रह गई और بِحَمْدِ اللّٰهِ تَعَالٰی अगर्चे सत्तर मुसलमानों ने जामे शहादत नोश किया लेकिन आख़िर में फ़त्हे मुबीन ने पैग़म्बर के क़दमे नबुव्वत का बोसा लिया और मुशरिकीन नाकाम हो कर मैदाने जंग छोड़ कर अपने घरों को चले गए और परचमे इस्लाम बुलन्द ही रहा।

दर्से हिदायत :– इस वाक़िए से सबक़ मिलता है कि अगर मोअमिनीन इख़्लासे निय्यत के साथ मुत्तहिद हो कर मैदाने जंग में काफ़िरों के साथ जवां मर्दी और उलूल अ़ज़्मी के साथ जिहाद में डटे रहें तो मुनाफ़िक़ों और काफ़िरों की हर साज़िश व तदबीर को ख़ुदावन्दे क़ुद्दूस नाकाम बना देता है मगर येह ह़क़ीक़त बड़ी ही सदाक़त मआब है कि

बराए फ़त्ह पहली शर्त़ है षाबित क़दम रहना
जमाअ़त को बहम रखना, जमाअ़त का बहम रहना

18 ह़ज़रते इल्यास عَلَیْہِ السَّلَام

येह ह़ज़रते हिज़्क़ील عَلَیْہِ السَّلَام के ख़लीफ़ा और जानशीन हैं। बेशतर मुअर्रिख़ीन का इस पर इत्तिफ़ाक़ है कि ह़ज़रते इल्यास عَلَیْہِ السَّلَام ह़ज़रते हारून عَلَیْہِ السَّلَام की नस्ल से हैं और इन का नसब नामा येह है। इल्यास बिन यासीन बिन फ़ख़ास बिन ऐ़ज़ार बिन हारून (عَلَیْہِ السَّلَام)। ह़ज़रते इल्यास عَلَیْہِ السَّلَام की बिअ़षत के मुतअ़ल्लिक़ मुफ़स्सिरीन व मुअर्रिख़ीन का इत्तिफ़ाक़ है कि वोह शाम के बाशिन्दों की हिदायत के लिये भेजे गए और "बा'लबक" का मश्हूर शहर उन की रिसालत व हिदायत का मर्कज़ था।

इन दिनों "बा'लबक" शहर पर "अरजब" नामी बादशाह की ह़ुकूमत थी जो सारी क़ौम को बुत परस्ती पर मजबूर किये हुवे था और इन लोगों का सब से बड़ा बुत "बा'ल" था जो सोने का बना हुवा था और बीस गज़ लम्बा था और उस के चार चेहरे बने हुवे थे और चार सो

ख़ुद्दाम उस बुत की ख़िदमत करते थे जिन को सारी क़ौम बेटों की त़रह़ मानती थी और उस बुत में से शैत़ान की आवाज़ आती थी जो लोगों को बुत परस्ती और शिर्क का हुक्म सुनाया करता था। इस माह़ोल में ह़ज़रते इल्यास عَلَيْهِ السَّلَام इन लोगों को तौह़ीद और ख़ुदा परस्ती की दा'वत देने लगे मगर क़ौम इन पर ईमान नहीं लाई। बल्कि शहर का बादशाह "अरजब" इन का दुश्मने जां बन गया और उस ने ह़ज़रते इल्यास عَلَيْهِ السَّلَام को क़त्ल कर देने का इरादा कर लिया। चुनान्चे, आप शहर से हिजरत फ़रमा कर पहाड़ों की चोटियों और ग़ारों में रूपोश हो गए और पूरे सात बरस तक ख़ौफ़ व हरास के आ़लम में रहे और जंगली घासों और जंगल के फूलों और फलों पर ज़िन्दगी बसर फ़रमाते रहे। बादशाह ने आप की गिरिफ़्तारी के लिये बहुत से जासूस मुक़र्रर कर दिये थे। आप ने मुश्किलात से तंग आ कर येह दुआ़ मांगी कि इलाही ! मुझे इन ज़ालिमों से नजात और राह़त अ़त़ा फ़रमा तो आप पर वह़्य आई कि तुम फ़ुलां दिन फ़ुलां जगह पर जाओ और वहां जो सुवारी मिले बिला ख़ौफ़ उस पर सुवार हो जाओ। चुनान्चे, उस दिन उस मक़ाम पर आप पहुंचे तो एक सुर्ख़ रंग का घोड़ा खड़ा था। आप उस पर सुवार हो गए और घोड़ा चल पड़ा तो आप के चचा ज़ाद भाई ह़ज़रते "अल युसअ़" عَلَيْهِ السَّلَام ने आप को पुकारा और अ़र्ज़ किया कि अब मैं क्या करूं ? तो आप ने अपना कम्बल उन पर डाल दिया। येह निशानी थी कि मैं ने तुम को बनी इस्राईल की हिदायत के लिये अपना ख़लीफ़ा बना दिया। फिर अल्लाह तआ़ला ने आप को लोगों की नज़रों से ओझल फ़रमा दिया और आप को खाने और पीने से बे नियाज़ कर दिया और आप को अल्लाह तआ़ला ने फ़िरिश्तों की जमाअ़त में शामिल फ़रमा लिया और ह़ज़रते अल युसअ़ عَلَيْهِ السَّلَام निहायत अ़ज़्म व हिम्मत के साथ लोगों की हिदायत करने लगे। चुनान्चे, अल्लाह तआ़ला ने हर दम हर क़दम पर इन की मदद फ़रमाई और बनी इस्राईल आप पर ईमान लाए और आप की वफ़ात तक ईमान पर क़ाइम रहे।

ह़ज़रते इल्यास عَلَيْهِ السَّلَام के मो'जिज़ात :- अल्लाह तआ़ला ने तमाम पहाड़ों और ह़ैवानात को आप के लिये मुसख़्ख़र फ़रमा दिया और

आप को सत्तर अम्बिया की त़ाक़त बख़्श दी। ग़ज़ब व जलाल और क़ुव्वत व त़ाक़त में ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام का हम पल्ला बना दिया। और रिवायात में आया है कि ह़ज़रते इल्यास और ह़ज़रते ख़िज़्र (عليهما السلام) हर साल के रोज़े बैतुल मुक़द्दस में अदा करते हैं और हर साल ह़ज के लिये मक्कए मुकर्रमा जाया करते हैं और साल के बाक़ी दिनों में ह़ज़रते इल्यास عَلَيْهِ السَّلَام तो जंगलों और मैदानों में गश्त फ़रमाते रहते हैं और ह़ज़रते ख़िज़्र عَلَيْهِ السَّلَام दरियाओं और समुन्दरों की सैर फ़रमाते रहते हैं और येह दोनों ह़ज़रात आख़िरी ज़माने में वफ़ात पाएंगे जब कि क़ुरआने मजीद उठा लिया जाएगा।

ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से एक ह़दीष मरवी है कि हम लोग एक जिहाद में रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ थे तो रास्ते में एक आवाज़ आई कि या **अल्लाह** ! तू मुझ को ह़ज़रते मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की उम्मत में बना दे जो उम्मत मर्ह़ूमा और मुस्तजाबुद्दा'वात है तो ह़ुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने फ़रमाया कि ऐ अनस ! तुम इस आवाज़ का पता लगाओ तो मैं पहाड़ में दाख़िल हुवा, तो अचानक येह नज़र आया कि एक आदमी निहायत सफ़ेद कपड़ों में मल्बूस लम्बी दाढ़ी वाला नज़र आया जब उस ने मुझे देखा तो पूछा कि तुम रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सह़ाबी हो ? तो मैं ने अ़र्ज़ किया कि जी हां ! तो उन्हों ने फ़रमाया कि तुम जा कर ह़ुज़ूर से मेरा सलाम अ़र्ज़ करो और येह कह दो कि आप के भाई इल्यास (عَلَيْهِ السَّلَام) आप से मुलाक़ात का इरादा रखते हैं। चुनान्चे, मैं ने वापस आ कर ह़ुज़ूर से सारा मुआ़मला अ़र्ज़ किया तो आप मुझ को हमराह ले कर रवाना हुवे और जब आप उन के क़रीब पहुंच गए मैं पीछे हट गया। फिर दोनों साह़िबान देर तक गुफ़्तगू फ़रमाते रहे और आस्मान से एक दस्तरख़्वान उतर पड़ा तो ह़ुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने मुझे बुला भेजा और मैं ने दोनों ह़ज़रात के साथ में खाना खाया। जब हम लोग खाने से फ़ारिग़ हो चुके तो आस्मान से एक बदली आई और वोह ह़ज़रते इल्यास عَلَيْهِ السَّلَام को उठा कर आस्मान की त़रफ़ ले गई और मैं उन के सफ़ेद कपड़ों को देखता ही रह गया।

(تفسیر صاوی، ج۵، ص ۱۷۴۹، پ ۲۳، الصّٰفّٰت: ۱۲۴)

हज़रते इल्यास और कुरआन :- कुरआने मजीद में हज़रते इल्यास عَلَيْهِ السَّلَام का तज़्किरा दो जगह आया है सूरए अन्आ़म में और सूरए الصّٰفّٰت में । सूरए अन्आ़म में तो सिर्फ़ इन को अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام की फ़ेहरिस्त में शुमार किया है और सूरए الصّٰفّٰت में आप की बिअ़्सत और क़ौम की हिदायत के मुतअ़ल्लिक़ मुख़्तसर त़ौर पर बयान फ़रमाया है।

चुनान्चे, सूरए अन्आ़म में है :

وَمِنْ ذُرِّيَّتِهٖ دَاوٗدَ وَسُلَيْمٰنَ وَاَيُّوْبَ وَيُوْسُفَ وَمُوْسٰى وَهٰرُوْنَ ؕ وَ كَذٰلِكَ نَجْزِى الْمُحْسِنِيْنَ ﴿۸۴﴾ وَزَكَرِيَّا وَيَحْيٰى وَعِيْسٰى وَاِلْيَاسَ ؕ كُلٌّ مِّنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿۸۵﴾ وَاِسْمٰعِيْلَ وَالْيَسَعَ وَيُوْنُسَ وَلُوْطًا ؕ وَكُلًّا فَضَّلْنَا عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ﴿۸۶﴾ (پ۷،الانعام:۸۴ تا ۸۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- और उस की अवलाद में से दावूद और सुलैमान और अय्यूब और यूसुफ़ और मूसा और हारून को और हम ऐसा ही बदला देते हैं नेकूकारों को और ज़करिय्या और यह्या और ईसा और इल्यास को येह सब हमारे कुर्ब के लाइक़ हैं। और इस्माईल और युसअ़ और यूनुस और लूत़ को और हम ने हर एक को उस के वक़्त में सब पर फ़ज़ीलत दी।

और सूरए الصّٰفّٰت में इस त़रह इरशाद फ़रमाया कि

وَاِنَّ اِلْيَاسَ لَمِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿۱۲۳﴾ اِذْ قَالَ لِقَوْمِهٖۤ اَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿۱۲۴﴾ اَتَدْعُوْنَ بَعْلًا وَّتَذَرُوْنَ اَحْسَنَ الْخَالِقِيْنَ ﴿۱۲۵﴾ اللّٰهَ رَبَّكُمْ وَرَبَّ اٰبَآئِكُمُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿۱۲۶﴾ فَكَذَّبُوْهُ فَاِنَّهُمْ لَمُحْضَرُوْنَ ﴿۱۲۷﴾ اِلَّا عِبَادَ اللّٰهِ الْمُخْلَصِيْنَ ﴿۱۲۸﴾ وَتَرَكْنَا عَلَيْهِ فِى الْاٰخِرِيْنَ ﴿۱۲۹﴾ سَلٰمٌ عَلٰۤى اِلْ يَاسِيْنَ ﴿۱۳۰﴾ اِنَّا كَذٰلِكَ نَجْزِى الْمُحْسِنِيْنَ ﴿۱۳۱﴾ اِنَّهٗ مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۱۳۲﴾

(پ۲۳،الصّٰفّٰت:۱۲۳ تا ۱۳۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- और बेशक इल्यास पैग़म्बरों से है। जब उस ने अपनी क़ौम से फ़रमाया क्या तुम डरते नहीं क्या बा'ल को पूजते हो और छोड़ते हो सब से अच्छा पैदा करने वाले **अल्लाह** को जो रब है तुम्हारा

और तुम्हारे अगले बाप दादा का फिर उन्हों ने उसे झुटलाया तो वोह ज़रूर पकड़े आएंगे मगर अल्लाह के चुने हुवे बन्दे और हम ने पिछलों में उस की षना बाक़ी रखी। सलाम हो इल्यास पर बेशक हम ऐसा ही सिला देते हैं नेकों को बेशक वोह हमारे आ'ला दरजे के कामिलुल ईमान बन्दों में है।

हज़रते इल्यास عَلَيْهِ السَّلَام और इन की क़ौम का वाक़िआ़ अगर्चे कुरआने मजीद में बहुत ही मुख़्तसर मज़्कूर है ताहम इस से येह सबक़ मिलता है कि यहूदियों की ज़ेहनिय्यत इस क़दर मस्ख़ हो गई थी कि कोई ऐसी बुराई नहीं थी जिस के करने पर येह लोग ह़रीस न हों बा वुजूद येह कि इन में हिदायत के लिये मुसलसल अम्बियाए किराम तशरीफ़ लाते रहे मगर फिर भी बुत परस्ती, कवाकिब परस्ती और ग़ैरुल्लाह की इ़बादत इन लोगों से न छूट सकी। फिर येह लोग आ'ला दरजे के झूटे, बद अ़हद और रिश्वत ख़ोर भी रहे और अल्लाह तआ़ला के मुक़द्दस नबियों को ईज़ाएं देना और इन को क़त्ल कर देना इन ज़ालिमों का मह़बूब मश्ग़ला रहा है। बहर ह़ाल इन ज़ालिमों के वाक़िआ़त से जहां इन लोगों की बद बख़्ती व कजरवी और मुजरिमाना शक़ावत पर रोशनी पड़ती है, वहीं हम लोगों को येह नसीह़त व इ़ब्रत भी ह़ासिल होती है कि अब जब कि नबुव्वत का सिलसिला ख़त्म हो चुका है तो हमारे लिये बेह़द ज़रूरी है कि ख़ुदा के आख़िरी पैग़ाम या'नी इस्लाम पर मज़्बूती से क़ाइम रह कर यहूदियों के ज़ालिमाना त़रीक़ों की मुख़ालफ़त करें और कुफ़्फ़ार की त़रफ़ से पहुंचने वाली तक्लीफ़ों और मुसीबतों पर सब्र कर के ख़ुदा के मुक़द्दस नबियों के उस्वए ह़सना की पैरवी करें। (واللہ تعالیٰ اعلم)

﴾19﴿ जंगे बद्र की बारिश

जंगे बद्र का मुफ़स्सल ह़ाल तो हम अपनी किताब "**सीरतुल मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم" में मुकम्मल लिख चुके हैं यहां जंगे बद्र में नुस्रते इलाही ने बारिश की सूरत में जो तजल्ली फ़रमाई जिस में मैदाने जंग का नक़्शा ही बदल गया, इस का हम एक जल्वा दिखा रहे हैं।

वाक़िआ़ येह हुवा कि रसूले अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तीन सो तेरह सह़ाबए किराम की जमाअ़त को हमराह ले कर मक़ामे बद्र में तशरीफ़ ले गए और बद्र के क़रीब पहुंच कर मदीने की जानिब वाले रुख़ "**उ़दवतुद्दुन्या**" पर ख़ैमाज़न हो गए और मुशरिकीन आगे बढ़े तो बद्र पहुंच कर मदीने से दूर मक्का की जानिब वाले "उ़दवतुल क़ुसवा" पर उतरे और मह़ाज़े जंग का नक़्शा इस त़रह़ बना कि मुशरिकीन और मुसलमान बिल्कुल आमने सामने थे मगर मुसलमानों का मह़ाज़े जंग इस क़दर रैतीला था कि इन्सानों और घोड़ों दोनों के क़दम रैत में धंसे जा रहे थे और वहां चलना फिरना दुश्वार था और मुशरिकीन का मह़ाज़े जंग बिल्कुल हमवार और पुख़्ता फ़र्श की त़रह़ था। ग़रज़ दुश्मन ता'दाद में तीन गुने से ज़ियादा, सामाने जंग से पूरी त़रह़ मुकम्मल, रस्ल व रसाइल में हर त़रह़ मुत़मइन थे। फिर मज़ीद बरआं इन का मह़ाज़े जंग भी अपने मह़ले वुक़ूअ़ के लिह़ाज़ से निहायत उ़म्दा था। इन सहूलतों के इ़लावा पानी के सब कूंएं भी दुश्मनों ही के क़ब्ज़े में थे। इस लिये मुसलमानों को पानी की बेह़द तक्लीफ़ थी, ख़ुद पीने के लिये कहां से पानी लाएं ? जानवरों को कैसे सैराब करें ? वुज़ू और ग़ुस्ल की क्या सूरत हो ? ग़रज़ सह़ाबए किराम इन्तिहाई फ़िक्रमन्द और परेशान थे। इस मौक़अ़ पर शैत़ान ने मुसलमानों के दिलों में वस्वसा डाल दिया कि ऐ मुसलमानो ! तुम गुमान करते हो कि तुम ह़क़ पर हो और तुम में **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ)का रसूल भी मौजूद है और तुम **अल्लाह** वाले हो और ह़ाल येह है कि मुशरिकीन पानी पर क़ाबिज़ हैं और तुम बिग़ैर वुज़ू व ग़ुस्ल के नमाज़ें पढ़ते हो और तुम और तुम्हारे जानवर प्यास से बे ताब हो रहे हैं।

इस मौक़अ़ पर नागहां नुस्रते आस्मानी ने इस त़रह़ जल्वा सामानी फ़रमाई कि ज़ोरदार बारिश हो गई जिस ने मुसलमानों के लिये रैतीली ज़मीन को जमा कर पुख़्ता फ़र्श की त़रह़ हमवार बना दिया और नशैब की वजह से होज़ नुमा गढ़ों में पानी का ज़ख़ीरा मुहय्या कर दिया और दुश्मनों की ज़मीन को कीचड़ वाली दल-दल बना दिया जिस पर काफ़िरों का चलना फिरना दुश्वार हो गया और मुसलमान इन पानी के ज़ख़ीरों की

वजह से कूंओं से बे नियाज़ हो गए और मुसलमानों के दिलों से शैत़ानी वस्वसा दूर हो गया और लोग मुत़्मइन हो गए।

अल्लाह तआ़ला ने क़ुरआने मजीद में इस अ़जीबो ग़रीब बारिश की मन्ज़र कशी इन अल्फ़ाज़ में फ़रमाई है कि

وَيُنَزِّلُ عَلَيْكُم مِّنَ السَّمَآءِ مَآءً لِّيُطَهِّرَكُم بِهِ وَيُذْهِبَ عَنكُمْ رِجْزَ الشَّيْطٰنِ وَلِيَرْبِطَ عَلٰى قُلُوبِكُمْ وَيُثَبِّتَ بِهِ الْأَقْدَامَ ﴿١١﴾ (پ ۹، الانفال: ۱۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- और आस्मान से तुम पर पानी उतारा कि तुम्हें इस से सुथरा कर दे और शैत़ान की नापाकी तुम से दूर फ़रमा दे और तुम्हारे दिलों की ढारस बन्धाए और इस से तुम्हारे क़दम जमा दे।

इस आयत में **अल्लाह** तआ़ला ने बद्र में इस नागहानी बारिश के चार फ़ाइदे बयान फ़रमाए हैं :

﴾1﴿ ताकि जो बे वुज़ू और बे ग़ुस्ल हों वोह वुज़ू और ग़ुस्ल कर के पाको साफ़ और सुथरे हो जाएं।

﴾2﴿ मुसलमानों के दिलों से शैत़ानी वस्वसे दूर हो जाए।

﴾3﴿ मुसलमानों के दिलों को ढारस मिल जाए कि हम ह़क़ पर हैं और **अल्लाह** तआ़ला ज़रूर हमारी मदद फ़रमाएगा।

﴾4﴿ मह़ाज़े जंग की रैतीली ज़मीन इस क़ाबिल हो जाए कि इस पर क़दम जम सकें अल ग़रज़ जंगे बद्र की येह बारिश मुसलमानों के लिये बाराने रह़मत और कुफ़्फ़ार के लिये सामाने ज़ह़मत बन गई।

दर्से हिदायत :- जंगे बद्र में मुसलमानों को जिन मुश्किल ह़ालात का सामना था ज़ाहिर है कि अ़क़्ले इन्सानी आ़लमे अस्बाब पर नज़र करते हुवे इस के सिवा और क्या फ़ैसला कर सकती थी कि वोह इस जंग को टाल दें। मगर सादिक़ुल ईमान मुसलमानों ने अपने रसूल की मरज़ी पा कर हर क़िस्म की बे सरो सामानी के बा वुजूद ह़क़ व बात़िल की मा'रिका आराई के लिये वालिहाना और फ़िदा काराना जज़्बात के साथ ख़ुद को पेश कर दिया और निहायत षाबित क़दमी और उलूल अ़ज़्मी के साथ मैदाने जंग में कूद पड़े तो **अल्लाह** तआ़ला ने इन मुसलमानों की किस किस त़रह़ इमदाद व

नुस्रत फ़रमाई, इस पर एक नज़र डाल कर ख़ुदावन्दे क़ुद्दूस के फ़ज़्ले अ़ज़ीम की जल्वा सामानियों का नज़ारा कीजिये और येह देखिये कि **अल्लाह** तआ़ला ने इस जंग में किस किस त़रह़ मुसलमानों की मदद फ़रमाई।

﴾1﴿ मुसलमानों की निगाह में दुश्मनों की ता'दाद अस्ल ता'दाद से कम नज़र आई ताकि मुसलमान मरऊ़ब न हों और मुशरिकीन की नज़रों में मुसलमान मुठ्ठी भर नज़र आएं ताकि वोह जंग से जी न चुराएं और ह़क़ व बात़िल की जंग टल न जाए। (अन्फ़ाल)

﴾2﴿ और एक वक़्त में मुसलमान मुशरिकीन की नज़र में दुगने नज़र आए ताकि मुशरिकीन मुसलमानों से शिकस्त खा जाएं। (आले इ़मरान)

﴾3﴿ पहले मुसलमानों की मदद के लिये एक हज़ार फ़िरिश्ते भेजे गए। फिर फ़िरिश्तों की ता'दाद बढ़ा कर तीन हज़ार कर दी गई। फिर फ़िरिश्तों की ता'दाद पांच हज़ार हो गई। (आले इ़मरान)

﴾4﴿ मुसलमानों पर ऐन मा'रिके के वक़्त थोड़ी देर के लिये ग़ुनूदगी और नींद त़ारी कर दी गई जिस के चन्द मिनट बा'द इन की बेदारी ने इन में एक नई ताज़गी और नई रूह़ पैदा कर दी। (अन्फ़ाल)

﴾5﴿ आस्मान से पानी बरसा कर मुसलमानों के लिये रैतीली ज़मीन को पुख़्ता ज़मीन की त़रह़ बना दिया और मुशरिकीन के मह़ाज़े जंग की ज़मीन को कीचड़ और फिस्लन वाली दल-दल बना दिया। (अन्फ़ाल)

﴾6﴿ नतीजए जंग येह हुवा कि ज़रा देर में मुशरिकीन के बड़े बड़े नामी गिरामी पहलवान और जंगजू शहसुवार मारे गए। चुनान्चे, सत्तर मुशरिकीन क़त्ल हुवे और सत्तर गिरिफ़्तार हो कर क़ैदी बनाए गए और मुशरिकीन का लश्कर अपना सारा सामान छोड़ कर मैदाने जंग से भाग निकला और येह सारा सामान मुसलमानों को माले ग़नीमत में मिल गया।

मुसलमान अगर्चे ख़ुदावन्दे क़ुद्दूस की मज़्कूरा बाला इमदाद और उस के फ़ज़्ल से फ़त्ह़याब हुवे, ताहम इस जंग में चौदह मुजाहिदीने इस्लाम ने भी जामे शहादत नोश किया। (زرقانی، ج ۲، ص ۲۷۰)

येह वाक़िआ़ हमें मुतनब्बेह कर रहा है कि अगर मुसलमान ख़ुदा पर भरोसा कर के ह़क़ व बात़िल की जंग में षाबित क़दमी और पा मर्दी के साथ डटे रहें तो ता'दाद की कमी और बे सरो सामानी के बा वुजूद ज़रूर ख़ुदा की मदद उतर पड़ेगी और मुसलमानों को फ़त्ह़ नसीब होगी। येह रब्बुल इ़ज़्ज़त के फ़ज़्लो करम का वोह दस्तूर है कि जिस में ان شاءاللہ تعالٰی क़ियामत तक कोई तब्दीली नहीं होगी। बस शर्त़ येह है कि मुसलमान न बदल जाएं, और इन के इस्लामी ख़स़ाइल व किरदार में कोई तब्दीली न हो। वरना ख़ुदा का दस्तूर तो न बदला है न कभी बदलेगा उस का वा'दा है कि

فَلَنْ تَجِدَ لِسُنَّتِ اللّٰهِ تَبْدِیْلًا ۚ (پ ۲۲، الفاطر: ۴۳)

या'नी हरगिज़ हरगिज़ ख़ुदा के दस्तूर में कोई रद्दो बदल नहीं होगा। (واللہ تعالٰی اعلم)

﴾20﴿ जंगे हुनैन

फ़त्हे़ मक्का के बा'द मुशरिकीने अ़रब की शौकत का क़रीब क़रीब ख़ातिमा हो गया और लोग जूक़ दर जूक़ इस्लाम में दाख़िल होने लगे। येह देख कर "हवाज़ुन" और षक़ीफ़" के दोनों क़बाइल के सरदारों का इजतिमाअ़ हुवा, और उन्हों ने आपस में मश्वरा किया कि मुह़म्मद (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) अपनी क़ौम "क़ुरैश" को मग़लूब कर के मुत़्मइन हो गए हैं। लिहाज़ा अब हमारी बारी है तो क्यूं न हम पेश क़दमी कर के ह़म्ला आवर हो कर इन मुसलमानों का क़ल्अ़ क़म्अ़ कर के रख दें। चुनान्चे, हवाज़ुन और षक़ीफ़ के दोनों क़बाइल ने मालिक बिन औ़फ़ नज़्री को अपना बादशाह बना कर मुसलमानों से जंग की तय्यारी शुरूअ़ कर दी। येह ख़बर पा कर **10** शव्वाल सि. **8** हि. मुत़ाबिक़ फ़रवरी सि. 630 ई. को दस हज़ार मुहाजिरीन व अन्सार और दो हज़ार मक्का के नौ मुस्लिम और अस्सी वोह मुशरिकीन जो इस्लाम क़बूल न करने के बा वुजूद अपनी ख़्वाहिश से मुसलमानों के रफ़ीक़ बन गए। कुल तक़रीबन बारह हज़ार आदमियों का लश्कर साथ ले कर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم "मक़ामे हुनैन" पहुंच गए। जब दुश्मन के मुक़ाबले में सफ़ आराई का वक़्त आया तो आप ने मुहाजिरीन का परचम ह़ज़रते

अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को दिया और अन्सार में बनी ख़ज़्रज का अ़लमबरदार हज़रते हुब्बाब बिन मुन्ज़िर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को बनाया और औस का झन्डा हज़रते उसैद बिन हुज़ैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को इनायत फ़रमाया और ख़ुद नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ब नफ़्से नफ़ीस बदन पर हथियार सजा कर डबल ज़िर्ह पहन कर और सरे अन्वर पर आहिनी टोपी रख कर अपने ख़च्चर पर सुवार हुवे और इस्लामी फ़ौज की कमान संभाल ली।

मुसलमानों के दिलों में अपने लश्कर की अकषरिय्यत देख कर कुछ घमन्ड पैदा हो गया यहां तक कि बा'ज़ लोगों की ज़बान से बिग़ैर اِنْ شَآءَ اللّٰہ कहे येह लफ़्ज़ निकल गया कि आज हमारी क़ुव्वत को कोई शिकस्त नहीं दे सकता। मुसलमानों का अपनी फ़ौज की अ़ददी अकषरिय्यत और अ़सकरी त़ाक़त पर भरोसा कर के फ़ख़्र करना ख़ुदावन्दे तआ़ला को पसन्द नहीं आया लिहाज़ा मुसलमानों पर ख़ुदा की त़रफ़ से येह ताज़ियानए इ़ब्रत लगा कि जब जंग शुरूअ़ हुई तो अचानक दुश्मन की इन टोलियों ने जो गोरीला जंग के लिये पहाड़ों की मुख़्तलिफ़ घाटियों में घात लगाए बैठी थी इस ज़ोरो शोर के साथ तीर अन्दाज़ी शुरूअ़ कर दी कि मुसलमान तीरों की बारिश से बद ह़वास हो गए और इस नागहानी तीर बारानी की बोछाड़ से उन की सफ़ें दरहम बरहम हो गई और थोड़ी ही देर में मुसलमानों के क़दम उखड़ गए और हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और चन्द मुहाजिरीन व अन्सार के सिवा तमाम लश्कर मैदाने जंग से फ़रार हो गया।

इस ख़त़रनाक सूरते ह़ाल और नाज़ुक घड़ी में हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अपने ख़च्चर पर सुवार बराबर आगे बढ़ते चले जा रहे थे और रज्ज़ का येह शे'र बुलन्द आवाज़ से पढ़ रहे थे

انا النبی لا کذب انا ابن عبدالمطلب

या'नी मैं नबी हूं येह कोई झूटी बात नहीं, मैं अ़ब्दुल मुत़्त़लिब का फ़रज़न्द हूं।

बिल आख़िर हुज़ूर के हुक्म पर हज़रते अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ब आवाज़े बुलन्द भागे हुवे मुसलमानों को पुकारा और یا معشر الانصار یا اصحاب بیعۃ الرضوان कह कर ललकारा। हज़रते अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

की येह ललकार और पुकार सुन कर तमाम जां निषार मुसलमान पलट पड़े और परचमे नबुव्वत के नीचे जम्अ़ हो कर ऐसी जां निषारी के साथ दादे शुजाअ़त देने लगे कि दम ज़दन में मैदाने जंग का नक़्शा ही पलट गया और येह नतीजा निकला कि शिकस्त के बा'द मुसलमान फ़त्ह़मन्द हो गए और परचमे इस्लाम सर बुलन्द हो गया, हज़ारों कुफ़्फ़ार गिरिफ़्तार हो गए और बहुत से तल्वार का लुक़्मा बन गए और बे शुमार माले ग़नीमत मुसलमानों के हाथ आया और कुफ़्फ़ारे अ़रब की त़ाक़त व शौकत का जनाज़ा निकल गया।

जंगे हुनैन में मुसलमानों के अपनी कषरते ता'दाद पर ग़ुरूर के अन्जाम में शिकस्त और फिर फ़त्ह़ व नुस्रत का ह़ाल ख़ुदावन्दे ज़ुल जलाल ने क़ुरआने करीम में इन अल्फ़ाज़ से ज़िक्र फ़रमाया है कि

لَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ فِيْ مَوَاطِنَ كَثِيْرَةٍ ۙ وَّيَوْمَ حُنَيْنٍ ۙ اِذْ اَعْجَبَتْكُمْ كَثْرَتُكُمْ فَلَمْ تُغْنِ عَنْكُمْ شَيْـًٔا وَّضَاقَتْ عَلَيْكُمُ الْاَرْضُ بِمَا رَحُبَتْ ثُمَّ وَلَّيْتُمْ مُّدْبِرِيْنَ ﴿٢٥﴾ ثُمَّ اَنْزَلَ اللّٰهُ سَكِيْنَتَهٗ عَلٰى رَسُوْلِهٖ وَعَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ وَاَنْزَلَ جُنُوْدًا لَّمْ تَرَوْهَا وَعَذَّبَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ؕ وَذٰلِكَ جَزَآءُ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٢٦﴾ (پ ١٠، التوبہ: ٢٥)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- बेशक **अल्लाह** ने बहुत जगह तुम्हारी मदद की और हुनैन के दिन जब तुम अपनी कषरत पर इतरा गए थे तो वोह तुम्हारे कुछ काम न आई और ज़मीन इतनी वसीअ़ हो कर तुम पर तंग हो गई फिर तुम पीठ दे कर फिर गए फिर **अल्लाह** ने अपनी तस्कीन उतारी अपने रसूल पर और मुसलमानों पर और वोह लश्कर उतारे जो तुम ने न देखे और काफ़िरों को अ़ज़ाब दिया और मुन्किरों की येही सज़ा है।

जंगे हुनैन का येह वाक़िआ़ दलील है कि मुसलमानों को मैदाने जंग में फ़त्ह़ व कामरानी फ़ौजों की कषरत और सामाने जंग की फ़िरावानी से नहीं मिलती। बल्कि फ़त्ह़ व नुस्रत का दारो मदार दर ह़क़ीक़त परवर दगार के फ़ज़्ले अ़ज़ीम पर है। अगर वोह रब्बे करीम अपना फ़ज़्ले अ़ज़ीम फ़रमा दे तो छोटे से छोटा लश्कर बड़ी से बड़ी फ़ौज पर ग़ालिब हो कर

मुज़फ़्फ़र व मन्सूर हो सकता है और अगर उस का फ़ज़्लो करम शामिले ह़ाल न हो तो बड़े से बड़ा लश्कर छोटी से छोटी फ़ौज से मग़लूब हो कर शिकस्त खा जाता है। लिहाज़ा मुसलमानों को लाज़िम है कि कभी भी अपने लश्कर की कष़रत पर ए'तिमाद न रखें बल्कि हमेशा ख़ुदावन्दे क़ुद्दूस के फ़ज़्लो करम पर भरोसा रखें। (واللہ تعالٰی اعلم)

﴾21﴿ ग़ारे ष़ौर

हिजरत की रात हु़ज़ूर रह़मते आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपने दौलत ख़ाने से निकल कर मक़ामे "ह़ज़ूरह" के पास खड़े हो गए और बड़ी ह़सरत के साथ "का'बए मुकर्रमा" को देखा और फ़रमाया कि ऐ शहरे मक्का ! तू मुझ को तमाम दुन्या से ज़ियादा प्यारा है अगर मेरी क़ौम मुझ को तुझ से न निकालती तो मैं तेरे सिवा और किसी जगह सुकूनत पज़ीर न होता। फिर ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से पहले ही क़रार दाद हो चुकी थी, वोह भी उसी जगह आ गए और इस ख़याल से कि कुफ़्फ़ार हमारे क़दमों के निशान से हमारा रास्ता पहचान कर हमारा पीछा न करें फिर येह भी देखा कि हु़ज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पाए नाज़ुक ज़ख़्मी हो गए हैं ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने आप को कन्धों पर सुवार कर लिया और इस त़रह़ ख़ारदार झाड़ियों और नोकदार पथ्थरों वाली पहाड़ियों को रौंदते हुवे उसी रात ग़ारे ष़ौर पहुंचे। (مدارج النبوۃ، بحث "غارِ ثور" ج۲، ص ۵۸)

ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه पहले ख़ुद ग़ार में दाख़िल हुवे और अच्छी त़रह़ ग़ार की सफ़ाई की और अपने कपड़ों को फाड़ फाड़ कर ग़ार के तमाम सूराख़ों को बन्द किया फिर हु़ज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ग़ार के अन्दर तशरीफ़ ले गए और ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه की गोद में अपना सर मुबारक रख कर सो गए। ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने एक सूराख़ को अपनी एड़ी से बन्द कर रखा था। सूराख़ के अन्दर से एक सांप ने बार बार यारे ग़ार के पाउं में काटा। मगर जां निषार ने इस ख़याल से पाउं नहीं हटाया कि रह़मते आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ख़्वाबे राह़त में ख़लल न पड़ जाए। मगर दर्द की शिद्दत से यारे ग़ार के आंसूओं की धार के चन्द क़त़रात

सरवरे काएनात صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के रुख़्सार पर निषार हो गए। जिस से रह़मते आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم बेदार हो गए और अपने यारे ग़ार को रोता देख कर बे क़रार हो गए। पूछा ! अबू बक्र ! क्या हुवा ? अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह ! मुझे सांप ने काट लिया है येह सुन कर हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ज़ख़्म पर अपना लुआ़बे दहन लगा दिया, जिस से फ़ौरन ही सारा दर्द जाता रहा और ज़ख़्म भी अच्छा हो गया। तीन रात हुज़ूर रह़मते आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इस ग़ार में रोनक़ अफ़रोज़ रहे। कुफ़्फ़ारे मक्का ने आप की तलाश में मक्का का चप्पा चप्पा छान मारा। यहां तक कि ढूंडते ढूंडते ग़ारे षौर तक पहुंच ही गए मगर ग़ार के मुंह पर ह़िफ़ाज़ते ख़ुदावन्दी का पहरा लगा हुवा था। या'नी ग़ार के मुंह पर मकड़ी ने जाला तन दिया था और किनारे पर कबूतरी ने अन्डे भी दे रखे थे। येह मन्ज़र देख कर कुफ़्फ़ार आपस में कहने लगे कि अगर इस ग़ार में कोई इन्सान मौजूद होता तो न मकड़ी जाला तनती, न कबूतरी यहां अन्डे देती। कुफ़्फ़ार की आहट पा कर ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ कुछ घबरा गए और अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह ! अब हमारे दुश्मन इस क़दर क़रीब आ गए हैं कि अगर वोह अपने क़दमों पर नज़र डालेंगे तो हम को देख लेंगे। हुज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने फ़रमाया :

لَا تَحْزَنْ اِنَّ اللّٰهَ مَعَنَا ۚ (پ۱۰،التوبہ:۴۰) मत घबराओ, ख़ुदा हमारे साथ है।

फिर ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ पर सकीना उतर पड़ा कि वोह बिल्कुल ही मुत़्मइन और बे ख़ौफ़ हो गए और चौथे दिन यकुम रबीउ़ल अव्वल दो शम्बा के रोज़ हुज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ग़ार से बाहर तशरीफ़ लाए और मदीनए मुनव्वरा को रवाना हो गए। इस ग़ारे षौर के वाक़िए को क़ुरआने मजीद में इन लफ़्ज़ों में बयान फ़रमाया :

اِلَّا تَنْصُرُوْهُ فَقَدْ نَصَرَهُ اللّٰهُ اِذْ اَخْرَجَهُ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا ثَانِیَ اثْنَیْنِ اِذْ
هُمَا فِی الْغَارِ اِذْ یَقُوْلُ لِصَاحِبِهٖ لَا تَحْزَنْ اِنَّ اللّٰهَ مَعَنَا ۚ فَاَنْزَلَ اللّٰهُ
سَكِیْنَتَهٗ عَلَیْهِ وَ اَیَّدَهٗ بِجُنُوْدٍ لَّمْ تَرَوْهَا وَ جَعَلَ كَلِمَةَ الَّذِیْنَ كَفَرُوا
السُّفْلٰى ؕ وَ كَلِمَةُ اللّٰهِ هِیَ الْعُلْیَا ؕ وَ اللّٰهُ عَزِیْزٌ حَكِیْمٌ ﴿۴۰﴾ (پ۱۰،التوبہ:۴۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- अगर तुम महबूब की मदद न करो तो बेशक अल्लाह ने उन की मदद फ़रमाई जब काफ़िरों की शरारत से उन्हें बाहर तशरीफ़ ले जाना हुवा सिर्फ़ दो जान से जब वोह दोनों ग़ार में थे जब अपने यार से फ़रमाते थे ग़म न खा बेशक अल्लाह हमारे साथ है तो अल्लाह ने उस पर अपना सकीना (इत्मीनान) उतारा और उन फ़ौजों से उस की मदद की जो तुम ने न देखीं और काफ़िरों की बात नीचे डाली अल्लाह ही का बोल बाला है और अल्लाह ग़ालिब हिक्मत वाला है।

दर्से हिदायत :- येह आयत और ग़ारे षौर का वाक़िआ हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की फ़ज़ीलत और उन की महब्बत व जां निषारिये रसूल का वोह निशाने आ'ज़म है जो क़ियामत तक आफ़्ताबे आलमताब की तरह दरख़्शां और रोशन रहेगा। क्यूं न हो कि परवर दगार ने इन्हें अपने रसूल के "यारे ग़ार" होने की सनदे मुस्तनद क़ुरआन में दे दी है जो कभी हरगिज़ हरगिज़ नहीं मिट सकती है।

سُبْحٰنَ اللّٰہ हज़रते सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का येह वोह फ़ज़्ल व शरफ़ है जो न किसी को मिला है न किसी को मिलेगा।

मर्तबा हज़रते सिद्दीक़ का हो किस से बयां
हर फ़ज़ीलत के वोह जामेअ़ हैं नबुव्वत के सिवा

﴾22﴿ मस्जिदे ज़िरार जला दी गई

मुनाफ़िक़ीन को येह तो जुरअत होती न थी कि अ़लानिय्या इस्लाम की मुख़ालफ़त करते। मगर वोह लोग दरे पर्दा इस्लाम की बेख़कनी में हमेशा मसरूफ़ रहते और इस कोशिश में लगे रहते थे कि मुसलमानों में इख़्तिलाफ़ और फूट डाल कर इस्लाम को नुक़्सान पहुंचाएं। चुनान्चे, इस मक़्सद की तक्मील के लिये जहां इन बे ईमानों ने दूसरी बहुत सी फ़ितना सामानियां बरपा कर रखी थीं, इन में से एक वाक़िआ रजब 9 हि. में भी रूनुमा हुवा जो दर हक़ीक़त निहायत ही ख़तरनाक साज़िश थी। मगर हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मुनाफ़िक़ीन की इस ख़ौफ़नाक मुहिम से ब ज़रिअए वह्य आगाह फ़रमा दिया और दुश्मनाने इस्लाम की सारी स्कीमों पर पानी फिर गया।

इस का वाक़िआ़ येह है कि रजब 9 हि. में हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को येह इत्तिलाअ़ मिली कि "तबूक" के मैदान में जो मदीनए मुनव्वरा से चौदह मन्ज़िल पर दिमश्क़ के रास्ते पर वाक़ेअ़ है। "हरक़िल" शाहे रूम मुसलमानों के मुक़ाबले के लिये लश्कर जम्अ़ कर रहा है आप ने अ़रब में सख़्त गरमी और क़ह्त़ के बा वुजूद जिहाद के लिये ए'लान फ़रमा दिया और मुसलमान जूक़ दर जूक़ शौक़े जिहाद में मदीने के अन्दर जम्अ़ होने लगे।

अभी नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तय्यारियों ही में मसरूफ़ थे कि मुनाफ़िक़ीन ने इस वक़्त से फ़ाइदा उठाते हुवे सोचा कि मस्जिदे "क़ुबा" के मुक़ाबले में इस ह़ीले से एक मस्जिद तय्यार करें कि जो लोग किसी उ़ज़्र की वजह से मस्जिदे नबवी में न जा सकें वोह लोग यहां नमाज़ पढ़ लिया करें और मुनाफ़िक़ों का ख़ास मक़्सद येह था कि इस मस्जिद को इस्लाम की तख़रीब कारी के लिये अड्डा बना कर और इस में जम्अ़ हो कर इस्लाम के ख़िलाफ़ साज़िशें करते और स्कीमें बनाते रहें और शाहे रूम की खुफ़्या इमदादों और अस्लेह़ा वग़ैरा के ज़ख़ीरों का इस मस्जिद को मर्कज़ बनाएं और यहीं से इस्लाम के ख़िलाफ़ रेशा दवानियों का जाल पूरे आ़लमे इस्लाम में बिछाते रहें। येह सोच कर मुनाफ़िक़ीन ख़िदमते अक़्दस में ह़ाज़िर हुवे और कहने लगे कि हम लोगों ने ज़ईफ़ों और कमज़ोरों के लिये क़रीब में ही एक मस्जिद बनाई है अब हमारी तमन्ना है कि हुज़ूर वहां चल कर इस में नमाज़ पढ़ दें तो वोह मस्जिद इन्दल्लाह मक़्बूल हो जाएगी। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया इस वक़्त तो मैं एक बहुत ही अहम जिहाद के लिये मदीने से बाहर जा रहा हूं, वापसी पर देखा जाएगा।

मगर जब आप बख़ैरिय्यत और फ़त्ह़ व कामरानी के साथ मदीना वापस तशरीफ़ लाए तो वह़्ये इलाही के ज़रीए़ इस मस्जिद की ता'मीर का ह़क़ीक़ी सबब आप को मा'लूम हो चुका था और मुनाफ़िक़ीन की खुफ़्या और ख़त़रनाक साज़िश बे निक़ाब हो चुकी थी। चुनान्चे, आप ने मदीनए मुनव्वरा पहुंचते ही सब से पहले येह काम किया कि सह़ाबए

किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की एक जमाअ़त को येह हुक्म दे कर वहां भेजा कि वोह वहां जाएं और उस मस्जिद को आग लगा कर ख़ाक सियाह कर दें।

चूंकि इस मस्जिद की बुन्याद ह़क़ीक़तन तक़्वा और लिल्लाहिय्यत की जगह तफ़रीक़े बैनुल मुस्लिमीन और तख़रीबे इस्लाम पर रखी गई थी इस लिये बिलाशुबा वोह इस की मुस्तह़िक़ थी कि इस को जला कर बरबाद कर दिया जाए और दर ह़क़ीक़त इस तख़रीब कारी के अड्डे को मस्जिद कहना ह़क़ीक़त के ख़िलाफ़ था इस लिये कुरआने मजीद ने इस ह़क़ीक़ते ह़ाल को ज़ाहिर करते हुवे ए'लान फ़रमा दिया कि येह मस्जिदे तक़्वा नहीं बल्कि **"मस्जिदे ज़िरार"** कहलाने की मुस्तह़िक़ है

मुलाह़ज़ा फ़रमाइये इस मस्जिद के बारे में कुरआने मजीद के ग़ज़बनाक तेवर और पुर जलाल अल्फ़ाज़ :

وَالَّذِیْنَ اتَّخَذُوْا مَسْجِدًا ضِرَارًا وَّ كُفْرًا وَّ تَفْرِیْقًۢا بَیْنَ الْمُؤْمِنِیْنَ
وَ اِرْصَادًا لِّمَنْ حَارَبَ اللّٰهَ وَ رَسُوْلَهٗ مِنْ قَبْلُؕ وَ لَیَحْلِفُنَّ اِنْ اَرَدْنَاۤ
اِلَّا الْحُسْنٰىؕ وَ اللّٰهُ یَشْهَدُ اِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ﴿۱۰۷﴾ لَا تَقُمْ فِیْهِ اَبَدًاؕ
لَمَسْجِدٌ اُسِّسَ عَلَى التَّقْوٰى مِنْ اَوَّلِ یَوْمٍ اَحَقُّ اَنْ تَقُوْمَ فِیْهِؕ
فِیْهِ رِجَالٌ یُّحِبُّوْنَ اَنْ یَّتَطَهَّرُوْاؕ وَ اللّٰهُ یُحِبُّ الْمُطَّهِّرِیْنَ ﴿۱۰۸﴾ (پ۱۱، التوبۃ:۱۰۷۔۱۰۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- और वोह जिन्हों ने मस्जिद बनाई नुक़्सान पहुंचाने को और कुफ़्र के सबब और मुसलमानों में तफ़रिक़ा डालने को और इस के इन्तिज़ार में जो पहले से **अल्लाह** और उस के रसूल का मुख़ालिफ़ है और वोह ज़रूर क़समें खाएंगे कि हम ने तो भलाई चाही और **अल्लाह** गवाह है कि वोह बेशक झूटे हैं उस मस्जिद में तुम कभी खड़े न होना बेशक वोह मस्जिद कि पहले ही दिन से जिस की बुन्याद परहेज़गारी पर रखी गई है। वोह इस क़ाबिल है कि तुम उस में खड़े हो उस में वोह लोग हैं कि ख़ूब सुथरा होना चाहते हैं और सुथरे **अल्लाह** को प्यारे हैं।

दर्से हिदायत :- एक ही अ़मल, अ़मल करने वाले की निय्यत के फ़र्क़ से अच्छा भी हो सकता है और बुरा भी, त़य्यिब भी बन सकता है और ख़बीष भी।

मस्जिद की ता'मीर एक अ़मले ख़ैर है मगर जब "लि-वजहिल्लाह" की निय्यत हो तो षवाब ही षवाब है और अगर "शर व फ़साद" की निय्यत हो तो अ़ज़ाब ही अ़ज़ाब है। मस्जिदे क़ुबा और मस्जिदे नबवी की ता'मीर मक़्बूले बारगाहे इलाही और बाइषे षवाब हुई। क्यूंकि इन दोनों मस्जिदों के बनाने वालों की निय्यत ख़ुदा की रिज़ा और इन दोनों मस्जिदों की बुन्याद तक़्वा पर रखी गई थी और मुनाफ़िक़ों की बनाई हुई मस्जिद मर्दूदे बारगाहे इलाही हो गई और सरासर बाइषे अ़ज़ाब बन गई क्यूंकि इस मस्जिद को ता'मीर करने वालों की निय्यत रिज़ाए इलाही नहीं थी और इस मस्जिद की बुन्याद तक़्वा पर नहीं रखी गई थी बल्कि उन लोगों की ग़रज़ फ़ासिद तख़रीबे इस्लाम और तफ़रीक़े बैनुल मुस्लिमीन थी, तो येह मस्जिद क़त्अ़न ग़ैर मक़्बूल हो गई। यहां तक कि **अल्लाह** तआ़ला ने अपने रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को इस मस्जिद में क़दम रखने की भी मुमानअ़त फ़रमा दी और हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने इस मस्जिद को न सिर्फ़ वीरान फ़रमा दिया बल्कि इस को जला कर नैस्तो नाबूद कर डाला।

इस से षाबित होता है कि इस ज़माने में भी अगर किसी मस्जिद को गुमराह फ़िर्क़ों वाले अहले ह़क़ के ख़िलाफ़ कमीन गाह और जासूसी का मर्कज़ बना कर अहले ह़क़ के ख़िलाफ़ फ़ितना पर्दाज़ियां करने लगें तो मुसलमानों पर लाज़िम है कि उस मस्जिद में नमाज़ के लिये न जाएं बल्कि उस का बाइकाट कर के उस को वीरान कर दें। और हरगिज़ हरगिज़ न उस मस्जिद में नमाज़ पढ़ें, न उस की ता'मीर व आबादकारी में कोई इमदाद व तआ़वुन करें।

या फिर तमाम मुसलमान मिल कर गुमराह फ़िर्क़ों को इस मस्जिद से बे दख़्ल कर दें और इस मस्जिद को अपने क़ब्ज़े में ले कर गुमराह का तसल्लुत़ ख़त्म कर दें ताकि इन लोगों के शरो फ़साद और फ़ितना अंगेज़ियों से मस्जिद हमेशा के लिये पाक हो जाए। (واللّٰہ تعالٰی اعلم)

﴾23﴿ फ़िरऔन का ईमान मक़्बूल नहीं हुवा

फ़िरऔन जब अपने लश्करों के साथ दरिया में ग़र्क़ होने लगा तो डूबते वक़्त तीन मरतबा उस ने अपने ईमान का ए'लान किया मगर उस का ईमान मक़्बूल नहीं हुवा और वोह कुफ़्र ही की हालत में मरा। लिहाज़ा बा'ज़ लोगों ने जो येह कहा है कि फ़िरऔन मोमिन हो कर मरा, उन का क़ौल क़ाबिले ए'तिबार नहीं है। (تفسیر صاوی، ج۳، ص ۸۹۱،پ ۱۱،یونس:۹۰)

डूबते वक़्त एक मरतबा फ़िरऔन ने "اٰمَنْتُ" कहा या'नी मैं ईमान लाया। दूसरी मरतबा اَنَّهٗ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا الَّذِیْۤ اٰمَنَتْ بِهٖ بَنُوْۤا اِسْرَآءِیْلَ कहा या'नी उस **अल्लाह** के सिवा जिस पर बनी इस्राईल ईमान लाए दूसरा कोई खुदा नहीं है और तीसरी बार येह कहा कि وَاَنَا مِنَ الْمُسْلِمِیْنَ۝۹۰ या'नी मैं मुसलमान हूं। (پ ۱۱، یونس:۹۰)

रिवायत है कि हज़रते जिब्रईल عَلَیْہِ السَّلَام ने फ़िरऔन के मुंह में खुदावन्दे तआला के हुक्म से कीचड़ भर दी और वोह अच्छी तरह कलिमए ईमान अदा नहीं कर सका। (تفسیر جلالین،ص ۱۷۸،پ ۱۱، یونس:۹۰)

येह भी एक हिकायत मन्क़ूल है कि जब फ़िरऔन तख़्ते सल्तनत पर बैठ कर खुदाई का दा'वा करता था तो हज़रते जिब्रईल عَلَیْہِ السَّلَام आदमी की शक्ल में उस के पास येह फ़तवा तलब करने के लिये तशरीफ़ ले गए कि क्या फ़रमाते हैं बादशाह उस ग़ुलाम के बारे में जो अपने मौला के दिये हुवे माल और उस की ने'मतों में पला बढ़ा फिर उस ने अपने मौला की नाशुक्री की और उस के हुक़ूक़ का इन्कार करते हुवे खुद अपनी सियादत का ए'लान कर दिया बल्कि खुदाई का दा'वा करने लगा तो फ़िरऔन ने उस का जवाब येह लिखा कि ऐसा ग़ुलाम जो अपने मौला की नाशुक्री कर के अपने मौला का बाग़ी हो गया उस की सज़ा येही है कि वोह दरिया में ग़र्क़ कर दिया जाए चुनान्चे, जब डूबते वक़्त फ़िरऔन पर मौत का ग़र-ग़रा सुवार हो गया तो हज़रते जिब्रईल عَلَیْہِ السَّلَام ने फ़िरऔन का वोह दस्तख़ती फ़तवा उस को दिखाया इस के बा'द फ़िरऔन मर गया।

(تفسیر صاوی،ج۳، ص ۸۹۱، پ ۱۱، یونس:۹۰)

अल्लाह तआला ने कुरआने अज़ीम में इस वाक़िए का ज़िक्र फ़रमाते हुवे इरशाद फ़रमाया कि

وَجٰوَزْنَا بِبَنِیْۤ اِسْرَآءِیْلَ الْبَحْرَ فَاَتْبَعَهُمْ فِرْعَوْنُ وَ جُنُوْدُهٗ بَغْیًا وَّ
عَدْوًاؕ حَتّٰۤى اِذَاۤ اَدْرَكَهُ الْغَرَقُۙ قَالَ اٰمَنْتُ اَنَّهٗ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا الَّذِیْۤ
اٰمَنَتْ بِهٖ بَنُوْۤا اِسْرَآءِیْلَ وَ اَنَا مِنَ الْمُسْلِمِیْنَ ﴿۹۰﴾ آٰلْـٰٔنَ وَ قَدْ عَصَیْتَ
قَبْلُ وَ كُنْتَ مِنَ الْمُفْسِدِیْنَ ﴿۹۱﴾ فَالْیَوْمَ نُنَجِّیْكَ بِبَدَنِكَ لِتَكُوْنَ لِمَنْ
خَلْفَكَ اٰیَةًؕ وَ اِنَّ كَثِیْرًا مِّنَ النَّاسِ عَنْ اٰیٰتِنَا لَغٰفِلُوْنَ ﴿۹۲﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- और हम बनी इस्राईल को दरिया पार ले गए तो फ़िरऔ़न और उस के लश्करों ने इन का पीछा किया सरकशी और ज़ुल्म से यहां तक कि जब उसे डूबने ने आ लिया, बोला : मैं ईमान लाया कि कोई सच्चा मा'बूद नहीं सिवा उस के जिस पर बनी इस्राईल ईमान लाए और मैं मुसलमान हूं क्या अब और पहले से नाफ़रमान रहा और तू फ़सादी था आज हम तेरी लाश को इतरा देंगे कि तू अपने पिछलों के लिये निशानी हो और बेशक लोग हमारी आयतों से ग़ाफ़िल हैं ।

फ़िरऔ़न के ग़र्क़ हो जाने के बा'द भी बनी इस्राईल पर उस की हैबत का इस दरजा दब-दबा छाया हुवा था कि लोगों को फ़िरऔ़न की मौत में शको शुबा होने लगा तो अल्लाह तआला ने फ़िरऔ़न की लाश को खुश्की पर पहुंचा दिया और दरिया की मौजों ने इस की लाश को साहिल पर डाल दिया ताकि लोग इस को देख कर इस की मौत का यक़ीन भी कर लें और इस के अन्जाम से इ़ब्रत भी ह़ासिल करें ।

मश्हूर है कि इस के बा'द से ही पानी ने लाशों को क़बूल करना छोड़ दिया और हमेशा पानी लाशों को ऊपर तैराता रहता है या किनारे पर फेंक देता है । (تفسیر صاوی، ج۳، ص ۸۹۲،پ ۱۱، یونس:۹۲)

दर्से हिदायत :- फ़िरऔ़न ने बा वुजूद येह कि तीन मरतबा अपने ईमान का ए'लान किया मगर उस का ईमान फिर भी मक़्बूल नहीं हुवा इस की क्या वजह है ? तो इस के बारे में मुफ़स्सिरीन ने तीन वजहें बयान फ़रमाईं हैं :

﴾अव्वल﴿ येह कि फ़िरऔ़न ने अपने ईमान का इक़रार उस वक़्त किया जब अ़ज़ाबे इलाही उस के सर पर मुसल्लत़ हो गया और मौत का ग़र-ग़रा उस पर त़ारी हो गया और **अल्लाह** तआ़ला का इरशाद है कि

فَلَمْ يَكُ يَنْفَعُهُمْ اِيْمَانُهُمْ لَمَّا رَاَوْا بَاْسَنَا ؕ (پ۲۴،المومن:۸۵)

या'नी **अल्लाह** तआ़ला का येह दस्तूर है कि जब किसी क़ौम पर अ़ज़ाब आ जाता है तो उस वक़्त उन का ईमान लाना उन को कुछ भी नफ़्अ़ नहीं पहुंचाता।

चूंकि फ़िरऔ़न, अ़ज़ाब आ जाने के बा'द, जब मौत का ग़र-ग़रा सुवार हो गया, उस वक़्त ईमान लाया इस लिये **अल्लाह** तआ़ला ने फ़िरऔ़न के ईमान को क़बूल नहीं फ़रमाया और ह़ज़रते जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام को हुक्म दिया कि उस के मुंह में कीचड़ भर दें और येह कह दें कि अब तू ईमान लाया है ? ह़ालांकि इस से पहले तू हमेशा ईमान लाने से इन्कार करता रहा और लोगों को गुमराह कर के फ़साद फेलाता रहा।

﴾दुवुम﴿ दूसरा क़ौल येह है कि ख़ुदा की तौह़ीद के साथ रसूल की रिसालत पर भी ईमान लाना ज़रूरी है और फ़िरऔ़न ने لَآ اِلٰهَ اِلَّا الَّذِيْٓ اٰمَنَتْ بِهٖ بَنُوْٓا اِسْرَآءِيْلَ (پ۱۱،یونس:۹۰) कहा या'नी सिर्फ़ ख़ुदा की वह़दानिय्यत का इक़रार किया और ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام की रिसालत पर ईमान नहीं लाया। इस लिये वोह मोमिन न हो सका।

﴾सिवुम﴿ तीसरा क़ौल येह है कि फ़िरऔ़न ने ईमान लाने के क़स्द से कलिमए ईमान का तलफ़्फ़ुज़ नहीं किया था बल्कि सिर्फ़ ग़र्क़ से बचने के लिये येह कलिमा कहा था जैसा कि इस की आ़दत थी कि हर मुसीबत और अ़ज़ाब नाज़िल होने के वक़्त येह गिड़ गिड़ा कर ख़ुदा की त़रफ़ रुजूअ़ करता था। लेकिन मुसीबत टल जाने के बा'द फिर اَنَا رَبُّكُمُ الْاَعْلٰى ﴿ۖ۲۴﴾ (پ۳۰،النّٰزعٰت:۲۴) कह कर अपनी ख़ुदाई का डंका बजाया करता था।

मा'लूम हुवा कि सिर्फ़ कलिमए इस्लाम का तलफ़्फ़ुज़ जब कि ईमान लाने की निय्यत न हो बल्कि जान बचाने के लिये कहा हो, ईमान के लिये काफ़ी नहीं। लिहाज़ा फ़िरऔन का ईमान मक़्बूल नहीं हुवा और सहीह़ क़ौल येही है कि **फ़िरऔन कुफ़्र ही की ह़ालत में ग़र्क़ हो कर मरा**। इस पर कुरआने मजीद की आयतें और ह़दीषें शाहिदे अ़द्ल हैं। इसी लिये अ़ल्लामा सावी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने अपनी तफ़्सीर में तह़रीर फ़रमाया कि **जिन लोगों ने येह कहा कि फ़िरऔन मोमिन हो कर मरा, उन लोगों का क़ौल क़ाबिले ए'तिबार नहीं।** (واللہ تعالٰی اعلم)

﴾24﴿ नूह़ عَلَيْهِ السَّلَام की कश्ती

ह़ज़रते नूह़ عَلَيْهِ السَّلَام साढ़े नव सो बरस तक अपनी क़ौम को खुदा का पैग़ाम सुनाते रहे मगर इन की बद नसीब क़ौम ईमान नहीं लाई बल्कि त़रह़ त़रह़ से आप की तह़क़ीर व तज़्लील करती रही और क़िस्म क़िस्म की अज़िय्यतों और तक्लीफ़ों से आप को सताती रही यहां तक कि कई बार उन ज़ालिमों ने आप को इस क़दर ज़दो कोब किया कि आप को मुर्दा ख़याल कर के कपड़ों में लपेट कर मकान में डाल दिया। मगर आप फिर मकान से निकल कर दीन की तब्लीग़ फ़रमाने लगे। इसी त़रह़ बारहा आप का गला घोंटते रहे यहां तक कि आप का दम घुटने लगता और आप बे होश हो जाते मगर इन ईज़ाओं और मुसीबतों पर भी आप येही दुआ़ फ़रमाया करते थे कि ऐ मेरे परवर दगार ! तू मेरी क़ौम को बख़्श दे और हिदायत अ़ता फ़रमा क्यूंकि येह मुझ को नहीं जानते हैं।

और क़ौम का येह ह़ाल था कि हर बूढ़ा बाप अपने बच्चों को येह वसिय्यत कर के मरता था की नूह़ (عَلَيْهِ السَّلَام) बहुत पुराने पागल हैं इस लिये कोई इन की बातों को न सुने और न इन की बातों पर ध्यान दे, यहां तक कि एक दिन येह वह़्य नाज़िल हो गई कि ऐ नूह़ ! अब तक जो लोग मोमिन हो चुके हैं उन के सिवा और दूसरे लोग कभी हरगिज़ हरगिज़ ईमान नहीं लाएंगे। इस के बा'द आप अपनी क़ौम के ईमान लाने से ना उम्मीद हो गए। और आप ने इस क़ौम की हलाकत के लिये दुआ़ फ़रमा दी। और अल्लाह तआ़ला ने आप को हुक्म दिया कि आप एक

कश्ती तय्यार करें चुनान्चे, एक सो बरस में आप के लगाए हुवे सागवान के दरख़्त तय्यार हो गए और आप ने इन दरख़्तों की लकड़ियों से एक कश्ती बनाई जो 80 गज़ लम्बी और 50 गज़ चौड़ी थी और इस में तीन दरजे थे, निचले त़बके़ में दरिन्दे, परन्दे और ह़शरातुल अर्ज़ वग़ैरा और दरमियानी त़बके़ में चोपाए वग़ैरा जानवरों के लिये और बालाई त़बके़ में ख़ुद और मोमिनीन के लिये जगह बनाई। इस त़रह़ येह शानदार कश्ती आप ने बनाई और एक सो बरस की मुद्दत में येह तारीख़ी कश्ती बन कर तय्यार हुई जो आप की और मोमिनों की मेह़नत और कारीगरी का षमरा थी। जिन्हों ने बे पनाह मेह़नत कर के येह कश्ती बनाई थी।

जब आप कश्ती बनाने में मसरूफ़ थे तो आप की क़ौम आप का मज़ाक़ उड़ाती थी। कोई कहता कि ऐ नूह़ ! अब तुम बढ़ई बन गए ? ह़ालांकि पहले तुम कहा करते थे कि मैं ख़ुदा का नबी हूं। कोई कहता ऐ नूह़ ! इस ख़ुश्क ज़मीन में तुम कश्ती क्यूं बना रहे हो ? क्या तुम्हारी अ़क़्ल मारी गई है ? ग़रज़ त़रह़ त़रह़ का तमस्ख़ुर व इस्तिह्ज़ा करते और क़िस्म क़िस्म की त़ा'ना बाज़ियां और बद ज़बानियां करते रहते थे और आप उन के जवाब में येही फ़रमाते थे कि आज तुम हम से मज़ाक़ करते हो लेकिन मत घबराओ जब ख़ुदा का अ़ज़ाब ब सूरते तूफ़ान आ जाएगा तो हम तुम्हारा मज़ाक़ उड़ाएंगे।

जब तूफ़ान आ गया तो आप ने कश्ती में दरिन्दों, चरिन्दों और परन्दों और क़िस्म क़िस्म के ह़शरातुल अर्ज़ का एक एक जोड़ा नर व मादा सुवार करा दिया और ख़ुद आप और आप के तीनों फ़रज़न्द या'नी ह़ाम, साम और याफ़ष और इन तीनों की बीवियां और आप की मोमिना बीवी और 72 मोमिनीन मर्द व औ़रत कुल 80 इन्सान कश्ती में सुवार हो गए और आप की एक बीवी "वाहिला" जो क़ाफ़िरा थी, और आप का एक लड़का जिस का नाम "किनआ़न" था, येह दोनों कश्ती में सुवार नहीं हुवे और तूफ़ान में ग़र्क़ हो गए।

रिवायत है कि जब सांप और बिच्छू कश्ती में सुवार होने लगे तो आप ने इन दोनों को रोक दिया। तो इन दोनों ने कहा कि ऐ अल्लाह के

नबी ! आप हम दोनों को सुवार कर लीजिये। हम अ़हद करते हैं कि जो शख़्स سَلٰمٌ عَلٰی نُوۡحٍ فِی الۡعٰلَمِیۡنَ ﴿۷۹﴾ पढ़ लेगा हम दोनों उस को ज़रर नहीं पहुंचाएंगे तो आप ने इन दोनों को भी कश्ती में बिठा लिया।

तूफ़ान में कश्ती वालों के सिवा सारी क़ौम और कुल मख़्लूक़ ग़र्क़ हो कर हलाक हो गई और आप की कश्ती "जूदी पहाड़" पर जा कर ठहर गई और तूफ़ान ख़त्म होने के बा'द आप मअ़ कश्ती वालों के ज़मीन पर उतर पड़े और आप की नस्ल में बे पनाह बरकत हुई कि आप की अवलाद तमाम रूए ज़मीन पर फेल कर आबाद हो गई इसी लिये आप का लक़ब "आदमे षानी" है। (تفسیر صاوی، پ۱۲، ھود: ۳۶۔۳۹)

क़ुरआने मजीद में ख़ुदावन्द (عَزَّوَجَلَّ) ने इस वाक़िए को इन अल्फ़ाज़ में बयान फ़रमाया है कि

وَاُوۡحِیَ اِلٰی نُوۡحٍ اَنَّهٗ لَنۡ یُّؤۡمِنَ مِنۡ قَوۡمِكَ اِلَّا مَنۡ قَدۡ اٰمَنَ فَلَا تَبۡتَئِسۡ بِمَا كَانُوۡا یَفۡعَلُوۡنَ ﴿۳۶﴾ وَاصۡنَعِ الۡفُلۡكَ بِاَعۡیُنِنَا وَوَحۡیِنَا وَلَا تُخَاطِبۡنِیۡ فِی الَّذِیۡنَ ظَلَمُوۡا ۚ اِنَّهُمۡ مُّغۡرَقُوۡنَ ﴿۳۷﴾ وَیَصۡنَعُ الۡفُلۡكَ ۟ وَكُلَّمَا مَرَّ عَلَیۡهِ مَلَاٌ مِّنۡ قَوۡمِهٖ سَخِرُوۡا مِنۡهُ ؕ قَالَ اِنۡ تَسۡخَرُوۡا مِنَّا فَاِنَّا نَسۡخَرُ مِنۡكُمۡ كَمَا تَسۡخَرُوۡنَ ﴿۳۸﴾ فَسَوۡفَ تَعۡلَمُوۡنَ ۙ مَنۡ یَّاۡتِیۡهِ عَذَابٌ یُّخۡزِیۡهِ وَیَحِلُّ عَلَیۡهِ عَذَابٌ مُّقِیۡمٌ ﴿۳۹﴾ (پ۱۲، ھود: ۳۶۔۳۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- और नूह़ को वह़्य हुई कि तुम्हारी क़ौम से मुसलमान न होंगे मगर जितने ईमान ला चुके तो ग़म न खा उस पर जो वोह करते हैं और कश्ती बना हमारे सामने और हमारे हुक्म से और ज़ालिमों के बारे में मुझ से बात न करना वोह ज़रूर डूबाए जाएंगे और नूह़ कश्ती बनाता है जब उस की क़ौम के सरदार उस पर गुज़रते उस पर हंसते, बोला : अगर तुम हम पर हंसते हो तो एक वक़्त हम तुम पर हंसेंगे जैसा तुम हंसते हो तो अब जान जाओगे किस पर आता है वोह अ़ज़ाब कि उसे रुस्वा करे और उतरता है वोह अ़ज़ाब जो हमेशा रहे।

«25» तूफ़ान बरपा करने वाला तन्नूर

यूं तो **अल्लाह** तआला ने ह़ज़रते नूह़ عَلَيْهِ السَّلَام को दो सो बरस पहले ही बज़रीअ़ए वह़्य मुत्त़लअ़ कर दिया था कि आप की क़ौम तूफ़ान में ग़र्क़ कर दी जाएगी। मगर तूफ़ान आने की निशानी येह मुक़र्रर फ़रमा दी थी कि आप के घर के तन्नूर से पानी उबलना शुरूअ़ होगा। चुनान्चे, पथ्थर के इस तन्नूर से एक दिन सुब्ह़ के वक़्त पानी उबलना शुरूअ़ हो गया और आप ने कश्ती पर जानवरों और इन्सानों को सुवार कराना शुरूअ़ कर दिया फिर ज़ोर दार बारिश होने लगी जो मुसलसल चालीस दिन और चालीस रात मूसलाधार बरसती रही और ज़मीन भी जा-बजा शक़ हो गई और पानी के चश्मे फूट कर बहने लगे। इस त़रह़ बारिश और ज़मीन से निकलने वाले पानियों से ऐसा तूफ़ान आ गया कि चालीस चालीस गज़ ऊंचे पहाड़ों की चोटियां डूब गईं।

चुनान्चे, इरशादे ख़ुदावन्दी है कि

حَتّٰۤى اِذَا جَآءَ اَمْرُنَا وَ فَارَ التَّنُّوْرُۙ قُلْنَا احْمِلْ فِیْهَا مِنْ كُلٍّ زَوْجَیْنِ اثْنَیْنِ وَ اَهْلَكَ اِلَّا مَنْ سَبَقَ عَلَیْهِ الْقَوْلُ وَ مَنْ اٰمَنَؕ وَ مَاۤ اٰمَنَ مَعَهٗۤ اِلَّا قَلِیْلٌ ﴿۴۰﴾ (پ ۱۲، ھود: ۴۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- यहां तक कि जब हमारा हुक्म आया और तन्नूर उबला हम ने फ़रमाया कश्ती में सुवार कर ले हर जिन्स में से एक जोड़ा नर व मादा और जिन पर बात पड़ चुकी है उन के सिवा अपने घर वालों और बाक़ी मुसलमानों को और उस के साथ मुसलमान न थे मगर थोड़े।

और आस्मानो ज़मीन के पानी की फ़िरावानी और त़ुग़यानी का बयान फ़रमाते हुवे इरशादे रब्बानी हुवा कि

فَفَتَحْنَاۤ اَبْوَابَ السَّمَآءِ بِمَآءٍ مُّنْهَمِرٍ ﴿۱۱﴾ وَّ فَجَّرْنَا الْاَرْضَ عُیُوْنًا فَالْتَقَى الْمَآءُ عَلٰۤى اَمْرٍ قَدْ قُدِرَ ﴿۱۲﴾ (پ۲۷، القمر: ۱۱، ۱۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- तो हम ने आस्मान के दरवाज़े खोल दिये ज़ोर के बहते पानी से और ज़मीन चश्मे कर के बहा दी तो दोनों पानी मिल गए उस मिक़्दार पर जो मुक़द्दर थी।

या'नी तूफ़ान आ गया और सारी दुन्या ग़र्क़ हो गई

(تفسیر صاوی، ج۳،ص ۹۱۳،پ ۱۲، ھود:۴۲)

तूफ़ान कितना ज़ोरदार था और तूफ़ानी सैलाब की मौजों की क्या कैफ़िय्यत थी ? इस की मन्ज़र कशी कुरआने मजीद ने इन लफ़्ज़ों में फ़रमाई है :-

وَھِیَ تَجْرِیْ بِھِمْ فِیْ مَوْجٍ كَالْجِبَالِ قف (پ ۱۲،ھود:۴۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- और वोह उन्हें लिये जा रही है ऐसी मौजों में जैसे पहाड़ ।

हज़रते नूह عَلَيْهِ السَّلَام कश्ती पर सुवार हो गए और कश्ती तूफ़ानी मौजों के थपेड़ों से टकराती हुई बराबर चली जा रही थी यहां तक कि सलामती के साथ कोहे जूदी पर पहुंच कर ठहर गई । कश्ती पर सुवार होते वक़्त हज़रते नूह عَلَيْهِ السَّلَام ने येह दुआ पढ़ी थी कि

بِسْمِ اللّٰهِ مَجْرٖىهَا وَمُرْسٰىهَا ط اِنَّ رَبِّیْ لَغَفُوْرٌ رَّحِیْمٌ ﴿۴۱﴾ (پ ۱۲،ھود:۴۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- **अल्लाह** के नाम पर इस का चलना और इस का ठहरना बेशक मेरा रब ज़रूर बख़्शने वाला मेहरबान है ।

﴾26﴿ जूदी पहाड़

हज़रते नूह عَلَيْهِ السَّلَام की कश्ती तूफ़ान के थपेड़ों में छे माह तक चक्कर लगाती रही यहां तक कि ख़ानए का'बा के पास से गुज़री और का'बए मुकर्रमा का सात चक्कर त़वाफ़ भी किया । फिर **अल्लाह** तआला के हुक्म से येह कश्ती जूदी पहाड़ पर ठहर गई, जो इराक़ के एक शहर "जज़ीरा" में वाक़ेअ़ है ।

रिवायत है कि **अल्लाह** तआला ने हर पहाड़ की त़रफ़ येह इल्हाम किया, कि हज़रते नूह عَلَيْهِ السَّلَام की कश्ती किसी एक पहाड़ पर ठहरेगी तो तमाम पहाड़ों ने तकब्बुर किया । लेकिन "जूदी" पहाड़ ने तवाज़ोअ़ और आ़जिज़ी का इज़्हार किया तो **अल्लाह** तआला ने इस को येह शरफ़ बख़्शा कि कश्ती जूदी पहाड़ पर ठहरी । और एक रिवायत है कि बहुत दिनों तक इस कश्ती की लकड़ियां और तख़्ते बाक़ी रहे थे । यहां तक

कि अगली उम्मतों के बा'ज़ लोगों ने इस कश्ती के तख़्तों को जूदी पहाड़ पर देखा था। मुहर्रम की दसवीं तारीख़ आ़शूरा के दिन येह कश्ती जूदी पहाड़ पर ठहरी। चुनान्चे, इस तारीख़ को कश्ती की तमाम मख़्लूक़ या'नी इन्सान और वुहूश तुयूर वग़ैरा सभी ने शुक्राने का रोज़ा रखा और ह़ज़रते नूह़ عَلَيْهِ السَّلَام ने कश्ती से उतर कर सब से पहले जो बस्ती बसाई उस का नाम "षमानीन" रखा। अ़रबी ज़बान में षमानीन के मा'ना "अस्सी" होते हैं, चूंकि कश्ती में **80** आदमी थे इस लिये इस गाऊं का नाम "षमानीन" रख दिया गया।

(تفسیر صاوی، ج۳، ص ۹۱۵۔۹۱۴،پ۱۲، ھود:۴۴)

وَاسْتَوَتْ عَلَى الْجُودِيِّ وَقِيلَ بُعْدًا لِّلْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿۴۴﴾ (پ۱۲،ھود:۴۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- और कश्ती कोहे जूदी पर ठहरी और फ़रमाया गया कि दूर हों बे इन्साफ़ लोग।

﴿27﴾ ह़ज़रते नूह़ عَلَيْهِ السَّلَام का बेटा ग़र्क़ हो गया

ह़ज़रते नूह़ عَلَيْهِ السَّلَام का एक बेटा जिस का नाम "किनआ़न" था। वोह सिद्क़े दिल से आप पर ईमान नहीं लाया था, बल्कि वोह मुनाफ़िक़ था। और अपने कुफ़्र को छुपाए रखता था। लेकिन तूफ़ान के वक़्त उस ने अपने कुफ़्र को ज़ाहिर कर दिया। ह़ज़रते नूह़ عَلَيْهِ السَّلَام ने कश्ती पर सुवार होते वक़्त उस को बुलाया और फ़रमाया कि मेरे प्यारे बेटे ! तुम कश्ती पर सुवार हो जाओ और काफ़िरों का साथ छोड़ दो तो उस ने कहा कि मैं तूफ़ान में पहाड़ों पर चढ़ कर पनाह ले लूंगा तो आप ने बड़ी दिल सोज़ी के साथ फ़रमाया कि बेटा ! आज ख़ुदा के अ़ज़ाब से कोई किसी को नहीं बचा सकता। हां जिस पर ख़ुदावन्दे करीम अपना रह़्म फ़रमाए बस वोही बच सकता है। बाप बेटे में येह गुफ़्तगू हो रही थी कि एक ज़ोरदार मौज आई और किनआ़न ग़र्क़ हो गया और एक रिवायत में येह भी आया है कि किनआ़न एक बुलन्द पहाड़ पर चढ़ कर एक ग़ार में छुप गया और ग़ार के तमाम सूराख़ों को बन्द कर लिया मगर जब तूफ़ान की मौज उस पहाड़ की चोटी से टकराई तो ग़ार में पानी भर गया। इस त़रह़ किनआ़न अपने बोल व बराज़ में लत पत हो कर ग़र्क़ हो गया। (تفسیر صاوی، ج۳،ص ۹۱۴،پ۱۲،ھود:۴۳)

क़ुरआने मजीद में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इस वाक़िए के बारे में इरशाद फ़रमाया कि

وَنَادٰی نُوۡحُ ۣابۡنَہٗ وَکَانَ فِیۡ مَعۡزِلٍ یّٰبُنَیَّ ارۡکَبۡ مَّعَنَا وَلَا تَکُنۡ مَّعَ الۡکٰفِرِیۡنَ ﴿۴۲﴾ قَالَ سَاٰوِیۡۤ اِلٰی جَبَلٍ یَّعۡصِمُنِیۡ مِنَ الۡمَآءِ ؕ قَالَ لَا عَاصِمَ الۡیَوۡمَ مِنۡ اَمۡرِ اللّٰہِ اِلَّا مَنۡ رَّحِمَ ۚ وَحَالَ بَیۡنَہُمَا الۡمَوۡجُ فَکَانَ مِنَ الۡمُغۡرَقِیۡنَ ﴿۴۳﴾ (پ ۱۲، ھود: ۴۲ ـ ۴۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :– और नूह़ ने अपने बेटे को पुकारा और वोह उस से किनारे था ऐ मेरे बच्चे हमारे साथ सुवार हो जा और काफ़िरों के साथ न हो, बोला : अब मैं किसी पहाड़ की पनाह लेता हूं वोह मुझे पानी से बचा लेगा, कहा आज **अल्लाह** के अ़ज़ाब से कोई बचाने वाला नहीं मगर जिस पर वोह रह़्म करे और उन के बीच में मौज आड़े आई तो वोह डूबतों में रह गया।

बेटे को अपने सामने इस त़रह़ ग़र्क़आब होते देख कर ह़ज़रते नूह़ عَلَيْهِ السَّلَام को बड़ा सदमा व रंज पहुंचा और आप ने जनाबे बारी तआ़ला में अ़र्ज़ किया कि ऐ मेरे परवर दगार ! मेरा बेटा किनआ़न तो मेरे घर वालों में से है और तेरा वा'दा सच्चा है और तू अह़कमुल ह़ाकिमीन है। तो **अल्लाह** तआ़ला ने फ़रमाया कि ऐ नूह़ ! येह आप का बेटा किनआ़न आप के उन घर वालों में से नहीं है जिन को बचाने का हम ने वा'दा किया था लिहाज़ा, ऐ नूह़ ! तुम्हारा येह सुवाल ठीक नहीं है इस लिये तुम मुझ से ऐसी किसी बात का सुवाल न करो जिस का तुम्हें इ़ल्म नहीं है तो ह़ज़रते नूह़ عَلَيْهِ السَّلَام ने कहा कि ऐ मेरे परवर दगार ! मैं तेरी पनाह मांगता हूं कि मैं तुझ से किसी ऐसी बात का सुवाल करूं जो मुझे मा'लूम नहीं है और अगर तू मुझे मुआ़फ़ फ़रमा कर रह़्म न फ़रमाएगा तो मैं नुक़्सान में पड़ जाऊंगा। (تفسیر صاوی، ج۳، ص ۹۱۶ـ۹۱۵ (ملخصاً)، پ ۱۲، ھود: ۴۵ـ۴۷)

कुरआने मजीद में हज़रते हक़ عَزَّوَجَلَّ ने इस वाक़िए को बयान फ़रमाते हुवे इरशाद फ़रमाया कि

وَنَادٰى نُوْحٌ رَّبَّهٗ فَقَالَ رَبِّ اِنَّ ابْنِیْ مِنْ اَهْلِیْ وَ اِنَّ وَعْدَكَ الْحَقُّ وَ اَنْتَ اَحْكَمُ الْحٰكِمِیْنَ ﴿۴۵﴾ قَالَ یٰنُوْحُ اِنَّهٗ لَیْسَ مِنْ اَهْلِكَ ۚ اِنَّهٗ عَمَلٌ غَیْرُ صَالِحٍ ﳓ فَلَا تَسْـٴَـلْنِ مَا لَیْسَ لَكَ بِهٖ عِلْمٌ ؕ اِنِّیْۤ اَعِظُكَ اَنْ تَكُوْنَ مِنَ الْجٰهِلِیْنَ ﴿۴۶﴾ قَالَ رَبِّ اِنِّیْۤ اَعُوْذُ بِكَ اَنْ اَسْـٴَـلَكَ مَا لَیْسَ لِیْ بِهٖ عِلْمٌ ؕ وَ اِلَّا تَغْفِرْ لِیْ وَ تَرْحَمْنِیْۤ اَكُنْ مِّنَ الْخٰسِرِیْنَ ﴿۴۷﴾ (پ۱۲، ھود:۴۵۔۴۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- और नूह़ ने अपने रब को पुकारा, अ़र्ज़ की : ऐ मेरे रब ! मेरा बेटा भी तो मेरा घर वाला है और बेशक तेरा वा'दा सच्चा है और तू सब से बढ़ कर हुक्म वाला। फ़रमाया : ऐ नूह़ ! वोह तेरे घर वालों में नहीं बेशक उस के काम बड़े नालाइक़ हैं तू मुझ से वोह बात न मांग जिस का तुझे इल्म नहीं मैं तुझे नसीह़त फ़रमाता हूं कि नादान न बन। अ़र्ज़ की ऐ रब मेरे ! मैं तेरी पनाह चाहता हूं कि तुझ से वोह चीज़ मांगू जिस का मुझे इल्म नहीं और अगर तू मुझे न बख़्शे और रह़्म न करे तो मैं ज़ियांकार (नुक़्सान उठाने वाला) हो जाऊं।

﴾28﴿ तूफ़ान क्यूं कर ख़त्म हुवा

जब ह़ज़रते नूह़ عَلَيْهِ السَّلَام की कश्ती जूदी पहाड़ पर पहुंच कर ठहर गई और सब कुफ़्फ़ार ग़र्क़ हो कर फ़ना हो चुके तो अल्लाह तआ़ला ने ज़मीन को हुक्म दिया कि ऐ ज़मीन ! जितना पानी तुझ से चश्मों की सूरत में निकला है तू इन सब पानियों को पी ले। और ऐ आस्मान ! तू अपनी बारिश बन्द कर दे। चुनान्चे, पानी घटना शुरूअ़ हो गया और तूफ़ान ख़त्म हो गया। फिर अल्लाह तआ़ला ने ह़ज़रते नूह़ عَلَيْهِ السَّلَام को हुक्म दिया कि ऐ नूह़ ! आप कश्ती से उतर जाइये। अल्लाह की त़रफ़ से सलामती और बरकतें आप पर भी हैं और उन लोगों पर भी हैं जो कश्ती में आप के साथ रहे। (پ۱۲، ھود:۴۸)

हदीष शरीफ़ में आया है कि हज़रते नूह عَلَيْهِ السَّلَام ने रूए ज़मीन की ख़बर लाने के लिये किसी को भेजने का इरादा फ़रमाया तो सब से पहले मुर्ग़ी ने कहा कि मैं रूए ज़मीन की ख़बर लाऊंगी तो आप ने उस को पकड़ लिया और उस के बाज़ूओं पर मोहर लगा कर फ़रमाया कि तुझ पर मेरी मोहर है, तू परन्द होते हुवे भी लम्बी उड़ान न उड़ सकेगी और मेरी उम्मत तुझ से फ़ाइदा उठाएगी। फिर आप ने कव्वे को भेजा तो वोह एक मुर्दार देख कर उस पर गिर पड़ा और वापस नहीं आया। तो आप ने उस पर ला'नत फ़रमा दी और उस के लिये बद दुआ फ़रमा दी कि वोह हमेशा ख़ौफ़ में मुब्तला रहे। चुनान्चे, कव्वे को हरम में कहीं भी पनाह नहीं है। फिर आप ने कबूतर को भेजा तो वोह ज़मीन पर नहीं उतरा बल्कि मुल्के सबा से ज़ैतून की एक पत्ती चोंच में ले कर आ गया तो आप ने फ़रमाया कि तुम ज़मीन पर नहीं उतरे इस लिये फिर जाओ और रूए ज़मीन की ख़बर लाओ। तो कबूतर दोबारा रवाना हुवा और मक्कए मुकर्रमा में हरमे का'बा की ज़मीन पर उतरा और देख लिया कि पानी ज़मीने हरम से ख़त्म हो चुका है और सुर्ख़ रंग की मिट्टी ज़ाहिर हो गई है। कबूतर के दोनों पाउं सुर्ख़ मिट्टी से रंगीन हो गए। और वोह इसी हालत में हज़रते नूह عَلَيْهِ السَّلَام के पास वापस आ गया और अर्ज़ किया कि ऐ ख़ुदा के पैग़म्बर ! आप मेरे गले में एक ख़ूब सूरत तौक़ अता फ़रमाइये और मेरे पाउं में सुर्ख़ ख़िज़ाब मरहमत फ़रमाइये और मुझे ज़मीने हरम में सुकूनत का शरफ़ अता फ़रमाइये। चुनान्चे, हज़रते नूह عَلَيْهِ السَّلَام ने कबूतर के सर पर दस्ते शफ़क़त फेरा और उस के लिये येह दुआ फ़रमा दी कि उस के गले में धारी का एक ख़ूब सूरत हार पड़ा रहे और उस के पाउं सुर्ख़ हो जाएं और उस की नस्ल में ख़ैरो बरकत रहे और उस को ज़मीने हरम में सुकूनत का शरफ़ मिले।

(تفسیر صاوی، ج۳، ص ۹۱۶، پ ۱۲، هود: ۳۸)

अल्लाह तआला ने क़ुरआने करीम में इरशाद फ़रमाया कि

وَقِيلَ يَٰٓأَرۡضُ ٱبۡلَعِي مَآءَكِ وَيَٰسَمَآءُ أَقۡلِعِي وَغِيضَ ٱلۡمَآءُ وَقُضِيَ
ٱلۡأَمۡرُ وَٱسۡتَوَتۡ عَلَى ٱلۡجُودِيِّۖ وَقِيلَ بُعۡدٗا لِّلۡقَوۡمِ ٱلظَّٰلِمِينَ ﴿٤٤﴾ (پ ۱۲، هود: ۴۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- और हुक्म फ़रमाया गया कि ऐ ज़मीन अपना पानी निगल ले और ऐ आस्मान थम जा और पानी खुश्क कर दिया गया और काम तमाम हुवा और कश्ती कोहे जूदी पर ठहरी और फ़रमाया गया कि दूर हों बे इन्साफ़ लोग।

और हज़रते नूह عَلَیْہِ السَّلَام को कश्ती से उतरने का हुक्म दे कर **अल्लाह** तआ़ला ने इरशाद फ़रमाया कि

قِيْلَ يٰنُوْحُ اهْبِطْ بِسَلٰمٍ مِّنَّا وَبَرَكٰتٍ عَلَيْكَ وَعَلٰٓى اُمَمٍ مِّمَّنْ مَّعَكَ ؕ (پ۱۲، ھود:۴۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- फ़रमाया गया ऐ नूह़ कश्ती से उतर हमारी त़रफ़ से सलाम और बरकतों के साथ जो तुझ पर हैं और तेरे साथ के कुछ गुरौहों पर।

दर्से हिदायत :- हज़रते नूह़ عَلَیْہِ السَّلَام के इस वाक़िए में बड़ी बड़ी इब्रतों के सामान हैं जिन के अन्वार व तजल्लियात से कुलूबे मोअमिनीन पर ऐसी ईमानी रोशनी पड़ती है जिस से मोअमिनीन का सीना नूरे इरफ़ान व जल्वए ईमान से मुनव्वर और रोशन हो जाता है। चन्द तजल्लियों की निशान देही हाज़िर है :

﴾1﴿ हज़रते नूह़ عَلَیْہِ السَّلَام साढ़े नव सो बरस तक अपनी क़ौम की ईज़ा रसानियों और दिलख़राश ता'नों और गालियों के बा वुजूद सब्रो तहम्मुल के साथ अपनी क़ौम को हिदायत का दर्स देते रहे और जब तक इन पर वह्य नहीं आ गई कि येह लोग ईमान नहीं लाएंगे उस वक़्त तक आप बराबर हिदायत का वा'ज़ सुनाते ही रहे। जब बज़रीअ़ए वह्य आप इन लोगों के ईमान से मायूस हो गए तो आप ने इन ज़ालिमों के लिये हलाकत की दुआ़ फ़रमाई। क़ौमे मुस्लिम के वाइज़ों और हादियों के लिये हज़रते नूह़ عَلَیْہِ السَّلَام का उस्वए ह़सना चराग़े हिदायत व मनारए नूर है कि वोह भी सब्र व इस्तिक़लाल के साथ बराबर तब्लीग़ व इरशाद का काम जारी रखें।

﴾2﴿ हज़रते नूह़ عَلَیْہِ السَّلَام और मोअमिनीन तूफ़ान के अ़ज़ीम सैलाब में जब कि तूफ़ान की मौजें पहाड़ों की त़रह़ सर उठा रही थीं, कश्ती पर सुवार थे और तूफ़ानी मौजों के सैलाबे अ़ज़ीम में एक तिन्के की त़रह़ येह कश्ती हिचकोले खाती चली जा रही थी। मगर हज़रते नूह़ عَلَیْہِ السَّلَام और

मोअमिनीन तवक्कुल की ऐसी मन्ज़िले बुलन्द में थे कि न इन लोगों को कोई घबराहट थी न कोई परेशानी । इस में मोअमिनीन के लिये येह हिदायत है कि बड़ी से बड़ी मुसीबत के वक़्त में भी मोमिन को अल्लाह तआ़ला पर भरोसा रख कर मुत़्मइन रहना चाहिये ।

﴾3﴿ ह़ज़रते नूह عَلَيْهِ السَّلَام का बेटा किनआ़न काफ़िर था । इस से पता चलता है कि नेकों की अवलाद के लिये येह ज़रूरी नहीं है कि वोह भी नेक ही हों । बुरों की अवलाद अच्छी और अच्छों की अवलाद बुरी भी हो सकती है । येह खुदावन्दे तआ़ला की मशिय्यत और मरज़ी पर मौक़ूफ़ है । वोह जिस को चाहे अच्छा बना दे और जिस को चाहे बुरा बना दे । (واللہ تعالٰی اعلم)

﴾29﴿ एक गुस्ताख़ पर बिजली गिर पड़ी

एक शख़्स जो कुफ़्फ़ारे अ़रब के सरदारों में से था उस के पास हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने चन्द सह़ाबए किराम (عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان) को तब्लीग़े इस्लाम के लिये भेजा । चुनान्चे, इन ह़ज़रात ने उस के पास पहुंच कर अल्लाह तआ़ला और उस के रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का पैग़ाम सुना कर इस्लाम की दा'वत दी तो उस गुस्ताख़ ने अज़ राहे तमस्ख़ुर कहा कि अल्लाह कौन है ? कैसा है और कहां है ? क्या वोह सोने का है या चांदी का है या तांबे का ? उस का येह मुतकब्बिराना और गुस्ताख़ाना जवाब सुन कर सह़ाबए किराम (عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان) के रौंगटे खड़े हो गए और इन ह़ज़रात ने बारगाहे नबुव्वत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में वापस ह़ाज़िर हो कर सारा माजरा सुनाया और अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह इस शख़्स से बढ़ कर काफ़िर और बारी तआ़ला की शान में गुस्ताख़ी करने वाला तो हम लोगों ने देखा ही नहीं । हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने इरशाद फ़रमाया कि तुम लोग दोबारा उस के पास जाओ । चुनान्चे,

येह ह़ज़रात दोबारा उस के पास पहुंचे, तो उस ख़बीष ने पहले से भी ज़ियादा गुस्ताख़ाना अल्फ़ाज़ ज़बान से निकाले । सह़ाबए किराम (عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان) उस की गुस्ताख़ियों और बद ज़बानियों से रन्जीदा हो कर दरबारे नबुव्वत में वापस पलट आए तो हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने

तीसरी मरतबा इन सहाबए किराम (عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان) को उस के पास भेजा जहां येह लोग पहुंच कर उस को दा'वते इस्लाम देने लगे और वोह गुस्ताख़ इन हज़रात से झगड़ा करते हुवे बद ज़बानी और गाली गलोच पर उतर आया। सहाबए किराम (عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان) इरशादे नबवी के मुताबिक़ सब्र करते रहे।

इसी दौरान में लोगों ने देखा कि नागहां एक बदली आई और उस बदली में अचानक गरज और चमक पैदा हुई। फिर एक दम निहायत ही मुहीब गरज के साथ उस काफ़िर पर बिजली गिरी जिस से उस की खोपड़ी उड़ गई और वोह लम्हा भर में जल कर राख हो गया। येह मन्ज़र देख कर सहाबए किराम (عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان) बारगाहे अक़्दस में वापस आए तो इन हज़रात को देखते ही रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि तुम लोग जिस गुस्ताख़ के यहां गए थे वोह तो जल कर राख हो गया ! सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने इन्तिहाई हैरत व तअ़ज्जुब से अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह ! आप को कैसे और किस तृरह इस की ख़बर हो गई तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि अभी अभी मुझ पर येह आयत नाज़िल हुई है : (تفسیر صاوی، ج ٣، ص ٩٩٦-٩٩٥، پ١٣، الرعد: ١٣)

وَيُرْسِلُ الصَّوَاعِقَ فَيُصِيْبُ بِهَا مَنْ يَّشَآءُ وَهُمْ يُجَادِلُوْنَ فِي اللّٰهِ ۚ وَ هُوَ شَدِيْدُ الْمِحَالِ ﴿۱۳﴾ (پ١٣، الرعد: ١٣)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- और कड़क भेजता है तो उसे डालता है जिस पर चाहे और वोह **अल्लाह** में झगड़ते होते हैं और उस की पकड़ सख़्त है।

दर्से हिदायत :- बारी तआ़ला की शान में इस तृरह की गुस्ताख़ी करने वालों को बारहा अ़ज़ाबे इलाही ने अपनी गिरिफ़्त में ले कर हलाक कर डाला। लिहाज़ा ख़बरदार ! ख़बरदार ! उस मुक़द्दस जनाब में हरगिज़ हरगिज़ कोई ऐसा लफ़्ज़ ज़बान से न निकालना चाहिये जो शाने उलूहिय्यत में बे अदबी क़रार पाए। आज कल बहुत से लोग बीमारियों और मुसीबतों के वक़्त ख़ुदावन्दे तआ़ला की शान में नाशुक्री के अल्फ़ाज़ बोल कर ख़ुदावन्दे क़ुद्दूस की बे अदबी कर बैठते हैं। जिस से उन का ईमान भी जाता रहता है और वोह दुन्या व आख़िरत में अ़ज़ाब के हक़दार बन जाते हैं। (तौबा نعوذ باللّٰه منه)

﴾30﴿ पांच दुश्मनाने रसूल

कुफ़्फ़ारे क़ुरैश के पांच सरदार (1) आ़स बिन वाइल सहमी (2) अस्वद बिन मुत्त़लिब (3) अस्वद बिन अ़ब्दे यग़ूष (4) ह़ारिष बिन क़ैस (5) वलीद बिन मुग़ीरा।

येह लोग नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को बहुत ज़ियादा ईज़ाएं देते और आप का बेह़द तमस्ख़ुर और मज़ाक़ उड़ाया करते थे। एक रोज़ ह़ुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मस्जिदे ह़राम में तशरीफ़ लाए तो येह पांचों ख़ुबषा भी पीछे पीछे आए और ह़स्बे आ़दत तमस्ख़ुर और त़ा'न व तशनीअ़ के अल्फ़ाज़ बकने लगे इसी ह़ालत में ह़ज़रते जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام ह़ुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में पहुंचे और उन्हों ने वलीद बिन मुग़ीरा की पिन्डली की त़रफ़ और आ़स बिन वाइल सहमी के पाउं के तल्वे की त़रफ़ और अस्वद बिन मुत्त़लिब की आंखों की त़रफ़ और अस्वद बिन अ़ब्दे यग़ूष के पेट की त़रफ़ और ह़ारिष बिन क़ैस के सर की त़रफ़ इशारा फ़रमाया और येह कहा कि मैं इन लोगों के शर को दफ़्अ़ करूंगा।

चुनान्चे, थोड़े ही अ़र्से में येह पांचों दुश्मनाने रसूल त़रह़ त़रह़ की बलाओं में गिरिफ़्तार हो कर हलाक हो गए। वलीद बिन मुग़ीरा एक तीर बेचने वाले की दुकान के पास से गुज़रा। नागहां एक तीर का पैकान इस के तहमद में चुभ गया। मगर इस को निकालने के लिये इस ने तकब्बुर से सर नीचा न किया और खड़े खड़े तहबन्द हिला हिला कर पैकान को निकालने लगा जिस से उस की पिन्डली ज़ख़्मी हो गई और वोह ज़ख़्म अच्छा नहीं हुवा बल्कि उसी ज़ख़्म की तक्लीफ़ उठा उठा कर वोह मर गया।

आ़स बिन वाइल सहमी के पाउं में कांटा चुभ गया जिस से उस के पाउं में ज़ह्र बाद हो गया और उस का पाउं फूल कर ऊंट की गर्दन की त़रह़ मोटा हो गया इसी तक्लीफ़ में वोह तड़प तड़प कर और कराहते हुवे हलाक हो गया।

अस्वद बिन मुत्तलिब की आंखों में ऐसा दर्द उठा कि वोह अन्धा हो गया और दर्द की शिद्दत से वोह बे क़रारी में अपना सर दीवार से बार बार टकराता था और इसी दर्दो कर्ब की बेचैनी में वोह मर गया और येह कहता हुवा मरा कि मुझ को मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने क़त्ल किया है।

अस्वद बिन अ़ब्दे यग़ूष को इस्तिसक़ा हो गया जिस से उस का पेट बहुत ज़ियादा फूल गया और वोह इसी मरज़ में एड़ियां रगड़ रगड़ कर हलाक हो गया।

ह़ारिष बिन क़ैस की नाक से ख़ून और पीप बहने लगा और वोह इसी में मर कर हलाक हो गया। इस त़रह़ येह पांचों गुस्ताख़ाने रसूल बहुत जल्द बड़ी बड़ी तक्लीफ़ें उठा कर हलाक हो गए।

(تفسیر صاوی، ج۳، ص ۱۰۵۳-۱۰۵۲، پ۱۴، الرعد:۹۵)

इन ही पांचों गुस्ताख़ों के बारे में अल्लाह तआ़ला ने क़ुरआने मजीद की येह आयत नाज़िल फ़रमाई :-

اِنَّا كَفَیْنٰكَ الْمُسْتَهْزِءِیْنَ ﴿۹۵﴾ الَّذِیْنَ یَجْعَلُوْنَ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَۚ فَسَوْفَ یَعْلَمُوْنَ ﴿۹۶﴾ (پ۱۴، الحجر:۹۵-۹۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- बेशक इन हंसने वालों पर हम तुम्हें किफ़ायत करते हैं जो अल्लाह के साथ दूसरा मा'बूद ठहराते हैं तो अब जान जाएंगे।

दर्से हिदायत :- ह़ज़राते अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام के साथ त़ा'न व तमस्ख़ुर, इन की ईज़ा रसानी और तौहीन व बे अदबी वोह जुर्मे अ़ज़ीम है कि ख़ुदावन्दे क़ह्हार व जब्बार का क़ह्र व ग़ज़ब इन मुजरिमों को कभी मुआ़फ़ नहीं फ़रमाता। ऐसे लोगों को कभी ग़र्क़ कर के हलाक कर दिया, कभी इन की आबादियों पर पथ्थर बरसा कर इन को बरबाद कर दिया, कभी ज़लज़लों के झटकों से इन की बस्तियों को उलट पलट कर के तहस नहस कर दिया। कुछ ज़िल्लत के साथ क़त्ल हो गए। कुछ त़रह़ त़रह़ के अमराज़ में मुब्तला हो कर एड़ियां रगड़ते रगड़ते और तड़पते तड़पते मर गए।

इस ज़माने में भी जो लोग बारगाहे नबुव्वत में गुस्ताख़ियां और बे अदबियां करते रहते हैं वोह कान खोल कर सुन लें कि उन की ईमान की दौलत तो ग़ारत हो ही चुकी है, अब ان شاءاللہ تعالیٰ वोह किसी न किसी अ़ज़ाबे इलाही में गिरिफ़्तार हो कर ज़िल्लत की मौत मर जाएंगे और दुन्या उन के मन्हूस वुजूद से पाक हो जाएगी। सुन लो अल्लाह तआ़ला का वा'दा कभी हरगिज़ हरगिज़ ग़लत़ नहीं हो सकता। लिहाज़ा तुम लोग इन्तिज़ार करो और हम भी इन्तिज़ार कर रहे हैं और अगर अ़ज़ाबे इलाही की मार से बचना चाहते हो तो इस की फ़क़त़ एक ही सूरत है कि सिद्क़े दिल से तौबा कर के रसूले अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मह़ब्बत व अ़ज़्मत से अपने दिलों को मा'मूर व आबाद कर लो और अपने क़ौलो फ़े'ल और ए'तिक़ाद से ता'ज़ीम व तौक़ीरे नबवी को अपना दीनी शिआ़र बना लो। फिर तुम देखना कि हर क़दम पर तुम्हारे ऊपर ख़ुदावन्दे क़ुद्दूस की रह़मतें नाज़िल होंगी और ख़ातिमा बिल ख़ैर की करामतों से तुम सरफ़राज़ हो कर दोनों जहां की सआ़दतों से बहरामन्द हो जाओगे। (واللہ تعالیٰ اعلم)

﴾31﴿ तमाम सुवारियों का ज़िक्र क़ुरआन में

नुज़ूले क़ुरआन के वक़्त जो चोपाए आ़म त़ौर पर बार बरदारी और सुवारी के लिये इस्ति'माल होते थे वोह चार जानवर थे। ऊंट, घोड़े, ख़च्चर, गधे। बार बरदारी और सुवारी के इन चार जानवरों का ज़िक्र क़ुरआने मजीद में ख़ास त़ौर से सराह़तन मज़्कूर है इन के इलावा क़ियामत तक जितनी सुवारियां और बार बरदारी के साधन आ़लमे वुजूद में आने वाले हैं, अल्लाह तआ़ला ने इन सब का तज़्किरा क़ुरआने मजीद में इजमालन बयान फ़रमा दिया है। चुनान्चे, सूरए नह़्ल की मुन्दरिजए ज़ैल आयत को बग़ौर पढ़ लीजिये इरशादे रब्बानी है कि।

وَالْاَنْعَامَ خَلَقَهَا ۚ لَكُمْ فِيْهَا دِفْءٌ وَّمَنَافِعُ وَمِنْهَا تَاْكُلُوْنَ ۝ وَلَكُمْ فِيْهَا جَمَالٌ حِيْنَ تُرِيْحُوْنَ وَحِيْنَ تَسْرَحُوْنَ ۝ وَتَحْمِلُ اَثْقَالَكُمْ اِلٰى بَلَدٍ لَّمْ تَكُوْنُوْا بٰلِغِيْهِ اِلَّا بِشِقِّ الْاَنْفُسِ ؕ اِنَّ رَبَّكُمْ لَرَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ۝ وَّالْخَيْلَ وَالْبِغَالَ وَالْحَمِيْرَ لِتَرْكَبُوْهَا وَزِيْنَةً ؕ وَيَخْلُقُ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ۝ (پ۱۴، النحل:۵۔۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :– और चोपाए पैदा किये इन में तुम्हारे लिये गर्म लिबास और मन्फ़अ़तें हैं और इन में से खाते हो और तुम्हारा इन में तजम्मुल है जब इन्हें शाम को वापस लाते हो और जब चरने को छोड़ते हो और वोह तुम्हारे बोझ उठा कर ले जाते हैं ऐसे शहर की त़रफ़ कि तुम उस तक न पहुंचते मगर अध मरे हो कर बेशक तुम्हारा रब निहायत मेहरबान रह़्म वाला है और घोड़े और ख़च्चर और गधे कि इन पर सुवार हो और ज़ीनत के लिये और वोह पैदा करेगा जिस की तुम्हें ख़बर नहीं।

इस आयते मुबारका में आख़िरी जुम्ला وَيَخْلُقُ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ۝ में क़ियामत तक आ़लमे वुजूद में आने वाले तमाम बार बरदारी के ज़राएअ़ और क़िस्म क़िस्म की उन मुख़्तलिफ़ सुवारियों के पैदा होने का बयान है जो नुज़ूले कु़रआन के वक़्त तक ईजाद नहीं हुई थीं। मषलन साईकिल, मोटर, रेल गाड़ियां, सड़कें, बह़री जहाज़, हवाई जहाज़, हेली कॉप्टर, रॉकेट वग़ैरा वग़ैरा तमाम नक़्ल व ह़म्ल के सामान और सुवारियों के ज़राएअ़ सब का इजमालन ज़िक्र फ़रमा कर **अल्लाह** तआ़ला ने अपनी कु़दरते कामिला का इज़्हार और ग़ैब की ख़बर का ए'लाने आ़म फ़रमाया है। ज़राएअ़ नक़्ल व ह़म्ल और सुवारियों के इलावा इस आयत में तो इस क़दर उ़मूम है कि इस में क़ियामत तक पैदा होने वाली हर हर चीज़ और तमाम काएनाते आ़लम का इजमालन बयान है। (واللہ تعالیٰ اعلم)

चारों सुवारियां जो नुज़ूले कु़रआन के वक़्त अ़रब में आ़म थीं। इन के बारे में कुछ ख़ुसूसिय्यात ह़स्बे ज़ैल हैं जो याद रखने के क़ाबिल हैं।

ऊंट :– येह बहुत से नबियों और रसूलों की सुवारी है। ख़ुद हु़ज़ूर ख़ातिमुन्नबिय्यीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ऊंट की सुवारी फ़रमाई और आप की दो ऊंटनियां बहुत मश्हूर हैं। एक "क़स्वा" और दूसरी "अ़ज़्बा" जिस के बारे में रिवायत है कि येह कभी दौड़ में किसी ऊंट से मग़्लूब नहीं हुई थी मगर एक मरतबा एक आ'राबी के ऊंट से दौड़ में पीछे रह गई तो ह़ज़राते सह़ाबए किराम को बहुत शाक़ गुज़रा। इस मौक़अ़ पर आप ने इरशाद फ़रमाया कि **अल्लाह** पर येह ह़क़ है कि जब वोह किसी

दुन्या की चीज़ को बुलन्द फ़रमा देता है तो उस को पस्त भी कर देता है। मरवी है कि आप की ऊंटनी "अज़्बा" ने आप की वफ़ात के बा'द ग़म में न कुछ खाया और न पिया और वफ़ात पा गई और बा'ज़ रिवायतों में आया है कि क़ियामत के दिन इसी ऊंटनी पर सुवार हो कर हज़रते बीबी फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهَا मैदाने महशर में तशरीफ़ लाएंगी। (تفسیر روح البیان، ج۵، ص ۸۹،پ۱۴، النحل ۷)

"हयातुल हैवान" में है कि ऊंट के बालों को जला कर इस की राख अगर बहते हुवे ख़ून पर छिड़क दी जाए तो ख़ून फ़ौरन बन्द हो जाएगा और ऊंट की किलनी अगर किसी आशिक़ की आस्तीन में बांध दी जाए तो उस का इश्क़ ज़ाइल हो जाएगा और ऊंट का गोश्त बहुत मुक़व्विये बाह है।

(تفسیر روح البیان، ج۵، ص ۸۹،پ۱۴، النحل ۷)

घोड़ा :- सब से पहले घोड़े पर हज़रते इस्माईल عَلَيْهِ السَّلَام ने सुवारी फ़रमाई। आप से पहले येह वह्शी और जंगली चोपाया था। इसी लिये हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने फ़रमाया कि तुम लोग घोड़े की सुवारी करो क्यूंकि येह तुम्हारे बाप हज़रते इस्माईल عَلَيْهِ السَّلَام की मीराष है। हज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ का बयान है कि हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को बीवियों के बा'द सब से ज़ियादा घोड़ा मह़बूब था। हज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि घोड़ा मैदाने जंग में येह तस्बीह पढ़ता है "سُبُّوحٌ قُدُّوسٌ رَبُّ الْمَلٰٓئِكَةِ وَالرُّوحِ" खुद हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के चन्द घोड़े थे जिन पर आप सुवारी फ़रमाया करते थे।

मन्क़ूल है कि हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने हज़रते ख़िज़्र عَلَيْهِ السَّلَام से दरयाफ़्त फ़रमाया कि कौन कौन सी सुवारियां आप को पसन्द हैं ? तो आप ने फ़रमाया कि घोड़ा और गधा और ऊंट क्यूंकि घोड़ा ऊलुल अ़ज़्म रसूलों की सुवारी है और ऊंट हज़रते हूद, हज़रते सालेह़, हज़रते शोऐब व हज़रते मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुवारी है और गधा हज़रते ईसा व हज़रते उज़ैर عليهما السلام की सुवारी है और मैं क्यूं न इस चोपाए (गधे) से मह़ब्बत रखूं जिस को मरने के बा'द **अल्लाह** तआ़ला ने ज़िन्दा फ़रमाया। (تفسیر روح البیان، ج۵، ص ۱۱-۱۰ (ملخصاً) پ۱۴، النحل:۸)

ख़च्चर :- येह भी एक मुबारक सुवारी है । रिवायत है कि हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मिल्किय्यत में छे ख़च्चर थे। इन में से एक सफ़ेद रंग का था जो मक़ूक़स वालिये मिस्र ने बतौरे हदिय्या आप की ख़िदमते मुबारका में पेश किया था जिस का नाम "दुलदुल" था । हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام अन्दरूने शहर मदीना और अपने बाहर के सफ़रों में इस पर सुवारी फ़रमाया करते थे। इस की उ़म्र बहुत ज़ियादा हुई यहां तक कि इस के सब दांत टूट गए और इस की ख़ूराक के लिये जव कूट कर दलया बनाया जाता था । येह हुज़ूर की वफ़ात के बा'द मुद्दतों ज़िन्दा रहा । चुनान्चे, ह़ज़रते उ़षमान رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه अपनी ख़िलाफ़त के दौरान इस पर सुवार हुवे। और आप के बा'द ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه भी जंगे ख़वारिज के मौक़अ़ पर इसी ख़च्चर पर सुवार हो कर जंग के लिये निकले। फिर आप के बा'द आप के साहिबज़ादगान ह़ज़रते इमामे ह़सन व ह़ज़रते इमामे हुसैन व ह़ज़रते मुह़म्मद बिन अल ह़नफ़िय्या (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم) ने भी इस की सुवारी का शरफ़ पाया। (تفسیر روح البیان،ج۵، ص ۱۱، پ۱۴، النحل:۸)

गधा :- येह भी अम्बिया और रसूलों की सुवारी है और हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की मिल्किय्यत में भी दो गधे थे, एक का नाम "अ़फ़ीर" और दूसरे का नाम "या'फ़ूर" था। रिवायत है कि "या'फ़ूर" आप को ख़ैबर में मिला था और उस ने हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से कलाम किया था कि या रसूलल्लाह ! मेरा नाम "ज़ियाद बिन शिहाब" है और मेरे बाप दादाओं में साठ ऐसे गधे गुज़रे हैं जिन पर नबियों ने सुवारी फ़रमाई है और आप भी अल्लाह के नबी हैं लिहाज़ा मेरी तमन्ना है कि आप के बा'द दूसरा कोई मेरी पुश्त पर न बैठे । चुनान्चे, इस चोपाए की तमन्ना पूरी हो गई कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की वफ़ाते अक़्दस के बा'द "या'फ़ूर" शिद्दते ग़म से निढाल हो कर एक कूंएं में गिर पड़ा और फ़ौरन ही मौत से हमकिनार हो गया। येह भी रिवायत है कि हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام "या'फ़ूर" को भेजा करते थे कि फ़ुलां सह़ाबी को बुला कर लाओ तो येह जाता था और

सहाबी के दरवाज़े को अपने सर से खटखटाता था तो वोह सहाबी या'फ़ूर को देख कर समझ जाते कि हुज़ूर ने मुझे बुलाया है चुनान्चे, वोह फ़ौरन ही या'फ़ूर के साथ दरबारे नबी में हाज़िर हो जाया करते थे। ह़दीष में आया है कि जो शख़्स अदना कपड़ा पहनेगा और बकरी का दूध दोहेगा और गधे की सुवारी करेगा। उस में बिल्कुल ही तकब्बुर नहीं होगा।

(تفسیر روح البیان،ج۵، ص ۱۱، پ۱۴، النحل:۸)

दर्से हिदायत :- इन चारों सुवारियों को ह़क़ीर नहीं समझना चाहिये क्यूंकि **अल्लाह** तआ़ला ने बतौरे इन्आ़म व एह़सान के इन जानवरों की तख़्लीक़ का ज़िक्र फ़रमाया है और फिर इन चारों सुवारियों पर ह़ज़राते अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام सुवार भी हुवे हैं लिहाज़ा इन सुवारियों की तौहीन व तह़क़ीर बहुत बड़ी गुस्ताख़ी व बे अदबी है जो कुफ़्र तक पहुंचा देने वाली मन्हूसिय्यत है बल्कि हर मुसलमान पर लाज़िम है कि इन चोपायों को **अल्लाह** तआ़ला की ने'मत जान कर शुक्र बजा लाए और ह़ज़राते अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام की निस्बत से इन सुवारियों की दिल से क़द्र करे और हरगिज़ हरगिज़ इन की तौहीन व तह़क़ीर न करे कि इस में ईमान की सलामती बल्कि ईमान की नूरानिय्यत का राज़ मुज़्मिर है और इन चारों सुवारियों के बा'द जो दूसरी सुवारियां ईजाद हुई हैं इन पर भी सुवार होना जाइज़ है और इन सुवारियों के बारे में येह ईमान रखना लाज़िम है कि येह सब ख़ुदा ही की पैदा की हुई हैं और येह सब सुवारियां वोही हैं जिन के बारे में **अल्लाह** तआ़ला ने وَيَخْلُقُ مَالَا تَعْلَمُوْنَ○ फ़रमा कर इन के पैदा करने का वा'दा फ़रमाया है। (واللہ تعالٰی اعلم)

﴾32﴿ शहद की मख्खी

अ़रबी में शहद की मख्खी को "नह़्ल" कहते हैं। कुरआने मजीद में **अल्लाह** तआ़ला ने एक सूरह नाज़िल फ़रमाई जिस का नाम सूरए नह़्ल है। इस सूरह में शहद और शहद की मख्खी के फ़ज़ाइल और इस के फ़वाइद व मनाफ़ेअ़ का तज़्किरा फ़रमाया है, जो क़ाबिले ज़िक्र है और दर ह़क़ीक़त येह मख्खियां अ़जाइबाते आ़लम की फ़ेहरिस्त में एक बहुत ही

नुमायां मक़ाम रखती हैं। इस मख्खी की चन्द ख़ुसूसिय्यात ह़स्बे ज़ैल हैं :

﴾1﴿ इस मख्खी के घरों या'नी छत्तों का डिसिप्लिन और निज़ामे अ़मल इतना मुनज़्ज़म और बा क़ाइदा है गोया एक तरक़्क़ी याफ़्ता मुल्क का "निज़ामे सल्त़नत" है। जो पूरे निज़ाम व इन्तिज़ाम के साथ नज़्मे ममलुकत चला रहा है जिस में कोई ख़लल और फ़साद रू नुमा नहीं होता।

﴾2﴿ हज़ारों बल्कि लाखों की ता'दाद में येह मख्खियां इस त़रह़ रहती हैं कि इन का एक बादशाह होता है जो जिस्म और क़द में तमाम मख्खियों से बड़ा होता है। तमाम मख्खियां उसी की क़ियादत में सफ़र और क़ियाम करती हैं इस बादशाह को "या'सूब" कहते हैं।

﴾3﴿ इन का "या'सूब" इन मख्खियों के लिये तक़्सीम कार करता है और सब को अपनी अपनी ड्यूटी पर लगा कर काम कराता है। चुनान्चे, कुछ मख्खियां मकान बनाती हैं जो सूराख़ों की शक्ल में होता है येह मख्खियां इन सूराख़ों को इतनी ख़ूबसूरती और यक्सानिय्यत के साथ मुसद्दस (छे गोशों वाला) शक्ल का बनाती हैं कि गोया किसी माहिर इन्जीनियर ने परकार की मदद से इन सूराख़ों को बनाया है। सब की शक्ल बिल्कुल यक्सां और एक जैसी सब की लम्बाई चोड़ाई और गहराई बिल्कुल बराबर होती है।

﴾4﴿ कुछ मख्खियां "या'सूब" के हुक्म से अन्डे बच्चे पैदा करने का काम अन्जाम देती हैं, कुछ शहद तय्यार करती हैं, कुछ मोम बनाती हैं, कुछ पानी लाती हैं, कुछ पहरा देती रहती हैं, मजाल नहीं कि कोई दूसरी मख्खी इन के घर में दाख़िल हो सके।

﴾5﴿ येह मख्खियां फलों फूलों वग़ैरा का रस चूस चूस कर लाती हैं और शहद के ख़ज़ाने में जम्अ़ करती रहती हैं और फलों फूलों की तलाश में जंगलों और मैदानों में सेंकड़ों मील अलग अलग दूर दूर तक चली जाती हैं मगर येह अपने छत्तों को नहीं भूलती हैं और बिला तकल्लुफ़ किसी तलाश के सीधे सेकडों मील की दूरी से अपने छत्तों में पहुंच जाती हैं।

﴾6﴿ येह मख्खियां मुख़्तलिफ़ रंगों और मुख़्तलिफ़ ज़ाइक़ों का शहद तय्यार करती हैं, कभी सुर्ख़, कभी सफ़ेद, कभी सियाह, कभी ज़र्द, कभी पतला, कभी गाढ़ा, मुख़्तलिफ़ मौसिमों में और मुख़्तलिफ़ फलों फूलों की

बदौलत शहद के मुख़्तलिफ़ रंग और ज़ाइक़े बदलते रहते हैं।

﴿7﴾ येह अपने छत्ते कभी दरख़्तों पर, कभी पहाड़ों पर, कभी घरों में, कभी दीवारों के सूराख़ों में, कभी ज़मीन के अन्दर बनाया करती हैं और हर जगह यक्सां डिसिप्लिन और निज़ाम के साथ इन का कारख़ाना चलता रहता है।

﴿8﴾ नाफ़रमान और बाग़ी मख्खियों को इन का "या'सूब" मुनासिब सज़ाएं भी देता है यहां तक कि बा'ज़ को क़त्ल भी करवा देता है और सब को अपने कन्ट्रोल में रखता है। कभी कोई शहद की मख्खी किसी नजासत पर नहीं बैठ सकती और अगर कोई कभी बैठ जाए तो इन का बादशाह "या'सूब" उस को सख़्त सज़ा दे कर छत्ते से निकाल देता है।

कुरआने मजीद में इस शहद की मख्खियों के मसाइल का ख़ुत्बा पढ़ते हुवे इरशाद फ़रमाया कि

وَاَوْحٰى رَبُّكَ اِلَى النَّحْلِ اَنِ اتَّخِذِیْ مِنَ الْجِبَالِ بُیُوْتًا وَّ مِنَ الشَّجَرِ وَ
مِمَّا یَعْرِشُوْنَ ﴿۶۸﴾ ثُمَّ كُلِیْ مِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ فَاسْلُكِیْ سُبُلَ رَبِّكِ ذُلُلًا ؕ
یَخْرُجُ مِنْۢ بُطُوْنِهَا شَرَابٌ مُّخْتَلِفٌ اَلْوَانُهٗ فِیْهِ شِفَآءٌ لِّلنَّاسِ ؕ اِنَّ فِیْ
ذٰلِكَ لَاٰیَةً لِّقَوْمٍ یَّتَفَكَّرُوْنَ ﴿۶۹﴾ (پ۱۴، النحل ۶۸-۶۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- और तुम्हारे रब ने शहद की मख्खी को इल्हाम किया कि पहाड़ों में घर बना और दरख़्तों में और छत्तों में फिर हर क़िस्म के फल में से खा और अपने रब की राहें चल कि तेरे लिये नर्म व आसान हैं, इस के पेट से एक पीने की चीज़ रंग बि रंग निकलती है जिस में लोगों की तन्दुरुस्ती है बेशक इस में निशानी है ध्यान करने वालों को।

दर्से हिदायत :- अल्लाह तआ़ला ने शहद को तमाम बीमारियों के लिये शिफ़ा फ़रमाया है चुनान्चे, बा'ज़ अमराज़ में तन्हा शहद से शिफ़ा ह़ासिल होती है और बा'ज़ अमराज़ में शहद के साथ दूसरी दवाओं को मिला कर बीमारियों का इ़लाज करते हैं जैसा कि मा'जूनों और जवारिशों और त़रह़ त़रह़ के शरबतों के ज़रीए़ तमाम बीमारियों का इ़लाज किया जाता है और इन सब दवाओं में शहद शामिल किया जाता है इसी त़रह़

सिकन्जबीन में भी शहद डाली जाती है जो पेट के अमराज़ के लिये बेहद मुफ़ीद है। बहर हाल हर मुसलमान को येह ईमान रखना चाहिये के शहद में शिफ़ा है इस लिये कि क़ुरआने मजीद में अल्लाह तआ़ला ने शहद के बारे में इरशाद फ़रमाया कि فِيهِ شِفَآءٌ لِّلنَّاسِ ط (پ۱۴، النحل:۶۹)

या'नी इस में लोगों के लिये शिफ़ा है (واللہ تعالیٰ اعلم व फ़क़त़)

﴾33﴿ खूसट उ़म्र वाला

इन्सान की वोह त़वील उ़म्र जिस में इन्सान के तमाम क़ुव्वा मुज़्महिल और बेकार हो जाते हैं और आदमी बिल्कुल ही नाक़िसुल क़ुव्वत, कम अ़क़्ल और क़लीलुल फ़हम हो कर बचपन की हैअत के मिष्ल अ़क़्ल व दानाई और होश व खुर्द से आ़री और निस्यान के ग़लबे से सारा इ़ल्म भूल जाता है और उठने बैठने, चलने फिरने से मजबूर हो जाता है। अल्लाह तआ़ला ने इस उ़म्रे इन्सानी का ज़िक्र फ़रमाते हुवे क़ुरआने मजीद में इरशाद फ़रमाया कि

وَاللّٰهُ خَلَقَكُمْ ثُمَّ يَتَوَفّٰىكُمْ ۙ۫ وَمِنْكُمْ مَّنْ يُّرَدُّ اِلٰۤى اَرْذَلِ الْعُمُرِ لِكَیْ لَا يَعْلَمَ بَعْدَ عِلْمٍ شَيْـًٔا ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌ قَدِيْرٌ ۟ ع (پ۱۴، النحل:۷۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :– और अल्लाह ने तुम्हें पैदा किया फिर तुम्हारी जान क़ब्ज़ करेगा और तुम में कोई सब से नाक़िस उ़म्र की त़रफ़ फेरा जाता है कि जानने के बा'द कुछ न जाने बेशक अल्लाह सब कुछ जानता सब कुछ कर सकता है।

इस ''अर्ज़लुल उ़म्र'' की कोई मिक़दार मुअ़य्यन नहीं है, तारीख़ी तजरिबा है कि बा'ज़ लोग साठ ही बरस की उ़म्र में ऐसे हो जाते हैं कि बा'ज़ लोग एक सो बरस की उ़म्र पा कर भी खूसट उ़म्र की मन्ज़िल में नहीं पहुंचते। हां इमाम क़तादा رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه का क़ौल है कि नव्वे बरस की उ़म्र वाले के तमाम क़ुव्वा और ह़वास अ़मल व तसर्रुफ़ से नाकारा हो जाते हैं और वोह हर क़िस्म की कमाई और ह़ज व जिहाद वग़ैरा के क़ाबिल नहीं रह जाते और येह उ़म्र और इस की कैफ़िय्यात वाक़ेई इस

क़ाबिल हैं कि इन्सान इस से ख़ुदा की पनाह मांगे। चुनान्चे, ह़दीष शरीफ़ में है कि हु़ज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सात चीज़ों से पनाह मांगा करते थे और यूं दुआ़ मांगा करते थे।

اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَعُوْذُبِكَ مِنَ الْبُخْلِ وَالْكَسَلِ وَاَرْذَلِ الْعُمُرِ وَعَذَابِ الْقَبْرِ وَفِتْنَةِ الدَّجَّالِ وَفِتْنَةِ الْمَحْيَا وَالْمَمَاتِ (صحیح البخاری،ج۳،ص۲۵۷،حدیث۴۷۰۷بتغیرقلیل)

ऐ **अल्लाह** मैं तेरी पनाह मांगता हूं **कन्जूसी** से और **काहिली** से और **खूसट उ़म्र** से और **क़ब्र के अ़ज़ाब** से और **फ़ितनए दज्जाल** से और **ज़िन्दगी के फ़ितने** से और **मौत के फ़ितने** से।

इसी लिये मन्क़ूल है कि मश्हूर बुज़ुर्ग और मुस्तनद आ़लिमे दीन ह़ज़रते मुह़म्मद बिन अ़ली वासित़ी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه अपनी ज़ात के लिये ख़ास तौर पर येह दुआ़ मांगा करते थे।

يَا رَبِّ لَا تُحْيِنِىْ اِلٰى زَمَنٍ   اَكُوْنُ فِيْهِ كَلًّا عَلٰى اَحَدٍ
خُذْ بِيَدِىْ قَبْلَ اَنْ اَقُوْلَ لِمَنْ   اَلْقَاهُ عِنْدَ الْقِيَامِ خُذْ بِيَدِىْ

या'नी ऐ **अल्लाह**! मुझे इतने ज़माने तक ज़िन्दा मत रख कि मैं किसी पर बोझ बन जाऊं तू इस से क़ब्ल मेरी दस्त्गीरी फ़रमा ले कि मैं हर मिलने वाले से उठते वक़्त येह कहूं कि तुम मेरा हाथ पकड़ लो।

ह़दीष शरीफ़ में है और बा'ज़ लोगों ने इस को ह़ज़रते इकरिमा का क़ौल बताया है कि जो शख़्स क़ुरआन को पढ़ता रहे वोह अर्ज़लिल उ़म्र (खूसट) को न पहुंचेगा और ऐसे ही जो क़ुरआन में ग़ौरो फ़िक्र करता रहेगा और क़ुरआन पर अ़मल भी करता रहेगा वोह भी इस खूसट उ़म्र से मह़फ़ूज़ रहेगा। (تفسیر روح البیان،ج۵،ص۵۴۔۵۵ (ملخصاً)،پ۱۴، النحل:۷۰)

दर्से हिदायत :- ज़िन्दगी और मौत और कम या ज़ियादा उ़म्र येह **अल्लाह** तआ़ला ही के क़ब्ज़े व इख़्तियार में है वोह जिस को चाहे कम उ़म्र अ़ता फ़रमाए और जिस को चाहे त़वील उ़म्र बख़्शे। किसी इन्सान को हरगिज़ हरगिज़ इस में कोई दख़्ल नहीं है इन्सान को चाहिये कि बहर ह़ाल ख़ुदावन्दे क़ुद्दूस की मरज़ी पर साबिरो शाकिर रहे। हां अलबत्ता येह

दुआ़ मांगता रहे कि **अल्लाह** तआ़ला मेरी ज़िन्दगी को नेकियों में गुज़ारे और हर क़िस्म के गुनाहों से मह़फ़ूज़ रखे क्यूंकि थोड़ी सी उ़म्र मिले और नेकियों में गुज़रे तो इस से बड़ा कोई इन्आ़म नहीं और उ़म्र त़वील पाए मगर ह़सनात और नेकियों में न गुज़रे तो वोह लम्बी उ़म्र बहुत बड़ा ख़सारा और वबाल है और इस का हर वक़्त ध्यान रखे कि किसी बूढ़े शख़्स की बे अदबी न होने पाए बल्कि हमेशा बूढ़ों का ए'ज़ाज़ व एह़तिराम पेशे नज़र रहे, क्यूंकि

एक ह़दीष में है कि एक शख़्स ने दरबारे रिसालत में फ़क़्रो फ़ाक़ा की शिकायत की, तो हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया لَعَلَّکَ مَشَیْتَ اَمَامَ شَیْخٍ या'नी ग़ालिबन तुम किसी बूढ़े आदमी के आगे आगे चले होंगे। येह उसी की नुह़ूसत हैं।

(تفسیر روح البیان، ج۵، ص ۵۶،پ۱۴، النحل:۷۰)

तौबा की फ़ज़ीलत

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने मसऊ़द رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने रह़मत निशान है :

اَلتَّائِبُ مِنَ الذَّنْبِ كَمَنْ لَّا ذَنْبَ لَهٗ

या'नी "गुनाहों से तौबा करने वाला ऐसा है जैसा कि उस ने गुनाह किया ही नहीं।"

(फ़ैज़ाने सुन्नत, जि. 1 स. 1284)(سنن ابن ماجه، حدیث ۴۲۵، ص۲۷۳۵)

﴾34﴿ बे वुक़ूफ़ बुढ़िया

मक्कए मुकर्रमा में एक बुढ़िया रैता बिन्ते सा'द बिन तमीम क़रशिया थी। जिस के मिज़ाज में वहम और अ़क़्ल में फ़ुतूर था वोह रोज़ाना दोपहर तक मेह़नत कर के सूत काता करती थी और दोपहर के बा'द वोह काते हुवे सूत को तोड़ कर रैज़ा रैज़ा कर डालती थी और अपनी बांदियों से भी तुड़वाती थी, येही रोज़ाना का उस का मा'मूल था।

(تفسیر صاوی، ج۳، ص ۱۰۸۹، پ۱۴، النحل:۹۲)

जो लोग **अल्लाह** तआ़ला के नाम की क़समें खा कर या उस के नाम पर लोगों से कोई अ़हद कर के अपनी क़समों और अ़हदों को तोड़ दिया करते हैं। उन लोगों को **अल्लाह** तआ़ला ने उस औ़रत से तशबीह देते हुवे क़समों और अ़हदों के तोड़ने से मन्अ़ फ़रमाया है। चुनान्चे, इरशाद फ़रमाया कि

وَاَوْفُوْا بِعَهْدِ اللّٰهِ اِذَا عٰهَدْتُّمْ وَلَا تَنْقُضُوا الْاَیْمَانَ بَعْدَ تَوْكِیْدِهَا وَ قَدْ جَعَلْتُمُ اللّٰهَ عَلَیْكُمْ كَفِیْلًاؕ اِنَّ اللّٰهَ یَعْلَمُ مَا تَفْعَلُوْنَ ﴿۹۱﴾ وَ لَا تَكُوْنُوْا كَالَّتِیْ نَقَضَتْ غَزْلَهَا مِنْۢ بَعْدِ قُوَّةٍ اَنْكَاثًاؕ (پ۱۴، النحل:۹۱۔۹۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- और **अल्लाह** का अ़हद पूरा करो जब क़ौल बांधो और क़समें मज़बूत़ कर के न तोड़ो और तुम **अल्लाह** को अपने ऊपर ज़ामिन कर चुके हो बेशक **अल्लाह** तुम्हारे काम जानता है और उस औ़रत की त़रह़ न हो जिस ने अपना सूत मज़बूत़ी के बा'द रैज़ा रैज़ा कर के तोड़ दिया।

दर्से हिदायत :- हर क़सम की बद अ़हदी और अ़हद शिकनी ममनूअ़ और शरीअ़त में गुनाह है इसी त़रह़ **अल्लाह** तआ़ला की क़सम खा कर बिला ज़रूरत इस को तोड़ना भी जाइज़ नहीं। **अल्लाह** तआ़ला ने इरशाद फ़रमाया है कि اَوْفُوْا بِالْعُقُوْدِ ۬ या'नी अपने अ़हदों और मुआ़हदों को पूरा करो और फ़रमाया कि وَاحْفَظُوْۤا اَیْمَانَكُمْؕ या'नी अपनी क़समों की ह़िफ़ाज़त करो। हां, अलबत्ता अगर किसी ख़िलाफ़े शरअ़ बात की क़सम खा ली हो तो हरगिज़ हरगिज़ इस क़सम पर अड़े नहीं रहना चाहिये बल्कि लाज़िम है कि इस क़सम को तोड़ कर इस का कफ़्फ़ारा अदा करे। (واللہ تعالٰی اعلم)

﴾35﴿ हसूर गाऊं की बरबादी

"हसूर" यमन का एक गाऊं था इस गाऊं वालों की हिदायत के लिये हज़रते मूसा बिन इमरान عَلَيْهِ السَّلَام से बहुत पहले **अल्लाह** तआला ने एक नबी को भेजा जिन का नाम मूसा बिन मीशा था जो हज़रते या'कूब عَلَيْهِ السَّلَام के परपोते थे। गाऊं वालों ने आप को झुटलाया और फिर आप को क़त्ल कर दिया इस नाजाइज़ हरकत पर खुदा का क़हरो ग़ज़ब और उस का अज़ाब गाऊं वालों पर उतर पड़ा। गाऊं वाले त़रह त़रह की बलाओं में गिरिफ़्तार हो गए यहां तक कि "**बुख़्ते नस्सर**" काफ़िर व ज़ालिम बादशाह इस गाऊं पर मुसल्लत़ हो गया। और उस ने निहायत ही बेदर्दी के साथ पूरे गाऊं के तमाम मर्दों को क़त्ल कर दिया और सब औरतों को गिरिफ़्तार कर के लौंडी बना लिया और शहर को ताख़्तो ताराज कर के उस की ईंट से ईंट बजा दी। जब शहर में क़त्ले आ़म शुरूअ़ हुवा तो गाऊं वाले भागने लगे उस वक़्त फ़िरिश्तों ने बत़ौरे मज़ाक़ के कहा कि "ऐ गाऊं वालो ! मत भागो और अपने घरों में अपने माल व दौलत को ले कर आराम व ह़सीन ज़िन्दगी बसर करो। कहां भाग रहे हो ? ठहरो ! येह अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام के ख़ूने नाह़क़ का बदला है जो तुम्हें मिल रहा है।" आस्मान से मलाइका की येह आवाज़ पूरे गाऊं वालों में आती रही और "बुख़्ते नस्सर" के लश्करों की तल्वारें इन के सर उड़ाती रहीं। जब गाऊं वालों ने येह मन्ज़र देखा तो अपने गुनाहों और जुर्मों का इक़रार करने लगे मगर उन की आहोज़ारी और गिर्या व बेक़रारी ने उन को कोई नफ़्अ़ नहीं दिया। गाऊं में हर त़रफ़ ख़ून की नदियां बह गईं और सारा गाऊं तह्स नह्स हो गया। क़ुरआने मजीद ने इन लोगों की हलाकत व बरबादी की दास्तान को इन लफ़्ज़ों में बयान फ़रमाया है :

وَكَمْ قَصَمْنَا مِنْ قَرْيَةٍ كَانَتْ ظَالِمَةً وَّاَنْشَاْنَا بَعْدَهَا قَوْمًا اٰخَرِيْنَ ﴿۱۱﴾
فَلَمَّاۤ اَحَسُّوْا بَاْسَنَاۤ اِذَا هُمْ مِّنْهَا يَرْكُضُوْنَ ﴿۱۲﴾ لَا تَرْكُضُوْا وَارْجِعُوْۤا
اِلٰى مَاۤ اُتْرِفْتُمْ فِيْهِ وَمَسٰكِنِكُمْ لَعَلَّكُمْ تُسْـَٔلُوْنَ ﴿۱۳﴾ قَالُوْا يٰوَيْلَنَاۤ اِنَّا
كُنَّا ظٰلِمِيْنَ ﴿۱۴﴾ فَمَا زَالَتْ تِّلْكَ دَعْوٰىهُمْ حَتّٰى جَعَلْنٰهُمْ حَصِيْدًا
خٰمِدِيْنَ ﴿۱۵﴾ (پ۱۷،الانبياء:۱۱ـ۱۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- और कितनी ही बस्तियां हम ने तबाह कर दीं कि वोह सितमगार थीं और उन के बा'द और क़ौम पैदा की तो जब इन्हों ने हमारा अ़ज़ाब पाया जभी वोह उस से भागने लगे, न भागो और लौट के जाओ उन आसाइशों की त़रफ़ जो तुम को दी गई थीं और अपने मकानों की त़रफ़ शायद तुम से पूछना हो, बोले हाए ख़राबी हमारी बेशक हम ज़ालिम थे तो वोह येही पुकारते रहे यहां तक कि हम ने उन्हें कर दिया काटे हुवे बुझे हुवे।

और बा'ज़ मुफ़स्सिरीने किराम ने फ़रमाया है कि इस आयत में गाऊं से मुराद गुज़श्ता हलाक शुदा उम्मतों के गाऊं हैं। या'नी ह़ज़रते नूह़ व ह़ज़रते लूत़ व ह़ज़रते सालेह़ व ह़ज़रते शोऐ़ब عَلَيْهِمُ السَّلَام की क़ौमों की बस्तियां जो त़रह़ त़रह़ के अ़ज़ाबों से हलाक व बरबाद कर दी गईं।(واللّٰہ تعالٰی اعلم) (تفسیر صاوی، ج۴، ص ۱۲۹۲، پ۱۷، الانبیاء:۱۱)

दर्से हिदायत :- ह़ज़राते अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام की तकज़ीब व तौहीन और इन की ईज़ा रसानी व क़त्ल येह सब बड़े बड़े वोह जुर्मे अ़ज़ीम हैं कि ख़ुदावन्दे क़ुद्दूस का अ़ज़ाब इन लोगों पर ज़रूर आता ही है। चुनान्चे, क़ुरआने मजीद गवाह है कि बहुत सी बस्तियां इन्हीं जुर्मों में तबाह व बरबाद कर दी गईं।

﴾36﴿ ह़ज़रते ज़ुल किफ़्ल عَلَيْهِ السَّلَام

क़ुरआने मजीद में ह़ज़रते ज़ुल किफ़्ल عَلَيْهِ السَّلَام का ज़िक्र सिर्फ़ दो सूरतों या'नी "सूरए अम्बिया" और "सूरए صٓ" में किया गया है और इन दोनों सूरतों में सिर्फ़ आप का नाम मज़्कूर है। नाम के इ़लावा आप के ह़ालात का मुजमल या मुफ़स्सल कोई तज़्किरा नहीं है। सूरए अम्बिया में येह है :

وَ اِسْمٰعِیْلَ وَ اِدْرِیْسَ وَ ذَا الْكِفْلِ ؕ كُلٌّ مِّنَ الصّٰبِرِیْنَ ﴿ۚۖ۸۵﴾ (پ۱۷، الانبیاء:۸۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- और इस्माईल और इदरीस और ज़ुल किफ़्ल को (याद करो) वोह सब सब्र वाले थे।

और सूरए "صٓ" में इस त़रह़ इरशाद हुवा कि

وَاذْكُرْ اِسْمٰعِيْلَ وَالْيَسَعَ وَذَا الْكِفْلِ ؕ وَكُلٌّ مِّنَ الْاَخْيَارِ ﴿۴۸﴾ (پ۲۳، ص:۴۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और याद करो इस्माईल और युसअ़ और ज़ुल किफ़्ल को और सब अच्छे हैं।

हज़रते ज़ुल किफ़्ल عَلَيْهِ السَّلَام के मुतअ़ल्लिक़ क़ुरआने मजीद ने नाम के सिवा कुछ नहीं बयान किया है इसी त़रह़ ह़दीषों में भी आप का कोई तज़्किरा मन्क़ूल नहीं है। लिहाज़ा क़ुरआन व ह़दीष की रोशनी में इस से ज़ियादा नहीं कहा जा सकता कि ज़ुल किफ़्ल عَلَيْهِ السَّلَام ख़ुदा के बरगुज़ीदा नबी और पैग़म्बर थे जो किसी क़ौम की हिदायत के लिये मबऊ़ष हुवे थे।

अलबत्ता हज़रते शाह अ़ब्दुल क़ादिर साह़िब देहलवी इरशाद फ़रमाते हैं कि हज़रते ज़ुल किफ़्ल عَلَيْهِ السَّلَام हज़रते अय्यूब عَلَيْهِ السَّلَام के फ़रज़न्द हैं और इन्हों ने ख़ालिसन लि-वजहिल्लाह किसी की ज़मानत कर ली थी। जिस की वजह से इन को कई बरस क़ैद की तक्लीफ़ बरदाश्त करनी पड़ी। (موضح القرآن)

और बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने तह़रीर फ़रमाया कि हज़रते ज़ुल किफ़्ल عَلَيْهِ السَّلَام दर ह़क़ीक़त हज़रते ह़िज़्क़ील عَلَيْهِ السَّلَام का लक़ब है।

और ज़मानए ह़ाल के कुछ लोगों का ख़याल है कि ज़ुल किफ़्ल "गौतम बुध" का लक़ब है इस लिये कि इस के दारुस्सल्त़नत का नाम "कपल वस्तू" था जिस का मुअ़र्रब "किफ़्ल" है और अ़रबी में "ज़ू", "साह़िब" और "मालिक" के मा'ना में बोला जाता है इस लिये यहां भी "कपल वस्तू" के मालिक और बादशाह को "ज़ुल किफ़्ल" कहा गया और इन लोगों का दा'वा है कि "गौतम बुध" की अस्ल ता'लीम तौह़ीद और ह़क़ीक़ी इस्लाम ही की थी मगर बा'द में येह दीन दूसरे अदयान व मिलल की त़रह़ मस्ख़ व मुह़र्रफ़ हो गया। मगर वाज़ेह़ रहे कि ज़मानए ह़ाल के चन्द लोगों की येह राए कि "ज़ुल किफ़्ल" गौतम बुध का लक़ब है मेरे नज़्दीक येह मह़्ज़ एक ख़याली तुक बन्दी है। तारीख़ी और तह़क़ीक़ी हैषिय्यत से इस राए की कोई वुक़्अ़त नहीं है। (واللہ تعالیٰ اعلم)

ब ज़ाहिर ऐसा मा'लूम होता है कि ह़ज़रते ज़ुल किफ़्ल عَلَيْهِ السَّلَام अम्बियाए बनी इस्राईल में से हैं और बनी इस्राईल के इन ह़ालात व वाक़िआत के सिवा जिन की तफ़्सीलात क़ुरआने मजीद में मुख़्तलिफ़ अम्बियाए बनी इस्राईल के ज़िक्र में आती रही हैं, ह़ज़रते ज़ुल किफ़्ल عَلَيْهِ السَّلَام के ज़माने में कोई ख़ास वाक़िआ ऐसा दरपेश नहीं हुवा जो आ़म तब्लीग़ व हिदायत से ज़ियादा अपने अन्दर इ़ब्रत व मौइ़ज़त का पहलू रखता हो। इस लिये क़ुरआने मजीद ने फ़क़त़ इन के नाम ही के ज़िक्र पर इक्तिफ़ा किया और ह़ालात व वाक़िआत का ज़िक्र नहीं फ़रमाया फ़क़त़।(واللہ تعالیٰ اعلم)

﴾37﴿ नहरें उठा ली जाएंगी

ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला ने पांच नहरों को जन्नत से जारी फ़रमाया है।

﴾1﴿ जैहून ﴾2﴿ यहून ﴾3﴿ दिजला ﴾4﴿ फ़ुरात ﴾5﴿ नील।

येह पांचों नदियां एक ही चश्मे से जारी हुई हैं। अल्लाह तआ़ला ने ह़ज़रते जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام के ज़रीए़ जन्नत के इस चश्मे को पहाड़ों के अन्दर अमानत रख दिया है और पहाड़ों से इन नहरों को ज़मीन पर जारी फ़रमा दिया है। जिस से लोग त़रह़ त़रह़ के फ़वाइद ह़ासिल कर रहे हैं। जब याजूज माजूज के निकलने का वक़्त होगा तो अल्लाह तआ़ला ह़ज़रते जिब्रईल عَلَيْهِ السَّلَام को ज़मीन पर भेजेगा और वोह छे चीज़ों को ज़मीन से उठा ले जाएंगे।

﴾1﴿ क़ुरआने मजीद ﴾2﴿ तमाम उ़लूम ﴾3﴿ ह़जरे अस्वद ﴾4﴿ मक़ामे इब्राहीम ﴾5﴿ मूसा عَلَيْهِ السَّلَام का ताबूत ﴾6﴿ मज़्कूरए बाला पांचों नहरें और जब येह छे चीज़ें ज़मीन से उठा ली जाएंगी तो दीनो दुन्या की बरकतें रूए ज़मीन से उठ जाएंगी और लोग इन बरकतों से बिल्कुल मह़रूम हो जाएंगे। (تفسیر صاوی،ج۴، ص ۱۳۶۰،پ۱۸،المومنون:۱۸)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने कुरआने मजीद में इरशाद फ़रमाया कि

وَاَنۡزَلۡنَا مِنَ السَّمَآءِ مَآءًۢ بِقَدَرٍ فَاَسۡكَنّٰهُ فِى الۡاَرۡضِ ۖ وَاِنَّا عَلٰى ذَهَابٍۢ بِهٖ لَقٰدِرُوۡنَ ۚ‏ ﴿۱۸﴾ (پ۱۸،المومنون:۱۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- और हम ने आस्मान से पानी उतारा एक अन्दाज़े पर फिर उसे ज़मीन में ठहराया और बेशक हम उस के ले जाने पर क़ादिर हैं।

इस आयत में وَاِنَّا عَلٰى ذَهَابٍۢ بِهٖ لَقٰدِرُوۡنَ ﴿۱۸﴾ का येही मत्लब है कि इन पानियों और नह्रों को एक वक़्त हम उठा कर जहां से हम ने उतारा है वहां पहुंचा देंगे और ज़मीन से येह सब नापैद हो जाएंगे।

दर्से हिदायत :- तो बन्दों पर लाज़िम है कि खुदावन्दे कुद्दूस की इन ने'मतों की शुक्र गुज़ारी के साथ हिफ़ाज़त करें और हरगिज़ हरगिज़ पानी को बेकार ज़ाएअ़ न करें और हर वक़्त खुदा से डरते रहें कि कहीं येह ने'मत हम से सल्ब न कर ली जाए। (واللہ تعالٰی اعلم)

﴿38﴾ तख़्लीक़े इन्सानी के मराहिल

अल्लाह तआ़ला बड़ा क़ादिरो क़य्यूम है। अगर वोह चाहे तो एक लम्हे में हज़ारों इन्सानों को पैदा फ़रमा दे मगर वोह क़ादिरे मुत्लक़ अपनी कुदरते कामिला के बा वुजूद अपनी हिक्मते कामिला से इन्सानों को ब तदरीज शरफ़े वुजूद बख़्शता है। चुनान्चे, नुत्फ़ा मां की बच्चा दानी में पहुंच कर त़रह त़रह की कैफ़िय्यात और क़िस्म क़िस्म के तग़य्युरात से एक ख़ास क़िस्म का मिज़ाज ह़ासिल कर के जमा हुवा ख़ून बन जाता है। फिर वोह जमा हुवा ख़ून गोश्त की एक बोटी बन जाता है। फिर गोश्त की बोटी हड्डियां बन जाती हैं। फिर इन हड्डियों पर गोश्त चढ़ जाता है और पूरा जिस्म तय्यार हो जाता है फिर इस में रूह़ डाली जाती है और येह बे जान बदन जानदार हो जाता है और इस में नुत्क़ और सम्अ़ व बसर वग़ैरा की मुख़्तलिफ़ त़ाक़तें वदीअ़त रखी जाती हैं। फिर मां इस बच्चे को जनती है इस त़रह मुख़्तलिफ़ मनाज़िल व मराहिल को तै कर के एक इन्सान बतदरीज आ़लमे वुजूद में आता है। चुनान्चे,

क़ुरआने मजीद ने तख़्लीक़े इन्सानी के इन मराहिल का नक़्शा इन अल्फ़ाज़ में पेश फ़रमाया है कि

ثُمَّ جَعَلْنٰهُ نُطْفَةً فِیْ قَرَارٍ مَّكِیْنٍ ﴿۱۳﴾ ثُمَّ خَلَقْنَا النُّطْفَةَ عَلَقَةً فَخَلَقْنَا الْعَلَقَةَ مُضْغَةً فَخَلَقْنَا الْمُضْغَةَ عِظٰمًا فَكَسَوْنَا الْعِظٰمَ لَحْمًا ۗ ثُمَّ اَنْشَاْنٰهُ خَلْقًا اٰخَرَ ؕ فَتَبٰرَكَ اللّٰهُ اَحْسَنُ الْخٰلِقِیْنَ ﴿۱۴﴾ (پ۱۸، المومنون:۱۳-۱۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- फिर उसे पानी की बूंद किया एक मज़बूत ठहराव में फिर हम ने उस पानी की बूंद को ख़ून की फटक किया फिर ख़ून की फटक को गोश्त की बोटी फिर गोश्त की बोटी को हड्डियां फिर उन हड्डियों पर गोश्त पहनाया फिर उसे सूरत में उठान दी तो बड़ी बरकत वाला है अल्लाह सब से बेहतर बनाने वाला है।

दर्से हिदायत :- तख़्लीक़े इन्सानी के इन मुख़्तलिफ़ मराहिल से गुज़रने में खुदावन्दे क़ुद्दूस की कौन कौन सी हिक्मतें और क्या क्या मस्लेहतें पोशीदा हैं? इन को भला हम आम इन्सान क्या और क्यूंकर समझ सकते हैं? लेकिन कम से कम हर इन्सान के लिये इस में इब्रतों और नसीहतों के बहुत से सामान हैं ताकि इन्सान येह सोचता रहे और कभी इस से ग़ाफ़िल न रहे कि मैं अस्ल में क्या था? और खुदावन्दे क़ुद्दूस ने मुझे क्या से क्या बना दिया? येह ग़ौर कर के खुदावन्दे तआला की क़ुदरते कामिला पर ईमान लाए और कभी फ़ख़्र व तकब्बुर और खुद नुमाई को अपने क़रीब तक न आने दे और येह सोच कर कि मैं नुत़्फ़े की एक बूंद से पैदा हुवा हूं हमेशा आजिज़ी व फ़रूतनी के साथ मुनकसिरुल मिज़ाज बन कर ज़िन्दगी बसर करे और येह सोच कर क़ियामत पर भी ईमान लाए कि जिस खुदा ने मुझे एक बूंद नुत़्फ़ए पानी से इन्सान बना दिया वोह बिला शुबा इस पर भी क़ादिर है कि मरने के बा'द दोबारा मुझे ज़िन्दा कर के मेरे आ'माले नेक व बद का हिसाब लेगा। (واللہ تعالٰی اعلم)

﴾39﴿ मुबारक दरख़्त

कुरआने मजीद में मुबारक दरख़्त से मुराद “जैतून” का दरख़्त है। तूफ़ाने नूह़ عَلَیْہِ السَّلَام के बा'द येह सब से पहला दरख़्त है जो ज़मीन पर उगा और सब से पहले जहां उगा वोह कोहे तूर है। जहां ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام खुदा से हम कलाम हुवे। जैतून के दरख़्त की उ़म्र बहुत ज़ियादा होती है। यहां तक कि बा'ज़ आ़लिमों ने फ़रमाया है कि तीन हज़ार बरस तक येह दरख़्त बाक़ी रहता है। (تفسیر صاوی، ج۴، ص ۱۳۶۰، پ۱۸، المومنون:۲۰)

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْھُمَا ने फ़रमाया कि जैतून में बहुत से फ़वाइद और मन्फ़अ़तें हैं। इस के तेल से चराग़ जलाया जाता है और येह बतौरे सालन के भी इस्ति'माल किया जाता है और इस की सर और बदन पर मालिश भी करते हैं और येह चमड़े की दबाग़त में भी काम आता है। और इस से आग भी जलाते हैं और इस का कोई जुज़्व भी बेकार नहीं। यहां तक कि इस की राख से रेशम धो कर साफ़ किया जाता है और येह ह़ज़राते अम्बिया عَلَیْھِمُ السَّلَام के मकानों और मुक़द्दस ज़मीनों में उगता है और इस के लिये सत्तर अम्बियाए किराम ने बरकत की दुआ़ मांगी है। यहां तक कि ह़ज़रते इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلَیْہِ السَّلَام और हुज़ूर ख़ातिमुन्नबिय्यीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मुक़द्दस दुआ़ओं से भी येह दरख़्त सरफ़राज़ हुवा है। (تفسیر صاوی، ج۴، ص ۱۴۰۵، پ۱۸، نور:۳۵)

अल्लाह तआ़ला ने इस मुबारक दरख़्त के बारे में इरशाद फ़रमाया :

وَ شَجَرَةً تَخْرُجُ مِنْ طُوْرِ سَیْنَآءَ تَنْۢبُتُ بِالدُّهْنِ وَ صِبْغٍ لِّلْاٰكِلِیْنَ ۝۲۰ (پ۱۸، المومنون:۲۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :– और वोह पेड़ पैदा किया कि तूरे सीना से निकलता है ले कर उगता है तेल और खाने वालों के लिये सालन।

दूसरी जगह इरशाद फ़रमाया :

یُّوْقَدُ مِنْ شَجَرَةٍ مُّبٰرَكَةٍ زَیْتُوْنَةٍ لَّا شَرْقِیَّةٍ وَّ لَا غَرْبِیَّةٍ (پ۱۸، النور:۳۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- रोशन होता है बरकत वाले पेड़ जैतून से जो न पूरब (मशरिक़) का न पश्चिम (मग़रिब) का।

दर्से हिदायत :- जैतून एक बड़ी बरकतों वाला दरख़्त है यूं तो हर जगह येह दरख़्त बिग़ैर किसी मेहनत और परवरिश के होता है लेकिन ख़ास तौर पर मुल्के शाम और आम तौर पर मुल्के अ़रब में ब कषरत पाया जाता है और इन मक़ामात पर इस का तेल भी लोग कषरत से इस्ति'माल करते हैं। यहां तक कि मक्कए मुकर्रमा में गोश्त और मछली भी इसी तेल में तल कर लोग खाते हैं। इस के तेल को अ़रबी में "ज़ैत" कहते हैं और येह तेल बेचने वाला "ज़ियात" कहलाता है। अगर मिल सके तो मुसलमानों को चाहिये कि तबर्रुकन इस का इस्ति'माल करे। क्यूंकि क़ुरआन में इस को मुबारक दरख़्त फ़रमाया गया है और सत्तर अम्बियाए किराम ने इस में बरकत के लिये दुआएं फ़रमाई हैं। लिहाज़ा इस के बा बरकत होने में कोई शको शुबा नहीं और जब बा बरकत चीज़ है तो इस में यक़ीनन फ़वाइद व मनाफ़ेअ़ भी बहुत ज़ियादा होंगे। (واللہ تعالیٰ اعلم)

﴾40﴿ अस्हाबुर्रस कौन हैं ?

"रस" लुग़त में पुराने कूंएं के मा'ना में आता है। इस लिये "अस्हाबुर्रस" के मा'ना हुवे "कूंएं वाले" अल्लाह तआ़ला ने क़ुरआने मजीद में "अस्हाबुर्रस" के नाम से एक क़ौम की सरकशी और नाफ़रमानी की वजह से उस की हलाकत का ज़िक्र फ़रमाया है। चुनान्चे, सूरए फ़ुरक़ान में इरशाद फ़रमाया कि :

وَعَادًا وَّثَمُوْدَا۠ وَاَصْحٰبَ الرَّسِّ وَقُرُوْنًۢا بَیْنَ ذٰلِكَ كَثِیْرًا ﴿۳۸﴾ وَكُلًّا
ضَرَبْنَا لَهُ الْاَمْثَالَ٘ وَكُلًّا تَبَّرْنَا تَتْبِیْرًا ﴿۳۹﴾ (پ۱۹، الفرقان:۳۸_۳۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- और आ़द और षमूद और कूंएं वालों को और इन के बीच में बहुत सी संगतें और हम ने सब से मिषालें बयान फ़रमाईं और सब को तबाह कर के मिटा दिया।

और सूरए ق में हलाक शुदा क़ौमों की फ़ेहरिस्त बयान करते हुवे अल्लाह तआ़ला ने इस त़रह़ फ़रमाया कि

كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوْحٍ وَّ اَصْحٰبُ الرَّسِّ وَ ثَمُوْدُ ﴿۱۲﴾ وَ عَادٌ وَّ فِرْعَوْنُ وَ اِخْوَانُ لُوْطٍ ﴿۱۳﴾ وَّ اَصْحٰبُ الْاَیْكَةِ وَ قَوْمُ تُبَّعٍ ؕ كُلٌّ كَذَّبَ الرُّسُلَ فَحَقَّ وَعِیْدِ ﴿۱۴﴾ (پ۲۶،ق:۱۲۔۱۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :– इन से पहले झुटलाया नूह़ की क़ौम और रस वालों और षमूद और आ़द और फ़िरऔ़न और लूत़ के हम क़ौमों और बन वालों और तुब्बअ़ की क़ौम ने इन में हर एक ने रसूलों को झुटलाया तो मेरे अ़ज़ाब का वा'दा षाबित हो गया।

"अस्ह़ाबुर्रस" कौन थे? और कहां रहते थे? इस बारे में मुफ़स्सिरीन के अक्वाल इस क़दर मुख़्तलिफ़ हैं कि ह़क़ीक़ते ह़ाल बजाए मुन्कशिफ़ होने के और ज़ियादा मस्तूर हो गई है। बहर ह़ाल हम मुख़्तसरन चन्द अक्वाल यहां ज़िक्र कर के एक अपनी भी पसन्दीदा बात तह़रीर करते हैं।

क़ौले अव्वल :– अ़ल्लामा इब्ने जरीर की राए येह है कि "रस" के मा'ना ग़ार के भी आते हैं। इस लिये "अस्ह़ाबुल उख़्दूद" (गढ़ेवालों) ही को "अस्ह़ाबुर्रस" भी कहते हैं।

क़ौले दुवुम :– इब्ने अ़साकिर ने अपनी तारीख़ में इस क़ौल को ह़क़ बताया है कि "अस्ह़ाबुर्रस" क़ौमे आ़द से भी सदियों पहले एक क़ौम का नाम है। येह लोग जिस जगह आबाद थे वहां अल्लाह तआ़ला ने एक पैग़म्बर ह़ज़रते ह़न्ज़ला बिन सफ़्वान को मबऊ़ष फ़रमाया था उस सरकश क़ौम ने अपने नबी की बात नहीं मानी और किसी त़रह़ भी ह़क़ को क़बूल नहीं किया बल्कि अपने पैग़म्बर को क़त्ल कर दिया। जिस सज़ा में पूरी क़ौम अ़ज़ाबे इलाही से हलाक व बरबाद हो गई। (تفسیر سورۂ فرقان و تاریخ ابن کثیر، ج ۱)

क़ौले सिवुम :– इब्ने अबी ह़ातिम का क़ौल है कि आज़र बाईजान के क़रीब एक कूंआं था उस कूंएं के क़रीब जो क़ौम आबाद थी उस ने अपने नबी को कूंएं में डाल कर ज़िन्दा दफ़्न कर दिया था। इस लिये इन लोगों को "अस्ह़ाबुर्रस" कहा गया। (تفسیر ابن کثیر، ج۶، ص ۱۰۱،پ۱۹،الفرقان:۳۸)

क़ौले चहारुम :– क़तादा कहते हैं कि "यमामा" के अ़लाक़े में "फ़लज" नामी एक बस्ती थी 'अस्ह़ाबुर्रस" वहीं आबाद थे और येह वोही क़ौम है जिस को क़ुरआने मजीद में "अस्ह़ाबुल क़रयह" भी कहा गया है और येह मुख़्तलिफ़ निस्बतों से पुकारे जाते हैं।

क़ौले पन्जुम :– अबू बक्र उ़मर नक़्क़ाश और सुहैली कहते हैं कि "अस्ह़ाबुर्रस" की आबादी में एक बहुत बड़ा कुंवां था जिस का पानी वोह लोग पीते थे और इस से अपने खेतों की आबपाशी भी करते थे और इन लोगों ने गुमराह हो कर अपने पैग़म्बर को क़त्ल कर दिया था, इस जुर्म में अ़ज़ाबे इलाही उतर पड़ा और येह पूरी क़ौम हलाक व बरबाद हो गई।

क़ौले शशुम :– मुह़म्मद बिन का'ब कुर्ज़ी फ़रमाते हैं कि हुज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने फ़रमाया कि

اِنَّ اَوَّلَ النَّاسِ یَدْخُلُ الْجَنَّةَ یَوْمَ الْقِیٰمَةِ الْعَبْدُ الْاَسْوَدُ

या'नी जन्नत में सब से पहले जो शख़्स दाख़िल होगा वोह एक काला ग़ुलाम होगा।

और येह इस लिये कि एक बस्ती में अल्लाह तआ़ला ने अपना एक नबी भेजा मगर एक काले ग़ुलाम के सिवा कोई उन पर ईमान नहीं लाया फिर अहले शहर ने उस नबी को एक कूंएं में डाल कर कूंएं के मुंह को एक भारी पथ्थर से बन्द कर दिया, ताकि कोई खोल न सके। मगर येह सियाह फ़ाम ग़ुलाम रोज़ाना जंगल से लकड़ियां काट कर लाता और इन को फ़रोख़्त कर के खाना ख़रीदता और कूंएं पर पहुंच कर पथ्थर उठाता और नबी की ख़िदमत में खाना पेश करता था। कुछ दिनों के बा'द अल्लाह तआ़ला ने इस ग़ुलाम पर जंगल में नींद त़ारी कर दी और येह चौदह साल तक सोता ही रह गया। इस दरमियान में क़ौम का दिल बदल गया और इन लोगों ने नबी को कूंएं में से निकाल कर तौबा कर ली और ईमान क़बूल कर लिया फिर चन्द दिनों के बा'द नबी की वफ़ात हो गई। चौदह साल के बा'द जब काले ग़ुलाम की आंख खुली तो उस ने समझा कि मैं चन्द घन्टे सोया हूं जल्दी जल्दी लकड़ियां काट कर वोह शहर में पहुंचा तो येह देख कर कि शहर के ह़ालात बदले हुवे हैं दरयाफ़्त किया तो

सारा क़िस्सा मा'लूम हुवा और इसी ग़ुलाम के मुतअ़ल्लिक़ नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि जन्नत में सब से पहले एक काला ग़ुलाम जाएगा। (تفسیر ابن کثیر، ج۶، ص ۱۰۱، پ۱۹، الفرقان:۳۸)

क़ौल हफ़्तुम :– मश्हूर मुअर्रिख़ अ़ल्लामा मसऊ़दी बयान करते हैं कि "अस्ह़ाबुर्रस" ह़ज़रते इस्माईल عَلَيْهِ السَّلَام की अवलाद में से हैं और येह दो क़बीले थे "क़ैदमा" (क़ैदमाह) और दूसरा "यामीन" या "रा'वील" और येह दोनों क़बीले यमन में आबाद थे।

क़ौले हश्तुम :– मिस्र के एक आ़लिम फ़रजुल्लाह ज़क्की कुरदी कहते हैं कि लफ़्ज़ "रस", "अरस" का मुख़फ़्फ़फ़ है और येह शहर क़फ़क़ाज़ के अ़लाक़े में वाक़ेअ़ है इस वादी में अल्लाह तआ़ला ने एक नबी को मबऊ़ष फ़रमाया जिन का नाम इब्राहीम ज़रदश्त था। इन्हों ने अपनी क़ौम को दीने ह़क़ की दा'वत दी मगर इन की क़ौम ने सरकशी और बग़ावत इख़्तियार की चुनान्चे, येह क़ौम अ़ज़ाबे इलाही से हलाक कर दी गई।

"अस्ह़ाबुर्रस" के बारे में येह आठ अक़्वाल हैं जिन में से सभी अक़्वाल मा'रज़े बह़ष में हैं और लोगों ने इन अक़्वाल व रिवायात पर काफ़ी रद्दो क़दह़ किया है जिन की तफ़्सीलात को ज़िक्र कर के हम अपनी मुख़्तसर किताब को तूल देना पसन्द नहीं करते।

ख़ुलासए कलाम येह है कि "अस्ह़ाबुर्रस" के बारे में क़ुरआने मजीद से इतना तो पता चलता है कि इन लोगों का वुजूद यक़ीनन ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام के दरमियान के ज़माने की किसी क़ौम का तज़्किरा है या किसी क़दीमुल अ़हद क़ौम का ज़िक्र है तो क़ुरआने मजीद ने इस के बारे में कुछ भी बयान नहीं फ़रमाया है और मज़्कूरए बाला तफ़्सीरी रिवायतों से इस का क़त्ई फ़ैसला होना बहुत ही मुश्किल है। (واللہ تعالٰی اعلم)

﴾41﴿ अस्ह़ाबे ईका की हलाकत

"ईका" झाड़ी को कहते हैं इन लोगों का शहर सर सब्ज़ जंगलों और हरे भरे दरख़्तों के दरमियान था। अल्लाह तआ़ला ने इन लोगों की हिदायत के लिये ह़ज़रते शोऐ़ब عَلَيْهِ السَّلَام को भेजा। आप ने "अस्ह़ाबे ईका" के सामने जो वा'ज़ फ़रमाया वोह क़ुरआने मजीद में इस त़रह़ बयान किया गया है, आप ने फ़रमाया कि

اَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿۱۷۷﴾ اِنِّیْ لَكُمْ رَسُوْلٌ اَمِیْنٌ ﴿۱۷۸﴾ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَ اَطِیْعُوْنِ ﴿۱۷۹﴾ وَ
مَاۤ اَسْــٴَـلُكُمْ عَلَیْهِ مِنْ اَجْرٍۚ اِنْ اَجْرِیَ اِلَّا عَلٰى رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ ﴿۱۸۰﴾ اَوْفُوا
الْكَیْلَ وَ لَا تَكُوْنُوْا مِنَ الْمُخْسِرِیْنَ ﴿۱۸۱﴾ وَ زِنُوْا بِالْقِسْطَاسِ الْمُسْتَقِیْمِ ﴿۱۸۲﴾
وَ لَا تَبْخَسُوا النَّاسَ اَشْیَآءَهُمْ وَ لَا تَعْثَوْا فِی الْاَرْضِ مُفْسِدِیْنَ ﴿۱۸۳﴾ وَ
اتَّقُوا الَّذِیْ خَلَقَكُمْ وَ الْجِبِلَّةَ الْاَوَّلِیْنَ ﴿۱۸۴﴾ قَالُوْۤا اِنَّمَاۤ اَنْتَ مِنَ
الْمُسَحَّرِیْنَ ﴿۱۸۵﴾ وَ مَاۤ اَنْتَ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا وَ اِنْ نَّظُنُّكَ لَمِنَ الْكٰذِبِیْنَ ﴿۱۸۶﴾
فَاَسْقِطْ عَلَیْنَا كِسَفًا مِّنَ السَّمَآءِ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِیْنَ ﴿۱۸۷﴾ قَالَ رَبِّیْۤ
اَعْلَمُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿۱۸۸﴾ فَكَذَّبُوْهُ فَاَخَذَهُمْ عَذَابُ یَوْمِ الظُّلَّةِؕ اِنَّهٗ كَانَ
عَذَابَ یَوْمٍ عَظِیْمٍ ﴿۱۸۹﴾ (پ۱۹، الشعراء:۱۷۷-۱۸۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :– क्या डरते नहीं बेशक मैं तुम्हारे लिये अल्लाह का अमानत दार रसूल हूं तो अल्लाह से डरो और मेरा हुक्म मानो और मैं इस पर कुछ तुम से उजरत नहीं मांगता मेरा अज्र तो उसी पर है जो सारे जहान का रब है, नाप पूरा करो और घटाने वालों में न हो और सीधी तराज़ू से तोलो और लोगों की चीज़ें कम कर के न दो और ज़मीन में फ़साद फेलाते न फिरो और उस से डरो जिस ने तुम को पैदा किया और अगली मख़्लूक़ को बोले तुम पर जादू हुवा है तुम तो नहीं मगर हम जैसे आदमी और बेशक हम तुम्हें झूटा समझते हैं तो हम पर आस्मान का कोई टुकड़ा गिरा दो अगर तुम सच्चे हो। फ़रमाया : मेरा रब ख़ूब जानता है जो तुम्हारे कौतक (करतूत) हैं तो उन्हों ने उसे झुटलाया तो उन्हें शामियाने वाले दिन के अ़ज़ाब ने आ लिया। बेशक वोह बड़े दिन का अ़ज़ाब था।

ख़ुलासा येह कि "अस्हाबे ईका" ने ह़ज़रते शोऐ़ब عَلَیْهِ السَّلَام की मुस्लेह़ाना तक़रीर को सुन कर बद ज़बानी की और अपनी सरकशी और ग़ुरूर व तकब्बुर का मुज़ाहरा करते हुवे अपने पैग़म्बर को झुटला दिया और यहां तक अपनी सरकशी का इज़्हार किया कि पैग़म्बर से येह कह दिया कि अगर तुम सच्चे हो तो हम पर आस्मान का कोई टुकड़ा गिरा कर हम को हलाक कर दो।

इस के बा'द इस क़ौम पर ख़ुदावन्दे क़ह्हार व जब्बार का क़ाहिराना अ़ज़ाब आ गया और अ़ज़ाब क्या था ? सुनिये और इ़ब्रत ह़ासिल कीजिये।

ह़दीष शरीफ़ में आया है कि **अल्लाह** तआ़ला ने इन लोगों पर जहन्नम का एक दरवाज़ा खोल दिया जिस से पूरी आबादी में शदीद गर्मी और लू की ह़रारत व तपिश फेल गई और बस्ती वालों का दम घुटने लगा तो वोह लोग अपने घरों में घुसने लगे और अपने ऊपर पानी का छिड़काव करने लगे मगर पानी और साये से इन्हें कोई चैन और सुकून नहीं मिलता था। और गर्मी की तपिश से इन के बदन झुलसे जा रहे थे। फिर **अल्लाह** तआ़ला ने एक बदली भेजी जो शामियाने की त़रह़ पूरी बस्ती पर छा गई और इस के अन्दर ठन्डक और फ़रह़त बख़्श हवा थी। येह देख कर सब घरों से निकल कर उस बदली के शामियाने में आ गए जब तमाम आदमी बदली के नीचे आ गए तो ज़लज़ला आया और आस्मान से आग बरसी। जिस में सब के सब टिड्डियों की त़रह़ तड़प तड़प कर जल गए। इन लोगों ने अपनी सरकशी से येह कहा था कि ऐ शोऐ़ब ! हम पर आस्मान का कोई टुकड़ा गिरा कर हम को हलाक कर दो। चुनान्चे, वोही अ़ज़ाब इस सूरत में इस सरकश क़ौम पर आ गया और सब के सब जल कर राख का ढेर बन गए। (تفسیر صاوی،ج۴، ص۱۴۷۴،پ۱۹، الشعرآء:۱۸۹)

एक ज़रूरी तौज़ीह़ :– वाज़ेह़ रहे कि ह़ज़रते शोऐ़ब عَلَیْہِ السَّلَام दो क़ौमों की त़रफ़ रसूल बना कर भेजे गए थे। एक क़ौम ''मदयन'' दूसरे ''अस्ह़ाबे ईका'' इन दोनों क़ौमों ने आप को झुटला दिया, और अपने तु़ग़यान व इ़स्यान का मुज़ाहरा और अपनी सरकशी का इज़्हार करते हुवे इन दोनों क़ौमों ने आप के साथ बे अदबी और बद ज़बानी की और दोनों क़ौमें अ़ज़ाबे इलाही से हलाक कर दी गईं। ''अस्ह़ाबे मदयन'' पर तो येह अ़ज़ाब आया कि فَاَخَذَتْهُمُ الصَّيْحَةُ या'नी ह़ज़रते जिब्रईल عَلَیْہِ السَّلَام की चीख़ और चिंघाड़ की हौलनाक आवाज़ से ज़मीन दहल गई और लोगों के दिल ख़ौफ़े दहशत से फट गए और सब दम ज़दन में मौत के घाट उतर गए। और ''अस्ह़ाबे ईका'', ''عَذَابُ يَوْمِ الظُّلَّةِ'' से हलाक कर दिये गए जिस का तफ़्सीली बयान अभी अभी आप पढ़ चुके हैं। (تفسیر صاوی،ج۴، ص۱۴۷۳، پ۱۹، الشعرآء:۱۷۶)

﴾42﴿ ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام की हिजरत

ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام बचपन ही से फ़िरऔ़न के मह़ल में पले बढ़े मगर जब जवान हो गए तो फ़िरऔ़न और उस की क़ौम क़िब्त़ियों के मज़ालिम देख कर बेज़ार हो गए और फ़िरऔ़नियों के ख़िलाफ़ आवाज़ बुलन्द करने लगे। इस पर फ़िरऔ़न और उस की क़ौम जो ''क़िब्त़ी'' कहलाते थे, आप के दुश्मन बन गए और आप फ़िरऔ़न का मह़ल बल्कि उस का शहर छोड़ कर अत़राफ़ में छुप कर रहने लगे। एक दिन जब शहर वाले दोपहर में क़ैलूला कर रहे थे तो आप चुपके से शहर में दाख़िल हो गए और उस शहर का नाम ''मनफ़'' था जो मिस्र के ह़ुदूद में वाक़ेअ़ है और ''मनफ़'' दर अस्ल ''माफ़'' था जो अ़रबी में ''मनफ़'' हो गया और बा'ज़ का क़ौल येह है कि येह शहर ''ऐ़नुश्शम्स'' था और बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने कहा कि येह शहर ''ह़ाबैन'' था जो मिस्र से दो कोस दूर है। (تفسیر خازن، ج۳،ص۴۲۷،پ۲۰،القصص:۱۴)

या ''उम्मे ख़नान'' या मिस्र था। (تفسیر صاوی،ج۴، ص۱۵۲۲، پ۲۰، القصص:۱۴)

जब आप शहर में पहुंचे तो येह देखा कि एक शख़्स आप की क़ौम का इस्राईली और एक शख़्स फ़िरऔ़न की क़ौम का क़िब्त़ी दोनों लड़ झगड़ रहे हैं। इस्राईली ने ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام से फ़रियाद कर के मदद मांगी। इस पर ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने क़िब्त़ी को एक घूंसा मार दिया जिस से उस का दम निकल गया। इस पर आप को बहुत अफ़्सोस हुवा और आप ख़ुदा से इस्तिग़्फ़ार करने लगे। फ़िरऔ़न की क़ौम के लोगों ने फ़िरऔ़न को इत्तिलाअ़ दी कि किसी इस्राईली ने हमारे एक क़िब्त़ी को मार डाला है इस पर फ़िरऔ़न ने क़ातिल और गवाहों की तलाश का हुक्म दिया।

फ़िरऔ़नी चारों त़रफ़ गश्त करते फिरते थे मगर कोई सुराग़ नहीं मिलता था। रात भर सुब्ह़ तक ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام फ़िक्र मन्द रहे कि ख़ुदा जाने इस क़िब्त़ी के मारे जाने का क्या नतीजा निकलेगा और इस की क़ौम के लोग क्या करेंगे ? दूसरे रोज़ जब मूसा عَلَيْهِ السَّلَام को फिर ऐसा इत्तिफ़ाक़ पेश आया कि वोही इस्राईली जिस ने एक दिन पहले आप से मदद त़लब की थी आज फिर एक फ़िरऔ़नी से लड़ रहा था तो आप ने

इस्राईली को डांटा कि तू रोज़ रोज़ लोगों से लड़ता है अपने को भी परेशानी में डालता है और अपने मददगारों को भी फ़िक्र में मुब्तला करता है लेकिन फिर ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام को इस्राईली पर रह़्म आ गया और आप ने चाहा कि उस को फ़िरऔ़नी के ज़ुल्म से बचाएं तो फ़िरऔ़नी बोला कि ऐ मूसा ! क्या तुम मुझे भी ऐसे ही क़त्ल करना चाहते हो जैसा कि कल तुम ने एक आदमी को क़त्ल कर दिया। क्या तुम येही चाहते हो कि ज़मीन में सख़्त गीर बनो और इस्लाह़ चाहते ही नहीं ? इतने में शहर के किनारे से एक आदमी दौड़ता हुवा आया और येह ख़बर दी की दरबारे फ़िरऔ़न के क़िब्त़ी आपस में आप के क़त्ल का मश्वरा कर रहे हैं। लिहाज़ा आप शहर से निकल जाइये मैं आप का ख़ैर ख़्वाह हूं। तो आप शहर से बाहर निकल गए और इस इन्तिज़ार में रहे कि देखिये अब क्या होता है ? फिर आप ने येह दुआ़ मांगी कि ऐ मेरे रब ! मुझे ज़ालिमों से बचा ले। येह दुआ़ मांग कर आप हिजरत कर के मदयन ह़ज़रते शोऐ़ब عَلَيْهِ السَّلَام के पास पहुंच गए। उन्हों ने आप को पनाह दी और फिर अपनी एक साह़िबज़ादी बीबी सफ़ूरा से आप का निकाह़ भी कर दिया। (پ۲۰، القصص:۱۵۔۲۳ملخصاً)

जिस शख़्स ने शहर के किनारे से दौड़ते हुवे आ कर ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام को आप के क़त्ल का मन्सूबा तय्यार होने की ख़बर दी और हिजरत का मश्वरा दिया वोह फ़िरऔ़न के चचा का लड़का था, जिस का नाम ह़िज़्क़ील या शमऊ़न या समआ़न था। येह ख़ानदाने फ़िरऔ़न में से ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام पर ईमान ला चुका था।

(تفسیر صاوی،ج۴، ص۱۵۲۴،پ۲۰، القصص:۲۰)

दर्से हिदायत :- इस वाक़िए़ से उ़-लमाए ह़क़ को इ़ब्रत व नसीह़त ह़ासिल करनी चाहिये कि ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام और दूसरे अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام राहे तब्लीग़ में कैसे कैसे ह़ादिषात से दो चार हुवे मगर सब्रो इस्तिक़ामत का दामन इन ह़ज़रात के हाथों से नहीं छूटा। यहां तक कि नुस्रते ख़ुदावन्दी ने इन ह़ज़रात की ऐसी दस्त्गीरी फ़रमाई कि येह ह़ज़रात कामयाब हो कर रहे और इन के दुश्मनों को हज़ीमत और हलाकत नसीब हुई। (واللہ تعالیٰ اعلم)

﴾43﴿ मकड़ी का घर

कुफ़्फ़ार ने बुतों को मा'बूद बना कर उन की इमदाद व इआ़नत और नुस्रत व नफ़्अ़ रसानी पर जो ए'तिमाद और भरोसा रखा है, अल्लाह तआ़ला ने कुफ़्फ़ार की इस ह़माक़त मआबी के इज़्हार और इन की खुद फ़रैबियों का पर्दा चाक करने के लिये एक अ़जीब मिषाल बयान फ़रमाई है जो बहुत ज़ियादा इ़ब्रत ख़ेज़ और आ'ला दरजे की नसीह़त आमोज़ है। चुनान्चे, क़ुरआने मजीद में इरशाद फ़रमाया कि

مَثَلُ الَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اَوْلِيَآءَ كَمَثَلِ الْعَنْكَبُوْتِ ۚ اِتَّخَذَتْ بَيْتًا ؕ وَ اِنَّ اَوْهَنَ الْبُيُوْتِ لَبَيْتُ الْعَنْكَبُوْتِ ۘ لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ﴿۴۱﴾ (پ۲۰،العنکبوت:۴۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :– उन की मिषाल जिन्हों ने अल्लाह के सिवा और मालिक बना लिये हैं मकड़ी की त़रह़ है उस ने जाले का घर बनाया और बेशक सब घरों में कमज़ोर घर मकड़ी का घर क्या अच्छा होता अगर जानते।

मत़लब येह है कि मकड़ी जाले का घर बना कर अपने ख़याल में मगन रहती है कि मैं मकान में बैठी हुई हूं मगर इस के मकान का येह ह़ाल है कि वोह न धूप से बचा सकता है न बारिश से, न गरमी से मह़फ़ूज़ रख सकता है न सर्दी से ह़िफ़ाज़त कर सकता है और हवा के एक मा'मूली झोंके से तहस नहस हो कर बरबाद हो जाया करता है। येही ह़ाल कुफ़्फ़ार का है कि इन लोगों ने बुतों को अपने नफ़्अ़ व नुक़्सान का मालिक बना लिया है और इन बुतों की इमदाद व नुस्रत पर ए'तिमाद और भरोसा कर रखा है। ह़ालांकि बुतों से हरगिज़ हरगिज़ कोई नफ़्अ़ व नुक़्सान नहीं पहुंच सकता और काफ़िरों का बुतों पर ए'तिमाद इतना ही कमज़ोर सहारा है जितना कि मकड़ी का जाला कमज़ोर होता है। काश कुफ़्फ़ार इस बात को समझ लेते तो येह उन के ह़क़ में बहुत ही अच्छा होता।

मकड़ी :– मकड़ी एक अ़जीबुल ख़ल्क़त जानवर है इस के आठ पाउं और छे आंखें होती हैं येह बहुत ही क़नाअ़त पसन्द जानवर है। मगर ख़ुदा

की शान कि सब से ह़रीस जानवर या'नी मख्खी और मच्छर इस की ग़िज़ा हैं। मकड़ी कई कई दिनों तक भूकी प्यासी बैठी रहती है मगर अपने जाले से निकल कर ग़िज़ा तलाश नहीं करती। जब जाले के अन्दर कोई मख्खी या मच्छर फंस जाता है तो येह उस को खा लेती है वरना सब्र व क़नाअ़त कर के पड़ी रहती है।

मकड़ी के फ़ज़ाइल में येह बात ख़ास तौर पर क़ाबिले ज़िक्र है कि हिजरत के वक़्त जब रसूले अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ग़ारे षौर में तशरीफ़ फ़रमा थे तो मकड़ी ने ग़ार के मुंह पर जाला तन दिया था और कबूतरी ने अन्डे दे दिये थे। जिस को देख कर कुफ़्फ़ार वापस चले गए कि अगर ग़ार में कोई शख़्स गया होता तो मकड़ी का जाला और अन्डा टूट गया होता। (تفسیر صاوی،ج۴، ص۱۵۶۴، پ۲۰،العنکبوت:۴۱)

ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है आप ने फ़रमाया कि अपने घरों से मकड़ियों के जालों को दूर करते रहो कि येह मुफ़्लिसी और नादारी का बाइ़ष होते हैं। (تفسیر خزائن العرفان، ص۷۲۲،پ۲۰، العنکبوت:۴۱)

﴾44﴿ ह़ज़रते लुक़्मान ह़कीम

ह़ज़रते लुक़्मान की मदह़ो षना और इन की बा'ज़ नसीह़तों का तज़्किरा क़ुरआन में बड़ी अ़ज़्मत व शान के साथ बयान किया गया है और इन्ही के नाम पर क़ुरआने मजीद की एक सूरह का नाम "सूरए लुक़्मान" रखा गया।

मुह़म्मद बिन इस्ह़ाक़ (साह़िबे मग़ाज़ी) ने इन का नसब नामा इस त़रह़ बयान किया है। लुक़्मान बिन बाऊ़र बिन बाह़ूर बिन तारिख़। येह तारिख़ वोही हैं जो ह़ज़रते इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلَيْهِ السَّلَام के वालिद हैं और मोअर्रिख़ीन ने फ़रमाया कि आप ह़ज़रते अय्यूब عَلَيْهِ السَّلَام के भांजे थे और बा'ज़ का क़ौल है कि आप ह़ज़रते अय्यूब عَلَيْهِ السَّلَام के ख़ालाज़ाद भाई थे।

हज़रते लुक़्मान ने एक हज़ार बरस की उ़म्र पाई। यहां तक कि हज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام की सोह़बत में रह कर उन से इ़ल्म सीखा और हज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام की बिअ़्सत से पहले आप बनी इस्राईल के मुफ़्ती थे। मगर जब हज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام मन्सबे नबुव्वत पर फ़ाइज़ हो गए तो आप ने फ़तवा देना तर्क कर दिया और बा'ज़ किताबों में लिखा है कि हज़रते लुक़्मान ने फ़रमाया है कि मैं ने चार हज़ार नबियों की ख़िदमत में ह़ाज़िरी दी है। और इन पैग़म्बरों के मुक़द्दस कलामों में से आठ बातों को मैं ने चुन कर याद कर लिया है, जो येह हैं :

﴾1﴿ जब तुम नमाज़ पढ़ो तो दिल की ह़िफ़ाज़त करो।

﴾2﴿ जब तुम खाना खाओ तो अपने ह़ल्क़ की ह़िफ़ाज़त करो।

﴾3﴿ जब तुम किसी ग़ैर के मकान में रहो तो अपनी आंखों की ह़िफ़ाज़त करो।

﴾4﴿ जब तुम लोगों की मजलिस में रहो तो अपनी ज़बान की ह़िफ़ाज़त रखो।

﴾5﴿ अल्लाह तआ़ला को हमेशा याद रखो।

﴾6﴿ अपनी मौत को हमेशा याद करते रहा करो।

﴾7﴿ अपने एह़सानों को भुला दो।

﴾8﴿ दूसरों के ज़ुल्म को फ़रामोश कर दो।

हज़रते इकरिमा और इमाम शा'बी के सिवा जमहूर उ़-लमा का येही क़ौल है कि आप नबी नहीं थे बल्कि आप ह़कीम थे और बनी इस्राईल के निहायत ही बुलन्द मर्तबा साह़िबे ईमान और बहुत ही नामवर मर्दे सालेह़ थे और अल्लाह तआ़ला ने आप के सीने को ह़िक्मतों का ख़ज़ीना बना दिया था। क़ुरआने मजीद में है :

وَلَقَدْ اٰتَیْنَا لُقْمٰنَ الْحِكْمَةَ اَنِ اشْكُرْ لِلّٰهِ ؕ وَمَنْ یَّشْكُرْ فَاِنَّمَا یَشْكُرُ لِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ كَفَرَ فَاِنَّ اللّٰهَ غَنِیٌّ حَمِیْدٌ ﴿۱۲﴾ (پ۲۱،لقمان:۱۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- और बेशक हम ने लुक़्मान को हिक्मत अ़ता फ़रमाई कि **अल्लाह** का शुक्र कर और जो शुक्र करे वोह अपने भले को शुक्र करता है और जो नाशुक्री करे तो बेशक **अल्लाह** बे परवाह है सब ख़ूबियों सराहा।

हज़रते लुक़्मान उम्र भर लोगों को नसीहतें फ़रमाते रहे। तफ़्सीरे फ़तहुर्रहमान में है कि आप की क़ब्र मक़ामे ''सरफ़न्द'' में है जो ''रमला'' के क़रीब है और हज़रते क़तादा का क़ौल है कि आप की क़ब्र ''रमला'' में मस्जिद और बाज़ार के दरमियान में है और उस जगह सत्तर अम्बिया عَلَيۡهِمُ السَّلَام भी मदफ़ून हैं। जिन को आप के बा'द यहूदियों ने बैतुल मुक़द्दस से निकाल दिया था और येह लोग भूक प्यास से तड़प तड़प कर वफ़ात पा गए थे। आप की क़ब्र पर एक बुलन्द निशान है और लोग इस क़ब्र की ज़ियारत के लिये दूर दूर से आया करते हैं।

(تفسیر روح البیان،ج۷، ص۷۷، پ۲۱، لقمان:۱۲)

हिक्मत क्या है? :- ''हिक्मत'' अ़क़्ल व फ़हम को कहते हैं और बा'ज़ ने कहा कि ''हिक्मत'' मा'रिफ़त और इसाबत फ़िल उमूर का नाम है। और बा'ज़ के नज़्दीक हिक्मत एक ऐसी शै है कि **अल्लाह** तआ़ला जिस के दिल में रख देता है उस का दिल रोशन हो जाता है वग़ैरा वग़ैरा मुख़्तलिफ़ अक़्वाल हैं। **अल्लाह** तआ़ला ने हज़रते लुक़्मान को नींद की हालत में अचानक हिक्मत अ़ता फ़रमा दी थी। बहर हाल नबुव्वत की त़रह़ हिक्मत भी एक वहबी चीज़ है, कोई शख़्स अपनी जिद्दो जहद और कसब से हिक्मत ह़ासिल नहीं कर सकता। जिस त़रह़ कि बिग़ैर ख़ुदा के अ़ता किये कोई शख़्स अपनी कोशिशों से नबुव्वत नहीं पा सकता। येह और बात है कि नबुव्वत का दरजा हिक्मत के मरतबे से बहुत आ'ला और बुलन्द तर है।

(تفسیر روح البیان،ج۷، ص۷۴۔۷۵، (ملخصاً)پ۲۱، لقمان:۱۱)

हज़रते लुक़्मान ने अपने फ़रज़न्द को जिन का नाम "अन्अ़म" था। चन्द नसीहतें फ़रमाई हैं जिन का ज़िक्र कुरआने मजीद की सूरए लुक़्मान में है। इन के इलावा और भी बहुत सी दूसरी नसीहतें आप ने फ़रमाई हैं जो तफ़ासीर की किताबों में मज़्कूर हैं।

मश्हूर है कि आप दरज़ी का पेशा करते थे और बा'ज़ ने कहा कि आप बकरियां चराते थे। चुनान्चे, एक मरतबा आप हिक्मत की बातें बयान कर रहे थे तो किसी ने कहा कि क्या तुम फ़ुलां चरवाहे नहीं हो ? तो आप ने फ़रमाया कि क्यूं नहीं, मैं यक़ीनन वोही चरवाहा हूं तो उस ने कहा कि आप हिक्मत के इस मर्तबे पर किस त़रह़ फ़ाइज़ हो गए ? तो आप ने फ़रमाया कि बातों में सच्चाई और अमानतों की अदाएगी और बेकार बातों से परहेज़ करने की वजह से। (تفسیر صاوی، ج۵، ص۱۵۹۸، پ۲۱، لقمان:۱۲)

मिस्वाक की फ़ज़ीलत

हज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है, नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहनशाहे बनी आदम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बरकत निशान है :

اَلسِّوَاکُ مَطْهَرَةٌ لِّلْفَمِ مَرْضَاةٌ لِّلرَّبِّ

या'नी "मिस्वाक मुंह की पाकीज़गी और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ख़ुशनूदी का सबब है।"

(سنن ابن ماجه، ص۲۴۹۵، حدیث۲۸۹) (फ़ैज़ाने सुन्नत, जि. 1, स. 1284)

﴾45﴿ अमानत क्या है ?

अल्लाह तआ़ला ने क़ुरआने मजीद में अमानत का ज़िक्र फ़रमाते हुवे इरशाद फ़रमाया कि

اِنَّا عَرَضْنَا الْاَمَانَةَ عَلَى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَالْجِبَالِ فَاَبَیْنَ اَنْ یَّحْمِلْنَهَا وَاَشْفَقْنَ مِنْهَا وَحَمَلَهَا الْاِنْسَانُ ؕ اِنَّهٗ كَانَ ظَلُوْمًا جَهُوْلًا ﴿۷۲﴾ لِّیُعَذِّبَ اللّٰهُ الْمُنٰفِقِیْنَ وَالْمُنٰفِقٰتِ وَالْمُشْرِكِیْنَ وَالْمُشْرِكٰتِ وَیَتُوْبَ اللّٰهُ عَلَى الْمُؤْمِنِیْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِیْمًا ﴿۷۳﴾ (پ۲۲،الاحزاب:۷۲۔۷۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- बेशक हम ने अमानत पेश फ़रमाई आस्मानों और ज़मीन और पहाड़ों पर तो उन्हों ने इस के उठाने से इन्कार किया और इस से डर गए और आदमी ने उठा ली बेशक वोह अपनी जान को मशक़्क़त में डालने वाला बड़ा नादान है। ताकि अल्लाह अ़ज़ाब दे मुनाफ़िक़ मर्दों और मुनाफ़िक़ औ़रतों और मुशरिक मर्दों और मुशरिक औ़रतों को और अल्लाह तौबा क़बूल फ़रमाए मुसलमान मर्दों और मुसलमान औ़रतों की और अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है।

वोह अमानत जिस को अल्लाह तआ़ला ने आस्मानों और ज़मीनों और पहाड़ों पर पेश फ़रमाया तो इन सभों ने ख़ौफ़े इलाही से डर कर इस अमानत को क़बूल करने से इन्कार कर दिया लेकिन इन्सान ने अमानत के इस बोझ को उठा लिया। सुवाल येह है कि वोह अमानत दर ह़क़ीक़त क्या चीज़ थी ? तो इस बारे में मुफ़स्सिरीन के चन्द अक़्वाल हैं मगर ह़ज़रते अ़ल्लामा अह़मद सावी عَلَيْهِ الرَّحْمَة ने फ़रमाया कि इस अमानत की सब से बेहतरीन तफ़्सीर येह है कि वोह अमानत शरई पाबन्दियों की ज़िम्मेदारी है।

रिवायत है कि जब अल्लाह तआ़ला ने शरीअ़त की पाबन्दियों को आस्मानों और ज़मीनों और पहाड़ों के रू बरू पेश फ़रमाया तो इन तीनों ने अ़र्ज़ किया कि ऐ बारी तआ़ला ! हमें इस बारे गिरां के उठाने में क्या ह़ासिल होगा ? अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि अगर तुम इन (अह़कामे शरीअ़त) की पाबन्दी करोगे तो तुम्हें बेहतरीन सिला व इन्आ़म

दिया जाएगा तो तीनों ने जवाब में अ़र्ज़ किया कि ऐ बारी तआ़ला ! हम तो बहर ह़ाल तेरे हुक्म के फ़रमां बरदार हैं, बाक़ी षवाब व अ़ज़ाब से हमें कोई मत़लब नहीं है लेकिन ख़ौफ़े इलाही से डर कर कांपते हुवे इन तीनों ने इस अमानत को क़बूल करने से अपनी मा'ज़ूरी ज़ाहिर करते हुवे इन्कार कर दिया । फिर अल्लाह तआ़ला ने इस अमानत को ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام के सामने पेश फ़रमाया तो आप ने भी दरयाफ़्त किया कि अमानत की ज़िम्मेदारी क़बूल कर लेने से हमें क्या मिलेगा ? तो बारी तआ़ला ने फ़रमाया कि अगर तुम अच्छी त़रह़ इस की पाबन्दी करोगे तो तुम्हें बड़े बड़े इन्आ़म व इकराम से नवाज़ा जाएगा और अगर तुम ने नाफ़रमानी की तो त़रह़ त़रह़ के अ़ज़ाबों में तुम्हें गिरिफ़्तार किया जाएगा तो ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام ने इस बारे अमानत को उठा लिया तो उस वक़्त अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि ऐ आदम ! मैं इस सिलसिले में तेरी मदद करूंगा ।

(تفسیر صاوی، ج۵، ص۱۶۵۹_۱۶۶۰،پ۲۲،الاحزاب:۷۲)

दर्से हिदायत :- इब्लीस ने सजदए आदम عَلَيْهِ السَّلَام के बारे में ख़ुदा का हुक्म मानने से इन्कार किया तो वोह रांदए दरगाहे इलाही हो कर दोनों जहां में मर्दूद हो गया । मगर आस्मानों और ज़मीनों और पहाड़ों ने अमानत को उठाने के बारे में हुक्मे इलाही मानने से इन्कार किया तो वोह बिल्कुल मा'तूब नहीं हुवे इस की क्या वजह है ? और इस का राज़ क्या है ? तो इस सुवाल का जवाब येह है कि इब्लीस का इन्कार बत़ौरे इस्तिकबार (तकब्बुर) था और आस्मानों वग़ैरा का इन्कार बत़ौरे इस्तिसग़ार (तवाज़ोअ़) था । या'नी इब्लीस ने अपने को बड़ा समझ कर सजदए आदम عَلَيْهِ السَّلَام से इन्कार किया था और ज़ाहिर है कि तकब्बुर वोह गुनाहे अ़ज़ीम है जो अल्लाह तआ़ला को बहुत नापसन्द है और तवाज़ोअ़ वोह प्यारी अदा है जो ख़ुदावन्दे क़ुद्दूस को बेहद मह़बूब है । येही वजह है कि इब्लीस इन्कार कर के अ़ज़ाबे दारैन का ह़क़दार बन गया और आस्मान व ज़मीन वग़ैरा इन्कार कर के मौरिदे इ़ताब भी नहीं हुवे बल्कि ख़ुदा के रह़्मो करम के मुस्तह़िक़ हो गए ।

अल्लाहु अक्बर ! कहां इस्तिकबार ? और कहां इस्तिसग़ार ? कहां तकब्बुर ? और कहां तवाज़ोअ़ ? कहां अपने को बड़ा समझना ? और कहां अपने को छोटा समझना । दोनों में बहुत अ़ज़ीम फ़र्क़ है । **अल्लाह** तआ़ला हम सब को तकब्बुर से बचाए और तवाज़ोअ़ का ख़ूगर बनाए । आमीन । (واللہ تعالیٰ اعلم)

﴾46﴿ जिन्न और जानवर फ़रमां बरदार

हज़रते सुलैमान عَلَیْہِ السَّلَام का एक ख़ास मो'जिज़ा और इन की सल्त़नत का एक ख़ुसूसी इम्तियाज़ येह है कि इन के ज़ेरे नगीन सिर्फ़ इन्सान ही नहीं थे बल्कि जिन्न और हैवानात भी ताबेए़ फ़रमान थे और सब आप के हाकिमाना इक्तिदार के ज़ेरे हुक्म थे और येह सब कुछ इस लिये हुवा कि हज़रते सुलैमान عَلَیْہِ السَّلَام ने एक मरतबा दरबारे ख़ुदावन्दी (عَزَّوَجَلَّ) में येह दुआ़ की थी कि

رَبِّ اغْفِرْ لِیْ وَ هَبْ لِیْ مُلْكًا لَّا یَنْۢبَغِیْ لِاَحَدٍ مِّنْۢ بَعْدِیْۚ اِنَّكَ اَنْتَ الْوَهَّابُ ﴿۳۵﴾ (پ۲۳، صٓ:۳۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- ऐ मेरे रब मुझे बख़्श दे और मुझे ऐसी सल्त़नत अ़त़ा कर कि मेरे बा'द किसी को लाइक़ न हो, बेशक तू ही है बड़ी दैन वाला ।

चुनान्चे, **अल्लाह** तआ़ला ने आप की दुआ़ मक़्बूल फ़रमा ली और आप को ऐसी अ़जीबो ग़रीब हुकूमत और बादशाही अ़त़ा फ़रमाई कि न आप से पहले किसी को मिली, न आप के बा'द किसी को मुयस्सर हुई ।

हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ रिवायत करते हैं कि नबिय्ये अकरम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक दिन इरशाद फ़रमाया कि गुज़श्ता रात एक सरकश जिन्न ने येह कोशिश की, कि मेरी नमाज़ में ख़लल डाले तो ख़ुदावन्दे तआ़ला ने मुझ को उस पर क़ाबू दे दिया और मैं ने उस को पकड़ लिया, इस के बा'द मैं ने इरादा किया कि उस को मस्जिद के सुतून से बान्ध दूं ताकि तुम सब दिन में उस को देख सको । मगर उस वक़्त मुझ को अपने भाई सुलैमान (عَلَیْہِ السَّلَام) की येह दुआ़ याद आ गई कि

رَبِّ اغۡفِرۡ لِیۡ وَہَبۡ لِیۡ مُلۡکًا لَّا یَنۡۢبَغِیۡ لِاَحَدٍ مِّنۡۢ بَعۡدِیۡ ۚ اِنَّکَ اَنۡتَ الۡوَہَّابُ ﴿۳۵﴾

येह याद आते ही मैं ने उस को छोड़ दिया।

(بخاری شریف، کتاب الانبیاء، باب قول اللہ عزوجل ووھبنا لداؤد سلیمن الخ، ج۱،ص۴۸۶،۴۸۷۔

فتح الباری، کتاب الانبیاء، باب قول اللہ عزوجل ووھبنا الخ، رقم الحدیث۳۴۲۳، ج۶، ص ۵۲۶)

हुज़ूर عَلَيۡهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के इस इरशाद का मत़लब येह है कि अगर्चे ख़ुदावन्दे तआ़ला ने तमाम अम्बिया व रुसुल के ख़साइस व मो'जिज़ात व ख़ुसूसी इम्तियाज़ात व कमालात मुझ में जम्अ़ फ़रमा दिये हैं इस लिये क़ौमे जिन्न की तस्ख़ीर पर भी मुझ को क़ुदरत ह़ासिल है लेकिन चूंकि ह़ज़रते सुलैमान عَلَيۡهِ السَّلَام ने इस इख़्तिसास को अपना ख़ुसूसी तुग़राए इम्तियाज़ क़रार दिया है इस लिये मैं ने इस सिलसिले का मुज़ाहरा करना मुनासिब नहीं समझा। क़ुरआने करीम की ह़स्बे ज़ैल आयतों में भी ह़ज़रते सुलैमान عَلَيۡهِ السَّلَام के इस मो'जिज़ाना इक़्तिदारे ह़ुकूमत का तज़्किरा है।

﴿۱﴾ وَ مِنَ الشَّیٰطِیۡنِ مَنۡ یَّغُوۡصُوۡنَ لَہٗ وَ یَعۡمَلُوۡنَ عَمَلًا دُوۡنَ ذٰلِکَ ۚ وَ کُنَّا لَہُمۡ حٰفِظِیۡنَ ﴿۸۲﴾ (پ۱۷، الانبیاء:۸۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :– और शैत़ानों में से वोह जो उस के लिये ग़ोत़ा लगाते और इस के सिवा और काम करते और हम उन्हें रोके हुवे थे।

इसी त़रह़ सूरए "सबा" में इरशाद फ़रमाया :

﴿۲﴾ وَ مِنَ الۡجِنِّ مَنۡ یَّعۡمَلُ بَیۡنَ یَدَیۡہِ بِاِذۡنِ رَبِّہٖ ؕ وَ مَنۡ یَّزِغۡ مِنۡہُمۡ عَنۡ اَمۡرِنَا نُذِقۡہُ مِنۡ عَذَابِ السَّعِیۡرِ ﴿۱۲﴾ یَعۡمَلُوۡنَ لَہٗ مَا یَشَآءُ مِنۡ مَّحَارِیۡبَ وَ تَمَاثِیۡلَ وَ جِفَانٍ کَالۡجَوَابِ وَ قُدُوۡرٍ رّٰسِیٰتٍ ؕ (پ۲۲،سبا:۱۲۔۱۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :– और जिन्नों में से वोह जो उस के आगे काम करते उस के रब के हुक्म से और जो इन में हमारे हुक्म से फिरे हम उसे भड़कती आग का अ़ज़ाब चखाएंगे उस के लिये बनाते जो वोह चाहता ऊंचे ऊंचे मह़ल और तस्वीरें और बड़े ह़ौज़ों के बराबर लगन और लंगरदार देगें।

और सूरए नम्ल में येह फ़रमाया कि

﴿٣﴾ وَحُشِرَ لِسُلَيْمٰنَ جُنُوْدُهٗ مِنَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ وَالطَّيْرِ فَهُمْ يُوْزَعُوْنَ ﴿١٧﴾ (پ١٩، النمل:١٧)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- और जम्अ़ किये गए सुलैमान के लिये उस के लश्कर जिन्नों और आदमियों और परन्दों से तो वोह रोके जाते थे।

और सूरए صٓ में इस त़रह़ इरशाद फ़रमाया कि

﴿٤﴾ وَالشَّيٰطِيْنَ كُلَّ بَنَّآءٍ وَّغَوَّاصٍ ﴿٣٧﴾ وَّاٰخَرِيْنَ مُقَرَّنِيْنَ فِي الْاَصْفَادِ ﴿٣٨﴾ هٰذَا عَطَآؤُنَا فَامْنُنْ اَوْ اَمْسِكْ بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿٣٩﴾ (پ٢٣، صٓ:٣٧-٣٩)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- और देव बस में कर दिये हर मे'मार और ग़ौत़ा ख़ोर और दूसरे और बेड़ियों में जकड़े हुवे येह हमारी अ़त़ा है अब तू चाहे तो एह़सान कर या रोक रख तुझ पर कुछ ह़िसाब नहीं।

दर्से हिदायत :- बा'ज़ मुलह़िदीन जिन को मो'जिज़ात के इन्कार और इन्कारे जिन्न का मरज़ हो गया है वोह लोग इन आयतों के बारे में अ़जीब अ़जीब मुज़ह़िका ख़ेज़ बातें बकते रहते हैं और कहते हैं कि 'जिन्न'' से मुराद इन्सानों की एक ऐसी क़ौम है जो उस ज़माने में बहुत क़वी हैकल और देव पैकर थी और वोह ह़ज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام के इ़लावा किसी के क़ाबू में नहीं आती थी और ह़ैवानात की तस्ख़ीर के बारे में बकते हैं कि क़ुरआन में इस सिलसिले का ज़िक्र सिर्फ़ ''हुद हुद'' से मुतअ़ल्लिक़ है और यहां ''हुद हुद'' से परन्द मुराद नहीं है बल्कि हुद हुद एक आदमी का नाम था जो पानी की तफ़्तीश पर मुक़र्रर था। इस क़िस्म की लग़्विय्यात और रकीक बातें करने वाले या तो जज़्बहुलह़ाद में क़स्दन क़ुरआने मजीद की तह़रीफ़ करते हैं या क़ुरआन की ता'लीमात से जाहिल होने के बा वुजूद अपने दा'वा बिला दलील पर इस्रार करते रहते हैं।

ख़ूब समझ लो कि क़ुरआने मजीद ने ''जिन्न'' के मुतअ़ल्लिक़ जा बजा बसराह़त येह ए'लान किया कि वोह इन्सानों से जुदा ख़ुदा की एक मख़्लूक़ है सिर्फ़ एक आयत पढ़ लो जो इस बारे में क़ौले फ़ैसल है।

وَمَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْاِنْسَ اِلَّا لِيَعْبُدُوْنِ ﴿۵۶﴾ (پ ۲۷، الذاريات: ۵٦)

या'नी हम ने जिन्न और इन्सानों को सिर्फ़ इसी लिये पैदा किया है कि वोह खुदा के इबादत गुज़ार बनें।

देख लो इस आयत में जिन्न को एक इन्सान से जुदा और एक मख़्लूक़ ज़ाहिर कर के दोनों की तख़्लीक़ की हिक्मत बयान की गई है लिहाज़ा इस आयत को सामने रखते हुवे येह कहना कि जिन्न इन्सानों ही में से एक क़वी हैकल क़ौम का नाम है, ग़ौर कीजिये कि येह कितनी बड़ी जहालत की बात है।

इसी त़रह़ जब "हुद हुद" को **अल्लाह** तआ़ला ने क़ुरआने मजीद में साफ़ साफ़ परन्द फ़रमाया है और इरशाद फ़रमाया है कि

وَتَفَقَّدَ الطَّيْرَ (پ ۱۹، النمل: ۲۰)

या'नी ह़ज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام ने परन्दों का जाइज़ा लिया तो इस तसरीह़ के बा'द किसी को क्या ह़क़ है कि इस के ख़िलाफ़ कोई रकीक और लचर तावील करे। और येह कहे कि हुद हुद परन्दा नहीं था बल्कि एक आदमी का नाम था। सोचिये कि येह मग़रिब ज़दा मुल्ह़िदों का इल्म है या उन की जहालत का क़ुतुब मीनार है।

وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْم O

47 हवा पर हुकूमत

ह़ज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام का येह भी एक ख़ास मो'जिज़ा और आप की नबुव्वत का ख़ुसूसी इम्तियाज़ था कि **अल्लाह** तआ़ला ने "हवा" को इन के ह़क़ में मुसख़्ख़र कर दिया था और वोह इन के ज़ेरे फ़रमान कर दी गई थी। चुनान्चे, ह़ज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام जब चाहते तो सुब्ह़ को एक महीने की मसाफ़त और शाम को एक महीने की मसाफ़त की मिक़्दार हवा के दोश पर सफ़र कर लेते थे।

क़ुरआने करीम ने आप के इस मो'जिज़े के मुतअ़ल्लिक़ तीन बातें बयान की हैं। एक येह कि हवा को ह़ज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام के ह़क़ में मुसख़्ख़र कर दिया। दूसरे येह कि हवा इन के हुक्म के इस त़रह़ ताबेअ़ थी कि शदीद तेज़ व तुन्द होने के बा वुजूद इन के हुक्म से नर्म और आहिस्ता रवी के बाइ़ष राह़त हो जाती थी, तीसरी बात येह कि हवा की

नर्म रफ़्तारी के बा वुजूद उस की तेज़ रफ़्तारी का येह आ़लम था कि ह़ज़रते सुलैमान عَلَیْہِ السَّلَام के सुब्ह़ व शाम का जुदा जुदा सफ़र एक शह सुवार के मुसलसल एक माह की रफ़्तार के बराबर था गोया ह़ज़रते सुलैमान عَلَیْہِ السَّلَام का तख़्त इन्जिन और मशीन जैसे ज़ाहिरी अस्बाब से बाला तर सिर्फ़ इन के हुक्म से एक बहुत तेज़ रफ़्तार हवाई जहाज़ से भी ज़ियादा तेज़ मगर सबुक रवी के साथ हवा के कांधे पर उड़ा चला जाता था।

इस मक़ाम पर तख़्ते सुलैमान और आप के सफ़र के मुतअ़ल्लिक़ जो तफ़्सीलात सीरत की किताबों और तफ़्सीरों में मन्क़ूल हैं इन में बहुत से वाक़िआ़त इस्राईलिय्यात का ज़ख़ीरा हैं जिन को बा'ज़ वाइज़ीन बयान करते हैं मगर वोह क़ाबिले ए'तिबार नहीं और इन पर बहुत से ए'तिराज़ात भी वारिद होते हैं। क़ुरआने मजीद ने इस वाक़िए़ के मुतअ़ल्लिक़ सिर्फ़ इस क़दर बयान किया है कि :

وَلِسُلَیْمٰنَ الرِّیْحَ عَاصِفَةً تَجْرِیْ بِاَمْرِهٖۤ اِلَى الْاَرْضِ الَّتِیْ بٰرَكْنَا فِیْهَاؕ وَكُنَّا بِكُلِّ شَیْءٍ عٰلِمِیْنَ ﴿۸۱﴾ (پ ۱۷، الانبیاء: ۸۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- और सुलैमान के लिये तेज़ हवा मुसख़्ख़र कर दी कि इस के हुक्म से चलती उस ज़मीन की त़रफ़ जिस में हम ने बरकत रखी और हम को हर चीज़ मा'लूम है।

और सूरए सबा में येह इरशाद फ़रमाया कि

وَلِسُلَیْمٰنَ الرِّیْحَ غُدُوُّهَا شَهْرٌ وَّرَوَاحُهَا شَهْرٌۚ (پ ۲۲، سبا: ۱۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- और सुलैमान के बस में हवा कर दी उस की सुब्ह़ की मन्ज़िल एक महीने की राह और शाम की मन्ज़िल एक महीने की राह।

और सूरए صٓ में फ़रमाया कि

فَسَخَّرْنَا لَهُ الرِّیْحَ تَجْرِیْ بِاَمْرِهٖ رُخَآءً حَیْثُ اَصَابَۙ ﴿۳۶﴾ (پ ۲۳، ص: ۳۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- तो हम ने हवा उस के बस में कर दी कि उस के हुक्म से नर्म नर्म चलती जहां वोह चाहता।

﴾48﴿ तांबे के चश्मे

हज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام चूंकि अज़ीमुश्शान इमारतों और पुर शौकत क़ल्ओं की ता'मीर के बहुत शाइक़ थे इस लिये ज़रूरत थी कि गारे और चूने के बजाए पिघली हुई धात गारे की जगह इस्ति'माल की जाए लेकिन इस क़दर कषीर मिक़दार में येह कैसे मुयस्सर आए येह सुवाल था जिस का हल हज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام चाहते थे। चुनान्चे, **अल्लाह** तआ़ला ने हज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام की इस मुश्किल को इस त़रह़ हल कर दिया कि इन को पिघले हुवे तांबे के चश्मे अ़त़ा फ़रमाए।

बा'ज़ मुफ़स्सिरीन कहते हैं कि **अल्लाह** तआ़ला ह़स्बे ज़रूरत हज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام के लिये तांबे को पिघला देता था और येह हज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام के लिये एक ख़ास निशान और इन का मो'जिज़ा था आप से पहले कोई शख़्स धात पिघलाना नहीं जानता था।

(تذکرۃ الانبیاء،ص۳۷۷،پ۲۲، سبا:۱۲)

और नज्जार कहते हैं कि **अल्लाह** तआ़ला ने हज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام पर येह इन्आ़म फ़रमाया कि ज़मीन के जिन हिस्सों में आतशी माद्दों की वजह से तांबा पानी की त़रह़ पिघल कर बह रहा था उन चश्मों को हज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام पर आश्कार फ़रमाया। आप से पहले कोई शख़्स भी ज़मीन के अन्दर धात के चश्मों से आगाह न था। चुनान्चे, इब्ने कषीर ब रिवायते क़तादा नाक़िल हैं कि पिघले हुवे तांबे के चश्मे यमन में थे जिन को **अल्लाह** तआ़ला ने हज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام पर ज़ाहिर फ़रमा दिया। (البدایہ والنہایہ، ج۲،ص ۲۸)

क़ुरआने मजीद ने इस क़िस्म की कोई तफ़्सील नहीं बयान फ़रमाई है कि तांबे के चश्मे किस शक्ल में हज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام को मिले मगर क़ुरआन की जिस आयत में इस मो'जिज़े का ज़िक्र है मज़्कूरा बाला दोनों तौजीहात इस आयत का मिस्दाक़ बन सकती हैं और वोह आयत येह है :

وَاَسَلْنَا لَهٗ عَيْنَ الْقِطْرِ ؕ (پ۲۲،سبا:۱۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- और हम ने उस के लिये पिघले हुवे तांबे का चश्मा बहाया।

दर्से हिदायत :- हवा पर हुकूमत और पिघले हुवे तांबे के चश्मों का मिल जाना येह ह़ज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام का मो'जिज़ा है जो क़ुरआने मजीद से षाबित है इस पर ईमान लाना ज़रूरियाते दीन में से है। बा'ज़ मुल्ह़िदीन जिन को मो'जिज़ात के इन्कार की बीमारी हो गई है वोह इन मो'जिज़ात के बारे में अ़जीब अ़जीब मुज़्ह़िका ख़ेज़ बातें बकते और रकीक तावीलात करते रहते हैं। मुसलमानों पर लाज़िम है कि इन मुल्ह़िदों की बातों पर कोई तवज्जोह न करें और मो'जिज़ात पर यक़ीन रखते हुवे ईमान लाएं। (واللہ تعالیٰ اعلم)

《49》 ह़ज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام के घोड़े

एक मरतबा जिहाद की एक मुहिम के मौक़अ़ पर शाम के वक़्त ह़ज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام ने घोड़ों को अस्त़बल से लाने का हुक्म दिया। जब वोह पेश किये गए तो चूंकि आप को घोड़ों की नस्लों और इन के ज़ाती अवसाफ़ के इल्म का कमाल ह़ासिल था इस लिये जब आप ने इन घोड़ों को असील सबुक रू और ख़ुश रू पाया और येह मुलाह़ज़ा फ़रमाया कि इन की ता'दाद बहुत ज़ियादा है तो आप पर मसर्रत व इम्बिसात़ की कैफ़िय्यत त़ारी हो गई और आप फ़रमाने लगे कि इन घोड़ों से मेरी मह़ब्बत ऐसी माली मह़ब्बत में शामिल है जो परवर दगार के ज़िक्र ही का एक शो'बा है। ह़ज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام के इस ग़ौरो फ़िक्र के दरमियान घोड़े अस्त़बल को रवाना हो गए। चुनान्चे, जब आप ने नज़र उठाई तो वोह घोड़े निगाह से ओझल हो गए थे। तो आप ने हुक्म दिया कि उन घोड़ों को वापस लाओ।

जब वोह घोड़े वापस लाए गए तो ह़ज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام ने जोशे मह़ब्बत में उन घोड़ों की पिन्डलियों और गर्दनों पर हाथ फेरना और थप थपाना शुरूअ़ कर दिया। क्यूंकि येह घोड़े जिहाद का सामान थे इस लिये आप इन की इ़ज़्ज़त व तौक़ीर करते हुवे एक माहिर फ़न की त़रह़ से इन घोड़ों को मानूस करने लगे और इज़्हारे मह़ब्बत फ़रमाने लगे। क़ुरआने मजीद ने इस वाक़िए़ को ह़स्बे ज़ैल इबारत में बयान फ़रमाया है :

وَوَهَبْنَا لِدَاوٗدَ سُلَیْمٰنَ ؕ نِعْمَ الْعَبْدُ ؕ اِنَّهٗۤ اَوَّابٌ ﴿۳۰﴾ اِذْ عُرِضَ عَلَیْهِ بِالْعَشِیِّ
الصّٰفِنٰتُ الْجِیَادُ ﴿۳۱﴾ فَقَالَ اِنِّیْۤ اَحْبَبْتُ حُبَّ الْخَیْرِ عَنْ ذِكْرِ رَبِّیْ ۚ حَتّٰى
تَوَارَتْ بِالْحِجَابِ ﴿۳۲﴾ رُدُّوْهَا عَلَیَّ ؕ فَطَفِقَ مَسْحًۢا بِالسُّوْقِ وَ الْاَعْنَاقِ ﴿۳۳﴾ (پ۲۳،ص:۳۰۔۳۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- और हम ने दावूद को सुलैमान अ़त़ा फ़रमाया क्या अच्छा बन्दा बेशक वोह बहुत रुजूअ़ लाने वाला जब कि उस पर पेश किये गए तीसरे पहर को कि रू किये तो तीन पाउं पर खड़े हो चौथे सुम का कनारा ज़मीन पर लगाए हुवे और चलाइये तो हवा हो जाएं तो सुलैमान ने कहा मुझे इन घोड़ों की मह़ब्बत पसन्द आई है अपने रब की याद के लिये फिर उन्हें चलाने का हुक्म दिया यहां तक कि निगाह से पर्दे में छुप गए फिर हुक्म दिया कि उन्हें मेरे पास वापस लाओ तो उन की पिन्डलियों और गर्दनों पर हाथ फेरने लगा।

दर्से हिदायत :- इन आयात की जो तफ़्सीर हम ने तह़रीर की है इस को इब्ने जरीर त़बरी और इमाम राज़ी ने तरजीह़ दी है और ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने भी येही तफ़्सीर फ़रमाई है। जिस के नाक़िल अ़ली बिन अबी त़ल्ह़ा हैं इन आयात की तफ़्सीर में बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने घोड़ों की पिन्डलियां और घोड़ों की गर्दनों को तल्वार से काट डालना तह़रीर किया है और इसी क़िस्म के बा'ज़ दूसरे कमज़ोर अक़्वाल भी तह़रीर किये हैं जिन की सिह़ह़त पर कोई दलील नहीं है और वोह मह़ज़ ह़िकायात और दास्तानें हैं जो दलाइले क़विय्या के सामने किसी त़रह क़ाबिले क़बूल नहीं और येह तफ़्सीर जो हम ने तह़रीर की है इस पर न कोई इश्काल व ए'तिराज़ पड़ता है न किसी तावील की ज़रूरत पेश आती है।

(تفسیر خزائن العرفان، ص ۸۱۹، پ۲۳، ص: ۳۳)

﴾50﴿ पहाड़ों और परन्दों की तस्बीह़

ह़ज़रते दावूद عَلَیْهِ السَّلَام ख़ुदावन्दे क़ुद्दूस की तस्बीह़ व तक़्दीस में बहुत ज़ियादा मश्ग़ूल व मस्रूफ़ रहते थे और आप इस क़दर ख़ुश इल्ह़ान थे कि जब आप ज़बूर शरीफ़ पढ़ते थे तो आप के वज्द आफ़रीं नग़्मों से

न सिर्फ़ इन्सान बल्कि वुहूश व तुयूर भी वज्द में आ जाते और आप के गिर्द जम्अ़ हो कर ख़ुदा की ह़म्द के तराने गाते और अपनी अपनी सुरीली और पुर कैफ़ आवाज़ों में तस्बीह़ व तक़्दीस में ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام की हमनवाई करते और चरिन्दो परन्द ही नहीं बल्कि पहाड़ भी ख़ुदावन्दे तआ़ला की ह़म्दो षना में गूंज उठते थे। चुनान्चे, ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام के इन मो'जिज़ात का ज़िक्रे जमील अल्लाह तआ़ला ने सूरए अम्बिया सूरए सबा व सूरए صٓ में सराह़त के साथ बयान फ़रमाया कि

وَسَخَّرْنَا مَعَ دَاوٗدَ الْجِبَالَ یُسَبِّحْنَ وَ الطَّیْرَ ؕ وَ كُنَّا فٰعِلِیْنَ ﴿۷۹﴾ (پ۱۷، الانبیاء:۷۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :– और दावूद के साथ पहाड़ मुसख़्ख़र फ़रमा दिये कि तस्बीह़ करते और परन्दे और येह हमारे काम थे।

सूरए सबा में इस त़रह़ इरशाद फ़रमाया कि

وَ لَقَدْ اٰتَیْنَا دَاوٗدَ مِنَّا فَضْلًا ؕ یٰجِبَالُ اَوِّبِیْ مَعَهٗ وَ الطَّیْرَ ۚ (پ۲۲، سبا:۱۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :– और बेशक हम ने दावूद को अपना बड़ा फ़ज़्ल दिया ऐ पहाड़ो उस के साथ अल्लाह की त़रफ़ रुजूअ़ करो और ऐ परन्दो।

और सूरए صٓ में इरशादे रब्बानी इस त़रह़ हुवा कि

اِنَّا سَخَّرْنَا الْجِبَالَ مَعَهٗ یُسَبِّحْنَ بِالْعَشِیِّ وَ الْاِشْرَاقِ ﴿۱۸﴾ وَ الطَّیْرَ مَحْشُوْرَةً ؕ كُلٌّ لَّهٗۤ اَوَّابٌ ﴿۱۹﴾ (پ۲۳، صٓ:۱۸۔۱۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :– बेशक हम ने उस के साथ पहाड़ मुसख़्ख़र फ़रमा दिये तस्बीह़ करते शाम को और सूरज चमकते और परन्दे जम्अ़ किये हुवे सब उस के फ़रमां बरदार थे।

दर्से हिदायत :– बेअ़क़्ल परन्दे और बे जान पहाड़ जब ख़ुदावन्दे क़ुद्दूस की तस्बीह़ व तक़्दीस का नग़्मा गाया करते हैं। जैसा कि क़ुरआने मजीद की मज़्कूरए बाला आयतों में आप पढ़ चुके तो इस से हम इन्सानों को

येह सबक़ मिलता है कि हम इन्सान जो अ़क़्ल वाले, होशमन्द और साहिबे ज़बान हैं हम पर भी लाज़िम है कि हम ख़ुदावन्दे क़ुद्दूस की तस्बीह़ और उस की ह़म्दो षना के अफ़्कार को विर्दे ज़बान बनाएं और उस की तस्बीह़ व तक़्दीस में बराबर मश्ग़ूल व मसरूफ़ रहें।

ह़ज़रते शैख़ सा'दी عَلَيْهِ الرَّحْمَة ने इस सिलसिले में एक बहुत ही लत़ीफ़ व लज़ीज़ और निहायत ही मुअष्षिर ह़िकायत बयान फ़रमाई है। इस को पढ़िये और इ़ब्रत व नसीह़त ह़ासिल कीजिये वोह फ़रमाते हैं :

دوش مرغے بصبح می نالید　　عقل و صبرم ربود و طاقت و هوش

एक परन्द सुब्ह़ को चह चहा रहा था तो इस की आवाज़ से मेरी अ़क़्ल व सब्र और त़ाक़त व होश सब ग़ारत हो गए।

یکے از دوستانِ مخلص را　　مگر آوازِ من رسید بگوش

मेरे एक मुख़्लिस दोस्त के कान में शायद मेरी आवाज़ पहुंच गई।

گفت باور نداشتم که ترا　　بانگ مرغے چنیں کند مدهوش

तो उस ने कहा कि मुझे यक़ीन नहीं आता कि एक परन्द की आवाज़ तुम को इस त़रह़ मदहोश कर देगी।

گفتم این شرط آدمیت نیست　　مرغ تسبیح خوان و من خاموش

तो मैं ने कहा कि येह आदमिय्यत की शान नहीं है? कि परन्द तो तस्बीह़ पढ़े और मैं ख़ामोश रहूं!

﴾51﴿ फ़िरिश्तों के बाल व पर

अल्लाह तआ़ला ने फ़िरिश्तों के बाज़ू और पर बना दिये हैं जिन से वोह फ़ज़ाए आस्मानी में उड़ कर काएनाते आ़लम में फ़रामीने रब्बानी की ता'मील करते रहते हैं। किसी फ़िरिश्ते के दो पर किसी के तीन और किसी के चार पर हैं।

अ़ल्लामा ज़मख़शरी का बयान है कि मैं ने बा'ज़ किताबों में पढ़ा है कि फ़िरिश्तों की एक क़िस्म ऐसी भी है जिन को ख़ल्लाक़े आ़लम جَلَّ جَلَالُہٗ ने छे छे बाज़ू और पर अ़ता फ़रमाए हैं। दो बाज़ूओं से तो वोह अपने बदन को छुपाए रखते हैं और दो बाज़ूओं से वोह उड़ते हैं और दो बाज़ू उन के चेहरे पर हैं जिन से वोह ख़ुदा से ह़या करते हुवे अपने चेहरों को छुपाए रखते हैं।

और ह़दीष शरीफ़ में है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने बयान फ़रमाया कि मैं ने "सिदरतुल मुन्तहा" के पास ह़ज़रते जिब्रईल عَلَیْہِ السَّلَام को देखा कि इन के छे सो बाज़ू थे और येह भी एक रिवायत में है कि हुज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने ह़ज़रते जिब्रईल عَلَیْہِ السَّلَام से फ़रमाया कि आप अपनी अस्ल सूरत मुझे दिखा दीजिये तो इन्हों ने जवाब दिया कि आप इस की ताब न ला सकेंगे तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि मुझे इस की ख़्वाहिश बल्कि तमन्ना है तो ह़ज़रते जिब्रईल عَلَیْہِ السَّلَام एक मरतबा अपनी अस्ल सूरत में वह़्य ले कर आप के पास ह़ाज़िर हुवे तो इन को देखते ही आप पर ग़शी त़ारी हो गई तो ह़ज़रते जिब्रईल عَلَیْہِ السَّلَام ने अपने बदन से टेक लगा कर आप को संभाले रखा और अपना एक हाथ हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सीने पर और एक हाथ दोनों शानों के दरमियान रख दिया। जब आप को इफ़ाक़ा हुवा तो ह़ज़रते जिब्राईल عَلَیْہِ السَّلَام ने अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अगर आप ह़ज़रते इस्राफ़ील को देख लेते तो आप का क्या ह़ाल होता? उन को तो **अल्लाह** तआ़ला ने बारह हज़ार बाज़ू अ़ता फ़रमाए हैं और उन का एक बाज़ू मशरिक़ में है और दूसरा बाज़ू मग़रिब में है और वोह अ़र्शे इलाही को अपने कन्धों पर उठाए हुवे हैं। (تفسیر صاوی، ج۵، ص۱۶۸۶، پ۲۲، فاطر:۱)

फ़िरिश्तों के बाज़ूओं और परों का ज़िक्र सूरए फ़ात़िर की इस आयत में है कि

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ فَاطِرِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ جَاعِلِ الْمَلٰٓىٕكَةِ رُسُلًا اُولِیْۤ اَجْنِحَةٍ مَّثْنٰى وَ ثُلٰثَ وَ رُبٰعَؕ یَزِیْدُ فِی الْخَلْقِ مَا یَشَآءُؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ ۝۱ (پ۲۲،فاطر:۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- सब ख़ूबियां **अल्लाह** को जो आस्मानों और ज़मीन का बनाने वाला फ़िरिश्तों को रसूल करने वाला जिन के दो दो तीन तीन चार चार पर हैं। बढ़ाता है आफ़रीनिश (पैदाइश) में जो चाहे बेशक **अल्लाह** हर चीज़ पर क़ादिर है।

दर्से हिदायत :- फ़िरिश्तों के वुजूद पर ईमान लाना ज़रूरियाते दीन में से है और इस पर ईमान लाना भी ज़रूरी है कि फ़िरिश्तों के बाज़ू और पर भी हैं किसी के दो दो किसी के तीन तीन किसी के चार चार। और किसी के इस से भी ज़ियादा हैं। अब रहा येह सुवाल कि फ़िरिश्तों के इतने ज़ियादा पर क्यूं कर और किस तरह हैं ? तो क़ुरआन ने इस का शाफ़ी और मुसकित जवाब दे दिया है कि **अल्लाह** तआला की क़ुदरत की कोई ह़द नहीं है वोह हर चीज़ पर क़ादिर है। लिहाज़ा वोह सब कुछ कर सकता है वोह फ़िरिश्तों को बाल व पर भी अ़त़ा फ़रमा सकता है और बिला शुबा अ़त़ा फ़रमाए भी हैं लिहाज़ा इस सिलसिले में बह़ष व मुबाह़षा और सुवाल व जवाब येह सब गुमराही के दरवाज़े हैं। ईमान की ख़ैरिय्यत इसी में है कि बिग़ैर चून व चरा के इस पर ईमान लाएं और **क्यूं** और **कैसे** के इ़ल्म को اللّٰہ تعالٰی اعلم कह कर ख़ुदा के सिपुर्द कर दें।

﴾52﴿ अबू जह्ल की गर्दन का तौक़

एक मरतबा अबू जह्ल और उस के क़बीले के दो आदमियों ने ह़लफ़ उठाया कि अगर हम लोगों ने (मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) को देख लिया तो हम पथ्थर से उन का सर कुचल देंगे। जब हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام नमाज़ के लिये ह़रमे का'बा में तशरीफ़ ले गए और अबू जह्ल ने आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को देखा तो वोह एक बहुत बड़ा पथ्थर अपने दोनों हाथों से उठा कर चला और आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर उस पथ्थर को फेंकने के लिये अपने सर के ऊपर दोनों हाथों से उठाया तो उस के दोनों हाथ उस की गर्दन में आ गए और पथ्थर उस के हाथों में चिपक कर रह गया और दोनों हाथ तौक़ बन कर ठोड़ी के पास बन्ध गए और वोह इस तरह़ नाकाम हो कर लौट आया। इस के दूसरे दिन वलीद बिन मुग़ीरा ने झुन्झला कर कहा कि तुम पथ्थर मुझे दे दो। मैं इस को उन के सर पर दे मारूंगा।

चुनान्चे, उस बद नसीब ने जब कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم नमाज़ में थे, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर पथ्थर चलाने का इरादा किया तो एक दम अन्धा हो गया। हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की क़िराअत की आवाज़ तो सुनता रहा मगर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सूरत नहीं देख सकता था, मजबूरन पलट गया तो अपने साथियों को भी न देख सका। जब आवाज़ दी तो साथियों ने पूछा कि क्या हुवा ? तो उस ने अपनी मजबूरी का ह़ाल बयान किया फिर उस के तीसरे साथी ने ग़ुस्से में भर कर पथ्थर को अपने हाथ में लिया मगर येह हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के क़रीब पहुंचते ही उलटे पाउं बद ह़वास हो कर भागा और हांपते कांपते हुवे अपने साथियों से कहने लगा कि मैं जब उन के क़रीब पहुंचा तो मैं ने देखा कि एक ऐसा सान्ड उन के क़रीब अपनी दुम हिला रहा है कि मैं ने आज तक ऐसा ख़ौफ़नाक सान्ड देखा ही नहीं था। लात व उ़ज़्ज़ा की क़सम ! अगर मैं इन के क़रीब जाता तो वोह मुझे हलाक कर देता। (تفسیر صاوی، ج۵، ص۱۷۰۶، یٰسٓ :۸۔۹)

इस वाक़िए़ का ज़िक्र सूरए यासीन में इन लफ़्ज़ों के साथ मज़्कूर है।

اِنَّا جَعَلْنَا فِیْۤ اَعْنَاقِهِمْ اَغْلٰلًا فَهِیَ اِلَى الْاَذْقَانِ فَهُمْ مُّقْمَحُوْنَ ۝۸ وَ جَعَلْنَا مِنْۢ بَیْنِ اَیْدِیْهِمْ سَدًّا وَّ مِنْ خَلْفِهِمْ سَدًّا فَاَغْشَیْنٰهُمْ فَهُمْ لَا یُبْصِرُوْنَ ۝۹ (پ۲۲، یٰسٓ:۸۔۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- हम ने उन की गर्दनों में त़ौक़ कर दिये हैं कि वोह ठोड़ियों तक हैं तो येह अब ऊपर को मुंह उठाए रह गए और हम ने उन के आगे दीवार बना दी और इन के पीछे एक दीवार और उन्हें ऊपर से ढांक दिया तो उन्हें कुछ नहीं सूझता।

दर्से हिदायत :- येह हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मो'जिज़ात में से है। बारहा काफ़िरों ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को क़त्ल करने की साज़िश की और अपनी ख़ुफ़्या चालबाज़ियों और दसीसा कारियों में कोई दक़ीक़ा बाक़ी नहीं छोड़ा, मगर रह़मते आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर कभी भी कोई आंच न आ सकी और ख़ुदावन्दे क़ुद्दूस का वा'दा पूरा हुवा कि وَاللّٰهُ یَعْصِمُكَ مِنَ النَّاسِؕ (پ۶، المائدہ:۶۷) या'नी ऐ मह़बूब ! अल्लाह तआ़ला लोगों की चालों से आप को अपनी ह़िफ़ाज़त में रखेगा। (واللّٰہ تعالٰی اعلم)

﴾53﴿ हामिलाने अ़र्श की दुआ़

अ़र्शे इलाही के उठाने वाले मलाइका फ़िरिश्तों के सब से आ'ला तृबक़ात में हैं। इन में से हर फ़िरिश्ते के बाज़ूओं पर चार पर हैं और दो पर इन के चेहरों के ऊपर हैं। जिन से येह अपनी आंखों को छुपाए रखते हैं और ख़ौफ़े ख़ुदावन्दी के बाइ़ष येह फ़िरिश्ते सातवें आस्मान के फ़िरिश्तों से ज़ियादा ख़ुदा का ख़ौफ़ रखते हैं और सातवें आस्मान वाले फ़िरिश्ते छटे आस्मान वाले फ़िरिश्तों से ख़ौफ़े इलाही में बढ़े हुवे हैं। इसी तृरह़ छटे आस्मान वाले पांचवें आस्मान वालों से और पांचवें आस्मान वाले चौथे आस्मान वालों से और चौथे आस्मान वाले तीसरे आस्मान वालों से और तीसरे आस्मान वाले दूसरे आस्मान वालों से और दूसरे आस्मान वाले पहले आस्मान वालों से ख़ौफ़ व ख़शिय्यते रब्बानी में आ'ला दरजा रखते हैं। फिर अ़र्शे इलाही के गिर्द रहने वाले फ़िरिश्ते जिन को "कुरूबिय्यीन" कहते हैं येह बाक़ी फ़िरिश्तों के सरदार हैं और बहुत ही वजाहत वाले हैं।

मन्क़ूल है कि अ़र्श के गिर्द मलाइका की सत्तर हज़ार सफ़ें हैं। इस तृरह़ कि एक सफ़ एक सफ़ के पीछे है। येह सब अ़र्श का तृवाफ़ करते रहते हैं। फिर इन सभों के बा'द सत्तर हज़ार मलाइका की सफ़ है और वोह अपने हाथ अपने कांधों पर रखते हुवे ख़ुदा की तस्बीह़ व तक्बीर पढ़ते रहते हैं। फिर इन के बा'द और एक सो सफ़ें फ़िरिश्तों की हैं जो अपना दाहना हाथ बाएं हाथ पर रखे हुवे तस्बीह़ व तक्बीर और दुआ़ में मश्ग़ूल हैं। (تفسیر صاوی، ج۵، ص۱۸۱۵، پ۲۴، المومن:۷)

और सब फ़िरिश्तों की दुआ़ क्या है। इस को कुरआने मजीद के अल्फ़ाज़ में मुलाह़ज़ा कीजिये। इरशादे रब्बानी है कि

اَلَّذِیْنَ یَحْمِلُوْنَ الْعَرْشَ وَ مَنْ حَوْلَهٗ یُسَبِّحُوْنَ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَ
یُؤْمِنُوْنَ بِهٖ وَ یَسْتَغْفِرُوْنَ لِلَّذِیْنَ اٰمَنُوْا ۚ رَبَّنَا وَسِعْتَ كُلَّ شَیْءٍ
رَّحْمَةً وَّ عِلْمًا فَاغْفِرْ لِلَّذِیْنَ تَابُوْا وَ اتَّبَعُوْا سَبِیْلَكَ وَ قِهِمْ عَذَابَ
الْجَحِیْمِ ۝ رَبَّنَا وَ اَدْخِلْهُمْ جَنّٰتِ عَدْنِ ﹰالَّتِیْ وَعَدْتَّهُمْ وَ مَنْ صَلَحَ
مِنْ اٰبَآىٕهِمْ وَ اَزْوَاجِهِمْ وَ ذُرِّیّٰتِهِمْ ؕ اِنَّكَ اَنْتَ الْعَزِیْزُ الْحَكِیْمُ ۙ۝۸ (پ۲۴، المومن:۷-۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :– वोह जो अ़र्श उठाते हैं और जो उस के गिर्द हैं अपने रब की ता'रीफ़ के साथ उस की पाकी बोलते और उस पर ईमान लाते और मुसलमानों की मग़्फ़िरत मांगते हैं ऐ रब हमारे तेरे रह़मत व इल्म में हर चीज़ की समाई है तू उन्हें बख़्श दे जिन्हों ने तौबा की और तेरी राह पर चले और उन्हें दोज़ख़ के अ़ज़ाब से बचा ले ऐ हमारे रब और उन्हें बसने के बाग़ों में दाख़िल कर जिन का तू ने उन से वा'दा फ़रमाया है और उन को जो नेक हों उन के बाप दादा और बीबियों और अवलाद में बेशक तू ही इ़ज़्ज़त व ह़िक्मत वाला है।

दर्से हिदायत :– आप ने अ़र्शे इलाही के उठाने वाले और अ़र्श का त़वाफ़ करने वाले फ़िरिश्तों की दुआ़ मुलाह़ज़ा कर ली कि वोह सब मुक़द्दस फ़िरिश्ते हम मुसलमानों और हमारे वालिदैन और बीबियों और हमारी अवलाद के लिये जहन्नम से नजात पाने और जन्नते अ़दन में दाख़िल होने की दुआ़ मांगते रहते हैं। **अल्लाहु अकबर** ! कितना बड़ा एह़साने अ़ज़ीम है हम मुसलमानों पर हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का कि आप ही के तुफ़ैल में हम मुसलमानों को येह रुत्बए बुलन्द और दरजए आ़लिय्या ह़ासिल हुवा है कि बेशुमार त़बक़ए आ'ला के फ़िरिश्ते हम गुनाहगार मुसलमानों के लिये दुआ़एं मांगते रहते हैं वोह भी कौन से फ़िरिश्ते ? अ़र्शे इलाही के उठाने वाले फ़िरिश्ते और अ़र्शे इलाही का त़वाफ़ करने वाले फ़िरिश्ते। سُبْحٰنَ اللّٰہ कहां हम और कहां मलाए आ'ला के मलाइका, मगर हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की निस्बत का

तुफ़ैल है कि उस ने हम क़त्रों को समुन्दरे नापैदा किनार और हम ज़र्रों को आफ़्ताबे आ़लमताब बना दिया। سُبْحٰنَ الله ! سُبْحٰنَ الله एक बार बसद इख़्लास नबिय्ये मुकर्रम रह़मते आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूद शरीफ़ पढ़िये।

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّبَارِكْ وَسَلِّمْ

﴾54﴿ साहिबे अवलाद और बांझ

अल्लाह तआ़ला का दस्तूर येह है कि वोह किसी को सिर्फ़ बेटी अ़ता फ़रमाता है और किसी को सिर्फ़ बेटा देता है और कुछ लोगों को बेटा और बेटी दोनों ही अ़ता फ़रमा दिया करता है। और कुछ ऐसे लोग भी हैं जिन को बांझ बना देता है न उन्हें बेटी देता है न बेटा और येह दस्तूरे ख़ुदावन्दी सिर्फ़ आ़म इन्सानों ही तक मह़दूद नहीं बल्कि उस ने अपने ख़ास व मख़्सूस बन्दों या'नी ह़ज़राते अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام को भी इस ख़ुसूस में चारों त़रह़ का बनाया है। चुनान्चे, ह़ज़रते लूत़ और ह़ज़रते शोऐ़ब عليهما السلام के सिर्फ़ बेटियां ही थीं कोई बेटा नहीं था और ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام को सिर्फ़ बेटे ही बेटे थे कोई बेटी हुई ही नहीं। और हु़ज़ूर ख़ातिमुन्नबिय्यीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को **अल्लाह** तआ़ला ने चार बेटे और चार बेटियां अ़ता फ़रमाईं और ह़ज़रते ई़सा व ह़ज़रते यह़्या عليهما السلام के कोई अवलाद ही नहीं हुई। (تفسير روح البيان، ج٨، ص ٣٤٢-٣٤٣، پ٢٥، الشورىٰ:٤٩-٥٠)

क़ुरआने मजीद में रब्बुल इ़ज़्ज़त جَلَّ جَلَالُهٗ ने इस मज़्मून को इन अल्फ़ाज़ में बयान फ़रमाया है कि :

يَهَبُ لِمَنْ يَّشَآءُ اِنَاثًا وَّيَهَبُ لِمَنْ يَّشَآءُ الذُّكُوْرَ ﴿٤٩﴾ اَوْ يُزَوِّجُهُمْ ذُكْرَانًا وَّاِنَاثًا ۚ وَيَجْعَلُ مَنْ يَّشَآءُ عَقِيْمًا ؕ اِنَّهٗ عَلِيْمٌ قَدِيْرٌ ﴿٥٠﴾ (پ٢٥، الشورىٰ:٤٩-٥٠)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- जिसे चाहे बेटियां अ़ता फ़रमाए और जिसे चाहे बेटे दे या दोनों मिला दे बेटे और बेटियां और जिसे चाहे बांझ कर दे बेशक वोह इ़ल्म व क़ुदरत वाला है।

दर्से हिदायत :- अल्लाह तआ़ला बेटी दे या बेटा दे या दोनों अ़ता फ़रमाए या बांझ बना दे बहर ह़ाल येह सभी ख़ुदा की ने'मतें हैं। मज़्कूरए बाला आयत के आख़िरी हिस्से या'नी اِنَّهٗ عَلِیْمٌ قَدِیْرٌ ﴿۵۰﴾ में इसी त़रफ़ इशारा है कि कौन इस के लाइक़ है कि उस को बेटी मिले और कौन इस क़ाबिल है कि उस को बेटा मिले और कौन इस की अहलिय्यत रखता है कि उस को बेटा और बेटी दोनों मिलें और कौन ऐसा है कि उस के ह़क़ में येही बेहतर है कि उस के कोई अवलाद ही न हो। इन बातों को अल्लाह तआ़ला ही ख़ूब जानता है क्यूंकि वोह बहुत इल्म वाला और बड़ी क़ुदरत वाला है। इन्सान अपनी हज़ार इल्म व आगही के बा वुजूद इस मुआ़मले को नहीं जानता कि इन्सान के ह़क़ में क्या बेहतर है और क्या बेहतर नहीं है। क़ुरआने मजीद में अल्लाह तआ़ला ने इरशाद फ़रमाया है कि

وَعَسٰۤى اَنْ تَكْرَهُوْا شَیْــٴًـا وَّ هُوَ خَیْرٌ لَّكُمْۚ-وَ عَسٰۤى اَنْ تُحِبُّوْا شَیْــٴًـا وَّ هُوَ شَرٌّ لَّكُمْؕ-وَ اللّٰهُ یَعْلَمُ وَ اَنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ۠﴿۲۱۶﴾ (پ۲،البقرہ:۲۱۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- और क़रीब है कि कोई बात तुम्हें बुरी लगे और वोह तुम्हारे ह़क़ में बेहतर हो और क़रीब है कि कोई बात तुम्हें पसन्द आए और वोह तुम्हारे ह़क़ में बुरी हो और अल्लाह जानता है और तुम नहीं जानते।

इस लिये बन्दों को चाहिये कि अगर अपनी ख़्वाहिश के मुत़ाबिक़ कोई चीज़ न मिल सके तो हरगिज़ नाराज़ न हों बल्कि येह सोच कर सब्र करें कि हम इस चीज़ के लाइक़ ही नहीं थे इस लिये हमें ख़ुदा ने नहीं दिया वोह अ़लीम व क़दीर है वोह ख़ूब जानता है कि कौन किस चीज़ का अहल है और कौन अहल नहीं है।

इस के अल्त़ाफ़ तो हैं आ़म शहीदी सब पर
तुझ से क्या ज़िद थी? अगर तू किसी क़ाबिल होता

बेटियां :- इस ज़माने में देखा गया है कि बा'ज़ लोग बेटियों की पैदाइश से चिड़ते हैं और मुंह बिगाड़ लेते हैं बल्कि बा'ज़ बद नसीब तो

ऊल फ़ूल बक कर कुफ़राने ने'मत के गुनाह में मुब्तला हो जाते हैं। वाज़ेह रहे कि बेटियों की पैदाइश पर मुंह बिगाड़ कर नाराज़ हो जाना येह ज़मानए जाहिलिय्यत के कुफ़्फ़ार का मन्हूस त़रीक़ा है। चुनान्चे, **अल्लाह** तआ़ला का इरशाद है कि

وَ اِذَا بُشِّرَ اَحَدُهُمْ بِالْاُنْثٰى ظَلَّ وَجْهُهٗ مُسْوَدًّا وَّ هُوَ كَظِیْمٌۚ(۵۸) یَتَوَارٰى مِنَ الْقَوْمِ مِنْ سُوْٓءِ مَا بُشِّرَ بِهٖؕ اَیُمْسِكُهٗ عَلٰى هُوْنٍ اَمْ یَدُسُّهٗ فِی التُّرَابِؕ اَلَا سَآءَ مَا یَحْكُمُوْنَ(۵۹) (پ۱۴، النحل۵۸_۵۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- और जब इन में किसी को बेटी होने की ख़ुश ख़बरी दी जाती है तो दिन भर उस का मुंह काला रहता है और वोह ग़ुस्सा खाता है लोगों से छुपता फिरता है इस बिशारत की बुराई के सबब क्या इसे ज़िल्लत के साथ रखेगा ? या इसे मिट्टी में दबा देगा अरे बहुत ही बुरा हुक्म लगाते हैं।

ख़ूब समझ लो कि मुसलमानों का इस्लामी त़रीक़ा येह है कि बेटियों की पैदाइश पर भी ख़ुश हो कर **अल्लाह** तआ़ला की इस ने'मत का शुक्र अदा करे और मुन्दरिजए ज़ैल ह़दीषों की बिशारत पर ईमान रख कर सआ़दते दारैन की करामतों से सरफ़राज़ हो।

हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुन्दरिजए ज़ैल ह़दीषें इरशाद फ़रमाई हैं :

﴾1﴿ औ़रत के लिये येह बहुत ही मुबारक है कि उस की पहली अवलाद लड़की हो।

﴾2﴿ जिस शख़्स को कुछ बेटियां मिलीं और वोह उन के साथ नेक सुलूक करे यहां तक कि कुफ़्व में उन की शादी कर दे तो वोह बेटियां उस के लिये जहन्नम से आड़ बन जाएंगी।

﴾3﴿ हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने फ़रमाया कि तुम लोग बेटियों को बुरा मत समझो, इस लिये कि मैं भी चन्द बेटियों का **बाप** हूं।

﴾4﴿ जब कोई लड़की पैदा होती है तो **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाता है कि ऐ लड़की ! तू ज़मीन पर उतर। मैं तेरे बाप की मदद करूंगा।

(تفسیر روح البیان، ج۸، ص۳۴۲، پ۲۵، الشوریٰ:۴۹_۵۰)

﴾55﴿ फ़ासिक़ की ख़बर पर ए'तिमाद मत करो

सि. 5 हि. के ग़ज़्वए बनी मुस्त़लिक़ में जब मुसलमान फ़त्ह़याब हो गए और हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस क़बीले के सरदार की बेटी ह़ज़रते जुवैरिय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से निकाह़ फ़रमा लिया तो सह़ाबए किराम ने तमाम असीराने जंग को येह कह कर रिहा कर दिया कि जिस ख़ानदान में रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने शादी कर ली, उस ख़ानदान का कोई आदमी लौंडी ग़ुलाम नहीं रह सकता। मुसलमानों के इस ह़ुस्ने सुलूक और अख़्लाक़े करीमाना से मुतअष्षिर हो कर तमाम क़बीला मुशर्रफ़ ब इस्लाम हो गया। इस के बा'द हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने "वलीद बिन उ़क़्बा" को इस क़बीले वालों के पास भेजा ताकि वोह क़बीले के दौलत मन्दों से ज़कात वुसूल कर के इन के फ़ुक़रा पर तक़्सीम कर दें।

क़बीलए बनी अल मुस्त़लिक़ के लोगों को जब "वलीद" की इस आमद का इ़ल्म हुवा तो वोह आ़मिले इस्लाम के इस्तिक़्बाल के लिये ख़ुशी ख़ुशी हथियार ले कर बस्ती से बाहर मैदान में निकले। ज़मानए जाहिलिय्यत में इस क़बीले और वलीद में कुछ नाचाक़ी रह चुकी थी इस लिये पुरानी अ़दावत की बिना पर इस्तिक़्बाल के लिये इस एहतिमाम को वलीद ने दूसरी नज़र से देखा और समझा और क़बीले वालों से अस्ल मुआ़मला दरयाफ़्त किये बिग़ैर ही मदीना वापस चला आया, और दरबारे नबुव्वत में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ किया कि क़बीलए बनी मुस्त़लिक़ के लोग तो मुर्तद हो गए और उन्हों ने ज़कात देने से इन्कार कर दिया इस ख़बर से हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم रन्जीदा हुवे और मुसलमान बेह़द बर अफ़रोख़्ता हो गए बल्कि मुक़ाबले के लिये जिहाद की तय्यारियां होने लगीं। इधर बनी मुस्त़लिक़ को वलीद के इस अ़जीब त़र्ज़े अ़मल से बड़ी ह़ैरत हुई और जब इन लोगों को मा'लूम हुवा कि वलीद ने दरबारे नबुव्वत में ग़लत़ बयानी और तोह्मत त़राज़ी कर दी है तो इन लोगों ने एक मुअ़ज़्ज़ज़ और बा वक़ार वफ़्द दरबारे नबुव्वत में भेजा जिस ने बनी अल मुस्त़लिक़ की त़रफ़ से सफ़ाई पेश की। एक जानिब अपने आ़मिल वलीद का बयान और दूसरी जानिब बनी अल मुस्त़लिक़ के वफ़्द का येह

बयान दोनों बातें सुन कर हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने ख़ामोशी इख़्तियार फ़रमा ली। और वह्ये इलाही का इन्तिज़ार फ़रमाने लगे, आख़िर वह्य उतर पड़ी और सूरए "हुजुरात" की आयात ने नाज़िल हो कर न सिर्फ़ मुआमले की हक़ीक़त ही वाज़ेह कर दी बल्कि इस ख़ुसूस में एक मुस्तक़िल क़ानून और मे'यारे **तह्क़ीक़** भी अ़ता फ़रमा दिया। वोह आयात येह हैं ।

(تفسیر خزائن العرفان،ص۹۲۸، پ۲۶،الحجرات:۶)

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِنْ جَآءَكُمْ فَاسِقٌۢ بِنَبَاٍ فَتَبَيَّنُوْۤا اَنْ تُصِيْبُوْا قَوْمًۢا بِجَهَالَةٍ فَتُصْبِحُوْا عَلٰى مَا فَعَلْتُمْ نٰدِمِيْنَ ۝۶ وَاعْلَمُوْۤا اَنَّ فِيْكُمْ رَسُوْلَ اللّٰهِ ؕ لَوْ يُطِيْعُكُمْ فِيْ كَثِيْرٍ مِّنَ الْاَمْرِ لَعَنِتُّمْ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ حَبَّبَ اِلَيْكُمُ الْاِيْمَانَ وَزَيَّنَهٗ فِيْ قُلُوْبِكُمْ وَكَرَّهَ اِلَيْكُمُ الْكُفْرَ وَالْفُسُوْقَ وَالْعِصْيَانَ ؕ اُولٰٓئِكَ هُمُ الرّٰشِدُوْنَ ۝۷ فَضْلًا مِّنَ اللّٰهِ وَنِعْمَةً ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ۝۸ (پ۲۶، الحجرات:۶_۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- ऐ ईमान वालो अगर कोई फ़ासिक़ तुम्हारे पास कोई ख़बर लाए तो तह्क़ीक़ कर लो कि कहीं किसी क़ौम को बे जाने ईज़ा न दे बैठो फिर अपने किये पर पछताते रह जाओ और जान लो कि तुम में **अल्लाह** के रसूल हैं बहुत मुआमलों में अगर येह तुम्हारी ख़ुशी करें तो तुम ज़रूर मशक़्क़त में पड़ो लेकिन **अल्लाह** ने तुम्हें ईमान प्यारा कर दिया है और उसे तुम्हारे दिलों में आरास्ता कर दिया और कुफ़्र और हुक्म उदूली और नाफ़रमानी तुम्हें नागवार कर दी ऐसे ही लोग राह पर हैं **अल्लाह** का फ़ज़्ल और एह्सान और **अल्लाह** इल्म व हिक्मत वाला है।

दर्से हिदायत :- ﴾1﴿ ख़बरों के बयान करने में आ़म तौर पर लोगों का येही मिज़ाज और तरीक़ा बन चुका है कि जो ख़बर भी उन के कानों तक पहुंचे उस को बिला तकल्लुफ़ बयान कर दिया करते हैं और हक़ीक़ते हाल की तफ़्तीश और जुस्तजू बिल्कुल नहीं करते। ख़्वाह इस ख़बर से किसी बे गुनाह पर इफ़्तिरा किया जाता हो या किसी को नुक़्सान पहुंचता हो।

इस्लाम ने इस त़रीक़े को बिल्कुल ग़लत़ क़रार दिया है बल्कि क़ुरआन ने इस्लामी आदाब का येह क़ानून बताया है कि हर ख़बर को सुन कर पहले उस की तह्क़ीक़ कर लेनी चाहिये जब वोह ख़बर पायए षुबूत को पहुंच जाए तो फिर उस ख़बर को लोगों से बयान करना चाहिये इसी बात की त़रफ़ मुतवज्जेह करने के लिये नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने येह तम्बीह फ़रमाई है कि

كَفٰى بِالْمَرْءِ كَذِبًا اَنْ يُّحَدِّثَ بِكُلِّ مَا سَمِعَ

(صحیح مسلم، باب النهى عن الحديث بكل ما سمع، رقم الحديث٥، ص ٨)

या'नी आदमी के झूटा होने के लिये येही काफ़ी है कि वोह जो बात भी सुने लोगों से (बिला तह्क़ीक़) बयान करने लगे। (واللّٰه تعالٰی اعلم)

﴾2﴿ इस आयत से षाबित हुवा कि एक शख़्स अगर आ़दिल और पाबन्दे शरीअ़त हो तो उस की ख़बर मो'तबर है।

﴾3﴿ बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि येह आयत वलीद बिन उ़क़्बा ही के साथ ख़ास़ नहीं बल्कि येह आयत आ़म है और हर फ़ासिक़ की ख़बर के बारे में नाज़िल हुई है।

﴾4﴿ वलीद बिन उ़क़्बा को सह़ाबी होते हुवे क़ुरआने मजीद ने फ़ासिक़ कहा तो इस में कोई इश्काल नहीं है क्यूंकि इस वाक़िए़ के बा'द जब वलीद बिन उ़क़्बा ने सिद्क़ दिल से सच्ची तौबा कर ली तो उन का फ़िस्क़ ज़ाइल हो गया। लिहाज़ा किसी सह़ाबी को फ़ासिक़ कहना हरगिज़ हरगिज़ जाइज़ नहीं है क्यूंकि इस पर इजमाअ़ है कि हर सह़ाबी सादिक़, आ़दिल और पाबन्दे शरअ़ है। (واللّٰه تعالٰی اعلم)

﴾56﴿ मलाइका मेहमान बन कर आए

ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام बहुत मेहमान नवाज़ थे। मन्क़ूल है कि जब तक आप के दस्तरख़्वान पर मेहमान नहीं आ जाते थे आप खाना नहीं तनावुल फ़रमाते थे। एक दिन मेहमानों का एक ऐसा क़ाफ़िला आप के घर उतर पड़ा कि उन मेहमानों से आप ख़ौफ़ज़दा हो गए। येह ह़ज़रते

जिब्रईल عَلَيْهِ السَّلَام थे जो दस या बारह फ़िरिश्तों को हमराह ले कर तशरीफ़ लाए थे और सलाम कर के मकान के अन्दर दाख़िल हो गए। येह सब फ़िरिश्ते निहायत ही ख़ूब सूरत इन्सानों की शक्ल में थे। अव्वलन तो येह ह़ज़रात ऐसे वक़्त तशरीफ़ लाए जो मेहमानों के आने का वक़्त नहीं था। फिर येह ह़ज़रात बिग़ैर इजाज़त त़लब किये दन्दनाते हुवे मकान के अन्दर दाख़िल हो गए फिर जब ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام ह़स्बे आ़दत इन ह़ज़रात की मेहमान नवाज़ी के लिये एक फ़र्बा भुना हुवा बछड़ा लाए तो इन ह़ज़रात ने खाने से इन्कार कर दिया। इन मेहमानों की मज़्कूरा बाला तीन अदाओं की वजह से ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام को कुछ ख़दशा गुज़रा कि शायद येह लोग दुश्मन हैं क्यूंकि उस ज़माने का येही रवाज था कि दुश्मन जिस घर में दुश्मनी के लिये जाता था उस घर में कुछ खाता पीता नहीं था। चुनान्चे, आप इन मेहमानों से कुछ ख़ौफ़ मह़सूस फ़रमाने लगे। येह देख कर ह़ज़रते जिब्रईल عَلَيْهِ السَّلَام ने कहा कि ऐ **अल्लाह** के नबी عَلَيْهِ السَّلَام आप हम से बिल्कुल कोई ख़ौफ़ न करें हम **अल्लाह** तआ़ला के भेजे हुवे फ़िरिश्ते हैं और हम दो कामों के लिये आए हैं पहला मक़्सद तो येह है कि हम आप को येह बिशारत सुनाने आए हैं कि आप को **अल्लाह** तआ़ला एक इ़ल्म वाला फ़रज़न्द अ़त़ा फ़रमाएगा और हमारा दूसरा काम येह है कि हम ह़ज़रते लूत़ عَلَيْهِ السَّلَام की क़ौम पर अ़ज़ाब ले कर आए हैं।

फ़रज़न्द की बिशारत सुन कर ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام की मुक़द्दस बीवी ह़ज़रते "सारा" चौंक पड़ीं क्यूंकि इन की उ़म्र निनानवे बरस की हो चुकी थी और वोह कभी ह़ामिला भी नहीं हुई थीं। तअ़ज्जुब से वोह चिल्लाती हुई आईं और हाथ से माथा ठोंक कर कहने लगीं कि क्या मुझ बुढ़िया बांझ के भी फ़रज़न्द होगा तो ह़ज़रते जिब्रईल عَلَيْهِ السَّلَام ने कहा कि हां आप के रब का येही फ़रमान है और वोह परवर दगार बड़ी ह़िक्मतों वाला बहुत इ़ल्म वाला है। चुनान्चे, ह़ज़रते इस्ह़ाक़ عَلَيْهِ السَّلَام पैदा हुवे।

(تفسیر خزائن العرفان،ص۹۳۸ (ملخصاً) پ۲۶،الذاریات:۲۴ ـ ۲۹)

कुरआने मजीद ने इस वाक़िए को इन लफ़्ज़ों में बयान फ़रमाया है कि

هَلْ اَتٰىكَ حَدِیْثُ ضَیْفِ اِبْرٰهِیْمَ الْمُكْرَمِیْنَ ﴿۲۴﴾ اِذْ دَخَلُوْا عَلَیْهِ فَقَالُوْا سَلٰمًاؕ قَالَ سَلٰمٌۚ قَوْمٌ مُّنْكَرُوْنَ ﴿۲۵﴾ فَرَاغَ اِلٰۤى اَهْلِهٖ فَجَآءَ بِعِجْلٍ سَمِیْنٍۙ ﴿۲۶﴾ فَقَرَّبَهٗۤ اِلَیْهِمْ قَالَ اَلَا تَاْكُلُوْنَ٘ ﴿۲۷﴾ فَاَوْجَسَ مِنْهُمْ خِیْفَةًؕ قَالُوْا لَا تَخَفْؕ وَ بَشَّرُوْهُ بِغُلٰمٍ عَلِیْمٍ ﴿۲۸﴾ فَاَقْبَلَتِ امْرَاَتُهٗ فِیْ صَرَّةٍ فَصَكَّتْ وَجْهَهَا وَ قَالَتْ عَجُوْزٌ عَقِیْمٌ ﴿۲۹﴾ قَالُوْا كَذٰلِكِۙ قَالَ رَبُّكِؕ اِنَّهٗ هُوَ الْحَكِیْمُ الْعَلِیْمُ ﴿۳۰﴾ (پ۲۶،الذاریات:۲۴ـ۳۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- ऐ महबूब क्या तुम्हारे पास इब्राहीम के मुअ़ज़्ज़ज़ मेहमानों की ख़बर आई ? जब वोह उस के पास आ कर बोले सलाम कहा सलाम ना शनासा लोग हैं फिर अपने घर गया तो एक फ़र्बा बछड़ा ले आया फिर उसे उन के पास रखा कहा क्या तुम खाते नहीं तो अपने जी में उन से डरने लगा। वोह बोले डरिये नहीं और उसे एक इ़ल्म वाले लड़के की बिशारत दी इस पर इस की बीबी चिल्लाती आई फिर अपना माथा ठोंका और बोली क्या बुढ़िया बांझ ? उन्हों ने कहा तुम्हारे रब ने यूंही फ़रमा दिया है और वोही ह़कीम दाना है।

दर्से हिदायत :- इस वाक़िए से येह हिदायत की रोशनी मिलती है कि मलाइका कभी कभी आदमी की सूरत में लोगों के पास आया करते हैं। चुनान्चे, बा'ज़ रिवायतों में आया है कि ह़ज के मौक़अ़ पर ह़रमे का'बा और मिना व अ़रफ़ात व मुज़्दलिफ़ा वग़ैरा में कुछ फ़िरिश्तों की जमाअ़त इन्सानों की शक्ल व सूरत में मुख़्तलिफ़ भेस बना कर आती है जो ह़ाजियों के इम्तिह़ान के लिये ख़ुदा की त़रफ़ से भेजी जाती है। इस लिये हुज्जाजे किराम को लाज़िम है कि मक्कए मुकर्रमा और मिना व अ़रफ़ात व मुज़्दलिफ़ा और त़वाफ़े का'बा व ज़ियारते मदीनए मुनव्वरा के हुजूम में होशियार रहें कि हरगिज़ हरगिज़ किसी इन्सान की भी बे अदबी व दिल आज़ारी न होने पाए और ताजिरों या ह़मालों या फ़क़ीरों से झगड़ा तकरार न होने पाए। तुम्हें क्या ख़बर है कि येह आदमी है या आदमी की सूरत में

कोई फ़िरिश्ता है जो तुम्हें धक्का दे कर या डांट कर तुम्हारे ह़िल्म व सब्र का इम्तिह़ान ले रहा है। येह वोह नुक्ता है जिस से आ़म तौ़र पर लोग नावाक़िफ़ हैं इस लिये सफ़रे ह़ज में क़दम क़दम पर लोगों से उलझते और झगड़ते रहते हैं और बा'ज़ अवक़ात दुन्या व आख़िरत का शदीद नुक़्सान व ख़सारा उठाते हैं। लिहाज़ा इस नुक़्साने अ़ज़ीम से बचने की बेहतरीन तदबीर येही है कि हर शख़्स के बारे में येही ख़त़रा मह़सूस करते रहें कि शायद येह कोई फ़िरिश्ता हो जो ताजिर या साइल या मज़दूर के भेस में है और फिर उस से संभल कर बात चीत करें और ह़त्तल इम्कान उस को राज़ी रखने की कोशिश करें और हरगिज़ हरगिज़ किसी तल्ख़ कलामी या सख़्त गोई की नौबत न आने दें कि इसी में सलामती है। (واللہ تعالٰی اعلم)

﴾57﴿ चांद दो टुकड़े हो गया

कुफ़्फ़ारे मक्का ने हु़ज़ूरे अकरम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से मो'जिज़ा त़लब किया तो आप ने चांद को दो टुकड़े कर के दिखा दिया। एक टुकड़ा "जबले अबू क़ुबैस" पर नज़र आया और दूसरा टुकड़ा "जबले क़ुईक़आ़न" पर देखा गया। इस त़रह़ चांद को दो पारा कर के हु़ज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने कुफ़्फ़ारे मक्का को दिखा दिया और फ़रमाया कि तुम लोग गवाह हो जाओ। (تفسیر جلالین، ص ۴۴۰، پ۲۷، القمر: ۱)

येह देख कर कुफ़्फ़ारे मक्का ने कहा कि मुह़म्मद (صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) ने जादू कर के हमारी नज़र बन्दी कर दी है इस पर उन्हीं की जमाअ़त के लोगों ने कहा कि अगर येह नज़र बन्दी है तो मक्का से बाहर के किसी आदमी को चांद के हि़स्से नज़र न आए होंगे। लिहाज़ा अब बाहर से जो क़ाफ़िले आने वाले हैं उन की जुस्त्जू रखो और मुसाफ़िरों से दरयाफ़्त करो अगर दूसरे मक़ामात से भी चांद का शक़ होना देखा गया है तो बेशक येह मो'जिज़ा है। चुनान्चे, सफ़र से आने वालों से दरयाफ़्त किया गया तो उन्हों ने बयान किया कि हम ने देखा कि उस रोज़ चांद के दो टुकड़े हो गए थे। इस के बा'द मुशरिकीन को इन्कार की गुन्जाइश न रही। लेकिन वोह लोग अपने इनाद से इस को जादू ही कहते रहे। येह मो'जिज़ए अ़ज़ीमा सिह़ाह़ की अह़ादीषे कषीरा में मज़कूर है और येह ह़दीष इस क़दर दरजए शोहरत को

पहुंच गई है कि इस का इन्कार करना अ़क्ल व इन्साफ़ से दुश्मनी और बे दीनी है। (تفسیر خزائن العرفان، ص ۹۵۳۔۹۵۴، پ۲۷، القمر:۱)

अल्लाह तआ़ला ने इस मो'जिज़े का बयान क़ुरआन की सूरए क़मर में इन अल्फ़ाज़ के साथ बिल ए'लान फ़रमाया कि

اِقْتَرَبَتِ السَّاعَةُ وَانْشَقَّ الْقَمَرُ ۝۱ وَ اِنْ یَّرَوْا اٰیَةً یُّعْرِضُوْا وَ یَقُوْلُوْا سِحْرٌ مُّسْتَمِرٌّ ۝۲ وَ كَذَّبُوْا وَ اتَّبَعُوْۤا اَهْوَآءَهُمْ وَ كُلُّ اَمْرٍ مُّسْتَقِرٌّ ۝۳ (پ۲۷، القمر:۱۔۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :– पास आई क़ियामत और शक़ हो गया चांद और अगर देखें कोई निशानी तो मुंह फेरते और कहते हैं येह तो जादू है चला आता और उन्हों ने झुटलाया और अपनी ख़्वाहिश के पीछे हुवे और हर काम क़रार पा चुका है।

दर्से हिदायत :–मो'जिज़ा "शक़्क़ुल क़मर" हुज़ूर ख़ातिमुन्नबिय्यीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का एक बे मिषाल मो'जिज़ा है जो इस आयते करीमा और बहुत सी मश्हूर ह़दीषों से षाबित है हम ने अपनी किताब "सीरतुल मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم" में इस मस्अले पर सेरे ह़ासिल बह़्ष की है इस के मुत़ालए़ से इत़्मीनाने क़ल्ब और जिलाए ईमान ह़ासिल कीजिये।

दिल बाग़ बाग़ हो जाता है

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं मैं ने अ़र्ज़ की, या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जब मैं आप को देखता हूं तो मेरा दिल बाग़ बाग़ हो जाता है और आंखें ठन्डी होती हैं। (आक़ा) मुझे हर चीज़ की मा'लूमात अ़त़ा फ़रमा दीजिये ! इरशाद हुवा, "हर शै पानी से बनी है।" मैं ने अ़र्ज़ की, उस चीज़ पर मुत्तलअ़ फ़रमा दीजिये, जिसे अपना कर मैं जन्नत को पा सकूं। फ़रमाया "खाना खिलाओ और सलाम को फलाओ और सिलए रेह़्मी करो और रात में (नफ़्ली) नमाज़ पढ़ो जब लोग सोए हों, तुम सलामती से दाख़िले जन्नत हो जाओगे।"

(फ़ैज़ाने सुन्नत, जि, 1 स. 1332) (مسند امام احمد، ج۳، ص۱۷۴، حدیث۷۹۱۹)

﴾58﴿ किसी क़ौम का मज़ाक़ न उड़ाओ

हज़रते षाबित बिन क़ैस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ कुछ ऊंचा सुनते थे इस लिये जब वोह मजलिस शरीफ़ में ह़ाज़िर होते तो सह़ाबा उन्हें आगे जगह दे दिया करते थे। एक दिन जब वोह दरबारे रिसालत में आए तो मजलिस पुर हो चुकी थी, लेकिन वोह लोगों को हटाते हुवे हुज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के क़रीब पहुंच गए। मगर फिर भी एक आदमी इन के और हुज़ूर के दरमियान रह गया। हज़रते षाबित बिन क़ैस उस को भी हटाने लगे लेकिन वोह शख़्स अपनी जगह से बिल्कुल नहीं हटा तो हज़रते षाबित बिन क़ैस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने गुस्से में भर कर पूछा कि तुम कौन हो ? तो उस शख़्स ने कहा कि फ़ुलां आदमी हूं। येह सुन कर हज़रते षाबित बिन क़ैस ने ह़क़ारत के लहजे में कहा कि अच्छा तू फ़ुलानी औ़रत का लड़का है। येह सुन कर उस शख़्स ने शर्मिन्दा हो कर सर झुका लिया और उस को बड़ी तक्लीफ़ हुई इस मौक़अ़ पर मुन्दरिजए ज़ैल आयत नाज़िल हुई।

और हज़रते ज़ह़्ह़ाक से मन्क़ूल है कि क़बीलए बनी तमीम के कुछ लोग बेहतरीन पोशाक पहन कर बसूरते वफ़्द बारगाहे नबवी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم में आए और जब इन लोगों ने "असह़ाबे सुफ़्फ़ा" के ग़रीब व मुफ़्लिस मुसलमानों को फ़रसूदा ह़ाल देखा तो उन का मज़ाक़ उड़ाने लगे इस मौक़अ़ पर येह आयत नाज़िल हुई।

(تفسیر خزائن العرفان،ص۹۲۹، پ۲٦، الحجرات:۱۱)

और हज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया कि हज़रते आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا ने हज़रते उम्मुल मोअमिनीन बीबी सफ़िय्या को एक दिन "यहूदिय्या" कह दिया था। जिस से उन को बहुत रंज व सदमा हुवा। जब हुज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को मा'लूम हुवा तो हज़रते बीबी आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا पर बहुत ज़ियादा ख़फ़गी का इज़्हार फ़रमाया और हज़रते बीबी सफ़िय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا की दिलजूई के लिये फ़रमाया कि तुम एक नबी (हज़रते हारून عَلَیْہِ السَّلَام) की अवलाद में हो और तुम्हारे चचाओं में भी एक नबी (हज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام) हैं और तुम एक नबी की बीवी भी हो या'नी मेरी बीवी हो। इस मौक़अ़ पर इन आयात का नुज़ूल हुवा।

(تفسیر صاوی،ج۵، ص۱۴۹۴، پ۲٦، الحجرات:۱۱)

बहर हाल इन मज़्कूरा बाला तीनों शाने नुज़ूल में से किसी के बारे में येह आयत नाज़िल हुई जिस में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने किसी क़ौम का मज़ाक़ उड़ाने की सख़्त मुमानअ़त फ़रमाई।

आयते करीमा येह है कि

يٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا لَا یَسْخَرْ قَوْمٌ مِّنْ قَوْمٍ عَسٰۤى اَنْ یَّكُوْنُوْا خَیْرًا مِّنْهُمْ وَ لَا نِسَآءٌ مِّنْ نِّسَآءٍ عَسٰۤى اَنْ یَّكُنَّ خَیْرًا مِّنْهُنَّۚ وَ لَا تَلْمِزُوْۤا اَنْفُسَكُمْ وَ لَا تَنَابَزُوْا بِالْاَلْقَابِؕ بِئْسَ الِاسْمُ الْفُسُوْقُ بَعْدَ الْاِیْمَانِۚ وَ مَنْ لَّمْ یَتُبْ فَاُولٰٓىٕكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿۱۱﴾ (پ۲۶،الحجرات:۱۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- ऐ ईमान वालो न मर्द मर्दों से हंसें, अ़जब नहीं कि वोह उन हंसने वालों से बेहतर हों और न औ़रतें औ़रतों से, दूर नहीं कि वोह उन हंसने वालियों से बेहतर हों और आपस में त़ा'ना न करो और एक दूसरे के बुरे नाम न रखो क्या ही बुरा नाम है मुसलमान हो कर फ़ासिक़ कहलाना और जो तौबा न करें तो वोही ज़ालिम हैं।

दर्से हिदायत :- क़ुरआने करीम की इन चमकती हुई आयतों को बग़ौर पढ़िये और इ़ब्रत ह़ासिल कीजिये कि इस ज़माने में जो एक फ़ासिक़ाना और सरासर मुजरिमाना रवाज निकल पड़ा है कि "सय्यिद" व "शैख़" और "पठान" कहलाने वालों का येह दस्तूर बन गया है कि वोह धुन्या, जूलाहा, कुन्जड़ा, क़साई, नाई कह कर मुख़्लिस व मुत्तक़ी मुसलमानों का मज़ाक़ बनाया करते हैं बल्कि इन क़ौमों के आ़लिमों को मह़ज़ इन की क़ौमिय्यत की बिना पर ज़लील व ह़क़ीर समझते हैं बल्कि अपनी मजलिसों में इन का मज़ाक़ बना कर हंसते हंसाते हैं। जुह्हाल तो जुह्हाल बड़े बड़े आ़लिमों और पीराने त़रीक़त का भी येही त़रीक़ा है कि वोह भी येही ह़रकतें करते रहते हैं। ह़द हो गई कि जो लोग बरसों इन क़ौमों के आ़लिमों के सामने ज़ानूए तलम्मुज़ तै कर के ख़ुद आ़लिम और शैख़े त़रीक़त बने हैं मगर फिर भी मह़ज़ क़ौमिय्यत की बिना पर अपने उस्तादों को ह़क़ीर व ज़लील समझ कर उन का तमस्ख़ुर करते रहते हैं। और अपने नसब व

ज़ात पर फ़ख़्र कर के दूसरों की ज़िल्लत व ह़क़ारत का चर्चा करते रहते हैं। लिल्लाह बताइये कि कुरआने मजीद की रोशनी में ऐसे लोग कितने बड़े मुजरिम हैं ?

मुलाह़ज़ा फ़रमाइये कि कुरआने मजीद ने मुन्दरिजए ज़ैल अह़काम और वई़दें बयान फ़रमाई हैं :

﴾1﴿ कोई क़ौम किसी क़ौम का मज़ाक़ न उड़ाए। हो सकता है कि जिन का मज़ाक़ उड़ा रहे हैं वोह मज़ाक़ उड़ाने वालों से दुन्या व आख़िरत में बेहतर हों।

﴾2﴿ मुसलमानों के लिये जाइज़ नहीं कि एक दूसरे पर ता'ना ज़नी करें।

﴾3﴿ मुसलमानों पर ह़राम है कि एक दूसरे के लिये बुरे बुरे नाम रखें।

﴾4﴿ जो ऐसा करे वोह मुसलमान हो कर ''फ़ासिक़'' है।

﴾5﴿ और जो अपनी इन ह़रकतों से तौबा न करे वोह ''ज़ालिम'' है।

ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया कि अगर कोई गुनाहगार मुसलमान अपने गुनाह से तौबा कर ले तो तौबा के बा'द उस को उस गुनाह से आ़र दिलाना भी इसी मुमानअ़त में दाख़िल है। इसी त़रह़ किसी मुसलमान को कुत्ता, गधा, सुवर कह देना भी ममनूअ़ है या किसी मुसलमान को ऐसे नाम या लक़ब से याद करना जिस में उस की बुराई ज़ाहिर होती हो या उस को नागवार होता हो येह सारी सूरतें भी इसी मुमानअ़त में दाख़िल हैं। (تفسیر خزائن العرفان،ص۹۳۰، پ۲۶،الحجرات:۱۱)

और ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द सह़ाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया कि अगर मैं किसी को ह़क़ीर समझ कर उस का मज़ाक़ बनाऊं तो मुझे डर लगता है कि कहीं **अल्लाह** तआ़ला मुझे कुत्ता न बना दे।

(تفسیر صاوی،ج۵، ص۱۹۹۴، پ۲۶، الحجرات:۱۱)

﴾59﴿ लोहा आस्मान से उतरा है

अल्लाह तआ़ला ने ''लोहे'' का ज़िक्र फ़रमाते हुवे कुरआने मजीद में इरशाद फ़रमाया है कि

وَاَنْزَلْنَا الْحَدِیْدَ فِیْہِ بَاْسٌ شَدِیْدٌ وَّ مَنَافِعُ لِلنَّاسِ (پ۲۷،الحدید:۲۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- और हम ने लोहा उतारा इस में सख़्त आंच और लोगों के फ़ाइदे।

हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है कि जब हज़रते आदम عَلَیْہِ السَّلَام बहिश्ते बरीं से रूए ज़मीन पर तशरीफ़ लाए तो लोहे के पांच अवज़ार अपने साथ लाए। हथोड़ा, निहाई, सन्सी, रेती, सूई। और दूसरी रिवायत इन्ही हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है कि हज़रते आदम عَلَیْہِ السَّلَام के साथ तीन चीज़ें ज़मीन पर नाज़िल हुईं। हज्रे अस्वद, अ़साए मूसवी और लोहा।

(تفسیر صاوی، ج۶، ص۲۱۱۲، پ۲۷، الحدید:۲۵)

और हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि इन्हों ने कहा कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि चार बरकत वाली चीज़ें **अल्लाह** तआ़ला ने आस्मान से नाज़िल फ़रमाई हैं। लोहा, आग, पानी, नमक। (تفسیر صاوی، ج۶، ص۲۱۱۲، پ۲۷، الحدید:۲۵)

दर्से हिदायत :- हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا की रिवायत में है कि "लोहा" जन्नत से ज़मीन पर आया है और हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا की रिवायत में येह है कि "लोहा" आस्मान से नाज़िल हुवा है। इन दोनों रिवायतों में कोई ख़ास तआ़रुज़ नहीं। इस लिये कि "जन्नत" आस्मानों के ऊपर ही है तो लोहा जब जन्नत से उतरा तो आस्मान ही से ज़मीन पर उतरा।

"लोहा" एक ऐसी धात है कि हर सन्अ़त व हिरफ़त के आलात इस से बनते हैं और हर क़िस्म के आलाते जंग भी इसी से तय्यार होते हैं और इन्सानों की ज़रूरियात के हज़ारों सामान ऐसे हैं कि बिग़ैर लोहे के तय्यार ही नहीं हो सकते। इस लिये कुरआने मजीद में फ़रमाया गया है कि وَمَنَافِعُ لِلنَّاسِ कि इस "लोहे" में लोगों के लिये बेशुमार फ़वाइद व मनाफ़ेअ़ हैं। बहर हाल लोहा ख़ुदावन्दे तआ़ला की ने'मतों में से एक बहुत बड़ी ने'मत है। लिहाज़ा लोहे का हर सामान देख कर ख़ुदावन्दे कुद्दूस की इस ने'मत का शुक्र अदा करना चाहिये। (واللہ تعالٰی اعلم)

﴾60﴿ सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की सख़ावत

हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि एक सहाबी ने बतौरे हदिय्या एक सहाबी के घर बकरी का एक सर भेज दिया तो इन्हों ने येह कह कर कि मुझ से ज़ियादा तो मेरा फ़ुलां भाई इस सर का ज़रूरत मन्द है। वोह सर उस के घर भेज दिया तो उस ने कहा कि मेरा फ़ुलां भाई मुझ से भी ज़ियादा मोह़ताज है। येह कहा और वोह सर उस सहाबी के घर भेज दिया। इसी तरह एक ने दूसरे के घर और दूसरे ने तीसरे के घर उस सर को भेज दिया यहां तक कि जब येह सर छटे सहाबी के पास पहुंचा तो उन्हों ने सब से पहले वाले के घर येह कह कर भेज दिया कि वोह हम से ज़ियादा मुफ़्लिस और ह़ाजत मन्द हैं इस तरह वोह सर जिस घर से सब से पहले भेजा गया था फिर उसी घर में वापस आ गया। इस मौक़अ़ पर सूरए ह़श्र की मुन्दरिजए ज़ैल आयत नाज़िल हुई जिस में अल्लाह جَلَّ جَلَالُہٗ ने सहाबए किराम की सख़ावत का ख़ुत़बा इरशाद फ़रमाया है :

وَيُؤْثِرُونَ عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ وَلَوْ كَانَ بِهِمْ خَصَاصَةٌ ۗ وَمَنْ يُّوْقَ شُحَّ نَفْسِهٖ
فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿۹﴾ (پ۲۸،الحشر:۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :– और अपनी जानों पर उन को तरजीह़ देते हैं अगर्चे इन्हें शदीद मोह़ताजी हो और जो अपने नफ़्स के लालच से बचाया गया तो वोही कामयाब हैं।

येह तो ज़मानए रिसालत का एक ह़ैरत अंगेज़ वाक़िआ़ था। अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के अ़हदे ख़िलाफ़त में तक़रीबन इसी क़िस्म का एक वाक़िआ़ पेश आया जो इ़ब्रत ख़ेज़ और नसीह़त आमोज़ होने में पहले वाक़िए़ से कम नहीं। चुनान्चे, मन्क़ूल है कि अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने चार सो दीनार एक थेली में बन्द कर के अपने ग़ुलाम को हुक्म दिया कि येह थेली ह़ज़रते अबू उ़बैदा बिन अल जर्राह़ की ख़िदमत में पेश कर दो और फिर तुम घर में उस वक़्त तक ठहरे रहो कि तुम देख लो कि वोह इस थेली का क्या करते हैं ? चुनान्चे, ग़ुलाम थेली ले कर ह़ज़रते अबू उ़बैदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के पास पहुंचा और अ़र्ज़ किया कि ह़ज़रते अमीरुल

मोअमिनीन ने येह दीनारों की थेली आप के पास भेजी है और फ़रमाया है कि आप इस को अपनी ह़ाजतों में ख़र्च करें। अमीरुल मोअमिनीन का पैग़ाम सुन कर आप ने येह दुआ़ दी कि अल्लाह तआ़ला अमीरुल मोअमिनीन का भला करे। फिर अपनी लौंडी से फ़रमाया कि ऐ ख़ादिमा ! येह सात दीनार फ़ुलां को दे आओ और येह पांच दीनार फ़ुलां को। इसी त़रह़ इन्हों ने एक ही निशस्त में तमाम दीनारों को ह़ाजत मन्दों में तक़्सीम करा दिया। सिर्फ़ दो दीनार इन के सामने रह गए थे तो इन्हों ने फ़रमाया कि ऐ लौंडी ! येह दो दीनार भी फ़ुलां ज़रूरत मन्द को दे दो।

येह माजरा देख कर ग़ुलाम अमीरुल मोअमिनीन के पास वापस आ गया तो अमीरुल मोअमिनीन ने चार सो दीनार की दूसरी थेली ह़ज़रते मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास भेजी और ग़ुलाम से फ़रमाया कि तुम उस वक़्त तक उन के घर में बैठे रहना और देखते रहना कि वोह इस थेली के साथ क्या मुआ़मला करते हैं। चुनान्चे, ग़ुलाम ह़ज़रते मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास थेली ले कर पहुंचा तो ह़ज़रते मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अमीरुल मोअमिनीन का तोह़फ़ा और पैग़ाम पाने के बा'द येह कहा कि अल्लाह तआ़ला अमीरुल मोअमिनीन पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमाए और उन को नेक बदला दे फिर फ़ौरन ही अपनी लौंडी को हुक्म दिया कि फ़ुलां फ़ुलां सह़ाबा के घरों में इतनी इतनी रक़म पहुंचा दो। सिर्फ़ दो दीनार बाक़ी रह गए थे कि ह़ज़रते मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बीवी आ गईं और कहा कि ख़ुदा की क़सम ! हम लोग भी तो मुफ़्लिस और मिस्कीन ही हैं। येह सुन कर वोह दीनार जो बाक़ी रह गए थे बीवी की त़रफ़ फेंक दिये। येह मन्ज़र देख कर ग़ुलाम अमीरुल मोअमिनीन की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो गया और सारा चश्मदीद माजरा सुनाने लगा। अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते अबू उ़बैदा और ह़ज़रते मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا की इस सख़ावत व ऊलुल अ़ज़्मी की दास्तान को सुन कर फ़र्ते़ तअ़ज्जुब से इन्तिहाई मसरूर हुवे और फ़रमाया कि इस में कोई शुबा नहीं कि सह़ाबए किराम यक़ीनन आपस में भाई भाई हैं और एक दूसरे पर इन्तिहाई रह़्म दिल और आपस में बेह़द हमदर्द हैं।

हज़रते बीबी आइशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا और दूसरे सहाबए किराम से भी येह रिवायत मन्क़ूल है। (تفسیر صاوی، ج۵، ص ۱۴۹۴، پ۲۶، الحجرات:۱۱)

एक ह़दीष में है कि आयते मज़्कूरए बाला का नुज़ूल इस वाक़िए के बा'द हुवा कि बारगाहे नबुव्वत में एक भूका शख़्स ह़ाज़िर हुवा। हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अज़्वाजे मुत़ह्हरात के हुजरों में मा'लूम कराया कि क्या खाने की कोई चीज़ है? मा'लूम हुवा कि किसी बीबी साह़िबा के यहां कुछ भी नहीं है तब हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अस्ह़ाबे किराम से फ़रमाया कि जो इस शख़्स को मेहमान बनाए **अल्लाह** तआला उस पर रह़मत फ़रमाए। हज़रते अबू त़लह़ा अन्सारी खड़े हो गए और हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से इजाज़त ले कर मेहमान को अपने घर ले गए।

घर जा कर बीवी से दरयाफ़्त किया कि घर में कुछ खाना है? उन्हों ने कहा कि सिर्फ़ बच्चों के लिये थोड़ा सा खाना है। हज़रते अबू त़लह़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया कि बच्चों को बहला फुसला कर सुला दो। और जब मेहमान खाने बैठे तो चराग़ दुरुस्त करने के लिये उठो और चराग़ को बुझा दो ताकि मेहमान अच्छी त़रह़ खा ले। येह तजवीज़ इस लिये की, कि मेहमान येह न जान सके कि अहले ख़ाना उस के साथ नहीं खा रहे हैं। क्यूंकि उस को येह मा'लूम हो जाएगा तो वोह इस्रार करेगा और खाना थोड़ा है। इस लिये मेहमान भूका रह जाएगा। इस त़रह़ हज़रते अबू त़लह़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मेहमान को खाना खिला दिया और ख़ुद अहले ख़ाना भूके सो रहे। जब सुब्ह़ हुई और हुज़ूर सय्यिदे आलम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवे तो हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हज़रते अबू त़लह़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को देख कर फ़रमाया कि रात फ़ुलां फ़ुलां के घर में अजीब मुआमला पेश आया। **अल्लाह** तआला इन लोगों से बहुत राज़ी है और सूरए ह़श्र की येह आयत नाज़िल हुई। (تفسیر خزائن العرفان، ص۹۸۴، پ۲۸، الحشر:۹)

दर्से हिदायत :- येह आयते मुबारका और इस की शाने नुज़ूल के ह़ैरत नाक वाक़िआत हम मुसलमानों के लिये किस क़दर इब्रत ख़ैज़ व नसीह़त आमोज़ हैं। इस को लिखने की कोई ज़रूरत नहीं। हर शख़्स ख़ुद ही इन्साफ़ की ऐनक लगा कर इस को देख सकता है। बशर्त़ येह कि उस के दिल में बसीरत की रोशनी और आंखों में बसारत का नूर मौजूद हो। (واللّٰہ تعالٰی اعلم)

﴾61﴿ यहूदियों की जिलावत़नी

हिजरत के बा'द जब हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मदीना तशरीफ़ लाए तो आप ने मदीना और अत़राफ़े मदीना के यहूदियों से "सुल्ह़ व अ़हद" का मुआ़हदा फ़रमा लिया। मगर यहूदी अपने अ़हदो पैमान पर क़ाइम नहीं रहे बल्कि उन्हों ने हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और मुसलमानों के ख़िलाफ़ अन्दरूनी और बैरूनी साज़िशों का जाल बिछाना शुरूअ़ कर दिया। इसी दौरान यहूदियों में से क़बीलए "बनू नज़ीर" के ज़िम्मेदार अफ़राद ने एक रोज़ येह साज़िश की, कि नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से जा कर येह अ़र्ज़ करें कि हम को आप से एक ज़रूरी मश्वरा करना है और जब वोह तशरीफ़ ले आएं तो दीवार के क़रीब उन को बिठाया जाए और वोह जब गुफ़्तगू में मसरूफ़ हो जाएं तो छत के ऊपर से एक भारी पथ्थर उन के ऊपर गिरा कर उन की ज़िन्दगी का ख़ातिमा कर दिया जाए। (مَعَاذَاللّٰہِ عَزَّوَجَلَّ)

चुनान्चे, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم यहूदियों की बस्ती में तशरीफ़ ले गए। मगर अभी आप दीवार के क़रीब बैठे ही थे कि **अल्लाह** तआ़ला ने ब ज़रीअ़ए वह्य यहूदियों की साज़िश से आप को मुत़्तलअ़ कर दिया। इस लिये आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ख़ामोशी के साथ फ़ौरन वापस तशरीफ़ ले गए। इस त़रह़ यहूदियों की साज़िश नाकाम हो गई। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मदीना पहुंच कर मुह़म्मद बिन मुस्लिमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को भेजा कि वोह बनू नज़ीर के यहूदियों तक येह पैग़ाम पहुंचा दें कि चूंकि तुम लोगों ने ग़द्दारी कर के मुआ़हदा तोड़ डाला है इस लिये तुम लोगों को हुक्म दिया जाता है कि ह़िजाज़े मुक़द्दस की सर ज़मीन से जिलावत़न हो कर बाहर निकल जाओ। मुनाफ़िक़ीन ने येह सुना तो जम्अ़ हो कर बनू नज़ीर के पास पहुंचे और कहने लगे कि तुम लोग मुह़म्मद (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) के इस हुक्म को हरगिज़ तस्लीम न करो और यहां से हरगिज़ जिलावत़न न हो। हम हर त़रह़ तुम्हारे शरीके कार हैं। बनू नज़ीर ने मुनाफ़िक़ीन की पुश्त पनाही देखी तो हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का हुक्म मानने से इन्कार कर दिया। तो नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने जिहाद की तय्यारी शुरूअ़ कर दी, और ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उम्मे मकतूम को मदीने का

अमीर बना कर सहाबए किराम की एक फ़ौज ले कर बनू नज़ीर के क़ल्ए़ पर ह़म्ला आवर हो गए। यहूदी इस क़ल्ए़ में बन्द हो गए और उन्हों ने यक़ीन कर लिया कि अब मुसलमान हमारा कुछ भी नहीं बिगाड़ सकते। लेकिन हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन के क़ल्ए़ का मुह़ासरा कर लिया और फिर हुक्म दिया कि इन के दरख़्तों को काट डालो क्यूंकि मुमकिन था कि दरख़्तों के झुन्ड में छुप कर यहूदी इस्लामी लश्कर पर छापा मारते। इन ह़ालात को देख कर बनू नज़ीर के यहूदियों पर ऐसा रो'ब बैठ गया और इस क़दर ख़ौफ़ त़ारी हो गया कि वोह लरज़ उठे, और उन को मुनाफ़िक़ीन की त़रफ़ से भी ब जुज़ मायूसी और रुस्वाई के कुछ हाथ न आया, आख़िरे कार मजबूर हो कर यहूदियों ने दरख़्वास्त की, कि हम लोगों को जिलावत़न होने का मौक़अ़ दिया जाए। चुनान्चे, उन लोगों को इजाज़त दी गई कि सामाने जंग के इ़लावा जिस क़दर सामान भी वोह ऊंटों पर लाद कर ले जाना चाहते हैं, ले जाएं। चुनान्चे, बनू नज़ीर के यहूदी छे सो ऊंटों पर अपना माल व सामान लाद कर एक जुलूस की शक्ल में गाते बजाते मदीने से निकले और कुछ तो "ख़ैबर" चले गए और ज़ियादा ता'दाद में मुल्के शाम जा कर "अज़्रआ़त" और "अरीह़ा" में आबाद हो गए और चलते वक़्त यहूदियों ने अपने मकानों को गिरा कर बरबाद कर दिया ताकि मुसलमान इन मकानों से फ़ाइदा न उठा सकें।

(مدارج النبوت، بحث غزوۂ بنی نضیر، ج۲، ص ۱۴۷ـ۱۴۸)

अल्लाह तआ़ला ने बनू नज़ीर के यहूदियों की इस जिलावत़नी का ज़िक्र कुरआने मजीद की सूरए ह़श्र में इस त़रह़ फ़रमाया है कि

هُوَ الَّذِیْۤ اَخْرَجَ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ مِنْ دِیَارِهِمْ لِاَوَّلِ
الْحَشْرِ ؕؔ مَا ظَنَنْتُمْ اَنْ یَّخْرُجُوْا وَ ظَنُّوْۤا اَنَّهُمْ مَّانِعَتُهُمْ حُصُوْنُهُمْ مِّنَ اللّٰهِ
فَاَتٰىهُمُ اللّٰهُ مِنْ حَیْثُ لَمْ یَحْتَسِبُوْا ۗ وَ قَذَفَ فِیْ قُلُوْبِهِمُ الرُّعْبَ
یُخْرِبُوْنَ بُیُوْتَهُمْ بِاَیْدِیْهِمْ وَ اَیْدِی الْمُؤْمِنِیْنَ ۗ فَاعْتَبِرُوْا یٰۤاُولِی
الْاَبْصَارِ ۝۲ (پ۲۸، الحشر:۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- वोही है जिस ने उन काफ़िर किताबियों को उन के घरों से निकाला उन के पहले हश्र के लिये तुम्हें गुमान न था कि वोह निकलेंगे और वोह समझते थे कि उन के क़ल्ए़ उन्हें अल्लाह से बचा लेंगे तो अल्लाह का हुक्म उन के पास आया जहां से उन का गुमान भी न था और उस ने उन के दिलों में रो'ब डाला कि अपने घर वीरान करते हैं अपने हाथों और मुसलमानों के हाथों तो इ़ब्रत लो ऐ निगाह वालो।

दर्से हिदायत :- यहूदियों की क़ौम अपने रिवायती ह़सद व बुग़्ज़ और तारीख़ी मुनाफ़क़त में हमेशा से मश्हूर है। ख़ास कर ग़द्दारी और बद अ़हदी तो इन का क़ौमी ख़ास्सा है इस के इ़लावा इन बद बख़्तों का ज़ुल्म भी ज़रबुल मषल है। यहां तक कि इन लोगों ने बहुत से अम्बियाए किराम को क़त्ल कर दिया। दरां ह़ाल येह कि इन बद बख़्तों को येह ए'तिराफ़ था कि हम इन को नाह़क़ क़त्ल कर रहे हैं। ख़ुदावन्दे क़ुद्दूस ने इन की बद अ़हदियों और वा'दा शिकनियों का क़ुरआने मजीद में बार बार ज़िक्र फ़रमा कर मुसलमानों को मुतनब्बेह फ़रमाया है कि यहूदियों के अ़हद व मुआ़हदे पर हरगिज़ हरगिज़ मुसलमानों को भरोसा नहीं करना चाहिये और हमेशा इन बद बख़्तों की मक्कारियों और दसीसा कारियों से होशियार रहना चाहिये।

और बद अ़हदी और अ़हद शिकनी के येह ख़बीष ख़साइल और बद तरीन शरारतों के घिनावने रज़ाइल ज़मानए दराज़ से आज तक ब दस्तूर यहूदियों में मौजूद हैं जैसा कि इस दौर में भी देखा जा सकता है कि येह लोग आज कल इसराईल की ग़ासिबाना ह़ुकूमत बना कर फ़िलिस्त़ीनी अ़रबों के साथ क्या कर रहें हैं? और अमरीका के यहूदी किस त़रह़ इन की बद अ़हदियों पर इन की पीठ ठोंक कर ख़ुद इतरा रहे हैं, और इसराईली ह़ुकूमत का ह़ौसला बढ़ा रहे हैं, ह़ालांकि पूरी दुन्या इसराईल और अमरीका पर ला'नत व मलामत कर रही है मगर इन बे ईमान बे ह़याओं की शर्मो ह़या इस त़रह़ ग़ारत हो चुकी है कि इन ज़ालिमों को इस का कोई एह़सास ही नहीं है। फ़िलिस्त़ीनी अ़रब तो ज़ाहिर है कि अमरीका जैसी त़ाक़त का मुक़ाबला नहीं कर सकते, मगर हम नाउम्मीद नहीं हैं और क़ुरआनी वा'दों से पुर उम्मीद हैं कि ان شاء اللہ تعالٰی ब दस्तूरे साबिक़ इन लोगों को कोई न कोई अ़ज़ाबे इलाही तो ज़रूर हलाक व बरबाद फ़रमा देगा।

﴾62﴿ एक अ़जीब वज़ीफ़ा

मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि औ़फ़ बिन मालिक अशजई رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के एक फ़रज़न्द को जिन का नाम "सालिम" था, मुशरिकों ने गिरिफ़्तार कर लिया तो औ़फ़ बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हुवे और अपनी मुफ़्लिसी व फ़ाक़ा मस्ती की शिकायत करते हुवे येह अ़र्ज़ किया कि मुशरिकों ने मेरे बच्चे को गिरिफ़्तार कर लिया है, जिस के सदमे से उस की मां बेह़द परेशान है तो इस सिलसिले में अब मुझे क्या करना चाहिये ? तो हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि तुम सब्र करो और परहेज़गारी की ज़िन्दगी बसर करो और तुम भी ब कषरत وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّۃَ اِلَّا بِاللّٰہِ الْعَلِیِّ الْعَظِیْم पढ़ा करो और बच्चे की मां को भी ताकीद कर दो कि वोह भी कषरत से इस वज़ीफ़े का ज़िक्र करती रहें। येह सुन कर औ़फ़ बिन मालिक अशजई अपने घर चले गए और अपनी बीवी को येह वज़ीफ़ा बता दिया। फिर दोनों मियां बीवी इस वज़ीफ़े को ब कषरत पढ़ने लगे।

इसी दरमियान में वज़ीफ़े का येह अषर हुवा कि एक दिन मुशरिकीन "सालिम" की त़रफ़ से ग़ाफ़िल हो गए चुनान्चे, मौक़अ़ पा कर ह़ज़रते सालिम मुशरिकों की क़ैद से निकल भागे और चलते वक़्त मुशरिकों की चार हज़ार बकरियां और पचास ऊंटों को भी हांक कर साथ लाए और अपने घर पहुंच कर दरवाज़ा खट-खटाया। मां बाप ने दरवाज़ा खोला तो ह़ज़रते सालिम मौजूद थे, मां बाप बेटे की नागहां मुलाक़ात से बेह़द खुश हुवे और औ़फ़ बिन मालिक अशजई رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को अपने बेटे की सलामती के साथ क़ैद से रिहाई की ख़बर सुनाई और येह फ़तवा दरयाफ़्त किया कि मुशरिकीन की येह बकरियां और ऊंट हमारे लिये ह़लाल हैं या नहीं ? तो हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन को इजाज़त दे दी कि वोह ऊंटों और बकरियों को जिस त़रह़ चाहें इस्ति'माल करें। (تفسیر خزائن العرفان، ص۱۰۰۴، پ۲۸، الطلاق:۲)

और इस के बा'द मुन्दरिजए ज़ैल आयत नाज़िल हुई कि :

وَمَنْ يَّتَّقِ اللّٰهَ يَجْعَلْ لَّهٗ مَخْرَجًا ۙ﴿۲﴾ وَّ يَرْزُقْهُ مِنْ حَيْثُ لَا يَحْتَسِبُ ؕ وَمَنْ يَّتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ فَهُوَ حَسْبُهٗ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بَالِغُ اَمْرِهٖ ؕ قَدْ جَعَلَ اللّٰهُ لِكُلِّ شَیْءٍ قَدْرًا ﴿۳﴾ (پ۲۸،الطلاق:۲۔۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- और जो **अल्लाह** से डरे **अल्लाह** उस के लिये नजात की राह निकाल देगा और उसे वहां से रोज़ी देगा जहां उस का गुमान न हो और जो **अल्लाह** पर भरोसा करे तो वोह उसे काफ़ी है बेशक **अल्लाह** अपना काम पूरा करने वाला है बेशक **अल्लाह** ने हर चीज़ का एक अन्दाज़ा रखा है ।

हदीष शरीफ़ में आया है कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया है कि एक ऐसी आयत जानता हूं कि अगर लोग इस आयत को ले लें तो येह आयत लोगों को काफ़ी हो जाएगी । और वोह आयत येह है وَمَنْ يَّتَّقِ اللّٰهَ से आख़िर आयत तक । (تفسیر صاوی،ج۶، ص۲۱۸۲، پ۲۸، الطلاق:۳)

हिकायते अ़जीबा :- अ़ल्लामा अजहूरी ने अपनी किताब "फ़ज़ाइले रमज़ान" में तहरीर फ़रमाया है कि एक मरतबा कुछ लोग समुन्दर में कश्ती पर सुवार हो कर सफ़र कर रहे थे तो समुन्दर में से एक आवाज़ देने वाले की आवाज़ आई मगर उस की सूरत नहीं दिखाई पड़ी । उस ने कहा कि अगर कोई शख़्स मुझे दस हज़ार दीनार दे दे तो मैं उस को एक ऐसा वज़ीफ़ा बता दूंगा कि अगर वोह हलाकत के क़रीब पहुंच गया हो और इस वज़ीफ़े को पढ़ ले तो तमाम बलाएं और हलाकतें टल जाएंगी । तो कश्ती वालों में से एक ने बुलन्द आवाज़ से कहा कि आओ मैं तुझ को दस हज़ार दीनार देता हूं तू मुझे वोह वज़ीफ़ा बता दे तो आवाज़ आई कि तू दीनारों को समुन्दर में डाल दे । मुझे मिल जाएंगे ।

चुनान्चे, कश्ती वाले ने दस हज़ार दीनारों को समुन्दर में डाल दिया तो उस ग़ैबी आवाज़ वाले ने कहा कि वोह वज़ीफ़ा وَمَنْ يَّتَّقِ اللّٰهَ आख़िर तक है तुझ पर जब कोई मुसीबत पड़े तो इस को पढ़ लिया करो ।

येह सुन कर कश्ती के सब सुवारों ने उस का मज़ाक़ उड़ाया और कहा कि तूने दस हज़ार दीनारों की कषीर दौलत ज़ाएअ़ कर दी तो उस ने जवाब दिया कि हरगिज़ हरगिज़ मैं ने अपनी दौलत को ज़ाएअ़ नहीं किया है और मुझे इस में कोई शुबा नहीं है कि येह क़ुरआन शरीफ़ की आयत ज़रूर नफ़अ़ बख़्श होगी। इस के बा'द चन्द दिन कश्ती चलती रही। फिर अचानक तूफ़ान की मौजों से कश्ती टूट कर बिखर गई और सिवाए इस आदमी के कश्ती का कोई आदमी भी ज़िन्दा नहीं बचा। येह कश्ती के एक तख़्ते पर बैठा हुवा समुन्दर में बहता चला जा रहा था यहां तक कि एक जज़ीरे में उतर पड़ा। और चन्द क़दम चल कर येह देखा कि शान्दार मह़ल बना हुवा है और हर क़िस्म के मोती और जवाहिरात वहां पड़े हुवे हैं। और इस मह़ल में एक बहुत ही ह़सीन औ़रत अकेली बैठी हुई हैं और हर क़िस्म के मेवे और खाने के सामान वहां रखे हुवे हैं। उस औ़रत ने उस से पूछा :

"कि तुम कौन हो और कैसे यहां पहुंच गए ?"

तो उस ने औ़रत से पूछा कि :

"तुम कौन हो और यहां क्या कर रही हो ?"

तो उस औ़रत ने अपना क़िस्सा सुनाया कि मैं बसरा के एक अ़ज़ीम ताजिर की बेटी हूं मैं अपने बाप के साथ समुन्दरी सफ़र में जा रही थी कि हमारी कश्ती टूट गई और मुझे कोई अचानक कश्ती में से उचक कर ले भागा। और मैं इस जज़ीरे में इस मह़ल के अन्दर उस वक़्त से पड़ी हूं। एक शैत़ान है जो मुझे इस मह़ल में ले आया है वोह हर सातवें दिन यहां आता है और मेरे साथ सोह़बत तो नहीं करता मगर बोसो कनार करता है। और आज उस के यहां आने का दिन है। लिहाज़ा तुम अपनी जान बचा कर यहां से भाग जाओ वरना वोह आ कर तुम पर ह़म्ला कर देगा। अभी उस औ़रत की गुफ़्त्गू ख़त्म भी नहीं हुई थी कि एक दम अन्धेरा छा गया तो औ़रत ने कहा कि जल्दी भाग जाओ वोह आ रहा है वरना वोह तुम को ज़रूर हलाक कर देगा। चुनान्चे, वोह आ गया और

येह शख़्स खड़ा रहा मगर जूं ही शैतान इस को दबोचने के लिये आगे बढ़ा तो इस ने وَمَنْ يَّتَّقِ اللّٰهَ का वज़ीफ़ा पढ़ना शुरूअ़ कर दिया तो शैतान ज़मीन पर गिर पड़ा। और इस ज़ोर की आवाज़ आई कि गोया पहाड़ का कोई टुकड़ा टूट कर गिर पड़ा है और फिर वोह शैतान जल कर राख का ढेर हो गया। येह देख कर औ़रत ने कहा कि अल्लाह तआ़ला ने तुम को फ़िरिश्तए रह़मत बना कर मेरे पास भेज दिया है। तुम्हारी बदौलत मुझे इस शैतान से नजात मिली। फिर उस औ़रत ने इस मर्द से कहा कि इन मोती जवाहिरात को उठा लो और इस मह़ल से निकल कर मेरे साथ समुन्दर के कनारे चलो और कोई कश्ती तलाश कर के यहां से निकल चलो। चुनान्चे, बहुत से मोती व जवाहिरात और फल वग़ैरा खाने का सामान ले कर दोनों मह़ल से निकले और समुन्दर के कनारे पहुंचे तो एक कश्ती "बसरा" जा रही थी। दोनों उस पर सुवार हो कर बसरा पहुंचे। लड़की के वालिदैन अपनी गुमशुदा लड़की को पा कर बेहद ख़ुश हुवे और इस मर्द के ममनून हो कर इस को बहुत इ़ज़्ज़त व एह़तिराम के साथ अपने घर मेहमान रखा। फिर लड़की के वालिदैन ने पूरी सरगुज़श्त सुन कर दोनों का निकाह़ कर दिया और दोनों मियां बीवी बन कर रहने लगे। और तमाम मोती व जवाहिरात जो दोनों जज़ीरे से लाए थे, वोह दोनों की मुश्तरका दौलत बन गई और उस औ़रत से ख़ुदावन्दे तआ़ला ने इस मर्द को चन्द अवलाद भी दी और वोह दोनों बहुत ही मह़ब्बत व उल्फ़त के साथ ख़ुशहा़ल ज़िन्दगी बसर करने लगे।

(تفسیر صاوی، ج۶، ص۲۱۸۳، پ۲۸، الطلاق:۲)

दर्से हिदायत :- इस वाक़िए़ से मा'लूम हुवा कि आ'माल व वज़ाइफ़े क़ुरआनी में बड़ी बड़ी ताषीरात हैं। मगर शर्त़ येह है कि अ़क़ीदा दुरुस्त हो और आ'माल को सह़ीह़ त़रीक़े से पढ़ा जाए और ज़बान गुनाहों की आलूदगी और लुक़्मए ह़राम से मह़फ़ूज़ और पाक व साफ़ हो और अ़मल में इख़्लासे निय्यत और शराइत़ की पूरी पूरी पाबन्दी भी हो। तो ان شاء اللہ تعالٰی क़ुरआनी आ'माल से बड़ी बड़ी और अ़जीब अ़जीब ताषीरात का ज़ुहूर होगा। जिस की एक मिषाल आप ने पढ़ ली।(واللہ تعالٰی اعلم)

﴾63﴿ पांच मश्हूर और पुराने बुत

हज़रते नूह عَلَيْهِ السَّلَام की क़ौम बुत परस्त हो गई थी। और इन लोगों के पांच बुत बहुत मश्हूर थे जिन की पूजा करने पर पूरी क़ौम निहायत ही इस्रार के साथ कमरबस्ता थी और इन पांचों बुतों के नाम येह थे :
﴾1﴿ वद्द ﴾2﴿ सुवाअ़ ﴾3﴿ यग़ूष ﴾4﴿ यऊ़क़ ﴾5﴿ नस्र

हज़रते नूह عَلَيْهِ السَّلَام जो बुत परस्ती के ख़िलाफ़ वा'ज़ फ़रमाया करते थे तो इन की क़ौम इन के ख़िलाफ़ हर कूचा व बाज़ार में चरचा करती फिरती थी और हज़रते नूह عَلَيْهِ السَّلَام को त़रह त़रह की ईज़ाएं दिया करती थी। चुनान्चे, क़ुरआने मजीद का बयान है कि :

وَقَالُوْا لَا تَذَرُنَّ اٰلِهَتَكُمْ وَلَا تَذَرُنَّ وَدًّا وَّلَا سُوَاعًا ۙ۬ وَّلَا يَغُوْثَ وَيَعُوْقَ وَنَسْرًا ﴿۲۳﴾ۚ وَقَدْ اَضَلُّوْا كَثِيْرًا ۬ۚ (پ۲۹،نوح:۲۳،۲۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- और बोले हरगिज़ न छोड़ना अपने ख़ुदाओं को और हरगिज़ न छोड़ना वद्द और न सुवाअ़ और यग़ूष और यऊ़क़ और नस्र को और बेशक उन्हों ने बहुतों को बहकाया।

येह पांचों बुत कौन थे ? इन के बारे में हज़रते उ़र्वा बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا का बयान है कि हज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام के येह पांचों फ़रज़न्द थे जो निहायत ही दीनदार व इ़बादत गुज़ार थे और लोग इन पांचों के बहुत ही मुहि़ब्ब व मो'तक़िद थे। जब इन पांचों की वफ़ात हो गई तो लोगों को बड़ा रंज व सदमा हुवा तो शैत़ान ने इन लोगों की ता'ज़िय्यत करते हुवे यूं तसल्ली दी कि तुम लोग इन पांचों सालिह़ीन का मुजस्समा बना कर रख लो और इन को देख देख कर अपने दिलों को तस्कीन देते रहो। चुनान्चे, पीतल और सीसे के मुजस्समे बना बना कर इन लोगों ने अपनी अपनी मस्जिदों में रख लिये। कुछ दिनों तक तो लोग इन मुजस्समों की ज़ियारत करते रहे फिर लोग इन बुतों की इ़बादत करने लगे और ख़ुदापरस्ती छोड़ कर बुत परस्ती करने लगे। (تفسیر صاوی، ج۶، ص۲۲۴۵،پ۲۹، نوح:۲۳)

हज़रते नूह عَلَيْهِ السَّلَام साढ़े नव सो बरस तक इन लोगों को वा'ज़ सुना सुना कर इस बुत परस्ती से मन्अ़ फ़रमाते रहे। बिल आख़िर तूफ़ान में ग़र्क़ हो कर सब हलाक हो गए मगर शैत़ान अपनी इस चाल से बाज़ नहीं आया और हर दौर में अपने वस्वसों के जादू से लोगों को इस त़ौर पर बुत परस्ती सिखाता रहा कि लोग अपने सालिह़ीन की तस्वीरें और मुजस्समे बना कर पहले तो कुछ दिनों तक इन की ज़ियारत करते रहे और इन के दीदार से अपना दिल बहलाते रहे। फिर रफ़्ता रफ़्ता इन तस्वीरों और मुजस्समों की इ़बादत करने लगे। इस त़रह़ शिर्क व बुत परस्ती की ला'नत में दुन्या गिरिफ़्तार हो गई और ख़ुदा परस्ती और तौह़ीदे ख़ालिस का चराग़ बुझने लगा जिस को रोशन करने के लिये अम्बियाए साबिक़ीन यके बा'द दीगरे बराबर मबऊ़ष होते रहे। यहां तक कि हमारे हु़ज़ूर ख़ातिमुन्नबिय्यीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने हमेशा के लिये बुत परस्ती की जड़ इस त़रह़ काट दी कि आप ने तस्वीरों और मुजस्समों का बनाना ही ह़राम फ़रमा दिया और हुक्म सादिर फ़रमा दिया कि तसावीर और मुजस्समे हरगिज़ हरगिज़ कोई शख़्स किसी आदमी तो आदमी किसी जानदार के भी न बनाए और जो पहले से बन चुके हैं उन को जहां भी देखो फ़ौरन मिटा कर और तोड़ फोड़ कर तबाहो बरबाद कर दो ताकि न रहेगा बांस न बजेगी बांसरी।

दर्से हिदायत :- आज कल मैं ने देखा है कि बहुत से पीरों के मुरीदीन ने अपने पीरों की तस्वीरों को चोखटों में बन्द कर के अपने घरों में रख छोड़ा है और ख़ास ख़ास मौक़ओं पर इस की ज़ियारत करते कराते रहते हैं बल्कि बा'ज़ तो इन तस्वीरों पर फूल मालाएं चढ़ा कर अगरबत्ती भी सुलगाया करते हैं और इस के धूएं को अपने बदन पर मला करते हैं। अगर येह लोग अपनी इन ख़ुराफ़ात से बाज़ न रहे और उ़-लमाए अहले सुन्नत ने इस के ख़िलाफ़ अ़लमे मुख़ालफ़त न बुलन्द किया तो अन्देशा है कि शैत़ान का पुराना ह़र्बा और उस की शैत़ानी चाल का जादू मुसलमानों पर चल जाएगा और आने वाली नस्लें इन तस्वीरों की इ़बादत करने लगेंगी। ख़ूब कान खोल कर सुन लो कि

हुज़ूर ख़ातिमुन्नबिय्यीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने बुत परस्ती के जिस दरख़्त की जड़ों को काट दिया था। आज कल के येह जाहिल बिदअ़ती पीर और इन के तवह्हुम परस्त मुरीदीन बुत परस्ती की इन जड़ों को सींच सींच कर फिर शिर्क व बुत परस्ती के दरख़्त को हरा भरा और तनावर बना रहे हैं। आज कल के जाहिल और दुन्यादार पीरों से तो क्या उम्मीद की जा सकती है कि वोह इस के ख़िलाफ़ ज़बान खोलेंगे। मगर हां हक़ परस्त और हक़ गो उ़–लमाए अहले सुन्नत से बहुत कुछ उम्मीदें वाबस्ता हैं कि वोह इन के ख़िलाफ़े शरअ़ आ'माल व अफ़्आ़ल के ख़िलाफ़ ان شاءاللہ تعالٰی ज़रूर अ़लमे जिहाद बुलन्द करेंगे क्यूंकि तारीख़ गवाह है कि हर उस मौक़अ़ पर जब कि इस्लाम की कश्ती गुमराहियों के भंवर में डगमगाने लगी है तो उ़–लमाए अहले सुन्नत ही ने अपनी जान पर खेल कर कश्तिये इस्लाम की नाख़ुदाई की है। और आख़िर तूफ़ानों का रुख़ मोड़ कर इस्लाम की कश्ती को ग़र्क़आब होने से बचा लिया है।

मगर इस ज़माने में इस का क्या इलाज है ? कि इन बे शरअ़ पीरों और मक्कार बाबाओं ने चन्द रूपियों के बदले कुछ मौलवियों को ख़रीद लिया है और येह मौलवी साहिबान इन बे शरअ़ पीरों और मक्कार बाबाओं को "मजज़ूब" या "फ़िर्क़ए मलामतिय्या" का ख़ूब सूरत लुबादा ओढ़ा कर ख़ूब ख़ूब इन के कश्फ़ व करामत का डंका बजा रहे हैं। और इन बाबाओं के नजराने से अपनी मुठ्ठी गर्म कर रहे हैं और अगर कोई हक़ गो आ़लिम इन लोगों के ख़िलाफ़ कोई कलिमा कह दे तो बाबा लोग अपने दादाओं को बुला कर उस आ़लिम की मरम्मत करा दें और इन के ज़रख़रीद मौलवी अपनी मुख़ालफ़ाना तक़रीरों की बोछाड़ से बे चारे हक़ गो आ़लिम की ज़िन्दगी दूभर कर दें। मैं ने बारहा उ़–लमाए अहले सुन्नत को पुकारा और ललकारा कि लिल्लाह उठो और हक़ के लिये कमरबस्ता हो कर कम अज़ कम इतना तो कर दो कि मुत्तफ़िक़ा फ़तवे के ज़रीए़ येह ए'लान कर दो कि येह दाढ़ी मुन्डे, ऊल फ़ूल बकने वाले, गंजेड़ी, तारिके सौमो सलात, बे शरअ़ बाबा लोग फ़ासिक़े मो'लिन हैं। जो ख़ुद गुमराह और मुसलमानों के लिये गुमराह कुन हैं और इन लोगों को विलायत व

करामत से दूर का भी कोई वासिता नहीं। मगर अफ़्सोस कि एक मौलवी भी मुझ आ़जिज़ की आवाज़ पर लब्बैक कहने वाला नहीं मिला। बल्कि पता येह चला कि हर बाबा की झोली में कोई न कोई मौलवी छुपा हुवा है। जिस के ख़िलाफ़ कुछ कहना ख़त़रे से ख़ाली नहीं। क्यूंकि जो भी इन बाबाओं के ख़िलाफ़ ज़बान खोलेगा उन नज़राना ख़ोर मौलवियों की काऊं काऊं और चाऊं चाऊं में उस की मिट्टी पलीद हो जाएगी।

فیا اسفاہ ویاحسرتاہ اِنَّا لِلّٰہِ وَاِنَّآ اِلَیْہِ رَاجِعُوْنَ

﴾64﴿ अबू जहल और ख़ुदा के सिपाही

अबू जहल ने हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को का'बे में नमाज़ पढ़ने से मन्अ़ किया था और वोह अ़लानिय्या कहा करता था कि अगर मैं ने मुह़म्मद (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) को नमाज़ पढ़ते देखा तो अपने पाउं से उन की गर्दन कुचल दूंगा और उन का चेहरा ख़ाक में मिला दूंगा। चुनान्चे, वोह अपने इस फ़ासिद इरादे से एक बार हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को नमाज़ पढ़ते देख कर आप के क़रीब आया, अचानक उल्टे पाउं भागा। हाथ आगे बढ़ाए हुवे जैसे कोई किसी मुसीबत को रोकने के लिये हाथ आगे बढ़ाता है चेहरे का रंग उड़ गया, और बदन की बोटी बोटी कांपने लगी। इस के साथियों ने पूछा कि तुम्हारा क्या ह़ाल है? तो कहने लगा कि मेरे और मुह़म्मद (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) के दरमियान एक ख़न्दक़ है जिस में आग भरी हुई है और कुछ दहशत नाक परन्द बाज़ू फेलाए हुवे हैं। उस से मैं इस क़दर ख़ौफ़ज़दा हो गया कि आगे नहीं बढ़ सका और हांपते कांपते किसी त़रह़ जान बचा कर भागा।

नमाज़ के बा'द हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि अगर अबू जहल मेरे क़रीब आता तो फ़िरिश्ते उस का एक एक उ़ज़्व जुदा कर देते।

मगर इस के बा'द भी अबू जहल अपनी ख़बासत से बाज़ नहीं आया और हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को नमाज़ पढ़ने से मन्अ़ करने लगा। इस पर हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उसे सख़्ती से झिड़क दिया तो अबू जहल ने ग़ुस्से में भर कर कहा कि आप मुझे झिड़कते हैं? ह़ालांकि आप को मा'लूम है कि मक्का में मुझ से ज़ियादा जथ्थे वाला और मुझ से बड़ी मजलिस वाला कोई नहीं है। ख़ुदा की क़सम! मैं आप के मुक़ाबले

में सुवारों और पैदलों से इस मैदान को भर दूंगा। उस की इस धमकी के जवाब में सूरए "अ़लक़" या'नी सूरए इक़रा की येह आयत नाज़िल हुई।

(تفسیر خزائن العرفان،ص۱۰۷۷، پ۳۰، علق، رکوع:۱).

खुदावन्दे क़ुद्दूस ने इरशाद फ़रमाया।

كَلَّا لَئِنْ لَّمْ يَنْتَهِ ۙ۬ لَنَسْفَعًۢا بِالنَّاصِيَةِ ﴿۱۵﴾ۙ نَاصِيَةٍ كَاذِبَةٍ خَاطِئَةٍ ﴿۱۶﴾ۚ
فَلْيَدْعُ نَادِيَهٗ ﴿۱۷﴾ۙ سَنَدْعُ الزَّبَانِيَةَ ﴿۱۸﴾ۙ (پ۳۰،العلق:۱۵۔۱۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- हां हां अगर बाज़ न आया तो हम ज़रूर पेशानी के बाल पकड़ कर खींचेंगे कैसी पेशानी झूटी ख़ताकार अब पुकारे अपनी मजलिस को अभी हम सिपाहियों को बुलाते हैं।

ह़दीष शरीफ़ में है कि अगर अबू जह्ल अपनी मजलिस वालों को बुलाता तो फ़िरिश्ते इस को बिल ए'लान गिरिफ़्तार कर लेते और वोह "ज़बानिय्या" की गिरिफ़्त से बच नहीं सकता था।

(تفسیر خزائن العرفان،ص۱۰۷۷، پ۳۰، علق:۱۸)

दर्से हिदायत :- अबू जह्ल जब तक ज़िन्दा रहा। हमेशा हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की दुश्मनी व ईज़ा रसानी पर कमरबस्ता रहा। और दूसरों को भी इस पर उक्साता रहा। आख़िर क़हरे खुदावन्दी में गिरिफ़्तार हुवा कि जंगे बद्र के दिन दो लड़कों के हाथ से ज़िल्लत के साथ क़त्ल हुवा और उस की लाश बे गोरो कफ़न बद्र के गढ़े में फेंक दी गई। इस तरह़ तमाम दुश्मनाने रसूल त़रह़ त़रह़ के अ़ज़ाबों में मुब्तला हो कर हलाक व बरबाद हो गए। سُبْحٰنَ اللّٰه

मिट गए मिटते हैं मिट जाएंगे आ'दा तेरे
न मिटा है न मिटेगा कभी चर्चा तेरा
तू घटाए से किसी के न घटा है न घटे
जब बढ़ाए तुझे अल्लाह तआ़ला तेरा
अ़क़्ल होती तो खुदा से न लड़ाई लेते
येह घटाएं उसे मन्ज़ूर बढ़ाना तेरा

(ह़दाइक़े बख़्शिश, हिस्सा अव्वल, स. 27)

﴾65﴿ शबे क़द्र

शबे क़द्र बड़ी बरकत व रह़मत वाली रात है। इस रात के मरातिब व दरजात का क्या कहना कि ख़ुदावन्दे क़ुद्दूस ने इस मुक़द्दस रात के बारे में क़ुरआने मजीद की एक सूरह नाज़िल फ़रमाई है जिस में इरशाद फ़रमाया कि

إِنَّآ أَنزَلْنَٰهُ فِى لَيْلَةِ ٱلْقَدْرِ ﴿١﴾ وَمَآ أَدْرَىٰكَ مَا لَيْلَةُ ٱلْقَدْرِ ﴿٢﴾ لَيْلَةُ ٱلْقَدْرِ خَيْرٌ مِّنْ أَلْفِ شَهْرٍ ﴿٣﴾ تَنَزَّلُ ٱلْمَلَٰٓئِكَةُ وَٱلرُّوحُ فِيهَا بِإِذْنِ رَبِّهِم مِّن كُلِّ أَمْرٍ ﴿٤﴾ سَلَٰمٌ هِىَ حَتَّىٰ مَطْلَعِ ٱلْفَجْرِ ﴿٥﴾ (پ۳۰، القدر:۱۔۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- बेशक हम ने इसे शबे क़द्र में उतारा और तुम ने क्या जाना क्या शबे क़द्र? शबे क़द्र हज़ार महीनों से बेहतर इस में फ़िरिश्ते और जिब्रील उतरते हैं अपने रब के हुक्म से हर काम के लिये वोह सलामती है सुब्ह़ चमकने तक।

या'नी शबे क़द्र वोह क़द्रो मन्ज़िलत वाली रात है कि इस रात में पूरा क़ुरआने मजीद लौह़े मह़फ़ूज़ से आस्माने दुन्या पर नाज़िल किया गया और इस एक रात की इबादत एक हज़ार महीनों की इबादत से बढ़ कर अफ़्ज़ल है। इस रात में ह़ज़रते जिब्रईल عَلَيْهِ السَّلَام मलाइका के एक लश्कर के साथ आस्मान से ज़मीन पर उतरते हैं। येह रात ज़मीनो आस्मान और सारे जहान के लिये सलामती का निशान है। गुरूबे आफ़्ताब से तुलूए फ़ज्र तक इस के अन्वार व बरकात की तजल्लियां बराबर जल्वा अफ़रोज़ रहती हैं।

रिवायत है कि एक दिन हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने बनी इस्राईल के एक आ़बिद का क़िस्सा बयान फ़रमाया कि उस ने एक हज़ार महीने तक लगातार इबादत और जिहाद किया। सहाबा ने अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم आप के उम्मतियों की उ़म्रें तो बहुत कम हैं। फिर भला हम लोग इतनी इबादत क्यूंकर कर सकेंगे? सहाबा के इस अफ़सोस

पर आप कुछ फ़िक्र मन्द हो गए तो अल्लाह तआला ने येह सूरह नाज़िल फ़रमाई कि ऐ महबूब ! हम ने आप की उम्मत को एक रात ऐसी अ़ता की है कि वोह एक हज़ार महीनों से बेहतर है। (تفسیر صاوی،ج۶، ص ۲۳۹۹، پ۳۰، القدر:۳)

मोमिनों को मलाइका की सलामी :- रिवायत है कि शबे क़द्र में सिद्रतुल मुन्तहा के फ़िरिश्तों की फ़ौज ह़ज़रते जिब्रईल عَلَیْہِ السَّلَام की सरदारी में ज़मीन पर उतरती है और इन के साथ चार झन्डे होते हैं। एक झन्डा बैतुल मुक़द्दस की छत पर। और एक झन्डा का'बए मुअ़ज़्ज़मा की छत पर। और एक झन्डा तूरे सीना पर लहराते हैं और फिर येह फ़िरिश्ते मुसलमानों के घरो में तशरीफ़ ले जा कर हर उस मोमिन मर्द व औ़रत को सलाम करते हैं जो इबादत में मश्ग़ूल हों। मगर जिन घरों में बुत या तस्वीर या कुत्ता हो या जिन मकानों में शराबी या ख़िन्ज़ीर खाने वाला या ग़ुस्ले जनाबत न करने वाला, या बिला वजहे शरई अपनी रिश्तेदारी को काट देने वाला रहता हो, उन घरों में येह फ़िरिश्ते दाख़िल नहीं होते।

(تفسیر صاوی،ج۶، ص ۲۴۰۱، پ۳۰، القدر:۴)

एक रिवायत में येह भी है कि इन फ़िरिश्तों की ता'दाद रूए ज़मीन की कंकरियों से भी ज़ियादा होती है और येह सब सलाम व रह़मत ले कर नाज़िल होते हैं। (تفسیر صاوی،ج۶، ص ۲۴۰۱، پ۳۰، القدر:۴)

शबे क़द्र कौन सी रात है ? :- हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि शबे क़द्र को रमज़ान के आख़िरी अ़शरे की ताक़ रातों में या'नी इक्कीसवीं, तेईसवीं, पच्चीसवीं, सत्ताईसवीं, और उन्तीसवीं, रातों में तलाश करो।

(بخاری شریف، کتاب الصوم، باب تحری لیلۃ القدر، ج۱،ص ۲۷۰، مسلم شریف، کتاب الصیام، باب فضل لیلۃ القد ر، ص۳۶۹)

इस लिये बा'ज़ उ़-लमाए किराम ने फ़रमाया कि शबे क़द्र की कोई रात मुअ़य्यन नहीं है लिहाज़ा इन पांचों रातों में शबे क़द्र को तलाश करना चाहिये।

मगर ह़ज़रते उबय्य बिन का'ब व ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم और दूसरे उ़-लमाए किराम का क़ौल येह है कि शबे क़द्र रमज़ान की सत्ताईसवीं रात है। (تفسیر صاوی،ج٦، ص ٢٤٠٠، پ٣٠، القدر)

और बा'ज़ उ़-लमाए किराम ने बत़ौरे इशारा इस की दलील येह भी पेश की है कि "لیلة القدر" में नव हुरूफ़ हैं और "لیلة القدر" का लफ़्ज़ इस सूरह में तीन जगह आया है और नव को तीन से ज़र्ब देने से सत्ताईस होते हैं लिहाज़ा मा'लूम हुवा कि शबे क़द्र रमज़ान की सत्ताईसवीं रात है। (واللّٰہ تعالٰی اعلم) (تفسیر صاوی،ج٦، ص٢٤٠٠، پ٣٠، القدر)

शबे क़द्र की नमाज़ और दुआ़एं :- रिवायत है कि जो शबे क़द्र में इख़्लासे निय्यत से नवाफ़िल पढ़ेगा उस के अगले पिछले सब गुनाह मुआ़फ़ हो जाएंगे। (تفسیر روح البیان،ج١٠، ص ٤٨٠-٤٨١، پ٣٠،القدر:٣)

﴾1﴿ शबे क़द्र में चार रक्अ़त नफ़्ल इस तरकीब से पढ़े कि हर रक्अ़त में **الحمد** के बा'द सूरए **انا انزلناه** तीन मरतबा और **قل هو اللّٰہ** पचास मरतबा पढ़े फिर सलाम के बा'द सजदे में जा कर एक मरतबा سُبْحَانَ اللّٰہِ وَالْحَمْدُلِلّٰہِ وَلَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَاللّٰہُ اَکْبَر पढ़े। फिर सजदे से सर उठा कर जो दुआ़ मांगे ان شاءاللّٰہ تعالٰی मक़्बूल होगी। (فضائل الشھور والایام)

﴾2﴿ ह़ज़रते आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا ने अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अगर मुझे शबे क़द्र मिल जाए तो मैं कौन सी दुआ़ पढ़ूं? तो इरशाद फ़रमाया कि तुम येह दुआ़ पढ़ो।

اَللّٰھُمَّ اِنَّکَ عَفُوٌّ تُحِبُّ الْعَفْوَ فَاعْفُ عَنِّی

(سنن ابن ماجه، کتاب الدعاء بالعفو و العافية، ج٤، ص٢٧٣، رقم ٣٨٥٠)

﴾3﴿ एक रिवायत में है कि जो शख़्स रात में येह दुआ़ तीन मरतबा पढ़ लेगा तो उस ने गोया शबे क़द्र को पा लिया। लिहाज़ा हर रात इस दुआ़ को पढ़ लेना चाहिये। दुआ़ येह है :

لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ الْحَلِیْمُ الْکَرِیْمُ سُبْحَانَ اللّٰہِ رَبِّ السَّمٰوٰتِ السَّبْعِ وَرَبِّ الْعَرْشِ الْعَظِیْم

﴾4﴿ येह दुआ़ भी जिस क़दर ज़ियादा पढ़ सकें पढ़ें। येह भी ह़दीष में आया है, दुआ़ येह है : اَللّٰھُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُکَ الْعَفْوَ وَالْعَافِیَةَ وَالْمُعَافَاةَ الدَّائِمَةَ فِی الدُّنْیَا وَالْاٰخِرَة

﴾66﴿ ज़मीन बात चीत करेगी

क़ियामत के दिन बन्दों की नेकी बदी के हिसाब के वक़्त जहां बहुत से गवाह होंगे । वहां ज़मीन भी गवाह बन कर शहादत देगी । चुनान्चे, ह़दीष शरीफ़ में है कि हर मर्द व औ़रत ने ज़मीन पर जो कुछ अच्छा या बुरा अ़मल किया है ज़मीन उस की गवाही देगी, कहेगी कि फ़ुलां रोज़ येह काम किया और फ़ुलां रोज़ येह काम किया ।

(تفسیر خزائن العرفان،ص۱۰۷۹، پ۳۰، الزلزال:۴)

ज़मीन पर जो कुछ अच्छे या बुरे काम लोगों ने किये हैं । उन सब को ज़मीन ने याद रखा है और क़ियामत के दिन वोह सारी ख़बरों को अ़लल ए'लान बयान करेगी जिस को सब लोग सुनेंगे । इस मज़्मून को ख़ुदावन्द (عَزَّوَجَلَّ) ने क़ुरआने मजीद में इन लफ़्ज़ों के साथ इरशाद फ़रमाया है :

اِذَا زُلْزِلَتِ الْاَرْضُ زِلْزَالَهَا ۙ﴿۱﴾ وَ اَخْرَجَتِ الْاَرْضُ اَثْقَالَهَا ۙ﴿۲﴾ وَ قَالَ الْاِنْسَانُ مَا لَهَا ۚ﴿۳﴾ یَوْمَئِذٍ تُحَدِّثُ اَخْبَارَهَا ۙ﴿۴﴾ بِاَنَّ رَبَّكَ اَوْحٰى لَهَا ؕ﴿۵﴾ (پ۳۰،الزلزال:۱۔۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- जब ज़मीन थर थरा दी जाए जैसा उस का थर थराना ठहरा है और ज़मीन अपने बोझ बाहर फैंक दे और आदमी कहे इसे क्या हुवा उस दिन वोह अपनी ख़बरें बताएगी इस लिये कि तुम्हारे रब ने उसे हुक्म भेजा ।

दर्से हिदायत :- क़ियामत के दिन बन्दों के अच्छे बुरे आ'माल के बहुत से गवाह होंगे । हर इन्सान के कन्धों पर जो फ़िरिश्ते नामए आ'माल लिख रहे हैं वोह मुस्तक़िल गवाह हैं । फिर इन के इ़लावा इन्सान के आ'ज़ा गवाही देंगे या'नी इन्सान के हाथ पाउं, आंख, कान वग़ैरा वग़ैरा जिन जिन आ'ज़ा से जो जो आ'माल किये गए हर हर उ़ज़्व गवाही देगा । फिर ज़मीन पर जो जो नेकी या बदी इन्सान ने की है इन आ'माल के बारे में ज़मीन हर हर अ़मल की ख़बर देगी । और ख़ुदावन्दे क़ुद्दूस के हुज़ूर गवाही देगी । ख़ुलासा येह है कि इन्सान चाहे जितना भी छुप कर और

छुपा कर कोई अच्छा या बुरा अ़मल करे, मगर वोह अ़मल क़ियामत के दिन हरगिज़ हरगिज़ छुप न सकेगा। बल्कि हर आदमी का हर अ़मल उस के सामने पेश कर दिया जाएगा और वोह अपने तमाम करतूतों को अपनी आंखों से देख लेगा। और हर अ़मल का बदला भी पाएगा। चुनान्चे, खुदावन्दे कुद्दूस का इरशाद है कि

يَوْمَئِذٍ يَّصْدُرُ النَّاسُ اَشْتَاتًا ۙ لِّيُرَوْا اَعْمَالَهُمْ ؕ﴿٦﴾ فَمَنْ يَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ خَيْرًا يَّرَهٗ ؕ﴿٧﴾ وَمَنْ يَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ شَرًّا يَّرَهٗ ﴿٨﴾ (پ۳۰، الزلزال:۶۔۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- उस दिन लोग अपने रब की त़रफ़ फिरेंगे कई राह हो कर ताकि अपना किया दिखाए जाएं तो जो एक ज़र्रा भर भलाई करे उसे देखेगा और जो एक ज़र्रा भर बुराई करे उसे देखेगा।

बहर हाल क़ियामत का दिन बड़ा सख़्त होगा और हर आदमी को अपने हर छोटे बड़े और अच्छे बुरे आ'माल का ह़िसाब देना पड़ेगा। हर मुसलमान का फ़र्ज़ है कि वोह ज़िन्दगी के हर लम्हे में येह ध्यान रखे कि जो कुछ कर रहा हूं मुझे एक दिन अपने इन कामों का ह़िसाब देना पड़ेगा और जिन आ'माल को मैं छुपा कर कर रहा हूं क़ियामत के दिन भरे मजमअ़ में अह़कमुल ह़ाकिमीन के ह़ुज़ूर ज़ाहिर हो कर रहेंगे उस वक़्त कैसी और कितनी बड़ी रुस्वाई और शर्मिन्दगी होगी ?

﴾67﴿ मुजाहिदीन के घोड़ों की अ़ज़मत

खुदावन्दे कुद्दूस की राह में जिहाद करने वाले मुजाहिदीन और ग़ाज़ियों का मर्तबा कितना बुलन्दो बाला, और किस क़दर अ़ज़मत वाला है इस के बारे में तो सेंकड़ों आयतों में खुदावन्दे कुद्दूस ने इन मर्दाने ह़क़ की मदह़ो षना का खुत़बा इरशाद फ़रमाया है मगर सूरए "والعٰدِيٰت" में रब्बुल इ़ज़्ज़त جَلَّ جَلَالُهٗ ने मुजाहिदीन और ग़ाज़ियों के घोड़ों, बल्कि इन घोड़ों की रफ़्तार और इन की अदाओं की क़सम याद फ़रमा कर इन की इ़ज़्ज़त व अ़ज़मत का इज़्हार फ़रमाया है। चुनान्चे, इरशादे रब्बानी है कि

وَالْعٰدِيٰتِ ضَبْحًا ۙ﴿۱﴾ فَالْمُوْرِيٰتِ قَدْحًا ۙ﴿۲﴾ فَالْمُغِيْرٰتِ صُبْحًا ۙ﴿۳﴾
فَاَثَرْنَ بِهٖ نَقْعًا ۙ﴿۴﴾ فَوَسَطْنَ بِهٖ جَمْعًا ۙ﴿۵﴾ اِنَّ الْاِنْسَانَ لِرَبِّهٖ لَكَنُوْدٌ ۚ﴿۶﴾ (پ۳۰،العٰديٰت:۱۔۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- क़सम उन की जो दौड़ते हैं सीने से आवाज़ निकलती हुई फिर पथ्थरों से आग निकालते हैं सुम मार कर फिर सुब्ह होते ताराज करते हैं फिर उस वक़्त ग़ुबार उड़ाते हैं फिर दुश्मन के बीच लश्कर में जाते हैं बेशक आदमी अपने रब का बड़ा ना शुक्रा है।

इन घोड़ों से मुराद, मुफ़स्सिरीन का इजमाअ़ है कि मुजाहिदीन और ग़ाज़ियों के घोड़े मुराद हैं जो ख़ुदावन्दे क़ुद्दूस के दरबार में इस क़दर मह़बूब व मोह़तरम हैं कि क़ुरआने मजीद में ह़क़ جل مجدہ ने इन घोड़ों बल्कि इन की अदाओं की क़सम याद फ़रमाई है। चुनान्चे, इरशाद फ़रमाया कि मुझे उन घोड़ों की क़सम है जो जिहाद में दौड़ते हुवे हांपते हैं और मुझे क़सम है उन घोड़ों की जो पथ्थरों पर अपने ना'ल वाले ख़ुर मार कर रात की तारीकी में चिंगारी निकाल देते हैं और मुझे उन घोड़ों की क़सम है जो सुब्ह़ सवेरे कुफ़्फ़ार पर ह़म्ला कर देते हैं और मुझे क़सम है उन घोड़ों की जो मैदाने जंग में दौड़ कर ग़ुबार उड़ाते हैं और मुझे क़सम है उन घोड़ों की जो कुफ़्फ़ार के बीच में घुस जाते हैं। इतनी क़स्मों के बा'द रब तआ़ला ने इरशाद फ़रमाया कि "**इन्सान अपने रब का बड़ा ना शुक्रा है।**"

अल्लाहु अक्बर ! ख़ुदावन्दे क़ुद्दूस जिन चीज़ों की क़सम याद फ़रमाए, उन चीज़ों की अ़ज़मते शान का क्या कहना ? क़ुरआने मजीद में जिन जिन चीज़ों के बारे में **अल्लाह** तआ़ला ने येह फ़रमा दिया कि मुझे उन की क़सम है, उन तमाम चीज़ों का मर्तबा इतना बुलन्दो बाला और इस क़दर अ़ज़मत वाला हो गया कि वोह तमाम चीज़ें हम मुसलमानों के लिये बल्कि सारी काएनात के लिये मुअ़ज़्ज़ज़ व मोह़तरम हो गईं। तो फिर मुजाहिदीन के घोड़ों की इ़ज़्ज़त व अ़ज़मत और उन के तक़द्दुस व एह़तिराम का क्या आ़लम होगा ? **अल्लाहु अक्बर, अल्लाहु अक्बर**

दर्से हिदायत :- इस से हिदायत का येह सबक़ मिलता है कि **अल्लाह** तआ़ला अपने मह़बूबों की हर हर चीज़ से मह़ब्बत फ़रमाता है और ख़ुदा

के महबूबों की हर हर चीज़ क़ाबिले इ़ज़्ज़त व लाइक़े एह़तिराम है। मुजाहिदीने इस्लाम और ग़ाज़ियाने किराम चूंकि ख़ुदावन्दे क़ुद्दूस के महबूब और प्यारे बन्दे हैं इस लिये अल्लाह तआ़ला इन मुजाहिदीन के घोड़ों से भी इस क़दर प्यार व महब्बत फ़रमाता है कि इन घोड़ों बल्कि इन घोड़ों की रफ़्तार और मैदाने जंग में इन घोड़ों के ह़म्लों की क़सम याद फ़रमा कर इन घोड़ों की इ़ज़्ज़त व अ़ज़मत का ए'लान फ़रमा रहा है। سُبۡحٰنَ اللہ,سُبۡحٰنَ اللہ

जब मुजाहिदीने किराम के घोड़ों के बुलन्द दरजात का ख़ुत़बा क़ुरआने अ़ज़ीम ने पढ़ा तो इस से मा'लूम हुवा कि मुजाहिदीन के आलाते जंग और इन के हथियारों और इन की कमानों, इन की तल्वारों का भी मर्तबा बहुत बुलन्द है इसी लिये बा'ज़ ख़ानक़ाहों में बा'ज़ ग़ाज़ियों की तल्वारों को लोगों ने बड़े एहतिमाम के साथ तबर्रुक बना कर बरसहा बरस से मह़फ़ूज़ रखा है जो बिला शुबा बाइ़षे बरकत व लाइक़े इ़ज़्ज़त व एह़तिराम हैं। (واللہ تعالٰی اعلم)

﴾68﴿ क़ुरैश के दो सफ़र

मक्कए मुकर्रमा में न काश्तकारी होती थी न वहां कोई सन्अ़त व ह़िरफ़त थी। फिर भी क़बीलए क़ुरैश के लोग काफ़ी ख़ुशह़ाल और साह़िबे माल थे और ख़ूब दिल खोल कर ह़ाजियों की ज़ियाफ़त और मेहमान नवाज़ी करते थे। क़ुरैश की ख़ुशह़ाली और फ़ारिग़ुल बाली का राज़ येह था कि येह लोग हर साल दो मरतबा तिजारती सफ़र किया करते थे। जाड़े के मौसिम में यमन और गर्मी के मौसिम में शाम का सफ़र किया करते थे और हर जगह के लोग इन्हें अहले ह़रम और बैतुल्लाह शरीफ़ का पड़ोसी कह कर इन लोगों का इकराम व एह़तिराम करते थे और इन लोगों के साथ तिजारतें करते थे और क़ुरैश इन तिजारतों में ख़ूब नफ़्अ़ उठाते थे। और इन लोगों के ह़रमे का'बा का बाशिन्दा होने की बिना पर रास्ते में इन के क़ाफ़िलों पर किसी क़िस्म की रहज़नी और डकैती नहीं हुवा करती थी। बा वुजूद येह कि अत़राफ़ व जवानिब में हर त़रफ़ क़त्लो ग़ारत और

लूट मार का बाज़ार गर्म रहा करता था। क़ुरैश के सिवा दूसरे क़बीलों के लोग जब सफ़र करते, तो रास्तों में उन के क़ाफ़िलों पर ह़म्ले होते थे और मुसाफ़िर लूटे मारे जाते थे इस लिये क़ुरैश जिस त़रह़ अम्नो अमान के साथ येह दोनों तिजारती सफ़र कर लिया करते थे दूसरे लोगों को येह अम्नो अमान नसीब नहीं था। (تفسیر خزائن العرفان،ص۱۰۸۴۔۱۰۸۹، پ۳۰، قریش:۱ تا ۴)

अल्लाह तआ़ला ने क़ुरैश को जो बे शुमार ने'मतें अ़त़ा फ़रमाई थीं इन में से ख़ास त़ौर पर इन दो तिजारती सफ़रों की ने'मत को याद दिला कर इन को ख़ुदावन्दे क़ुद्दूस की इ़बादत का हुक्म देते हुवे इरशाद फ़रमाया कि

لِاِیْلٰفِ قُرَیْشٍ ۙ﴿۱﴾ اٖلٰفِهِمْ رِحْلَةَ الشِّتَآءِ وَ الصَّیْفِ ۚ﴿۲﴾ فَلْیَعْبُدُوْا رَبَّ هٰذَا الْبَیْتِ ۙ﴿۳﴾ الَّذِیْۤ اَطْعَمَهُمْ مِّنْ جُوْعٍ ۙ۬ وَّ اٰمَنَهُمْ مِّنْ خَوْفٍ ﴿۴﴾ (پ۳۰،قریش:۱۔۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- इस लिये कि क़ुरैश को मैल दिलाया उन की जाड़े और गर्मी दोनों के कूच में मैल दिलाया (रग़बत दिलाई) तो उन्हें चाहिये कि इस घर के रब की बन्दगी करें जिस ने उन्हें भूक में खाना दिया और उन्हें एक बड़े ख़ौफ़ से अमान बख़्शा।

इन लोगों को भूक में खाना दिया या'नी इन दोनों तिजारती सफ़रों की बदौलत इन लोगों के मआ़श और रोज़ी का सामान पैदा कर दिया और इन के क़ाफ़िलों को लूट मार से अम्नो अमान अ़त़ा फ़रमाया। लिहाज़ा इन लोगों को लाज़िम है कि येह लोग रब्बे का'बा की इ़बादत करें जिस ने इन लोगों को अपनी ने'मतों से नवाज़ा है न कि येह लोग बुतों की इ़बादत करें जिन्हों ने इन लोगों को कुछ भी नहीं दिया।

दर्से हिदायत :- अल्लाह तआ़ला ने इस सूरह में अपनी दो ने'मतों को याद दिला कर बुत परस्ती छोड़ने और अपनी इ़बादत का हुक्म दिया है। इस सूरह में अगर्चे ख़ास त़ौर पर क़ुरैश का ज़िक्र है मगर येह हुक्म तमाम दुन्या के इन्सानों के लिये है कि लोग ख़ुदा की ने'मतों को याद करें और ने'मत देने वाले ख़ुदाए वाह़िद की इ़बादत करें और बुत परस्ती से बाज़ रहें। (واللہ تعالٰی اعلم)

﴾69﴿ कुफ़्र व इस्लाम में मुफ़ाहमत ग़ैर मुमकिन

कुफ़्फ़ारे क़ुरैश में से एक जमाअ़त दरबारे रिसालत में आई और येह कहा कि आप हमारे दीन की पैरवी करें तो हम भी आप के दीन का इत्तिबाअ़ करेंगे। एक साल आप हमारे मा'बूदों (बुतों) की इ़बादत करें एक साल हम आप के मा'बूद **अल्लाह** तआ़ला की इ़बादत करेंगे। हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि **अल्लाह** की पनाह कि मैं ग़ैरुल्लाह को उस का शरीक ठहराऊं। येह सुन कर कुफ़्फ़ारे क़ुरैश ने कहा कि अगर आप बुतों की इ़बादत नहीं कर सकते तो कम से कम आप हमारे किसी बुत को हाथ ही लगा दीजिये तो हम आप की तस्दीक़ कर लेंगे और आप के मा'बूद की इ़बादत करने लगेंगे इस मौक़अ़ पर सूरए काफ़िरून नाज़िल हुई और हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ह़रमे का'बा में तशरीफ़ ले गए और कुफ़्फ़ारे क़ुरैश को येह सूरह पढ़ कर सुनाई तो कुफ़्फ़ारे क़ुरैश मायूस हो गए और फिर ग़ुस्से में जल भुन कर हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को त़रह़ त़रह़ की ईज़ाएं देने पर तुल गए।

(تفسیر خزائن العرفان، ص۱۰۸۵، پ۳۰، الکفرون:۱)

قُلْ يٰۤاَيُّهَا الْكٰفِرُوْنَۙ﴿۱﴾ لَاۤ اَعْبُدُ مَا تَعْبُدُوْنَۙ﴿۲﴾ وَ لَاۤ اَنْتُمْ عٰبِدُوْنَ مَاۤ اَعْبُدُۚ﴿۳﴾ وَ لَاۤ اَنَا عَابِدٌ مَّا عَبَدْتُّمْۙ﴿۴﴾ وَ لَاۤ اَنْتُمْ عٰبِدُوْنَ مَاۤ اَعْبُدُؕ﴿۵﴾ لَكُمْ دِيْنُكُمْ وَلِيَ دِيْنِ۠﴿۶﴾ (پ۳۰، الکافرون:۱-۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- तुम फ़रमाओ ऐ काफ़िरो ! न मैं पूजता हूं जो तुम पूजते हो और न तुम पूजते हो जो मैं पूजता हूं और न मैं पूजूंगा जो तुम ने पूजा और न तुम पूजोगे जो मैं पूजता हूं तुम्हें तुम्हारा दीन और मुझे मेरा दीन।

दर्से हिदायत :- इस सूरए पाक के मज़्मून और हुज़ूर साह़िबे लौलाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के त़र्ज़े अ़मल से हमें येह सबक़ मिलता है कि कुफ़्र व इस्लाम में कभी मुफ़ाहमत और मुवाफ़क़त नहीं हो सकती जो मुसलमान कुफ़्फ़ार की ख़ुशनूदी और उन की ख़ुशामद के लिये उन की मज़्हबी

तक़रीबात में हिस्सा लेते हैं और बुत परस्ती की मुशरिकाना रस्मों में चन्दा दे कर शिर्कत करते हैं उन को इस सूरह से हिदायत का नूरानी सबक़ हासिल करना चाहिये और ईमान रखना चाहिये कि तौहीद और शिर्क कभी एक साथ जम्अ़ नहीं हो सकते। जो मुवह्हिद होगा वोह कभी मुशरिक नहीं हो सकता और जो मुशरिक होगा वोह कभी मुवह्हिद नहीं होगा। (واللہ تعالٰی اعلم)

﴾70﴿ अल्लाह तआ़ला की चन्द सिफ़्तें

कुफ़्फ़ारे अ़रब ने हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से **अल्लाह** तआ़ला के बारे में त़रह़ त़रह़ के सुवाल किये कोई कहता था कि **अल्लाह** तआ़ला का नसब और ख़ानदान क्या है ? उस ने रबूबिय्यत किस से मीराष में पाई है ? और उस का वारिष कौन होगा ? किसी ने येह सुवाल किया कि **अल्लाह** तआ़ला सोने का है या चांदी का ? लोहे का है या लकड़ी का ? किसी ने येह पूछा कि **अल्लाह** तआ़ला क्या खाता पीता है ?

इन सुवालों के जवाब में **अल्लाह** तआ़ला ने अपने ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर सूरए इख़्लास नाज़िल फ़रमाई और अपनी ज़ात व सिफ़ात का वाज़ेह़ बयान फ़रमा कर अपनी मा'रिफ़त की राह रोशन कर दी और कुफ़्फ़ार के जाहिलाना ख़यालात व अवहाम की तारीकियों को जिन में वोह लोग गिरिफ़्तार थे अपनी ज़ात व सिफ़ात के नूरानी बयान से दूर फ़रमा दिया। (تفسیر خزائن العرفان،ص۱۰۸۶،پ۳۰، اخلاص: ۱)

इरशाद फ़रमाया कि

قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ ۚ﴿۱﴾ اَللّٰهُ الصَّمَدُ ۚ﴿۲﴾ لَمْ يَلِدْ ۙ وَلَمْ يُوْلَدْ ۙ﴿۳﴾ وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ ۧ﴿۴﴾ (پ۳۰،الاخلاص:۱۔۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :– तुम फ़रमाओ वोह **अल्लाह** है वोह एक है **अल्लाह** बे नियाज़ है न उस की कोई अवलाद और न वोह किसी से पैदा हुवा और न उस के जोड़ का कोई।

दर्से हिदायत :– **अल्लाह** तआ़ला ने सूरए इख़्लास की चन्द आयतों में "इल्मे इलाहिय्यात" के वोह नफ़ीस और आ'ला मत़ालिब बयान फ़रमा दिये हैं कि जिन की तफ़्सीलात अगर बयान की जाएं तो कुतुब ख़ाने के कुतुब ख़ाने पुर हो जाएं जिन का ख़ुलासा येह है कि **अल्लाह** तआ़ला

अपनी रबूबिय्यत और उलूहिय्यत में सिफ़ते अ़ज़मत व कमाल के साथ मौसूफ़ है। मिष्ल व नज़ीर व शबीह से पाक है उस का कोई शरीक नहीं। वोह कुछ खाता है न पीता है, न किसी का मोह़ताज है बल्कि सब उस के मोह़ताज है वोह हमेशा से है और हमेशा रहेगा।

वोह क़दीम है और पैदा होना ह़ादिष की शान है इस लिये न वोह किसी का बेटा है न किसी का बाप है और न उस का कोई मुजानिस है और न उस का अ़दील व मषील है।

इस सूरए मुबारका की फ़ज़ीलतों के मुतअ़ल्लिक़ बहुत सी अह़ादीष वारिद हुई हैं इस को तिहाई क़ुरआन के बराबर बताया गया है या'नी अगर तीन मरतबा इस सूरह को पढ़ा जाए तो पूरे क़ुरआन की तिलावत का षवाब मिलेगा।

एक शख़्स ने ह़ुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से अ़र्ज़ किया कि मुझे इस सूरह से मह़ब्बत है तो आप ने फ़रमाया कि इस की मह़ब्बत तुझे जन्नत में दाख़िल कर देगी। (تفسیر خزائن العرفان،ص۱۰۸٦، پ۳۰، اخلاص:۱)

﴿71﴾ उ़लूम व मआ़रिफ़ का न ख़त्म होने वाला ख़ज़ाना

क़ुरआने मजीद **अल्लाह** तआ़ला की वोह जलीलुल क़द्र और अ़ज़ीमुश्शान किताब है, जिस में एक त़रफ़ ह़लाल व ह़राम के अह़काम, इ़ब्रतों और नसीह़तों के अक़्वाल, अम्बियाए किराम और गुज़श्ता उम्मतों के वाक़िआ़त व अह़वाल, जन्नत व दोज़ख़ के ह़ालात मज़्कूर हैं और दूसरी त़रफ़ इस के बात़िन की गहराइयों में उ़लूम व मआ़रिफ़ के ख़ज़ानों के बे शुमार ऐसे समुन्दर मौजें मार रहे हैं जो क़ियामत तक कभी ख़त्म नहीं हो सकते। चुनान्चे, रसूले अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने क़ुरआन की इस अ़ज़ीमुश्शान जामेइ़य्यत का बयान फ़रमाते हुवे इरशाद फ़रमाया कि

لَا يَشْبَعُ مِنْهُ الْعُلَمَآءُ وَلَا يَخْلَقُ عَنْ كَثْرَةِ الرَّدِّ وَلَا يَنْقَضِى عَجَائِبُهُ

क़ुरआनी मज़ामीन का इह़ात़ा कर के कभी उ़-लमा आसूदा नहीं होंगे और बार बार पढ़ने से क़ुरआन पुराना नहीं होगा और क़ुरआन के अ़जीबो ग़रीब मज़ामीन कभी ख़त्म नहीं होंगे।

(مشکوٰۃ شریف، کتاب فضائل القرآن، الفصل الثانی، ص۱۸٦)

चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली ख़व्वास رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं कि
اِنَّ اللّٰهَ تَعَالٰی اِطَّلَعَنِی عَلٰی مَعَانِیْ سُوْرَةِ الْفَاتِحَةِ فَظَهَرَلِیْ مِنْهَا
مِائَةَ اَلْفِ عِلْمٍ وَّاَرْبَعُوْنَ اَلْفِ عِلْمٍ وَتِسْعَمِائَةٍ وَّ تِسْعُوْنَ عِلْمًا ط
बेशक अल्लाह तआ़ला ने मुझे सूरए फ़ातिह़ा के मआ़नी पर आगाह फ़रमाया तो इन में से एक लाख चालीस हज़ार नव सो निनानवे उ़लूम मुझ पर मुन्कशिफ़ हुवे।

(الدولة المكية، النظر الخامس فی دلائل المدعی من الاحاديث والاقوال والايات، ص۷۹)

इसी त़रह़ इमाम शा'रानी عَلَيْهِ الرَّحْمَة अपनी किताब मीज़ान में तह़रीर फ़रमाते हैं कि
قَدِ اسْتَخْرَجَ اَخِیْ اَفْضَلُ الدِّيْنِ مِنْ سُوْرَةِ الْفَاتِحَةِ مَائَتَیْ اَلْفِ عِلْمٍ
وَّ سَبْعَةً وَّاَرْبَعِيْنَ اَلْفِ عِلْمٍ وَّتِسْعَ مِائَةٍ وَتِسْعَةً وَّ تِسْعُوْنَ عِلْمًا
मेरे भाई अफ़्ज़लुद्दीन ने सूरए फ़ातिह़ा से दो लाख सैंतालीस हज़ार नव सो निनानवे उ़लूम निकाले हैं।

(الدولة المكية، النظر الخامس فی دلائل المدعی من الاحاديث والاقوال والايات، ص۷۹)

इन रिवायतों से अच्छी त़रह़ वाज़ेह़ होता है कि क़ुरआने मजीद अगर्चे ज़ाहिर में तीस पारों का मजमूआ़ है लेकिन इस का बात़िन करोड़ों बल्कि अरबों उ़लूम व मआ़रिफ़ का ऐसा ख़ज़ाना है जो कभी ख़त्म नहीं हो सकता किसी आ़रिफ़ बिल्लाह का मश्हूर शे'र है कि

جَمِيْعُ الْعِلْمِ فِی الْقُرْاٰنِ لٰكِنْ   تَقَاصَرَ عَنْهُ اَفْهَامُ الرِّجَالِ

या'नी तमाम उ़लूम क़ुरआन में मौजूद हैं लेकिन लोगों की अ़क़्लें इन के समझने से क़ासिर व कोताह हैं।

अल ह़ासिल, क़ुरआने मजीद में सिर्फ़ उ़लूम व मआ़रिफ़ ही का बयान नहीं बल्कि ह़क़ीक़त येह है कि क़ुरआने मजीद में पूरी काएनात और सारे आ़लम की हर हर चीज़ का वाज़ेह़ और रोशन तफ़्सीली बयान है या'नी आस्मान के एक एक तारे, समुन्दर के एक एक क़त़रे, सब्ज़ाहाए ज़मीन के एक एक तिन्के, रेगिस्तान के एक एक ज़र्रे, दरख़्तों के एक एक पत्ते, अ़र्श व कुरसी के एक एक गोशे, आ़लमे काएनात के एक एक कोने,

माज़ी का हर हर वाक़िआ़, ह़ाल का हर हर मुआ़मला, मुस्तक़्बिल का हर हर ह़ादिषा क़ुरआने मजीद में निहायत वज़ाह़त के साथ तफ़्सीली बयान किया गया है चुनान्चे, **अल्लाह** तआ़ला का इरशाद है कि

مَا فَرَّطْنَا فِي الْكِتٰبِ مِنْ شَيْءٍ (پ۷، الانعام:۳۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :– हम ने इस किताब में कुछ उठा न रखा।

लेकिन वाज़ेह़ रहे कि क़ुरआन की येह ए'जाज़ी शान हमारे तुम्हारे और आ़म लोगों के लिये नहीं है बल्कि क़ुरआन की इस ए'जाज़ी शान का कामिल ज़ुहूर तो सिर्फ़ ह़ुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ मख़्सूस है और सिर्फ़ आप ही का येह मो'जिज़ा है कि आप ने क़ुरआने मजीद के तमाम मज़ामीन व मआ़नी को तफ़्सीली तौ़र पर जान लिया और पूरा क़ुरआन नाज़िल हो जाने के बा'द काएनाते आ़लम की कोई शै, माज़ी व ह़ाल और मुस्तक़्बिल का कोई वाक़िआ़ ह़ुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से पोशीदा नहीं रहा और आप ने हर ग़ैब व शहादत को तफ़्सीली तौ़र पर जान लिया क्यूंकि ख़ुदावन्दे क़ुद्दूस का इरशाद है कि

وَنَزَّلْنَا عَلَيْكَ الْكِتٰبَ تِبْيَانًا لِّكُلِّ شَيْءٍ (پ۱۴، النحل:۸۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :– और हम ने तुम पर येह क़ुरआन उतारा कि हर चीज़ का रोशन बयान है।

फिर ह़ुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सदक़े में बा'ज़ औलियाए किराम और उ़-लमाए उ़ज़्ज़ाम को भी बक़दरे ज़र्फ़ इन के बात़िनी उ़लूम व मआ़रिफ़ से ह़िस्सा मिला है जिन में से कुछ किताबों के लाखों सफ़ह़ात पर सितारों की त़रह़ चमक रहे हैं और कुछ सीनों के सन्दूक़ और दिलों की तिजोरियों में अब तक मुक़फ़्फ़ल ही रह गए हैं जो आइन्दा ان شاء اللہ تعالٰی क़ियामत तक सफ़ह़ाते क़िरत़ास पर जलवा रेज़ होते रहेंगे और ह़ुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इस ग़ैबी ख़बर وَلَا يَنْقَضِي عَجَآئِبُهٗ का वक़्तन फ़ वक़्तन ज़ुहूर होता रहेगा और उम्मते मुस्लिमा इन के फ़ुयूज़ो बरकात से मुस्तफ़ीज़ व माला माल होती रहेगी। बहर ह़ाल येह यक़ीन व ईमान रखना चाहिये कि हम ने "**अ़जाइबुल क़ुरआन**" और "**ग़राइबुल क़ुरआन**" में जो क़ुरआन के चन्द अ़जीबो ग़रीब मज़ामीन का एक मुख़्तसर मजमूआ़

तह़रीर किया है और हम से पहले बहुत से उ़–लमाए किराम ने मज़ामीने कुरआन पर हज़ारों किताबें और लाखों सफ़्ह़ात तह़रीर फ़रमाए हैं, कुरआने मजीद के उ़लूम व मआ़रिफ़ के सामने इन सब तह़रीरों को वोह निस्बत भी ह़ासिल नहीं जो एक क़त़रे को दुन्या भर के समुन्दरों से और एक ज़र्रे को तमाम रूए ज़मीन से ह़ासिल हो, क्यूंकि कुरआने मजीद तो उ़लूम व मआ़रिफ़ का वोह ख़ज़ाना है जो कभी ख़त्म ही नहीं हो सकता बल्कि क़ियामत तक उ़–लमाए किराम इस बह़रे नापैदा किनार से हमेशा अ़जीबो ग़रीब मज़ामीन के मोती निकालते ही रहेंगे और हज़ारों लाखों किताबों के दफ़्तर तय्यार होते ही रहेंगे।

मैं अगर्चे इस पर बहुत खुश हूं कि कुरआने करीम के चन्द मज़ामीन पर दो मुख़्तसर मजमूए लिख कर मैं उन उ़–लमाए किराम की जूतियों की सफ़ में जगह पा गया जिन्हों ने अपने नोके क़लम से कुरआनी आयात के ऐसे ऐसे दर शहवार और गोहरे आबदार सफ़्ह़ाते क़िरत़ास पर बिखैर दिये जिन की चमक दमक से मोअमिनीन के ईमान व इ़रफ़ान में ऐसी ताबानी व ताबन्दगी पैदा होगी जो क़ियामत तक रोशन रहेगी मगर मैं इन्तिहाई मुतअस्सिफ़ और शर्मिन्दा हूं कि अपनी इ़ल्मी कोताही और कम फ़हमी की वजह से और फिर अपनी अ़लालत के बाइ़ष कुछ ज़ियादा न लिख सका और न कोई ऐसी नादिर बात लिख सका जो अहले इ़ल्म के लिये बाइ़षे कशिश व क़ाबिले मसर्रत हो।

बहर ह़ाल दुआ़ गो हूं कि खुदावन्दे करीम ब तुफ़ैले नबिय्ये करीम عَلَيْهِ اَفْضَلُ الصَّلٰوةِ وَالتَّسْلِيْم मेरी इस ह़क़ीर ख़िदमत को क़बूल फ़रमा कर इस को मक़्बूलिय्यते दारैन की करामतों से सरफ़राज़ फ़रमाए। (आमीन)

تمت

وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى خَيْرِ خَلْقِهٖ مُحَمَّدٍ وَّاٰلِهٖ وَصَحْبِهٖ اَجْمَعِيْن برحمته وهو ارحم الراحمين

इब्तिदाए तस्नीफ़ : यकुम जुमादल उख़रा सि. 1403 हि.

ख़त्मे तस्नीफ़ : 23 रमज़ान सि. 1404 हि.

अ़ब्दुल मुस्त़फ़ा आ'ज़मी عُفِيَ عَنْهُ

अ़जाइबुल क़ुरआन के मआख़िज़ो मराजेअ़

کتاب کا نام	مصنف کا نام	مطبوعه
قرآن مجید	کلام باری تعالیٰ	ضیاء القرآن پبلی کیشنز لاہور
کنزالایمان فی ترجمۃ القرآن	اعلیٰ حضرت احمد رضا خان	ضیاء القرآن پبلی کیشنز لاہور
تفسیر صاوی	علامہ احمد بن محمد الصاوی	مطبوعہ دارالفکر بیروت
تفسیر مدارک	امام عبداللہ بن احمد النسفی	صدیقیہ کتب خانہ اکوڑہ خٹک
تفسیر روح البیان	الشیخ اسماعیل حقی البروسوی	کتبہ عثمانیہ کوئٹہ
تفسیر جمل	الشیخ سلیمان الجمل	قدیمی کتب خانہ کراچی
تفسیر خازن	علامہ علاء الدین علی بن محمد	صدیقیہ کتب خانہ اکوڑہ خٹک
تفسیر خزائن العرفان	محمد نعیم الدین	مطبوعہ پاک کمپنی اردو بازار لاہور
بخاری شریف	ابوعبداللہ محمد بن اسماعیل بخاری	درالکتب العلمیۃ بیروت
مشکوۃ المصابیح	ابوعبداللہ محمد بن عبداللہ الخطیب	دارالفکر بیروت
کنزالعمال	علامہ علاء الدین علی المتقی	دارالکتب العلمیۃ بیروت
شرح الزرقانی	علامہ قسطلانی	دارالکتب العلمیۃ بیروت
کشف الخفاء	الشیخ اسماعیل بن محمد	دارالکتب العلمیۃ بیروت
مرقاۃ المفاتیح	نورالدین علی بن سلطان (ملاعلی قاری)	دارالفکر بیروت
بہار شریعت	مولانا امجد علی اعظمی	مکتبہ رضویہ کراچی
السیرۃ النبویۃ لابن ہشام	ابومحمد عبدالملک بن ہشام	دارالمعرفہ بیروت
مدارج النبوۃ	مولانا عبدالحق محدث دہلوی	نوریہ رضویہ پبلشنگ کمپنی لاہور
الخیرات الحسان	شیخ شہاب الحمد بن حجر	مدینہ پبلشنگ کمپنی لاہور
حدائق بخشش	اعلیٰ حضرت احمد رضا خان	مکتبۃ المدینہ کراچی

کلیاتِ اقبال	ڈاکٹر اقبال	مطبوعہ شمع بک ایجنسی لاہور
المستدرک علی الصحیحین	ابوعبداللہ محمد بن عبداللہ الحاکم	مطبوعہ دارالمعرفہ بیروت
سنن ابن ماجہ	ابوعبداللہ محمد بن یزید	دارالمعرفہ بیروت

ग़राइबुल क़ुरआन के मआख़िज़ो मराजेअ़

کتاب کا نام	مصنف کے نام	مطبوعہ
تفسیر معالم التنزیل للبغوی	علامہ ابو محمد حسین بن مسعود	دارالکتب العلمیۃ بیروت
تفسیر ابن کثیر	علامہ ابوالفداء اسماعیل بن کثیر الدمشقی	دارالکتب العلمیۃ بیروت
تفسیر جلالین	علامہ جلال الدین السیوطی وجلال الدین المحلی	قدیمی کتب خانہ کراچی
موضح القرآن	شاہ عبدالقادر صاحب	تاج کمپنی لمیٹڈ لاہور کراچی
صحیح مسلم	ابوالحسن امام مسلم بن الحجاج بن مسلم	دارابن حزم بیروت
فتح الباری	امام احمد بن علی العسقلانی	قدیمی کتب خانہ کراچی
تذکرۃ الانبیاء	قاضی عبدالرزاق چشتی بھترالوی	مکتبہ ضیائیہ راولپنڈی
البدایہ والنہایہ	ابوالفداء اسماعیل بن کثیر الدمشقی	لدارالاحیاء التراث العربی بیروت۔
الدولۃ المکیۃ	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان	موسسۃ رضا لاہور
فضائل الشہور والایام		

बद निगाही की सज़ा

हज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْھُمَا फ़रमाते हैं कि "एक शख़्स नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में हाज़िर हुवा । उस का ख़ून बह रहा था तो आप صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस से इस्तिफ़सार फ़रमाया : "तुझे क्या हुवा ?" उस ने अ़र्ज़ की : "मेरे पास से एक औ़रत गुज़री तो मैं ने उस की त़रफ़ देखा और मेरी निगाहें मुसलसल उस का पीछा करती रहीं कि अचानक मेरे सामने एक दीवार आ गई जिस ने मुझे ज़ख़्मी कर दिया और मेरा येह ह़ाल कर दिया जिसे आप मुलाह़ज़ा फ़रमा रहे हैं।" तो नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ जब किसी बन्दे से भलाई का इरादा फ़रमाता है तो उसे दुन्या ही में उस की सज़ा दे देता है।"

(مجمع الزوائد، کتاب التوبۃ، باب فیمن عوقب بذنبہ فی الدنیا، رقم ۱۷۴۷۱، ج ۱۰، ص ۳۱۳)

“मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या” की त़रफ़ से पेशकर्दा क़ाबिले मुत़ालआ कुतुब

﴾शो'बए कुतुबे आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللّٰهِ تعالٰى عَلَيه﴿

(1) करन्सी नोट के शरई अह़कामात :

(अल किफ़्लुल फ़क़ीहिल फ़ाहिम फ़ी क़िरत़ासिद्दराहिम) (कुल सफ़ह़ात : 199)

(2) विलायत का आसान रास्ता (तसव्वुरे शैख़)

(अल याक़ूतितुल वासित़ह) (कुल सफ़ह़ात : 60)

(3) ईमान की पहचान (ह़ाशिया तम्हीदे ईमान) (कुल सफ़ह़ात : 74)

(4) मआ़शी तरक़्क़ी का राज़

(ह़ाशिया व तशरीह़ तदबीरे फ़लाह़ो नजात व इस्लाह़) (कुल सफ़ह़ात : 41)

(5) शरीअ़त व त़रीक़त

(मक़ालुल उ़-रफ़ाअ बि इ'ज़ाज़ि शर-इ व उ़-लमाअ) (कुल सफ़ह़ात : 57)

(6) षुबूते हिलाल के त़रीक़े (तुरुक़ि इस्बाति हिलाल) (कुल सफ़ह़ात : 63)

(7) आ'ला ह़ज़रत से सुवाल जवाब

(इज़्हारिल ह़क़्क़िल जली) (कुल सफ़ह़ात : 100)

(8) ईदैन में गले मिलना कैसा ?

(विशाहुल जीद फ़ी तह़लीलि मुआ़नि-क़तिल ईद) (कुल सफ़ह़ात : 55)

(9) राहे ख़ुदा में ख़र्च करने के फ़ज़ाइल

(रद्दिल कह़ति वल वबाअ बि दा'वतिल जीरानि व मुवासातिल फ़ु-क़राअ) (कुल सफ़ह़ात : 40)

(10) वालिदैन, ज़ौजैन और असातिज़ा के हुक़ूक़

(अल हुक़ूक़ लि त़र्हिल उ़क़ूक़) (कुल सफ़ह़ात : 125)

(11) फ़ज़ाइले दुआ़ (अह़्सनुल विआ़अ लि आदाबिद्दुआ़अ मअ़ शर्ह़ ज़ैलुल मुद्दआ़ लि अह़्सनिल विआ़अ) (कुल सफ़ह़ात : 326)

﴾शाएअ़ होने वाली अ़रबी कुतुब﴿

अज़ : इमामे अहले सुन्नत मुजद्दिदे दीनो मिल्लत

मौलाना अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْهِ رَحْمَةُالرَّحْمٰن

(12) किफ़्लुल फ़क़ीहिल फ़ाहिम (कुल सफ़ह़ात : 74)

(13) तम्हीदुल ईमान (कुल सफ़ह़ात : 77)

(14) अल इजाज़ातुल मतीनह (कुल सफ़ह़ात : 62)

(15) इक़ा–मतुल क़ियामह (कुल सफ़ह़ात : 60)

(16) अल फ़ज़्लुल मौहबी (कुल सफ़ह़ात : 46)

(17) अज्लल ए'लाम (कुल सफ़ह़ात : 70)

(18) अज़्ज़म–ज़–मतुल क़–मरिय्यह (कुल सफ़ह़ात : 93)

(19,20,21) जद्दिल मुम्तार अ़ला रद्दिल मुह़तार

(अल मुजल्लद अल अव्वल वष्षानी)(कुल सफ़ह़ात : 713,677,570)

﴾शो'बए इस्लाही कुतुब﴿

(22) ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَل (कुल सफ़ह़ात : 160)

(23) इनफ़िरादी कोशिश (कुल सफ़ह़ात : 200)

(24) तंग दस्ती के अस्बाब (कुल सफ़ह़ात : 33)

(25) फ़िक्रे मदीना (कुल सफ़ह़ात : 164)

(26) इमतिह़ान की तय्यारी कैसे करें ? (कुल सफ़ह़ात : 32)

(27) नमाज़ में लुक़्मा के मसाइल (कुल सफ़ह़ात : 39)

(28) जन्नत की दो चाबियां (कुल सफ़ह़ात : 152)

(29) काम्याब उस्ताज़ कौन ? (कुल सफ़ह़ात : 43)

(30) निसाबे मदनी क़ाफ़िला (कुल सफ़ह़ात : 196)

(31) काम्याब त़ालिबे इ़ल्म कौन ? (कुल सफ़ह़ात : तक़रीबन 63)

(32) फ़ैज़ाने एह़्याउल उ़लूम (कुल सफ़ह़ात : 325)

(33) मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी (कुल सफ़्हात : 96)

(34) हक़ व बातिल का फ़र्क़ (कुल सफ़्हात : 50)

(35) तहक़ीक़ात (कुल सफ़्हात : 142)

(36) अर-बईने ह-नफ़िय्यह (कुल सफ़्हात : 112)

(37) अत्तारी जिन्न का ग़ुस्ले मय्यित (कुल सफ़्हात : 24)

(38) तलाक़ के आसान मसाइल (कुल सफ़्हात : 30)

(39) तौबा की रिवायात व हिकायात (कुल सफ़्हात : 132)

(40) क़ब्र खुल गई (कुल सफ़्हात : 48)

(41) आदाबे मुर्शिदे कामिल (मुकम्मल पांच हिस्से) (कुल सफ़्हात : 275)

(42) टी वी और मूवी (कुल सफ़्हात : 32)

(43 ता 49) फ़तावा अहले सुन्नत (सात हिस्से)

(50) क़ब्रिस्तान की चुड़ैल (कुल सफ़्हात : 24)

(51) ग़ौषे पाक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के हालात (कुल सफ़्हात :106)

(52) तआ़रुफ़े अमीरे अहले सुन्नत (कुल सफ़्हात : 100)

(53) रहनुमाए जदवल बराए मदनी क़ाफ़िला (कुल सफ़्हात : 255)

(54) दा'वते इस्लामी की जेलख़ाना जात में ख़िदमात (कुल सफ़्हात : 24)

(55) मदनी कामों की तक़्सीम (कुल सफ़्हात : 68)

(56) दा'वते इस्लामी की मदनी बहारें (कुल सफ़्हात : 220)

(57) तर्बिय्यते अवलाद (कुल सफ़्हात : 187)

(58) आयाते क़ुरआनी के अन्वार (कुल सफ़्हात : 62)

(59) अहादीषे मुबारका के अन्वार (कुल सफ़्हात : 66)

(60) फ़ैज़ाने चहल अहादीष (कुल सफ़्हात : 120)

(61) बद गुमानी (कुल सफ़्हात : 57)

शो'बए तराजिमे कुतुब

(62) जन्नत में ले जाने वाले आ'माल
(अल मुत्जरुर्राबेह़ फ़ी षवाबिल अ़-मलिस्सालेह़) (कुल सफ़ह़ात : 743)
(63) शाहराहे औलिया (मिन्हाजुल आ़रिफ़ीन) (कुल सफ़ह़ात : 36)
(64) हुस्ने अख़्लाक़ (मकारिमुल अख़्लाक़)(कुल सफ़ह़ात : 74)
(65) राहे इ़ल्म (ता'लीमुल मु-तअ़ल्लिम त़रीकुत्तअ़ल्लुम) (कुल सफ़ह़ात : 102)
(66) बेटे को नसीह़त (अय्युहल वलद)(कुल सफ़ह़ात : 64)
(67) अद्दा'वति इलल फ़िक्र (कुल सफ़ह़ात : 148)
(68) आंसूओं का दरिया (बह़रुद्दुमूअ़) (कुल सफ़ह़ात : 300)
(69) नेकियों की जज़ाएं और गुनाहों की सज़ाएं (कुर्रतुल उ़यून) (कुल सफ़ह़ात : 136)
(70) उ़यूनुल ह़िकायात (मुतर्जम) (कुल सफ़ह़ात : 412)

शो'बए दर्सी कुतुब

(71) ता'रीफ़ाते नह़्विय्यह (कुल सफ़ह़ात : 45)
(72) किताबुल अ़क़ाइद (कुल सफ़ह़ात : 64)
(73) नुज़्हतुन्नज़र शर्हे नख़्बतुल फ़िक्र (कुल सफ़ह़ात : 175)
(74) अर-बईनिन न-वविय्यह (कुल सफ़ह़ात : 121)
(75) निसाबुत्तज्वीद (कुल सफ़ह़ात : 79)
(76) गुलदस्तए अ़क़ाइदो आ'माल (कुल सफ़ह़ात : 180)
(77) वक़ा-यतिन्नह़्व फ़ी शर्हे हिदा-यतुन्नह़्व
(78) सर्फ़ बहाई मुतर्जम मअ़ ह़ाशिया सर्फ़ बनाई

शो'बए तख़रीज

(79) अ़जाइबुल कुरआन मअ़ ग़राइबुल कुरआन (कुल सफ़ह़ात : 422)
(80) जन्नती ज़ेवर (कुल सफ़ह़ात : 679)
(81) बहारे शरीअ़त, जिल्द अव्वल (ह़िस्सा : 1 से 6)
(82) बहारे शरीअ़त, जिल्द दुवुम (ह़िस्सा : 7 से 13)
(83) बहारे शरीअ़त, जिल्द सिवुम (ह़िस्सा : 14 से 20)
(84) इस्लामी ज़िन्दगी (कुल सफ़ह़ात : 170)
(85) आईनए क़ियामत (कुल सफ़ह़ात : 108)
(86) उम्महातुल मुअमिनीन (कुल सफ़ह़ात : 59)
(87) सह़ाबए किराम का इ़श्क़े रसूल (कुल सफ़ह़ात : 274)

शो'बए अमीरे अहले सुन्नत

(88) सरकार صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का पैग़ाम अ़त्तार के नाम (कुल सफ़्हात : 49)
(89) मुक़द्दस तह़रीरात के अदब के बारे में सुवाल जवाब (कुल सफ़्हात : 48)
(90) इस्लाह़ का राज़ (मदनी चैनल की बहारें हिस्सए दुवुम) (कुल सफ़्हात : 32)
(91) 25 क्रिस्चैन क़ैदियों और पादरी का क़बूले इस्लाम (कुल सफ़्हात : 33)
(92) दा'वते इस्लामी की जेलख़ाना जात में ख़िदमात (कुल सफ़्हात : 24)
(93) वुज़ू के बारे में वस्वसे और इन का इलाज (कुल सफ़्हात : 48)
(94) तज़्किरए अमीरे अहले सुन्नत क़िस्त़ सिवुम (सुन्नते निकाह़)(कुल सफ़्हात : 86)
(95) आदाबे मुर्शिदे कामिल (मुकम्मल पांच हिस्से) (कुल सफ़्हात : 275)
(96) बुलन्द आवाज़ से ज़िक्र करने में हिकमत (कुल सफ़्हात : 48)
(97) क़ब्र खुल गई (कुल सफ़्हात :48)
(98) पानी के बारे में अहम मा'लूमात (कुल सफ़्हात : 48)
(99) गूंगा मुबल्लिग़ (कुल सफ़्हात : 55)
(100) दा'वते इस्लामी की मदनी बहारें (कुल सफ़्हात : 220)
(101) गुम शुदा दुल्हा (कुल सफ़्हात : 33)
(102) मैं ने मदनी बुर्क़अ़ क्यूं पहना ? (कुल सफ़्हात : 33)
(103) जिन्नों की दुन्या (कुल सफ़्हात : 32)
(104) तज़्किरए अमीरे अहले सुन्नत क़िस्त़ दुवुम (कुल सफ़्हात : 48)
(105) ग़ाफ़िल दर्ज़ी (कुल सफ़्हात : 36)
(106) मुख़ालिफ़त मह़ब्बत में कैसे बदली ? (कुल सफ़्हात : 33)
(107) मुर्दा बोल उठा (कुल सफ़्हात : 32)
(108) तज़्किरए अमीरे अहले सुन्नत क़िस्त़ अव्वल (कुल सफ़्हात : 49)
(109) कफ़न की सलामती (कुल सफ़्हात : 33)
(110) तज़्किरए अमीरे अहले सुन्नत क़िस्त़ चहारुम (कुल सफ़्हात : 49)
(111) चल मदीना की सआ़दत मिल गई (कुल सफ़्हात : 32)
(112) बद नसीब दुल्हा (कुल सफ़्हात : 32)
(113) मा'ज़ूर बच्ची मुबल्लिग़ा कैसे बनी ? (कुल सफ़्हात : 32)
(114) बे क़ुसूर की मदद (कुल सफ़्हात : 32)

(115) अ़त्तारी जिन्न का ग़ुस्ले मय्यित (कुल सफ़हात : 24)
(116) नूरानी चेहरे वाले बुज़ुर्ग (कुल सफ़हात : 32)
(117) आंखों का तारा (कुल सफ़हात : 32)
(118) वली से निस्बत की बरकत (कुल सफ़हात : 32)
(119) बा बरकत रोटी (कुल सफ़हात : 32)
(120) इग़वा शुदा बच्चों की वापसी (कुल सफ़हात : 32)
(121) मैं नेक कैसे बना ? (कुल सफ़हात : 32)
(122) शराबी, मुअज़्ज़िन कैसे बना ? (कुल सफ़हात : 32)
(123) बद किरदार की तौबा (कुल सफ़हात : 32)
(124) ख़ुश नसीबी की किरनें (कुल सफ़हात : 32)
(125) नाकाम आ़शिक़ (कुल सफ़हात : 32)
(126) नादान आ़शिक़ (कुल सफ़हात : 32)
(127) हैरोइन्ची की तौबा (कुल सफ़हात : 32)
(128) नौ मुस्लिम की दर्दभरी दास्तान (कुल सफ़हात : 32)
(129) मदीने का मुसाफ़िर (कुल सफ़हात : 32)
(130) ख़ौफ़नाक दांतों वाला बच्चा (कुल सफ़हात : 32)
(131) फ़िल्मी अदा कार की तौबा (कुल सफ़हात : 32)
(132) सास बहू में सुल्ह़ का राज़ (कुल सफ़हात : 32)
(133) क़ब्रिस्तान की चुड़ेल (कुल सफ़हात : 24)
(134) फ़ैज़ाने अमीरे अहले सुन्नत (कुल सफ़हात : 101)
(135) ह़ैरत अंगेज़ ह़ादिषा (कुल सफ़हात : 32)
(136) मॉडर्न नौ जवान की तौबा (कुल सफ़हात : 32)
(137) क्रिस्चैन का क़बूले इस्लाम (कुल सफ़हात : 32)
(138) सलातो सलाम की आ़शिक़ा (कुल सफ़हात : 33)
(139) क्रिस्चैन मुसलमान हो गया (कुल सफ़हात : 32)
(140) चमकती आंखों वाले बुज़ुर्ग (कुल सफ़हात : 32)
(141) म्यूज़िकल शो का मतवाला (कुल सफ़हात : 32)

याद दाश्त

दौराने मुत़ालआ़ ज़रूरतन अन्डर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर सफ़्हा नम्बर नोट फ़रमा लीजिये। إِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इल्म में तरक़्क़ी होगी।

उनवान	सफ़हा	उनवान	सफ़हा

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

सुन्नत की बहारें

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के महके महके मदनी माह़ोल में ब कषरत सुन्नतें सीखी और सिखाई जाती हैं, हर जुमा'रात इशा की नमाज़ के बा'द आप के शहर में होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात गुज़ारने की मदनी इल्तिजा है, आ़शिक़ाने रसूल के मदनी क़ाफ़िलों में ब निय्यते षवाब सुन्नतों की तर्बिय्यत के लिये सफ़र और रोज़ाना "फ़िक्रे मदीना" के ज़रीए़ मदनी इन्आ़मात का रिसाला पुर कर के हर मदनी माह के इबतिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये, اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की बरकत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और ईमान की ह़िफ़ाज़त के लिये कुढ़ने का ज़ेह्न बनेगा।

हर इस्लामी भाई अपना येह ज़ेह्न बनाए कि "मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।" اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ अपनी इस्लाह़ की कोशिश के लिये "मदनी इन्आ़मात" पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये "मदनी क़ाफ़िलों" में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ

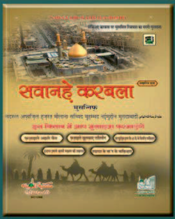

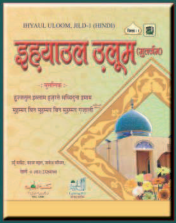

ISBN 978-969-579-892-8
0101104

مکتبۃ المدینہ
MAKTABA TUL MADINAH
MC 1286

MAKTABATUL MADINA
421, URDU MARKET, MATYA MAHAL, JAMA MASJID
DELHI - 110006, PH : 011-23284560
email : maktabadelhi@gmail.com
web : www.dawateislami.net